प्रकाशक—
श्री मध्य-भारत हिन्दी-साहित्य-समिति
इन्दौर।

मुद्रक—
सत्यव्रत शर्मा
शान्ति प्रेस, शीतलागली, आगरा।

जैनधर्मदिवाकर, ▬▬▬,
श्रीमान् सेठ लालचंदजी साहब सेठी, वाणिज्यभूषण,
झालरापाटन (राजपूताना)

Lakshmi Art, Bombay 8.

समर्पण

जैन जाति के उज्ज्वल रत्न, विद्याप्रेमी और

साहित्यानुरागी,

सुप्रसिद्ध सेठ बिनोदीरामजी बालचन्दजी की फर्म के मालिक

जैनधर्मदिवाकर

श्रीमान् सेठ लालचन्द जी साहब सेठी

'वाणिज्य भूषण'

झालरापाटन (राजपूताना) की सेवा मे —

महानुभाव,

श्रीमान् के प्रेम तथा कृपा का मै चिरऋणी हूँ। रुपया वापिस दिया जा सकता है, किन्तु, सहानुभूति के दो शब्द वह ऋण है, जिसे चुकाना मनुष्य की शक्ति से बाहर है। ध्यान है, और स्मरण है। वह दृश्य अब भी नेत्रो के सन्मुख आकर शरीर और मन मे क्रान्ति उत्पन्न कर देता है। किसी समय अनिवार्य्य आपत्तियों की घनघोर घटा से आच्छादित इस अकिञ्चन के भाग्याकाश को श्रीमान् की हार्दिक सहानुभूति ने ही आलोकमय बनाया था। जिसका बदला इस रूप मे दिया जा रहा है। वह चित्र कहाँ और यह कहाँ! किन्तु, धृष्टता क्षमा हो। यह आपकी उस महती उदारता का बदला नही—केवल आभार प्रदर्शन और श्रीमान् के अनन्त उपकारो का स्मृति-चिह्न मात्र है।

उपकारभारावनत—

लक्ष्मीसहाय माथुर।

को सादर और सप्रेम भेट।

विषय-सूची

मूल लेखक की प्रस्तावना

(प्रथमावृत्ति)

बेंजामिन फ्रेंकलिन का नाम अमेरिका के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है। उसके जीवन से सम्बन्ध रखने वाली घटनाएँ बड़ी मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद हैं। उसके जीवन-वृत्त से प्रत्येक व्यक्ति को अनुकरण करने योग्य अथवा शिक्षा लेने योग्य कुछ न कुछ बात अवश्य मिलती है। स्वाध्याय तथा निरन्तर उद्योग से मनुष्य कितनी उन्नति करके कैसे २ उपयोगी कार्य कर सकता है इसके उसके जीवन से अपूर्व उदाहरण मिलते हैं।

अंग्रेजी भाषा में फ्रेंकलिन के चरित्र पर बहुत कुछ लिखा गया है, जिनका मुख्य आधार उसका स्वयं लिखा हुआ आत्म-चरित्र ही है। अपनी ६५ वर्ष की आयु में सन् १७७१ में जब वह इंग्लैण्ड में अपने परममित्र सेन्ट एसपस के पादरी के पास रहता था उस समय अपने पुत्र न्यूजर्स के गवर्नर को लिखे हुए पत्र के रूप में उसने अपना जीवन-वृत्त लिखना आरम्भ किया था। वह अपने विवाह के समय का अर्थात् अपनी २६ वर्ष की अवस्था का वृत्तान्त लिख ही रहा था कि उसको लन्दन जाना पड़ा, उसके पश्चात् तेरह

वर्ष तक निरन्तर आवश्यक कार्यों में लगे रहने से उसको आगे का हाल लिखने का अवसर प्राप्त न हो सका। सन् १७८४ ई० में कतिपय मित्रों के आग्रह से उसने पुनः अपने चरित्र को आगे लिखना प्रारम्भ किया और यथावकाश धीरे धीरे ५१ वर्ष की अवस्था तक लिख डाला। इससे आगे का ताज़ा हाल लिखना उसने उचित न समझा।

आत्मचरित्र की १ प्रति उसने अपने मित्र एम० सी० विलर्ड को भेजी थी। फ्रैंकलिन की मृत्यु के २-१ वर्ष पश्चात् उसके उक्त मित्रने उसका फ्रेंच भाषा में अनुवाद कराके प्रकाशित करवाया। इस फ्रेंच भाषान्तर के आधार पर उसका चरित्र फिर अंग्रेज़ी भाषा में लिखा गया और लन्दन में प्रकाशित हुआ। यह बात सन् १७९३ ई० की है। इसी रूप में उसका बीस वर्ष तक इंग्लैण्ड तथा अमेरिका में ख़ूब प्रचार होगया। उसका अपना लिखा हुआ आत्मचरित्र ऐसी सरल और सादी भाषा में लिखा हुआ है कि प्रत्येक की समझ में आ जाता है। शैली इतनी उत्तम है कि पाठक का जी कभी नहीं उकताता। उसकी सार्वजनिक सेवाओं का वर्णन प्रारम्भ होने पर फ्रैंकलिन अपनी लेखनी को रोक लेता है। जहाँ से आत्मचरित्र बद होता है उससे आगे का वृत्तान्त डाक्टर जरेड् स्पार्क्स, जेम्स पार्टन तथा अन्यान्य लेखकों ने फ्रेंकलिन के लेख, उसके समकालीन समाचार पत्र एवम् उस समय के अन्य महान् पुरुषों के चरित्रों मे से लेकर पूरा किया है।

इस पुस्तक को लिखने में मुख्य आधार डाक्टर जरेड् स्पार्क्स तथा जेम्स पार्टन की पुस्तकों से ही लिया गया है। जरेड् स्पार्क्स की पुस्तक में फ्रैंकलिन का आत्म-चरित्र दिया गया है और उससे आगे का भाग उसी शैली पर लिखा गया है। जेम्स पार्टन के लिखे हुए चरित्र के दो भाग हैं जिनमें फ्रैंकलिन का चरित्र और उसके समय की प्रायः सभी घटनाओं का समावेश है। इन दोनों भागों में से मुख्य २ बातें लेकर संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है।

फ्रैंकलिन जैसे अनुकरण करने और शिक्षा लेने योग्य महान् पुरुष के चरित्र को पाठक पढ़कर भली प्रकार समझ सकें इस हेतु से भाषा यथा सम्भव सरल रक्खी गई है तथा कोई आवश्यक बात रह न जाय इसको ध्यान में रख कर पुस्तक का आकार जहां तक बन पड़ा छोटा ही रक्खा गया है।

बड़ोदा
२८ सितम्बर १८९४

गोविन्द भाई हाथीभाई
देसाई

द्वितीयावृत्ति

यह पुस्तक बम्बई प्रान्त के डायेरक्टर आफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन्स तथा बड़ौदा राज्य के विद्याधिकारी महोदय ने इनाम में देने तथा लाइब्रेरियों में रखी जाने को स्वीकृत की और

गुजराती शिक्षित समाज ने भी इसका अच्छा आदर किया, इसी से इसके दूसरे संस्करण का अवसर आया है। इस बार प्रथमावृत्ति की भूलों का सुधार कर दिया गया है और यत्र तत्र आवश्यक अंश बढ़ा दिया गया है।

विसनगर
१ मार्च सन् १९०० ई० } गो० हा० देसाई।

अनुवादक के दो शब्द

इसमें सन्देह नहीं कि 'दो शब्दों' की आड़ में अपने वक्तव्य को विस्तृत रूप देकर मैं पाठकों का अमूल्य समय नष्ट करने जा रहा हूँ। उसका यद्यपि मुझ से ही व्यक्तिगत सम्बन्ध है किंतु, अनेकांश में प्रस्तुत पुस्तक पर भी उसका कुछ ऐसा प्रकाश पड़ता है जिसके लोभ को मैं संवरण नहीं कर सकता। इसी से उचितानुचित का विचार त्याग कर अपने मनोगत भावों को व्यक्त कर रहा हूँ। आशा है, सुविज्ञ पाठक महानुभाव इसके लिये मुझे अपने उदार अन्तःकरणसे क्षमा प्रदान करने की कृपा करेंगे।

लगभग १५ वर्ष पूर्व की बात है, जिन दिनों इस गार्हस्थ्य चिन्ता युक्त जीवन ने पवित्र विद्यार्थी-जीवन का जामा पहन रक्खा था। जिसमें न कभी सांसारिक-चिंताएँ सताती थीं और न किसी प्रकार का दुःख और अशान्ति ही पास फटकती थी। अपने क्षुद्र-साधनों के बल पर एक अकिञ्चन की बलवती आशाएँ जीवन-संग्राम में विजय प्राप्ति के उपायों पर प्रकाश डाल रही थीं। वृद्ध जनों के शुभाशीर्वाद और पूज्य गुरु जनों की महती कृपा से साहित्यानुराग का अंकुर उद्भूत होकर यथासमय विकसित हुआ। उसी विकास काल की उमङ्ग में 'मातृभाषा' तथा 'वीर बाला' नामक पुस्तिकाओं का प्रादुर्भाव हुआ। यद्यपि भावी समय के गर्भ में अनेक शुभ-भावनाएँ और, सदिच्छाएँ निहित थीं और निकट-भविष्य में उनके सफल हो जाने की पूर्ण आशा तथा अभिलाषा थी। किंतु, विश्वेश्वर की गति-विधि में भी किसी का वश चल सकता है? हृदय का सारा उत्साह सहसा विलीन हो गया। एक के पश्चात् दूसरी आपत्ति का आक्रमण प्रारम्भ हुआ जो उत्तरोत्तर चलता गया और उसी ने आगे चल कर बड़ा

गुजराती शिक्षित समाज ने भी इसका अच्छा आदर किया, इसी से इसके दूसरे संस्करण का अवसर आया है। इस बार प्रथमावृत्ति की भूलों का सुधार कर दिया गया है और यत्र तत्र आवश्यक अंश बढ़ा दिया गया है।

विसनगर
१ मार्च सन् १९०० ई० } गो० हा० देसाई।

अनुवादक के दो शब्द

इसमें सन्देह नहीं कि 'दो शब्दों' की आड़ में अपने वक्तव्य को विस्तृत रूप देकर मैं पाठकों का अमूल्य समय नष्ट करने जा रहा हूँ। उसका यद्यपि मुझ से ही व्यक्तिगत सम्बन्ध है किंतु, अनेकांश में प्रस्तुत पुस्तक पर भी उसका कुछ ऐसा प्रकाश पड़ता है जिसके लोभ को मैं संवरण नहीं कर सकता। इसी से उचितानुचित का विचार त्याग कर अपने मनोगत भावों को व्यक्त कर रहा हूँ। आशा है, सुविज्ञ पाठक महानुभाव इसके लिये मुझे अपने उदार अन्त:करणसे क्षमा प्रदान करने की कृपा करेंगे।

लगभग १५ वर्ष पूर्व की बात है, जिन दिनों इस गार्हस्थ्य चिन्ता युक्त जीवन ने पवित्र विद्यार्थी-जीवन का जामा पहन रक्खा था। जिसमें न कभी सांसारिक-चिंताएँ सताती थीं और न किसी प्रकार का दु:ख और अशान्ति ही पास फटकती थी। अपने क्षुद्र-साधनों के बल पर एक अकिञ्चन की बलवती आशाएँ जीवन-संग्राम में विजय प्राप्ति के उपायों पर प्रकाश डाल रही थीं। वृद्ध जनों के शुभाशीर्वाद और पूज्य गुरु जनों की महती कृपा से साहित्यानुराग का अंकुर उद्भूत होकर यथासमय विकसित हुआ। उसी विकास काल की उमङ्ग में 'मातृभाषा' तथा 'वीर बाला' नामक पुस्तिकाओं का प्रादुर्भाव हुआ। यद्यपि भावी समय के गर्भ में अनेक शुभ-भावनाएँ और, सदिच्छाएँ निहित थीं और निकट-भविष्य में उनके सफल हो जाने की पूर्ण आशा तथा अभिलाषा थी। किंतु, विश्वेश्वर की गति-विधि में भी किसी का वश चल सकता है? हृदय का सारा उत्साह सहसा बिलीन हो गया। एक के पश्चात् दूसरी आपत्ति का आक्रमण प्रारम्भ हुआ जो उत्तरोत्तर चलता गया और उसी ने आगे चल कर बड़ा

भीषण तथा व्यापक रूप धारण कर लिया। फिर क्या था? सुख और आनन्द के स्थान पर दुःख और अशान्ति ने अपना प्रभुत्त्व स्थापित कर लिया। सब से प्रथम उसकी बलि-वेदी पर अपनी सहचरी और उसके होनहार शिशु को अर्पित कर देना पड़ा। बात यहीं तक हुई हो सो नहीं इसके पश्चात् अब तक भी कौटुम्बिक-आपत्तियों का चक्र बराबर चलता रहा।

यह मैं भली प्रकार जानता हूँ कि संसार में जन्म धारण करने वाले प्राणिमात्र का जीवन आपत्ति-रहित नहीं है। किंतु, जिसका जीवन आरम्भ से ही निर्दोष, आमोद प्रमोद में बीता हो, सुयोग्य माता पिता की छत्र छाया में जिसका बाल्य काल निर्विघ्न व्यतीत हुआ हो, और दुख तथा आपत्ति किसे कहते हैं? इसको जो जानता तक न हो, उसका जीवन इस प्रकार एकाकी दैवी-आपदाओं से आच्छादित हो जाय उस हृदय की क्या अवस्था होती है इसकी भुक्त भोगी सज्जनों के सन्मुख कुछ विशेष विवेचना करना व्यर्थ है। और सब बातें मैंने सहन कीं, और कर रहा हूँ। लेकिन, इस आपत्ति-काल में जो अमूल्य समय व्यर्थ चला गया उसी का सब से अधिक पश्चात्ताप है।

साहित्य-सेवा का विषय बड़ा टेढ़ा होने के कारण एक खास अर्थ रखता है, इससे मैं अनभिज्ञ नही हूँ। किंतु, प्रवाह ही कुछ ऐसा चला है कि हम जैसे ज्ञान और अनुभव शून्य व्यक्ति भी लेखक तथा अनुवादक बनने का दम भरने लगे हैं। जो हो, इस अनधिकार चेष्टा के मूल कारण पर जब मैं सिंहावलोकन करता हूँ तो अपनी कनिष्ठ सहोदरा स्वर्गीया श्रीमती नन्दकुमारी-देवी का अनायास ही स्मरण हो आता है। दो अक्षरों की प्राप्ति का श्रेय तो अपने अभिभावकों और पूज्य गुरु जनों को है ही, किंतु, उसकी सफलता में जो कारणीभूत हुई उसका भी अधिकांश श्रेय अपनी परम दुलारी उस देवी को ही है। मेरे प्रति उसके

सुकोमल मन-सदन में कैसा स्नेह और भातृ प्रेम था उसका आज भी जब मुझे स्मरण आता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानों हृदय विदीर्ण होने का उपक्रम कर रहा है। विद्यार्थी-जीवन में वह मेरी आवश्यकताओं का कितना ध्यान रखती थी, प्रातःकाल से शयन पर्य्यन्त वह किस प्रकार मेरी दिन-चर्य्या को यथाविधि निबाहती थी, कितनी लज्जा, कितना सङ्कोच और कितना भय रखती थी, अपना अधिकांश समय मेरे सुप्रबन्ध में लगा कर भी कितनी तत्परता से वह अन्यान्य गृह कार्य्यों को चलाती थी और किस प्रकार अपने पाठ्यग्रन्थों को अल्प समय में ही तयार करके अपनी कक्षा में सर्व प्रथम रहती थी और घर वालों की, कुटुम्बियों की, पड़ोसियों की तथा अध्यापिकाओं की प्रीतिभाजन बनी हुई थी– ये सब बातें आज भी कम से कम इस परिवार का मार्ग-प्रदर्शन तो अवश्य ही करती हैं। ससुराल में पहुंच कर उसने किस प्रकार अपनी कार्य-दक्षता से सबका मन अपनी ओर आकर्षित कर लिया था तथा किस अनुराग और सच्ची लगन से उसने अपने कर्त्तव्य का पालन किया ये सब बातें कुछ पुरानी होजाने पर भी ताज़ा हैं और हृदय पर एक खास प्रभाव डालती हैं। हाँ तो, बात कुछ बढ़ गई।

बहिन के विद्यार्थी जीवन की बात है, जब मैं फ़ाइनल पास कर के हिन्दी-साहित्य की प्रथमा परीक्षा की तयारी कर रहा था और वह अपर प्राइमरी कक्षा में शिक्षा पा रही थी। अपने पाठ्य ग्रन्थ में उसने "हास्य के दुष्परिणाम" पर मुझे एक लेख दिखाया और यथावकाश उसे पद्य-रूप देने को कहा, उसकी यह प्रेरणा कुछ काव्य-ग्रन्थों को पढ़ने से हुई थी। श्रद्धेय बाबू मैथिलीशरण जी गुप्त का "जयद्रथ-वध" और "भारत भारती" उसके सब से प्रिय ग्रन्थ थे। गत वर्ष जब उसको बड़े ज़ोर का अपस्मार और अर्द्धाङ्ग (Hysteria and Paralysis) होगया था तो

उसने कई बार मुझसे 'जयद्रथ वध' सुनने की इच्छा प्रकट की। मेरे पास की प्रति एक मित्र पढ़ने को ले गये थे और उसके उपचारादि से इतना अवकाश मिलता नहीं था कि मैं उसे उनके पास से ले आता। अतः जब २ वह मुझ से कहती, मैं उत्तर में 'बहिन, आज अवश्य ले आऊंगा' कह देता। किन्तु, ऐसी भाग दौड़ रही कि वह बराबर कहती २ असमय में ही स्वर्ग-धाम को सिधार गई लेकिन, मेरा 'आज' पूरा न हुआ। कहने की आवश्यकता नहीं कि 'जयद्रथ वध' मेरे भी परम आदर और प्रेम का ग्रन्थ है। यदा कदा मैं उसकी पद्यावली को गुनगुनाने लगता हूं तो बहिन की स्मृति हृदय पर आकर अश्रुरूप में प्रवाहित होने लगती है। अस्तु।

'हास्य के दुष्परिणाम' पर मैंने कुछ तुकबन्दी की भी थी*। किन्तु, सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध साहित्य-सेवी श्रीमान् पं० लज्जाराम जी मेहता (बूंदी) ने परामर्श दिया कि केवल हास्य की घटना को ही लक्ष्य न करके आप राणा रायमल्ल जी के चरित्र को लेकर यदि कोई रचना करें तो वह अधिक उत्कृष्ट और उपयोगी हो क्योंकि वीर-रस के साहित्य में उनके कृत्यों का एक खास स्थान है, यह कार्य्य अवकाश से ही हो सकता था और यहां उदर-पूजा के लिये उस समय से ही पराधीनता का तौक़ गले में डाला जा चुका था ऐसी दशा में वह कार्य्य होता कैसे?

इस जीवन चरित्र का अनुवाद-कार्य सन् १९२४ में प्रारम्भ हो चुका था किन्तु, कई अनिवार्य्य कारणों के आजाने से कार्य बड़ी मन्द गति से हुआ। आरम्भिक अंश परमादरणीय श्रीमान् सेठ लालचन्द जी साहब सेठी महोदय के साथ मसूरी-शैल की यात्रा में लिखा गया था और अवशिष्टांश में से अधिकांश बहिन की रोग-शय्या के निकट बैठ कर। बहिन के प्रश्न करने पर कि :—'भइया, 'हास्य का दुष्परिणाम' कब लिखोगे?' मैं उत्तर देता कि—बहिन,

---

* जो असावधानी से दीमक के उदर पोषण की सामग्री बन गई!

फ्रैंकलिन को समाप्त कर के। किंतु, दुर्भाग्य से इसका कार्य अपूर्ण ही रहा कि उसका देहान्त हो गया और बीच में ही—'आदर्श मुनि' का कार्य्य हाथ में ले लिया जिसे उसके प्रकाशक महाशय की आतुरता के कारण पहिले समाप्त कर देना पड़ा। श्रीमान् सेठ लालचन्द जी साहब सेठी तथा मध्य भारत हिन्दी-साहित्य-समिति इन्दौर के मंत्री श्रीमान् डाक्टर सरयू प्रसाद जी महोदय की कृपा से बहिन का देहान्त होते ही इस के प्रकाशित होनेका अवसर आया। मैं उपर्युक्त उभय सज्जनों का कृतज्ञ हूं जिनकी कृपा से यह पुस्तक आज हिन्दी-संसार को भेट की जा रही है।

फ्रैंकलिन का जीवन एक महत्त्व का जीवन है। वह बड़े दीन कुटुम्ब में उत्पन्न हुआ था। किंतु बढ़ते २ यहाँ तक बढ़ा और ऐसे उच्च पदों पर पहुँच गया जहां राजकुल वालों को छोड़ कर दूसरों का पहुँचना असम्भव है। वह देश-सेवक के साथ ही साथ अपने देश का शासक भी हो गया है। किंतु, उच्च पद पाने का न तो कभी उसे अभिमान हुआ और न इस के लिये वह किसी का ऋणी ही था। वह यहाँ तक स्वतंत्र भाव वाला था कि यदि किसी की सहायता की अपेक्षा के लिये उसे अपनी आत्मा को दबाना पड़े तो वह अपनी हानि स्वीकार कर लेता था, किंतु, किसी से कभी कोई याचना नहीं करता था।

उसकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी। वह आजन्म विद्यादेवी का उपासक रहा। उसने केवल अपने ही परिश्रम और पराक्रम से असाधारण योग्यता प्राप्त की। उसके आदि अन्त की दशा का मिलान करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उद्योग और सच्ची लगन से दरिद्री मनुष्य भी धनाढ्य हो सकता है।

वह जैसा विद्वान था, वैसा ही स्वदेश-हितैषी भी था। इसी कारण उसकी प्रतिष्ठा इतनी बढ़ी कि राज सम्बन्धी कार्य्यों में उसकी सम्मति ली जाने लगी और बड़ी से बड़ी सभाओं में उस को कुरसी मिलने लगी।

इतिहास हमें बताता है कि संसार की उन्नति के मुख्य कर्णधार अधिकतर झोपड़ियों में जन्म लेने वाले वे ही पुरुष हुए हैं जिनका लालन पालन दरिद्रता की गोद मे हुआ हो। भविष्य में भी जब तक उन्नति और सुधार संसार के इष्ट विषय हैं तब तक राष्ट्र की बहुमूल्य सम्पत्ति को उत्पन्न करने का श्रेय उन्हीं अनाथ और दीन झोपड़ियों को रहेगा। प्रकृति ने धनवानों को धन देकर उन केआन्तरिक गुण और विकास को छीन लिया है। इसके विपरीत ग़रीबों के आन्तरिक गुण एवम् विकास इतने बहुमूल्य हैं जिन पर सहस्रावधि धनवानों का अनन्त धन क़ुर्बान किया जाय तो भी थोड़ा है!

एक मोम बत्ती बनाने वाले साधारण मनुष्य का पुत्र अपने अध्यवसाय से आशातीत उन्नति और अपूर्व सम्मान प्राप्त करता है! जिसको एक बार दुर्भाग्य से भर पेट रोटी पाने में भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है, मार्ग-व्यय के लिये जिसे किसी समय अपने वस्त्र और पुस्तकें तक बेच डालने का प्रसंग आ जाताहै वह ही दीन एवम् साधनहीन व्यक्ति अपने उद्योग और पुरुषार्थ से जीवन-संग्राम में युगान्तर उपस्थित कर देता है और मरते समय १॥ लाख से अधिक की सम्पत्ति छोड़ जाता है। अपने पराधीन, निर्धन और कला कौशल हीन देश की उन्नति के लिये अपने सांसारिक सुखों और बड़े से बड़े प्रलोभनों पर ठोकर मार कर वह अविश्रान्त परिश्रमपूर्वक प्रयत्न करके सफलता प्राप्त करता है और देश की भावी सन्तति का मार्ग प्रशस्त कर जाता है! फिर एक सुदृढ़ स्थान पर परिमार्जित क्षेत्र में दूरदर्शिता पूर्वक लगाये हुए पौधे से समय पाकर कैसे सुफल उत्पन्न होते हैं इसका उदाहरण आज की अमेरिका है!

हमारे देश में आदर्शों की कमी नहीं है। क्या धार्मिक और क्या राजनैतिक, क्या साहित्यिक और क्या कला-कौशल, प्रत्येक क्षेत्र में यहाँ एक से एक बढ़ कर महापुरुष हो गये हैं, इसी से

भारतवर्ष विश्व शिरोमणि अथवा संसार की सभ्यता का आदि स्थान कहा जाता है। किन्तु, फिर भी हमारी मातृभाषा में ऐसे जीवन चरित्रों की बड़ी आवश्यकता है जिनको पढ़ कर हमारे नवयुवक आत्मोन्नति और स्वदेश-सेवा का पाठ सीखें।

जो महापुरुष हमारे सन्मुख आत्मोन्नति, स्वतन्त्र विचार, स्वाभिमान और देश-सेवा का आदर्श रखता हो, वह चाहे देशी हो या विदेशी-हमारे लिये आदरणीय और अनुकरणीय है। फ्रेंकलिन के चरित्र को गुजराती भाषा में पढ़ते समय मेरे हृदय में ऐसी ही भावनाओं का उदय हुआ था जिनसे प्रेरित होकर मैंने इसे हिन्दी-रूप दिया है। यदि यह कार्य कुछ भी उपयोगी समझा गया—जिसकी अपनी अयोग्यता के विचार से मुझे बहुत थोड़ी सम्भावना है—तो मैं शीघ्र ही सुप्रसिद्ध दार्शनिक फ्रांसिस-बेकन का चरित्र भी उपस्थित करने का प्रयत्न करूँगा।

प्रस्तुत पुस्तक परम श्रद्धास्पद पूज्य कविवर काव्यालङ्कार श्रीमान् प० गिरिधर शर्मा जी नवरत्न महोदय के चुनाव में से एक है, जिनके हिन्दी-अनुवाद के लिये आपने मुझ से कई बार प्रेरणा की है। आपका इस अकिञ्चन पर बड़ा वात्सल्य-भाव है, इस नाते, यहाँ कुछ विशेष वक्तव्य अनुचित प्रतीत होता है।

गुजराती साहित्य मे अहमदाबाद की गुजरात वर्नाक्यूलर सोसाइटी बड़ा उपयोगी कार्य कर रही है। इस पुस्तक के हिन्दी-अनुवाद की आज्ञा प्रदान कर देने के लिये मैं सोसाइटी का और साथ ही मूल गुजराती लेखक श्रीयुत गोविन्दभाई हाथीभाई देसाई का आभारी हूँ। इसके अनुवाद आदि कार्यों में मित्रवर श्रीयुत पं० विष्णुदास जी त्रिपाठी 'विशारद' तथा बाबू देवीसहाय जी माथुर 'साहित्य-भूषण' से जो सहायता मिली उसे भी मैं नहीं भूल सकता।

सुप्रसिद्ध विद्या व्यसनी और साहित्यानुरागी झालावाड़ नरेश श्री मन्महाराजाधिराज महाराजराणा सर श्री भवानीसिंह जी

साहब बहादुर के. सी. एस. आई. एम. आर. ए. एस., एम. आर. एस. ए. आदि के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करते हुए मुझे शब्दों का अभाव दिखाई देता है जिनके उदार आश्रय में इस सेवक ने शिक्षा प्राप्त की है और जिनका अन्न जल रोम रोम में व्याप्त हो रहा है। जगदाधार से श्रीमान् की मङ्गल कामना करता हुआ प्रार्थना करता हूँ कि वह ऐसे परम उदार स्वामी का आश्रय सभी को प्रदान करे।

शान्ति प्रेस के सञ्चालकों ने इसकी छपाई में बड़ी तत्परता और सज्जनता दिखाई इसके लिये उन्हें मैं धन्यवाद देता हूं।

प्रेस के दूर होने से प्रूफ़ सम्बन्धी जो अशुद्धियाँ रहनी चाहियें उनसे यह पुस्तक भी न बच पाई है। कहीं कहीं तो बड़ी भूल रह गई है। मसौदे को मस्विदा, सस्थानों को सस्थान, उपनिवेश या राज्य, नियामक समिति को व्यवस्थापिका सभा, दीनबन्धु को ग़रीब-रिचर्ड आदि लिख दिया गया है। तथा कहीं २ व्यक्तियों और स्थानों के नामोच्चारण में भी भूलें रह गई हैं। इस प्रकार की भूलों का सुधार सम्भव न था क्योंकि वे छपनेमें आगई थीं। यदि दूसरे संस्करण का अवसर प्राप्त हुआ तो सब सुधार दी जायँगी। यहाँ यह लिख देना आवश्यक है कि अनुवाद में स्वतन्त्रता से भी काम लिया गया है और आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर दिया गया है। फिर भी अनेक स्थानों पर विस्तार होगया है जिसको समझते हुए भी चरित्र नायक के जीवन से उनका एक विशेष सम्बन्ध होने के कारण उन्हें रहने दिया है। पृष्ठ १९८ में अबीया फ्रेंकलिन का मृत्यु संवत् ७५१२ के स्थान पर १७५२ समझना चाहिये।

नन्द-निकुञ्ज
झालरापाटन (राजपूताना)
दीपावली १९८४ वि०

विनीत—
लक्ष्मीसहाय माथुर।

बेंजामिन फ्रेंकलिन

Lakshmi Art, Bombay, 8
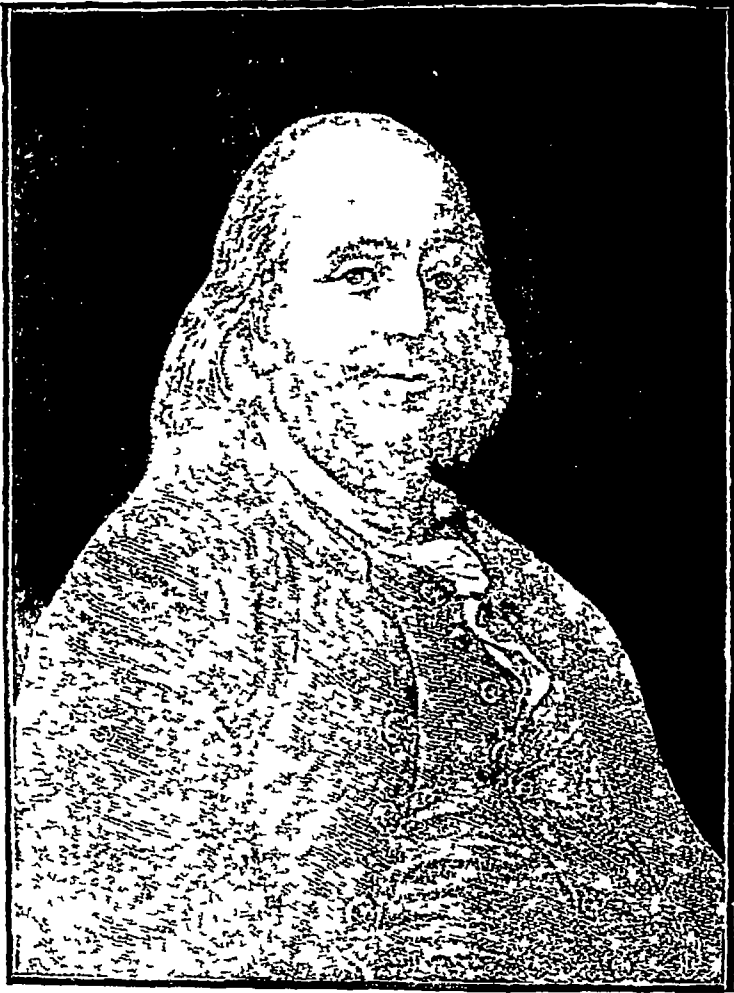
बेंजामिन फ्रैंकलिन का

जीवन-चरित ।

प्रकरण पहिला

बचपन—सन् १७०६ से १७१८ ई०

फ्रैंकलिन का पिता जोशिया—उसका अमेरिका जा बसना—पहिली स्त्री की मृत्यु—पुनर्विवाह—पिटर फ़ोल्जर—उसकी लड़की अबीया जोशिया की योग्यता—सन्तति—फ्रैंकलिन का जन्म—बड़े कुटुम्ब में जन्म होने के लाभ—जोशिया का बात चीत करने का शौक़—बेंजामिन काका—उसका पत्र व्यवहार—फ्रैंकलिन पर प्रभाव—महँगे मोल का खिलौना—पत्थर का घाट—फ्रैंकलिन पाठशाला में—दस वर्ष की आयु में पिता का रोज़गार—तैरने का शौक़—बेंजामिन काका का अमेरिका आना—फ्रैंकलिन का पढ़ने का शौक़—बचपन में पढ़ी हुई पुस्तकें—बाल्यावस्था में धर्म—बोस्टन से प्रेम ।

बेंजामिन फ्रैंकलिन का पिता जोशिया फ्रैंकलिन इङ्गलैण्ड के नार्थम्प्टन परगने के 'एक्टन' गाँव में सन् १६५५ ई० में उत्पन्न हुआ था । वह रँगरेज़ का काम जानता था और ऑक्सफ़र्ड परगने के बेन्बरी गाँव में यही व्यवसाय करता था । वहीं पर २१ वर्ष की अवस्था में उसका विवाह हुआ । उसके भाई बेंजामिन का विवाह

भी इसी गाँव में एक पादरी की कन्या वेर के साथ हुआ था। दोनों भाइयों में परस्पर बड़ा स्नेह था जो अन्त समय तक बना रहा।

इस समय इङ्गलैंड में द्वितीय चार्ल्स राजा राज्य करता था। उसके शासनकाल में राज धर्म से विमुख रहने वाले लोगों पर बड़ा अत्याचार होता था। फ्रैंकलिन का कुटुम्ब पहिले से ही प्रोटेस्टेंट * धर्म का अनुयायी था। परन्तु, एक समय राज धर्म से पृथक् मत पर चलने वाले कुछ धर्म्माचार्य्यों को नार्थम्प्टन परगने से निकाल दिया गया। उनके मत को जोशिया और फ्रैंकलिन के काका ने अंगीकार कर लिया, और वे मरते समय तक इसी मत के अनुयायी रहे। राज नियम के अनुसार इस मत के अनुयायियों को एक जगह इकट्ठा होने की मुमानियत थी। अगर किसी मौक़े पर उनकी मण्डली इकट्ठी हो जाती तो उसको बलात्कार बिखेर दी जाती, और उनको तरह तरह की अनेक तकलीफ़ें दी जातीं। इससे तंग आकर कुछ साहसी लोगों ने इङ्गलैंड छोड़ कर अमेरिका जाने का निश्चय किया। क्योंकि वे अपनी इच्छानुसार धर्म का पालन करना चाहते थे। उन्हीं में फ्रैंकलिन का पिता भी था। लगभग सन् १६८२ ईस्वीमें वह अपनी स्त्री और तीन पुत्रों के साथ अमेरिका को चल दिया।

जोशिया फ्रैंकलिन बोस्टन नगर में जाकर बस गया। उस समय इस शहर को स्थापित हुए ५६ वर्ष हुए थे और उसकी आबादी ६-७ हज़ार से अधिक न थी। ऐसी छोटी बस्ती में

* प्रोटेस्टेंट—यह ईसाई धर्म के एक सम्प्रदाय का नाम है जिसको जर्मनी के प्रसिद्ध पादरी मार्टिन लूथर ने सन् १५२९ ई० में स्थापित किया था।

इतनी रँगाई कहाँ जो इसके कुटुम्ब का निर्वाह हो सके; इसलिये जोशिया ने रँगने का धंधा छोड़ कर साबुन और मोमबत्ती का व्यवसाय शुरू कर दिया। इस में उसको अपने परिश्रम के अनुसार अच्छी आमदनी होने लगी। धीरे २ उसके पास कुछ पूँजी इकट्ठी होगई और साथ ही परिवार भी। थोड़े समय के बाद उस के चार पुत्र और हुए। सब से बड़ा जेम्स कुछ दिन के बाद जब समझदार होगया तो अपने माता पिता को वहीं छोड़ कर चुपचाप किसी और देश में चला गया। कई वर्षों तक उसका पता न चला। इसके बाद जोशिया की स्त्री उसको ३५ वर्ष की उम्र में छः छोटे २ बच्चों के साथ छोड़ कर मर गई। उन बच्चों में जो सब से बड़ा था उसकी आयु केवल ११ वर्ष की थी। एक तो वह व्यवसायी आदमी था, और फिर स्त्री के मर जाने से छोटे २ बच्चों के पालन पोषण का काम भी उसी पर आ पड़ा। इस कारण उसने पुनर्विवाह कर लेने का निश्चय कर लिया। पिटर फ़ोल्जर नाम के एक गृहस्थ की लड़की अबीया को उसने पसन्द किया और उसी के साथ उसका विवाह हो गया। पिटर फ़ोल्जर इङ्गलैण्ड से आकर बसे हुए लोगों में से एक प्रसिद्ध विद्वान् और धर्मनिष्ठ व्यक्ति था। अमेरिका की प्रचलित देशी भाषाओं में से कुछ का वह अच्छा ज्ञाता था। बच्चों को लिखना पढ़ना सिखाने में वह अपना बहुत समय लगाता था। पैमायश का काम भी उसे अच्छा याद था, और अपनी हद मुक़र्रिर करने वग़ैरा मे लोगों को उससे बड़ी सहायता मिलती थी। इसकी लड़की अबीया २२ वर्ष की थी। ऐसे ऊँचे गृहस्थ की पुत्री होते हुए भी उसने जोशिया जैसे साधारण व्यक्ति के साथ विवाह करना स्वीकार कर लिया इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि वह देखने मे सुन्दर, सुडौल, गुणी और मिलनसार आदमी था। उसके जैसे पकी उम्र में पहुँचे हुए छः बच्चों के बाप और मोमबत्ती बनाने वाले क साथ विवाह

करने में अबीया ने कुछ असमञ्जस नहीं किया, इस बात से ही प्रगट होता है कि जोशिया में अवश्य ही कोई असाधारण गुण था। वह कुछ चित्रकारी जानता था। इसके अतिरिक्त उसको सारंगी बजाना और गाना भी आता था। उसका कण्ठ बड़ा मधुर था। सन्ध्या समय जब वह अपने काम पर से आता और सारंगी लेकर बैठता तो अपने हस्त-कौशल और कर्णप्रिय स्वर से आस पास के लोगों को आनन्दित कर देता। वह बड़ा जिज्ञासु और चंचल प्रकृति वाला था। विद्वान् और योग्य मनुष्यों को निमन्त्रित करके उन्हे अपने घर पर भोजन कराके उनको भाँति २ की राग रागिनी सुनाने का उसको बड़ा शौक़ था। उसको सब लोग बड़ी आदर की दृष्टि से देखते थे; और न केवल पडोसी ही, किन्तु गाँव वाले भी समय २ पर उससे सलाह लिया करते थे। वह दिल का बड़ा भोला था। किन्तु अपने व्यवसाय को बड़े परिश्रम और एकाग्रचित्त से करता था। ऐसे व्यक्ति को अबीया सहर्ष अंगीकार कर ले इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।

अबीया से जोशिया के दस लड़के हुए। उनमें से आठवाँ और दोनों स्त्रियों के मिलाकर सत्रह लड़कों में पन्द्रहवाँ हमारा चरित नायक बेंजामिन फ्रेंकलिन था। इसका जन्म सन् १७०६ ईस्वी के जनवरी मास की छठी तारीख़ को रविवार के दिन हुआ था। उस समय उसका पिता मिल्क स्ट्रीट में रहता था। फ्रेंक-लिन का जन्म हुआ उसी दिन उसका बाप उसको देवालय में लेगया। और वहाँ के धर्म्माचार्य्य डाक्टर विलर्ड से उसको दीक्षा दिलाई। इङ्गलैण्ड में रहने वाले उसके काका बेञ्जामिन के नाम पर ही उसका नाम भी बेञ्जामिन ही रक्खा गया। उस के पैदा होने के पश्चात् उस के पिता ने अपना घर बदला और हानोवर तथा यूनियन मोहल्ले के कौने पर लकड़ी के बने हुए सुव्यवस्थित

घर में रहने लगा। जीवन के अन्तिम समय में वह इसी घर मे रहा और उसी में हमारे चरित नायक का बाल्य-काल व्यतीत हुआ। बाल बच्चेदार आदमी के घर पालन-पोषण होने में एक बहुत बड़ा लाभ है। और वह यह कि उसको अपने घर में ही खूब खेलने-कूदने का अवसर मिलता है। इस कारण शहर या गाँव के और, और गुणहीन या बदमाश लड़कों का संसर्ग न होने से चरित्रगठन में बड़ी सहायता मिलती है। इस के अतिरिक्त वह घर भर में अकेला ही सब का लाड़ला नहीं है बल्कि उसके जैसे और भी हैं ऐसी धारणा सदा बनी रहने से उसका स्वार्थी और खुदगर्ज स्वभाव नहीं होने पाता। बेञ्जामिन फ्रैंकलिन का जीवन भी इसी प्रकार सुसङ्गठित हुआ था। भाई और बहिनें मिल कर वे बारह थे। उन के रहने का घर तो छोटा था, किन्तु खाने पीने और सोने की व्यवस्था साधारणतया ठीक थी। माता पिता में अथवा भाई बहिनों में कभी वैमनस्य नहीं होता था। सब बड़े प्रसन्न चित्त और परस्पर हेल मेल से रहा करते थे।

जोशिया फ्रैंकलिन भोजन करते समय हमेशा ज्ञान और विनोद की बातें किया करता था। इस से उसके बच्चों को बड़ा लाभ हुआ। भोजन में क्या २ वस्तु परसी गई है और वह स्वादिष्ठ है या नहीं इस ओर उनका लक्ष्य न रह कर अधिकतर जोशिया की बातों की ओर ही रहता था। आत्म चरित में बेञ्जामिन फ्रैंकलिन ने एक जगह लिखा है:—"मेरे आगे भोजन की क्या २ सामग्री रक्खी गई है इस सम्बन्ध में मैं इतना अधिक बेख़बर रहता था कि मैं भोजन करने के थोड़ी देर बाद ही यह भी नहीं बतला सकता था कि मैंने आज क्या खाया है? इससे मुझे एक बहुत बड़ा लाभ यह हुआ कि मुसाफिरी में मुझे इसके कारण कोई कठिनाई नहीं होती थी। मेरे साथी लोगों की

उत्तमोत्तम चीज़ों को खाने की चाट होने से उनको किसी प्रसङ्ग पर अच्छी खुराक न मिलती तो वे बड़े दुखी होते। किन्तु, मैं तो इसकी ज़रा भी परवाह नहीं करता।"

जोशिया का भाई बेञ्जामिन जो इङ्गलैण्ड में था वह जोशिया की भाँति सुखी नही रहा। उस मे अच्छे गुण थे, और वह अपने रिश्तेदारों तथा स्नेहियों पर प्रेम भाव रखता था। किन्तु, उस पर एक के बाद एक अनेक विपत्तियाँ आईं। उसकी स्त्री और एक एक करके ९ पुत्र मर गये। व्यवसाय भी बिगड़ चला। उसका स्वभाव बड़ा हँसमुख था। लिखने पढ़ने के साथ २ उसको गणित करने का भी अच्छा अभ्यास था अपनी सहनशीलता से वह सब आफतों को झेलता और बरदाश्त करता रहा। पुस्तकों और व्याख्यानों को संग्रह करने का भी उस को बड़ा शौक़ था। अपने भाई जोशिया के घर पुत्र जन्म हुआ है यह जान कर उसको बड़ा हर्ष हुआ। दोनों भाइयों में परस्पर पत्र–व्यवहार होता ही रहता था। जब फ्रैंकलिन कुछ समझदार हुआ तो उसका चचा अपने भतीजे को पत्रों में प्रायः विनोद पूर्ण कविताएँ लिखा करता। उसकी शिक्षा का आरम्भ इन पत्रों से ही हुआ। उस समय उत्तरी अमेरिका में अंग्रेज और फ्रेंच लोगो में परस्पर युद्ध हो रहा था। बोस्टन मे युद्ध के सैनिकों का आना जाना बना रहता था। और युद्ध सम्बन्धी कई नये २ कारख़ाने जारी होगये थे। अपने साथियो के साथ बेञ्जामिन को खेलने कूदने और कल कारख़ानों में घूमने फिरने का खूब अवसर मिलता। और इस से उस को स्वभावतः बड़ा आनन्द होता था। किन्तु, जब उस के काका को यह ख़बर मिली कि वह लड़कों के साथ रह कर लड़ाई झगड़ा भी करने लगा है तो उसने उस से होने वाले बुरे परिणाम की सूचना के तौर पर कुछ कविता लिख कर भेजी। इस समय

फ्रैंकलिन ४॥ वर्ष का था। आठ दिन के बाद उस के काका ने दूसरी कविता भेजी और उस में गुणवान् तथा चरित्रवान् बनने के लिये बालक बेन्जामिन को सरल एवम् साधारण भाषा में प्रभावोत्पादक उपदेश किया। इसी प्रकार वह कभी गद्य में और कभी पद्य में उसको पत्र द्वारा उपदेश करता रहता। काका की सुललित कविता देख कर बेंजामिन की इच्छा भी कुछ रचना करने की हुई। इस इच्छा से प्रेरित होकर उस ने सात वर्ष की आयु में अपने काका को एक छोटी सी कविता लिख भेजी। उसका यह पत्र-व्यवहार ९ वर्ष की उम्र होने तक चलता रहा। इससे बेंजामिन के बुद्धि-विकास में बड़ी सहायता मिली।

फ्रैंकलिन के बाल्यकाल की कुछ बातें जानने योग्य हैं। आत्म-चरित में वह कहता है:—"जब मैं सात वर्ष का था, तब एक त्यौहार के दिन मुझे अपने कुटुम्बियों ने बहुत से पैसे दिये। पैसे लेकर मैं सीधा एक खिलौने वाले की दूकान पर गया और एक सीटी की आवाज़ पर रीझ कर कुल पैसों में उसे ख़रीद लाया। सीटी को बजा २ कर मैं सारे घर में नाचता कूदता फिरने लगा। मेरे भाई बहनों को जब यह बात मालूम हुई कि मैंने सीटी का क्या मूल्य दिया है तो उन्होंने मुझसे कहा कि तू इसका चौगुना मूल्य दे आया। इतने दामों में तो और भी कई अच्छे २ खिलौने आ सकते थे। यह कह कर वे तो मेरी बेवकूफ़ी पर हँसते थे, और मैं पछता पछता कर रोता था। जितनी ख़ुशी मुझे सीटी को पाकर हुई थी उससे अधिक दुःख फ़िजूलख़र्ची का हुआ और उसी दिन से मैंने यह प्रतिज्ञा करली कि सीटी की तरह किसी चीज़ की भी बहुत ज़्यादा क़ीमत नहीं देनी चाहिये। बड़ा होने पर भी जब मैं कोई चीज़ ख़रीदता तो ख़ूब देख भाल कर जाँच कर लेता कि सीटी की तरह कहीं इसका भी तो ज्यादा मोल नहीं देना पड़ता है।"

एक बार बेञ्जामिन अपनी मित्र मण्डली के साथ बोस्टन शहरके पास एक तालाब में मछलियाँ पकड़ने लगा। उनके भागने कूदने और पानी कम रह जाने से किनारे पर दल दल और कीचड़ हो गया था; इसलिये उन्होंने सोचा कि यहाँ घाट बना दिया जाय तो अच्छा हो। उसके साथियों ने फ्रैंकलिन को यह बात सुझाई। पास ही एक नया मकान बन रहा था। वहाँ बहुत से पत्थर पड़े हुए थे। जब शाम हुई और काम बन्द हो गया तो वह अपनी मित्र मण्डली को लेकर वहाँ गया और सबने मिल कर धीरे २ सब पत्थर उठा कर तालाब के किनारे पर बिछा दिये। दूसरे दिन जो कारीगर आये तो पत्थरों को न पाकर बड़े अचम्भे में हुए। पता लगा कर वे फ्रैंकलिन के बाप के पास गये। उसके बाप ने जब पूछा तो वह बोला, मैंने तो वे पत्थर सबके आराम के लिये तालाब के घाट पर लगा दिये हैं। इस पर उसके बाप ने कहा कि काम कैसा ही अच्छा क्यों न हो, परन्तु जब ईमानदारी से न किया जावे तो वह कुछ फ़ायदे का नहीं माना जाता। फ्रैंकलिन ने यह नसीहत भी याद रक्खी और फिर कोई काम ऐसा न किया जिस मे किसी की हानि होती हो। बेञ्जा-मिन फ्रैंकलिन ने इस तरह बचपन की भूल चूक से आगे के लिये कई ऐसे साधन निकाल लिये जिन से वह अपने जीवन को सुधार कर एक समय अमेरिका जैसे बृहत् खण्ड का एक महान पुरुष हो गया।

उन्हीं दिनों बड़े सबेरे एक आदमी कंधे पर कुल्हाड़ी रखे हुए आया और फ्रैंकलिन से बोला साहिबज़ादे, तुम्हारे बाप के पास कोई सान भी है? हो तो बतलाओ, मुझे अपनी कुल्हाड़ी तेज़ करनी है। फ्रैंकलिन ने उससे कहा, हाँ है तो सही, पर नीचे पड़ी है। उस आदमी ने बड़े प्यार से फ्रैंकलिन के सर पर हाथ फेर

कर कहा:—"शाबास साहिबज़ादे! तुम तो बहुत ही भले और समझदार साहिबज़ादे हो। क्या थोड़ा सा गर्म पानी ला दोगे? ठण्डा मत लाना, क्योंकि जाड़े के दिन हैं।" फ़्रैंकलिन बालक तो था ही, उसकी खुशामद की बातों में आकर इन्कार न कर सका और दौड़ा दौड़ा जाकर गर्म पानी कर लाया। फिर उस मनुष्य ने पूछा:—साहिबज़ादे! तुम्हारी उम्र क्या है? इस छोटी सी उम्र में तुम तो बड़े ही उदार और परोपकारी हो। फ़्रैंकलिन अभी उसकी चिकनी चुपड़ी बातों का जवाब भी न दे सका था कि उसने चट दूसरी फ़रमाइश यह और करदी कि साहिबज़ादे! ज़रा थोड़ी देर सान तो फेरो। देखूं, कैसा फेर जानते हो? फ़्रैंकलिन सान फेरने और वह अपनी कुल्हाड़ी उस पर घिसने लगा। परन्तु, कुल्हाड़ी बहुत मोटी थी इस लिये फ़्रैंकलिन को बहुत ज़ोर ज़ोर से सान चलानी पड़ी। इससे वह बेचारा भोला बालक थक कर चकनाचूर हो गया। स्कूल की घण्टी भी बज गई परन्तु, वह इस गोरखधंधे में फँस कर स्कूल भी न गया। सान को खींचते २ उसके हाथों में छाले पड़ गये। जब कुल्हाड़ी खूब तेज़ हो गई तो उस मुफ्तखोरे खुशामदी ने फ़्रैंकलिन को यह इनाम दिया कि—"पाजी लड़के! तुम स्कूल जाने से जी चुराते हो; अभी स्कूल जाओ, नहीं तो पिटोगे।" फ़्रैंकलिन को जाड़े के दिनों में ज़ोर ज़ोर से सान खींचने का जितना कष्ट और दुःख हुआ था उससे बहुत ज़ियादा पाजी कहलाने से हुआ। परन्तु उससे उसने उम्र भर के लिये यह बात भी सीख ली कि जब कोई उससे खुशामद और लल्लोचप्पो की बातें करता तो वह झट भाँप लेता कि इस को भी अपनी कुल्हाड़ी पर धार रखानी है।

बेञ्जामिन फ़्रैंकलिन के पिता ने उसके और और भाइयों को पृथक् २ धंधा सीखने मे लगाया था किन्तु, उसको पढ़ने का

शौक है यह जान कर उन्होंने इसको आठ वर्ष की उम्र में बोस्टन की व्याकरण-शाला में पढ़ने को बिठा दिया। उसके पिता का विचार इसको पादरी बनाने का था। उसका काका भी यही चाहता था। पाठशाला में प्रविष्ठ हुए एक वर्ष भी पूरा नहीं हुआ था कि फ्रेंकलिन अपनी कक्षा में सब से अव्वल हो गया। कुछ ही समय में वह ऊपर की कक्षा में चढ़ा दिया जाता, किंतु, इस के पिता ने यह सोचा कि इस पढ़ाई से मुझे विशेष प्रयोजन नही। इसकी अपेक्षा व्यवहारोपयोगी शिक्षा से मेरे बच्चे को अधिक लाभ होगा। इस कारण उसने फ्रेंकलिन को उस पाठ-शाला से उठा कर जार्ज ब्राउनेल नाम के एक सुविख्यात गुरु की चटशाला मे अक्षर जमाने और हिसाब किताब सिखाने को बिठा दिया।

अक्षर जमवाने और हिसाब सिखाने में जार्ज बाउनेल बड़े दक्ष थे। इस विषय में उन के समान योग्यता वाला आदमी उस समय वहाँ कोई नहीं था। किन्तु, उन के पास एक वर्ष तक रह कर भी फ्रेंकलिन को गणित नहीं आई यह देख कर उस के पिता ने दस वर्ष की उम्र में उस को वहाँ से भी उठा लिया और अपने घरू धंधे में डाला। आरम्भ में उसको मोमबत्ती के घर बनाना, फ़ार्म भरना, दूकान पर बैठना और घूम फिर कर माल बेचना यह काम सौंपा। किन्तु फ्रेंकलिन को यह पसन्द न था इस कारण वह इन कामों में ध्यान नहीं देता। उसको शिक्षा देने के लिये उसका पिता सोलोम का यह वचन बार २ सुनाया करता:—"तू किसी मनुष्य को अपने धंधे मे उद्योगी देखता है? ऐसा मनुष्य राजा के पास खड़ा रहता है। हल्के आदमियों के पास नहीं ठह-रेगा।" ५० वर्ष के पश्चात् फ्रेंकलिन को राजा लोगों के साथ खड़ा रहने का ही नहीं बल्कि उन के साथ में भोजन करने तक का अवसर मिला। उस समय वह इस उपदेश को याद किया करता।

फ्रैंकलिन को पानी में तैरने और छोटी डोंगी में बैठ कर सैर करने का बड़ा शौक था। तैरने की कला वह बचपन से ही खूब सीख गया था। बड़ा होने पर तो वह उस में खूब निपुण होगया और उसने उसकी कई नई नई रीतियां निकाल लीं।

एक समय बेञ्जामिन एक तालाब के किनारे पतंग उड़ा रहा था। जब पतंग खूब चढ़ गया तो उसने डोर का एक सिरा एक झाड़ में बाँध दिया और तालाब में तैरने लगा। कुछ देर पानी में रह कर वह बाहर निकला और डोर का सिरा हाथ में लेकर फिर पानी मे कूदा पड़ा। पानी पर पड़े रह कर पतंग के ज़ोर से उसके सहारे तैरना भी उसे आगया। बिना कुछ ज़ोर किये या हाथ पाँव हिलाये वह बराबर तैरने लगा। वह लिखता है कि:—
"मैंने तैरने की इस नई क्रिया का फिर कभी प्रयोग नही किया। किन्तु, यह मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि इस रीति से भी पानी पर तैरा जा सकता है।"

उसको तैरने की कला खूब आती थी और उधर पिता के धंधे में उसकी तबियत नही लगी इस कारण उसने खलासी बनना चाहा। किन्तु, उसके बाप को यह बात पसंद न थी। इस कारण उसको इससे दुःख हुआ। इसी समय सन् १७१५ ई० में उसका काका भी अपने अवशिष्ट जीवन को वहीं बिताने के अभिप्राय से अपने लड़के सेम्युअल और भाई जोशिया के पास इङ्गलैण्ड से अमेरिका आगया। अतः पिता और चचा के समझाने बुझाने और उपदेश करने से बेञ्जामिन को अपना विचार बदलना पड़ा।

उसका काका अपने पासकी पुस्तको और व्याख्यानों के संग्रह को साथ ले आया था। वह जो कुछ जानता था सो सब उसने

बेञ्जामिन को खूब सिखाया। चार वर्ष तक वह अपने भाई अर्थात् बेञ्जामिन के पिता के घर ही रहा। इसके पश्चात् अपने लड़के सेम्युअल के पास रहने लगा। उसकी मृत्यु ७७ वर्ष की अवस्था में सन् १७२७ में हुई।

फ्रैंकलिन की वास्तविक शिक्षा उसके घर में ही हुई। उसके सच्चे गुरु उसके माता पिता और काका ही थे। लिखने पढ़ने का शौक़ उसको बचपन से ही था। उसके पास जितना भी रुपया पैसा आता उसको वह पुस्तकें ख़रीदने में ही व्यय करता। वह ऐसी ही पुस्तकों को पढ़ता था जिससे उपयोगी और स्थायी ज्ञान प्राप्त हो। वह जो कुछ पढ़ता, बड़े ध्यान और मनन से। इसीसे उसको पूरा लाभ पहुंचता था। बनियन की "पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" नामक पुस्तक को उसने सब से पहिले देखा था। उस से उसका ज्ञान और अनुभव खूब बढ़ा। वह समय २ पर उस पुस्तक की बहुत प्रशंसा किया करता था। इस पुस्तक को देख लेने पर उसकी इच्छा हुई कि जान बनियन के रचे हुए और २ ग्रन्थों को भी देखे। उसने उन सब ग्रन्थों को बड़े परिश्रम से इकट्ठा किया। और जब उनको देख चुका तो उन्हें बेच कर उस मूल्य से उसने बर्टन का ऐतिहासिक संग्रह ख़रीदा। उसके पिता के छोटे से पुस्तकालय में विशेष कर धार्मिक पुस्तकों की ही प्रधानता थी। उनमें से फ्रैंकलिन ने अधिकांश को पढ़ डाला। "प्लुटार्क का जीवन चरित" फ्रैंकलिन का दूसरा आदरणीय ग्रन्थ था। डीफो कृत "एसे आन प्रोजेक्टस्" अर्थात् "उपयोगी निबन्ध" नामक पुस्तक पढ़ने से भी उसको बड़ा लाभ पहुंचा। ८० वर्ष की आयु में सेम्युअल मेथर नामक एक गृहस्थ को फ्रेंकलिन ने लिखा था कि "जब मैं छोटा था तो "उपयोगी निबन्ध" नामक पुस्तक मुझे कहीं से मिल गई थी। मुझे ऐसा

मालूम होता है कि यह तुम्हारे पिता 'काटन मेथर' की लिखी हुई है। मैंने इस पुस्तक को एक सज्जन से ली थी। उस समय इसके ऊपर के कई पृष्ठ फटे हुए थे। किन्तु, उसमें से जितना हिस्सा रहा था उसीके अध्ययन से मेरे विचार ऐसे सुधर गये थे कि जिससे मेरे जीवन पर एक अद्भुत प्रभाव पड़ा। आपके कथनानुसार परोकारी नहीं। किंतु, यदि मैं ससार का यत्किञ्चित उपकार करने वाला भी हुआ हूं तो उसका श्रेय इस पुस्तक के रचयिता को है। जिनका मैं बड़ा आभारी हूं।"

फ्रेंकलिन को बचपन में उस के भाई बहिनो के साथ देवालयो मे जाना पड़ता था। वहाँ जाकर वह मेयर-पादरी का उपदेश सुना करता था। फ्रेंकलिन का पिता जोशिया स्वयम् भी कट्टर धार्मिक था। किन्तु, अपने विचारों के अनुसार ही उसकी सन्तति भी धार्मिक कार्य्य करे ऐसा वह किसी से आग्रह नहीं करता था। प्रतिदिन भोजन करने से पहिले और बाद मे वह बड़ी देर तक ईश-वन्दना किया करता था। बालक फ्रेंकलिन के विषय में एक बात यह भी कही जाती है कि एक समय जाड़े के दिनों में घर के भीतर बहुत सी सामग्री तैयार हुई देख कर उसने अपने पिता से कहा कि "बाबा! इतनी ही सामग्री पर इतनी लम्बी प्रार्थना कर डालोगे तो फिर पीछे से बहुत समय बच जायगा।"

इस प्रकार फ्रेंकलिन ने अपना बाल्यकाल बोस्टन नगर मे बड़े आनन्द में बिताया। वह जब तक जिया, तब तक बोस्टन पर उसका प्रेम बराबर बना रहा। ८२ वर्ष की अवस्था में बोस्टन शहर के सम्बन्ध में एक कागज पर कुछ लिखते हुए उसने यह लिखा था:—मेरे इस पवित्र जन्म स्थान और प्यारे नगर में

बाल्य काल की भाँति जीवन बिताने में मुझे बड़ा आनन्द आता है। वहाँ के रीतिरिवाज, रहन सहन और बोलचाल आदि किसी भी बात को जब कहीं मैं देखता हूँ तो मुझे उसकी याद आने लगती है..................."

प्रकरण दूसरा।

छापेखाने में शिष्य

सन् १७१८ से १७२३

फ्रेंकलिन का भाई जॉन—पिता के धंधे को नापसन्द करना—पिता पुत्र का धंधा देखने को जाना—भाई जेम्स–छापेखाने का काम सीखना पसन्द करना—जेम्स का शिष्य—उस समय का बोस्टन—पुस्तक वेचने वाले के एजेन्ट द्वारा पढ़ने को पुस्तकें लेना—मेथ्यु आडम्स—लावनी और ग़ज़लें लिखने का शौक़—फ्रेंकलिन का साथी जान कोलिन्स—वाद विवाद—इबारत सुधारने के लिये परिश्रम—पाठशाला की पुस्तकों की पुनरावृत्ति—साक्रेटीज़ के वाद विवाद करने का ढंग—बोलने में नम्रता—न्यू इंगलैण्ड कुरेण्ट—सामयिक पत्रों में फ्रेंकलिन का सब से पहिला लेख—न्यू इंगलैण्ड कुरेण्ट पर आपत्ति—जैम्स को क़ैद—युवक बेञ्जामिन अधिपति—प्रेस की स्वतन्त्रता—न्यू इंगलैण्ड कुरेण्ट का विस्तार।

दो वर्ष तक, अर्थात् जब तक बारह वर्ष का हुआ तब तक फ्रेंकलिन अपने पिता के काम धंधे में सहायता देता रहा। उसका एक बड़ा भाई जॉन फ्रेंकलिन उसी के अनुसार पिता के धंधे में छोटी उम्र से ही मदद दे रहा था परन्तु, अब वह विवाह कर के होड टापू में जा बसा था और वहाँ उस ने साबुन और मोमबत्ती बनाने का अपना एक स्वतन्त्र कारखाना

खोल दिया था। इस कारण फ्रैंकलिन के पिता को उस की (अर्थात् फ्रैंकलिन की) अधिक आवश्यकता होगई थी। फ्रैंकलिन ने सोचा कि जिस धधे में मेरी रुचि नहीं है मुझे अब उसी में लगना पड़ेगा इस कारण जब वह कुछ बेदिल सा मालूम होने लगा तो उस के पिता ने उसको अपने इच्छानुसार धधे में लगाना ठीक समझा। पिता पुत्र दोनों सुतार, खरादी, ठठेरे आदि के कारखानों को देखने जाते। फ्रैंकलिन की किस धधे पर विशेष रुचि है इस बात को उसका पिता बड़ी युक्ति से देखा करता था ताकि पता लग जाने पर उसको उसी धंधे में लगावे। अंत में लड़ाई के हथियार बनाने का काम फ्रैंकलिन के लिये निश्चित हुआ। फ्रैंकलिन का चचेरा भाई (अर्थात् उस के काका का लड़का) लण्डन से यह काम सीख आया था और उसने उसका बोस्टन नगर में एक कारखाना भी खोल रक्खा था। यह धंधा रुचिकर होता है या नहीं यह देखने को फ्रैंकलिन के पिता ने उस को अपने भाई के लड़के के कारख़ाने में भेजना शुरू किया। लेकिन, सेम्युअल चाहता था कि इसकी उसको कुछ फ़ीस मिले। यह बात फ्रैंकलिन के पिता को ठीक नहीं लगी इस कारण उस ने उसको फिर घर पर बुला लिया।

पहिले फ्रैंकलिन का बड़ा भाई जेम्स फ्रैंकलिन घर से भाग कर इङ्गलैण्ड चला गया था। वहाँ से छापेख़ाने का काम सीख कर वह सन् १७१७ में छापने का प्रेस तथा टाइप लेकर पीछे बोस्टन में आगया और वहाँ उसने एक प्रेस खोल दिया। किन्तु, इस में उसको अच्छा लाभ होता नज़र नहीं आया। इधर फ्रैंकलिन और उस के पिता भिन्न २ कारीगरों के धंधे देखने को जाया करते थे तो प्रेस खोलने का ख़याल उन के दिल में नहीं आया था। या तो इस का यह कारण था कि वे जानते थे कि अपने

कुटुम्ब मे एक आदमी इस काम को करता ही है-या यह सोच कर कि जेम्स को प्रेस खोलने में कुछ लाभ नहीं हुआ तो अपने को कैसे होगा। जो हो, अब उनका ध्यान-प्रेस खोलने की ओर भी गया। फ्रेंकलिन को पढ़ने का शौक़ तो था ही, उसके पिता ने भी सोचा कि कदाचित प्रेस के काम में इसकी यह रुचि बढ़ जाय। इसके भाई को प्रेस सम्बन्धी खूब जानकारी थी इस कारण फ्रेंकलिन के लिये यह एक उत्तम सुयोग था। अपने पिता का धंधा करने की अपेक्षा यह काम अच्छा तो लगा किन्तु, फिर भी वह कुछ दिनों तक आनाकानी ही करता रहा। अन्त में वह समझ गया और उसने वही धंधा सीखना स्वीकार कर लिया। जिस समय फ्रेंकलिन को उसके भाई के पास शिष्य की भाँति रखा गया था उस समय उसकी आयु केवल १२ वर्ष की थी। शर्त यह हो चुकी थी कि २१ वर्ष का हो जाने तक फ्रेंकलिन को शिष्य की भाँति रहना और काम करना पड़ेगा। केवल अखीर साल में प्रति दिन काम पर आने की दशा में उसको दूसरे मजदूर के बराबर वेतन दिया जायगा। फ्रेंकलिन की बुद्धि तो प्रखर थी ही थोड़े ही समय में उसने प्रेस सम्बन्धी अच्छा ज्ञान बढ़ा लिया और इस प्रकार वह अपने भाई के लिये बड़ा सहायक हो गया।

फ्रेंकलिन शिष्य की भाँति रहा उन दिनो में भी बोस्टन शहर इस समय की भाँति विद्या प्रचार और पुस्तकाभिरुचि के लिये प्रसिद्ध था। फ्रेंकलिन के उत्पन्न होने से २० वर्ष पहिले बोस्टन मे केवल ५ पुस्तक-विक्रेता थे वही अब बढ़ कर १० हो गये थे। वहाँ के निवासी अधिकतर पुस्तकें विलायत से मँगवाया करते थे और छोटे २ ट्रैक्ट, व्याख्यान, धार्मिक निबन्ध आदि बोस्टन में भी छपवाये जाते थे। पुस्तक विक्रेताओं के

यहाँ धार्मिक पुस्तकों की बिक्री सब से अधिक होती थी। इङ्ग-लैण्ड में जो पुस्तक लोकप्रिय हो जाती उसके पढ़ने वाले अमे-रिका में भी बहुत हो जाते और इस कारण पुस्तक विक्रेता लोग इन पुस्तकों को अधिक संख्या में मँगवाया करते थे। फ्रेंकलिन को भी पढ़ने का शौक़ ख़ूब था। किन्तु, पुस्तकें ख़रीदने को पैसे नहीं थे। उसने पुस्तक विक्रेताओं के नौकरों से परिचय कर लिया इस कारण उनके द्वारा उसको अपनी इच्छानुसार सब प्रकार की पुस्तकें देखने को मिल जाती थीं। नौकर लोग मालिक से छिप कर उसको एक पुस्तक दे आते और जब वह पढ़ कर वापिस कर देता तो उसको ले जाकर यथास्थान रख देते। मालिक को ख़बर न हो, अथवा यह न जान पड़े कि यह पुस्तक कहीं बाहर गई थी इस कारण शाम को ली हुई पुस्तक रात में पढ़ कर उसको सुबह ही वापिस लौटा देनी पड़ती थी। आत्म-चरित्र में फ्रेंकलिन कहता है.—"इस प्रकार ली हुई पुस्तक को पूरी पढ़ डालने के लिये मुझे कई बार रात भर अपने विस्तर पर बैठे बैठे ही बीत जाता था"।

संयोग से कुछ दिन के बाद मेथ्यु आडम्स नामक एक व्या-पारी प्रेस सम्बन्धी काम के लिये फ्रेंकलिन के भाई जेम्स के कारख़ाने में आने लगा। इसके पास पुस्तकों का अच्छा संग्रह था। फ्रेंकलिन का उससे परिचय हो जाने पर वह उसको अपना पुस्तकालय दिखाने के लिये अपने घर पर ले गया और उससे कहा कि आपको जो पुस्तक पढ़ने को चाहिये मेरे यहाँ से ले जाया करें। ऐसा हो जाने पर फ्रेंकलिन को पढ़ने का ख़ूब सुयोग मिला। शुरू में उसने बहुत से काव्य-ग्रन्थों को देखा। काव्य में तो उसकी रुचि पहिले हो ही चुकी थी जब उसका काका उसको अपने पत्र में विनोद पूर्ण काव्य लिख २ कर भेजा करता था।

यहाँ जब उसने काव्य का अच्छा अध्ययन कर लिया तो उसकी कविता करने की इच्छा और भी बलवती हो गई। उसने कुछ कविता लिखना आरम्भ किया और इधर उसके भाई ने भी यह सोच कर कि उसको कविता लिखने पर कुछ मिल जाया करेगा अपनी ओर से भी और उत्तेजना दी। उन दिनों मे सर्व साधारण में गाई जाने वाली लावनियो को लोग बहुत पसन्द करते थे और उनकी खपत भी अच्छी होती थी। खूनी को फाँसी, लुटेरो की बदमाशी, भयङ्कर अपराध आदि विषयों पर लावनियो की रचना होती और उनको लोग नगर मे घूम फिर कर बेचते। अपनी इच्छा और भाई की उत्तेजना से फ्रेंकलिन ने भी ऐसे ही कुछ विषय चुन कर उन पर कविता लिखने को कलम उठाई। उसने दो गीतो की रचना की। एक का नाम "दी लाइट हाउस ट्रेजेडी" था और उसमे केप्टिन वर्थीलेक नामक एक मनुष्य तथा उसकी दो लड़कियो के डूब मरने के सम्बन्ध में करुणारस पूर्ण वर्णन था। दूसरा गीत—"ब्लेक वियर्ड" नाम के एक विख्यात लुटेरे को पकड़ने के सम्बन्ध में था। फ्रेंकलिन स्वयम् कहता है कि—"मेरी ये दोनो रचनाएँ बिल्कुल टूटी-फूटी और अलंकार रहित होने के कारण रद्दी की टोकरी में फेक देने योग्य थी क्योंकि इन्हे रचना नहीं, बल्कि तुकबन्दी ही कहा जा सकता था। छपने के पश्चात् उनको बेचने के लिये मेरे भाई ने मुझको ही भेजा। पहिली कविता का विषय बहुत ताजा था और उसकी चर्चा सर्व साधारण में पहिले से ही खूब हो चुकी थी, इस कारण उसकी खपत बहुत हुई। इससे मैं मारे प्रसन्नता के फूला न समाया। लेकिन, मेरे पिता ने मेरी सारी रचना को हँसी मे टाल कर मुझे हतोत्साह कर दिया और कहा कि तुकबन्दी करने वाले हमेशा भिखारी ही रहते हैं। इससे मैं कवि होते होते बच गया। जो कदाचित्त हो जाता तो मै वास्तविक कवि

हो भी नहीं सकता था" पिता के कहने को मान कर फ्रैंकलिन ने कविता करना छोड़ दिया और इसके पश्चात् वह गद्यात्मक लेख लिखने में परिश्रम करने लगा।

बोस्टन में फ्रैंकलिन का साथी एक मित्र और था—जिसको पढ़ने लिखने का ऐसा ही शौक़ था। किन्तु, वह बड़ा चटोरा और वादविवाद करने वाला था। उस का नाम जान कोलिन्स था। अपने पिता के पुस्तक भण्डार में से धार्म्मिक वादविवाद की पुस्तकें पढ़ कर फ्रैंकलिन भी बड़ा तर्क वितर्क करने वाला होगया था। एक समय इन दोनों मित्रों में परस्पर "स्त्रियों को शास्त्रीय ज्ञान सम्पादन करने से लाभ है या नहीं" इस विषय पर विवाद हुआ। कोलिन्स का अभिप्राय यह था कि स्त्रियों की बुद्धि ऐसी नहीं होती कि वे ऐसा ज्ञान प्राप्त कर सकें। किन्तु, फ्रैंकलिन इस के विपरीत था। वह अपने मित्र की भांति चटोरा नहीं था। उसको ऐसा जान पड़ा कि मेरे मित्र की दलीलों से नहीं किन्तु उस के बोलने की खूबी से मुझे चुप होना पड़ता है। उस समय बिना किसी निश्चय पर आये वे अपने २ घर गये। फ्रैंकलिन ने अपनी सब दलीलें एक कागज़ पर लिख डालीं और उनकी नक़ल कर के कोलिन्स के पास भेज दीं। उसने उत्तर दिया। इसी प्रकार ३-४ बार दोनों में इसी विषय पर पत्रव्यवहार होजाने के पश्चात् सारा पत्रव्यवहार फ्रैंकलिन के पिता ने देखा। विवादास्पद विषय पर उसने अपना कोई मत नहीं दिया किन्तु, फ्रैंकलिन को बताया कि:—"तेरी अपेक्षा तेरा मित्र अधिक स्पष्ट और शुद्ध इबारत लिखता है और यही कारण है कि उसमे एक ख़ास सुन्दरता आजाती है"। शब्द विन्यास और विरामादि चिह्न लगाने में तेरे साथी की अपेक्षा तू कहीं अच्छा है। किन्तु, लेखनशैली की प्रौढ़ता और स्पष्टता में तू उस से बहुत गिरा हुआ है।" पिता

का कहना फ्रैंकलिन को ठीक मालूम हुआ और उसी दिन से वह अपनी लेखनशैली सुधारने पर पूरा लक्ष्य देने लगा।

उसी समय "स्पेकटेटर" नामक पुस्तक का एक भाग उस के हाथ लगा जिस को पढ़ने में उसे बड़ा आनन्द आया। उसने उसकी लेखनशैली का अनुकरण करना आरम्भ किया। कोई भी निबन्ध पढ़ कर उसके प्रत्येक वाक्य का सारांश वह एक काग़ज़ पर लिख लेता और कुछ दिन के पश्चात् उसी निबन्ध को फिर अपनी समझ से लिखता और अपने लिखे हुए का उस निबन्ध से मिलान करता। किसी समय वह किसी बात को गद्य से पद्य मे लिखता और फिर पद्य को गद्य मे। उस को निश्चय होगया कि कोरी तुकबन्दी कर लेने से कोई कवि नहीं हो सकता। किन्तु, हाँ अभ्यास और परिश्रम करने पर इस का दूसरे ढँग से अच्छा उपयोग हो सकता है। कभी २ वह किसी निबन्ध के प्रत्येक वाक्य का सारांश काग़ज़ के जुदे जुदे टुकड़ों पर लिखता जाता और फिर उनको मिला कर कुछ दिन के पश्चात् क्रमबद्ध करने का प्रयत्न करता। अपने लिखे हुए का असली निबन्ध के साथ मिलान करने पर उस को जो २ त्रुटियाँ दिखाई देतीं उन को वह सुधार लेता। किन्तु, कभी २ उसको असली निबन्ध की अपेक्षा अपने लिखे हुए में कुछ विशेषता मालूम होती यह देख कर उस को भरोसा होता कि मैं भी किसी समय अच्छा लेखक बन सकूंगा।

उस समय की प्रचलित पाठ्य पुस्तकों को उस ने फिर से पढ़ डाला। कोकर का गणित बहुत कठिन गिना जाता था और विशेष कर विद्यार्थियों के लिये तो वह बड़ा ही जटिल था। उस गणित को सीख लेने के लिये उस ने दो बार प्रयत्न किया, किन्तु उस को सफलता न हुई। गणित में कमज़ोर होने से उस को बड़ी

शरम आने लगी। इस कारण इस बार जब उसने इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक देखा तो वह बड़ी सरलता से गणित भी अच्छी सीख गया। इसी प्रकार उस ने एक अङ्गरेज़ी भाषा के व्याकरण और एक नौका-शास्त्र की पुस्तक को देखा। लॉक के बनाये हुए "एसे ऑन ह्युमन अण्डरस्टेण्डिंग" और "दी आर्ट ऑफ़ थिंकिंग" तथा जीनोफ़ेन के "मेमोरेबीलीआ" ये तीन पुस्तकें भी उसने पढ़ डालीं। इन में अख़ीर की पुस्तक उस को बहुत पसंद आई। सत्य शोधन करने वाले से नम्रता करना तथा अपने विपक्षी से उलझन भरे हुए प्रश्न करने की सोक्रेटिस की वाद-विवाद की रीति उसने अख्तियार की और साफ़ इन्कार कर देना तथा छाती ठोक कर इन्कार करने की रीति छोड़दी। इस विषय में फ्रैंकलिन अपने आत्मचरित में इस प्रकार लिखता है:—"यह ढग मुझ को बहुत अच्छा लगता इसीसे मैं बार बार उस का प्रयोग करता। इस में मैं ऐसा प्रवीण होगया कि मेरा और मेरे पक्ष में रहने वाले का यदि किसी ज्यादा अक़लमन्द आदमी से मुक़ाबला होजाता तो मैं उसको हरा देता। उन से मैं भी ऐसी बातें क़बूल कराता और अपनी अकाट्य युक्तियों से उन्हें ऐसी उलझन में डालता कि उन्हें कुछ नहीं सूझ पड़ता। कुछ वर्ष तक मैंने अपना यही ढंग रक्खा। किन्तु, फिर धीरे धीरे छोड़ दिया। केवल नम्रता और सावधानी से बोलना ही मैंने अख़्तियार कर लिया। वाद-विवाद में मैं "बेशक" अथवा किन्हीं ऐसे ही छाती ठोक कर बोलने के शब्दों का प्रयोग नहीं करता बल्कि इन के स्थान पर इस प्रकार बोलता कि:—"मुझे मालूम होता है कि (अथवा) मेरा ऐसा ख़याल है कि ऐसा नहीं ऐसा होना चाहिये। अमुक अमुक कारणों से मुझे ऐसा मालूम होता है कि (अथवा) मुझे ऐसा ख़याल नहीं करना चाहिये कि ऐसा नहीं, ऐसा है। ऐसा नहीं ऐसा हो, ऐसा मुझे नहीं जान पड़ता यदि मैं भूलता

न होऊँ तो ऐसा नहीं, ऐसा है। दूसरों के मन पर मेरा प्रभाव डालने, अपने विचारों को समझाने, और मैं कहूँ उसके अनुसार उनको चलाने में यह ढग मुझ को बहुत ही उपयोगी जान पड़ा। बात चीत करने का उद्देश ज्ञान प्राप्त करना और ज्ञान सिखाना, खुशी होना और दूसरों को खुश करना है। अतएव समझदार मनुष्यों को छाती ठोक कर बोलने का ढङ्ग अख्तियार कर के दूसरों का भला करने की अपनी रीति कम न करनी चाहिये। छाती ठोक कर बोलने के ढंग से दूसरे के मन में दुःख और विरोध उत्पन्न होता है और जिस उद्देश को लेकर मनुष्य बोलता है उस में उसको सफलता नहीं मिलती।

फ़्रैंकलिन को अभ्यास करने के लिये संध्या का समय मिलता था। शाक भाजी की ख़ुराक सम्बन्धी एक पुस्तक उसके देखने में आई थी जिसके अनुसार उसने माँस खाना छोड़ दिया था। किन्तु, उसके भाई को उसकी इच्छानुसार भोजन बनवाने में कुछ असुविधा होती थी इस कारण वह उस पर एतराज़ किया करता था। पुस्तक में लिखी हुई रीति से तरकारी बनाने की रीति फ़्रैंकलिन सीख गया था। इस कारण उस ने अपने भाई से कहा कि मेरे खाने में जो कुछ खर्च होता है उससे आधा आप मुझे दे दिया करें। मैं अपने खाने का स्वयम् प्रबन्ध कर लूँगा। भाई ने यह बात मान ली। फ़्रैंकलिन अपने लिये स्वयम् ही भोजन बनाने लगा। उस मे आधे में से भी आधा ख़र्च होता था और इस प्रकार उसको कुछ बचत रह जाती थी। इस बचत से उस को पुस्तकें ख़रीदने में बड़ी सहायता मिली, और सब से अधिक लाभ यह हुआ कि वह प्रातःकाल का नाश्ता प्रेस में ही कर लेता था, इसलिये उसका एक घण्टे का समय बच जाया करता था। सबेरे जल्दी उठने के कारण काम शुरू

होने से पहिले भी उस को एक घण्टे का समय मिल जाता, जिसको वह पुस्तकें पढ़ने में लगाता।

जेम्स फ्रेंकलिन का रोजगार दिन प्रति दिन बढ़ने लगा। सन् १७२०-२१ में उस ने एक समाचार पत्र निकाला और उसका नाम "न्यू इङ्गलैंड कुरेण्ट" रक्खा। इस से पहिले अमेरिका में "बोस्टन न्यूज़ लेटर" नामक केवल एक ही पत्र निकलता था। किन्तु, इसका चाहिये जैसा प्रचार नहीं था। जेम्स के मिलने वालों ने शुरू में उसको पत्र निकालने से रोका था क्योंकि उस समय बोस्टन में किसी पत्र का प्रचार होने की बहुत कम सम्भावना थी। किन्तु, जेम्स ने नहीं माना। उसके प्रकाशित किये हुए "न्यू इङ्गलैंड कुरेण्ट" का पहिला अंक १७२१ के अगस्त मास की १७ तारीख को प्रकाशित हुआ था। स्थानीय ग्राहको के पास पत्र पहुँचाने का काम बेञ्जामिन को सौंपा गया।

"न्यू इङ्गलैंड कुरेण्ट" दूसरे पत्र से भिन्न रीति-नीति का था। इस में बड़े जोशीले और रुचिकर लेखों का समावेश रहता था। इसके प्रकाशित होते ही "बोस्टन न्यूज़ लेटर" से जनता को अरुचि सी होगई। इस कारण उन में इस नये पत्र का प्रचार खूब बढ़ने लगा। इसके पश्चात् कुछ शिक्षित पुरुषो से जेम्स फ्रेंकलिन की मित्रता भी होगई, उनकी ओर से इसको लेखादि की अच्छी सहायता मिलने लगी। प्रायः वे लोग प्रेस में आते और जनता में उस के पत्र की कैसी प्रशसा हो रही है सो सब जेम्स को सुनाते। यह सुन सुनकर फ्रेंकलिन ने भी कुछ लिखने का विचार किया। किन्तु, प्रथम तो उसको प्रेस सम्बन्धी अपनी ड्यूटी सम्हालना और दूसरे ठीक समय पर ग्राहकों के पास पत्र पहुँचाना पड़ता था। ये काम ऐसे थे जिन से उसको काफ़ी समय नहीं मिलता था। इधर उसके भाई का व्यवहार भी उसके

साथ ठीक गुरु-शिष्य की भाँति था। बेञ्जामिन में कैसी बुद्धि और ज्ञान है इससे वह सर्वथा अपरिचित था। दोनों भाइयों में कई बार आपस में न कुछ बात पर बोल चाल हो जाया करती थी। जेम्स का स्वभाव कुछ तेज था इस से वह कभी २ तो बेंजामिन के थप्पड़ भी मार दिया करता था। दोनों अपनी २ शिकायत अपने पिता के पास ले जाते। आत्म चरित में फ्रैंक-लिन कहता है कि:—"मेरी शिकायत सच्ची होने के कारण प्रायः फैसला मेरे पक्ष में ही होता था" फ्रैंकलिन कुछ लिखना तो चाहता था लेकिन उसको भय था कि जेम्स उसको नहीं छापेगा क्योंकि उसकी दृष्टि में मैं लेखक बनने के सर्वथा अयोग्य हूँ। यह सोच-कर उसने अक्षर बदल कर एक लेख लिखा और उस में अपना नाम नहीं दिया, रात के समय उसने उसको जेम्स के कमरे में डाल दिया। जब प्रातःकाल जेम्स और उसकी मित्र-मण्डली इकट्ठी हुई तो सब ने उस लेख को देख कर उसकी बड़ी प्रशंसा की और लेखनशैली तथा विचार पटुता में उसको अच्छा समझ कर वे लोग इसका लेखक कौन होगा इसका अनुमान लगाने लगे। फ्रैंकलिन ने ये सब बातें सुनीं। उन लोगों ने उसके लेखक का अनुमान लगाते समय बड़े २ सुविख्यात पुरुषों के अतिरिक्त किसी का नाम लिया ही नहीं। सबने जेम्स को सम्मति दी कि यह लेख प्रकाशित करने योग्य है। यह सब देख सुन कर फ्रैंक-लिन को बड़ा हर्ष और प्रोत्साहन मिला। इसके पश्चात् उसने और २ कई लेख इसी प्रकार गुमनाम से भेजे। वे सब पहिले की तरह प्रशंसित हुए और छपे।

एक वर्ष तक "न्यू इङ्गलैण्ड कुरेण्ट" का कार्य्य बड़ी तेजी से चला। पत्र में अधिकारीवर्ग की आलोचना और साथ ही शासन सम्बन्धी टीका टिप्पणी भी रहा करती थीं। एक वर्ष तक

तो शासक लोग चुपचाप रहे। किन्तु, जब ज़ियादा पोल खुलने लगी तो वे सब उसके मुक़ाबिले में आये। सन् १७२२ के जून की ११वीं तारीख़ के "न्यू इङ्गलैण्ड कुरेण्ट" में न्यूपोर्ट से आया हुआ एक पत्र छपा था, उसमें यह लिखा था कि—"ब्लाक टापू से थोड़ी दूर पर लुटेरों का एक जहाज़ दिखाई दिया है, उसको गिरफ्तार करने के लिये सरकार ने दो जहाज़ तैयार किये हैं।" इस पत्र के अख़ीर में ये शब्द थे:—"बोस्टन में हमको यह ख़बर मिली है कि मसाच्युसेट की सरकार लुटेरों को पकड़ने के लिये एक जहाज़ तैयार कर रही है, उस जहाज़ के कप्तान पिटर पेपिलोन होंगे और वायु यदि अनुकूल होगा तो इसी मास में किसी दिन यह जहाज रवाना हो जायगा" दूरदर्शिता से की हुई सरकार की इस टिप्पणी से खीज कर राज्य प्रबन्ध करने वाले मत्री मण्डल ने जेम्स फ्रैंकलिन को बुलवाया। कुछ प्रश्नोत्तर हो जाने के बाद उसने स्वीकार किया कि पत्र का मुद्रक और प्रकाशक मैं ही हूँ। किन्तु, लेखक का नाम मैं नहीं बतला सकता। उत्तर देने में कुछ बेअदबी से काम लेकर जेम्स ने मंत्री मण्डल का अपमान किया। फ्रैंकलिन से पूछने पर उसने भी लेखक का नाम नहीं बतलाया और नौकर होने के कारण मालिक की गुप्त बात को 'प्रगट न करना सेवक का धर्म है, यह कह कर उसने माफ़ी चाही। मण्डल ने उसको माफ़ करके छोड़ दिया किन्तु, जेम्स के लिये यह निश्चय हुआ कि "उसका निकाला हुआ पत्र सरकार के प्रति अपमान प्रगट करता है इस कारण उसको बोस्टन के जेल में कैद रक्खा जाय"।

आठ दिन तक क़ैद में रहने के बाद जेम्स इतना घबराया कि उसने मंत्री मण्डल को नम्रतापूर्वक एक प्रार्थना पत्र भेजा जिसमें अपनी भूल को स्वीकार करते हुए क्षमा चाही, और

अपने को रिहा कर देने के लिये विनय की। इस अर्जी को मंत्री मण्डल ने मंजूर कर लिया और एक मास तक जेम्स को क़ैद रख कर छोड़ दिया गया।

जेम्स क़ैद मे था उस समय प्रेस और पत्र को बेंजामिन चलाता था। सरकार की स्वेच्छाचारिता से बेंजामिन और दूसरे लेखकगण डर नहीं गये थे। बल्कि, पहिले की अपेक्षा अब उन्होंने और भी अधिक जोशीले लेख लिखना शुरू कर दिया था। टीका टिप्पणी भी खूब की जाती थी। जेम्स के छूटने के बाद का एक अंक तो "मेगना चार्टा" मे से चुने हुए वाक्यों से भर दिया गया और उसमें साबित करके दिखाया गया कि जेम्स को निरपराध होने पर भी अनुचित रीति से कैद में रक्खा गया है। प्रेस की स्वतन्त्रता के लिये "न्यू इङ्गलैण्ड कुरेण्ट" में जो वाग्युद्ध होता था उसमे जनता की बड़ी सहानुभूति थी। जेम्स के छूटने के बाद ६ मास तक तो फिर भी सरकार बरदाश्त करती रही। किन्तु सन् १७२३ ई० के जनवरी मास की १४ तारीख के 'कुरेण्ट' में तो सरकार के प्रति ऐसा अपमानपूर्ण लेख निकला कि अब उससे बिना कुछ किये न रहा गया। इस लेख में गवर्नर और दूसरे अधिकारियों पर खूब ताने मारे गये थे। इतना ही नहीं, किन्तु धर्माचार्यों के दुर्गुण और उनकी मूर्खता का भी इसमें रहस्योद्घाटन किया गया था। जिस दिन इस लेख वाला अंक प्रकाशित हुआ उसी दिन मंत्री मण्डल ने हुक्म दिया कि "आज के कुरेण्ट मे कुछ वाक्य ऐसे छपे है जिस में पवित्र धार्मिक ग्रन्थ बाइबिल का जान बूझ कर बुरा अर्थ किया गया है, और सरकार, धर्म-गुरुओं और परगने के लोगों पर भी अनुचित टीका टिप्पणी की गई है। इस कारण सरकार को क्या करना चाहिये, यह जानने के लिये तीन आदमियों की

एक कमिटी मुकर्रिर की गई है।" दो दिन में ही कमिटी ने जाँच करके अपनी रिपोर्ट पेश की कि, उक्त लेख का अभिप्राय धर्म की निन्दा करना है। साथ ही इसमें बाइबिल का भी नास्तिकता से बुरा अर्थ किया गया है। पूज्य एवम् आदरणीय तथा विश्व-सनीय धर्म गुरुओ की हानि हो इस रीति से उस पर टीका टिप्पणी की गई है। सरकार का भी अपमान किया गया है और जनता की, सुख शान्ति मे बाधा पड़े ऐसा भी इसमें उल्लेख है। ऐसा अपराध फिर न हो, इसके लिये कमिटी की राय में पत्र के मुद्रक और प्रकाशक जेम्स फ्रेंकलिन को सरकार की ओर से सख्त हिदायत हो जानी चाहिये कि इस परगने के सेक्रेटरी को बतलाये बिना "न्यू इङ्गलैण्ड कुरेण्ट" या इसकी रीति नीति का कोई दूसरा पत्र या पुस्तक आदि न छापे और न प्रकाशित करे"। सरकार ने इस रिपोर्ट को स्वीकार करके उसके अनुसार जेम्स को हिदायत कर दी।

इस आज्ञा से बोस्टन में बड़ी खलबली मची। जेम्स फ्रेंक-लिन की सफाई सुने बिना ही सरकार ने ऐसी आज्ञा प्रचारित करदी यह बात सब को बहुत बुरी लगी। "फिलाडेलफ़िया मर्क-युरी" नामक पत्र के एक विशेष लेख में यह लिखा गया कि सर-कार के इस व्यवहार से हरएक मनुष्य यह जान सकता है कि सरकार धर्म के बहाने लोगों पर जुल्म करती है। साथ ही इस लेख में यह भी लिखा गया कि "हमारा बोस्टन का सम्वाद-दाता सूचित करता है कि बोस्टन के भटियारों को भय लगता है कि कहीं सरकार का सेक्रेटरी इजाज़त न दे तब तक रोटी सेकना और बेचना तो बन्द न कर दिया जाय।"

अब फ्रूँकलिन को काम करने का एक साधन रह गया। या तो पत्र को बन्द करदे या सरकारी आज्ञा का पालन करे। सरकार का हुक्म जारी होते ही उसकी मित्र मण्डली आफ़िस में इकट्ठी हुई और विचार करने लगी कि अब क्या किया जाय। सरकार की स्वेच्छाचारिता पूर्ण आज्ञा को उड़ा देने की एक युक्ति उन्होने निकाली। यदि जेम्स-फ्रूँकलिन के नाम से अब पत्र प्रकाशित हो तब तो बिना सेक्रेटरी को दिखाये सरकारी आलोचना सम्बन्धी मेटर छप नही सकता था। हां, यदि बेञ्जामिन को मुद्रक और प्रकाशक बना कर पत्र निकाला जाय तो उसमें सरकारी आपत्ति जैसी कोई बात नहीं हो सकती। यह सोच कर बेञ्जामिन को शिष्य बनाते समय जो इक़रारनामा उससे लिखाया गया उसको रद्द करके वापिस दे दिया। किन्तु, फिर भी बचे हुए वर्षों मे उससे नौकरी लेने का लाभ हाथ से न जाता रहे इस कारण उससे एक दूसरा इक़रारनामा गुप्त रूप से लिखा लिया गया। इसके बाद "कुरेण्ट" के नये अंक में अधिपति की हैसियत से बेञ्जामिन फ्रूँकलिन ने प्रगट किया कि "इस पत्र के संस्थापक और आदि प्रकाशक को ऐसा जान पड़ा कि सेक्रेटरी को दिखा कर लेख और संवाद छापने में उसके पत्र संचालन में कुछ लाभ नहीं होगा इस कारण इस पत्र का प्रकाशन उसने छोड़ दिया है।" मानों पत्र अब शुरू से निकल रहा हो इस तरह की एक विस्तृत विज्ञप्ति भी इस अंक में छापी गई। पहिले की भांति सरकार और पादरियों पर ताने मारना और उनकी टीका टिप्पणी करना इस नये संस्करण में भी जारी रक्खा गया। इस प्रकार कुरेण्ट पत्र उसके नये प्रकाशक की देख रेख में दिन प्रति दिन उन्नति करने लगा और उसका प्रचार भी और बढ़ गया। थोड़े दिन के बाद उसमें एक ऐसी विज्ञप्ति निकाली गई कि इस पत्र का

प्रचार दिन प्रति दिन खूब होता जा रहा है इस कारण इसके संचालक ने विज्ञापनदाताओं के लिये अपनी दर घटादी है। तीन ही मास मे पत्र का इतना 'प्रचार हो गया कि उसका वार्षिक मूल्य पहिले दस शिलिंग था वह बढ़ा कर अब बारह शिलिंग कर दिया गया तो भी ग्राहकों की संख्या बराबर बढ़ती ही गई।
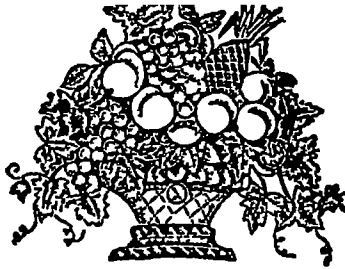
प्रकरण तीसरा

पलायन १७२३

भाई के साथ झगडा—बोस्टन से चले जाने का विचार—कोलिन्स ने जहाज़ किराये किया—मुसाफ़िरी—मछलियाँ खाने की दलील—न्यूयार्क में ब्रेड फर्ड से मुलाकात—नौकरी न मिलने से फ़िलाडेल्फ़िया जाना—फ्रेंक-लिन की उदारता—टिक्ड (मोटी रोटी) खाते हुए रास्ता तै करना—मिस्टर रीड का घर—क्वेकर के मंदिर में जाकर ऊँघ जाना—होटल में ठहरना।

कभी २ फ़्रैंकलिन और उसके भाई जेम्स में परस्पर झगड़ा हो जाया करता था ऐसा हम पिछले प्रकरण मे कह चुके हैं। बड़े भाई को अपने छोटे भाई की ख्याति होना खटकती थी। किन्तु, वास्तव में देखा जाय तो उसके गुणो को वह नहीं जानता था। यह अवश्य था कि फ़्रैंकलिन भी उसके साथ कभी २ अनु-चित बर्ताव कर बैठता था जिस से वह चिढ़ जाया करता था। शिष्यपने का इक़रारनामा रद्द हो जाने से अब फ़्रैंकलिन स्वतन्त्र होगया था, क्योंकि जो दस्तावेज़ उस से गुप्त रूप से लिखवाई गई थी उसका उपयोग तो जेम्स कर ही नही सकता था। इस समय फ़्रैंकलिन की आयु १७ वर्ष की थी। एक दिन दोनों भाइयो में पहिले की अपेक्षा अधिक बोल चाल होगई। किन्तु, जब जेम्स ने चाहा कि उस के थप्पड़ लगावे तो फ़्रैंकलिन ने उस के

तीन चार चपत लगा दिये। क्रोधावेश में फ्रेंकलिन बोल उठा कि—"मैं स्वतन्त्र हूँ, अब मैं तेरे पास नौकर नहीं रह सकता"। जेम्स के बर्ताव को देख कर कोई भी समझदार आदमी यह नहीं कह सकता था कि इस में फ्रेंकलिन का दोष है। तो भी फ्रेंकलिन ने ६५ वर्ष की आयु में लिखे हुए आत्म चरित में इसको अपनी पहिली भूल गिनी है।

फ्रेंकलिन के पिता ने उसको बहुत समझाया। किन्तु, उसने अपनी हठ न छोड़ी। बोस्टन के सब प्रेस वालो के घर जा जाकर जेम्स अपने साथ किये गये फ्रेंकलिन के झगड़े का हाल कह आया। अतएव जब फ्रेंकलिन उन के पास नौकरी के लिये गया तो सब ने उस से साफ इन्कार कर दिया। किन्तु, वह इस से कुछ अधीर न हुआ। उसने यह विचार किया कि ससार भर की सीमा तो बोस्टन में आही नहीं गई है। यदि मुझ में सची लगन है तो मेरे लिये नौकरी करने को बहुत क्षेत्र है। उस समय बोस्टन के अतिरिक्त न्यूयार्क और फ़िलाडेल्फ़िया में भी कई छापेख़ाने थे। फिलाडेल्फ़िया की अपेक्षा न्यूयार्क बोस्टन से नज़दीक था इस कारण उसने वहीं जाने का निश्चय किया। फ्रेंकलिन के मित्र जॉन कोलिन्स ने उसके भाग कर चले जाने के सम्बन्ध में सब प्रकार की व्यवस्था कर उस की सहायता की। न्यूयार्क जाने वाले एक जहाज़ में फ्रेंकलिन के लिये उसने टिकट ख़रीदा और कप्तान के पूछने पर उससे यह कह दिया कि यह गुप्त रूप से इसलिये जा रहा है कि एक लड़की से इसका अनुचित सम्बन्ध होगया है और लड़की का पिता इस से आग्रह कर रहा है कि विवाह कर ले।

फ्रेंकलिन के पास उस समय कुछ न था। इस कारण जहाज़ का किराया देने के लिये उसको अपनी कुछ अच्छी २ पुस्तकें बेचनी पड़ीं।

न्यूयार्क के रास्ते में एक दिन ब्लेक टापू के पास हवा न चलने से जहाज़ ने लंगर डाल दिया। उस समय मज़दूर लोग मछलियाँ पकड़ने लगे। फ्रेंकलिन माँस भक्षण का विरोधी हो चुका था अतः उसको खुराक के लिये प्राणियों को मारना बहुत बुरा लगता था। पहिले तो इस को भी मछली मारने का बड़ा शौक़ था किन्तु, अब वह उस को बड़ा भारी अपराध मानने लगा था। मछलियाँ पकड़ने का काम शुरू हुआ तब तक तो फ्रेंकलिन के वे विचार क़ायम रहे। किन्तु, जब उनको कढ़ाई में खूब मसाला डालकर भूना गया और उसको उसकी गंध आई तो वह सोचने लगा कि कहीं मैं गलती तो नहीं कर रहा हूँ। कुछ समय तक विचार और इच्छा मे झगड़ा होता रहा। किन्तु अन्त में विचारों को शक्ति के सामने पराजित होना पड़ा। मछलियो को चीरते समय उनके पेट में से जो दूसरी छोटी २ मछलियाँ निकली उन को देख कर फ्रेंकलिन सोचने लगा कि जब ये एक दूसरे को खाजाती हैं तो इनको खाने में अपना क्या हर्ज है? अस्तु।

बोस्टन से निकलने के बाद तीन दिन मे फ्रेंकलिन न्यूयार्क पहुँचा। उस समय उसकी आयु लगभग १८ वर्ष की थी। उस नगर में इस का किसी से परिचय नहीं था और न वह किसी का पत्र ही लिखाकर लाया था खर्च के लिये भी उसके पास कुछ न था। उस समय न्यूयार्क की बस्ती लगभग ७-८ हज़ार मनुष्य की थी। जिस में अधिकतर बड़े आदमी थे जो प्रायः अपना कार्य बाहर छपवाया करते थे, इस कारण प्रेस वाले को वहाँ अच्छी सफलता नही हो सकती थी। बोस्टन मे सन् १७०४ में एक सामयिक पत्र निकला था और फ़िलाडेल्फिया में सन् १७१९ में। लेकिन न्यूयार्क में तो सन् १७२५ तक एक भी पत्र नहीं निकला था। सन् १७२३ में जब फ्रेंकलिन वहाँ गया तो उस समय वहां

कोई पुस्तक विक्रेता भी नहीं था, केवल एक प्रेस था जिसके मालिक विलियम ब्रेडफ़र्ड के पास फ्रैंकलिन नौकरी करने को पहुँचा। विलियम ब्रेडफ़र्ड को छपाई का अधिक काम नहीं मिलता था और उसके पास कर्मचारी भी पूरे थे, इस कारण वह फ्रैंकलिन को अपने यहाँ नौकर न रख सका। किन्तु, फिर भी उसने कहा कि :—"मेरा लड़का फ़िलाडेल्फ़िया में है। उस के एक मुख्य कर्म्मचारी वीलारोज़ का देहान्त हो गया है। उसके पास जाओ। सम्भव है, वह तुम्हें कुछ काम दे सके"। जहाज़ की मुसाफ़िरी से फ्रैंकलिन ऊब गया था। किन्तु, फिर भी ख़ाली हाथ जाकर घर पर मुंह दिखाने की अपेक्षा कुछ तकलीफ़ उठाकर भी उसने फ़िलाडेल्फ़िया जाना अच्छा समझा। वह वहाँ जाने को तैयार होगया।

अपनी सन्दूक और दूसरा भारी सामान समुद्र की राह द्वारा पीछे से भेजने को रख कर फ्रैंकलिन ने एम्बोई जाने को एक नाव किराये पर की। उसके साथ हालेण्ड देश का निवासी एक शराबख़ोर नौकर भी था। नाव पुरानी, और सड़े गले बादबान वाली थी और उसको चलाने वाला मल्लाह भी केवल एक ही था। गवर्नर टापू तक पहुँच जाने के पश्चात् समुद्र में तूफ़ान आया। बादबान फटगया और नाव लाँग टापू की ओर जाने लगी। उसी समय वह हालेण्ड निवासी व्यक्ति समुद्र में गिर गया। किन्तु फ्रैंकलिन ने बड़ी युक्ति से उस को शीघ्र ही डूबते २ बचा कर नाव पर ले लिया। होश में आने पर उस मनुष्य ने अपनी जेब में से एक भीगी हुई छोटी सी पुस्तक निकाली और उसे सुखाने के लिये फ्रैंकलिन को देकर वह लेट गया। वह फ्रैंकलिन की अत्यन्त प्रिय पुस्तक "पिलग्रीम्स प्रोग्रेस" थी। उसकी जिल्द ऐसी सुन्दर और मनोहर थी कि जैसी फ्रैंकलिन ने कोई पुस्तक न देखी थी। अस्तु, हवा के वेग से नाव

खिंचती हुई लाँग टापू के किनारे आगई। वहाँ समुद्र की लहरें ऐसे जोर से उछल रही थीं कि नाव के बह जाने या टूट फूट जाने की आशंका थी इस कारण वे किनारे से कुछ दूर पर ही ठहर गये। किनारे पर उन्होंने कुछ आदमियों को आते हुए देखा। लेकिन, समुद्र की लहरो का ऐसा घोर शब्द हो रहा था कि नाव पर उनकी आवाज़ सुनाई नही देती थी। नाव पर खाने की कुछ व्यवस्था नहीं थी। किन्तु, जब तक तूफ़ान न रुक जाय तब तक चुप चाप भूखे प्यासे बैठे रहने के सिवाय कोई उपाय भी नहीं था। फ़्रेंकलिन, नाव चलाने वाला, और वह व्यक्ति रात भर नाव में इसी दशा में पड़े रहे और निमिष मात्र भी आँख मिलाये बिना उन्होंने सारी रात बड़ी कठिनाई से बिताई। प्रातःकाल हवा का ज़ोर कुछ कम हुआ। नाव आगे बढ़ी और तीसरे पहर को एम्बोई पहुँची। बराबर ३० घंटे तक तेज़ हवा और पानी में रहने के कारण फ़्रेंकलिन को शाम के वक्त बुखार आगया। किसी पुस्तक में उसने पढ़ा था कि ठण्डा पानी अधिक पीने से बुख़ार उतर जाता है। बिस्तर पर पड़े २ उसको यह बात याद आई तो उसने आज़माइश कर के देखा। ऐसा करने से उसको रात भर ख़ूब पसीना आया और प्रातःकाल उठा तो उस का बुख़ार बिल्कुल उतरा हुआ सा मालूम हुआ।

फ़िलाडेल्फ़िया जाने के लिये एम्बोई से ५० माइल बरलिंगटन तक पैदल चलना पड़ता था। फ़्रेंकलिन एम्बोई आया। उस दिन सुबह के वक्त बहुत बारिश हुई। किन्तु, वहाँ बिना काम ठहरना उसको अच्छा नहीं लगा इस कारण वह बरसते पानी में ही वहाँ से चल दिया। धीरे धीरे चल कर दो पहर तक रस्ते की एक धर्म्मशाला में पहुँचा और उस दिन वहीं ठहरने का निश्चय किया। यहाँ आकर वह किस आफ़त में फँस गया इस

प्रकार के विचार करते करते, उसका दिल भर आया और वह मन ही मन कहने लगा कि यदि घर न छोड़ता तो अच्छा था। वास्तव में इस समय उसकी दशा थी भी बहुत बुरी। बीमार हो जाने और बराबर सफ़र करने से उसका चेहरा फीका पड़ गया था, कपड़े मैले होगये थे और साथ ही फट भी गये थे।

दूसरे दिन फिर वह आगे चला और ऐसे झपाटे से चला कि शाम को बरलिंग्टन से १० मील पर जो एक गाँव आता था वहाँ पहुँच गया। फिर सुबह उठा, और बरलिंग्टन जा पहुँचा। जहाँ से फिलाडेल्फ़िया जाने के लिये १७ माइल फिर नाव में बैठना पड़ता था। शहर में से जाते हुए एक दूकानदार के यहाँ से उसने कुछ खाने को लिया और नदी की ओर चला। रास्ते में उसको खबर मिली कि यहाँ से प्रति शनिवार को फिलाडेल्फ़िया के लिये जो नाव जाया करती है वह रवाना हो चुकी है और मंगलवार तक वहाँ कोई नाव नहीं जायगी। अब उसने सोचा कि उस समय तक यहाँ किस के यहाँ ठहरना चाहिये। वह फिर उसी दुकानदार के पास गया जिसके यहाँ से उसने खाने को लिया था। फ्रैंकलिन की हालत ख़राब होगई थी किंतु इस अवस्था में भी उसकी बोलचाल से ऐसा मालूम होता था कि इस में अवश्य ही कोई असाधारण गुण है। इस से दूकानदार ने बड़े प्रेम के साथ उसको मगलवार तक अपने यहाँ ठहरने को कह दिया। इसी दिन शाम को फ्रैंकलिन नदी पर घूमने के लिये गया तो कुछ व्यक्तियों को बिठलाये हुए एक नाव उसको फ़िला-डेल्फ़िया जाती हुई नजर आई। उस में बैठकर जा सकने की उसके लिये व्यवस्था हो गई। वह थोड़ी ही देर में तैयार होकर आगया और नाव में जा बैठा। हवा न होने के कारण मल्लाह लोग नाव को हाथों से चलाने लगे। किन्तु, जब आधी रात

होजाने पर भी शहर न दिखाई दिया तो उन्होंने यह सोच कर कि शायद शहर पीछे रह गया है नाव को खेना बंद कर दिया। इतने में ही एक छोटी खाड़ी आई उस में नाव को डाल दिया। वहाँ उतर कर उन्होंने सबेरे तक ठहरने का निश्चय किया। इस स्थान पर कुपर की खाड़ी है। वहाँ से फिलाडेल्फिया पास ही है ऐसी जब किसी आदमी ने खबर दी तो उन्होंने नाव को फिर आगे बढ़ाई और थोड़ी ही देर में फ़िलाडेल्फ़िया दिखाई देने लगा। इस प्रकार रविवार को ८ और ९ बजने के बीच में नाव मारकेट स्ट्रीट बन्दर मे पहुँच गई। सब लोग किनारे पर उतरे। फ्रेंकलिन के पास इस समय एक डालर और १ शिलिङ्ग के बराबर तांबे का सिक्का था। उसने नाव खेने में मल्लाहों को मदद दी थी इससे उन्होंने फ्रेंकलिन से कुछ न लिया। किन्तु, फ्रेंकलिन ने आग्रह-पूर्वक उसके पास जो कुछ था वह सब उन्हें दे दिया। आत्म-चरित्र में फ्रेंकलिन लिखता है कि :—"मनुष्य के पास ख़ूब पैसा हो उस समय वह उदारता दिखावे उसकी अपेक्षा थोड़ा पैसा होने पर वह अधिक उदार हो जाता है।"

अब फ्रेंकलिन भूख, प्यास, थकावट और नींद के मारे सूख-कर लकड़ी होगया था। वह इधर उधर देखभाल करता हुआ शहर में जा रहा था कि उसको चने ले जाता हुआ एक लड़का मिला। उस से उस ने चने बेचने वाले की दूकान का नाम पूछा और पता लगाता हुआ वहीं पहुँचा। बोस्टन में वह कई दिन तक सूखे चने चबाकर ही रहा था इस से उस ने दूकानदार से उसी तरह के चने माँगे। किन्तु, जैसे वह चाहता था वैसे चने वहाँ नहीं बनते थे। इस से उस ने जो कुछ खाद्य पदार्थ हो वही तीन आने के दे देने को कहा। दूकानदार ने उसको बड़ी थाली में आ जायँ इतनी मोटी ३ रोटियाँ (टिक्कड़) दीं। तीन आने में

इतना माल फ्रैंकलिन को बहुत सस्ता नज़र आया। जेबों में जगह न होने से उसने एक २ रोटी बगल में दबाई और तीसरी को खाता हुआ आगे बढ़ा। चलते २ वह मारकेट स्ट्रीट में मिस्टर रीड नामक गृहस्थ के मकान के पास जा पहुँचा। मिस्टर रीड की १८ वर्ष की सुन्दर लड़की डेबोरा अपने मकान के दरवाज़े पर खड़ी थी। फ्रैंकलिन का विचित्र लिबास देख कर उसको बड़ा आश्चर्य्य हुआ। आगे चल कर हम पति-पत्नी हो जायँगे इस बात का ध्यान दोनों में से एक को भी न था। अपनी भावी पत्नी को मेरा यह लिबास कैसा विचित्र लग रहा है इस बात का फ्रैंकलिन को कुछ ख़याल न था। रोटी ख़तम हुई तब तक वह एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले तक घूमा और इसके बाद उस ने नदी पर जाकर अपना खाना पूरा किया। नाव में उस के साथ एक स्त्री और एक छोटा बच्चा भी आये थे, उन को कहीं आगे जाना था इस कारण नाव चलने की बाट देख कर वे नदी पर बैठे थे। फ्रैंकलिन ने उदारतापूर्वक बड़े प्रेम से बाक़ी बची हुई रोटी उस स्त्री और बच्चे को दे दी।

खाने पीने से निवृत्त होकर फ्रैंकलिन फिर मार्केट स्ट्रीट में आया। वहाँ कुछ आदमियों को उस ने अच्छे २ कपड़े पहिन कर एक ही रास्ते पर जाते हुए देखा। वह भी उन के साथ होगया, और क्वेकर पंथ के मंदिर में जा पहुँचा। प्रार्थना शुरू होने तक वह सब के साथ बैठा हुआ इधर उधर देखता रहा। प्रार्थना शुरू होने पर थका हुआ होने से वह ऊँघने लगा और उसके समाप्त हो जाने पर जब सब लोग चलने लगे तब भी वह ऊँघता ही रहा। एक आदमी ने उसको सचेत किया। यदि ऐसा न होता तो शायद वह ऊँघता ही रहता। वह वहाँ से उठा और लोगों को देखता भालता फिर नदी की ओर चला। रास्ते में

उसने एक भले आदमी से पूछा कि क्यों भाई, यहाँ विदेशियों के ठहरने के लिये कोई स्थान है क्या ? इस पर उसने उत्तर दिया कि वह सामने ही एक भोजनालय है। किन्तु, इस में इज्ज़तदार आदमी नहीं ठहरते। आप मेरे साथ चलें तो मैं आपको अच्छी जगह बतला सकता हूँ। फ़्रेंकलिन उसके साथ २ गया। थोड़ी दूर चलकर उस मनुष्य ने उसको एक भोजनालय बता दिया। फ़्रेंकलिन वहाँ जाकर ठहर गया। भोजन करते समय वहाँ के मालिक ने उस से कुछ प्रश्न किये इस से फ़्रेंकलिन ने समझा कि कदाचित् इसको यह सन्देह हुआ है कि मैं भाग कर चला आया हूँ। भोजन करने के पश्चात् वह सोगया। बीच में उसको ब्यालू करने के लिये उठाया गया किन्तु, वह फिर ऐसा सोया कि सुबह तक खुर्राटे ही लेता रहा। उसको घर छोड़े हुए आज ११ दिन हो गये थे। इस अवधि में वह एक दिन भी सुख की नींद नहीं ले सका था।
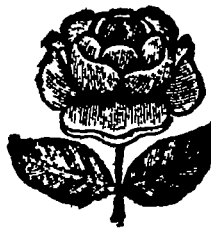
प्रकरण चौथा

फ़िलाडेल्फ़िया से लन्दन सन् १७२३-१७२४

एन्ड्रू ब्रेडफ़र्ड से मुलाक़ात—कीमर छापाख़ाने वाला—नौकरी मिली—मि० रीड के घर पर रहना—फ़िलाडेल्फ़िया में सुख से गुजरे हुए दिन—केप्टिन होम्ज़ का घर जाने के लिये आग्रह—फ्रेंकलिन ने अपना विचार दृढ़ रखा—गवर्नर कीथ का छापेख़ाने में मुलाक़ात करने को आना—स्वतन्त्र प्रेस खोलने के लिये सम्मति मिलना—प्रेस खोलने का गुप्त विचार—फ्रेंकलिन के पिता का सहायता देने से इन्कार करना—मेथर का ज्ञान दान—फ़िलाडेल्फ़िया जाने के लिये तैयार होना—न्यूपोर्ट में भाई जॉन से मिलना—मि० वर्न का बताया हुआ काम—न्यूयार्क में कोलिन्स से मिलना—कोलिन्स शराबी निकला—गवर्नर बर्ने से मुलाकात—मुसाफ़िरी का अनुभव—गवर्नर कीथ ने स्वयम् सहायता करने का वचन दिया। कोलिन्स की मित्रता का अंत—फ़िलाडेल्फ़िया में फ्रेंकलिन के साथी—मिलनसार स्वभाव—नुक्स निकालने वाले ओसवर्न का धोखा—डेवोरा रीड के साथ विवाह निश्चित होना—केप्टिन एनीस के जहाज़ में लन्दन जाने का विचार—राल्फ़ के साथ जाने को तैयार हुआ—काग़ज़ देने के लिये गवर्नर कीथ के वायदे पर वायदे—थेली में से काग़ज़ खोल डाले—लंदन पहुँचने पर काग़ज़ किसी काम के न रहे—मि० डेनहॉल की सलाह—हेमिल्टन वकील से जान पहिचान—कीथ के विषय में फ्रेंकलिन के विचार।

सवेरे उठकर फ्रेंकलिन ने खूब टीम टाम करके अपने मुसाफिरी के फटे हुए कपड़ों को पहना और वह जिसके नाम का पत्र लाया था उस प्रेसाध्यक्ष के घर पर गया।

इस सज्जन का नाम एण्ड्रू ब्रेडफर्ड था। उसने फ्रेंकलिन को बड़े आदर के साथ बिठलाया और भोजन भी अपने घर पर ही कराया। नौकरी का ज़िक्र छिड़ने पर उसने कहा कि "इस समय तो मेरे कारखाने में काफी नौकर हैं। हाल ही सेम्युअल कीमर ने एक नया प्रेस खोला है। इस कारण कदाचित् वह आपको रख सके। यदि वह न रक्खे तो आप आनन्द के साथ मेरे घर पर रहना। मैं फिलहाल आपको कुछ न कुछ काम दे दूंगा और कुछ ही दिन के बाद कोई और व्यवस्था कर दूंगा।"

फ्रेंकलिन शीघ्र ही कीमर के कारखाने में पहुंचा। एक छोटे कमरे में पुराना मुद्रण यन्त्र तथा कुछ घिसा हुआ टाइप रक्खा हुआ था और कीमर उसमें बैठा हुआ काम कर रहा था। फ्रेंकलिन की परीक्षा लेने के लिये कीमर ने उस से कुछ प्रश्न किये और कुछ काम लेकर देखा। युवक होशियार है यह देखकर कीमर ने कहा कि अभी तो मेरे पास काम नहीं है किन्तु थोड़े दिन के बाद मैं आप को नौकर रख सकूंगा।

फ्रेंकलिन ब्रेडफर्ड के घर पर वापिस आया और वहीं पर रह कर उसने उसके आफिस में कुछ दिन तक फुटकर काम किया। इसके पश्चात् पीछे से कीमर को जब कुछ सरकारी काम मिला तो उसने फ्रेंकलिन को बुलाया और नौकर रख लिया। कीमर के आफिस में फ्रेंकलिन नियमित रूपसे काम करने लगा। अपना नौकर दूसरे के घर पर रहे यह ठीक न समझकर उसने फ्रेंकलिन के लिये मिस्टर रीड के घर पर रहने और भोजनादि करने की सब व्यवस्था करदी। जिसके घर के सामने से फ्रेंकलिन रोटी खाता २ फिलाडेल्फिया में पहिले दिन गया था, वही यह मिस्टर रीड था। दिन पर दिन बीतने लगे। फ्रेंकलिन को वेतन ठीक मिलता था, और उसमें से वह युक्तिपूर्वक खर्च करके कुछ

न कुछ बचा लेता था। इस प्रकार अब उसके दिन पहिले की अपेक्षा कुछ अधिक सुख से कटने लगे।

थोड़े ही दिनों में उसका कई लोगों से परिचय होगया। वे लोग भी विद्या-प्रेमी थे। इस कारण उनके साथ उसका समय बड़े आनन्द में व्यतीत होता था। बोस्टन को तो अब वह याद भी न करता था। उसके भाई के अनुचित बर्ताव से उसके मन पर ऐसा प्रभाव पड़ गया था कि बोस्टन की याद करना अब उसे अच्छा नहीं लगता था। अलबत्ता अपने मित्र जॉन कोलिन्स के साथ उसका पत्र-व्यवहार जारी था और इस समय वह कहां है इसकी भी उसने इसको ख़बर देदी थी। किन्तु, इस बात को कोलिन्स ने वहां किसी से प्रगट नहीं की थी।

फ्रैंकलिन की एक बहिन राबर्ट होम्ज़ नामके एक व्यक्ति को ब्याही गई थी। वह बोस्टन और डिलावर के बीच में व्यापार के लिये आने जाने वाले एक जहाज़ का कप्तान था। न्यूकासल में उसको किसी व्यक्ति के साथ बात चीत करते हुए मालूम हुआ कि फ्रैंकलिन फ़िलाडेल्फ़िया में आ बसा है। उसका पता चलाकर होम्ज़ ने न्यूकासल से फ्रैंकलिन को एक पत्र लिखा और बोस्टन से उसके चले जाने पर उसके माता-पिता को कितना दुःख हुआ था इसका उस पत्र में सविस्तर वर्णन किया। साथ ही उसको घर लौट जाने का उपदेश दिया। इसके उत्तर में बेञ्जामिन ने भी बड़ी खूबी से एक पत्र लिखा जिसमें उसने उसके प्रति अत्यन्त विनयभाव दिखलाते हुए विस्तार से सारी हक़ीकत लिखी। घर छोड़ने का कारण क्यों उपस्थित हुआ? यह उसने खूब विवेचन करके लिखा और साथ ही अपना फ़िलाडेल्फ़िया में रहने का विचार भी प्रगट किया। इस पत्र को पढ़ कर उसके

बहनोई को विश्वास होगया कि फ्रैंकलिन इस सम्बन्ध में उतना दोषी नहीं है जितना वह उसको समझता था।

इस पत्र से राबर्ट होम्ज़ को फ्रैंकलिन का भविष्य बहुत अच्छा मालूम हुआ। जिस समय उसके पास यह पत्र पहुँचा उस समय पेन्सिलवेनिया का गवर्नर सर विलियम कीथ उसके साथ था। फ्रैंकलिन की लेखनशैली पर होम्ज़ मुग्ध होगया। उस ने वह पत्र सर विलियम को बतलाया, जिसको पढ़कर फ्रैंकलिन की योग्यता पर उसको भी बड़ा आश्चर्य हुआ। किन्तु इससे अधिक आश्चर्य्य गवर्नर को उस समय हुआ जब उसने सुना कि फ्रैंकलिन की आयु इस समय क्या है? उसने कहा कि "फिला-डेल्फिया में कोई अच्छा छापेखाने वाला नही है। ब्रेडफ़र्ड इस विषय का अच्छा ज्ञाता नहीं है और न उसको कुछ कारीगरी ही आती है। कीमर बदमाश और मूर्ख है। इस पत्र का लिखने वाला युवक बड़ा बुद्धिमान मालूम होता है। इसको उत्तेजना मिलनी चाहिये। यदि यह फ़िलाडेल्फ़िया में प्रेस खोले तो तमाम सरकारी काम मैं इसको ही दूं"।

एक दिन फ्रैंकलिन और कीमर ने प्रेस में काम करते हुए दो मनुष्यों को दूर से प्रेस की ओर आते हुए देखा। जब वे नज़दीक आगये तो कीमर ने उनको पहिचान लिया कि इन में से एक तो सर विलियम कीथ है और दूसरा कर्नल फ्रैंच। कीमर ने सोचा कि यह मुझ से मिलने आरहे हैं इसलिये वह उन का आदर करने को मकान पर से नीचे उतर कर उनके सामने आया। परन्तु, गवर्नर ने सब से पहिले उस से यह पूछा कि फ्रैंकलिन कहाँ है? और जब उसे मालूम हुआ कि फ्रैंकलिन मकान के ऊपर की छत पर प्रेस में है तो वह उस से मिलने को ऊपर गया।

फ्रेंकलिन का उसने बड़े आदर से अभिवादन किया, उसकी बड़ी प्रशंसा की और उसके साथ मित्रता करने की इच्छा प्रगट की। फिलाडेल्फिया में आते ही आप मुझ से क्यों न मिले इस का गवर्नर ने फ्रेंकलिन को बड़ा उलाहना दिया और अखीर में उस को पास ही के मुहल्ले में कर्नल फ्रेंच के साथ आने का निमन्त्रण दिया। उनकी यह सब बात चीत सुन कर कीमर आश्चर्य्योन्वित होगया। फ्रेंकलिन को भी इस से बड़ा आश्चर्य्य हुआ। किन्तु, फिर भी उसने उनके साथ जाना स्वीकार किया। तीनो व्यक्ति वहाँ से रवाना हुए और फ्रेंकलिन को वह रास्ता दिखला दिया जो सीधा पड़ता था। फ्रेंकलिन के बहनोई होम्ज ने गवर्नर से जो कुछ कहा था वह उसने फ्रेंकलिन से कहा और अपने पिता की सहायता से फिलाडेल्फिया में एक प्रेस खोलने का अनुरोध किया तथा अन्त मे यह भी कहा कि "तुमको अवश्य सफलता होगी, मैं और कर्नल फ्रेंच पेन्सिल वेनिया तथा डिलावर का तमाम सरकारी काम तुमको ही देंगे।"

फ्रेंकलिन—"मुझे विश्वास नहीं होता कि मेरे पिता इसके लिये सहर्ष अपनी अनुमति दे दें।"

सर विलियम—"तुम्हारे पिता को मैं एक पत्र लिख दूंगा। और उसमें उन्हें प्रेस खोलने से जो लाभ होगा वह अच्छी तरह समझा दूंगा। मुझे निश्चय है कि तुम्हारे पिता इस से अवश्य सहमत हो जायँगे"।

अन्त में यही निश्चय हुआ कि गवर्नर का पत्र लेकर फ्रेंकलिन शीघ्र बोस्टन जाय, और अपने पिता को समझा बुझाकर उसकी स्वीकृति ले। सब प्रकार का निश्चय न हो जाय तब तक बात गुप्त रक्खी जाय और फ्रेंकलिन कीमर के साथ बदस्तूर काम करता रहे। इस के पश्चात् तीनों व्यक्ति एक दूसरे से पृथक

हुए। सर विलियम कभी २ फ्रैंकलिन को अपने घर पर भोजन करने को बुलाता और उसके साथ ऐसा स्नेह का बर्ताव करता मानों वह उसका चिर परिचित है। उस समय गवर्नरी की पदवी वाला मनुष्य एक प्रेस वाले के साथ इस प्रकार बर्ताव करे यह कोई आश्चर्य्य जनक बात नहीं थी। सौ वर्ष पहिले छापेखाने का धंधा साधारण कारीगर के धंधे की अपेक्षा कुछ अच्छा समझा जाता था। जिस समय मुद्रण कला का आविष्कार हुआ था उस समय आरम्भ में उस में विशेष कर धार्मिक पुस्तकें ही छपती थीं और पहिले पहिल यह काम था भी विद्वानों के ही हाथों में। आगे चलकर जब यह धंधा ख़ूब फैल गया और साधारण गिना जाने लगा तो कारीगरी के धंधे में परिणित होगया। किन्तु, फ्रैंकलिन के समय में तो छापाख़ाने वाले शिक्षित होने ही चाहियें ऐसा समझा जाता था और उन में अधिकतर होते भी ऐसे ही थे।

३० अप्रेल सन् १७२४ को एक जहाज़ बोस्टन जाने वाला था। कुछ समय के लिये मुझे अपने सगे सम्बन्धियों से मिलने के लिये जाना है, यह कह कर फ्रैंकलिन ने टिकिट लिया। गवर्नर कीथ ने उस के पिता को एक लम्बा पत्र लिख दिया था जिस में उस की योग्यता की बहुत प्रशंसा कर के उस ने लिखा था कि यदि तुम इसको फ़िलाडेल्फ़िया में प्रेस खोलने की अनुमति दे दोगे तो यह निहाल हो जायगा। दो सप्ताह में फ्रैंकलिन बोस्टन पहुँचा और सात महीने के वियोग के बाद अपने माता पिता से मिला। केप्टिन होम्ज़ अथवा अन्य किसी भी व्यक्ति के द्वारा फ्रैंकलिन के माता पिता को कोई ख़बर नहीं मिली थी इस कारण उस के एकाएक लौट आने से उनको बड़ा हर्ष और आश्चर्य हुआ। उस को देख कर सिवाय उस के भाई जेम्स के सब को बड़ा आनन्द हुआ।

फ्रेंकलिन का एक रिश्तेदार कोलिन्स उस समय पोस्ट आफ़िस मे क्लर्क था। फ्रेंकलिन के द्वारा पेन्सिल वेनियाँ का वर्णन सुन कर वह इतना मुग्ध होगया कि उस ने एक दम वहाँ जा बसने का निश्चय किया। अपनी पुस्तकें आदि समुद्र के रास्ते से ले जाने को उसने फ्रेंकलिन के सुपुर्द कर दीं और वह अकेला खुश्की के रास्ते से चल दिया। दोनो में निश्चय होगया था कि हम न्यूयार्क में मिलेंगे।

फ्रेंकलिन के पिता ने सर विलियम कीथ के पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ा और कई तरह से विचार किया। कुछ समय तक उसने अपना विचार फ्रेंकलिन पर प्रकट नहीं किया। इतने मे केप्टिन होम्ज़ भी डिलावर से बोस्टन आगया उस को वह पत्र दिखा कर फ्रेंकलिन के पिता ने उस से पूछा—"क्या तुम जानते हो कि सर विलियम कीथ कैसा मनुष्य है? मुझे तो यह मालूम होता है कि यदि वह अनुभवी, दृढ़ निश्चय वाला और समझदार होता तो इस अठारह वर्ष के बालक को स्वतंत्र धंधे में डालने की कभी सलाह न देता।" इस पर केप्टिन होम्ज़ ने अपने साले का पक्ष लेकर उस के लाभ के लिये जितना कहना चाहिये था, कहा। किन्तु, पिताने फ्रेंकलिन की थोड़ी उम्र के विचार से उस को नहीं माना और रुपया देने से भी इन्कार कर दिया। फ्रेंकलिन से उसने कहा—"तू अभी बालक है। किन्तु, गवर्नर ने तुझे योग्य समझ कर इतनी प्रशंसा की है और तेने ही युक्तिपूर्वक इतना रुपया इकट्ठा किया है तो मैं तेरी क्या सहायता करूँ। अभी मुझे तो यह ठीक नहीं जान पड़ता कि तू कोई कार्य आरम्भ करे। खैर जा; लेकिन, फ़िलाडेल्फ़िया के लोगों के साथ अपना बर्ताव अच्छा रखना और जोशीले लेख लिखना तथा टीका टिप्पणी करना छोड़ देना। तुझे याद होगा कि ऐसे ही लेख

लिखने और टीका टिप्पणी करने से तू और तेरा भाई दोनों कैसी आफ़त में फँस गये थे।"

फ्रेंकलिन—"पिताजी, आपकी इस अंतिम वाद विवाद करने का समय अभी नहीं है अत: इस सम्बंध में मैं आप से अधिक कुछ नहीं कहना चाहता। परन्तु, यदि 'कुरेण्ट' पत्र का संचालन मेरे हाथ में फिर आ जायगा तो मैं पहिले की भाँति ही लेखादि लिखूँगा। यदि मैंने उस समय आन्दोलन न किया होता तो बोस्टन का प्रेस कैसे स्वतन्त्र होता"।

सर विलियम कीथ को फ्रेंकलिन के पिता ने उत्तर लिखा और उस में फ्रेंकलिन के साथ किये हुए उसके उपकार के लिये बड़ा आभार-प्रदर्शन किया। किन्तु इस समय फ्रेंकलिन को उसका प्रस्तावित कार्य्य आरम्भ नहीं करना चाहिये इसके कारण भी लिख भेजे।

बोस्टन की इस मुलाक़ात के समय फ्रेंकलिन काटन मेथर से मिलने गया। अपने पुस्तकालय में मेथर बड़े प्रेम के साथ फ्रेंक-लिन से मिला और जब वह विदा होने लगा तो उसने घर से बाहर निकलने का छोटा सा रास्ता बताया। यह रास्ता एक छपरे में होकर था। जिसमें सिर अड़जाय इतनी ऊंचाई पर एक आड़ी मियाल जमा रक्खी थी। मेथर के साथ बात चीत करता हुआ फ्रेंकलिन छपरे में कुछ आगे बढ़ा इतने ही में एकाएक मेथर ने कहा—"सिर नमाओ, सिर नमाओ," फ्रेंकलिन का सिर मियाल से टकरा गया इससे पहिले वह मेथर का अभिप्राय न समझ सका। मेथर उन लोगों में था जो "पर उपदेश कुशल" होते हैं। ऐसी दशा में दूसरे को उपदेश करने का अवसर पाकर वह उसे व्यर्थ कैसे जाने दे सकता था। वह बोला—"तुम नवयुवक हो, संसारमें अभी तुम्हारा प्रवेशही हुआ है, और उसकी गति विधिसे

तुम अनभिज्ञ हो। ज्यों २ उसके कार्य-क्षेत्र में आगे बढ़ो त्यों २ तुम अपना सिर नमाते जाना। ऐसा करने पर वह किसी से न टकरायेगा।" सिर में चोट खाकर ग्रहण की हुई शिक्षा आगे चल कर फ्रेंकलिन के लिये बड़ी उपयोगी साबित हुई। वह किसी को देखता अथवा अपना सिर ऊँचा रख कर अकड़ कर चलने वाले व्यक्ति को जब वह देखता तो इस नसीहत को याद करता।

माता पिता का आशीर्वाद लेकर उनकी आज्ञा से फ्रेंकलिन दूसरी बार बोस्टन से चला। जिस जहाज़ से वह जा रहा था वह न्यूपोर्ट होकर जाने वाला था। जहाँ उसका भाई जॉन साबुन और मोमबत्ती बनाने का काम करता था। उसका इस पर बड़ा प्रेम था इस कारण यह उस से मिलने को उसके घर पर गया। जॉन के वर्न नामक एक व्यक्ति के पेन्सिलवेनिया में किसी से ७-८ पौण्ड लेने थे उनको वसूल करने के लिये वर्न ने फ्रेंक-लिन को एक पत्र लिख दिया और उससे कह दिया कि इस रुपये की क्या व्यवस्था की जाय ऐसा जब तक मैं तुम्हें न लिखूं तब तक इनको अपने पास ही रखना। फ्रेंकलिन ने इसको स्वीकार कर लिया। न्यूपोर्ट के पश्चात् न्यूयार्क आया। यहा उसको उसका मित्र कोलिन्स मिला जो बोस्टन से पहिले ही चल दिया था। कोलिन्स की शराब पीने की बहुत बुरी आदत पड़ गई है, यह खबर पहिले पहिल उसको न्यूयार्क मे हुई। कोलिन्स को शराब पीने का बड़ा बुरा व्यसन था। इतना ही नहीं, वह आलसी भी अव्वल दर्जे का था। न्यूयार्क मे और उसके पश्चात् सफर में भी कोलिन्स का तमाम खर्चा फ्रेंकलिन को ही देना पड़ा क्योंकि उसके पास खर्च के लिये एक पैसा भी न था। इस विशेष खर्च का बोझ फ्रेंकलिन की शक्ति से बाहर था। किन्तु, वह क्या करता। बिना दिये उसका छुटकारा भी न था। उस समय

अमेरिका में पुस्तकों का मूल्य बहुत लगता था। सार्वजनिक पुस्तकालय तो वहाँ थे ही नहीं। इने गिने साहित्य प्रेमी ही अपने अपने घर पर पुस्तकों का संग्रह रखते थे। उस मे भी यदि किसी के पास ५० पुस्तकों का संग्रह होता तो वह बहुत समझा जाता और उसके रखने वाले को बड़ा विद्वान गिना जाता। लोग उस को बड़े आदर की दृष्टि से देखते थे। न्यूयार्क मे गवर्नर विलियम बर्नेट नामक एक बड़ा खुश मिजाज़ और शौक़ीन आदमी था। तत्कालीन पुस्तक-प्रेमियों में उसका आसन सर्वोपरि था। फ्रेंकलिन जिस जहाज़ से न्यूयार्क आया था उसके कप्तान के द्वारा बर्नेट को खबर मिली कि फ्रेंकलिन के पास पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। उसने फ्रेंकलिन को अपने घर बुलाया, अपना पुस्तकालय दिखलाया; और बहुत देर तक साहित्य—चर्चा की। आत्मचरित में फ्रेंकलिन कहता है किः—"मेरी खबर लेने वाला यह दूसरा गवर्नर था। मेरे जैसे ग़रीब आदमी के लड़के को उस से मिल कर बड़ा आनन्द मिला"।

न्यूयार्क से आगे चलकर दोनों मित्र फिलाडेल्फ़िया पहुंचे। रास्ते में न्यूपोर्ट वाले मि० वर्न का क़र्ज़ा फ्रेंकलिन ने वसूल कर लिया। कोलिन्स का ख़र्चा इतना अधिक था कि फ्रेंकलिन को उन रुपयों में से भी कुछ लेना पड़ा। इस मुसाफ़िरी के सम्बन्ध की एक बात फ्रेंकलिन ने ८४ वर्ष की अवस्था में लिखी है—"मैं छोटे से जहाज़ पर बैठ कर डिलावर नदी पार कर रहा था। हवा न होने के कारण वहां जहाज़ को कुछ देर के लिये लंगर डाल कर रोकना पड़ा। सूर्य्य की गर्मी बहुत तेज़ थी और यात्रियों मे ऐसा कोई आदमी नहीं था जिसके साथ बातचीत करने में मेरा मनो-रञ्जन होता, अतएव जहाज़ चले तब तक नदी के किनारे पर एक सुन्दर मैदान में जो एक खूब छाया वाला वृक्ष था वहीं

जाकर मैंने कोई पुस्तक पढ़ने का विचार किया। कप्तान से कहने पर वह मुझे वहाँ छोड़ आया। किन्तु, मैंने वहां जाकर देखा कि मुझे जो मैदान जहाज पर से बड़ा सुन्दर दिखाई देता था वैसा वह नहीं है बल्कि यह दलदल की ज़मीन है जो दूर से चमक रही थी। वृक्ष तक जाने में मैं घुटने तक कीचड़ में लथपथ होगया, और वहां जाकर बैठा ही था कि मच्छरों ने मेरे नाक में दम करना शुरू कर दिया। इससे मैंने पीछे जहाज पर ही आना चाहा और डोंगी में बिठाकर जहाज पर ले जाने के लिये मैंने जहाज वाले को बुलाया। धूप से घबराकर ही मैं उस वृक्ष की छाया में गया था अतः वहां से लौटने पर मुझे फिर भी धूप में ही बैठना पड़ा। यह देख कर सब लोग मेरी हँसी करने लगे। ससार में ऐसे और भी कई एक उदाहरण मेरे अनुभव में आये हैं"। इस बात का अभिप्राय केवल इतना ही है कि प्रत्येक अवस्था में सुख दुख समान ही हैं, जो अन्तर दिखाई देता है वह केवल दिखावा मात्र है।

फ्रेंकलिन के पिता का पत्र पढ़ कर सर विलियम कीथ ने उसको किसी स्वतन्त्र धंधे में डालने का अपना विचार बदल नहीं दिया बल्कि यह कहा कि:—"तुम्हारे पिता बड़े समझदार मालूम होते हैं। मनुष्य-मनुष्य में अन्तर होता है। आयु के साथ ही बुद्धि भी आती है। सभी मनुष्यों की समझ अच्छी नहीं होती, ऐसा कोई नियम नहीं है। तुम्हारे पिता ने सहायता देने से इन्कार कर दिया तो जाने दो मैं ही तुम्हारी सहायता करूँगा। विलायत से जो आवश्यक वस्तुएँ मँगवानी हों उनकी तुम एक सूची तैयार करलो ताकि उन्हें मँगाने की व्यवस्था करूँ। मेरे रुपये तुम्हारे पास हों तब लौटा देना। इस शहर में एक अच्छा प्रेस खोलने का जो मैंने विचार किया है, उसके लिये मुझे पूरी आशा है कि तुमको अवश्यमेव सफलता होगी।" विलियम

कीथ के इस कथन को सुन कर फ्रैंकलिन बड़ा प्रसन्न हुआ। उसको ऐसा जान पड़ा कि संसार में इसके बराबर सज्जन और मेरा सच्चा हित चाहने वाला और कोई नहीं है।

उसने शीघ्र ही सूची तैयार की, जिसमें लिखी हुई वस्तुओं की क़ीमत का तख़मीना उसने एकसौ पौण्ड लगाया। सर विलियम ने उस सूची को देख कर कहा कि:—"यदि तुम स्वयम् ही विलायत जाकर अपनी पसंद का सब सामान ले आओ तो कैसा? वहां जाने से तुम्हारा परिचय बढ़ेगा, और जानकारी भी अच्छी हो जायगी। साथ ही काग़ज़ और पुस्तक विक्रेताओं से भी तुम्हारी रूबरू बातचीत हो जायगी।"

फ्रैंकलिन:—"हां, ऐसा करना तो अवश्य ही लाभ का कारण होगा"।

सर विलियम:—"तो फिर, 'एनीस' के साथ जाने की तैयारी करलो"।

उस समय लन्दन और फिलाडेल्फिया के बीच में एक ही जहाज़ चलता था। 'एनीस' उसका कप्तान था। यह जहाज़ वर्ष में एक बार जाया करता था।

जहाज़ रवाना होने का दिन अभी दूर था, इस कारण फ्रैंक्लिन ने कीमर के साथ काम करना जारी रक्खा और विलियम के साथ जो उसकी सलाह हुई थी उसको गुप्त रक्खा। विलियम अव्वल दर्जे का झूठा, बड़ा झगड़ालू और सम्मान का भूखा था। वह जहां पानी बताता था वहां कीचड़ भी नज़र नहीं आता था। फ्रैंकलिन ने किसी से पूछा नहीं था इस इसलिये वह न जान सका कि विलियम किस प्रकृति का आदमी है। उसी के वचन पर विश्वास करके भविष्य की आनन्दपूर्ण इच्छा में वह अपने

दिन बिताने लगा। जहाज़ रवाना होने के दिन तक जितने आनंद से उसका समय गुज़रा ऐसा समय उसको शायद ही कभी नसीब हुआ हो। किन्तु, प्रकृति के नियमानुसार सुख के बाद दुख भी अनिवार्य्य होता है। अस्तु। फ़िलाडेल्फ़िया से वापिस आया तभी से अपने मित्र जॉन कोलिन्स के बुरे कामों से उसको लोगों में बड़ी शर्मिन्दगी उठानी पड़ती थी। कोलिन्स अब पूरा शराबी होगया था। वह बिना कुछ काम किये आलसी की तरह फ्रेंकलिन के घर में पड़ा रहता था और अब कोई काम मिलता है, अब मिलता है ऐसा कह कह कर उससे बार बार रुपये ले लेता। फ्रेंकलिन चिढ़ कर कभी २ उस पर नाराज़ भी हो जाता जिसके कारण उन में कई बार झगड़ा हो जाता था। अंत में एक दिन मित्रता का अंत आया। फ्रेंकलिन, कोलिन्स और फ़िलाडेल्फ़िया के रहने वाले फ्रेंकलिन के कुछ और परिचित व्यक्ति एक दिन नाव में बैठ कर दिलावर नदी की सैर करने को गये। सब को बारी बारी से चाटली लगाना था। जब कोलिन्स का नम्बर आया तो उसने कहा कि—"मैं तो चाटली नहीं लगाने का। तुम्हारी ग़रज़ हो तो लगाओ" फ्रेंकलिन बोला कि:—"यदि ऐसा है तो हम तुझे नाव में नहीं बिठलायँगे।" इस पर कोलिन्स ने उत्तर दिया:— "यदि ऐसा होगा तो तुम सभी को रात भर यहीं रहना पड़ेगा"। इतने ही में एक आदमी बोला:—"अरे भाई, जाने भी दो, अपन ही लगा देंगे।" किन्तु, कोलिन्स के अनुचित बर्तावसे अप्रसन्न हुए फ्रेंकलिन ने इस बात को नहीं माना। इस पर कोलिन्स ने कहा:—"फ्रेंकलिन से चाटली चलवाऊँ तभी तो मेरा नाम। यदि यह चाटली न चलावे तो इसको नाव पर से फेंक दो"। ऐसा कह कर मानों अपने कहने को सच करके ही दिखलाता हो इस प्रकार कोलिन्स फ्रेंकलिन की तरफ दौड़ा और उसको धक्का दिया। किन्तु, फ्रेंकलिन सावधान रहा। उल्टा उसने

खड़े हो कर कोलिन्स ही को नदी में फेंक दिया। उसको ख़बर थी कि कोलिन्स को अच्छी तरह तैरना आता है, इसलिये उसके डब जाने की उसको कुछ चिंता न थी। कोलिन्स बार २ पानी में से निकल कर नाव पकड़ने को आता तब उस में बैठे हुए सब लोग नाव को तेज़ी से चलाते और पूछते "क्यों, अब भी चाटली लगाना मंजूर है या नहीं" ? अभिमानी कोलिन्स इसके उत्तर में कुछ न कहता और नाव को पकड़ कर उस पर चढ़ने की चेष्टा करता। किन्तु, वह तेज़ चल रही थी इसलिये उसका कोई वश न चला। आख़िर को जब वह थक कर अधमरा सा हो गया तो उसके साथियों ने उसको नाव पर खींच लिया और पानी में भीगे हुए ही उसको घर पर ले आये। यह घटना हो जाने पर फ्रेंकलिन और कोलिन्स में परस्पर वैमनस्य सा हो गया। कोलिन्स को कुछ दिन के बाद बारबे-डोज़ में एक अध्यापक की जगह मिल गई, इसलिये वह फिलाडेल्फ़िया से चला गया। जाते समय वह फ्रेंकलिन से कहता गया कि मुझे तेरा जो कुछ देना है वह वहां से भेज दूंगा। परन्तु, इसके पश्चात् फ्रेंकलिन को उसका कुछ पता नहीं मिला।

फ्रेंकलिन बड़ा मिलनसार था। इस कारण वह जहां जाता था वहीं उसका थोड़े ही समय में लोगों से ख़ूब परिचय हो जाया करता था। फिलाडेल्फ़िया में इस समय चार्ल्स आसबार्न, जोसप वाटसन और जेम्स राल्फ़ नामक उसके तीन मित्र थे। इन तीनों को पढ़ने लिखने का फ्रेंकलिन जैसा ही शौक़ था। किन्तु, दूसरी बातों में ये उसकी समानता नहीं कर सकते थे। आसबार्न और वाटसन किसी वकील के पास मुहर्रिर थे और राल्फ़ एक व्यापारी के यहां गुमाश्ता। वाटसन प्रामाणिक, धर्मनिष्ठ और गुणवान् व्यक्ति था। आसबार्न बड़ा समझदार, मिलनसार और सबसे

प्रेम करने वाला था। इसके अतिरिक्त वह साहित्य-मर्मज्ञ भी था। आसवार्न, राल्फ और फ्रेंकलिन ये तीनों काव्य-प्रेमी थे। समय २ पर ये कुछ न कुछ रचना भी किया करते थे। रविवार के दिन स्क्युलकिल नदी पर चारों आदमी घूमने को जाते और सप्ताह भर में जो कुछ पढ़ते लिखते उस पर विवेचना किया करते। आत्म-चरित में फ्रेंकलिन कहता है कि:—हम ने ऐसा विचार किया कि अब जब कभी मिला करें तो हम में से प्रत्येक आदमी कोई न कोई रचना करके लाया करे और वह दूसरों को उसका अभिप्राय बता कर टीका टिप्पणी करते हुए सुधार किया करे। हमारा उद्देश भाषा और उच्चारण सुधारने का था इस कारण किसी नवीन विषय पर ही कविता करना किसी के लिये अनिवार्य नहीं था। अठारहवें क्रिश्चियन भजन में देवताओं के अवतरण का जो वर्णन है उसी को हमने पसन्द किया। हमारे इकट्ठा होने का दिन निकट आया तब राल्फ मेरे पास आया और कहने लगा कि मेरा लिखा हुआ तैयार है।

मैं अवकाश न मिलने और मन न लगने से कुछ नहीं लिख सका था इसलिये मैंने भी राल्फ से ऐसा ही कह दिया। मेरी सम्मति लेने को राल्फ ने अपनी रचना मुझे बताई। मुझे वह बहुत अच्छी लगी और उसमें बहुत सी खूबियाँ नजर आई। राल्फ ने कहा:—"आसबार्न को तो मेरी रचना का कोई अंश खूबी से भरा हुआ नहीं मालूम हुआ इसी से वह मेरी रचना पर टीका टिप्पणी करने लगता है। तुम्हारी रचना पर वह कोई टीका नहीं करता इसलिये तुम इसको रख लो और अपनी तरफ से ही लिखी हुई बता कर उसको दिखाना। मैं कह दूँगा कि समय न मिलने से मैं तो कुछ न लिख सका। देखें, फिर आसबार्न क्या कहता है। यह बात मुझे पसन्द आई। इसलिये

उस-रचना को मैंने रख लिया और अपने हाथ से उसकी नक़ल कर ली जिससे आसबार्न को उसके विषय में कोई सन्देह न हो। इसके पश्चात् हम सब इकट्ठे हुए। सब से पहिले वाटसन ने अपनी रचना सुनाई। उसमें कुछ खूबी थी। लेकिन, दोष अधिक थे। फिर आसबार्न ने अपना लिखा हुआ सुनाया, जो वाटसन की अपेक्षा अच्छा था। राल्फ़ ने उन दोनों की एक तुलना करके किस में क्या दोष है और किस में क्या २ खूबियाँ हैं यह दिखलाया। इसके पश्चात् उसको तो कुछ सुनना ही न था इसलिये मैं आगे बढ़ा। किन्तु अपनी रचना न सुना कर पहिले मैंने इसके लिये सब से माफी चाही कि मैं अवकाश न मिलने के कारण अपनी रचना को न सुधार सका हूँ इस कारण इसको अगले प्रसङ्ग पर सुनाऊँगा। किन्तु, इसको किसी ने स्वीकार नहीं किया। अन्त में मुझे अपनी रचना सुनाने को वाध्य होना पड़ा। मैंने उन सब के आग्रह से उसको दो वार पढ़ा। वाटसन और आसबार्न ने स्वीकार किया कि यह हमारी रचना की अपेक्षा कई दर्जे अच्छी है और उस की खूबियों का बखान करने लगे। केवल राल्फ ने उस पर टीका की और कोई २ स्थल सुधार करने के बताये। किन्तु, मैं अख़ीर तक अपने को बचाता रहा। राल्फ़ की, की हुई टीका का आसबार्न ने बड़ा विरोध किया और कहा कि राल्फ़ कविता करना नहीं जानता और न उसके गुण दोष दिखाने में ही प्रवीण है। बल्कि सच पूछो, तो जिस प्रकार इसको कविता करना नहीं आता उसी प्रकार यह उसके गुण दोष भी नहीं बता सकता।

राल्फ़ और आसबार्न घर जा रहे थे तब आसबार्न ने जो मेरी रचना से परिचित था रास्ते में मेरी कविता के विषय में

अच्छी सम्मति प्रकट की और कहा किः—"मैं खुशामद करता हूँ ऐसा फ्रेंकलिन को न जान पड़े इस कारण मैं जान बूझ कर उसके पक्ष में अधिक नहीं बोला। किन्तु, वह ऐसी उत्तम रचना कर सकता है ऐसी किसी की कल्पना थी क्या? अहा! कैसे उत्तम विचार! शब्दों में कितना माधुर्य्य! और जोश!! साधारणतया बातचीत करने में तो वह कभी ऐसे शब्द नहीं कहता और बीच २ में कई भूलें करता तथा अटकता जाता है। किन्तु, यह होते हुए भी कौन जान सकता है कि यह ऐसी उत्तम रचना कर सकता है!" यह सुन कर राल्फ़ अपने मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ। दूसरे दिन वे सब फिर इकट्ठे हुए तब राल्फ की, की गई युक्ति सब को मालूम हुई तो उसके दोष निकालने वाला आसबार्न बहुत शरमाया।

इस समय फ्रेंकलिन मिस्टर रीड की कन्या पर आशक्त हो गया था। डेबोरा भी उसको हृदय से चाहती थी किन्तु, उस समय वहाँ ऐसी प्रथा थी कि माता पिता सन्तान का सम्बन्ध अपनी इच्छानुसार ही किया करते थे। यदि कन्या या पुत्र का विचार कुछ और हो तो वह माता पिता की आज्ञा के बिना कार्य्य रूप मे परिणत नहीं हो सकता था। डेबोरा के पिता मि० रीड का १२ सितम्बर संन् १७२४ में देहान्त हो चुका था, इस कारण उसने फ्रेंकलिन के साथ विवाह सम्बन्ध हो जाने के लिये अपनी इच्छा माता पर प्रगट की और यह भी कहा कि आगे चल कर वह एक बड़े छापेख़ाने का मालिक हो जायगा और इस प्रकार मुझे सुख मिलेगा। उसकी माता ने यह बात मान ली। एक दिन उसने फ्रेंकलिन से कहाः—"तुम १९ वर्ष के नहीं हुए हो, और अभी एक लम्बी यात्रा पर जा रहे हो, इसके अतिरिक्त अभी यह भी नहीं कहा जा सकता कि जिस रोज़गार को तुम

करना चाहते हो वह कैसा चलेगा ? इस कारण अभी विवाह करना ठीक नहीं। तुम वापिस आकर अपना रोज़गार शुरू करो तब तक ठहरो।" इस प्रकार डेबोरा की माता से बात चीत हो जाने पर फ्रेंकलिन ने उससे इसका ज़िक्र किया। वह तो फ्रेंक-लिन को चाहती ही थी ? दोनों प्रेमी वचन बद्ध हो गये और लन्दन से वापिस आ जाने पर विवाह होना निश्चित हो गया।

केप्टिन 'एनीस' का जहाज़ "लंडन होप" के चलने का समय निकट आया। तब तक सर विलियम कीथ फ्रेंकलिन को बुलाया करता और प्रेस खोलने का ज़िक्र किया करता। टाइप, काग़ज़ और मशीन (मुद्रण यन्त्र) खरीदने में जितने रुपये खर्च हों उनकी हुण्डी और लंदन में अपने मित्रों को परिचय-पत्र देने का सर विलियम ने फ्रेंकलिन को वचन दिया था। उसको किस दिन आकर काग़ज़ ले जाने चाहियें यह भी निश्चित होगया था। यथा समय फ्रेंकलिन हुण्डी और काग़ज़ लेने को कीथ के घर पर गया तो उसने यह कहा कि समय न मिलने से मैं अभी पत्र नहीं लिख सका हूँ कल आकर ले जाना। दूसरे दिन वह फिर गया, किन्तु, फिर भी उसको वैसा ही उत्तर मिला। इसी प्रकार कई दिन तक फ्रेंकलिन बराबर उसके घर पर आता रहा। किन्तु, फल कुछ नहीं हुआ। अन्त में जहाज़ चलने का दिन आगया। आज तो काग़ज़ अवश्य मिलेगा इस आशा से वह उस दिन फिर कीथ के पास गया तो उस समय उसको कीथ का सेक्रेटरी मिला जिसने कहा कि आज कार्य्याधिक्य से गवर्नर ऑफिस में ही हैं, तुम्हारा जहाज़ न्यूकासल * में आकर ठहरेगा वहीं पर आकर वे तुमसे मिलेंगे और काग़ज़ आदि दे देंगे"।

---

* स्थान विशेष।

फ्रैंकलिन जहाज़ पर जाकर बैठा ही था कि वह चल दिया। जहाज़ पर भी इसके लिये मित्रों का अभाव नहीं था। जेम्स राल्फ़ और उसका पुत्र उसके साथ थे। राल्फ़ ने फ्रैंकलिन से कहा कि मैं लन्दन में आढ़त जमाने को जा रहा हूँ। किन्तु, पीछे से मालूम हुआ कि उसके सगे सम्बन्धियों में कुछ अनबन होगई है इसलिये वह अपनी स्त्री तथा पुत्र को लदन छोड़ आने और पीछे न आने के विचार से घर छोड़ कर जा रहा है।

यथा समय जहाज़ 'न्यूकासल' पर जाकर ठहर गया। कागज़ लेने को फ्रैंकलिन फिर गवर्नर से मिलने गया। उस समय उसका सेक्रेटरी फिर उसके पास आया और बड़ी नम्रता से उस से कहा—"गवर्नर साहब बड़े आवश्यक कार्य्यों में लगे हुए हैं, इसलिये कुछ देर के बाद कागज़ लिख कर जहाज़ पर भेज देंगे। तुम सकुशल पहुँचो और जल्दी ही सफल मनोरथ होकर वापिस आओ ऐसा वे अन्तःकरण से चाहते हैं।"

फ्रैंकलिन को कुछ बुरा तो लगा। लेकिन, गवर्नर की सचाई में उसको अब भी कोई सन्देह नहीं हुआ। वह वापिस जहाज़ पर चला गया। थोड़ी ही देर के बाद गवर्नर की ओर से कर्नल फ्रैंच कुछ कागज़ों की थैली लेकर जहाज़ पर आया और उसने वह थैली कप्तान के सुपुर्द की। फ्रैंकलिन ने कप्तान से कहा कि मेरे नाम के जो कागज़ हों उन्हें मुझे दे दीजिये इस पर कप्तान ने उत्तर दिया कि:—'सब कागज़ थैली में इकट्ठे हैं। तुम्हारे कागज़ों को निकालने का मुझे अवकाश नहीं है। विश्वास रक्खो कि इंगलैण्ड पहुँचने से पहिले तुम्हें थैली के सब कागज़ात दिखा दिये जायँगे, उनमें से जो २ तुम्हारे हों उन्हें ले लेना"।

आरम्भ में फ्रैंकलिन और उसके मित्र राल्फ की ओर दूसरे यात्रियों का ध्यान नहीं गया था। उनका परिचित व्यक्ति वहाँ

और कोई न था। जहाज़ के ख़ास भाग पर उनको जगह नहीं मिल सकी थी इस कारण अगले हिस्से में जैसी जगह मिली वहीं बैठ कर उन्हें काम चलाना पड़ा। पेन्सिल वेनियाँ का एक सरकारी वकील एन्ड्रू हेमिल्टन और उसका पुत्र भी इंग्लैण्ड जाने वाले थे और उनके लिये जहाज़ पर एक जगह पहिले से ही रिज़र्व * होगई थी। किन्तु, किसी कारण विशेष से उनको न्यूकासल से पीछे लौटना पड़ा इस कारण उनके लिये रुकी हुई जगह ख़ाली होगई। जब कर्नल फ़्रेंच जहाज़ पर गया तो उसने फ़्रेंकलिन को पहचाना, उसने उसका बड़ा सम्मान किया। यह देख कर और यात्रियों ने फ़्रेंकलिन और उसके मित्र राल्फ़ को वह ख़ाली जगह काम में ले लेने के लिये कहा। दोनों व्यक्ति बड़ी प्रसन्नता से उस जगह पर आगये। मुसाफ़िरी ख़त्म होने का दिन निकट आने लगा इस कारण कप्तान ने अपने कथनानुसार काग़ज़ों की थैली फ़्रेंकलिन को दे दी। लगभग ६–७ काग़ज़ फ़्रेंकलिन के द्वारा भेजे हुए पते वाले निकले। इनमें एक पत्र सरकारी प्रेस वाले के नाम पर था और दूसरे और २ लोगो के लिये थे। फ़्रेंकलिन उन्हें देख कर बड़ा ख़ुश हुआ।

२४ दिसम्बर को जहाज़ लन्दन पहुँचा। जहाज़ से उतरते ही फ़्रेंकलिन सब से पहिले काग़ज़ी की दूकान पर गया और उसको कागज़ दे कर कहा कि यह पत्र गवर्नर कीथ ने आपको भेजा है। इस पर काग़ज़ी ने कहा:—"इस नाम के किसी मनुष्य को मैं नहीं पहचानता।" पत्र खोल कर इधर उधर से देखा और वह फिर बोला:—"अच्छा यह तो रिडल्स्टन का लिखा हुआ है, जो बदमाशों का सरदार माना जाता है। मैं

---

* सुरक्षित।

इससे अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता।" यह कह कर उसने वह पत्र फ्रेंकलिन को वापिस दे दिया और पीठ फेर कर ग्राहकों को माल देने लगा। फ्रेंकलिन को मालूम हुआ कि ये और २ पत्र भी कीथ के लिखे हुए नहीं हैं। अब जा कर उसको गवर्नर की सचाई में सन्देह हुआ। जहाज़ पर एक डेन्हॉल नामक व्यापारी से फ्रेंकलिन की जान पहिचान हो गई थी। उसने सारी बात उससे जाकर कही। पल भर में डेन्हॉल असली बात को जान गया। उसने फ्रेंकलिन को विश्वास दिलाया कि कीथ ने कागज़ लिखे हों या उसका लिखने का विचार भी हो ऐसा नहीं जान पड़ता। उसने कहा कि "जो लोग कीथ को जानते हैं वे उसके कहने या लिखने पर बिल्कुल भरोसा नहीं करते"। यह सुन कर फ्रेंकलिन को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह चिन्ता में पड़ गया। कारण कि लन्दन में वह कभी नहीं आया था और अपने तथा राल्फ़ के ख़र्च के लिये उसके पास केवल दस पौण्ड थे। जब डेन्हॉल को यह हक़ीक़त मालूम हुई तो उसने उसको किसी छापेख़ाने में नौकरी करने की सलाह दी और कहा कि :— "लन्दन के प्रेसों में काम करने से तुम्हारा अनुभव बहुत बढ़ेगा और यहाँ से जब तुम वापिस अमेरिका जाओगे तो तुमको अपने रोज़गार में बड़ा लाभ होगा।"

इस समय फ्रेंकलिन को मालूम हुआ कि राल्फ़ लन्दन में ही रहेगा। उसके पास जो कुछ रुपये थे उनको वह जहाज़ का किराया देने में ख़र्च कर चुका था और अब उसको सहायता करने वाला सिवाय फ्रेंकलिन के और कोई मनुष्य लंदन में न था।

कागज़ी ने जो पत्र फ्रेंकलिन को वापिस दिया था उसको पढ़ने पर फ्रेंकलिन को मालूम हुआ कि एण्ड्रू हेमिल्टन के साथ रीडस्टन और कीथ ने मिल कर कोई जालसाज़ी करने का

विचार किया है। हेमिल्टन कुछ समय के पश्चात् लन्दन आया उस समय फ्रैंकलिन ने उससे मिल कर इस पत्र में लिखी हुई सारी हक़ीक़त उससे कह दी। आगे चल कर यह ख़बर हेमिल्टन के लिये बड़ी उपयोगी हुई। इस कारण यह अपने ऊपर उपकार करने वाले फ्रैंकलिन का जन्म भर के लिये घनिष्ठ मित्र और बड़ा सहायक बन कर रहा।

कहना क्या और करना क्या इस प्रकार के गवर्नर कीथ के लज्जास्पद बर्ताव के सम्बन्ध में फ्रैंकलिन कहता है कि:—"एक ग़रीब और अनुभवहीन युवक को इस प्रकार अकारण ही तङ्ग करने और आपत्ति में फँसाने वाले कीथ जैसे मनुष्य का क्या किया जाय, जब उसकी ऐसा करने की आदत ही पड़ गई हो। कीथ प्रत्येक मनुष्य को प्रसन्न करने की इच्छा रखता था। किन्तु, उसके पास देने को कुछ नहीं था इस कारण वह सब को झूँठी सच्ची आशा दिला दिया करता था। एक प्रकार से वह बुद्धिमान, समझदार और अच्छा लेखक था। गवर्नर की हैसियत में रह कर भी वह जनता की लाभ हानि का पूरा ध्यान रखता था और उसको नियुक्त करने वाले ज़मीदारों के विरुद्ध था। कई बार वह उनकी इच्छा के विरुद्ध काम कर डालता था।" इस प्रकार फ्रैंकलिन ने गवर्नर के अन्यान्य गुण बताकर उसके विषय में अपना मत-प्रतिपादन कर अपने विशाल हृदय का परिचय दिया है।

—:o:ॐ:o:—

प्रकरण पांचवां

लन्दन में १७२५-१७२६

फ्रेंकलिन और राल्फ़—उनकी तुलना—पामर के छापेखाने में नौकरी मिली—राल्फ़ का इधर उधर भटकना—वुलास्टन कृत स्वाभाविक धर्म्म—फ्रेंकलिन का प्रतिवाद—डाक्टर लायन्स, मण्डेवील और पेम्बरटन के साथ जान पहिचान—न्यूटन से मिलने का विचार—एस्बेस्टोस की थैली—सर हेरीस्लोन से परिचय—राल्फ़ से अलग होना—उवोट के कारखाने में नौकरी मिलना—पैसा बचाने की ओर लक्ष्य—डेवीडहाल तथा वाइगेट से मित्रता—डेन्हॉल की ईमानदारी—डेन्हॉल के यहा फ्रेंकलिन का नौकरी के लिये रहना—सर विलियम विन्ध्याल से मुलाक़ात ।

फ्रेंकलिन और राल्फ हमेशा शामिल रहते थे। न्यू लिटिल बिटन मुहल्ले में दोनों ने प्रति सप्ताह साढ़े तीन शिलिंग के किराये पर मकान भाड़े ले लिये थे। राल्फ के पास पैसा न होने से उसके खर्च का सारा भार फ्रेंकलिन पर था। उस पर फ्रेंकलिन का प्रेम भी खूब था। बात चीत करने में वह बड़ा चतुर था। ५० वर्ष के पश्चात् भी जब फ्रेंकलिन को यूरोप और अमेरिका के बड़े २ आदमियों से बात चीत करने का अवसर आया तो उसे मालूम हुआ कि राल्फ की समानता करने वाला कोई नहीं है। राल्फ का रहन सहन और बर्ताव प्रीति उत्पन्न करने वाला था। साथ ही उसकी बुद्धि भी बड़ी विचक्षण थी। राल्फ और फ्रेंकलिन के ऊपरी दिखावे से उस समय ऐसा अनुमान

किया जाता था कि यदि आगे चल कर इनमें से कोई बड़ा आदमी होगा तो वह राल्फ ही। राल्फ सुन्दर, बोल चाल में चतुर और रहन सहन में बड़ा कुशल था। साथ ही उसकी आकांक्षाएँ भी बड़ी उच्च थी। फ्रैंकलिन बोलने में धीमा और देखने मे गम्भीर तथा कठोर था। किन्तु, यह सब होने पर भी उस समय दो बातो में राल्फ की अपेक्षा फ्रैंकलिन कुछ विशेषता रखता था। एक तो उसकी जेब मे उस समय दस पौंड नक़द थे और दूसरे वह ऐसा धंधा जानता था कि तीस शिलिङ्ग सुविधा से पैदा कर ले। कम्पोज़ करने के काम में फ्रैंकलिन ने जेम्स के कारखाने में बड़ी होशियारी दिखाई। लन्दन में पामर नामक व्यक्ति का एक बड़ा छापाख़ाना था और उसमें पचास के लगभग मनुष्य नौकर थे। उसमे फ्रैंकलिन को शीघ्र ही नौकरी मिल गई। राल्फ ने बहुत प्रयत्न किया किन्तु, उसका कुछ वश न चला। पहिले तो उसने एक नाट्यकार का मकान तलाश किया और उसके पास जाकर उसने उसको बहकाया कि इस धंधे के अनुरूप गुण तुममें नहीं हैं। अतः इसे छोड़ कर कोई लन्दन में संवाद-पत्र निकालो जिस में तुम्हारी ख्याति और लाभ दोनो हो। स्पेक्टेटर के ढंगका एक साप्ताहिक पत्र निकालने का उसने विचार किया। किन्तु जिस नाटकाध्यक्ष से उसने इसका ज़िक्र किया था वह इस बात पर राज़ी नहीं हुआ। जब इस में भी सफलता न होती देखी तो उसने वकीलों के पास से नक़लें करने का काम मिल जाय, इसकाप्रयत्न किया किन्तु, वह भी उसको नहीं मिला।

पामर के छापेख़ाने में फ्रैंकलिन ने एक वर्ष तक काम किया। उसको वेतन ठीक मिलता था किन्तु, राल्फ के साथ नाटक और खेल देखने में उसका ख़र्चा बहुत होता था। इसके

अतिरिक्त राल्फ को ऋण देने में भी उसका पैसा बहुत गया। अन्त में, उसके पास जो कुछ रुपये थे वे खर्च हो गये और प्रति दिन की कमाई से जो कुछ पैसा आवे उसी पर निर्वाह करने का समय आ गया।

पामर के छापेखाने में बुलास्टन रचित "स्वाभाविक धर्म" की दूसरी आवृत्ति को छापने का काम फ्रैंकलिन के हाथ आया। इस पुस्तक का उद्देश यह साबित कर देना था कि खून, चोरी और व्यभिचार आदि करने का धर्म्मशास्त्र में निषेध न होता तो भी उनका करना बुरा है। इसी प्रकार इस में यह भी दिखाया गया था कि सदाचार पालन का आदेश न होता तो भी मनुष्य-मात्र को सदाचारी होना आवश्यक था। मूर्ति-पूजा न करने के कारण, देवालय में जाने की दलीलें और आत्मा के अमरत्व की यथार्थता का भी इस में अच्छा विवेचन था। यह पुस्तक देखने योग्य है और उसके पढ़ने से किसी की कोई हानि नहीं हो सकती यह जानते हुए भी फ्रैंकलिन को बुलास्टन की दलीलें आधारहीन जचीं और इस कारण उसने उसकी आलोचना में एक बत्तीस पृष्ठ की पुस्तक लिख कर छपवा डाली। इसका नाम रक्खा "स्वतन्त्रता और प्रयोजन अथवा सुख दुख का विवेचन" "जो कुछ ईश्वरकृत है वह ठीक है लेकिन मनुष्य शृंखलाबद्ध हो कर उसके अपनी ओर के भाग को ही देखता है। उसके ऊपरी भाग पर उसकी दृष्टि नहीं जाती।" इस आशय का एक वाक्य ड्राइडन की कविता में से चुन कर पुस्तक के मुख पृष्ठ पर रक्खा। बुलास्टन की पुस्तक उसके मित्र "ए. एफ. एस्कायर" को समर्पित हुई थी और इस पुस्तक के लिखने का कारण यह बताया गया था कि इसके मित्र ने एक समय बुलास्टन से पूछा था कि "स्वाभाविक धर्म है या नहीं? और है तो कैसा?"

फ्रेंकलिन ने अपनी पुस्तक "मि० जे० आर०"—(जेम्स राल्फ़) को समर्पित की और आरम्भ में यह लिखा कि—"तुम्हारी प्रार्थना पर से इस संसार की वस्तुओं की स्थिति के सम्बन्ध में मैंने इस में अपने इस समय के विचारों का दिग्दर्शन किया है"

फ्रेंकलिन के विचार उसके मालिक को अच्छे नहीं लगे किन्तु, फिर भी इस पुस्तक के छपने से छापेख़ाने की क़दर बहुत बढ़ गई। मिस्टर लायन्स नाम के एक डाक्टर फ्रेंकलिन की इस पुस्तक को पढ़ कर इतने अधिक प्रसन्न हुए कि वे उसका मकान तलाश करके उससे स्वयम् आकर मिले। इनने भी "मनुष्य के विचारों की अस्थिरता" के सम्बन्ध मे एक पुस्तक लिखी थी और कुछ प्रख्यात नास्तिक लोगों से उनका अच्छा परिचय था। "दी होर्न" नामक मुहल्ले में नास्तिक लोगों की मण्डली इकट्ठी होती थी उसका मुखिया डाक्टर मंडेवील "मक्खियो की कहानी" नामक पुस्तक का लेखक एक हालेंण्ड निवासी व्यक्ति था। डा० लायन्स ने इससे फ्रेंकलिन का परिचय कराया और डाक्टर पेम्बरटन नामक एक मेडिकल सर्जन से भी मुलाक़ात करादी जो तत्त्वज्ञानी, गणितज्ञ, रायल सोसाइटी का सभासद् और सर आइज़ाक न्यूटन का मित्र था। सर आइज़ाक न्यूटन से मिलने की फ्रेंकलिन की भी बहुत दिन से इच्छा थी। डा० पेम्बरटन फ्रेंकलिन को न्यूटन के पास ले जाने वाला था। किन्तु, वह तत्त्व-ज्ञानी उस समय ८२ वर्ष का हो चुका था और उसका शरीर भी ठीक नहीं रहता था इस कारण फ्रेंकलिन को उससे मिलने का अवसर न मिल सका।

अमेरिका से फ्रेंकलिन कुछ नई वस्तुएं ले आया था। इस के अतिरिक्त उसके पास एस्बेस्टोस † की बनी हुई एक थैली थी।

---

† एक वस्तु या धातु विशेष।

एस्बेस्टोस को अग्नि में डालने से वह जलता नहीं, बल्कि शुद्ध होता है। जब सर हेरीस्लोन को यह मालूम हुआ कि फ्रेंकलिन के पास एस्बेस्टोस की थैली है तो वह उसके घर पर आकर उस से मिला। हेरीस्लोन को नई २ वस्तुएं इकट्ठी करने का बड़ा शौक़ था। उसके घर मे ऐसी अनेक वस्तुओं का संग्रह था और वहां के ब्रिटिश म्यूजीयम को स्थापित करने वाला भी वही था। फ्रेंक-लिन से उसने वह थैली ख़रीद ली और जो कुछ मूल्य उसने मागा वह उसको दे दिया। वह अपने घर में सग्रह की हुई तरह तरह की नई २ चीज़ों को दिखाने के लिये फ्रेंकलिन को अपने साथ ले गया और इसी दिन से इस सुविख्यात व्यक्ति के साथ फ्रेंकलिन का परिचय हुआ।

जैसे तैसे कुछ समय लन्दन में बिता कर राल्फ ने अन्त में तङ्ग आकर एक गांव में जाकर चटशाला † खोलदी। इस कार्य को वह हल्का समझता था। लेकिन उसको अपने मन में यह भी विश्वास था कि किसी दिन मैं भी अवश्य ही बड़ा आदमी होऊंगा। किन्तु, जब बड़ा आदमी हो जाय तो लोग यह न कहें कि एक समय यह लड़कों को पढ़ाने का हल्का काम करता था इस लिये उसने अपना नाम बदल कर फ्रेंकलिन रक्खा। उसका फ्रेंकलिन के साथ पत्र व्यवहार होता था। किन्तु, आगे चल कर दोनों में परस्पर कुछ मन मुटाव हो गया, इस कारण जब राल्फ पीछे लन्दन आया तो फ्रेंकलिन से पृथक् रहा।

राल्फ के व्यय भार से मुक्त होने पर फ्रेकलिन का ध्यान पैसा बचाने की ओर गया। उसने पामर की नौकरी छोड़ कर अधिक वेतन मिलने के लोभ से वाट नामक व्यक्ति के छापेखाने मे नौकरी करली और जब तक लंदन में रहा उसी के यहां बना रहा।

---

† पाठशाला।

फ्रैंकलिन के मकान से पामर का छापाखाना निकट ही था इस कारण उसका पैदल चलने के बहाने व्यायाम ही हो जाता था इसके अतिरिक्त अमेरिका की भाँति कम्पोज करने या छापने का काम भी उसको वहाँ नहीं करना पड़ता था। पामर के छापेखाने में तो वह केवल कम्पोज का ही काम करता था। यथेष्ट शारीरिक परिश्रम न होने और मानसिक श्रम अधिक करने के कारण उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने लगा तो उसने उवोट के छापेखाने मे छापने का काम करना शुरू कर दिया।

अब फ्रैंकलिन ने सिवाय जल के और सब पेय वस्तुओं को उपयोग में लेना छोड़ दिया। उसके साथ वाले दूसरे नौकर लोग बीयर नामक शराब बहुत पीते थे इसलिये ये केवल पानी पीने वाले फ्रैंकलिन की बहुत हँसी करते। इतना होने पर भी फ्रैंकलिन में औरो की अपेक्षा सब से जियादा ताक़त थी। वह एक एक हाथ में पूरा एक एक फार्म लेकर ऊपर की मंजिल पर ले जाता और नीचे उतरता। बीयर पीने वालों से तो दोनों हाथों से भी एक फ़ार्म मुश्किल से लिया जाता। बिना शराब पिये ही उसमें इतनी ताक़त और मजबूती कैसे आगई, यह उसकी खुद की भी समझ मे नही आया। फ्रैंकलिन लिखता है कि:—"छापने के काम पर जो मेरा साथी था वह काम पर आने से पहिले आध सेर बीयर पीता और हाजरी के समय रोटी के साथ आध सेर फिर। इसके बाद आध सेर भोजन करते समय–आध सेर तीसरे पहर को और आध सेर संध्या को काम पर से उठते समय। यह आदत मुझे अच्छी नहीं लगती। लेकिन, वह—मेरा साथी कहा करता था कि काम फुर्ती से हो और परिश्रम करने की ताक़त बढ़े इसके लिये बीयर का पीना बड़ा उपयोगी है। मैने उसको बहुत समझाया कि एक आने के शराब की

अपेक्षा एक आने की रोटी में अधिक आटा आता है इसलिये आध सेर पानी के साथ एक आने की रोटी खाने से दो सेर शराब पीने की अपेक्षा अधिक बल बढ़ सकता है। किन्तु, उसने शराब पीना न छोड़ा। प्रति शनैश्चर को शराब के लिये उसको चार पांच शिलिङ्ग खर्च करने पड़ते थे और मेरे पास इस काम के लिये पैसा था नहीं।"

थोड़े दिन तक छापने का काम करने के पश्चात् उवोट ने—फ्रेंकलिन की बदली अक्षर जमाने के काम पर कर दी। नये आये हुए मनुष्य के पास से पान सुपारी के पाँच शिलिङ्ग लेने का अक्षर जमाने वाले की प्रथा होने से उसने फ्रेंकलिन से पाँच शिलिङ्ग माँगे। कारखाने में दाखिल होते समय फ्रेंकलिन ने दस्तूरी दी थी, इसलिये बदली के समय फिर देना उसको उचित नहीं लगा। कार्य्यालय के मालिक उवोट का भी ऐसा ही अभिप्राय था। इसलिये फ्रेंकलिन ने अक्षर जमाने वालों को दस्तूरी देने से नांही कर दी। तीन सप्ताह तक फ्रेंकलिन ने अपनी हठ को नहीं छोड़ा। इस पर अक्षर जमाने वाले उसको मण्डली से बाहर निकाल कर उसका काम बिगाड़ने लगे और बार २ करके उसको इतना अधिक सताया कि उसको अपनी हठ छोड़ कर अन्त में दस्तूरी चुकानी पड़ी। जिनके साथ हमेशा रहना है, उनके साथ मन-मुटाप रखना भूल है, ऐसा अब फ्रेंकलिन को निश्चय होगया। दस्तूरी चुका देने से मन मुटाव दूर हुआ और उसकी अपने साथियों से मित्रता होगई। उसकी बुद्धिमानी और चतुराई के कारण उन पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। फ्रेंकलिन का अभिप्राय और सलाह उसके साथियों में अब विशेष महत्त्व की गिनी जाने लगी। और उसके कहने का अनुकरण होने लगा। बीयर शराब पीने की अपेक्षा जल और लोट* का

* जौ का।

दलिया पीना अच्छा है; ऐसा फ्रैंकलिन ने बहुत लोगों को भरोसा दिलाया। आध सेर बीयर का डेढ़ आना लगता था, और इतने ही पैसों से पास की दुकान में से मक्खन और रोटियों के टुकड़े डाल कर सिजोई हुई गरम रबड़ी एक बड़ा लोटा भर कर मिलती थी। अतः बीयर का नाश्ता छोड़कर फ्रैंकलिन की भाँति इसके कई साथी हाज़री में वही रबड़ी पीने लगे। इससे पेट भर जाता, पैसों का बचाव होता और दिमाग़ भी अच्छा काम करता। जिन्होंने शराब पीकर बदमाशी करना जारी रक्खा उनके पैसों का सदुपयोग नहीं होता। इतना ही नहीं, कई प्रसङ्ग ऐसे आजाते कि उनकी कोई क़दर नहीं करता।

इसके पश्चात् फ्रैंकलिन ने छापेखाने के नियमों में कुछ परिवर्त्तन कराया। अक्षर जमाने में इसकी फ़ुरती और कार्य्यालय में नियमित रीति से ठीक समय पर आने के कारण उसका मालिक उससे बहुत ख़ुश हो चला था और उसकी बात को सब से अधिक मानता था। वह इसको ऐसा काम सौंपता था कि जिसमें इसको सब से अधिक मज़दूरी मिले। निरन्तर के उद्योग और सादगी से रहने के कारण इसके पास पैसा इकट्ठा होता गया और इस प्रकार बिना किसी अड़चन के कई मास तक काम चला।

उवोट के कार्य्यालय में मकान लेने के पश्चात् फ्रैंकलिन ने अपना मकान ड्यूक स्ट्रीट में बदला। यहाँ उसको किराये के प्रति सप्ताह साढ़े तीन शिलिंग देने पड़ते थे। घर की मालिकनी एक वृद्धा स्त्री थी। घर में कोई मनुष्य न होने से उसने यह सोचकर कि चलो घर में कोई मनुष्य तो नज़र आयगा इतने थोड़े किराये पर ही फ्रैंकलिन को रख लिया था। कुछ समय पश्चात् इसे दूसरे स्थान पर एक और मकान प्रति सप्ताह डेढ़

शिलिङ्ग–भाड़ा देने पर मिलने लगा इस कारण उसने वहाँ रहने का इरादा किया और वृद्धा से कहा कि मैं अब तुम्हारा मकान छोड़ता हूँ। इस पर उस वृद्धा ने जो इसके अच्छे बर्ताव से प्रसन्न थी यह कहा कि बेटा! तुम मुझे डेढ़ शिलिङ्ग ही दे दिया करना। लेकिन, मेरा घर मत छोड़ो। इस प्रकार उसने दो शिलिङ्ग प्रति सप्ताह की बचत यह भी निकाल ली और जब तक उसने लंदन न छोड़ा, १॥ शिलिङ्ग प्रति सप्ताह के किराये वाले उसी मकान में रहा। पर अपनी बचत के लिये उस वृद्धा की दीना-वस्था का उसने कुछ विचार न किया इसका उसे बड़ा खेद रहा।

फ्रेंकलिन के कारण घर में उस वृद्धा को बहुत अच्छा लगता और इसी प्रकार उसके कारण फ्रेंकलिन का भी जी बहल जाता। शरीर में बादी की बीमारी होने के कारण उस वृद्धा से घर से बाहर नहीं निकला जाता था। उसको बहुत सी कहा-नियाँ आती थीं। कई बार वह फ्रेंकलिन को अपने घर पर ही भोजन कराती और भाँति भाँति की रसीली कहानियाँ सुनाकर उसका मनोरञ्जन करती। फ्रेंकलिन को भी उसकी बातें ऐसी भली लगतीं कि उसके निमन्त्रण को वह कभी अस्वीकार नहीं करता। भोजन में वह सादी किन्तु, रुचिकर सामग्री तैयार किया करती थी। इससे और वृद्धा की बातों को सुनकर उसको बड़ा आनन्द आता था।

उवेट के छापेखाने में फ्रेंकलिन के साथियों में डेविडहाल नामक एक मनुष्य था जो आगे चल कर फिलाडेल्फिया के धंधे में फ्रेंकलिन का हिस्सेदार बना। उसका दूसरा साथी वाइगेट था। इसके अभिभावक मालदार थे, इसलिये उसकी शिक्षा अच्छी होगई थी। दूसरों की अपेक्षा फ्रेंकलिन अधिकतर इसी के साथ रहता था। इसको पढ़ने लिखने का खूब शौक़ था। वह फ्रेंच और

लेटिन भाषाओ का भी ज्ञाता था। उसको और उसके एक और मित्र को फ्रेंकलिन ने केवल दो दिन में ही तैरना सिखा दिया था। एक समय वाइगेट के कुछ मित्र अपने गाँव से कहीं बाहर जा रहे थे, वे उसे अपने साथ ले गये। वहाँ से वापिस लौटते समय उन्होंने फ्रेंकलिन को कैसा तैरना आता है यह देखने की इच्छा प्रकट की। फ्रेंकलिन को तैरने का शौक़ तो बचपन से ही था इस कारण उसको उसका अच्छा अभ्यास था। वह शीघ्र ही कपड़े खोल कर पानी में कूद पड़ा और तैरने की उसको जितनी कलाए आती थीं उनको बताता हुआ चेलसी से ब्लेक फ्रायर (चार मील) तक बराबर तैरता चला गया। यह देख कर सब दङ्ग रह गये। अब तो दिन पर दिन वाइगेट का फ्रेंकलिन के प्रति बड़ा स्नेह बढ़ने लगा। कुछ समय के पश्चात् उसने फ्रेंकलिन के साथ यूरोप यात्रा का विचार किया। फ्रेंकलिन को भी उसका यह विचार पहिले तो ठीक लगा किन्तु, जब इस विषय में उसने अपने मित्र डेन्हाल से सम्मति ली तो उसको अपना विचार बदलना पड़ा। डेन्हाल की अनुमति यह थी कि अब जैसे बने वैसे उसको पेन्सिलवेनिया चला जाना चाहिये।

डेन्हाल बड़ा ईमानदार और व्यवहार कुशल पुरुष था। उस की व्यवहार कुशलता से आगे चल कर व्यापारी मण्डल में उस का बहुत मान बढ़ा। पहिले यह ब्रिस्टल में व्यापार करता था किन्तु, कुछ दिन के बाद जब वहाँ व्यापार कुछ मंदा पड़ गया तो वह अमेरिका चला गया और वहाँ जाकर उसने बहुत पैसा कमाया। वहाँ से वह 'लंड़न होप' जहाज़ में फ्रेंकलिन के साथ वापिस आया। घर पर आकर उसने अपने सब क़र्जदारों को निमन्त्रण दिया। जिस समय उसने दिवाला निकाल दिया था तो इन सब लेने वालों ने उसके साथ बहुत रियायत की थी इसके लिये उसने एक प्रीति भोज दिया। भोजन आरम्भ होने से पहिले अपने सब

ऋण दाताओं का बहुत आभार माना। पहिले रखी हुई भोजन सामग्री समाप्त हो जाने पर जब परसी हुई थालियाँ उठाई गई तो उनमें से प्रत्येक के नीचे उन लेनदारों का शेष रुपया और ब्याज की हुण्डी रखी हुई मिली। लेनदारों को यह ख्याल भी नहीं था इसलिये उसकी ईमानदारी और व्यवहार कुशलता पर उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ।

फ़िलाडेल्फ़िया में डेन्हाल ने फ्रैंकलिन को अपनी दूकान का मुनीम बनाना चाहा। इस जगह का वार्षिक वेतन ५० पौंड था। छापने के काम में फ्रैंकलिन इससे अधिक कमाता किन्तु डेन्हाल ने उसको वचन दियाकि व्यापारिक काम में जानकारी हासिल कर लेने के बाद वह उसको माल लेकर वेस्ट इन्डीज़ भेजेगा और वहांके व्यापारियों से दलाली का काम मिलने पर वह उसको फायदा पहुंचावेगा। लन्दन में रहते २ फ्रैकलिन ऊब गया था इसलिये उसकी भी इच्छा हुई कि फ़िलाडेल्फ़िया जाकर पहिले की भाँति अपने दिन आनन्द से बितावे। इस कारण उसने यह सोच कर कि इसमें खूब लाभ है डेन्हाल की नौकरी करना स्वीकार कर लिया। अब वह छापेख़ाने की नौकरी छोड़ कर डेन्हाल के यहां काम करने लगा। डेन्हाल ने उसको माल की पेटियें भरवाकर जहाज़ पर लदवाने का काम सौंपा। सारा माल जहाज़ पर लदवा देने के बाद इसको जहाज़ चलने के दिन तक ख़ाली बैठा रहना पड़ा। इसी समय एक दिन सर विलियम विन्धाल नाम के एक प्रख्यात पुरुष ने उसको अपने घर पर बुलाया। बोलिंग ब्रोक—सचिव के समय में सर विलियम ख़ज़ाने का मुख्य अधिकारी रह चुका था। जब फ्रैंकलिन उससे मिलने को गया तो सर विलियम ने,जो उसके तैरने की कला में प्रवीण होने की बात सुन रखी थी कह सुनाई। विलियम के दो लड़के यात्रा की इच्छा से कहीं बाहर जाने वाले थे इस कारण उसकी यह

इच्छा थी कि जाने से पहिले इनको तैरना सिखला दिया जाय। उसने फ्रेंकलिन से कहा कि यदि तुम इनको तैरना सिखा दो तो मै तुम्हे अपने परिश्रम का समुचित बदला दूँगा, वे लड़के लंदन मे नहीं थे और फ्रेंकलिन के चलने का दिन सन्निकट था इस कारण उसने खेद के साथ इन्कार कर दिया। यदि डेन्हाल के यहाँ नौकर रहने से पहिले यह प्रसङ्ग आजाता तो फ्रेंकलिन अमेरिका जाने का विचार छोड़ देता और इङ्गलैण्ड में रह कर ही कदाचित तैरने की कला सिखाने की शाला खोल देता और इस प्रकार आगे चल कर जो वह ऐसा महान् पुरुष हुआ न हो पाता। अख़ीर तक कौन सा धंधा करना इस विषय में फ्रेंकलिन ने अब तक कोई ठीक निश्चय नहीं किया था। इस समय तो उसका यही उद्देश था कि जो काम हाथ लगे उसी को करना और उसमें मिले हुए पैसे में से युक्ति पूर्वक बचाकर मालदार होना। ससार में जो महापुरुष हुए हैं, उन्होने भविष्य के लिये कोई बड़ी धारणा रख कर काम नहीं किया। शेक्सपियर, न्यूटन, हेन्डल, जेम्स वोट, रॉबर्ट फुल्टन, जॉन वाल्टर और दूसरे अनेक प्रसिद्ध २ पुरुष जिन्होंने मानवजाति की बहुत सेवा की है वे भी अपने २ कार्य्यों के आरम्भ पर भविष्य में महापुरुष होने की आकांक्षा किये बिना फ्रेंकलिन की भाँति केवल अपना धंधा भली प्रकार करते रहे हैं। आरम्भ में कोई बड़ी धारणा रखने वाले और आगे चलकर महानता प्राप्त करने वाले मनुष्य संसार में कोई नहीं हुए। फ्रेंकलिन जैसे साधारण मनुष्यों ने जिन्होंने "मेरा धंधा कैसा है" इस बात का विचार न करके उसी को अपने निर्वाह का साधन मान कर सचाई और व्यवहार कुशलता से किया है वे आगे चलकर अनायास ही महानता को प्राप्त हुए हैं।
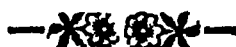
प्रकरण छठा

फिर फ़िलाडेल्फ़िया में

सन् १७२६—२७

लन्दन से निकलना—ग्रेव सेण्ड से जहाज चला—पोर्ट्स्मथ—आइल आफ़ वाइट की मुलाकात—अकस्मात् यारमथ के सामने—समुद्र में "स्नो" जहाज का मिलना—फ्रेंकलिन का पश्चात्ताप—वर्ताव की योजना सोचली—फिलाडेल्फिया में उतरना—फिलाडेल्फिया में परिवर्तन—सर विलियम कीथ का नौकरी से अलग होना—डेबोरा रीड विवाहिता—कीमर आबादी में—डेन्हाल की दुकान में मुनीमी—डेन्हाल के साथ प्रेम भाव—बीमार हो जाना—डेन्हाल की मृत्यु और दूकान का बन्द होना—नया धधा—कीमर के यहा नौकर रहना।

फ्रेंकलिन लन्दन में अठारह महीने रहा। यह सब समय उसने नौकरी करने में ही बिताया। उसके कुछ रुपये नाटक देखने तथा पुस्तकें खरीदने में खर्च हुए। इसके अतिरिक्त उसके निजी खर्च में अधिक व्यय नहीं हुआ। अपनी बचत में से वह २७ पौण्ड राल्फ़ को दे चुका था, लेकिन उनके वापिस मिलने की कोई आशा नहीं थी। सारांश यह कि लन्दन में रह कर फ्रेंकलिन की आर्थिक अवस्था नहीं सुधरी। इतना अवश्य हुआ कि अच्छी २ पुस्तकें उसके देखने में आई और कई लोगों से उसका परिचय हो गया। इसके साथ ही छपाई के काम में भी उसको अधिक जानकारी हुई। लन्दन में प्राप्त हुए ये लाभ आगे जाकर फ्रेंकलिन के लिये बड़े उपयोगी सिद्ध हुए।

"दी वर्कशायर" नामक जहाज़ से फ़िलाडेल्फ़िया जाने के लिये फ्रैंकलिन ने टिकिट लिया। यह जहाज़ ग्रेवसेण्ड बन्दर पर तारीख़ २१ जुलाई को आया था और दो दिन तक लंगर डाल कर २३ जुलाई को फिर चल दिया। मुसाफिरी में प्रति दिन का रोजनामचा और खास २ देखी हुई चीज़ों को फ्रैंकलिन ने लिख लिया। ग्रेवसेण्ड के निवासियों के विषय में उसने अपनी डायरी में लिखा है:—"यह ग्रेवसेण्ड बड़ा धूर्त और धिक्कारने योग्य व्यक्तियों से भरा हुआ है विदेशियो को लूट २ कर यहांके निवासी अपना निर्वाह करते हैं। कोई वस्तु ख़रीदी जाय और माँगने से आधा मूल्य दिया जाय तो भी वह महँगी पड़ती है। ईश्वर का लाख २ शुक्र है कि कल हम इस गाँव से चल देंगे।"

चार दिन तक इङ्गलैण्ड की खाड़ी में इधर उधर फिरने के बाद पोर्ट स्मथ के सामने आकर जहाज़ ने लंगर डाला। जहाज़ का कप्तान मि० डेन्हाल और उसका कारकुन पोर्टस्मथ की प्रख्यात गोदी देखने को उतरे। आइल ऑफ वाइट का टापू निकट होने से—फ्रैंकलिन ने उसको देखने के लिये जाने की इच्छा की। वायु की अनुकूलता न होने से जहाज़ को कुछ दिन तक वहीं रोकना पड़ा क्योंकि थोड़ी दूर जाकर जहाज़ हवा के दबाव से उल्टा आ जाता था। इस प्रकार उस जहाज़ ने तीन सप्ताह तक उसी खाड़ी में चक्कर लगाया। आइल ऑफ वाइट के यारमथ गाँव के पास कुछ दूसरे यात्रियों के साथ रास्ता भूल जाने की एक आकास्मिक घटना का वर्णन फ्रैंकलिन ने अपनी डायरी में किया है। टापू में फिरते हुए यारमथ बंदर से लौटते समय वे रास्ता भूल गये। बंदर के निकट यात्रियों के उतरने की डोंगियों का स्थान बता कर उनसे किसी ने कहा कि वहाँ जाओ। वहाँ से एक बालक डोंगी में बिठा कर तुम को अपने ठिकाने पर ले जायगा। फ्रैंकलिन लिखता है कि:—"हम पहुँचे उस समय

वह आलसी ऊँघ रहा था। हमारे बुलाने पर वह उठा किन्तु, डोंगी में बिठला कर हमको ले जाने से इन्कार कर दिया। तब हम अपने ही हाथों से डोंगी को खेकर ले जाने के विचार से पानी की तरफ़ गये। डोंगी को एक कीले के साथ मज़बूती से बांध रक्खी थी और उसके आस पास पचास गज़ की दूरी पर पानी भरा हुआ था इसलिये हमको वहाँ जाकर डोंगी खोल लाना बड़ा कठिन जान पड़ा। किन्तु, फिर भी पानी में जाने के लिये मैं कपड़े उतार कर तैयार हुआ। पानी के नीचे बहुत काई जमी हुई थी, लेकिन, उसको मैंने नहीं देखा था इसलिये मै पानी में उतरते ही—कमर तक उसमें फँस गया। किसी तरह चल कर मैं डोंगी तक पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि वह साँकल से बँधी है जिसमें ताला लगा हुआ है। मैंने बहुत चाहा कि साँकल को नकूचे से निकाल लूँ लेकिन सफल न हो सका। फिर मैंने चाहा कि कीले को ही उखाड़ लूँ—किन्तु बहुत कुछ ताकत लगा कर भी मैं वैसा न कर सका। एक घण्टे तक सिरपची करके अन्त में जब मैं थक गया तो भींगे वस्त्र और कीचड़ में सने हुए शरीर से बिना डोंगी लिये वापिस आया।"

"सरदी खूब लग रही थी और हवा भी ठण्डी चल रही थी। ओढ़ने आदि को कुछ न होने से हम पास ही लगी हुई घास की गंजी में रात बिताने का विचार कर रहे थे। इतने ही में हम में से एक को याद आया कि—उसके पास रास्ते में मिला हुआ एक लोहे का मज़बूत टुकड़ा है। उसने मुझ से कहा कि शायद इससे नकूचा निकल जाय। मैं उसको लेकर फिर डोंगी पर पहुँचा और थोड़ी देर कोशिश करके नकूचा निकाल लिया डोंगी को किनारे पर ले आया। इससे सब को बड़ी ख़ुशी हुई। सब लोगों को डोंगी में बिठा कर मैंने सूखे कपड़े पहने और डोगी को चलाया। किन्तु, अब सब से बड़ी कठिनाई चलने की थी। जलागम का

समय होने से पानी किनारे तक फैल गया था रात चाँदनी थी, लेकिन, फिर भी हम यह मालूम न कर सके कि पानी का बहाव किधर को है। तब आँख मीच कर डोंगी को जिधर मन में आया उधर ही चलाई थोड़ी दूर चल कर कीचड़ की जगह आ गई और डोंगी उसमें फँस गई। हम सबने मिल कर बहुत कोशिश की लेकिन, वह एक इंच भी न हटी। बल्कि, एक धक्का ऐसा लग गया कि जिससे वह कीचड़ में और अधिक धँस गई अब क्या करना चाहिये यह हम न सोच सके। और पानी चढ़ता है या उतरता है यह भी न मालूम न होने से बहुत घबराये। लेकिन, सोचने पर हमने इतना अनुमान तो लगा लिया कि पानी का चढ़ाव नहीं, उतार ही है क्योंकि डोंगी फँसी थी—उस समय की अपेक्षा अब पानी कम हो चला था।

हवा और पानी में खुली हुई डोंगी के भीतर सारी रात बिना ओढ़े पड़े रहना हमको बहुत बुरा लगा। और अधिक दुःख तो इस बात का हुआ कि सवेरा हो जने पर डोंगी वाला हम को पकड़ लेगा और लोग हम को इस दशा में देखेंगे तो कैसा फजीता होगा। आध घंटे से कुछ अधिक देर तक हमने फिर डोंगी को वहाँ से—चलाने के लिये कोशिश की। बहुत ज़ोर लगाया लेकिन, जब कुछ न हुआ, तो निरुपाय हो कर बैठ गये। किनारे की ओर पानी का उतार हो जाने से अब तो डोंगी का जाना और भी कठिन होगया था और छाती २ के बराबर कीचड़ होने से पैदल भी जाना नहीं हो सकता था। इसलिये सिवाय डोंगी में बैठे रहने के और कोई उपाय नहीं था। आख़िर को डोंगी में बैठे हुए हम किसी तरह वहाँ से भाग निकलने का उपाय ढूँढने लगे। कपड़े उतार कर नीचे उतरे। डोंगी कुछ हल्की हुई और फिर सबने एक साथ मिल कर पूरी ताक़त लगाई इस प्रकार हम उसको बड़ी कठिनाई से पानी में ले गये। किन्तु,

खेने को चाटली केवल एक ही थी इसलिये बड़े परिश्रम से हम डोंगी को किनारे तक ला सके। वहाँ उतर कर हम ने कपड़े पहिने और डोंगी को एक जगह बाँध कर बहुत देर में किन्तु, बड़ी प्रसन्नता से "क्वीन्स हेड" पर जहां हम अपने और २ साथियों को छोड़ आये थे, पहुँचे। जिस डोंगी को हम लाये थे वह जहाज़ पर गई थी इसलिये फिर भी सारी रात हमको किनारे पर ही बितानी पड़ी। इसी प्रकार हमारी सैर करने की इच्छा पूर्ण हुई।"

तीन सप्ताह तक इङ्गलैण्ड की खाड़ी में रुके रहने के पश्चात् जहाज़ अटलांटिक महासागर में पहुँचा। थोड़ी ही देर में ज़मीन दिखाई देना बन्द होगया और चारों ओर जल ही जल नज़र आने लगा। उस समय इङ्गलैण्ड और अमेरिका के बीच में अब की तरह जहाज़ नहीं आते जाते थे। ५० दिन तक जहाज़ मे मुसाफिरी कर चुकने पर "वर्क शायर" पर से दूसरा जहाज़ दिखाई दिया। यह जहाज़ मित्रो के देश का था। वह इतना निकट आगया था कि दोनों जहाज़ों पर बैठे हुए यात्री एक दूसरे को अच्छी तरह देख रहे थे। बहुत दिनों में दूसरे लोगों की सूरत देख कर फ्रैंकलिन और उसके साथियों को बड़ी प्रसन्नता हुई। फ्रैंकलिन लिखता है:—"इस जहाज़ का नाम 'स्नो' था और वह डब्लिन से मुसाफिरों को लेकर न्यूयार्क जाता था। वे लोग भी जब निकट आये तो हमको देख कर बहुत खुश हुए। जब मनुष्य दूर की यात्रा करता है और बहुत दिन मे उसको किसी दूसरे मनुष्य से मिलने का अवसर आता है तो उसको सचमुच बड़ा आन्दन आता है। उसके चहरे पर एक प्रकार की प्रसन्नता की झलक आ जाती है। यही दशा मेरी हुई"

इस मुसाफ़िरी में फ्रैंकलिन ने अपनी पहिले की हुई भूलों को याद करके बड़ा पश्चात्ताप किया और साथ ही आगे किस

ढंग से काम करना चाहिये इसका भी पूरा २ विचार किया। राल्फ के साथ रहने में उसका बहुत खर्च हुआ था। मि० वर्नन के रुपये उसके पास से खर्च होगये थे इस कारण उसको इस बात की बड़ी आशङ्का थी कि यदि वह अपना रुपया मांगेगा तो मेरा बड़ा फजीता होगा। फ्रैंकलिन के धार्मिक विचार नास्तिक की भांति थे। कोलिन्स राल्फ आदि इसके पुराने साथियों की दशा कैसी हुई थी, और क्यों हुई थी यह वह भली प्रकार जानता था। जहाज़ में मुसाफ़िरी के समय शान्ति मिलने पर उसे उन सब वातों को याद कर करके उन पर खूब विचार करने का अवसर मिला और आगे ऐसी भूल न हो इसके लिये उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब सब काम नियमित रीति से करने चाहियें। यही नहीं उसने इसके लिये कुछ नियम भी बना लिये और उनको लिख लिया। बहुत समय से ऐसा माना जाता था कि फ्रैंकलिन का वह लेख खोगया है। किन्तु, पीछे से मालूम हुआ कि उस समय फ़िलाडेल्फिया में जो एक मासिक पत्र निकलता था उसमें उसके कुछ निर्धारित नियम प्रकाशित हुए थे वही उस का लेख अथवा उस लेख का कोई भाग था। फ्रैंकलिन के स्वयम् अपने ही हाथ से लिखे हुए लेख पर से वे छपे थे। आरम्भ में प्रस्तावना के तरीक़े पर फ्रैंकलिन ने कुछ टीका की है जो इस प्रकार है:—

"भाषा शास्त्र पर लिखने वाले विद्वान् हमको शिक्षा देते हैं कि यदि हमे कोई लेख लिखना है तो आरम्भ में उसका एक मसविदा बना कर उसमें अच्छी तरह संशोधन कर लेना चाहिये। इस बात का पूरा ध्यान रहे कि भाषा और विचार दोनों क्रम-बद्ध हों। ऐसा न करने से कोई लेख उत्तम नहीं माना जाता। मुझे ऐसा मालूम होता है कि मनुष्य जीवन के लिये भी यह नियम लागू हो सकता है। जीवन को कैसे बिताना चाहिये, इसके लिये

मैंने कोई यथावत् व्यवस्था नहीं की इसी से मेरी जीवन-लीला कुछ अस्त व्यस्त सी हो गई है। अब मुझ में एक नवीन युग का आविर्भाव होने वाला है। प्रत्येक उचितानुचित बात को समझने वाले मनुष्य की भाँति मैं अपने दिन पूरे करूँ इसके लिये अत्यन्त आवश्यक है कि मैं कुछ संकल्प करलूं।" अस्तु।

(१) जब तक अपने सारे ऋण को न चुका दूं मुझे बहुत ज्यादा किफ़ायत (मित व्यय) करने की ज़रूरत है।

(२) प्रत्येक अवस्था में सच बोलना चाहिये। पालन न हो सके ऐसा वचन किसी को नहीं देना चाहिये। बोलने चालने में अपना अन्तःकरण हमेशा शुद्ध रखना चाहिये। मनुष्यों में यह सबसे अच्छा और ग्रहण करने योग्य गुण अवश्य होना चाहिये।

(३) जिस कार्य को हाथ में लेना उसको पूरे उद्योग और परिश्रम से करना चाहिये। एक दम मालदार होने का विचार न कर बैठना चाहिये। उद्योग और धीरज रखने से ही ठीक २ सफलता होती है।

(४) मैं ज़ोर देकर कहता हूं और निश्चयपूर्वक कहता हूं कि कोई बात सच्ची हो तो भी उसको एक ख़ास ढङ्ग से दूसरे पर प्रगट करनी चाहिये। जहाँ तक हो सके दूसरों के दोषों का छिद्रान्वेषण न करके प्रसगानुकूल उसके गुण-प्रदर्शन की ही चेष्टा करनी चाहिये।

फ्रैंकलिन केवल इतना ही करके चुप नहीं हुआ। वह अपने प्रतिदिन के कार्यों का रात को विचार करता और आज मुझ से क्या भूल हुई है उसको याद रख कर आगे से ऐसा न हो इसके लिये प्रतिज्ञा करता। इसका फल यह हुआ कि उसके स्वभाव में

दिन पर दिन सुधार होता गया और इस रीति से उसकी जैसी उन्नति हुई वह हमें आगे चल कर मालूम होगी।

ता० ११ अक्टूबर सन् १७२६ को रात के ८ बजे ८२ दिन की मुसाफ़िरी के बाद "वर्कशायर जहाज़" फ़िलाडेल्फ़िया से छः मील पर दिलावर नदी में आ पहुँचा। कुछ युवक डोंगी में बैठ कर सैर करने को निकले थे। वे जहाज़ पर आये और फ्रैंकलिन से मिल कर उसको तथा उसके और साथियों को उस डोंगी पर बिठा कर फ़िलाडेल्फ़िया ले गये। रात को १० बजे फ्रैंकलिन फिलाडेल्फिया पहुँचा। एक लम्बी यात्रा से सकुशल लौट आने के लिये सब ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और एक दूसरे को परस्पर बधाई देकर अपने २ घर पर गये।

इधर फ्रैंकलिन की अनुपस्थिति के कारण फिलाडेल्फिया में बहुत परिवर्त्तन हो गया था। सर विलियम कीथ गवर्नरी के ओहदे पर से हट गया था। एक साधारण मनुष्य की भाँति वह मार्ग में चलते हुए फ्रैंकलिन से मिला और बहुत शर्मिन्दा हुआ। फ्रैंकलिन के साथ उसने पहिले जो अनुचित बर्ताव किया था उसके कारण लज्जित होकर वह नीचा मुँह कर के बिना बोले ही चल दिया। इसके बाद २५ वर्ष तक पेट की खातिर इधर उधर भटक भटक कर अन्त में वह ८० वर्ष की आयु में लन्दन में मर गया।

मि० रीड की लड़की डेबोरा को फ्रैंकलिन ने लन्दन से रवाना होने के कुछ दिन पहिले एक पत्र लिखा था। उसमें ऐसा उल्लेख था कि "तेरे प्रेमाकर्षण के कारण मैं फिर लन्दन से फिलाडेल्फिया वापिस आता हूँ।" इससे पहिले फ्रैंकलिन नें कुछ भी न लिखा था इस कारण इसके वापिस आने की डेबोरा को

कोई आशा न थी। बल्कि, उसको और उसकी माता को तो इसमें भी सन्देह था कि फ्रेंकलिन जीवित है। इस कारण अपने सम्बन्धियों के विशेष आग्रह करने पर डेबोरा ने एक दूसरे युवक रोजर्स के साथ विवाह कर लिया था। रोजर्स अपने रोजगार में बड़ा दक्ष था। इस कारण डेबोरा की माता ने भी उसके साथ विवाह सम्बन्ध हो जाने में कोई आपत्ति नहीं की। लेकिन, पीछे से ऐसा मालूम हुआ कि इसमें धोखा हुआ है। इसकी पहिले की स्त्री भी जीवित है। डेबोरा रीड को इसके साथ सम्बन्ध होने में बाद को जाकर जब कुछ सुख न मिला तो उसको बड़ा दुःख हुआ। कुछ समय जैसे तैसे बिता कर वह अपने पिता के घर वापिस आई और अविवाहिता की भाँति अपना असली नाम धारण करके अपने दुखमय जीवन को किसी प्रकार बिताने लगी। फ्रेंकलिन वापिस आया तब उसको मालूम हुआ कि उसके पीछे डेबोरा की कैसी दशा हुई। मेरी लापरवाही के कारण ही इस बेचारी को विवाह करके दुखी होना पड़ा है इस बात का ध्यान आते ही फ्रेंकलिन का दिल भर आया। युवक रोजर्स दिवाला निकाल कर वेस्ट इन्डीज़ को भाग गया था और कुछ दिन के बाद ऐसी अफवाह सुनने में आई थी कि वह मर गया है। फ्रेंकलिन मि० रीड के यहाँ मिलने गया। उस समय सब लोगों ने उसके दोष पर ध्यान न देकर बड़ा प्रेम दिखलाया और पहिले की सी घनिष्ठता पूर्ववत् जारी रक्खी।

कीमर की दशा फ्रेंकलिन को सुधरी हुई मालूम हुई। इसका छापाख़ाना अब एक अच्छी जगह में आ गया था और उसकी दूकान मे कागज़ के सामान का भी अच्छा स्टाक हो गया था। साथ ही टाइप भी नया आ गया था और कारख़ाने में काम करने वालों की संख्या भी बढ़ गई थी। अब ऐसा मालूम होता

था मानों उसका कारोबार बहुत बढ़ गया है और छपाई का काम भी खूब मिलता है।

फिलाडेल्फिया आने के पश्चात् तुरन्त ही मि० डेन्हाल और उसके मुनीब फ्रैंकलिन ने धंधा शुरू कर दिया। उन्होंने वाटर-स्ट्रीट में एक दूकान किराये पर लेकर उसमें लन्दन से माल मँगवा कर रक्खा। मुनीबी का काम फ्रैंकलिन के लिये नया था लेकिन, उसने ऐसी रुचि से परिश्रम किया कि थोड़े ही दिनों मे हिसाब-किताब रखने और माल बेचने में अच्छी प्रवीणता प्राप्त कर ली। फ्रैंकलिन की डेन्हाल के साथ अच्छी पटने लगी। दोनों खूब हिल मिल गये और परस्पर स्नेह-पूर्वक रहने लगे। उनका रहन सहन ऐसा मालूम होने लगा मानों ये एक ही कुटुम्ब के हैं। फ्रैंकलिन का मन डेन्हाल और उसके रोजगार में ऐसा गठ गया था कि कोई दूसरा रोजगार करना या किसी दूसरे की नौकरी करना अब उसको बिल्कुल ना पसन्द था। इसके अतिरिक्त डेन्हाल अब फ्रैंकलिन को अपने रोजगार का हिस्सेदार बना कर सारा कारोबार उसी के विश्वास पर छोड़ने वाला था इससे भी फ्रैंकलिन को सन्तोष था। किन्तु, उसकी यह धारणा स्थायी नहीं रही। दूकान खोलने के चार मास पश्चात् सन् १७२७ ईस्वी के फरवरी मास के आरम्भ मे मिस्टर डेन्हाल और फ्रैंकलिन दोनो एक साथ ही बीमार हो गये, फ्रैंकलिन को हृद् रोग हो गया। बीमारी यहां तक बढ़ गई कि वह मरते २ बचा। डेन्हाल कुछ दिन तक दुःख पाकर मर गया। वह अपने पीछे के लिये फ्रैंक-लिन को एक वसीअतनामा लिख गया था। डेन्हाल की मृत्यु के पश्चात् दूकान पर उसके एक्जीक्यूटरों ने अपना अधिकार जमा लिया। उनका इरादा यह था कि सारा माल नीलाम करके दूकान को बंद कर दी जाय। फ्रैंकलिन ने समझा कि उसकी

मुनीबी छिन जायगी इस से अब उसको इस बात का बड़ा विचार होने लगा कि क्या करना चाहिये। पहिले तो उसने किसी की दूकान पर मुनीबी मिल जाने की कोशिश की। परन्तु, किसी ठिकाने पर ऐसी जगह नहीं मिली। उसका बहनोई केप्टिन होम्ज उन दिनों फिलाडेल्फिया आया था। उसने फ्रैंकलिन को फिर छापने का धंधा करने की सलाह दी और इसी समय कीमर ने भी फ्रैंकलिन को बड़ी तनख्वाह का लालच देकर अपने यहाँ रखना चाहा। कीमर पहिले लन्दन में रहता था और उसकी स्त्री तो अब भी वहीं रहती थी। फ्रैंकलिन ने कीमर के विषय में लन्दन में ऐसी २ बुरी बातें सुनी थीं कि उसके यहाँ नौकर रहने को उसकी इच्छा नहीं होती थी। फिर भी दूसरा कोई उपाय न देख कर उसने कीमर के ही छापेखाने में नौकरी करली। छापेखाने का काम फ्रैंकलिन की देख रेख में छोड़ कर कीमर अपनी काग़ज़ी की दूकान को सम्हालने लगा।

प्रकरण सातवां

जण्टोमण्डली

सन् १७२७—२८

कीमर के पाच नौकर—उनका शिक्षक फ्रेंकलिन—छापेखाने में फ्रेंक-लिन कर्त्ता धर्त्ता—जण्टोमण्डली की स्थापना—जण्टो में सभासद् दाखिल करने की रीति—चौबीस प्रश्न—वादविवाद करने की रीति—फ्रेंकलिन अग्रगण्य और उसकी बुद्धिमानी—जण्टो की शाखाएं—कीमर से सम्बन्ध विच्छेद—मेरिडिथ का हिस्सा रख कर स्वतन्त्र छापाखाना खोलने का विचार—कीमर के यहा फिर नौकरी करना—न्यूजर्से के नोट छापने का काम—न्यूजर्से के अमलदारों से जान पहिचान—कीमर के गुण—आइज़ाक डीको और फ्रेंकलिन का भविष्य—लंदन से मुद्रणयंत्र का आना—कीमर की आज्ञा लेकर पृथक् होना—फ्रेंकलिन का लिखा हुआ समाधि लेख।

फ्रेंकलिन को मैनेजर की भांति रखने से पहिले कीमर ने थोड़ी २ तनख्वाह पर पांच नये मनुष्यों को नौकर रक्खा था। किन्तु, उनमें से कोई भी छापेखाने के काम में निपुण न था। उनको सिखा कर होशियार करने का काम फ्रेंकलिन को सौंपा गया। उनमें से जॉन नाम का आयर्लैंड निवासी एक बड़ा झगड़ालू आदमी था। उसको चार वर्ष के लिये कीमर ने एक जहाज़ के मालिक के पास से मोल ले लिया था। कुछ समय के पश्चात् जॉन चुपचाप भाग गया। इसलिये अब उसको काम

सिखाने में सिर फोड़ी करने का काम फ्रैंकलिन पर न रहा। दूसरा ह्यू मेरिडिथ नामक एक ग्रामीण युवक था वह बड़ा भला था। उसमें कुछ समझ, ज्ञान, और अनुभव था। परन्तु, उसकी शराब पीने की बहुत बुरी आदत पड़ गई थी। छापेख़ाने के धंधे मे उसकी रुचि भी नहीं थी। तीसरे का नाम स्टीवन पोट्स था। यह भी ग्रामीण था। वह बड़ा मसखरा था, किन्तु था कुछ काम करने वाला। चौथा आदमी जार्ज वेष नामक था। इसने ऑक्सफ़र्ड के विद्यालय में शिक्षा पाई थी। खर्च न होने से चार वर्ष के लिये नौकरी करने का प्रतिज्ञापत्र लिख कर वह लंदन से टिकिट लेकर अमेरिका आया था। जहाज़ के कप्तान के पास से कीमर ने उसकी नौकरी की अवधि मोल लेली थी। यह अच्छे स्वभाव का था। किन्तु, इसके साथ ही बड़ा आलसी और अविचारी भी था। पाँचवां डेविड हेरी नाम का कीमर का शिष्य की भांति रखा हुआ मनुष्य था। कीमर के ये नौकर थोड़े ही समय में फ्रैंकलिन के साथ हिलमिल गये। कीमर उनको कुछ सिखा नहीं सकता था इसलिये वे उसको कुछ नहीं गिनते थे। किन्तु, फ्रैंकलिन तो दिन प्रति दिन कोई न कोई नई बात सिखाने लगा। इसलिये वे उसके साथ कुछ आदर और विवेकता का बर्ताव करने लगे। छापेख़ाने में नये टाइप की बार बार आवश्यकता होती थी। किन्तु अमेरिका में टाइप ढालने वाला कोई न होने से बड़ी असुविधा होती। टाइप ढालने का काम फ्रैंकलिन ने लन्दन में जेम्स वॉट के छापेख़ाने में देखा था। इसलिये जैसे तैसे करके काम चलाऊ टाइप वह बना लिया करता था। वह स्याही भी बना लेता था और पुस्तकों की जिल्द बंधी के काम में भी सहायता दिया करता था, इसके अतिरिक्त गोदाम के काम को भी सम्हालता था। सारांश यह कि कीमर के छापेख़ाने में कर्त्ता-धर्त्ता वही था।

कीमर के नौकरों को शिक्षा दे चुकने पर फ्रैंकलिन ने उनकी और गाँव के अपने कुछ मित्रों की एक मएडली खड़ी की और उसका नाम जएटो रक्खा। यह मएडली ४० वर्ष तक चली और उसके सभासदों के सुख और ज्ञान बढ़ाने का उपयोगी साधन सिद्ध हुई। आरम्भ में उसके नीचे लिखे अनुसार ११ सभासद् थे:—

(१) बेंजामिन फ्रैंकलिन

(२) ह्यू मेरिडिथ

(३) स्टीवन पोट्स

(४) जार्ज वेष

(५) जोसफ ब्रिएटनल नाम का बड़ा काव्य प्रेमी और बुद्धिमान दस्तावेज़ लिखने वाला।

(६) टॉम्स गोड्फ्रे नामक स्वयम् सीखा हुआ गणित शास्त्री।

(७) नीकोल्स स्कल नामक पैमायश करने वाला।

(८) विलियम पारसन्स नामक मोची जो आगे जाकर पेन्सिलवेनिया के सर वेयर के जनरल के ओहदे पर पहुंचा।

(९) विलियम मोग्रीज नामक एक अच्छा होशियार कारीगर।

(१०) राबर्ट ग्रेस नामक एक धनाढ्य का लड़का और फ्रैंकलिन का प्रिय मित्र।

(११) विलियम कॉलमेन नामक व्यापारी का गुमाश्ता जो आगे जाकर बड़ा भारी व्यापारी और न्यायाधीश हुआ।

जएटो मएडली स्थापित करने का उद्देश्य सर्वसाधारण में सद्गुणों की वृद्धि करना था। जो इसका सभासद् होना चाहता था उसको प्रविष्ट होते समय खड़े हो कर अपना एक हाथ हृदय

पर रख कर यह प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी कि "जण्टो के किसी सभासद् से मेरा द्वेष नहीं है और न मैं किसी को किसी दशा में अपमान की दृष्टि से देखता हूँ फिर वह चाहे जो धन्धा करता हो और चाहे जिस धर्म का अनुयायी हो। मैं मनुष्य मात्र का मित्र हूँ। सत्यार्थी और सत्य परायण हूँ और सत्य ग्रहण करने को सर्वदा उद्यत हूं। किसी मनुष्य को शारीरिक, मानसिक अथवा आर्थिक हानि न पहुँचाना चाहिये ऐसी मेरी प्रबल धारणा है। मैं सत्य को चाहता हूँ और पक्षपात रहित होकर सत्य का अनुसन्धान करता हुआ उसी को ग्रहण करने और फैलाने के लिये यथाशक्ति प्रयत्न करूंगा"। जण्टो मण्डली का अधिवेशन प्रति शुक्रवार की सन्ध्या को होता था। चौबीस प्रश्न निश्चित् किये गए थे जो सभासदों के इकट्ठे होने पर एक के बाद एक पढ़े जाते थे। सभासदो को जो कुछ कहना हो कह सकें इसके लिये शुरू करने से पहिले कुछ समय दिया जाता था। सभा में किस प्रकार वाद विवाद किया जाता था यह नीचे लिखे प्रश्नों पर से जाना जा सकता है:—

(१) तुमने इन प्रश्नों को आज प्रातःकाल पढ़ा है, जिससे तुम जण्टो को उसके उद्देश्य में सहायता दे सको ?

(२) क्या साहित्य, इतिहास, काव्य, वैद्यक, भ्रमण, यन्त्र-कला अथवा ज्ञान के दूसरे विषयों पर तुम्हारे पढ़े हुए अन्तिम ग्रन्थ में सबके जानने योग्य बात तुम्हारे देखने में आई है ?

(३) क्या तुमने अभी कोई नई बात सुनी है जो कहने योग्य हो ?

(४) क्या इस शहर में कोई ऐसा नागरिक भी दिखाई दिया है जिसने दिवाला निकाल दिया हो ? यदि है तो उसके दिवालिया हो जाने का क्या कारण है ?

(५) क्या अपने शहर वालों को छोड़ कर कोई नया आदमी किसी धन्धे के लिये आकर आबाद हुआ है ? यदि हुआ है तो किस रीति से ?

(६) क्या इस शहर में से अथवा किसी और ठिकाने पर से किसी मालदार आदमी को कुछ धन मिला है ? यदि मिला तो किस तरीके से ?

(७) क्या तुम्हे मालूम है कि इस शहर में किसी ने प्रशंसनीय अथवा अनुकरणीय कोई अच्छा काम किया है अथवा किसी ने न करने योग्य कोई भूल का काम किया है ?

(८) क्या अधिक मदिरापान से हुआ परिणाम और अविचार, क्रोध, अथवा दूसरे किसी दुर्गुण या मूर्खतापूर्वक किये गये कार्य्य का दुष्परिणाम तुम्हारे देखने या सुनने में आये हैं ?

(९) क्या नियमितता, सुशीलता अथवा कोई दूसरे सद्गुणों के अच्छे परिणाम अभी तुम्हारे जानने या सुनने में आये हैं ?

(१०) क्या तुम को अथवा तुम्हारे और परिचित व्यक्ति को इन दिनों कोई बीमारी हुई थी ? यदि हुई थी तो उसका क्या इलाज किया था और उस से कैसा फ़ायदा हुआ था ?

(११) यदि किसी को कुछ भेजना हो तो तुम्हारी जान पहिचान वालों में से कोई ऐसा है जो समुद्र की या स्थल की यात्रा कर सके ?

(१२) जाति, समाज अथवा देश के लिये जरटों के सभासद् उपयोगी सिद्ध हुए या नहीं ऐसी कोई बात तुम्हारे जानने मे आई है क्या ?

(१३) सभा के गत अधिवेशन के बाद कोई योग्य विदेशी इस शहर में आया हो ऐसा तुमने सुना है क्या ? उसके लक्षण अथवा गुणों के विषय में तुम्हारे देखने अथवा सुनने में कुछ आया हो तो कहो। उसकी रुचि के अनुसार उसको उत्तेजना देने अथवा उसका कोई उपकार करने के लिये जण्टो कोई काम कर सकती है क्या ?

(१४) अभी रोज़गार में पड़ा हो और उसको जण्टो किसी प्रकार की सहायता दे सके ऐसा कोई योग्य व्यक्ति तुम्हारी नज़र में है क्या ?

(१५) क्या अपने देश के क़ानून में तुम्हारे देखने मे कोई ऐसी त्रुटि आई है जिसका सुधार कराने के लिये जण्टो को व्यवस्थापक सभा से प्रार्थना करने की आवश्यकता हो ? क्या क़ानून में कोई नई बात बढ़ाना उपयोगी हो सकता है ? यदि हो सकता है तो वह क्या है ?

(१६) क्या प्रजा की उचित स्वतन्त्रता मे किसी प्रकार का बाहरी हस्तक्षेप तुम्हारे जानने में आया है ?

(१७) किसी ने तुम्हे बदनाम करने की चेष्टा तो नहीं की है ? यदि की है तो क्या इस के लिये तुम्हें जण्टो की किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता है ? यदि है तो क्या ?

(१८) क्या किसी मनुष्य से तुमको परिचय करना है ? यदि करना है तो क्या जण्टो का कोई सभासद् तुम्हारी सहायता कर सकता है ?

(१९) किसी के द्वारा किसी सभासद् की मान हानि हुई हो ऐसा तुम्हारे सुनने में आया है क्या ? यदि आया है तो तुमने उसका क्या प्रतीकार किया ?

(२०) जण्टो तुम को दाद दिला सके ऐसे किसी मनुष्य ने तुम्हारी कोई हानि की है क्या ?

(२१) क्या तुम्हारी धारणा में जण्टो अथवा उसके कोई सभासद् तुम को किसी प्रकार की सहायता दे सकने योग्य हैं ?

(२२) जण्टो की सलाह उपयोगी हो सके ऐसा कोई भारी काम इस समय तुम्हारे पास है क्या ?

(२३) सभा में हाज़िर न हो ऐसे किसी मनुष्य को इस समय तुमने क्या लाभ पहुँचाया है ?

(२४) न्याय, अन्याय, अथवा मतलब की बातों में आज तुम कुछ स्वार्थ-साधन करना चाहते हो ऐसी कोई अड़चन तुमको आई है क्या ?

इन प्रश्नों में की गई चर्चा पर जण्टो मण्डली की सभा मे वाद विवाद होता। इतना ही नहीं विवाद करने वाली मण्डली की ओर से शास्त्र और नीति की चर्चा भी हुआ करती। प्रत्येक अधिवेशन में एक निबन्ध भी पढ़ा जाता था। मनोहर व्याख्यानों को सीखने का उद्देश भी रक्खा गया था। अच्छी ऋतु में महीने मे एक बार नदी के पार शारीरिक व्यायाम करने को जण्टो के सभासद् इकट्ठे होते थे। वाद विवाद जो कुछ होता था उसमें कोई क्रोध या आवेश मे न आता था। बल्कि, सारा कार्य्य बड़ी शान्ति से किया जाता था। अधिकतर सत्य शोधन की ही चर्चा होती थी। अपना अभिप्राय दूसरों पर प्रगट करते समय छाती ठोक कर बोलने अथवा एकदम विरुद्ध बोलने की मनाही करदी गई थी। जो लोग नियम विरुद्ध चलते उनको काफी सज़ा दी जाती थी।

जण्टो सभा में सब से अधिक भाग लेने वाला फ्रैंकलिन था। उसके पौत्र के पास अभी एक हस्तलिखित पुस्तक है, जिसमें जण्टो में की जाने वाली चर्चा की याददाश्त, निबंधों के खाक़े, प्रश्नों के उत्तर, वाद-विवाद करने के विषय और सभा के नियमादि लिखे हुए हैं। वाद-विवाद करने के लिये फ्रैंकलिन के सोचे हुए विषयों पर से उसकी अपूर्व योजना और बुद्धि-चातुर्य्य का अच्छा परिचय मिलता है। उन सब को छोड़ कर नमूने के लिये कुछ विषयों के नाम नीचे दिये जाते हैं :—

(१) क्या मनुष्यरूपी जहाज़ चलाने के लिये स्वार्थ उसका पतवार है?

(२) क्या एक ही तरह का राज्य-प्रबन्ध-मनुष्य-जाति के लिये ठीक हो सकता है?

(३) अपराध कैसे होता है? अच्छे इरादे से किये गये बुरे काम से अथवा बुरे इरादे से किये गये अच्छे काम से?

(४) दीपक की लौ ऊँची कैसे चढ़ती है?

(५) मनोविकारों का मूलोच्छेद करने के लिये तत्त्वज्ञान की आवश्यकता है या नहीं?

(६) ग्रन्थ के गुण-दोष की परीक्षा किस रीति से करनी चाहिये?

(७) क्या संसार में रह कर मनुष्य सर्वाङ्ग पूर्ण स्थिति पर पहुँच सकता है?

(८) वास्तविक सुख किसे कहते हैं?

(९) जण्टों के सभासदों को किस तरह का रहन सहन अख़्तियार करना चाहिये?

(१०) विवेकी और भलमनसाहत वाले व्यक्ति से मित्रता करना अच्छा है या उस धनाढ्य से जो इन गुणों से रहित हो।

(११) उपर्युक्त दो प्रकार के मनुष्यों में से किस के मर जाने से देश को बड़ा धक्का पहुँचता है।

(१२) इन दोनों में से कौन अधिक सुखी है।

जएटो मएडली में बारह से अधिक सभासद् एक समय मे नहीं रखे जाते थे। सभा के किये हुए कार्य्य का विवरण एक मन्त्री लिखता था जिसको एक शिलिङ्ग प्रति सप्ताह वेतन मिलता था। सभा की बात प्रगट करने की न थी। किन्तु, फिर भी थोड़े ही समय में सारे गांव में सभा के स्थापित होने की अफ़वाह फैल गई और सभासद् बनने के लिये कई प्रार्थना पत्र आये। फ्रैंकलिन ने प्रार्थना की कि जएटो के प्रत्येक सभासद् को एक २ उपसभा बनानी चाहिये और उसमे नये सभासदों को दाखिल करके जो काम चले वह मुख्य सभा को बताना और सब प्रकार सभा का विस्तार बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार की ५-६ उपसभाएँ और स्थापित की गईं और उनके नाम "वेएड यूनियन" आदि रखे गये।

जएटो और उसकी शाखाओं से फ़िलाडेल्फ़िया के लोगो को क्या २ लाभ हुए इसका वर्णन आगे के लिये छोड़ कर यहां उस समय की फ्रैंकलिन की व्यक्तिगत स्थिति का वर्णन करना ठीक होगा।

कीमर के कारखाने में शनैश्चर तथा रविवार के दिन तातील होने से फ्रैंकलिन को सप्ताह में दो दिन पढ़ने लिखने को मिलते थे। छः मास तक कीमर के साथ इसका सम्बन्ध ठीक रहा। छापेखाने का सब काम फ्रैंकलिन चलाता था। इतना ही नहीं,

वल्कि कीमर के नौकरो को काम सिखाने में भी वह पूरा परिश्रम करता था। दिन प्रति दिन जैसे २ कीमर के नौकर लोग होशियार होते गये वैसे वैसे फ्रैंकलिन के प्रति कीमर का स्नेह कुछ कम होने लगा। फ्रैंकलिन ने समझा कि मुझे इन कच्चे मनुष्यों ने पढ़ाई के ही अभिप्राय से रक्खा है ऐसा जान पड़ता है तभी तो ये जैसे जैसे होशियार होते जाते हैं वैसे २ इनको मेरी आवश्यकता कम होती जाती है। छः मास पूरे होने पर फ्रैंकलिन को वेतन देते समय कीमर ने युक्तिपूर्वक कहा कि तुम्हारी तनख्वाह मुझे अखरती है क्योंकि वह कुछ अधिक है अगले महीने से मुझे तुम्हारे वेतन में कुछ कमी करना पड़ेगी इस प्रकार हर एक बात में कीमर कुछ न कुछ नुक्स निकाल कर उसको दबाने और अपना अधिकाधिक प्रभुत्त्व जमाने की चेष्टा करने लगा। किसी समय फ्रैंकलिन से कोई भूल हो जाती तब तो कीमर उसका अपमान किये बिना न रहता जैसे मन में आती उसको फटकारता। फ्रैंकलिन धैर्य्यपूर्वक कीमर की इन सब बातो को सहन करता रहा। वह जानता था कि कीमर पर लोगों का बहुत ऋण है और इसी से लेने देने की चिन्ता के कारण उसका स्वभाव कुछ क्रोधी और चिड़चिड़ा होता जाता है। किन्तु, फिर भी कुछ समय के वाद उसको कीमर से अपना सम्बन्ध तोड़ना पड़ा। एक दिन कारखानेके नीचे कुछ शोर गुल हो रहा था। फ्रैंकलिन ने यह जानने को कि यहाँ क्या हो रहा है खिड़की में से अपना मुँह बाहर निकाला। आस पास के पड़ोसी लोग भी इकट्ठे होगये थे। संयोगसे कीमर भी वहां आ पहुँचा और फ्रैंकलिन को देख कर उसने सोचा कि इसको अलहदा करने का यह अच्छा बहाना है। उसने नीचे से खड़े खड़े ही फ्रैंकलिन को डाटना फटकारना शुरू किया और कुछ ऐसे अनुचित शब्द कहे जिनको कोई स्वाभिमानी व्यक्ति सहन नहीं कर सकता। इसके

बाद वह कारखाने में आया और वहाँ भी फ्रेंकलिन को बुरी तरह डाटा। दोष यह बतलाया कि वह अपनी ड्यूटी पर से कैसे हटा। कीमर यह न जानता था कि मेरा कारखाना फ्रेंकलिन के कारण ही चल रहा है। अन्त में जब बात बहुत बढ़ गई और फ्रेंकलिन कीमर के शब्दों को सहन न कर सका तो उसने भी कुछ कड़े शब्द कह दिये। अन्त में कीमर ने फ्रेंकलिन के साथ किये गये इक़रार के मुआफ़िक उसको तीन मास का नोटिस देकर कहा कि:—"मुझे अब तुम्हारी जरूरत नहीं है। यदि तीन मास का नोटिस देने की तुम्हारे मेरे शर्त्त न हुई होती तो इस समय मैं तुम्हारा मुख अधिक समय तक देखना भी पसन्द न करता।" इस पर फ्रेंकलिन क्रोधावेश मे "अब तुम्हारे अधिक बोलने की जरूरत नहीं।" कह कर मेरिडिथ से यह कहता हुआ कि यदि मेरी कोई वस्तु यहाँ रह गई हो तो शाम को घर आते समय लेते आना अपनी टोपी लेकर उसी समय छापेखाने में से चल दिया।

घर जाकर कुछ शान्त होने पर अब क्या करना चाहिये इस पर विचार करने लगा। घर छोड़े हुए चार वर्ष हो गये थे। किन्तु, अभी उसके पास कुछ भी रुपया इकट्ठा न हो पाया था और न धंधे के लिये ही कोई अच्छा ठिकाना मिला था। बल्कि, अभी तो वर्नन के रुपये खर्च कर दिये थे वे भी बाक़ी थे। फ्रेंक-लिन कुछ बचत कर भी लेता तो वह कुछ ही समय में फिर खर्च हो जाती। अपनी ऐसी स्थिति होने के कारण उसने निश्चय किया कि अब तो वापिस बोस्टन चला जाऊँ। इसी समय मेरिडिथ शाम होने पर घर आया। उसने फ्रेंकलिन को बोस्टन न जाने की सलाह दी और कहा कि:—"कीमर पर लोगों का बहुत ऋण होगया है और वे सब उस पर बहुत तक़ाज़ा कर

रहे हैं फिर इसमें काम करने की शक्ति भी नहीं है। नक़द दाम मिलने पर यह विना नफ़े के माल बेच देता है और उधार बेचता है ,उसका हिसाब नहीं रखता। इस कारण मुझे ऐसा जान पड़ता है कि थोड़े ही दिनों में यह भाग जायगा और इस प्रकार किसी नये साहसी आदमी के लिये जगह खाली करेगा"।

फ्रेंकलिन ने कहा:—"यह तो ठीक है। लेकिन मेरे पास पैसा कहाँ है जो मैं इसकी जगह की पूर्त्ति कर सकूँ"? इस पर मेरिडिथ ने जवाब दिया:—"मेरे पिता से कुछ दिन पहिले मेरी बात चीत हुई थी। उस पर से मुझे ऐसा जान पड़ा कि तुम अपने किसी भी रोज़गार में मुझ जैसे अयोग्य व्यक्ति का भाग रक्खो तो रुपये की सहायता मेरे पिता दे दें"। कीमर के साथ मेरा नौकरी का इकरार इसी बसन्त ऋतु में पूरा हो जायगा। उस समय तक लन्दन से अपना प्रेस और टाइप आन पहुँचेगा। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं कारीगर नहीं हूँ। किन्तु, यदि तुम कहो तो मेरे द्रव्य और तुम्हारी कारीगरी से कोई पाँती का रोज़गार करें। नफ़े में तुम्हारा मेरा बराबर २ हिस्सा रख लेंगे।

सन् १७२७ ईस्वी की शरद ऋतु में यह बात-चीत हुई थी। फ्रेंकलिन को यह पसन्द आई और मेरिडिथ के कहने के अनुसार उसने रोज़गार करना स्वीकार कर लिया। मेरिडिथ का पिता इस समय संयोग से फिलाडेल्फिया में था इससे दोनों जने उससे जाकर मिले और उस पर अपना विचार प्रगट किया। फ्रेंकलिन ने मेरिडिथ को समय २ पर उपदेश दे देकर उसकी शराब पीने की आदत को बहुत कुछ कम करा दी थी और उसको सुधारने के लिये वह कुछ न कुछ प्रयत्न करता ही रहता है इस बात को मेरिडिथ का पिता अच्छी तरह जानता था। फ्रेंकलिन और

मेरिडिथ के सोचे हुए विचारों को जब उसने सुना तो उसने भी अपनी सम्मति दी और साथ ही धन से उनकी सहायता करने की प्रतिज्ञा की। उसको ऐसी आशा थी कि मेरे लड़के पर फ्रैंकलिन का स्वत्त्व हो जायगा तो वह उसको शराब पीने के दुर्व्यसन से छुड़ा देगा। फ्रैंकलिन ने शीघ्र ही एक ज़रूरी सामान की सूची बनाई और मेरिडिथ के पिता को देदी। उसने वह सूची एक व्यापारी को देकर कहा कि सब से पहिले इङ्गलैंण्ड से आने वाले जहाज़ से यह सब सामान आ जाय ऐसी व्यवस्था करो। सामान आने तक सब बात गुप्त रक्खी गई। मेरिडिथ ने कीमर के यहा काम पर जाना जारी रखने का और फ्रैंकलिन का दूसरी जगह नौकरी करने का निश्चय किया। फ्रैंकलिन ने एण्ड्रू ब्रेडफ़र्ड के छापे-खाने में नौकरी मिलने के लिये प्रार्थना की। किन्तु, वहां कोई जगह ख़ाली न होने के कारण उसको कुछ दिन बेकार रहना पड़ा। इसी बीच में कीमर ने उसके पास सन्देशा भेजा कि लम्बी अवधि के स्नेहियों का किसी साधारण कारण पर पृथक् होना ठीक नहीं। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मुझे तुमको अपनी प्रेस मैनेजरी की जगह देना स्वीकार है। फ्रैंकलिन की ख़ुशामद करके उसको वापस बुलाने में कीमर का एक ख़ास अभिप्राय था। न्यूजर्सी परगने की सरकार ने नये चलन के नोट जारी करने का निश्चय किया था और कीमर चाहता था कि उनकी छपाई का काम उसको मिल जाय। इस काम के लिये आवश्यकतानुसार सामान तैयार करने वाला फ्रैंकलिन के सिवाय और कोई व्यक्ति कीमर को नहीं मिल सकता था। फ्रैंकलिन कीमर का मतलब समझ गया तो भी मेरिडिथ और कुछ अन्य स्नेहियों की अनुमति से उसने फिर कीमर के यहां रहना स्वीकार कर लिया।

नोट छापने का काम कीमर को मिल गया। फ्रैंकलिन ने मुहर और अच्छा टाइप तैयार कर दिया और इसके बाद नोटों को

छापने के लिये ताम्रपत्र का मुद्रण यन्त्र बनाया। छापने का सब सामान तैयार करके सरकार की देख रेख में नोट छापने को कीमर के साथ वह बरलिंग्टन गया और वहां तीन महीने तक रहा। नोटों के तयार हो जाने पर सरकार ने उनको पसन्द किया और इस कार्य में कीमर को इतना अधिक रुपया मिला कि अपनी गिरती हुई हालत को उसने दो तीन वर्ष के लिये सुधार लिया। राज-सभा के अधिकारियों के साथ फ्रैंकलिन की जान पहिचान हो गई थी। एक अधिकारी को तो रात दिन नोट छापने वाले पर क़ानून के अनुसार वहां की सब देख रेख रखनी पड़ती थी। फ्रैंकलिन के मुलाक़ातियों में न्यायाधीश ऐलन, परगने का सेक्रेटरी बस्टील और पैमायश के महकमे का सब से बड़ा अफसर आइझाक डिको थे। मि० डिको बड़ा तीव्र बुद्धि वाला, चतुर और वृद्ध मनुष्य था। बाल्यावस्था में वह ईंटें बनाने के लिये ठेला गाड़ी में मिट्टी भर कर ले जाने की मजदूरी करके अपना निर्वाह करता था। जवान हो जाने पर उसने कुछ लिखना पढ़ना सीखा। फिर पैमायश करने वालों के साथ जरीब खींचने की नौकरी करने पर वह पैमायश का काम सीख गया और अख़ीर में धीरज, उद्योग और सच्ची लगन से आगे चल कर पैमायश के महक्मे के सब से बड़े अफसर की पदवी पर पहुँच गया। फ्रैंकलिन देखने में कीमर की अपेक्षा कुछ चढ़ा बढ़ा मालूम होता था। पुस्तकें पढ़ते रहने से उसका मस्तिष्क भी कुछ ज्ञान-युक्त हो गया है इसका उसकी रहन सहन से प्रत्यक्ष परिचय मिलता था। और यही कारण था कि छोटे से लगा कर बड़े २ अधिकारियों की इच्छा भी उसके पास बैठ कर बात चीत करने की होती थी। वे लोग इसको अपने घरों पर ले जाते, अपने सगे-सम्बन्धियों और मित्रों से इसका परिचय कराते और बड़ा सन्मान करते। कीमर सेठ था लेकिन, उसको कोई नहीं पूछता

था। दुनियादारी का भी उसको कुछ अनुभव न था। अधिक मनुष्य जिस धर्म का पालन करते हों उसके मुक़ाबिले में खड़े हो जाने का उसको बड़ा शौक़ था। वह बड़ा मैला रहता था। धर्म सम्बन्धी कितनी ही बातों में वह बड़ा ज़िद्दी था। एक दिन बरलिंग्टन में आइज़ाक डिको ने फ्रैंकलिन से कहा था कि:— "मेरी भविष्यद्वाणी को सच मानना कि इस मनुष्य को उसके धंधे से हटा कर तुम फिलाडेल्फ़िया में बहुत धन और यश कमाओगे"। फ्रैंकलिन और मेरिडिथ के किये हुए निश्चय की सूचना के जाने बिना ही डिको ने यह भविष्यद्वाणी कही थी। डिको और जर्से के दूसरे मित्रों ने अन्त तक फ्रैंकलिन से मित्रता का सम्बन्ध रक्खा।

कीमर और फ्रैंकलिन बरलिंग्टन से वापिस फिलाडेल्फिया आये। उसके बाद थोड़े समय में ही लन्दन से मुद्रण यन्त्र और टाइप आगया। नया छापाख़ाना खोलने की बात कीमर को न मालूम होने देकर फ्रैंकलिन और मेरिडिथ ने उसकी राज़ी खुशी से छुट्टी ले ली और छापाखाना खोलने को मकान आदि की व्यवस्था करने लगे।

इसी अर्से में फ्रैंकलिन ने अपनी क़ब्र के पत्थर पर खुदाने के लिये नीचे लिखी हुई इबारत लिख डाली। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह उसने अपनी रुग्णावस्था मे लिखी थी। आगे चल कर इसकी बहुत प्रशंसा हुई। कुछ फेर फार के साथ यह कई बार प्रकाशित हो चुकी है—

बेंजामिन फ्रैंकलिन

छापने वाले

का

यह शरीर

घिसे हुये अक्षर और फटी अनुक्रमणिका
वाली पुराने पट्ठे की पुस्तक की भांति
चींटियों को खुराक के तौर पर

यहां पड़ा है

तो भी

यह पुस्तक खो जाने वाली नहीं।

कारण

विश्वास है कि

वह

नये और सुशोभित संशोधन

के साथ

शीघ्र ही प्रकाशित होगी।

प्रकरण आठवां

फ्रैंकलिन और मेरिडिथ की दूकान

सन् १७२८ से सन् १७३०

छापाखाना शुरू करने की तैयारियां—पहिली कमाई से पाँच शिलिङ्ग—दुरबी सेम्युअल मिकल—जण्टो के सभासदों की ओर से सहायता—फ्रैंकलिन के उद्योग से दूकान की साख बढ़ने लगी—सामयिक पत्र निकालने का विचार—वेब को विदित हो जाने से उसने कीमर से सामयिक पत्र निकलवा दिया— × × × सामयिक पत्र में कीमर के साथ खींचा तानी—काग़ज़ के चलनी नोट निकालने के सम्बन्ध में लिखी हुई पुस्तक—फ्रैंकलिन के अर्थशास्त्र सम्बन्धी विचार—कीमर का सामयिक पत्र ख़रीदा—पेन्सिलवेनिया ग़ज़ट का सम्पादक—सम्पादक को क्या २ जानना चाहिये ?—सामयिक पत्र में फ्रैंकलिन के लिखने का ढंग—उसके पत्र का प्रचार—वर्नन का ऋण—सरकारी छपाई का काम मिलने लगा—आर्थिक संकट—मित्रों ने सहायता करके फ्रैंकलिन की इज्जत रक्खी—साझा छोड़ कर मेरिडिथ से पृथक् हो जाने की तजवीज़—फ्रैंकलिन की उन्नति—काग़ज़ी की दूकान खोली—फ्रैंकलिन का प्रतिस्पर्द्धी—प्रतिस्पर्द्धी पर विजय और फ्रैंकलिन की प्रगति—

फ्रैंकलिन और मेरिडिथ ने छापाखाने के लिये बीस पौण्ड वार्षिक किराये पर एक मकान लिया। भाड़े पर ली हुई सारी जगह की उनको आवश्यकता न होने से उसमे कुछ भाग उन्होंने टॉम्स ग्राड्फ्रे नामक एक गणित शास्त्री को किराये पर दे दिया। इस कारण उनको अपने पास से और भी थोड़ा किराया देना पड़ता। दोनों ने अपने खाने पीने की व्यवस्था भी ग्राड्फ्रे के साथ उसी के रहने के घर में करली। छापाखाना, प्रेस और टाइप आदि की व्यवस्था कर लेने पर छापाखाने के सम्बन्ध में और २ सामान खरीदने में उनकी पूँजी पूरी हो गई। छपाई का काम शुरू करते समय एक फूटी कौड़ी भी न थी। ग्राहकों का काम कर सकें इस तरह जब उनकी सब तैयारियां हो चुकीं तो पहिले पहिल उनको जॉर्ज हाउस नामक एक व्यक्ति की मारफत कुछ काम मिला। छापाखाना ढूँढता हुआ एक ग्रामीण व्यक्ति रास्ते में हाउस को मिला तो वह उसको फ्रैंकलिन के छापाखाने में बुला लाया। इस मनुष्य ने वहाँ अपना कुछ छपाई का काम कराया जिसके उनको पांच शिलिङ्ग मिले। फ्रैंकलिन लिखता है कि:—"इस मनुष्य के पाँच शिलिङ्ग हमारी पहिली कमाई थी और वे हमको ऐसी कठिनाई के समय मिले कि उसके बाद मिले हुए दूसरे पाँच शिलिङ्गों की अपेक्षा इनसे मुझे अधिक आनन्द हुआ। हाउस के मुझ पर किये गये इस आभार के कारण रोजगार शुरू करने वाले नवयुवकों की सहायता करने को मैं अधिक तत्पर रहता हूँ।"

उस समय फिलाडेल्फिया में एक आदमी रहता था। जिसका नाम सेम्युअल मिकल था। वह पकी उम्र का, ऊँचे कुल का, कद्दावर शरीर का और बात चीत करने में बड़ा गंभीर था। फ्रैंकलिन का उससे परिचय न था तो भी एक दिन छापाखाने के

दरवाजे पर आकर वह फ्रैंकलिन से पूछने लगा कि:—"नया छापाखाना खोलने वाले युवक आप ही हैं क्या ?" फ्रैंकलिन ने 'हाँ' कही तो वह बोला:— 'मैं बड़ा दुखित हूँ कि इस धंधे में आपको बहुत रुपया खर्च करना पड़ा है—किन्तु, यह सब व्यर्थ जायगा। कारण कि फिलाडेल्फिया शहर डूबता जाता है। लोग आधे दिवालिये हो गये हैं—अथवा होने में हैं। इस शहर में छपाई का काम अधिक नहीं। जब दो छापाखाने यहाँ पहिले से हैं तो तीसरा छापाखाना हर्गिज़ न चलने का। अच्छी इमारत, अधिक किराया आदि बस्ती के बाहरी दृश्य भूल में डालने वाले हैं।" फ्रैंकलिन लिखता है कि:—"उसने मेरे सन्मुख उस समय आ पड़ने वाली आपत्तियों का वर्णन ऐसे ढंग से किया कि जब मैं उससे अलग हुआ तो उसी के विचार में पड़ कर उदास बन गया। मैं छापाखाने के धंधे में पड़ा उससे पहिले यदि इससे मेरी जान पहिचान हो गई होती तो कदाचित मैं इस धंधे को शुरू ही न करता। यह मनुष्य हमेशा शहर की दीन दशा का वर्णन किया करता था तो भी इस दिवालिये शहर में पड़ा था। सब का नाश होने वाला था इस कारण वह हमको तो घर खरीदने की राय नहीं देता था। परन्तु, अखीर में मुझको यह देख कर सन्तोष हुआ कि उसने अपना रोज़गार शुरू किया तब घर की जो क़ीमत लगती थी इसकी अपेक्षा पांच गुनी अधिक क़ीमत देकर अखीर में उसने एक मकान मोल लिया।'

जण्टो के सभासद आरम्भ में फ्रैंकलिन और मेरिडिथ के लिये बड़े उपयोगी सिद्ध हुए। प्रत्येक सभासद उनको काम दिलाने के लिये भरसक प्रयत्न करता। क्वेकर पंथ के लोगो पर जोसफ ब्रिण्टनले ने एक पुस्तक छापने को भेजी। यह उच्च भाषा में लिखी हुई "क्वेकर पंथ के ख्रीस्ति लोगो का उदय और

उनके विस्तार का इतिहास" का अनुवाद था। फ्रैंकलिन ने इस पुस्तक को सस्ते भाव से छाप देना स्वीकार किया। वह प्रति दिन एक फ़ार्म कम्पोज़ करता और मेरिडिथ उसको छाप देता। यदि बीच में कुछ और कार्य्य आ जाता तो भी मेरिडिथ उस फ़र्मे को पूरा करके सोता। किसी २ दिन उसको रात के ग्यारह बजे तक काम करना पड़ता। एक दिन रात के समय प्रति दिन के नियमानुसार कार्य्य पूरा कर चुकने पर कम्पोज़ किया हुआ आधा फ़र्मा अकस्मात् नीचे गिर कर फैल गया। फ्रैंकलिन फिर उसी समय उसको कम्पोज़ करने लगा और उसको पूरा करके ही वह आफिस में से गया। प्रति दिन काम कर चुकने पर फ्रैंकलिन टाइप खोलता, मुख पृष्ठ के लिये सुन्दर बेल तैयार करता, स्याही बनाता और स्याही के लिये काजल तैयार करता।

फ्रैंकलिन के पड़ोसी उसके परिश्रम को देखा करते थे। इससे उसकी प्रतिष्ठा और मान बढ़ने लगा। गाँव के अन्यान्य स्थानों पर भी उसके उद्योग की प्रशंसा होने लगी। एक दिन व्यापारी-मण्डल के क्लब में इसके नये छापाखाने की चर्चा चली। बहुत से सभासदों का अभिप्राय यह था कि फिलाडेल्फ़िया मे तीसरा छापाखाना अधिक समय तक न चलेगा। फ्रैंकलिन के कार्य्यालय के पास रहने वाले डाक्टर बेयर्ड का कथन कुछ और ही था और वह यह कि:—"फ्रैंकलिन ऐसा उद्योगी पुरुष है कि इसके बराबर परिश्रम करने वाला व्यक्ति मैंने देखा ही नहीं। मैं रात्रि को जिस समय क्लब से घर जाता हूं उस समय इसको काम करता हुआ देखता हूँ और इसके पड़ोसी कहा करते हैं कि उनके उठने पहिले ही यह काम पर लग जाता है।" यह बात सुन कर एक व्यापारी के हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने बड़ी प्रसन्नता से फ्रैंकलिन को काग़ज़ आदि स्टेशनरी सामान उधार देने का वचन दिया। लेकिन, उस ससय फ्रैंकलिन

और उसके हिस्सेदार का विचार दूकान रखने का नहीं था इस कारण उन्होंने इस व्यापारी के कथन का उपयोग नहीं किया। केवल छापने का काम करके धीरे २ उन्होंने अपने इसी धंधे को बढ़ाने का निश्चय किया और उसी के लिये प्रयत्न करने लगे।

फिलाडेल्फिया से एक समाचार पत्र निकालने के लिये फ्रैंकलिन की बहुत दिन से इच्छा थी। छापाखाना खोलने के एक वर्ष पश्चात् उसने अपनी इस इच्छा को पूरी की। फ्रैंकलिन की अपने इरादे को छुपा रखने की आदत थी। किन्तु, इस बार इस समाचार पत्र के विषय में तो उसका भेद खुल गया। जार्ज वेब को किसी स्त्री के द्वारा रुपया मिल जाने से कीमर के पास से वह उसका अधिकार मोल ले सकता था किन्तु, वैसा न करके कीमर से सम्बन्ध विच्छेद हो जाने पर वह फ्रैंकलिन और मेरिडिथ के कार्यालय में नौकरी करने को आया। फ्रैंकलिन ने कहा कि अभी तो हमारे यहाँ काम नहीं है। थोड़े दिन के बाद जब काम निकलेगा तो मैं तुम्हें जरूर जगह दूंगा। वेब के भरोसे पर फ्रैंकलिन ने समाचार पत्र निकालने के विषय में अपना विचार उस पर प्रगट कर दिया। फ़िलाडेल्फ़िया में एण्ड्रेड फर्ड के कार्यालय से एक सामयिक पत्र निकलता था और उसके कारण उसको अच्छी आय हो जाती थी। दूसरा समाचार पत्र निकाल कर अच्छी तरह से चलाया जाय तो उसमें लाभ हुए विना न रहे इस तरह स्वाभाविक रीति से फ्रैंकलिन ने वेब से कह दिया। वेब ने विश्वासघात करके फ्रैंकलिन की इच्छा कीमर पर प्रकट कर दी। कीमर को यह बात पसन्द आई तो उसने अपने यहां से समाचार पत्र निकालने का विज्ञापन प्रकाशित कर दग़ाबाज़ वेब को उसके छापने आदि में सहायक की भांति नौकर रख लिया। थोड़े ही दिन में कीमर ने

"यूनीह्वर्सल इन्सट्रक्टर इन ऑल आर्टस्एगड सायंन्सिस पेन्सिलवेनिया गजट" (Universal instiuctor in all aits of siencic pencilvenia Gazzette) (सर्वकला और शास्त्र का सामान्य उपदेशक) नाम देकर एक सामयिक-पत्र निकाल दिया और उसका वार्षिक मूल्य दस शिलिङ्ग रक्खा।

इस धोखेबाज़ वेब और मूर्ख कीमर के किये हुए इस कृत्य से फ्रेंकलिन के हृदय पर गहरी चोट लगी। कीमर के समाचार पत्र को निकले हुए एक मास भी न हुआ था कि इतने ही में लोगों की रुचि उस पर से हटा लेने की फ्रेंकलिन को एक युक्ति सूझी। एन्ड्रू ब्रेडफ़र्ड के "मरक्यूरी" पत्र में स्पेक्टेटर के ढंग के जो पढ़ने में अच्छे लगें ऐसे फ्रेंकलिन ने कुछ निबन्ध लिखने शुरू किये। उसने अपना पहिला निबन्ध "उद्गार" इस नाम से छपाया। फ्रेंकलिन जो कुछ लिखता वह आगे चल कर उस पत्र में "उद्गार" शीर्षक से ही छपने लगा और फिर इस शीर्षक से उस पत्र में एक स्थम्भ ही पृथक् रख दिया गया जिस में प्रायः फ्रेंकलिन और जन्टोमण्डली के सभासद् उसके कुछ और मित्र तरह २ के शिक्षाप्रद और सुरुचि पूर्ण लेख लिखा करते थे। प्रथम अङ्क के "उद्गार" में फ्रेंकलिन लिखता है कि:—"अपने दोष दिखलाने वाले को वर्ष भर में दस शिलिङ्ग न देना चाहें ऐसे तुम्हारे अनेक वाचकों का मैं कोप भाजन बनूंगा यह निर्विवाद है। परन्तु, बहुत लोग ऐसे होते हैं कि वे अपने दोषों का प्रकट होना नहीं देख सकते और दूसरों की निन्दा सुनने में बड़ी प्रसन्नता प्रकट करते हैं। मैं कहता हूँ कि ऐसे लोगों को भी थोड़े समय में उनके मित्रो और पड़ोसियों को उनके जैसी स्थिति में देख कर सन्तोष होगा।"

फ्रेंकलिन के लेखों की सारे परगने में धूम मच गई। एक अङ्क में प्रकाशित होने वाले लेख में उसने कीमर पर खूब बौछार

की। कीमर समझ गया। उससे बिना बोले न रहा गया। उसने टुची और असभ्य भाषा में कुछ गद्यपद्यमय उत्तर लिखा और थोड़े दिन के बाद फ्रैंकलिन का अनुकरण करके "उद्‌गार" की भांति कुछ लेख अपने पत्र में निकालना शुरू कर दिया। लेकिन कीमर की सारी लिखा पढ़ी का जवाब फ्रैंकलिन ने एक ही लेख में इस खूबी से दिया कि कीमर को चुप होना पड़ा।

कुछ समय तक "उद्‌गार" लिखना जारी रखने के अनन्तर फ्रैंकलिन का ध्यान एक ओर ही बात पर गया और उसमें उसको ऐसी रुचि हुई कि "उद्‌गार" पर लिखने का काम उसने अपने मित्र ब्रिएटनल को सौंप कर इस नये विषय पर एक के बाद एक निबन्ध लिखने शुरू किये। दो एक वर्ष से पेन्सिलवेनिया में काग़ज़ी नोटों के सम्बन्ध मे बड़ा वादविवाद चल रहा था। सन् १७२३ ईसवी में इस परगने में कुछ समय के लिये पन्द्रह हज़ार पौण्ड के नोट निकाले गये थे—और अब उन्हें वापिस कर लेने का समय आगया था। लोगों की नोटों के लिये अधिक मांग थी। लेकिन, धनाढ्य मनुष्य अधिक नोट निकाले जाने के विरुद्ध थे। और न्यूइङ्गलैण्ड तथा साउथ केरोलीना में प्रचलित नोटों का भाव बहुत गिर गया था। जो उनके लिये इस बात का अच्छा उदाहरण था कि नोटों का स्टाक अधिक बढ़ जाने से अवश्य ही लोगो की हानि होगी। उस समय अन्यान्य विचारणीय प्रश्नों के साथ प्रचलित नोटों के प्रश्न की भी जण्टोमण्डली में अच्छी चर्चा हो रही थी और उसमें फ्रैंकलिन अग्रगण्य था। सन् १७२३ में निकाले हुए नोटों से इस परगने का व्यापार रोज़गार और बस्ती बहुत बढ़ी थी। पहिले पहिल जब फ्रैंकलिन फिलाडेल्फिया में आया ही था तो उस समय उसने कई घर खाली पड़े हुए देखे थे। किन्तु, अब

वे सब आबाद हो गये थे और बहुत से नये भी तैयार हो गये थे। फ्रैंकलिन को विश्वास होगया था कि यह सब चलनी नोट निकालने से ही हुआ है। फिर जएटोमएडली में होने वाले वाद विवाद से भी उसके विचार नये नोट निकालने के पक्ष में हो गये थे। सन् १७२८ के मार्च महीने में उसने अपने अवकाश के समय एक पुस्तक लिख डाली और उसका नाम रक्खा—

"A modest inquiry into the nature and necessity of paper currency".

"नोट के चलन का स्वरूप और उसकी आवश्यकता की साधारण खोज" इस पुस्तक का महत्त्व बढ़ाने और अपने मत की पुष्टि के लिये उसने लेटिन भाषा के एक सुप्रसिद्ध विद्वान् ग्रन्थकार का वाक्य चुन कर उसके मुख पृष्ठ पर रखा था। जिसका अभिप्राय यह था कि—"देश और सगे सम्बन्धियों को खूब पैसा देना चाहिये"। उस पुस्तक की कई दलीलें उस समय के अर्थ शास्त्र के सिद्धान्त से भूल भरी हुई और झूँठी मालूम होती हैं। परन्तु, फ्रैंकलिन जैसा अपने निजी परिश्रम से सीखा हुआ २३ वर्ष का नवयुवक सन् १७२९ मे पेन्सिलवेनिया जैसे दूर के देश में ऐसी पुस्तक लिख सका यह कम आश्चर्य्य की बात नहीं है। फ्रैंकलिन का ग्रहण किया हुआ पूर्व पक्ष इस प्रकार था कि:— "प्रत्येक देश का व्यापार रोजगार छूट से चालू रखने के लिये पैसा होना चाहिये। अधिक पैसे से व्यापार को लाभ नहीं। परन्तु, कम हो तो जैसे २ अधिक कम हो वैसे २ ही व्यापार की अधिक हानि होती है"। इस प्रकार के अपने पूर्व पक्ष पर से वह ऐसे निर्णय पर आया कि पेन्सिल्वेनियाँ में नये चलनी नोट न निकाले जायं तो व्यापार के लिये पैसा न रहेगा और उससे व्यापार न चल सकेगा। फ्रैंकलिन की पुस्तक में पैसे का स्वरूप,

परिश्रम, मूल्य आदि विषयों पर जो विचार प्रगट किये गये हैं वे आधुनिक समय के ठीक माने जाने वाले विचारो जैसे ही हैं। पुस्तक समाप्त करने से पहिले फ्रें कलिन कहता है कि:—"मैंने इसको शीघ्रता में छपवाया है। मेरा उद्देश एक मात्र सत्य शोधन करना है। अतः कोई सज्जन मेरी भूल बतायेंगे तो उनकी बड़ी कृपा होगी"। इस पुस्तक का उस समय वहां इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि—नये नोट निकालने के प्रश्न का निराकरण फ्रें कलिन के मतानुसार ही हुआ। सरकार ने नये नोट निकाले और फ्रें कलिन की इच्छानुसार ही उसका परिणाम भी अच्छा हुआ। देश के व्यापार रोजगार में थोड़े ही समय में वृद्धि होती देखी गई।

फ्रें कलिन की ओर से "उद्गार" द्वारा खूब बौछार होती जाती थी तो भी कीमर का "यूनीवर्सल इन्स्ट्रक्टर" पत्र छब्बीसवें अङ्क तक नियमित रूप से प्रकाशित होता रहा। उसके बाद कीमर पर फिर आफ़त आ गई और उसको अपना पत्र कुछ समय के लिये बन्द करना पड़ा। कीमर की रुपये पैसे के सम्बन्ध में अब बुरी दशा हो गई थी। उसके लेने वालों का मन वह न मना सका। कुछ समय पत्र को निकालने और कुछ समय के लिये बन्द कर दे इस प्रकार कुछ समय गोते खा खाकर अन्त में कीमर को कुछ कम मूल्य में अपना पत्र फ्रें कलिन और मेरिडिथ को बेच देना पड़ा। अपने हाथों में पत्र आ जाने के पश्चात् सम्पादन कार्य फ्रें कलिन ने अपने ऊपर रखा। पत्र का ४०वां अङ्क उसके सम्पादकत्व में पहिले पहल सन् १७२९ के अक्टूबर मास की २री तारीख़ को प्रकाशित हुआ। कीमर के रखे हुए लम्बे नाम को फ्रें कलिन ने संक्षिप्त किया और अब वह "पेन्सिलवेनिया गज़ट" के नाम से प्रकाशित होने लगा। फ्रें कलिन ने इस पत्र के जिस अङ्क को सब से पहिले प्रकाशित किया था

उसके लिये उसको केवल सात विज्ञापन मिले थे। इनके अति-रिक्त एक विज्ञापन ऐसा था कि आइजाक वोट के धार्मिक स्तोत्र फ्रैंकलिन और मेरिडिथ के यहां बिकते हैं। उस समय यह पुस्तक बहुत लोक-प्रिय थी। और इसी से उसकी बिक्री भी बहुत होती थी। इस अङ्क में सम्पादक के लिखे हुए अग्र लेख का मुख्य विषय पत्र के मालिकों में हुए परिवर्तन के सम्बन्ध में था और उसके अन्त में यह विज्ञप्ति प्रकाशित हुई थी:—

"पेन्सिल्वेनियां से अच्छा समाचार पत्र निकालने के लिये लम्बी अवधि से अनेक व्यक्तियों की इच्छा थी जिसका सूत्रपात ग़ज़ट के इस अङ्क से हो रहा है। किन्तु, इस पत्र को उनके मनोनुकूल बनाने के लिये हमें आप सज्जनों की सहायता की अत्यन्त आवश्यकता है। आशा है, यथा समय हमें वह अवश्य मिलेगी। कारण कि उत्तम समाचार पत्र निकालना इतना सरल नहीं है जितना लोग इसे समझते हैं। प्रथम तो पत्र के अधि-पति को कई भाषाओं का उत्तम ज्ञान होना चाहिये। इसके साथ ही उसकी लेखनी में भी कुछ विशेषता और स्पष्टता होनी चाहिये। समुद्र और स्थल पर के युद्ध की उसको पूरी २ जान-कारी होनी चाहिये। इसके अतिरिक्त उसका भूगोल, इतिहास, राज्यों और राज दरबारों के रहस्य तथा प्रत्येक देश की रीति रिवाज और वहां की प्रचलित प्रथाओं का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिये। संसार में ऐसे निपुण व्यक्ति कठिनता से मिलते हैं। इस पत्र का अधिपति ज्ञान सम्बन्धी अभाव की पूर्ति अपने हितैषियों की कृपा से ही कर सकता है। और इसके लिये यदि वह उनसे याचना भी करे तो कुछ अनुचित न होगा। हम सब लोगों को विश्वास दिलाते हैं कि यदि आपने सहायता करके हमारे उत्साह को बढ़ाया तो अपनी ओर से हम भी

"पेन्सिल्वेनियां गज़ट" को मनोरञ्जक और सर्व प्रिय बनाने में कोई बात न उठा रक्खेंगे"।

"न्यू इङ्गलैण्ड कुरेण्ट" के सम्बन्ध में अपने भाई पर आई हुई आपत्तियां और उनके कारण फ्रैंकलिन के मन में अभी ताज़ा थे। इसलिये "पेन्सिल्वेनियां गज़ट" में उसने कुछ विचार पूर्ण और मर्यादा युक्त लेख लिखने आरम्भ किये। ऐसा करके वह किसी की झूठी खुशामद नहीं करता था। बल्कि दूसरों में विनयशीलता, आदर भाव, सच्ची सेवा करने की इच्छा, प्रत्येक विषय का पूर्ण विवेचन करने की शक्ति और योग्यता के अनुसार सब का सम्मान करने का ढंग बताता था। नमूने के तौर पर उसका वह लेख लीजिये जो उसने न्यूयार्क के गवर्नर और व्यवस्थापिका सभा में गवर्नर के वेतन के विषय में परस्पर चलती हुई लम्बी तकरार पर पत्र के प्रथमाङ्क में लिखा था।

गवर्नर बर्नेड की मांग थी कि उसका अपना तथा पीछे से नियुक्त होने वाले गवर्नर का वार्षिक वेतन १००० पौण्ड नियत कर दिया जाय। किन्तु, व्यवस्थापिका सभा इसके विरुद्ध थी। वह चाहती थी कि गवर्नर को जो वेतन इस समय दिया जाता है वही रखा जाय। और उसके लिये भी सभा की स्वीकृति लेली जाया करे। इस विषय पर फ्रैंकलिन ने जो कुछ लिखा है उसमें उसने इतनी बुद्धिमता से काम लिया है जिसको समझाने के लिये एक लम्बा प्रकरण लिखा जाय तो भी वह काफ़ी नहीं हो सकता सन् १६८८ की राजकीय उलट पलट अभी हुई ही थी इस कारण उस समय के अधिकारी वर्ग का पक्ष मजबूत करने की कितनी अधिक आवश्यकता है इस बात को वह भली प्रकार जानता था। वह घर से भाग कर जा रहा था उस समय न्यूयार्क में गवर्नर बर्नेड ने उस पर जो कुछ उपकार किया था उसको

वह भूला नहीं था। किन्तु, यह सब होते हुए भी यह बात उसके लक्ष्य में थी कि प्रजा का पक्ष लेकर उसको स्वतन्त्रता दिलाने की कितनी आवश्यकता है। और गवर्नर का वेतन नियमित कर देने से इन दोनों का कितना धोका हो जाने की सम्भावना है। साथ ही उसे यह भी ध्यान था कि वह अभी व्यवसाय में पड़ा हुआ २३ वर्ष का एक दीन पत्र संचालक है। और इस विषय का सम्बन्ध प्रायः उच्च पदाधिकारियों से है। किन्तु, इन सब बातों को जानते हुए भी फ्रेंकलिन ने ऐसा लेख लिखा जिसको लोगों ने बहुत पसन्द किया। उस समय से उसके पत्र को परगने के अनेक बड़े २ लोगों का आश्रय मिलने लगा। राजनैतिक विषयों की भांति धार्मिक विषयों पर भी फ्रेंकलिन जो कुछ लिखता वह इस ढंग से लिखता कि किसी को बुरा न लगे। बहुत करके वह धार्मिक विषयों में तो अधिक हठ भी न करता था। यदि कुछ लिखता भी तो सामान्य धर्म पर। न कि किसी सम्प्रदाय विशेष का पक्ष लेकर।

"पेन्सिल्वेनियां गज़ट" के नये स्वामियों ने अपने पत्र को जिस ढँग से निकाला वह फ़िलाडेल्फ़िया के लोगों को बहुत पसन्द आया। तीसरा अङ्क प्रकाशित होते न होते तो उन्हे इतनी उत्तेजना मिली कि पत्र जारी रखने और सम्वाद मिलने के साधन उनको बढ़ाने पड़े। तीसरे अङ्क में वे लिखते हैं:— "ग्रेट ब्रिटन न्यू इङ्गलैण्ड, मेरीलेण्ड और जमैका से हम अच्छे २ संवाद-पत्र मँगवावेंगे। निजी तौर पर भी हमें जो कुछ संवाद मिलेंगे उन्हें अपने पत्र द्वारा पाठकों तक नियमित रूप से पहुँचाते रहेंगे। और इस प्रकार निकट भविष्य में हम अपने अनुग्राहक ग्राहकों को पूर्ण सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करेंगे।"

फ्रेंकलिन और मेरिडिथ का छापाखाना बहुत छोटे पैमाने पर आरम्भ किया गया था। सहायता के लिये एक भी नौकर न

होने के कारण उन्हें सब प्रकार का कार्य्य स्वयम् ही करना पड़ता था। उसमें से भी अधिकांश अकेले फ्रैंकलिन को। कारण कि मेरिडिथ परिश्रमी नहीं था। इतना ही नहीं बल्कि, वह फिर शराबखोरी की लत में पड़ गया था। प्रायः देखा जाता है कि किसी मनुष्य ने अपनी सामर्थ्य से अधिक ऋण कर लिया हो, अथवा किये हुए ऋण को वह समय पर न चुका सका हो तो उस अवस्था में घोर विपत्ति में ग्रसित रहने पर भी ऋणी पर लेने वालों का तक़ाज़ा अधिक बढ़ जाता है। उस समय ऋणी की क्या दशा होती है इस बात का अनुभव भुक्तभोगी लोगों को ही होता है।

इस समय फ्रैंकलिन बड़े आर्थिक संकट में था। छापाखाना खोलने और चलाने के लिये उसने जैसे तैसे करके कुछ रुपया इकट्ठा किया ही था कि इतने ही में मिस्टर बर्नन की ओर से अपना ऋण चुकाने के लिये उसको पत्र मिला। उसको फ्रैंकलिन ने बड़ी नम्रता से उत्तर लिखा और उसके रुपये को अपने काम में ले कर उसने कैसी भूल की यह उसने स्वीकार किया। तथा अन्त में यह प्रार्थना की कि कुछ दिन और सब्र करें। बर्नन ने उदारता पूर्वक फ्रैंकलिन की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। अब फ्रैंकलिन को बर्नन का ऋण जैसे बने वैसे जल्दी अदा कर देने की चिन्ता लगी। उसने कुछ ही समय में रात दिन परिश्रम करके सूद सहित बर्नन का मूल धन चुकाने के लिये रुपया इकट्ठा किया। और इस प्रकार वह बर्नन के सात वर्ष के ऋण से उऋण हो कर निश्चिन्त हुआ।

अब तक सरकारी छपाई का सारा काम ब्रेडफर्ड को ही मिलता था। और अब फ्रैंकलिन तथा मेरिडिथ का प्रेस खुल जाने से कुछ काम इनको मिलने का समय आया। ब्रेडफर्ड ने

गवर्नर के एक भाषण को अशुद्ध और ऐसे बेढंगेपन से छापा कि उसको किसी ने पसन्द नहीं किया। इस सुअवसर का लाभ उठाने को फ्रूँकलिन ने उसकी कापी अपने प्रेस में छाप डाली और उसकी १—१ प्रति व्यवस्थापिका सभा के प्रत्येक सभासद के पास भेज दी। सभासदों ने देखा कि ब्रेडफर्ड और फ्रूँकलिन के काम में बड़ा अन्तर है। सभा के तीस सभासदों में फ्रूँकलिन की महत्ता जानने वाले अनेक मनुष्य थे। एण्ड्रू हेमिल्टन, जिससे लन्दन में फ्रूँकलिन का परिचय हुआ था वह भी मण्डली का सभासद था। फ्रूँकलिन जैसे परिश्रमी और कर्तव्यशील छापा-खाने वाले को जो बड़ा सिद्धहस्त लेखक था, सब सहायता करने को तयार थे। इस का फल यह हुआ कि व्यवस्थापिका सभा की ओर से दूसरे वर्ष छपाई का सारा काम फ्रूँकलिन और मेरिडिथ को दिये जाने का निश्चय हो गया। आर्थिक लाभ की दृष्टि से यह कार्य्य विशेष लाभजनक न था। किन्तु, इसके कारण इतना अवश्य हुआ कि फ्रूँकलिन और मेरिडिथ की इज्जत बहुत बढ़ गई और आगे के लिये उसको और लोगों के काम भी मिलने लगे। थोड़े दिन के बाद नए चलनी नोटों की छपाई का काम निकला। यह काम फ्रूँकलिन को ही दिया जाय इसके लिए उसके मित्रों ने व्यवस्था-पिका सभा से प्रार्थना की। चलनी नोटों के सम्बन्ध में फ्रूँकलिन अपनी प्रकाशित की हुई पुस्तक के कारण ऐसा प्रसिद्ध हो गया था कि वह काम भी उसको दिए जाने का निश्चय हुआ। इस कार्य्य में उसको आर्थिक लाभ भी अच्छा हुआ। जिसका फल यह हुआ कि उसका जोवन कुछ समय तक बड़ी शान्ति से व्य-तीत हुआ। किन्तु, आपत्ति का मूलोच्छेदन नहीं हुआ था। दो वर्ष तक परिश्रम करके फ्रूँकलिन अपने धन्धे मे जमा ही था कि फिर डूबने का समय आ गया हो ऐसा जान पड़ने लगा। प्रेस

सम्बन्धी चीजें ख़रीदने में उसके दो सौ पौण्ड खर्च हुए थे और वह सब रुपया मेरिडिथ के बाप ने अपने पास से देना स्वीकार किया था। परन्तु, रोजगार में हानि हो जाने से वह एक सौ पौंड से अधिक न दे सका। इससे शेष एक सौ पौण्ड भी न दे सकें ऐसी स्थिति वाले फ्रैंकलिन और मेरिडिथ को अपनी दूकान से एक सौ पौंड देने का समय आया। जिस व्यापारी ने उनके लिए वह सब सामान लंदन से मँगवाया था उसको धैर्य न था इस कारण उसने उन लोगों पर दावा कर दिया और फ्रैंकलिन को बिगाड़ने की धमकी दी। अपने ऊपर आई इस आपत्ति से फ्रैंकलिन को बड़ी चिन्ता हुई। किन्तु करता क्या; जब उसके पास कोई उपाय ही न था। ऐसे कठिन अवसर पर विलियम कोलमेन और राबर्ट ग्रेस नामक उसके दो सच्चे मित्र उसकी सहायता करने को तैयार हुए। ये दोनो जण्टो के सभासद थे और फ्रैंकलिन से 'बड़ा प्रेम रखते थे। फ्रैंकलिन के बिना कहे ही इन्होंने उस की सहायता करने की इच्छा प्रकट की। यदि आवश्यकता हो तो सारा कारखाना ही फ्रैंकलिन मेरिडिथ से अलग कर ले इतना रुपया तक देने को ये दोनों व्यक्ति तैयार हो गए। मेरिडिथ शराब पी कर रास्ते में पड़ा रहता। इस दुर्व्यसन के कारण लोगो की दृष्टि मे उसकी इज़्जत बहुत कम हो गई थी। ऐसे व्यक्ति के साथ सहयोग रखना अनुचित समझ कर उसके मित्रों ने फ्रैंकलिन को यह सम्मति दी कि वह मेरिडिथ से अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर दे। फ्रैंकलिन ने कहा कि:—'मेरिडिथ और उसके पिता ने मुझ पर ऐसा उपकार किया है कि जब तक उनसे की हुई मेरी प्रतिज्ञा पूरी न हो जाय, जब तक उससे अलग हो जाने की मै कल्पना तक नही कर सकता। यदि वे अपनी प्रतिज्ञा पूरी न कर सकें तो साझा उन की ओर से टूटेगा। और ऐसा हुआ तो मैं आपकी सहायता लूंगा" इसके पश्चात् फ्रैंकलिन ने मेरिडिथ के पास जाकर उससे

कहा:—"जान पड़ता है, अपने उस कार्य में जो तुमने भाग लिया है इसके लिए तुम्हारे पिता तुमसे अप्रसन्न हैं। शायद मेरा साझा रखने से उनका ऐसा विचार हो गया है और इसी से वे इसमें अपनी पूंजी नहीं लगाना चाहते। यदि वास्तव में ऐसा ही हो तो मुझसे स्पष्ट कह दो ताकि मैं अपना हिस्सा छोड़ कर तुम्हे अकेले को ही मालिक कर दूं।" इसके उत्तर में मेरिडिथि ने कहा:—"नहीं, ऐसा नहीं है। मेरे पिता वस्तुत. रुपए की सहायता देने में असमर्थ हैं। मैं भी उनको अधिक तंग करना ठीक नहीं समझता। मुझे विश्वास हो गया है कि मैं इस धन्धे के योग्य नहीं हूं। बाल्यावस्था में मैंने कृषि का कार्य सीखा था। तीस वर्ष की आयु में शहर में आ कर कोई नया रोज़गार सीखने के लिये मैंने शागिर्दपना किया यह बड़ी भूल की। नार्थकेरोलीना में भूमि बहुत सस्ती है और मेरी जाति के अन्य वेल्स लोग वहाँ जा कर बसने वाले हैं मेरी इच्छा है कि उनके साथ जाकर अपना असल पेशा करूँ। तुम्हारी सहायता करने वाले तुमको कई व्यक्ति मिल जायँगे। यदि तुम अपनी दूकान का सब कर्जा अपने सिर पर ले कर मेरे पिता के दिये हुए एक सौ पौण्ड वापस दे दो और मेरा खानगी रुपया जो मुझे कुछ लोगों का देना है चुकादो तथा मुझ को तीस पौंड नक़द और घोड़े का जीन दे दो तो मैं अपना भाग छोड़ देने को राजी हूँ।" फ्रैंकलिन ने इस बात को स्वीकार कर लिया। अपने उन दोनों उदार मित्रों के पास से उसने १००-१०० पौण्ड ऋण लिए और मेरिडिथ तथा उसके पिता का ऋण चुका कर वही छापेखाने का स्वामी बन गया। सन् १७३० ईस्वी के जुलाई मास की १४वीं तारीख को साझा तोड़ा गया था। सन् १७३२ के मई मास की ११वीं तारीख को फ्रैंकलिन ऋण मुक्त हो गया। किन्तु, उस समय तक यह बात प्रकाशित नहीं की।

अब धीरे २ फ्रैंकलिन की उन्नति होने लगी। थोड़े ही समय में एण्ड्रू हेमिल्टन ने डिलावर के नियम तथा चलनी नोट छापने का काम उस को दे दिया। फ्रैंकलिन ने जब तक छापाखाने का काम किया तब तक यह काम उसी के हाथ में रहा। फिर उसने एक काग़जी की दूकान भी खोल ली एक मनुष्य को उसने नौकर रक्खा और एक को शिष्य बनाया। इधर उसने स्वयम् भी पहिले की अपेक्षा अधिक परिश्रम करना आरम्भ किया। वह सादे वस्त्र पहिनता था, कभी किसी खेल तमाशे में न जाता और न कभी मछली पकड़ने या शिकार खेलने का काम ही करता। अपने धंधे को वह ओछा—हल्का नहीं गिनता है ऐसा दिखाने को अपने ख़रीदे हुए छापने के काग़ज़ एक ठेला गाड़ी में रख कर वह स्वयम् बाजार मे से घर पर लाता। दिन पर दिन लोगों में उसकी इज्ज़त बढ़ती गई। और काम भी उसको खूब मिलने लगा। किन्तु, यह होते हुए भी फ्रैंकलिन को पूरी निश्चिन्तता नहीं थी। डेविड हेरी नामक कीमर के एक शिष्य ने कीमर बार्बेडोज़ गया था तब उसका छापाख़ाना ख़रीदा था। यह व्यक्ति फ्रैंकलिन का ज़बरदस्त प्रतिस्पर्द्धी था। उसको इधर उधर का काम दिलादें ऐसे उसके कई मित्र थे। अपना हिस्सेदार हो जाने के लिये फ्रैंकलिन ने डेविड से कहलाया। लेकिन, उसके मन में इतना गुमान था कि उसकी प्रार्थना को उसने हंसी मे टाल दिया। कहावत है कि अहंकार तो राजा रावण का भी न रहा फिर डेविड जैसे साधारण व्यक्ति की तो बात ही क्या? वह ज़रा रोब दोब से रहता था लेकिन परिश्रमी नहीं था और न अपने काम पर यथोचित लक्ष्य ही देता था। थोड़े समय में उस पर ऋण होगया। इधर धीरे २ उसके ग्राहक भी कम होते गये और अन्त में जिस प्रकार उसका स्वामी कीमर बार्बेडोज़ भाग गया था उसी प्रकार

उसको भी चल देना पड़ा। अब फ्रेंकलिन का मार्ग एक प्रकार से निष्कण्टक सा बन गया। एण्ड्रू ब्रेडफर्ड मालदार था और इधर उधर के काम की विशेष अपेक्षा न रखता था इस कारण अधिकतर काम अब अकेले फ्रेंकलिन को ही मिलने लगा।

प्रकरण ९ वां

विवाह तथा पुस्तकालय की स्थापना

सन् १७३० से १७३२

'विवाह करने का विचार—मिस गोडफ्रे के साथ विवाह करने की खटपट—डेवोरा के साथ विवाह—डेवोरा के गुण—मितव्ययिता—घर में वैभव का प्रवेश—जण्टो मण्डली के सभाभवन में सभासदों की पुस्तकें एकत्रित करने की योजना—एक वर्ष के पश्चात् योजना की अवस्था—चन्दे से पुस्तकालय स्थापित करने का प्रयत्न—लन्दन से पुस्तकें मँगवाना—पुस्तकालय की स्थापना—इसका अनुकरण—फ्रेंकलिन के स्थापित किये हुए पुस्तकालय की स्थिति—उसकी उन्नति के कारण—पुस्तकालय से हुए लाभ।'

प्रेस का स्वतन्त्र मालिक हो जाने के पश्चात् फ्रेंकलिन को अपने रोज़गार के विषय में किसी प्रकार की चिन्ता करने का कारण न रहा। उसको विश्वास हो गया कि प्रेस में धीरे २ मैं अच्छी उन्नति कर लूँगा। अब मेरे सुख का समय निकट आ रहा है यह सोच कर उसका विचार विवाह कर लेने की ओर गया। प्रसिद्ध गणित शास्त्री गोडफ्रे और उसकी स्त्री जेम के साथ फ्रेंकलिन ने एक बार भोजन करने की

व्यवस्था की थी उनके एक सम्बन्धी के द्वारा गोडफ्रे नाम की अविवाहिता कन्या के साथ फ्रैंकलिन का विवाह कराने के लिये कयारनी नामक फ्रैंकलिन के मित्र ने प्रयत्न करना आरम्भ किया था। गोडफ्रे की स्त्री मिस गोडफ्रे और फ्रैंकलिन को इकट्ठा करने का कई बार प्रसंग लाया करती थी। मिस गोडफ्रे भी ऐसी सुयोग्य कन्या थी जिसको फ्रैंकलिन सहर्ष अंगीकार करले। कुछ समय के पश्चात् फ्रैंकलिन स्वयम् ही उसको चाहने लगा। गोडफ्रे और उसकी स्त्री फ्रैंकलिन को प्रायः अपने घर पर सन्ध्या के समय भोजन करने को बुलाते और उसको अपनी प्रेमिणी से भी भेंट करने का अवसर देते। होते २ विवाह सम्बन्धी कौल क़रार नक्की करने का समय आगया। फ्रैंकलिन के ऊपर इस समय प्रेस सम्बन्धी लगभग एक सौ पौण्ड का ऋण और होगया था। कन्या पक्ष वालों के आग्रह पर फ्रैंकलिन ने कहलवाया कि यदि मेरा यह ऋण चुक जाय इतनी रकम मिस गोडफ्रे का पिता मुझे देदे तो मैं विवाह कर सकता हूँ। किन्तु, गोडफ्रे की स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि वह सुविधा से इतनी रक़म दे सके। इस पर उसकी स्त्री ने इंकार किया तो प्रत्युत्तर में फ्रैंकलिन ने इस से कम लेना अस्वीकार किया और उनसे कहलाया कि यदि इतना रुपया उनके पास मौजूद न हो तो अपना मकान रहन रख दें। कुछ दिन के बाद फ्रैंकलिन को इसका यह उत्तर मिला कि:—"तुम्हारे साथ अपनी पुत्री का विवाह करने को मिस गोडफ्रे के माता पिता राज़ी नहीं हैं। ब्रेडफर्ड से पूछने पर हमें मालूम हुआ है कि प्रेस के काम में कुछ लाभ नहीं है। टाइप घिस जाने और उसके बदले नया टाइप ख़रीदने आदि मे कीमर और हेरी मे से एक के बाद दूसरे ने दिवाला निकाला है और बहुत करके तुम भी थोड़े समय के पश्चात् ऐसा करोगे।" इन लोगों का अनुमान था कि फ्रैंकलिन

हमारी पुत्री से इतना अधिक प्रेम करता है कि वह गुप्त रीति से ही करेगा किन्तु, उससे विवाह किये बिना न रहेगा। और इस प्रकार अपने को कुछ देने की आवश्यकता न होगी। उधर फ्रैंकलिन ने तो यही समझा कि मुझे धोका देने को यह युक्ति की गई है। बस इसी समय से उसने गोडफ्रे के घर पर जाना बन्द कर दिया। थोड़े दिन के बाद गोडफ्रे के कुटुम्बियों ने फ्रैंक-लिन के साथ सम्बन्ध करने को फिर अपनी इच्छा प्रकट की। किन्तु फ्रैंकलिन ने अब की बार साफ इन्कार कर दिया। गणित शास्त्री गोडफ्रे और उसकी स्त्री को यह बात ऐसी बुरी लगी कि फ्रैंकलिन के साथ लड़ाई झगड़ा करके वे दूसरी जगह चले गये। इससे फ्रैंकलिन पर मकान के किराये का अधिक भार आगया। परन्तु, अब उसने यह भी निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो, अब अपने रहने के मकान में किसी दूसरे किरायेदार को नहीं रखना चाहिये।

केवल सौ पौण्ड के लिये फ्रैंकलिन ने मिस गोडफ्रे जैसी सुयोग्य कन्या के साथ विवाह करने से इन्कार कर दिया यह बात कदाचित मानने में न आवे किन्तु, वहाँ उस समय विवाह भी एक प्रकार का साधारण व्यापार—रोज़गार ही समझा जाता था और एक सौ पौण्ड की रक़म उस समय एक भारी वस्तु गिनी जाती थी।

बेचारी डेबोरा रीड अभी दुःखावस्था मे ही थी। जिसके साथ उसका विवाह हुआ था उसकी पहिले की स्त्री अभी जीवित है ऐसा सुना जाता था। लेकिन, यह बात निश्चित नहीं थी। वह वेस्ट इण्डीज़ में मर गया है ऐसी लोकोक्ति भी उस समय प्रसिद्ध हो रही थी। किन्तु, यह भी सच्ची है या झूँठी इसका कुछ पता न था। रीड कुटुम्ब के साथ फ्रैंकलिन का घनिष्ठ

सम्बन्ध बना हुआ था। उनके प्रत्येक काम काज में उसकी सम्मति ली जाती थी। डेबोरा को दुःखावस्था में देख २ कर फ्रैंकलिन को बड़ा रंज होता था। यह बेचारी मेरी लापरवाही के कारण इस दुःखावस्था में आई है-ऐसा फ्रैंकलिन को कई बार विचार हो जाया करता था। डेबोरा की माँ कहा करती थी कि इसमें तुम्हारा नहीं बल्कि, मेरा दोष है। क्योंकि तुम्हारी अनुपस्थिति में दूसरे के साथ विवाह करने को डेबोरा से मैंने बहुत आग्रह किया था। फ्रैंकलिन के लन्दन से लौट आने तक डेबोरा कुँआरी होती तो वह उसके साथ अवश्य ही विवाह कर लेता। किन्तु, अब उसकी माता ने आग्रह करके विवाह कर दिया था अतः विवशता थी। उस बेचारी का दुःख देख कर फ्रैंकलिन का हृदय द्रवित हो गया और उसका पहिले का स्नेह उमड़ आया। चाहे जो हो किन्तु उससे विवाह करने की जोखम अपने सिर लेने को फ्रैंकलिन ने अपनी इच्छा प्रगट की। यह बात सब को पसन्द आई। और इस प्रकार फ्रैंकलिन और रीड का विवाह सन् १७३० ईस्वी के सितम्बर मास की पहिली तारीख़ को होगया। रोजर कुम्हार वास्तव में मर चुका था ऐसा पीछे से मालूम हुआ इस कारण फ्रैंकलिन को उसकी ओर का कुछ भय न रहा। उसका कोई वारिस होगा तो दावा करेगा यह भय अवश्य था। किन्तु, वैसा भी न हुआ।

फ्रैंकलिन की स्त्री डेबोरा रीड बड़ी परिश्रमशील, कर्तव्य परायण और सरल स्वभाव वाली थी। वह अपने पति की दूकान पर बैठती, कागज़ बनाने के कारख़ाने के लिये कागज़ ख़रीदती, पुस्तकों को सींती, फ्रैंकलिन को सिखाती, और प्रत्येक बात में उसकी सहायता करती। कुछ वर्षों के बाद एक समय फ्रैंकलिन विदेश गया। वहाँ का वर्णन करते हुए वह लिखता

है:—"एक समय पैर से सिर तक की पोशाक मैंने अपनी स्त्री के हाथ से बनी हुई पहनी थी, यह बात कहते हुए मुझे बड़ा हर्ष होता है। दूसरी कोई पोशाक पहिनने से मुझे इससे अधिक प्रसन्नता नहीं हुई।" वास्तव में डेबोरा रीड बड़ी परिश्रमशील, मितव्ययी, हँस मुख, दयालु, उदार और सरल स्वभाव वाली थी। उसकी आकृति सुन्दर और मुख उज्ज्वल तथा आनन्द-मय था। किसी समय उसके लड़के और लड़कों के बच्चे, रूप के लिये सारे देश में प्रसिद्ध होगये थे।

फ्रेंकलिन भी एक-पत्नीव्रत पालन करने वाला, सुकोमल हृदय वाला, और विचारशील मनुष्य था। सारांश यह कि "योग्य से ही योग्य का सम्बन्ध हुआ था जो सर्वथा योग्य था।" दोनों दम्पति एक दूसरे के साथ बड़े प्रेम भाव से रहने और अपने दिन बड़ी सुख शान्ति से बिताने लगे। उनके घर का सारा कार्य्य बड़ी सादगी और युक्ति से चलता था। फ्रेंकलिन आत्म चरित्र में कहता है:—"हमने घर के लिये व्यर्थ के नौकर न रखे थे। हमारा भोजन सादा और घर की प्रत्येक वस्तु हल्की से हल्की क़ीमत की थी। उदाहरण के लिये कई वर्ष तक मैं नाश्ते में केवल दूध और रोटी खाता। चाय नहीं पीता। मेरा नाश्ता दो आने के जस्त के चमचे और मिट्टी के बर्तन में होता था। लेकिन, देखो, कुटुम्बों में वैभव कैसे प्रविष्ट होता है और विपरीत विचार होते हुए भी कैसे बढ़ता जाता है। एक दिन मुझे स्त्री ने नाश्ता करने को बुलाया तो मैंने देखा कि उसने मुझको अपना नाश्ता चाँदी के चम्मच के साथ चीनी के प्याले में धर रक्खा है। मुझको इसकी ख़बर न थी कि मेरी स्त्री ने मेरे लिये कब ये दो वस्तुएँ खरीदीं। और उसके मूल्य स्वरूप २३ शिलिङ्ग जैसी मोटी रक़म कैसे दी। इतना अधिक व्यय

करने का कारण उस ने यह बतलाया कि अपने पड़ोसियों की तरह मेरा पति भी चाँदी का चम्मच और चीनी के प्याले में भोजन करने योग्य क्यों नहीं है, यह सोच कर मैंने इन्हें खरीदा है। हमारे घर में चांदी और चीनी के वर्तन पहिले पहिल इस प्रकार आये फिर जैसे २ हमारी आर्थिक अवस्था अच्छी होती गई वैसे वैसे वे बढ़ते गये और आखीर में सैकड़ों पौण्ड के हो गये।

विवाह होने के कुछ समय पश्चात् भी फ्रूंकलिन पहिले की तरह सादगी से रहता, ठेला गाड़ी में रख कर सारा काग़ज़ी सामान स्वयम् ही ले जाता, स्वयम् ही काजल तय्यार करता। सारांश यह कि प्रत्येक कार्य्य के आरम्भ में स्वभावतः जो कठिनाइयाँ होती हैं वे आतीं। उस समय उसने एक ऐसी योजना की जिसका परिणाम एक बड़े उपयोगी और आवश्य पुस्तकाल की स्थापना में आया।

इस समय मण्डली के एकत्रित होने का मुख्य स्थान शराब की दुकान गिनी जाती थी। जण्टो मण्डली की स्थापना हुई तब उसकी बैठक भी शुरू में एक दूकान में हुआ करती थी। कुछ समय पश्चात् जब राबर्ट ग्रेस नामक एक सभासद् ने उसको अपना मकान दिया तब सभा दूकान से हट कर वहां होने लगी। कभी २ ऐसा होता कि वाद विवाद में प्रमाण देने को कोई २ सभासद् अपने घर से पुस्तक लाते। इस पर फ्रूंकलिन ने सब से यह प्रार्थना की कि प्रत्येक सभासद् को अपनी पुस्तकें सभा भवन में रखनी चाहिये जिससे वाद विवाद करते समय उनका उपयोग हो सके। सर्व सम्मति से उसकी यह प्रार्थना स्वीकार हुई और कुछ समय बाद ही सभा भवन पुस्तकों से भर गया। जण्टो के सभासदों के उपयोग के लिये इस प्रकार एक वर्ष तक पुस्तकें

रहीं। परन्तु, कुछ पुस्तकों में हानि हुई इस कारण एक वर्ष के पश्चात् सब सभासद अपनी २ पुस्तकों को घर पर लौटा ले गये। उस समय पुस्तकों की बड़ी कमी थी। उनका मूल्य बहुत अधिक लगता था। यह अवश्य है कि पुस्तकों का आकार प्रकार बड़ा रक्खा जाता था। चार पेजी की अपेक्षा छोटी पुस्तकें कम ही नज़र आती थीं। दो गिन्नी से कम मूल्य की पुस्तक कभी भाग्य-वश ही भले ही मिल जाती। चार पाँच और छः गिन्नी तो पुस्तकों का साधारण मूल्य था। बेचारे साधारण स्थिति वाले व्यक्ति अधिक पुस्तकें ख़रीद ही न सकते थे। फ्रेंकलिन और उसके मित्रो ने पुस्तकें एकत्रित कर एक वर्ष तक उनका रसा-स्वादन किया था। इसीलिये जब सभासद अपनी २ पुस्तकें ले गये तो उन्हे बड़ी अड़चन पड़ने लगी। ऐसी कठिनाई में फ्रेंक-लिन को चन्दा कर के एक पुस्तकालय स्थापित करने का विचार आया। सन् १७३१ के आरम्भ में उसने इसके लिये प्रयत्न करके एक पुस्तकालय स्थापित करने की योजना की। नियम यह रखा कि हिस्सेदार को प्रारम्भ में पुस्तकें ख़रीदने को दो पौण्ड देने होंगे और फिर प्रति वर्ष दस शिलिङ्ग देते रहना पड़ेगा। उस समय फिलाडेल्फिया में ऐसे मनुष्य थोड़े थे जो पुस्तक प्रेमी हो और उसके लिये कुछ व्यय करें इस कारण हिस्सेदारों की पूरी संख्या जुटाने मे फ्रेंकलिन को बहुत सिरपची करना पड़ी। वह लिखता है कि:—"जहां तक हो सका मैं अपना नाम मुख पर न लाया। मैं सब से यह कहता कि यह कुछ मित्रों की योजना है और उन्होंने मुझ से अनुरोध-पूर्वक कहा है कि मैं घूम २ कर पढ़ने लिखने का शौक़ रखने वाले गृहस्थों को यह योजना बताऊं"।

फ्रेंकलिन की योजना सब पर प्रकट हो जाने के पाँच महीने पश्चात् अर्थात् सन् १७३१ के नवम्बर तक ५० नाम इकट्ठे हुए।

और सन् १७३२ के मार्च तक उनसे रुपये भी वसूल हो गये। जेम्स लेगन नामक उस सयम के एक विद्वान् पुस्तक परीक्षक की सम्मति लेकर फ्रेंकलिन ने पुस्तकों की सूची तैयार की और ४५ पौण्ड की लन्दन की हुण्डी ख़रीदी। फिर सूची और हुण्डी पिटर कोलिन्सन नामक व्यक्ति को जो लन्दन जा रहा था, पुस्तकें ख़रीदने के लिये सोंप दी। कोलिन्स ने इङ्गलैण्ड जाने के पश्चात् वहां से पुस्तकें खरीद कर भेज दीं। इनके साथ ही उसने न्यूटन कृत प्रिन्सिपिया और गार्डन कृत एक शब्द कोष अपनी ओर से भेंट के तौर पर भेजे। इस प्रकार कोलिन्स ने ३० वर्ष तक नये पुस्तकालय के लिये लन्दन से पुस्तकें ख़रीद करके भेजने का काम किया। और प्रति वर्ष की ख़रीदी हुई पुस्तकों के साथ अपनी ओर से भी क़ीमती पुस्तकें भेंट स्वरूप भेज कर पुस्तकों की सख्या बढ़ाई।

उस समय लन्दन से आने में बहुत समय लगता था इस कारण १७३२ की सारी ग्रीष्म-ऋतु उनको पुस्तकों की बाट देखने में बितानी पड़ी। अक्टूबर मास में पुस्तकें आ गईं। और सब से पहिले जण्टो के सभा भवन में रक्खी गईं। एक व्यक्ति को पुस्तकालय का क्लर्क नियुक्त किया गया। हिस्सेदारों को पढ़ने के लिये पुस्तकें देने और उनसे आई हुई पुस्तकें वापस लेने के लिये सप्ताह का एक दिन रक्खा गया। दूसरे वर्ष फ्रेंकलिन ने स्वयम् अवैतनिक रूप से पुस्तकालय के क्लर्क का काम किया। व्यवस्थापक मण्डली के मत्री का काम कई वर्ष तक जोसेप ब्रिण्टनल नामक व्यक्ति ने किया। इस व्यक्ति के उत्साह और परिश्रम से पुस्तकालय की स्थिति क्रमशः खूब उन्नत होती गई। पुस्तके आने के बाद फ्रेंकलिन ने उसकी सूची मुफ़्त में छाप कर दी थी। यह तथा छपाई का और

दूसरा मुतफर्रिक्क काम करने से १० शिलिंग वार्षिक मिलने वाले रुपये फ्रैंकलिन ने दो वर्ष तक न लिये।

फ्रैंकलिन जैसे साधारण कारीगर और अन्य व्यक्तियों का स्थापित किया हुआ यह पुस्तकालय कुछ समय में चल निकला। पुस्तकें, रुपया, पैसा और कला-कौशल की नई २ वस्तुएँ भेंट स्वरूप खूब मिलने लगीं। सहायकों की संख्या भी धीरे २ बढ़ने लगी। फ्रैंकलिन के स्थापित किये हुए इस पुस्तकालय का अनुकरण कर इस ढंग के और भी कई पुस्तकालय फ़िलाडेल्फ़िया और उसके पार्श्ववर्ती अनेक नगरों में स्थापित होने लगे। पिडर काम नामक एक स्वीडन का यात्री जो सन् १७४८ में फिलाडेल्फिया आया था लिखता है कि उस समय फ्रैंकलिन के इस पुस्तकालय का उदाहरण लेकर ऐसे ही ढंग पर बहुत से छोटे २ पुस्तकालय स्थापित हो गये थे। आगे वह यात्री लिखता है कि हिस्सेदारों के सिवाय और लोगों को भी पुस्तकों के मूल्य के बराबर रकम अमानत के तौर पर लेकर पुस्तकें घर पर पढ़ने को ले जाने दी जाती थी। उनसे चन्दे के तौर पर बड़ी पुस्तक के प्रति सप्ताह आठ पेन्स, चार पेजी पुस्तक के छः पेन्स और दूसरी सब प्रकार की पुस्तकों के चार पेन्स लिये जाते थे। १७६४ में पुस्तकालय के शेअर का भाव २० पौण्ड हो गया था और सारे पुस्तकालय का मूल्य १७०० पौण्ड। सन् १७८५ में पुस्तकों की संख्या ५४८७ थी। १८०७ मे १४४५७ हुई और सन् १८६१ में ७०००० हो गई थी। अमेरिका में यह एक ही पुस्तकालय है जो स्थापित हुआ तब से आज तक बराबर उन्नत होकर अच्छी व्यवस्था के साथ लोक सेवा करता आ रहा है। आगे के लिये भी इसकी स्थिति को देख कर अनुमान होता है कि यह सैंकड़ों वर्ष तक चलता रहेगा।

इस पुस्तकालय की उन्नति के मुख्य कारणों में उसकी स्पर्द्धा युक्त योजना, नियमों की सरलता, उत्तम-व्यवस्था और फ्रेंकलिन तथा उसके मित्रों का परिश्रम था। पुस्तकालय की उन्नति करने के किसी साधन को फ्रेंकलिन व्यर्थ न जाने देता था। उदाहरण के तौर पर पुस्तकालय स्थापित होने के पश्चात् एक दो वर्ष तक टामस पेन फिलाडेल्फिया आया तब पुस्तकालय की व्यवस्थापक मण्डली के सभासदों ने उसका बड़ा सम्मान किया, उसको मानपत्र भेंट किया और इस प्रकार उससे पुस्तकें तथा और २ कई वस्तुएँ भेंट स्वरूप लीं।

पुस्तकालय बढ़ने से लोगों में खूब ज्ञान-वृद्धि होने लगी। पढ़ने का शौक भी उत्तरोत्तर बढ़ने लगा। नाटक, जादू, इन्द्र-जाल आदि मनोरञ्जन की दूसरी बातों का उस समय अमेरिका में प्रचार न था। इससे लोगों को पुस्तकें पढ़ने का खूब समय मिलता था। थोड़े समय में यात्रियों ने यह कहना शुरू किया कि सारे देश की अपेक्षा फिलाडेल्फिया और इसके निकटवर्ती नगरों के निवासी अधिक ज्ञान-सम्पन्न और चतुर प्रतीत होते हैं। फिलाडेल्फिया के इस पुस्तकालय से अन्यान्य लोगों के साथ फ्रेंकलिन को बड़ा लाभ हुआ। प्रति दिन एक से दो घण्टे वह पढ़ने में बिताता और इस प्रकार २० वर्ष के निरन्तर अध्यव-साय से उसने सब विषयों का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लिया।

फ्रेंकलिन से पहिले पुस्तकालय तो संसार में कई स्थानों पर थे। परन्तु, उन पुस्तकालयों में से चाहे जिसको पुस्तकें नहीं मिल सकती थीं। जो चन्दा दे उसको घर या पुस्तकालय में जहां वह चाहे पढ़ने को पुस्तक मिल सके ऐसा पुस्तकालय स्थापित करने का श्रेय संसार भर में सब से पहिले फ्रेंकलिन को ही है।

प्रकरण दसवाँ

अधिपति और "ग़रीब रिचर्ड" का पञ्चाङ्ग

सन् १७३२—१७४४

फ्रैंकलिन का उद्योग—पेन्सिल्वेनियां गज़ट—उसमें प्रकाशित लेख—विज्ञापन—गज़ट की फ़ायल—ग़रीब रिचर्ड—अब्राहम काका का उपदेश—उसका प्रभाव—ग़रीब रिचर्ड की प्रस्तावना—टिटन लीडज़—ग़रीब रिचर्ड में हुई सफलता—टिटन लीडज़ की मृत्यु—ग़रीब रिचर्ड के नैतिक वचन तथा कहावतें—फ्रैंकलिन की कमाई बढ़ी—पाँती में प्रेस खोले—पाँतीदारों को उपदेश—बोस्टन जाना—जेम्स की मुलाक़ात—फ्रैंकलिन की छापी हुई पुस्तकें—मासिक पत्र निकाला—फ्रैंकलिन की प्रतिष्ठा—फ्रैंकलिन व्यवस्थापिका सभा का कारकुन—बैरी को किस रीति से मिलाना—फ्रैंकलिन फ़िलाडेल्फ़िया का पोस्ट मास्टर।

फ्रैंकलिन ने सन् १७२८ से १७४८ तक २० वर्ष फिलाडेल्फ़िया में एक उद्योगी पुरुष की भाँति बिताये। कम्पोज़ीटर, प्रिण्टर, लेखक, प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता और जिल्दसाज़ी का कार्य्य भी उसने किया। काजल तथा स्याही तो वह तैयार करता ही था। किन्तु, इसके साथ ही काग़ज़ बनाने के चिथड़ों का व्यापार भी करता था। साबुन और झाड़ू भी बेचता। सन् १७३५ के उसके एक विज्ञापन से मालूम होता है कि ६ शिलिंग

प्रति गैलन के भाव में सेंक नामक शराब भी वह बेचता था। इस के साथ ही वह चाय, काफ़ी और दूसरी कुछ और भी वस्तुएँ विक्रयार्थ रखता था जिनका घर में उपयोग होता है। उसकी दूकान नगर निवासियों के लिये गप शप उड़ाने का एक स्थान बन गई थी और वहाँ प्रतिदिन की नई खबर जानने को कई लोग इकट्ठे हुआ करते थे। भाषण आदि होने की कोई नई योजना हुई हो अथवा दूसरे और कामों के लिये आन्दोलन हुआ हो उसकी खबर बाज़ार में स्थापित इस नये छापाखाने में मिल जाती थी।

धीरे २ पेन्सिल्वेनिया गज़ट का प्रचार बहुत बढ़ गया। वह वहाँ के उस समय के पत्रों में सब से मुख्य था। पहिले प्रत्येक पाँचवें अङ्क में उसमें साहित्य-सम्बन्धी निबन्ध निकला करते थे। किन्तु, कुछ समय बीत जाने पर प्रत्येक अङ्क में साहित्य-सम्बन्धा और भी कुछ न कुछ चर्चा होने लगी। किसी समय उसमें स्पेक्टेटर में से कुछ अंश उद्धृत किया जाता था और कभी जण्टो-मण्डली में फ्रैंकलिन का पढ़ा हुआ निबन्ध छाप दिया जाता था। फ्रैंकलिन के लिखे हुए जिन लेखों का सग्रह इसमें प्रकाशित हुआ है वे बड़े शिक्षाप्रद और विद्वत्ता पूर्ण हैं। फ्रैंकलिन के लेख हमेशा उदार विचार के और सङ्कीर्ण हृदय वालों का सुधार करने वाले होते थे। उसके पत्र में वैमनस्य पूर्ण लेख कभी आते ही नही थे। क्या हुआ जो किसी समय कारण वश एकाध आगया। जिन में किसी की बुराई की गई हो, अथवा जो प्रमाणहीन हों, ऐसे लेखों को वह अपने पत्र में स्थान ही न देता था। उस समय स्थानीय लोगों का प्रेम भाव और स्नेह बढ़ाने के लिये पेन्सिल्वेनिया गज़ट की अपेक्षा अच्छा उपदेशक दूसरा कोई न था।

फ्रेंकलिन समय २ पर ऐसे लेख लिख कर अपने पत्र में छापता था मानों वे किसी ने लिख कर भेजे हैं। लोगों की स्वभावतः ही उनको पढ़ कर उनका उत्तर लिखने की इच्छा होती थी। ऐसे पत्रों के उपदेश जनक उत्तर कई लोग भेजा करते थे। किसी समय लोगों की ओर से कोई उत्तर न आता तो वह स्वयम् ही कुछ लिख कर उनको ऐसे ढंग से प्रकाशित करता कि कोई यह न जान पाता कि ये फ्रेंकलिन ने लिखे हैं। प्रत्येक अङ्क में कुछ मनोरञ्जन की सामग्री भी रहती थी। और भोजन करते या बात चीत होते समय प्रत्येक मण्डली में उस दिन का पत्र बात चीत का मुख्य साधन हो जाता था।

व्यापार रोज़गार के विज्ञापन छपाने की इस समय की पद्धति को प्रचलित करने वाला बेञ्जामिन फ्रेंकलिन ही था। इससे पहिले सम्वाद पत्रों में बहुत थोड़े विज्ञापन छपा करते थे। और वे भी भागे हुए नौकरों अथवा घर तथा ज़मीन बिकने के सम्बन्ध के हुआ करते थे। इस समय की भाँति ऐसे विज्ञापन लोगों के मन आकर्षित करने वाले जिनको स्वभावतः ही पाठक की उस वस्तु को लेने की इच्छा हो जाय छपाने वालों में फ्रेंकलिन ही सबसे पहिला मनुष्य था। वह अपने माल का विज्ञापन बहुत दिया करता था। इससे उसकी प्रसिद्धि तो होती ही। किन्तु, आवश्यकता होने पर पत्र की ख़ाली जगह भी भर जाती। विज्ञापनों में चित्र देना भी इसी ने शुरू किया। इसका अनुकरण कर दूसरे व्यापारियों ने भी विज्ञापन छपाने शुरू किये और इस प्रकार धीरे २ उसके पत्र में विज्ञापन बाज़ी का काम इतना बढ़ गया कि किसी २ समय चार से पाँच पृष्ठ तक विज्ञापन से भर जाते।

पेन्सिल्वेनियाँ गजट की आरम्भ से पूरी फाइल फिलाडेल्फिया नगर के पुस्तकालय में अभी तक मौजूद है। फ्रेंकलिन का

रोजगार और व्यापार धीरे २ किस तरह बढ़ा इस बात का ज्ञान इस फ़ाइल को देखने से भली भाँति हो सकता है।

अमेरिका में उस समय प्रत्येक छापाखाने वाला प्रति वर्ष एक पञ्चाङ्ग निकाला करता था। इस प्रथा का अनुकरण कर सन् १७२२ ईस्वी के सितम्बर मास मे फ्रेंकलिन ने "ग़रीब रिचर्ड" (Poor Richard) नामक ५ पेन्स मूल्य का एक पञ्चाङ्ग निकाला। इसमें उसको अपूर्व सफलता हुई। पहिले वर्ष एक ही मास में उसकी तीन आवृत्तियाँ निकली। इसके बाद २५ वर्ष तक बराबर उसकी लगभग १०००० दस हज़ार प्रतियाँ छपती रहीं। आज भी उसकी १ प्रति के अस्सी रुपये अथवा पूरे सेट के हज़ारों रुपये देने वाले पुस्तक प्रेमी मिलते हैं।

"ग़रीब रिचर्ड" उस समय का एक बड़ा हास्य-जनक पञ्चाङ्ग था। उसमें अनेक बोधजनक कहावतें रहा करती थीं। किन्तु, सबमें हास्य-रस की प्रधानता होती थी। दूसरे विषयों को देखते उसमें कहावतों की संख्या अधिक होती थी। उनकी बड़ी ख्याति हुई। जिसका कारण यह था कि सन् १७५७ में फ्रेंच लोगों के साथ हुई लड़ाई के कारण वहाँ के निवासियों पर कर का बोझ बहुत हो गया था। उस समय फ्रेंकलिन ने पञ्चाङ्ग की प्रस्तावना के तौर पर एक बड़ा विस्तृत लेख लिखा और उसमें उसने यह साबित कर दिया कि यदि लोग फिजूलख़र्ची कुछ कम करदें तो सरलता से कर दे सकें। "ग्रन्थकार अपने लिखे हुए वाक्य के अनुसार दूसरों को कहता हुआ सुनता है, तब बड़ा प्रसन्न होता है" इस प्रकार आरम्भ करके "ग़रीब रिचर्ड" कहता है कि:—"एक व्यापारी का सामान नीलाम होते समय बहुत से लोग इकट्ठे हुए थे। वहां कुछ देर पहिले

अपना घोड़ा खड़ा रख कर मैं भी खड़ा हो गया। अभी नीलाम का समय नहीं हुआ था इससे लोग बातें करते थे कि बड़ा नाज़ुक समय आ गया। एक व्यक्ति पास ही बैठे हुए सफ़ेद बाल वाले वृद्ध मनुष्य से जाकर पूछने लगा:—"अब्राहम काका, अब्राहम काका, इस समय की गई सभा के लिये तुम्हारा क्या विचार है? क्या इन भारी करों से देश का नाश न होगा? अपन किस प्रकार यह कर दे सकेंगे? आपकी क्या सम्मति है?" अब्राहम काका खड़े हुए और जवाब दिया:—"मेरी सलाह मानो तो मैं संक्षेप में कहूँ।" जब सब लोगों ने इकट्ठे होकर अपने विचार प्रकट करने को अब्राहम काका से प्रार्थना की तब वह बोला:—

"कोई सरकार अपनी प्रजा के समय का दसवाँ भाग भी हरजाने की भाँति अपने उपयोग में ले तो वह सरकार अत्याचारिणी गिनी जायगी। परन्तु, आलस्य हम लोगों के पास से इसकी अपेक्षा अधिक समय ले लेता है। आलस्य से रोगोत्पत्ति होती है और वह जीवन को भी नष्ट कर देता है। मनुष्य का शरीर परिश्रम से घिसता है उसकी अपेक्षा आलस्य रूपी जंग से अधिक नष्ट होता है। "ग़रीब रिचर्ड" कहता है कि "काम में आती रहने वाली वस्तु हमेशा उजली रहती है। क्या तू ज़िन्दगी को चाहता है? जो ऐसा है तो समय को व्यर्थ न गँवा। क्योंकि जीवन समय से ही बना है। हम लोग कितना अधिक समय नींद में बिता देते हैं। ऊँघता हुआ सियार शिकार को नहीं पकड़ सकता। मृत्यु के पश्चात् गहरी नींद के लिये खूब समय मिलेगा। इस बात को हम कितनी बार भूल जाते हैं।"

"ग़रीब रिचर्ड" कहता है कि लोगों को बुड्ढे अब्राहम काका के विचार बहुत पसन्द आये। किन्तु, मानो वह एक साधारण व्याख्यान हो, इस प्रकार शीघ्र ही उसे भूल कर उससे

उल्टे चले। कारण कि नीलाम शुरू हुआ तब वे आँखें मूँद कर ख़रीदने लग गये। अब्राहम का अभिप्राय यह था कि नीलाम की वस्तु इसलिये ख़रीदी जाती है कि वह सस्ती होती है। किन्तु यथार्थ में वह बहुत मँहगी पड़ती है क्योंकि उनके ख़रीदने में जो रुपया व्यय किया जाता है वह रुपया और उपयोगी कामों में से बचाना पड़ता है, इत्यादि।

इस मनोरंजक प्रस्तावना से पाठकों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। सब स्थानीय पत्रों ने अपने २ पत्रों में इस प्रस्तावना को उद्धृत किया। इतना ही नहीं। बल्कि, घरों में दीवारों पर लटकाये जा सकें इस प्रकार वह इङ्गलैण्ड में एक काग़ज़ पर छापा गया। स्पेन, फ्रांस और ग्रीस देश की भाषाओं में उसके अनुवाद हुए और बढ़ते हुए कर के बोझ को बिना कुछ होहल्ला किये प्रजा सहन करने लगी।

"ग़रीब रिचर्ड" में हास्यजनक भाग अधिक रहता था इसमें प्रकाशित होने वाले विज्ञापन भी प्रायः हास्यजनक ही होते थे। उसकी प्रस्तावना भी अधिकांश में हास्य जनक ही रहती थी। ग्रहण आदि अन्यान्य प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन भी हास्यजनक कविताएँ और कहावतें भी हास्यजनक। इस प्रकार उसका बहुत ही थोड़ा अंश हँसी से ख़ाली रहता था। लेकिन वह भी बड़ी ख़ूबी से लिखा जाता था।

"ग़रीब रिचर्ड" की प्रस्तावना में एक जगह वह लिखता है कि:—"इस पञ्चाङ्ग को प्रकाशित करने का मेरा विचार स्वार्थ से ख़ाली नहीं है। सच्ची बात यह है कि मैं बहुत ग़रीब हूँ और मेरी घर वाली बहुत मग़रूर है। वह मुझ से कहती है कि तुम आकाश के तारों की ओर देखते हुए बैठे रहो और कुछ काम मत करो। मैं सारे दिन रेंटिया काता करूँ यह मुझ से अब सहन नहीं हो

सकता। मेरे लड़के की भलाई के लिये पैसा पैदा हो ऐसा तुम्हारी पुस्तकों के उपयोग से कुछ लाभ न होगा तो मैं उनको जला दूंगी। उसने कई बार मुझको ऐसी धमकी दी है। और छापाख़ाने वाले ने अपने लाभ का कुछ भाग मुझे भी देना स्वीकार किया है। इस प्रकार अपनी प्रियतमा के कहने से मैंने यह कार्य शुरू किया है।"

कीमर का निकाला हुआ पञ्चाङ्ग "टिटन लीडज़" के नाम से प्रति वर्ष प्रकाशित होता था। "ग़रीब रिचर्ड" और "टिटन लीडज" में बड़ी प्रतिस्पर्द्धा रही। समय २ पर इनमे बड़ी व्यङ्गोक्तियाँ हुई हैं।

"ग़रीब रिचर्ड" के जो अङ्क इस समय मिलते हैं उनमें से नमूने के लिये कुछ चुनी हुई कहावतें और वाक्य नीचे दिये जाते हैं:—

(१) सोने का कौर खिलाना चाहिये। किन्तु, त्रुटि होने पर दण्ड भी देना चाहिये।
(२) सोने की कसौटी अग्नि और मनुष्य की कसौटी विपत्ति है।
(३) रोग और शत्रु को उत्पन्न होते ही सम्हालना चाहिये।
(४) सच्चा सच्चा ही है, और खोटा खोटा ही।
(५) पैसे को खींच कर रक्खो, और उसे युक्तिपूर्वक ख़र्च करो।
(६) दुःख के अन्त में सुख मिलता है।
(७) जागे सो पावे, सोवे सो खोवे।
(८) सब्र का फल मीठा होता है।
(९) जल्दबाज़ी अच्छी नहीं होती।
(१०) दूसरों के सद्गुणों को ढूँढ और अपने अवगुणों को।
(११) संसार में सबसे बड़ा प्रश्न मनुष्य के लिये यह है कि मैं क्या लोकोपकार कर सकता हूँ।

(१२) जो हल चलाता है वह गँवार नहीं है, परन्तु गँवार वह है जो गँवारों के से काम करे।

(१३) खाली बोरा खड़ा नहीं हो सकता।

(१४) जो बहुत बोलते हैं वे करके कम दिखाते हैं।

(१५) जिसके दो जीभ हैं वह दुखी रहता है—अर्थात् वह किसी से कुछ कहता है और किसी से कुछ।

(१६) जो काम क्रोधावेश में किया जाता है उसका परिणाम पश्चात्ताप है।

(१७) यदि तुम कीर्ति चाहते हो तो आत्मा की आवाज पर उसी तरह चलो जिस तरह कीर्ति की।

(१८) गया हुआ समय वापस नहीं आ सकता।

(१९) काम को तुम चलाओ न कि काम तुमको चलावे।

(२०) जो मनुष्य आशा पर निर्भर रहता है वह भूखों मरता है।

(२१) आज के काम को कल पर मत छोड़ो।

(२२) बूँद बूँद से तालाब भर जाता है।

(२३) कुए के सूख जाने पर पानी का मोल मालूम होता है।

(२४) सौ पौण्ड तो कमाओ दो सौ आप हो जायँगे।

इसी प्रकार की और बहुत सी चतुरता पूर्ण और अनुभव सिद्ध कहावतें तथा वाक्य "ग़रीब रिचर्ड" में मिलते हैं। इनमें से कुछ लार्ड बेकन के निबन्धों में से और कुछ अन्य सुप्रसिद्ध लेखकों के ग्रन्थों से ली हुई हैं। इनमें से कितनों में ही फ्रैंकलिन ने अपने विचारों के अनुसार परिवर्तन भी किया है। कुछ शिक्षा-प्रद बातें कवितामें भी हैं।

'ग़रीब रिचर्ड' के प्रथम अङ्क की ही इतनी बिक्री हुई कि फ्रैंकलिन का व्यय आदि सब निकाल कर अपना ऋण चुका देने

पर भी उस के पास काफ़ी रुपया बच रहा। इस रुपये को उसने बड़ी युक्ति से बचा रक्खा। अपने एक कारीगर को उसने चार्लस्टन भेजा। वहाँ छापाखाना न था इस कारण वहां के लिये उसने उसके लाभ में से ⅓ भाग ठहरा कर मशीन तथा टाइप दे दिया और एक प्रेस वहाँ भी खोल दिया। इस में उस को सफलता मिलने से दूसरे कुछ अच्छे कारीगरों से उस ने इसी शर्त पर भिन्न २ शहरों में प्रेस खुलवाये। फ्रैंकलिन लिखता है कि:—
"इन लोगों में से बहुतों को खूब सफलता हुई। छः वर्ष की अवधि पूरी होने पर मेरे पास से उन्होंने टाइप आदि ख़रीद कर लिया और अपनी शक्ति पर ही ठीक २ काम करने लगे। इस प्रकार इस कार्य्य को कई लोगों ने करना शुरू कर दिया। पाँती के रोज़गार से अख़ीर में प्रायः झगड़ा होजाया करता है। परन्तु, सौभाग्य से मेरा पाँती का रोज़गार ठीक चला। इस का मुख्य कारण यह था कि प्रत्येक पाँतीदार से जो कुछ शर्तें करना होती उस को मैं कार्यारम्भ से पहिले प्रतिज्ञा पत्र में ही तय कर लेता था। इस प्रकार झगड़ा होने का कोई कारण ही शेष न रहता। साझा करने वाले सब लोगों को इस के लिये हमेशा सावधान रहना चाहिये।"

"ग़रीब रिचर्ड" में नफ़ा मिलने से दस वर्ष में प्रवास में रह कर सन् १७३३ ईस्वी में फ्रैंकलिन अपनी जन्म-भूमि बोस्टन शहर में चला गया। लड़ाई, बीमारी अथवा दूसरे कारणों से हानि न होती तो प्रति दसवें वर्ष वह बोस्टन जाया करता। उसने मृत्यु समय तक ऐसा ही किया। बोस्टन से वापिस आते हुए मार्ग में न्यूपोर्ट में वह अपने भाई जेम्स से मिलने को उतरा। दोनों भाई अपने पुराने झगड़े को भूल गये और कुछ समय तक बड़े स्नेह से शामिल रहे। जेम्स बुड्ढा होगया था। उसके एक

दस वर्ष का पुत्र था। जिस के लिये उसने फ्रैंकलिन से कहा कि यदि मेरी मृत्यु होजाय तो तुम इस को अपने पास ले जाकर छापाखाने का काम सिखा देना। फ्रैंकलिन ने इस बात को सहर्ष स्वीकार किया और आगे चल कर उसने इस का पालन भी किया। भाई के मर जाने पर उसने अपने भतीजे को पाठशाला में बिठलाया, पढ़ लिख जाने पर उसको रोज़गार में डाला और फिर उस को कुछ टाइप दे कर अपनी माता के पास भेज दिया जो न्यूपोर्ट में जेम्स का छापाखाना चला रही थी। फ्रैंकलिन लिखता है कि:—"इस प्रकार मैंने अपने भाई का बदला चुका दिया।"

फिलाडेल्फिया वापिस आने के पश्चात् उसने अधिक उद्योग से अपना कार्य्य करना शुरू किया। वह इङ्गलैण्ड से पुस्तकें मँगाता और कभी २ स्वयम् भी कोई पुस्तक प्रकाशित करता। उस समय धार्मिक पुस्तकें अधिक प्रकाशित होती थीं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि उस समय ९० प्रति शत पुस्तकें धार्मिक छपती थीं। फ्रैंकलिन की प्रकाशित की हुई पुस्तको में से अधिकांश धार्मिक थीं इस कारण वह अनेक धर्माचार्य्यों का बड़ा प्रिय होगया था। वे अपना काम उसके सिवाय कभी किसी दूसरे को न देते थे।

सन् १७४१ में फ्रैंकलिन ने एक मासिक पत्र निकाला। इस के हाथ में लिये हुए कार्य्यों में से विरला ही ऐसा होता था जिस में उस को सफलता न मिलती हो। यह मासिक पत्र भी वैसा ही निकला। किन्तु, छः अङ्क निकलने के बाद उसको बन्द करना पड़ा। फ्रैंकलिन के मित्र और आश्रयदाता मि० जेम्स लीग का लिखा हुआ एक निबन्ध सन् १७४४ में फ्रैंकलिन ने प्रकाशित किया। यह पुस्तक तीन वार इङ्गलैण्ड में छपी और

बहुत प्रसिद्ध हुई। इसी वर्ष एक प्रख्यात उपन्यास "पेमेला" अथवा "सद्गुण का बदला" उसने छापी और उसका मूल्य छः शिलिङ्ग रक्खा। बोलिंग ब्रोक का बनाया हुआ "आइडिया आफ ए पेट्रिओट किंग" नामक पुस्तक उस समय बड़ी लोकप्रिय थी। इस कारण फ्रैंकलिन ने उसको फ़िर प्रकाशित की।

कुछ समय पश्चात् उसने एक जर्मनी प्रेस खोला। उस समय को बहुत सी पुस्तकें और मासिक पत्र जर्मन और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में प्रकाशित हुआ करते थे। पेन्सिल्वेनियाँ में उस समय सारे परगने ऐसे थे कि जहाँ जर्मनी के सिवाय दूसरी कोई भाषा नहीं बोली जाती थी।

लोगों में फ्रैंकलिन की प्रतिष्ठा बढ चुकी थी। उस समय की हुई कुछ घटनाओं से जान पड़ता है कि उस पर सब का पूरा भरोसा था। लोगों में लड़ाई झगड़ा होजाने पर उसका फैसला देते समय यह प्रायः पंच नियुक्त किया जाता था। प्रत्येक कार्य्य में सब लोग इसकी सम्मति लिया करते थे।

सन् १७३६ में जब फ्रैंकलिन को अपने रोज़गार में पड़े हुए बहुत वर्ष व्यतीत होगये और पेन्सिल्वेनियाँ में जब वह प्रथम श्रेणी का मनुष्य गिना जाने लगा तो सर्व सम्मति से वह व्यवस्थापिका सभा का कारकुन चुना गया। इस जगह का वेतन बहुत थोड़ा था और वह स्थान कुछ विशेष प्रतिष्ठा भरा भी न था। हां, इस पर नियुक्त होजाने से इतना लाभ अवश्य था कि सरकारी छपाई का काम उसको मिल सकता था। पहिले वर्ष में तो सर्व्व सम्मति से वही उस पद के लिये चुना गया। परन्तु, दूसरे वर्ष एक प्रतिष्ठित सभासद् ने अपना मत उस के चुनाव के विरुद्ध देकर एक और ही व्यक्ति को उसके उपयुक्त बतलाया।

किन्तु, बहुमत फ्रेंकलिन के लिये होने के कारण फिर भी वह स्थान उसी को मिला

फ्रेंकलिन लिखता है कि:—"इस पुरुष का मेरे मुक़ाबिले में खड़ा होना मुझको अच्छा नहीं लगा। वह शिक्षित था और साथ ही मालदार भी। उस की बुद्धि ऐसी थी कि आगे जा कर सभा में उस की बात का वज़न और भी बढ़ जाता। आख़िर को वैसा ही हुआ। उसका कृपापात्र होने के लिये मैंने कभी उस की अनुचित खुशामद नहीं की। बल्कि, एक और ही रीति का अवलम्बन किया। उसके पुस्तकालय में एक बहुमूल्य और दुर्लभ पुस्तक है ऐसा मेरे सुनने में आया। मैंने उसको एक पत्र लिखा जिस में इस पुस्तक को देखने की इच्छा प्रकट कर के उस से कुछ दिनों के लिये पढ़ने को देने की प्रार्थना की। मेरा पत्र पा कर उसने तुरन्त ही वह पुस्तक भेज दी। मैंने एक सप्ताह के पश्चात् उस को लौटा दिया और उस के साथ एक पत्र द्वारा उसकी इस कृपा का बड़ा आभार प्रदर्शन किया। इसके बाद जब हम फिर सभा में शामिल हुए तो वह मुझ से बोला (पहिले कभी न बोलता था) और वह भी बड़े आदर भाव से। मेरा प्रत्येक कार्य्य करने में वह बड़ी तत्परता दिखाने लगा। उस के बाद हम में उत्तरोत्तर बड़ी घनिष्ठता हो गई और हमारी अभिन्न मित्रता जन्म भर निभी। 'जिस मनुष्य पर तुमने उपकार किया है वह मनुष्य दूसरी बार तुम्हारा उपकार करने को अधिक तत्पर रहेगा'। ऐसा मेरा पहिले से ही दृढ़ निश्चय था जिस की सचाई का यह दूसरा उदाहरण है। वैमनष्य बना रख कर बैर शोधन का विचार करने की अपेक्षा कुछ समझदारी से उसको दूर करना अधिक लाभदायक है।

व्यवस्थापिका सभा के कारकुन की जगह पर फ्रेंकलिन १४ से अधिक वर्ष तक रहा। यह जगह मिलने के बाद दूसरे वर्ष वह

फ़िलाडेल्फ़िया के पोस्ट मास्टर की जगह पर नियुक्त हुआ। समाचार पत्र बेचने और समाचार संग्रह करने के लिये यह जगह उस के लिये बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई। इन दोनों जगहों पर रह चुकने पर फ़्रैंकलिन अन्यान्य प्रेस वालों की अपेक्षा बहुत बढ़ गया। अब तो अपनी इकट्ठी की हुई पूँजी को क़ायम रखना और जो कमाई हो उसकी यथावत व्यवस्था करने के अतिरिक्त उसको और किसी प्रकार की चिन्ता न रही।

इन दिनों मे फ़्रैंकलिन के घर की क्या दशा थी और उसने अपने स्वाध्याय के लिये क्या २ किया था इसका वर्णन आगे के प्रकरण में किया जायगा।
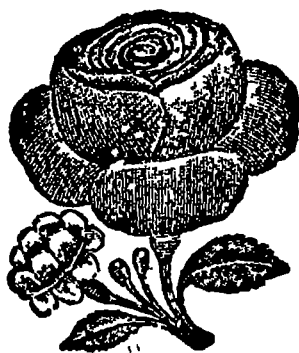
प्रकरण ग्यारह वां।

स्वाध्याय

सन् १७३३ से १७४४

पुस्तकालय में पढ़ी हुई पुस्तकें—एतिहासिक ग्रन्थों के पढने से उत्पन्न हुए विचार—धर्म्म मार्गी मंडल—सिद्धान्त—नीति निपुण होने की योजना—तेरह सद्गुण—नोटबुक का नमूना—फ्रेंकलिन का सद्गुणों का नकशा—नम्रता और व्यवस्था—प्रतिदिन करने के कार्य्यों की योजना—व्यवस्था रखने से फ्रेंकलिन को हुआ लाभ—सद्गुणी होने की कला—अभ्यास का समय—भाषाओं का ज्ञान—शतरजकी हार जीत में इटेलियन भाषा सीखने की युक्ति—प्राचीन भाषाऐं सीखने की सरल रीति—गायन का अभ्यास—उवाइट फील्ड से मित्रता—उवाइट फील्ड का भाषण और उस को सुन सकने वाले मनुष्यों की गणना—पवन चक्की—तूफ़ान की गति सम्बन्धी शोध—धूंआ न हो और लकड़ी की वचत हो जाय ऐसी सिगड़ी की शोध—फ्रेंकलिन के अवकाश के समय वनाये हुए कुछ चमत्कारिक कोष्टक।
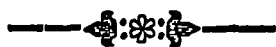
नये स्थापित हुए पुस्तकालय की पुस्तकों को फ्रेंकलिन बड़े ध्यान और मनन पूर्वक पढ़ता। ऐसा मालूम होता है कि पहिले उसने ऐतिहासिक पुस्तकों को पढ़ा था। कारण कि "पुस्तकालय में ऐतिहासिक पुस्तकों के पढ़ने से उत्पन्न हुए विचार" शीर्षक निबन्ध उसने छोटी उमर में ही लिखा था।

"संसार के बड़े २ कार्य्य जैसे लड़ाई, राजकीय उथल पुथल आदि पक्षाभिमान से होते हैं। प्रत्येक पक्ष का उद्देश अपना तात्कालिक स्वार्थ-साधन करने का होता है। भिन्न २ पक्षों के भिन्न २ उद्देशों से घोटाला हो जाता है। सारे पक्ष का लक्ष्य सामान्य भले की ओर होता है और पक्ष के प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य अपने किसी स्वार्थ विशेष की ओर होता है। पक्ष की धारणा पूरी होती है तभी उस पक्ष का प्रत्येक मनुष्य अपनी व्यक्तिगत धारणा साधने को उतारू होता है और वैसा करने से दूसरे लोग उसके सामने होने से पक्ष में उप पक्ष पड़ता है। और इस प्रकार और अधिक घोटाला हो जाता है। बाहर से चाहे जो कहे तो भी भीतर से अपने देश के कल्याण के लिये परिश्रम करने वाले बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। मुझे अच्छा लगता है कि देश देश के अच्छे और सद्गुणी मनुष्यों की नियमपूर्वक एक मंडली बनाई जाय, धार्मिक मार्ग का एकत्रित पक्ष खड़ा करने की अभी बहुत आवश्यकता है। यह चलाने को अच्छा और लाभ हो सकता है। साधारण मनुष्य साधारण नियम को जितनी एकता से मानते हैं उस की अपेक्षा ऐसे अच्छे मनुष्य उन नियमों को अधिक एकता से मानेंगे।"

ऐसा आश्चर्य्यजनक लेख फ्रैंकलिन के दफ्तर में कई वर्ष तक पड़ा रहा था। धर्म्मावलम्बियों का मण्डल खड़ा करने की अपनी योजना का उसने कई तरह से विचार कर लिया था और समय समय पर इस सम्बन्ध में उस को जो विचार सूझते उन्हे उसने काग़ज़ के टुकड़ों पर लिख रक्खे थे। परन्तु बाद को उन काग़ज़ों में से बहुत से खो गये। खड़ी करने वाली मण्डली के लिये सोचे हुए सिद्धान्त जिस काग़ज़ के टुकड़े पर लिख रखे थे वह टुकड़ा मौजूद है। किसी धर्म्मावलम्बी को बुरा न लगे ऐसे

सब धर्मों के सामान्य मत लेकर इन सिद्धान्तों की रचना की गई है:—

(१) ईश्वर एक है और वही सृष्टि को उत्पन्न करने वाला है।
(२) प्रजापालन की दीर्घ दृष्टि से ईश्वर अपनी इच्छानुसार संसार को चलाता है।
(३) आराधना प्रार्थना और उत्सव से ईश्वर की भक्ति करनी चाहिये।
(४) परन्तु, ईश्वर को सब से अधिक पसन्द तो यह भक्ति है कि प्राणी मात्र का उपकार करना।
(५) आत्मा अमर है।
(६) संसार में ईश्वर सद्गुण का बदला देगा और दुर्गुणों के लिये दण्ड देगा।

प्रारम्भ में इस मण्डली को गुप्त रखने का विचार था और जो लोग वास्तव में योग्य हों उन्ही को उसमें सम्मिलित करने का नियम रखा गया था। मण्डली का नाम "शान्ति और स्वतन्त्रता की मण्डली" रखने का विचार था। फ्रैंकलिन ने यह योजना अपने दो एक मित्रों को दिखलाई थी और उन्होंने उस को पसन्द भी किया था। परन्तु, उसको कार्य्यरूप में-परिणत किया गया हो ऐसा नहीं पाया जाता। आत्म चरित में फ्रैंकलिन लिखता है कि:—"उस समय मुझे अपने धन्धे में इतना अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता थी कि आगे के लिये उसका चलाना मैंने स्थगित रक्खा। पीछे से मुझ पर अनेक ऐसे घरेलू और राजकीय कर्तव्य आन पड़े कि इच्छा रहते हुए भी समय २ पर जब अवसर आया तो मुझे उसको स्थगित ही रखना पड़ा। इस प्रकार उसका अमल होना रह गया है। अब मैं इतना वृद्ध होगया हूँ कि मुझ में चाहिये जैसी शक्ति नहीं रही। किन्तु, अब

भी मेरी धारणा है कि यह योजना अमल में लाने जैसी है और यदि उसका अमल हुआ तो सारे नगर निवासियों की सख्या वढ़ाने में वह बहुत उपयोगी सिद्ध होती"।

इसी अर्से में फ्रैंकलिन ने स्वयम् नीति निपुण होने का विचार करके एक दूसरी योजना निश्चित की। वह आत्म चरित्र में कहता है कि—"किसी भी समय बिना कुछ अपराध किये और संगति, टेव तथा स्वाभाविक से अपराध करने को मन ललचा जाय वह न करने की मेरी इच्छा थी। अच्छा और बुरा क्या है इसको मै जानता था। अथवा जानता हूँ ऐसी मेरी धारणा थी इसमे हमेशा अच्छा—करने और बुरे से दूर रहने में कुछ हानि होगी ऐसा मुझे कभी मालूम नहीं हुआ। किन्तु, थोड़े समय में मुझे मालूम हुआ कि मेरी जैसी धारणा थी उसकी अपेक्षा अधिक कठिन काम मैंने सिर पर लिया है। इस प्रकार के अपराध में सावधान रहने की ओर मेरा ध्यान आकर्षित होता तब मै किसी दूसरे प्रकार के अपराध में फँस जाता। ज़रा सी असावधानी रहती तो पड़ी हुई टेव की तरह हो जाता। पूरी बात समझने को अक्ल कुछ काम नहीं देती। आख़िर को मैंने निश्चय किया कि पूर्णतया सदाचारी होना यह अपने लाभ की बात है। इस प्रकार का मन में हुआ विश्वास भूल करने से अपने को बचाने के लिये काफी नहीं हो सकती। हमेशा एक ही तरह की रीति से चाल चलने को अपने को सद्-गुण और प्रतिकूल टेवो को समूल नष्ट कर डालनी चाहिये और अनुकूल को स्थापित करनी चाहिये"।

फ्रैंकलिन ने अपनी इस धारणा को पूरी करने के लिये तेरह सद्गुण निश्चित किये। और एक समय एक ही सद्गुण पर लक्ष्य देकर उसमें दृढ़ हो जाने पर दूसरे को ग्रहण करने का

निश्चय किया। प्रत्येक सद्गुण कौन से गुणो के लिये काम में लाया गया है यह बताने को प्रत्येक कहावतें अथवा बोध वचन उसने पसन्द किये जो इस प्रकार हैं:—

१—मिताहार—इतना भोजन नही करना जिस से सुस्ती आजाय। और इतना पानी नहीं पीना जिस से सिर फिर जाय।

२—मौन—दूसरे को अथवा अपने को लाभ पहुँचावे उसके सिवाय अधिक नही बोलना। निरर्थक बात-चीत से दूर रहना।

३—व्यवस्था—अपनी प्रत्येक वस्तु को उसके योग्य स्थान पर रखना और अपना प्रत्येक कार्य्य नियमित समय पर करना।

४—निश्चय—अपने को जो कुछ करना आवश्यक हो उसको करने का निश्चय करना। जो कुछ करने का निश्चय कर लिया हो उसको अवश्य करना।

५—मितव्यय—दूसरों का अथवा अपना भला करने को व्यय करना। इस के अतिरिक्त व्यय न करना अर्थात् पैसे को व्यर्थ न उड़ाना।

६—उद्योग—समय को व्यर्थ न गॅवाना। कोई भी उपयोगी कार्य्य करने मे रुके रहना। व्यर्थ के कार्य्य छोड़ देना।

७—शुद्धभाव—दूसरे की हानि हो ऐसा धोखा न देना। निर्दोष और न्याय रीति से विचार करना इसी ढग से बातचीत करना।

८—न्याय—दूसरों को लाभ पहुँचाने का जो अपना कर्त्तव्य है उसको न भूलना अथवा जो नहीं करने का तेरा कर्त्तव्य है वह कर के किसी को कष्ट न देना।

९—क्षमा—सीमा के बाहर न जाना। यदि किसी ने तुम्हारी हानि की हो तो तुम्हारे मन में उचित जँचे इतना अधिक बदला नहीं लेना।

१०—स्वच्छता—शरीर, कपड़े और घर में अस्वच्छता न रहने देना।

११—शान्ति—निरर्थक विषयों में अथवा साधारण या अनिवार्य्य अकस्मात् से किसी को बुराई न लगाना।

१२—शुद्धता—हृदय को हमेशा पवित्र रखना और किसी के लिये कभी कोई कुविचार मन में न लाना।

१३—नम्रता—ईसू, ख्रीस्त और साक्रेटीज का अनुकरण करना। (ईसा मसीह और सुकरात का अनुकरण करना)

फ्रेंकलिन ने एक नोटबुक में प्रत्येक सद्गुण के लिये एक नक़शा बना कर उस पर लाल और काली स्याही से ऐसे चिह्न निश्चित कर लिये थे जिन पर से उस के प्रतिदिन के अपराधों की गणना सरलता से होजाती थी।

(अ)

फ्रेंकलिन की नोट बुक के एक पृष्ठ का नमूना।

मिताहार।

इतना नहीं खाना चाहिये जिस से सुस्ती आ जाय और इतना पानी नहीं पीना चाहिये जिससे मस्तक फिर जाय।

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मिताहार	-						
मौन	❋	❋		❋		❋	
व्यवस्था	❋	❋			❋	❋	❋
निश्चय		❋				❋	
मितव्यय		❋				❋	
उद्योग			❋				
शुद्धभाव							
न्याय							
क्षमा							
स्वच्छता							
शान्ति							
शुद्धता							
नम्रता							

इस प्रकार क्रमानुसार दूसरे सद्गुण के लिये भी पन्ने तैयार कर रखे थे। एक पूरे सप्ताह तक वह एक सद्गुण पर खास लक्ष्य रखता। दूसरे सप्ताह दूसरे सद्गुण पर और इस प्रकार क्रमानुसार सब सद्गुण पूरे करता। उसके सद्गुणों की संख्या तेरह

होने से पूरे वर्ष मे चार बार प्रत्येक सद्गुण का नम्बर आता। प्रतिदिन दिन भर के काम थाद करके रात्रि को वह उस सद्गुण का पत्रक भरता और यदि किसी सद्गुण मे कोई अपराध हो जाता—त्रुटि रह जाती, तो वह दिखाने को काली टिपकियों के चिह्न कर देता। खेत को नींदना हो, तो बांकी टेढी घास उखाड़ने से कुछ लाभ नहीं होता, बल्कि एक क्यारा लेकर उस को अच्छी तरह निरा कर पूरा कर लेने पर ही दूसरे को हाथ मे लिया जाय तो वह बराबर साफ हो जाय। इसी भांति फ्रेंकलिन की यह धारणा थी कि सब सद्गुणो को एक साथ ग्रहण नहीं किया जा सकता। लेकिन, आरम्भ में एक गुण को लिया जाय और जब वह आदत में पड़ जाय तो दूसरे को ग्रहण किया जाय। इस प्रकार तो सब सद्गुण अच्छी तरह ग्रहण किये जा सकते हैं। इस प्रकार पहले सप्ताह में मिताहार में कुछ भी त्रुटि न करने के लिये पूरी सावधानी रखी जाती। इसके अतिरिक्त दूसरे सद्गुणों मे कोई त्रुटि हो जाती तो उस पर चिह्न बना कर उसकी याददाश्त रखी जाती। परन्तु, दूसरे सद्गुणों की ओर मिताहार की भांति खास लक्ष्य नहीं रखा जाता। पहले सप्ताह में मिताहार के खाने में त्रुटि हो जाने का चिह्न न लगने पर समझ लिया जाय कि वह सद्गुण दृढ़ हो गया। दूसरे सप्ताह में दूसरे नम्बर के सद्गुण की ओर खास लक्ष्य रखा जाता। और पहले दो सद्गुणों के खाने मे त्रुटि के चिह्न न लगाने पड़ें ऐसी सावधानी रखी जाती। इस प्रकार प्रति सप्ताह क्रमानुसार अमुक सद्गुण की ओर खास ध्यान देकर सब सद्गुणों में दृढ़ होने के लिय फ्रेंकलिन ने यह योजना की। इसके अनुसार वह कुछ वर्ष तक चला। शुरू में उसका परिणाम सन्तोषजनक नही दिखाई दिया। परन्तु अन्त मे उसको लाभ हुए बिना न रहा। वह लिखता है कि:—"मेरी जैसी धारणा थी उसकी अपेक्षा अपने में अधिक

दोष देख कर मै विस्मित हो गया। परन्तु धीरे २ उनको कम होती देख कर मुझे संतोष हुआ।" तेरह सद्गुण एक समय पूरे होने के पश्चात् फिर आरम्भ करने से पहले नोट बुक की फिर जाच कर लेनी चाहिये। लेकिन, ऐसा करने की भी मगज फोड़ी न करनी पड़े इसके लिये त्रुटियों के चिह्न निकाल कर उस पुराने पन्ने से ही चलाता। इस प्रकार कुछ बार हो जाने पर उन खानों मे बहुत छेद हो गये और नोट बुक बदलने जैसी होगई। एक नोट बुक हमेशा चले ऐसा करने को हाथीदांत के पन्ने वाली एक नोट बुक में लाल स्याही से खाने खींच कर वे तेरह गुण और उसके बचन उसने लिख लिये। त्रुटियो के चिह्न वह पेन्सिल से करता और आवश्यकतानुसार उनको सरलता से मिटा देता। चिह्नों के अतिरिक्त और सब बातें हमेशा के लिये क़ायम रहती। पहिले तो उस योजना के अनुसार सात सात दिन के लिये प्रत्येक सद्गुण को नियमित रूप से निबाहता। कुछ दिन के बाद उनको वह इस रीति से देखता कि उनकी वर्ष भर में एक बार बारी आवे। फिर कुछ वर्षों में एक बार देखने लगा और अन्त मे प्रवास में होने या क़ाम मे लगे रहने की अवस्था में उसने बिलकुल देखना छोड़ दिया। फिर भी इस नोट बुक को वह हमेशा अपने पास रखता था।

आत्मचरित्र मे फ्रेंकलिन लिखता है कि ऐसा करने पर भी दो सद्गुण मैं कभी ग्रहण न कर सका। अर्थात् व्यवस्था और नम्रता। नम्रता का ऊपर का दिखावा तो मैं कभी २ कर भी लेता परन्तु, वास्तविक नम्रता मुझ में न आ सकी। मनुष्य के हृदय में अभिमान ऐसी अमिट रीति से भरा होता है कि वह सच्चा नम्र कभी हो ही नहीं सकता। कारण कि नम्र यदि हो भी जाय तो वह अपनी नम्रता का ही अभिमान रखे और इस दशा में

वह सच्चा नम्र नहीं कहा जा सकता। व्यवस्था रखने के सद्गुण को पाने के लिये किस समय क्या काम करना चाहिये इसका निश्चय कर के उसके अनुसार चलना चाहिये। प्रति दिन के चौबीस घंटे किस प्रकार व्यतीत करने इसके लिये फ्रेंकलिन ने नीचे लिखे अनुसार योजना की और यथासाध्य वह इसके अनुसार ही चलने लगा:—

योजना।

समय	घंटे	कार्य
प्रात:काल। प्रश्न—आज मैं क्या सत्कर्म्म करूँगा?	५ ६ ७	उठना, शौच, स्नानादि कृत्यों से निवृत्त होकर प्रार्थना करना। आज का कार्य्यक्रम निश्चित करना और आज के सद्गुणों का विचार कर के उन पर अभ्यास करना।
	८ ९ १० ११	कार्य्य करना
दोपहर।	१२ १	पढ़ना, हिसाब की जांच करना और भोजन करना।
पिछला पहर	२ ३ ४ ५	कार्य करना।

सन्ध्या। प्रश्न—मैंने आज कौन सा सत्कार्य्य किया है?	६ ७ ८ ९	सब वस्तुओं को यथा स्थान रखना, ब्यालू करना। गायन, मनोरञ्जन या बातचीत। सारे दिन के कार्य्यों के गुण दोष का हृदय से विवेचन।
रात्रि	१० ११ १२ १ २ ३ ४	निद्रा।

इस योजना का पालन फ्रैंकलिन बिना कुछ असुविधा के कर लेता तो भी यह योजना प्रत्येक मनुष्य को प्रत्येक अवस्था मे अनुकूल हो सके ऐसी है ऐसा नही कहा जा सकता। फ्रैंकलिन के समय मे उस के जैसी स्थिति वाले मनुष्य के लिये वह अनुकूल हो गई थी। अपनी स्थिति के योग्य हो इस प्रकार फेर-फार करके दूसरे लोग इस से लाभ लें तो निस्सन्देह उनको इससे फ़ायदा हुए बिना न रहे। फ्रैंकलिन को हुआ लाभ, ७९ वर्ष की आयु मे वह इस प्रकार प्रकट करता है:—

"यह हाल ७९ वर्ष की अवस्था मे लिखा गया है। इतनी आयु तक ईश्वर की कृपा से इस योजना के कारण मैंने हमेशा सुख भोगा है। इसी से यह बात अपने वंशजों को बतला देना मै योग्य समझता हूँ। अब मेरे अवशिष्ट जीवन में क्या २ आपत्तियां आयँगी यह ईश्वर जाने। कदाचित आपत्तियाँ आ जायँगी तो मै अभी तक भोगे हुए सुख के चिन्तवन से

ईश्वरेच्छा के अधीन होकर उस को सहन कर सकूँगा। मेरा एक लम्बे समय तक चला हुआ स्वास्थ्य और अभी तक शक्ति सम्पन्न बना हुआ शरीर मिताहार के कारण ही है। मैं छोटी आयु मे ही पैसा इकट्ठा करके अच्छी स्थिति वाला हुआ और इस प्रकार लोगो को उपयोगी ज्ञान दे सकूँ ऐसा बन गया। विद्वत्समुदाय मे मैं जो यत्किञ्चित कीर्ति-लाभ कर सका यह मेरी आलोचनात्मक और उद्योगी प्रकृति के कारण मेरे देशबन्धुओं का अपने पर विश्वास तथा मुझे मिले हुए सम्मान युक्त ओहदे मेरे शुद्ध भाव और न्याय के कारण हैं। मेरा स्वभाव शान्त और हँसमुख है। बहुत लोग मेरी संगति में रहने की इच्छा रखते हैं और छोटे से छोटा बालक भी मुझ को चाहता है इसका कारण वे सब सद्गुण है जिन्हे मैं बहुत अपूर्ण रीति से ग्रहण कर सका।

"सद् गुणी होने की कला" इस नाम की एक पुस्तक लिखने का फ्रेंकलिन का कितने ही दिन से विचार था। किन्तु, उसको उसके लिखने का अवकाश न मिला। इस पुस्तक में वह यह साबित करना चाहता था कि शास्त्र में दुराचरण करने की मनाही की गई है इसी पर से ऐसे बुरे काम करना हानिकारक है ऐसा न समझ लेना चाहिये। परन्तु, ये वास्तव मे हानि करने वाले ही हैं। इसीलिये उन के न करने की मनाही की गई है। संसार में सुखी होने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक मनुष्य को सदाचारी होना उसके बड़े लाभ की बात है।

प्रतिदिन प्रातःकाल डेढ़ घंटे के हिसाब से सप्ताह मे साढ़े दस घंटे फ्रेंकलिन पढ़ने मे निकालता। सप्ताह मे साढ़े दस घंटे नियमित रीति से पढ़ने वाला मनुष्य केवल पुस्तकें पढ़ने में ही संतोष रख कर बैठा नहीं रह सकता। सन १७३२ में फ्रेंकलिन ने।

अन्यान्य भाषाओं का अभ्यास करना शुरू किया और थोड़े ही समय मे उसने फ्रेंच, इटालियन, और स्पेनिश भाषाओं का पढ़ना सीख लिया। उसको शतरंज खेलना याद था। इस कारण वह इटेलियन भाषा बड़ी अच्छी तरह सीख गया। उसका एक मित्र भी उस के साथ इटेलियन भाषा का अभ्यास करता था। परन्तु वह फ्रैंकलिन को शतरंज खेलने में लगा कर उसके अभ्यास का बहुत समय ले लेता। कुछ समय खो देने पर फ्रैंकलिन ने यह तजवीज़ की कि खेल मे जो जीते वह हारने वाले से दण्ड के तौर पर इटेलियन भाषा के अनुवाद का पाठ लिखावे और दूसरी बार मिलते समय वह लिख कर ले आवे ऐसी शर्त करो तो मै खेलूँ वर्ना नहीं। यह बात पहिले मित्र ने स्वीकार की। खेलने में होशियार थे इस से एक दूसरे की हार जीत कर के दोनों जने इटेलियन भाषा सीख गये।

फ्रैंच, इटेलियन और स्पेनिश भाषाओं मे व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लेने पर फ्रैंकलिन की इच्छा हुई कि लैटिन भाषा का भी अभ्यास करे। लैटिन भाषा सीखने में उस को जो अनुभव हुआ वह भाषाएँ सिखाने वाले तथा सीखने वाले प्रत्येक मनुष्य के जानने योग्य है। एक दिन लैटिन भाषा में लिखा हुआ बाइबिल उस के हाथ पड़ गया। बोस्टन की व्याकरण शाला में एक वर्ष तक उसने लैटिन भाषा सीखी थी। उस समय की उसको कुछ स्मृति थी। इससे तथा तीन और प्राकृत भाषाओं का ज्ञान उसने प्राप्त किया था इस से बाइबिल को उसने बड़ी सरलता से पढ़ लिया। इस से उत्तेजित होकर उसने लैटिन भाषा का विशेष अभ्यास आरम्भ किया। उसके लेखों में लैटिन भाषा के प्रसिद्ध लेखकों के कई लेखों का अनुवाद देखने में आता है। इस से अनुमान होता है कि उसने लैटिन भाषा की भी बहुत पुस्तकें पढ़ी हैं।

फ्रेंकलिन का यह अभिप्राय था कि भाषाओं को सीखने का अच्छा क्रम यह है कि पहिले प्राकृत भाषाएं सीखनी चाहियें और फिर उससे मिलती जुलती प्राचीन भाषाएं। आरम्भ में प्राचीन भाषा का सीखना कठिन पड़ता है। इतना ही नहीं बल्कि बहुत से लोग थोड़े ही समय में उससे घबरा कर अपना अभ्यास छोड़ देते हैं। प्राकृत का अभ्यास पहिले कर लेने से प्राचीन का करने में बड़ी सहायता मिलती है।

फ्रेंकलिन को गान विद्या का भी बहुत अच्छा अभ्यास था। वह सब प्रकार के बाजे बजा सकता था और गाना भी अच्छा गा सकता था। सन् १७३९ में प्रख्यात उपदेशक ह्वाइटफील्ड फिलाडेल्फिया में आया। इसकी भाषण शैली पर दूसरे लोगों की भांति फ्रेंकलिन भी मुग्ध हो गया। दोनों के बीच में ऐसी मित्रता हो गई कि वह अन्त समय तक बनी रही। ह्वाइटफील्ड के सहवास से कुछ शिक्षाप्रद बातें फ्रेंकलिन ने आत्मचरित में लिखी हैं।

एक बात ऐसी है कि ज्योरजिया शहर में अनाथ बालकों के लिये एक आश्रम बनाने के लिये फ्रेंकलिन पर अपना विचार प्रकट करके ह्वाइटफील्ड ने उसकी सम्मति मांगी। किन्तु, फ्रेंकलिन ने वैसा आश्रम ज्योरजिया कि अपेक्षा फ़िलाडेल्फ़िया में बनाना अधिक उपयुक्त समझ कर वहीं के लिये अपनी सम्मति दी, उसको ह्वाइटफील्ड ने पसन्द नहीं किया। फ्रेंकलिन ने देखा कि ह्वाइटफील्ड उसकी सम्मति के अनुसार कार्य्य नहीं करता है तो उसने रुपये पैसे की सहायता देने से इन्कार कर दिया। इसके पश्चात् शीघ्र ही ह्वाइटफील्ड ने एक व्याख्यान दिया। संयोग से ऐसा हुआ कि उसको सुनने के लिये

फ्रैंकलिन भी चला गया। व्याख्यान समाप्त होने के पश्चात् कुछ चन्दा करने का विचार था। फ्रैंकलिन के पास उस समय, एक मुट्ठी भर तांवे के पैसे, तीन चार रुपये के डालर और पांच सोने के सिक्के थे। परन्तु उसने एक कौड़ी भी न देने का निश्चय कर लिया। व्याख्यान थोड़ा सा हुआ ही था कि फ्रैंकलिन का मन पिघला और उसकी इच्छा हुई कि तांवे के पैसे सब दे डाले। व्याख्यान कुछ और आगे हुआ कि ऐसे उत्तम व्याख्यान मे केवल ताँवा देना ठीक न समझ कर उसने कुछ रुपये देने का निश्चय किया और व्याख्यान की समाप्ति पर तो फ्रैंकलिन इतना प्रसन्न हो गया कि उसने अपना सब रुपया पैसा दे डाला।

ह्वाइटफील्ड के व्याख्यान की चार पुस्तकें फ्रैंकलिन ने सन् १७४० में छाप कर प्रकाशित कीं। इसके सम्बन्ध में फ्रैंकलिन की छपाई हुई इस विज्ञप्ति से मालूम होता है कि वह रोजगार करने में बड़ा दक्ष था:—"पुस्तक की प्रतियां छापी हैं उससे अधिक ग्राहकों की संख्या पहिले से हो गई है। जिन ग्राहकों ने इसका मूल्य पहिले दे दिया है अथवा जो शीघ्र ही भेज देंगे उन्ही को पुस्तक मिल सकेगी।"

ह्वाइटफील्ड की आवाज़ ऐसी बुलन्द थी कि २५-३० हज़ार मनुष्यों के समूह में उसका व्याख्यान प्रत्येक को अच्छी तरह सुनाई देता था। पहिले यह बात फ्रैंकलिन ने भी सुनी थी। किन्तु, इसकी सत्यता में उसको सन्देह था। अतः यह जानने को कि वह कहां तक सत्य है उसने एक समय ऐसा किया कि दूर से दूर जहां तक ह्वाइटफील्ड का व्याख्यान सुना जा सके वहाँ से व्याख्यानदाता के खड़े रहने का फासला उसने नाप लिया और फिर उसका क्षेत्रफल निकाल दो फुट पर एक मनुष्य के हिसाब से गिन कर देखा तो ३०००० मनुष्य हुए!

इस पर से उसको विश्वास हो गया कि मेरी सुनी हुई बात सच्ची है। उस समय किसी दूसरे सम्प्रदाय का उपदेशक फिलाडेल्फिया में जाता तो उसको व्याख्यान देने के लिये स्थान की व्यवस्था न होती थी। ह्वाइटफील्ड अपना व्याख्यान खुली जगह में दिया करता था। परन्तु खुली हवा में धूप अथवा सरदी के कारण बड़ी असुविधा होती थी। इस कारण वहाँ के निवासियों ने एक छायादार बड़ा हाल बनाने का निश्चय करके उसके लिये शहर में से रुपया इकट्ठा किया और इस प्रकार उन्होंने १०० फुट लम्बा और ७० फुट चौड़ा एक हाल बनवाया। फ्रेंकलिन इस हाल का एक ट्रस्टी था।

गहरी दृष्टि से प्रकृति का निरीक्षण करने की फ्रेंकलिन की शुरू से ही टेव थी। जो दृश्य हमें बिल्कुल साधारण मालूम होते हैं उनमें से भी उसने कुछ गहरी बातें ढूंढ निकालीं। उसके पास कोई यन्त्र न था और न यह उसका कोई खास विषय ही था। तो भी अपनी स्वाभाविक रुचि और गहरी दृष्टि से उसने ऐसे २ कार्य किये जिनको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता भी न कर सके। अमेरिका की वनस्पति देखने को स्वीडन से आये हुए एक शिक्षा गुरु काम का फ्रेंकलिन से सन् १७४८ में परिचय हुआ। चींटियों के सम्बन्ध में की हुई फ्रेंकनिल की खोज के विषय में शिक्षा गुरु इस प्रकार लिखते हैं:—

"फ्रेंकलिन का ऐसा खयाल था" कि चींटियाँ किसी न किसी रीति से एक दूसरे पर अपने विचार प्रकट करती है। तभी तो जब एक चींटी को कोई मीठी वस्तु मिल जाती है तो वह शीघ्र ही अपने दर की ओर दौड़ती है और वहाँ से अपने साथ झुंड के झुंड को बाहर लाती है। फिर वे सब उस मीठी वस्तु के पास जाती हैं और धीरे २ छोटे छोटे टुकड़ों के रूप में कर के सारी

वस्तु को ले जाती हैं। यदि कभी कोई चींटी किसी मरी हुई मक्खी को देखती है तो वह अपने दर की ओर दौड़ जाती है और थोड़ी देर के बाद बहुत सी चींटियाँ बाहर आकर उसको खींच ले जाती हैं।

एक समय फ्रेंकलिन ने एक मिट्टी के वर्तन मे गुड़ रख कर उसको एक कोठरी में धर दिया।। थोड़ी देर के बाद उसने देखा कि कुछ चींटियां उस में पहुंची और गुड़ खाने लगीं। उसने उस बर्तन को खूब हिलाया, जिससे उसमें की सब चीटिया निकल गईं। फिर उस हाडी को उसने एक रस्सी से बांध कर छत में लटका दिया। संयोग से उसमे एक चींटी रह गई थी जिसने जब तक उसका पेट न भर गया खूब गुड़ खाया और जब खा चुकी तो हाडी मे भीतर बाहर चक्कर लगाने लगी। किन्तु, उस का रास्ता न मिला। कुछ देर इधर उधर हाडी पर फिर कर वह उस रस्सी के सहारे छत पर गई। वहां दीवार पर हो कर नीचे उतरी और फिर दर में गई। थोड़ी देर के बाद दर में से चींटियो की एक टोली निकली और उसी मार्ग से दीवार के सहारे छत तक जाकर हांडी में पहुंचीं और गुड़ खाने लगीं। जब तक उसमें गुड रहा, खाती रहीं और उन का नीचे आना जाना बराबर बना रहा।

एक समय फ्रेंकलिन ने अपनी रसोई की दीवार में की एक छोटी सी खिड़की में जस्त के पतरे की छोटी सी पवनचक्की बना कर लगाई और उसके द्वारा भोजन बनाने में सहायता लेने का विचार किया। इस चक्की को बनाने में उसने केवल अपनी कारीगरी बताई हो सो ही नहीं। बल्कि, हवा की अड़चन और बाद-बान की यथावत् व्यवस्था के लिये कुछ आवश्यक उपाय भी उसने निकाले।

सन् १७४३ में फ्रैंकलिन ने तूफ़ान की गति के सम्बन्ध में 'एक बड़ी खोज की। उस वर्ष एक दिन रात्रि के समय ९ बजे चन्द्र ग्रहण होने वाला था। उसको देखने के लिये वह बड़ी उत्सुकता से बैठा। परन्तु, ग्रहण के समय से पहिले आँधी और वर्षा का ऐसा तूफ़ान हुआ जो सारी रात और दूसरे दिन भर होता रहा इससे कुछ दिखाई न दिया। यह तूफ़ान बहुत बड़ा था और उस का थोड़ा थोड़ा प्रभाव सभी ओर हुआ था। फ्रैंकलिन को बोस्टन से लिखे हुए जो पत्र मिले उनमें ग्रहण और तूफ़ान दोनों का वर्णन था। इन पत्रों से यह जाना गया कि वहां ग्रहण पूरा हो चुकने पर तूफ़ान हुआ है। फ्रैंकलिन को लिखा पढ़ी से मालूम हुआ कि बोस्टन में ग्रहण हो चुकने के बाद एक घण्टे तक तूफ़ान हुआ था। इस पर से वह एक ऐसी आश्चर्य्यजनक खोज कर सका कि अटलांटिक महासागर के किनारे पर होने वाले ईशानकोण की हवा के झोंके और तूफ़ान की गति पीछे होती है अर्थात् उनकी गति नैऋत्यदिशा का ओर से ईशान दिशा की ओर होती है। और जैसे २ आगे बढ़ती है वैसे २ कम होती जाती है। इसका खुलासा फ्रैंकलिन के शब्दों में नीचे लिखे अनुसार है:—

"एक ऐसा मोटा प्रदेश लो कि जहां बहुत दिन से सूर्य्य की गर्मी के कारण तप कर हवा बहुत हल्की हो गई हो। तथा ईशान्यदिशा की ओर का पेन्सिलवेनियाँ, न्यू इङ्गलैण्ड, नोवास्कोशिआ और न्यू फाउण्ड लैण्ड के किसी ऐसे प्रदेश को लो कि जो उसी समय बादलों से ढक गया हो और जहां हवा भारी और ठण्डी हो चुकी हो। हल्की हवा ऊँची चढ़ेगी और उसके रिक्त स्थान की पूर्त्ति करने को उसके पास की हवा आ जायगी। इस ठोस हवा के निकट की हवा उस खाली जगह

जायगी और इस प्रकार आगे चलती रहेगी। इसी प्रकार रसोई के चूल्हे में अग्नि हो तो दरवाजे और चूल्हे पर के धुंए के बीच में हवा का प्रवाह चलेगा। परन्तु हवा के प्रवाह का प्रारम्भ तो धुंए के आगे ही होगा। कारण कि वहां की हवा अग्नि के कारण हल्की होकर ऊँची चढ़ेगी और उसकी खाली जगह की पूर्ति करने को उससे लगी हुई ठोस हवा दौड़ जायगी। और फिर उसके पास की ठोस हवा आगे चलेगी। इसी प्रकार नल मे पानी भरा हुआ हो और उसके मुंह पर डाट लगा रखा हो तो शान्त हवा की तरह पानी भी शान्त रहेगा। परंतु यदि डाट खोला जाय तो उसके पास का पानी पहिले चलेगा और उसकी जगह उसके नीचे का पानी आयगा।"

इसी समय फ्रेंकलिन ने अपनी कल्पना-शक्ति से एक नई तरह की सिगड़ी बनाई जो इस समय भी उसके नाम से पहचानी जाती है। यह सिगड़ी ऐसी उपयोगी थी कि अमेरिका में उसका २-३ युग तक घर घर में उपयोग हुआ। अब भी ग्रामीण लोग इसी सिगड़ी को काम मे लेते हैं। पुराने ढग की सिगडी में लकड़ियें वहुत जलती थीं और धुआ भी बहुत होता था। उस समय अमेरिका में कोयले की खानों की खोज नहीं हुई थी। शहरों की संख्या बढ़ती जाती थी इससे लकड़ियो की कमी होती जाती थी। इन कारणों से फ्रेंकलिन को एक ऐसी सिगड़ी की आवश्यकता अनुभव हुई जिसमें लकड़ियों का वचाव हो और धुआ भी अधिक न फैले। अपनी वनाई हुई सिगड़ी की खूबियां लोगों को मालूम हों इसके लिये फ्रेंकलिन ने एक पुस्तक लिखी और तापने की कौनसी रीति उत्तम है और वह उस नई सिगड़ी से किस दर्जे तक सध सकती इस वात का उसमे सविस्तर विवेचन किया। यह खोज करने में उसको लाभ की कुछ इच्छा न

थी। उसके मित्र राबर्ट ग्रेस के यहाँ लोहे का कारख़ाना था इसलिये उसने अपनी सिगड़ी का एक नमूना उसको मुफ्त भेंट किया और ग्रेस ने उसके द्वारा इस ढंग की सिगड़िये बना बना कर बहुत रुपया पैदा किया। सारा परगना इन नये ढंग की सिगड़ियों को देख कर इतना प्रसन्न हुआ कि उस ढग की सिगड़ियां बनाने का अधिकार फ्रेंकलिन को मिल जाय, इसके लिए सब ने अपनी इच्छा प्रकट की। उनकी यह भी इच्छा थी कि उसको एक सनद दी जाय। लेकिन, फ्रेंकलिन ने वह लेने से इन्कार कर दिया। उसका मत यह था कि दूसरों की खोज से अपन बहुत लाभ उठाते हैं अतः अपनी किसी खोज से उनको बदला देने का मौक़ा मिले, तो हमे निःस्वार्थ भाव से—प्रसन्न होकर अपनी खोज उन्हे दे देनी चाहिए।

खोज की सनद न लेने की भाँति सरकारी नौकरों को वेतन मिलने के विषय में भी फ्रेंकलिन के अच्छे विचार थे। वह ऐसा कहता था कि जो व्यक्ति अपने देश की कुछ भी सेवा कर सके वह उसको मुफ्त में करनी चाहिये। धन्धे रोज़गार में पैसा पैदा कर के जो निश्चिन्त हो गये हों उन को निःस्वार्थ भाव से देश सेवा करनी चाहिये और उसको सम्मान के सिवाय और कुछ पुरस्कार नहीं मिलना चाहिये।

राज्य सभा का अधिवेशन प्रति दिन होता तब समय बिताने के लिये फ्रेंकलिन ने भी भिन्न २ प्रकार के "जादू के कोठे" बनाने शुरू किये। उसके बनाये हुए उन कोठो (चक्रों) में से एक यह है:—

५२	६१	४	१३	२०	२९	३६	४५
१४	३	६२	५१	४६	३५	३०	१९
५३	६०	५	१२	२१	२८	३७	४४
११	६	५९	५४	४३	३८	२७	२२
५५	५८	७	१०	२३	२६	३९	४२
९	८	५७	५६	४१	४०	२५	२४
५०	६३	२	१५	१८	३१	३४	४७
१६	१	६४	४९	४८	३३	३२	१७

इस कोठे की आश्चर्य्य जनक खूबियों का वर्णन फ्रेंकलिन ने किया है। आड़ी या खड़ी किसी भी पूरी पंक्ति के अङ्कों का योग २६० होता है। और आधी का २६० का आधा। कर्ण रेखा की भांति ऊंचे चढ़ कर या नीचे उतर कर आठ अङ्कों की टेढ़ी पंक्ति का योग भी २६० ही होता है। उदाहरण के तौर पर १६ से १० तक ऊँचे चढ़ने में और २३ से १७ तक नीचे उतरने में जो टेढ़ी लकीर होती है उसका योग २६० होता है। और इसी प्रकार इस लकीर के समानान्तर दूसरी टेढ़ी लकीरो का योग भी २६० होता है। ५२ से ५४ तक नीचे उरते और ४३ से ऊंचे चढ़ कर ४५ तक जाने में जो आठ अङ्कों की टेढ़ी लकीर बनती है उसका और उसके समानान्तर दूसरी टेढ़ी लकीरों का योग भी २६० होता है। ४५ से ४३ तक बायें हाथ की ओर नीचे उतरते और २३ से १७ तक दाहिने हाथ की ओर ऊँचे चढ़ते जो आठ अङ्कों की टेढ़ी लकीर होती है उसका और उसके समानान्तर

दूसरी टेढ़ी लकीरों का योग भी २६० होता है। और ५२ से ५४ तक दाहिने हाथ की ओर नीचे उतरते तथा १० से १६ तक बायें हाथ की ओर जो टेढ़ी लकीर होती है उसका तथा उस के समानान्तर दूसरी लकीरों का योग २६० होता है। इसी प्रकार ५३ से ४ तक ऊँचे चढ़ते तीन अङ्क और २९ से ४४ तक नीचे उतरते तीन अङ्क तथा दो कोने पर के २ अङ्क मिल कर आठ अङ्कों का योग २६० होता है। १४ से ६१ तक ऊँचे चढ़ते तथा ३६ से १८ तक नीचे आते २ अङ्क मिल कर चार अङ्क और उसके जैसे ही नीचे के चार अङ्क; इस प्रकार ५० और १ तथा ३२ और ४७ इन आठ का योग २६० होता है। चारों कोने के चारों अङ्को और बीच के चार अङ्कों का योग २६० होता है।

इस जादू के कोठे में इसके अतिरिक्त पाँच और अजीब चमत्कार होना फ्रैंकलिन लिखता है जिनको उसने प्रकट नहीं किया। परन्तु वह कहता है कि हो सके तो चतुर वाचक ही उनको इसमें से ढूंढ निकालें। इसकी अपेक्षा और भी अधिक चमत्कार भरा एक कोष्टक फ्रैंकलिन ने फिर बनाया था। जिस की प्रत्येक लकीर में १६–१६ आँकड़े हैं, और उसमें ऊपर के कोठे की खूबियों के अतिरिक्त (अन्तर इतना ही है कि इस कोठे में योग २०५६ होता है) विशेषता यह है कि एक कागज़ के टुकड़े में इस कोठे के १६ खाने दिखाई दें ऐसे छेद करके चाहे जिन १६ खानों पर इस काग़ज़ को रखिये तो उसका योग २०५६ होगा।

फ्रैंकलिन ने इस कोठे को एक दिन सन्ध्या के समय बैठ कर थोड़ी सी देर में बनाया था। मि० लोगन इसको देख कर बड़े आश्चर्यान्वित हुए थे। पिटर कोलिन्सन को लिखे हुए एक

पत्र में वे लिखते हैं कि:—"अपना बेंजामिन फ्रैंकलिन वास्तव में एक अद्भुत पुरुष है। इसकी बुद्धि बड़ी तेज है और इस के साथ २ नम्रता की तो वह मानों साक्षात मूर्ति है। वह अपनी राज्य मण्डली का कारकुन है। इस स्थान पर बिना काम के आलसी की भाँति बैठे रहने का समय आता है तब वह जादू के बड़े आश्चर्यजनक कोष्टक बनाता है।"

प्रकरण १२ वां

लोक हितैषी नागरिक

सन् १७४३ से १७४६

अच्छे आदमी को सफलता मिलने के फल अच्छे ही होते हैं—लोकोपयोगी कार्य्यों में फ्रेंकलिन अग्रगण्य—नगर रक्षकों का सुधार—अग्नि शान्त करने वाली मण्डली की योजना—अमेरिकन फिलासोफिकल सभा की स्थापना—उसका उद्देश्य—सभा अधिक समय तक न चली—युद्ध का भय—फिलाडेल्फ़िया के बचाव की तय्यारी करने को फ्रेंकलिन की की हुई सूचना—फ्रेंकलिन के लिखे हुए ग्रन्थों का प्रभाव—रक्षक मण्डली की स्थापना—फ्रेंकलिन का कर्नल की भाति चुनाव—राज्य मण्डली के कारकुन की जगह का त्याग पत्र देने के लिये फ्रेंकलिन को दी हुई एक मनुष्य की सलाह—राज्य मण्डली के कारकुन की जगह फ्रेंकलिन को फिर मिली—प्रतिष्ठा बढ़ी—कुटुम्ब में वृद्धि—पुत्र विलियम्—फ्रेंकलिन के माता पिता—पिता की मृत्यु—"बोस्टन न्यूज लेटर" में जोशिया फ्रेंकलिन की मृत्यु की याददाश्त।
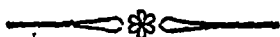
उत्तम मनुष्य अपने धंधें रोजगार में सफलता प्राप्त करे उसके परिणाम अच्छे ही होते हैं। वह हमेशा आनन्द में रहता है, स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करता है और नम्र हो जाता है। जिस मनुष्य को अपने बाप दादों का कमाया हुआ मुफ्त का

पैसा हाथ लग जाता है वह कोई लोकोपयोगी कार्य्य कर सकेगा या नहीं यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। ऐसा मनुष्य आगे चल कर अच्छा निकलेगा इसके लिये उसमें असाधारण गुण और अच्छी बुद्धि होनी चाहिये। साधारण-तया यह होता है कि धनवानों के लड़के मनुष्य जाति की स्वाभाविक निर्वलताओं की शरण हो जाते हैं और उपयोगी नागरिक नहीं बन पाते। परन्तु, जिस मनुष्य ने अपने स्वतः परिश्रम, और उद्योग से धीरे २ सुख के दिन देखे हों उसमें अपने जाति भाइयों की सेवा करने के भाव अपने आप उदय हो जाते हैं।

फ्रैंकलिन अपने धंधे में उन्नति कर गया था। उस का "गजट" सारे देश में प्रथम श्रेणी का पत्र हो चला था। "ग़रीब रिचर्ड" का पञ्चाङ्ग प्रति वर्ष निकलता और लोगों को मनोरञ्जन के साथ साथ शिक्षा भी देता। इस प्रकार होते२ उसका इतना प्रचार होगया कि प्रति वर्ष फ्रैंकलिन को खूब लाभ होने लगा। अन्यान्य देशों के ग्राहकों के पास नये वर्ष के आरम्भ में ही उसके अङ्क पहुंच सकें, इस प्रकार भेजने के लिये उसको अक्टूबर मास में ही पञ्चाङ्ग छाप कर तयार कर लेना पड़ता। उसका रोज़गार जैसे २ उन्नत होता गया वैसे २ लोगों में उसकी प्रतिष्ठा भी बढ़ती गई। लोकोपयोगी कार्य्यों में फ्रैंकलिन सब से अग्रगण्य रहता था। उसने सब से पहिले नगर रक्षकों को सुधारने का प्रयत्न किया। उस समय नगर रक्षा की प्रथा कुछ और हो ढंग की थी। रक्षा करने तथा गश्त फिरने जाने की रीति ऐसी थी कि शहर के भिन्न २ भागों के पुलिस कर्म्मचारी अपने २ मुहल्लों में से कुछ आदमियों को प्रतिदिन अपने साथ ले लेते और रात्रि को फिरने जाते। जो लोग फिरना पसन्द न करते उन्हें प्रति वर्ष छः शिलिंग पुलिस

के सिपाहियों को देना पड़ता। इस का कारण यह था कि इस प्रकार इकट्ठे हुए रुपये से और २ लोगों को वेतन पर रख कर पुलिस उन को अपने साथ रखती। परन्तु, वास्तव में इस रुपये का उपयोग कुछ और ही ढंग से होता था। पुलिस ही इस रुपये को हजम कर जाती थी। पुलिस वाले अपने साथ ऐसे निकम्मे और व्यसनी मनुष्यों को रखते थे कि भले आदमी उनके साथ खड़े रहना भी पसन्द न करें। इस कारण छः शिलिंग देकर उन से पृथक् रहना ही वे अच्छा समझते थे। गश्त करना छोड़ कर पुलिस वाले बहुत करके शराब पीने में ही रात का समय पूरा कर देते। इस बुरे ढंग का सुधार करने को फ्रेंकलिन ने प्रयत्न किया। पहिले तो जण्टो मण्डली में उसने इस विषय पर एक निबन्ध पढ़ा। जिस में सुधार करने की बातें बतलाईं। जण्टो और उसकी उपमण्डली में इस विषय की चर्चा चलाई और पीछे से अपने पत्र में एक लेख भी लिखा। अपनी धारणा को सफल करने के लिये उसको बहुत परिश्रम करना पड़ा। अन्त मे वह चौकीदारी की बुरी पद्धति में सुधार करके ही शान्त हुआ। इसी प्रकार उसने फिलाडेल्फिया में अग्नि बुझाने वाले बम्बे वालों की स्थापना की। उस समय वहां आग बुझाने का कोई प्रबन्ध न था। और मकान लकड़ी के होने के कारण प्रायः आग लगती ही रहती थी। इसलिये फ्रेंकलिन को इसकी बड़ी चिन्ता थी। जण्टो की सहायता से फ्रेंकलिन ने फिलाडेल्फिया में पहिले पहल अग्नि शान्त करने वाली मण्डली की योजना की। ५० वर्ष तक वह स्वयं इस मण्डली का सभासद् रहा। मण्डली का नियम ऐसा था कि प्रत्येक सभासद् को चमड़े के डोल, मजबूत टोकरियें तथा अग्नि बुझाने का और २ सामान ले जाने की गाड़ियें तयार रखना और आवश्यकता होने पर

उन्हे यथास्थान उपस्थित करना। मण्डली के सभासद् महीने में एक बार एकत्रित होते और अग्नि शान्त करने के सम्बन्ध में नये उत्पन्न हुए विचारों को प्रकट कर उन की चर्चा करते। जो सभासद् उपस्थित न होते उन से दण्ड स्वरूप कुछ लिया जाता। होते २ दण्ड की रक़म इतनी अधिक हो गई कि उससे बहुत बड़ी सख्या में बम्बे, बॉस और निसरनियें ख़रीद करली गई।

सन् १७४५ के मई मास में फ्रेंकलिन ने "अमेरिकन फिलासोफिकल सोसाइटी" नामक एक तत्त्वज्ञान शोधक मण्डली स्थापित करने की योजना की। एक विज्ञापन पत्र छाप कर उसने उसे फ़िलाडेल्फ़िया न्यूयार्क और दूसरे शहरों के विद्वत्समुदाय मे वितरित किया। जिस में विज्ञप्ति थी कि एक मण्डली स्थपित करके नये २ विषयों पर बात चीत तथा पत्र व्यवहार करके ज्ञान प्रसार करना, नये खोजे हुए ग्रह, वनस्पति और वृक्ष तथा उन के गुण और उपयोग, उन का प्रचार करने की रीति, वनस्पति रस का सुधार, रोग मिटाने के नये २ इलाज, खानें, खनिज पदार्थ गणित शास्त्र की किसी भी शाखा में नवीन खोज, रसायन शास्त्र मे नवीन खोज, परिश्रम की बचत हो ऐसी यांत्रिक युक्तियाँ, व्यापार रोज़गार, उद्योग और हुनर की नई २ बातें, सामुद्रिक किनारे के किसी स्थान विशेष की नाप, नक़्शे और परिचयपत्र, भूगोल सम्बन्धी खोज, भूमि का गुण और उसकी उर्वरा शक्ति, जानवरों का सुधार, कृषि, बाग और जगलों का सुधार, तत्त्वज्ञान सम्बन्धी नये २ विचार जिन से मनुष्य जाति का पदार्थ ज्ञान बढ़े और सुख की वृद्धि हो।

विज्ञापन पत्र के अन्तिम भाग में फ्रेंकलिन ने इस प्रकार लिखा:—"इस विज्ञापन को लिखने वाला बेंजामिन फ्रेंकलिन, दूसरा अधिक योग्य मंत्री मिले तब तक सभा के मन्त्री की भाँति काम करने को प्रसन्न है।" अस्तु।

मण्डली स्थापित हुई और कुछ वर्ष तक चली। तो भी, इस प्रकार की मण्डली में उत्साह से भाग ले सकें ऐसे मनुष्यों की संख्या उस समय बहुत थोड़ी होने से उसको अधिक सफलता नहीं मिली, और न वह स्थाई रूप से अधिक समय तक चल ही सकी। सन् १७४० से सन् १७४८ तक सारा यूरोप-खण्ड युद्ध में लगा हुआ था। अमेरिकन प्रदेशो को भय था कि लड़ाई बढ़ी नहीं कि वह अपने असली स्थान से उस किनारे तक आन पहुँचेगी। इससे वे क़िले बांध कर सेना, नौका और बचाव के दूसरे साधन जुटाने में लग रहे थे। सन् १७४४ मे तो भय रखने का कोई ख़ास कारण नहीं मालूम हुआ लेकिन उसके पश्चात् सन् १७४८ में एई लाशापेल की संधि हुई तब सबलोग बड़ी घबराहट में पड़ गये। और आक्रमण करने तथा बचाव करने को सब तय्यारियाँ करने की चिन्ता करने लगे। केवल पेन्सिल्वेनियाँ ही प्रयत्न रहित सा बैठा था। मानो उसे इसका भय न हो। डिलावर के किनारे पर एक भी क़िला, मोरचा या तोप न थी। और शहर ऐसे अरक्षित स्थान पर था कि एक छोटा सा जहाज ही उस पर चढ़ाई करके उसे लूट ले।

सन् १७४६ में फ्रेंकलिन को बोस्टन जाना पड़ा। उस समय उसने देखा कि वहां के निवासी लड़ाई की सामग्री इकट्ठी करने में लगे हुए हैं। बोस्टन वालों का साहस देखकर फ्रेंकलिन को भी वीरता चढ़ी और फ़िलाडेल्फिया की रक्षा के लिये उसको बड़ी चिन्ता हो गई। पीछे घर पर आकर उसने इस विषय की चर्चा चलाई। उस समय परगने के मालिक जॉन और टामसपेन अपने पिता की भाँति क्वेकर पंथ के न थे। हाकिम भी क्वेकर न था। परन्तु, राज्य सभा में क्वेकर पंथ का ऐसा प्राबल्य था, कि बचाव के साधन जुटाने को रुपये खर्च करने की मंजूरी न

मिलती थीं*। जब फ्रैंकलिन ने देखा कि राज्य सभा के सभासदों पर कुछ प्रभाव न हुआ, तो उसने वहाँ के निवासियों में से कुछ को इकट्ठा करके एक लश्कर बनाया। और उनके सहयोग से नगर रक्षा का विचार किया! "प्लेनट्रूथ" अर्थात् "स्पष्ट और सच्ची बात" इस नाम की एक बाईस पृष्ठ की पुस्तक लिख कर उसने लोगों में बाटी। इस पुस्तक की बातें ऐसी खूबी और युक्ति से लिखी गई थीं कि किसी भी मनुष्य के हृदय पर (फिर चाहे वह कैसा ही क्यों न हो) उसका प्रभाव पड़े बिना न रह सके। अंग्रेज़ बालक की भाँति उसके स्वाभिमान की लगन और पेन्सिल्वेनिया के निवासी की भाँति उसके स्वार्थ की लगन पर अच्छा प्रभाव हो ऐसा वर्णन फ्रैंकलिन ने उक्त पुस्तक में किया है। और दूसरे प्रदेश वालों ने जो किया था, उसे देख कर उसका उदाहरण लेने को उसने फ़िलाडेल्फ़िया के निवासियों से प्रेरणा की है। क्वेकर पंथ वालों के समाधान के लिये उसने बाइबल का आधार लेकर ऐसा साबित किया कि देश की रक्षा के लिये लड़ना कोई पाप नहीं है। फ़िलाडेल्फ़िया जैसे मालदार शहर को रक्षा विहीन देख कर बैरी लोग आक्रमण करदें, यह कैसे सम्भव है? यह बात फ्रैंकलिन ने उसमें विस्तार से दिखाई है। विपक्षी लोग अपने जहाज़ को जल में न फिरने दें तो सारे परगने के व्यापार की कितनी अधिक हानि हो सकती है, इस ओर उसने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। भिन्न २ प्रतिष्ठित पुरुष, गृहस्थ और क्वेकर व्यापारी आदि पर प्रभाव डालने को जितनी दलीलें मिल सकीं उन सबका फ्रैंकलिन ने इस पुस्तक में बड़े अच्छे ढंग से वर्णन किया है। उपरोक्त बातों का कुछ प्रभाव न हो ऐसे कदाचित कोई मनुष्य रह जायँ तो उनके लिये पुस्तक के

---

* क्वेकर पंथ वाले लड़ाई करना पाप समझते हैं।

अन्तिम भाग में युद्ध के परिणाम का ऐसे अच्छे ढंग से विवेचन किया कि उन पर भी उसका प्रभाव हुए बिना न रहे। पुस्तक का कुछ अंश नीचे दिया जाता है:—

"युद्ध का नाम सुनते ही सब के होश उड़ जायँगे। कोई किसी की सहायता के लिये आयगा, ऐसी आशा न होने से सब लोग भागने लगेंगे। जो कुछ माल अपने घर में हो उससे अधिक बतलाने को बैरी लोग दुःख देंगे, इस भय से सब मालदार आदमी भाग जायँगे। और बाल बच्चे वाले जो लोग अपना जीवन साधारण स्थिति में व्यतीत कर रहे हैं, हम से आकर यह कहेंगे कि हमारी रक्षा करो। उधर भागने वाले—मालदार लोग अपना माल असबाब ले जाने में जल्दी और गड़बड़ करेंगे, विलाप करेंगे और रोयँगे। इससे बड़ी अव्यवस्था और गड़बड़ी मच जायगी। बैरी लोग पहिले नगर को घेरेंगे और लूट मार कर लेने पर बहुत करके उसे जला देंगे। इस पर भी यदि वे पहिले सूचना देकर युद्ध करने को आये तब तो फिर भी ठीक है। किन्तु, यदि बिना सूचित किये कहीं रात्रि के समय आ गये तो हमारी क्या दशा होगी, इसके विचार की परम आवश्यकता है। तुम्हें घर में घुसे रहना पड़ेगा, और बैरी लोग जो कुछ करेंगे वह चुपचाप सहन करना होगा। मैंने तो अपने कर्त्तव्य के अनुसार तुम्हे सावधान कर दिया है, अब तुम अपना हानि लाभ स्वयं देख कर अपना कर्त्तव्य निश्चित कर सकते हो।"

इस पुस्तक से फ्रेंकलिन की सोची हुई आशा पूर्ण हुई। पुस्तक प्रकाशित हो जाने पर उसने कुछ दिन के पश्चात् एक सार्वजनिक सभा की। उस मे फ्रेंकलिन ने बड़ी चतुराई से एक प्रभावोत्पादक भाषण दिया। और उसी समय अपना २ नाम लिखवा कर रक्षक-मण्डली स्थापित करने के लिये सबसे आग्रह

पूर्वक निवेदन किया। शीघ्र ही १२०० मनुष्यों ने अपने नाम लिखवाये। थोड़े ही दिनों में उनकी संख्या १०००० होगई। और कुछ अधिक समय न होने पाया कि इतने ही में क्वेकर पंथ के लग भग सभी लोग उसमें प्रविष्ट होगये। हथियार वाले भी आ गये और क़वायद सीखने लगे। आवश्यकता हो ऐसे स्थान पर जा सकने वाला अब उनका एक ख़ासा लश्कर तय्यार हो गया। फिलाडेल्फ़िया की मण्डलियें भी एकत्रित हुईं और इस प्रकार एक बड़ी पल्टन बन गई जिसने फ्रेंकलिन को अपने चुनाव से उसका कर्नल बना दिया। फ्रेंकलिन कहता है कि:—"मैं अपने को इस पद के योग्य न समझता था अतः मैंने कर्नल होना अस्वीकार किया और मि० लारेन्स नामक एक प्रतिष्ठित और अच्छे हट्टे कट्टे मजबूत व्यक्ति को नियुक्त करने का प्रस्ताव पास किया जिसके अनुसार उसी की नियुक्ति होगई।"

फ्रेंकलिन के कुछ मित्रों को यह भय रहता था कि राज्य मण्डली में क्वेकर पंथ के लोगों का ज़ोर अधिक है इसलिये फ्रेंकलिन युद्ध सम्बन्धी उत्साह के कारण राज्य मण्डली में अपना प्रभाव खो बैठेगा। राज्य मण्डली के कारकुन की जगह लेने को आतुर एक युवक ने फ्रेंकलिन से एक दिन कहा कि तुम सम्मान पूर्वक अपना पद त्याग कर दो नही तो तुमको अलहदा कर दिया जायगा जिसमें तुम्हारा अपमान होगा। इस पर फ्रेंकलिन ने उत्तर दिया कि—"मैंने एक प्रसिद्ध मनुष्य के द्वारा ऐसी बात सुनी है कि वह कोई पद नहीं चाहता और यदि मिल जाय तो उस के लेने से इनकार भी नहीं करता। इस बात को मैं पसन्द करता हूँ, और उस में कुछ वृद्धि करके मैं उस को प्रयोग में लाऊँगा। मैं कोई जगह नहीं मागूगा। किसी जगह को लेने से इन्कार भी नहीं करूँगा। और न किसी जगह का त्याग पत्र ही दूँगा। वस्तुतः

सब कवेकर लोग युद्ध के विरुद्ध न थे। युवकों का एक बड़ा भाग और अनेक वृद्ध मनुष्य लड़ाई की तय्यारियों से प्रसन्न होते थे। नया चुनाव हुआ तब सर्व सम्मति से फ्रेंकलिन को ही राज्य मण्डली का कारकुन नियुक्त किये जाने का फिर प्रस्ताव हुआ। लड़ाई के लिये रुपये की मंजूरी देने का प्रसंग आता तब कवेकर लोग "यह रुपया राजा के उपयोग के लिये है, इस प्रकार संतोष मान कर मंजूरी दे देते"

सन् १७४८ के अक्तूबर मास की ७ वीं तारीख़ को एइलाशा पेल की संधि हुई और यूरुप में लड़ाई का अन्त होने से अमेरिकन प्रदेशों का भय दूर हुआ। इस संकट के अवसर पर फ्रेंकलिन ने देश-रक्षा और लश्कर आदि तय्यार करने में जिस प्रकार सच्चे हृदय से भाग लिया था इस से पेंन्सिल्वेनियाँ मे उस की इज्ज़त बहुत बढ़ी। परगने के हाकिम, राज्य मण्डली के सभासद् और प्रतिष्ठित व्यक्तियों में इस का बहुत सम्मान बढ़ गया। वे अब आपत्ति के समय फ्रेंकलिन को अपना नेता और सच्चे हितचिन्तक की भांति फ़िलाडेल्फ़िया का मुख्य नागरिक गिनने लगे।

इस अवधि में फ्रेंकलिन और उसके सम्बन्धियों के घर में कुछ जानने योग्य बातें हुईं। सन् १७४४ मे उसके एक कन्या हुई। जिसका नाम सहारा रक्खा गया। इस वर्ष अपनी बहिन जेन के लड़के मिकल को शिष्य की भांति उसने न्यूयार्क में अपने हिस्सेदार जॉन पारकर के पास रक्खा। उसका बड़ा लड़का विलियम बड़ा बलिष्ठ और ख़ूबसूरत था। परन्तु पढ़ने लिखने में बहुत पिछड़ा हुआ था। लड़ाई के शुरू होने पर वह घर से चुपचाप भाग गया और एक जहाज़ पर जाकर नौकर हो गया। फ्रेंकलिन उस बालक को वहां से घर पर लाया। परन्तु, उसकी रुचि फौजी नौकरी करने की थी, इस कारण केवल सोलह वर्ष की

आयु में ही उसको केनेडा पर आक्रमण करने को जाने वाली एक पल्टन में भरती करा दिया गया।

लड़ाई के आरम्भ मे फ्रैंकलिन के माता पिता जीवित थे। दोनों पर बड़ी आफतें आई थीं और उन्हीं के कारण उनका शरीर जर्जरित हो गया था। फ्रैंकलिन उनको बड़े स्नेह से भरे हुए पत्र लिखता था और उनके रोग के लिये समय २ पर कुछ उपाय बताता रहता। एक पत्र में उसने लिखा था:—तुम दोनों में से कोई भी जब अपने दु:ख की हक़ीकत मुझे लिखता है तो मैं वैद्यक विद्या सीखने को बड़ा व्याकुल बन जाता हूँ। मेरे कुटुम्ब के लिये आवश्यकता हो तब मैं वैद्य की सम्मति लेता हूँ और उसके कहने के अनुसार चलता हूँ। अपने किसी पत्र में मैं कुछ उपाय बताऊँ तो यही समझना कि मेरी तुम्हारे प्रति हार्दिक सहानुभूति होने से ही मैं लिखता हूँ। तुम्हारे वैद्य की सम्मति न हो तो मेरे बताये हुए उपाय को काम में मत लाना।"

सन् १७४४ में ८९ वर्ष की दीर्घायु पाकर फ्रैंकलिन का पिता जोशिया स्वर्गगामी हुआ। बहिन 'जेन' को फ्रैंकलिन ने उस के पिता की मृत्यु के पश्चात जो पत्र लिखा था उस में वह लिखता है.—"प्यारी बहिन, पिता जी की बीमारी मे तैंने उनकी जो सेवा शुश्रूषा की है, उसके कारण मैं तुझ पर बड़ा प्रेम करता हूँ।" सन् १७४५ की जनवरी मास की १७ वीं तारीख के "बोस्टन न्यूज़ लेटर" पत्र के अङ्क में जोशिया फ्रैंकलिन की मृत्यु का समाचार इन शब्दों मे निकला था:—"गत रात्रि को मोमबत्ती और साबुन बनाने वाले मि० जोशिया फ्रैंकलिन स्वर्गगामी हुए हैं। इन्द्रिय तथा मन के आवेश में लिप्त न हो कर उन्होंने अपना जीवन बड़े संयम से विताया। इसी का यह फल है कि ८७ वर्ष की

आयु तक वे बड़े स्वस्थ और सुखी रहे। ईश्वर पर पूरा भरोसा रख कर वे ऐसे भक्ति-भाव और सदाचरण से रहते थे कि जैसे आनन्द और शान्ति में वे उत्पन्न हुए थे, वैसे ही आनन्द और शान्ति से उन के जीवन का अन्त हुआ। वे अपने पीछे बहुत बड़ा कुटुम्ब छोड़ गये हैं। जिसने एक प्रमाणिक मनुष्य की भाँति अन्तिम समय तक अपनी साख निबाही ऐसे महान-पुरुष के इन कुटुम्बियों को जितना भी धन्यवाद दिया जाय, थोड़ा है।"

प्रकरण १३वां

बिजली सम्बन्धी खोज

१७४६ से १७५२

लेडन जार की शोध—डाक्टर स्पेन्स के यहाँ फ्रैंकलिन के देखे हुए प्रयोग—बिजली का अभ्यास—भाव और अभाव रूप बिजली की स्वतन्त्र खोज—लेडन जार का पृथक्करण—इलेक्ट्रिक बेटरी—शिक्षाप्रद खेल—रोज़गार से अलहदा होना—डेविल हाल के साथ की हुई प्रतिज्ञा—अभ्यास करने की योजना—आकाशी बिजली और संघर्षण बिजली की पतंग द्वारा खोज—लाइटनिंग राड* अथवा विद्युत वाहक सलाख (छड़)× की शोध—फ्रैंकलिन की ख्याति और उसको मिला हुआ सम्मान—विद्या प्राप्त करने में फ्रैंकलिन की योग्यता।

लेडन जार की खोज सन् १७४५ में हुई थी। इस खोज से सारे यूरोप खण्ड में बिजली सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने का शौक़ बहुत बढ़ चला था। पिटर कोलिन्स प्रति वर्ष फिलाडेल्फिया के पुस्तकालय के लिये पुस्तकें ख़रीद २ कर भेजता, उनके साथ २ अपनी ओर से भी भेंट स्वरूप किसी समय कोई,

---

* एक सलाख जो मकानों या जहाज़ों पर बिजली के ख़तरे से बचाने के लिये लगाया जाता है।

× शलाका=सलिया।

और किसी समय कोई अच्छी वस्तु भेजता। लेडन जार का नया आविष्कार और उसको प्रयोग करने के नियम की छपी हुई पुस्तक, उसने सन् १७४६ में भेंट स्वरूप भेजी। यह भेंट पहुँची उसके कुछ सप्ताह पूर्व फ्रेंकलिन ने बोस्टन में डाक्टर स्पेन्सन के यहां वह पुस्तक देखी थी। डाक्टर स्पेन्सन ने फ्रेंकलिन को बिजली के कुछ प्रयोग दिखाये जिनको देखने पर उसको बड़ा आश्चर्य्य हुआ। कोलिन्स की भेजी हुई विद्युत्नलिका फिलाडेल्फिया के पुस्तकालय मे आ पहुँचते ही फ्रेंकलिन ने बोस्टन में देखे हुए प्रयोग फिर से स्वयम् करके देखे। बिजली का अभ्यास करने मे उसकी रुचि बहुत बढ़ने लगी। जरा अवकाश मिला नहीं कि उसको वह इसी कार्य्य में लगाता। फिलाडेल्फिया के एक काच के कारखाने में दूसरी कितनी ही नलियें बनवा कर उसने अपने मित्रों मे बांटीं और जण्टो-मण्डली के सब सभासदों को बिजली का प्रयोग करने का शौक दिलाया। १७४६-४७ की सारी शरद ऋतु फ्रेंकलिन और उसके मित्रों ने बिजली के पीछे ही बिताई। बहुतों ने तो कुछ दिन इसका प्रयोग करके छोड़ दिया। परन्तु, फ्रेंकलिन और दूसरे दो तीन व्यक्ति इस नये आविष्कार का बड़ी लगन और उद्योग से अभ्यास करने और नयी २ शोध करने में लगे रहे।

फ्रेंकलिन और उसके साथी नये २ प्रयोग करके नई २ बातें खोज कर निकालने लगे। संघर्षण से बिजली पैदा नहीं होती बल्कि इकट्ठी होती है ऐसा उन्होंने पहले अनुमान किया। किन्तु, इसके पश्चात् प्रयोग द्वारा यह साबित कर दिखाया कि बिजली भाव और अभाव इस प्रकार दो तरह की है। यह बात फ्रेंकलिन ने प्रयोग करने के कुछ दिन बाद प्रकट की थी। जुलाई १७४७ के उसके एक पत्र से ऐसा ही मालूम होता है। फ्रेंकलिन और

उसके मित्र बिजली से मोमबत्ती जलाते, १०-२० मनुष्यों को खड़ा रख कर उसका चमत्कार दिखाते, पुतली को नचाते, और इसी प्रकार के और २ आश्चर्य्य जनक प्रयोग करके फ़िलाडेल्फ़िया की जनता को आनन्दित किया करते। इसके अतिरिक्त बहुत सी बातें यूरोपीय विद्वान् जानते थे। इस विषय में कुछ सुना या देखा नहीं गया था। किन्तु, यह होने पर भी फ्रैंकलिन और उस के मित्रों ने ये बातें अपने स्वतन्त्र प्रयोग से ढूंढ निकालीं।

सन् १७४७ की ग्रीष्म ऋतु जनता की रक्षा करने में बीती। परन्तु उस कार्य्य से निवृत्त हो चुकने पर फ्रैंकलिन और उसके मित्रों ने फिर बिजली का कार्य्य आरम्भ कर दिया। अपने प्रयोग से जो नई २ बातें उनके जानने में आतीं उनको वह कोलिन्स के पास लिख कर भेजता। लेडन जार के साथ प्रयोग करने में फ्रैंकलिन कभी नहीं ऊबता। बल्कि, अपनी ओर से कुछ और भी नये २ प्रयोग ढूंढ निकालता। फ्रैंकलिन के प्रयोग करने का ढंग कैसा था यह नीचे के अवतरण से जाना जा सकेगा। इन प्रयोगों को करने में वह मेशनब्रुक की खोज की हुई युक्ति को काम में लेता। यह प्रयोग डाट और सली डाली हुई तथा पानी से भरी हुई एक शीशी के द्वारा होता था।

"बिजली का बल किस भाग में है इसका पृथक्करण करने के इरादे से हमने शीशी को काच पर रख कर उसका डाट और तार निकाल लिया। फिर एक हाथ में शीशी लेकर दूसरे हाथ की अँगुली उसके मुँह पर रक्खी तो पानी में से बिजली की एक प्रकार की बड़ी तेज़ गर्मी निकली। इस से मालूम हुआ कि तार में कुछ ज़ोर नहीं भरा। तब शीशी के भीतर भरे हुए पानी में कुछ ज़ोर रहा है या नहीं यह देखने को हमने उसमें फिर से बिजली भरी और पहले की तरह उसको काच पर रख कर डाट

और तार निकाल लिये। फिर शीशी लेकर उसमें का पानी दूसरी खाली शीशी में डाला। यदि पानी में बिजली का ज़ोर होता तो इस नई शीशी के मुँह पर अँगुली रखने से आग सी लगनी चाहिये थी, लेकिन वैसा नहीं हुआ। इससे हमने अनुमान किया कि पानी को गिराते समय बिजली जाती रही है। अथवा पुरानी शीशी में रह गई है। उस शीशी में ताज़ा पानी डाल कर देखा गया तो हमें उसमें कुछ बिजली की तेज़ी मालूम हुई। तब हम इस परिणाम पर पहुंचे कि यह गुण काच ही में उसके स्वाभाविक गुण के अनुसार है। इसके पश्चात् हमने एक काच की रकाबी ली और उस पर शीशे का पतरा चढ़ाया। फिर उसमे बिजली भरी और उसके पास हाथ लगा कर देखा तो उसमें से चमक सी निकली। फिर हमने एक काच की रक़ाबी के बदले में सब तरफ दो इञ्च छोटी शीशे की रक़ाबियां लीं और उनके बीच में काच की रक़ाबी रख कर शीशे की रक़ाबी के द्वारा उसमें बिजली भरी। उसके बाद काच को शीशे से अलग किया। ऐसा करने से शीशे में बिजली रही थी वह अलग होगई। फिर काच की कोर पर अँगुली लगा कर देखा तो उसमें से बिजली के छोटे छोटे कण निकलने लगे। तब युक्तिपूर्वक काच को शीशे के ढक्कन में फिर लगा कर कोरों को दबाया तो बड़े ज़ोर का धक्का लगा। इस पर सिद्ध हुआ कि बिजली काच में उसी के गुण से रहती है।

इस वर्ष जाड़े के दिनों में मि० किन्नर्सलि नामक व्यक्ति ने बिजली की सहायता से एक मनोरञ्जक खेल बनाया था। तीसरे जार्ज का पुतला बिजली से इस तरह भरा गया था कि जो कोई उस पुतली के सिर पर से मुकुट उतारने को जाता तो उसको बड़ा धक्का लगता। इसको देख कर फ्रैंकलिन ने एक ऐसा पहिया बनाया जो बिजली की सहायता से बड़े ज़ोर से फिरता। इस

वर्ष की हुई फ्रेंकलिन की खोज में सब से उत्तम शोध तो लेडन जार का पृथक्करण था। लेडन जार सम्बन्धी की हुई फ्रेंकलिन की खोज में कोई व्यक्ति किसी प्रकार की त्रुटि न निकाल सका।

इसके पश्चात् फ्रेंकलिन ने बिजली सम्बन्धी कुछ और भी नई २ बातें निकालीं। वह पैसा इकट्ठा करना जानता था किन्तु, यह नहीं समझता था कि केवल पैसा कमाना ही संसार में जन्म लेने की सार्थकता है। व्यवसाय शुरू किये हुए अब उसको २० वर्ष होगये थे। उसकी आयु ४२ वर्ष की हो चुकी थी और प्रति वर्ष सात सौ पौण्ड की आमदनी हो इतनी मिल्कियत भी उसके पास होगई थी। व्यापार रोजगार छोड़ कर घर बैठे हुए इतनी आमदनी काफी गिनी जाती थी, और थी भी ठीक। क्योंकि एक सौ वर्ष पहिले अमेरिका में ७०० पाउण्ड की आमदनी वाला मनुष्य अपने कुटुम्ब के साथ अच्छी तरह बड़े सुख चैन से अपना जीवन व्यतीत कर सकता था। इतनी आमदनी पर भी फ्रेंकलिन प्रति वर्ष लग भग डेढ़ सौ पाउण्ड वेतन की दो सरकारी नौकरियें करता था। अपनी जायदाद की आमदनी के अलावा उसको अपने धंधे में से प्रति वर्ष दो हजार पाउण्ड नफे के मिलते थे। इस प्रकार उसकी वार्षिक आमदनी तीन हजार पौण्ड की थी और उसको अपनी आर्थिक अवस्था पर पूरा सन्तोष और निश्चिन्तता थी। अब वह रोजगार को छोड़ कर अपना समय विद्योन्नति और ज्ञान-सम्पादन में व्यतीत करने का इच्छुक था। सन् १७४८ के सितम्बर मास में उसने अपने मैनेजर डेविडहाल से अपना छापाखाना बेच देने की इच्छा प्रगट की। दोनों में परस्पर ऐसा इकरार हुआ कि डेविड हाल प्रेस के मालिक की भांति काम करे और अठारह वर्ष तक फ्रेंकलिन को प्रति वर्ष एक हजार पौण्ड देता रहे।

अठारह वर्ष के पश्चात् कुछ न दे और उस समय डेविडहाल छापेखाने का असली मालिक समझा जाय। अठारह वर्ष की अवधि पूरी होने तक छापेखाना फ्रैंकलिन और डेविडहाल के नामसे चले और फ्रैंकलिन गज़ट और "ग़रीब रिचर्ड" के निकालने में सहायता दे। इस प्रकार इक़रार करके फ्रैंकलिन काम काज की चिन्ता से मुक्त हुआ और सन् १७४८ से विशेष विद्या-ज्ञान सम्पादन करने लगा। उस समय अपने एक मित्र को पत्र लिखते समय वह लिखता है:—

"शहर के अधिक शांत भाग में मैंने अपना निवासस्थान रखा है और कुछ समय के पश्चात् मैं अपने समय का पूर्ण रीति से अधिकारी होने की आशा करता हूँ। यदि मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तो आगामी वर्ष तक मैं बिना किसी अड़चन के अपने दूर से दूर वाले मित्र से भी मिलाने की चेष्टा करूंगा। इसी धारणा से मैं अब अधिक उत्तरदायित्त्व का काम अपने सिर पर नहीं लेता। अख़ीर की संरक्षण मण्डली में मैंने भाग लिया था इस से मैं इतना लोकप्रिय हो गया हूँ कि राज्य मण्डली के सभासदों के नये चुनाव में नगर निवासियों में से कितनों ही का मुझ को चुनने का इरादा था। किन्तु, मेरे जिन २ मित्रों ने इस सम्बन्ध की मुझ से चर्चा की उन सब से मैंने नाहीं कर दी और स्पष्ट कह दिया कि मुझे चुन लोगे तो मैं काम नहीं करूँगा। मैं जो काम करना पसन्द करता हूँ उसके अतिरिक्त दूसरा कोई काम मेरे सिर पर न आवेगा इस से श्रम और चिन्ता रहित हो कर मुझ से मित्रता करने वाले विद्वान् मनुष्यों के साथ मैं लोकोपकारी विषयों पर बात चीत करूंगा और लिखने पढ़ने के लिये पर्याप्त समय निकाल सकूँगा। मेरी अपनी धारणा के अनुसार यह कुछ कम सुख की बात नहीं है।"

छापाखाना डेविडहाल को सौंपने के बाद फ्रेंकलिन को अपनी इच्छानुसार विद्याभ्यास और बिजली का प्रयोग करने को समय मिलने लगा। सन् १७४८ से १७५२ तक उसने बिजली सम्बन्धी अनेकानेक प्रयोग करके देखे और नई २ बातें ढूँढ़ निकालीं। उन सब का वर्णन इस पुस्तक में नहीं हो सकता। दो मुख्य शोध जिन के कारण उसका नाम संसार में अमर हुआ है उनके सम्बन्ध में यहां कुछ लिखना उचित होगा।

संघर्षण बिजली और आकाश की बिजली ये दोनों एक ही जाति की हैं अथवा भिन्न भिन्न ? यह निर्णय करने को फ्रेंकलिन बहुत समय से विचार कर रहा था। उस समय फिलाडेल्फिया में एक ऊँची मीनार बन रही थी। फ्रेंकलिन का यह विचार था कि यह मीनार पूरी होगी तब उस पर चढ़ कर बादलों की बिजली किस प्रकार की है—यह मालूम करूंगा। इतने ही में उसने एक दिन एक लड़के को पतंग चढ़ाते देखा। इससे उसको अपना इरादा पूरा करने का एक नया साधन सूझा। उसने एक रेशमी रूमाल का पतंग बनाया और उसमें एक डोरी बाधी। फिर अपने लड़के को साथ ले कर वह एक मैदान मे गया, वहां उसने उस पतंग को उड़ाया और सारी डोरी उसके पीछे छोड़ दी। इसके बाद एक रेशमी डोरी का टुकड़ा उसके सिरे पर बाँध कर उसका दूसरा सिरा एक झाड़ के साथ बाँध दिया और फिर बड़ी उत्सुकता से उस की ओर देखने लगा। इस समय आकाश में बहुत बादल छा रहे थे इस कारण पतंग पर बिजली लगने की सम्भावना थी। थोड़ी देर में पतंग में बँधी हुई डोरी के रुएँ से खड़े होने लगे इस से उसमें से बिजली सी चमक या तेजी जैसा प्रकाश उसकी अँगुली की तरफ़ बढ़ा। फिर उसने यह प्रयोग निर्धारित करके

देखा कि आकाश की बिजली संघर्षण बिजली की भांति ही है।" *

मीनारे पर एक लोहे का डण्डा खड़ा करके उसकी सहायता से संघर्षण बिजली और आकाशी बिजली एक ही है या नहीं इसका निर्णय करने को जैसा विचार फ्रेंकलिन का था इसी प्रकार कुछ फ्रांस के विद्वानों ने भी करके देखा तो उनको भी ऐसा ही मालूम हुआ। इसके पश्चात् उसकी सारे यूरोप में प्रसिद्धि हो गई और वह प्रथम श्रेणी का विद्युत-शास्त्रज्ञ गिना जाने लगा।

फ्रेंकलिन की की हुई यह खोज बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई और इस से संसार में प्रतिवर्ष लाखों मनुष्यों के जान व माल की रक्षा होने लगी। ऊँचे मकान, पहाड़ी स्थान और जहाज़ आदि पर बिजली गिरे तो वह उन्हें बिना कुछ हानि पहुँचाये पानी या भूमि में उतर जाय इसके लिये फ्रेंकलिन ने ऐसी युक्ति बतलाई कि लोहे या तांबे की एक लम्बी शलाक घर की सबसे ऊँची छत पर से भूमि तक दीवारों के जड़ों में लगा ली जाय और ऊपर का भाग कुछ तीखा रख कर नीचे का भाग भूमि में गाड़ दिया जाय तो उस मकान पर पड़ी हुई बिजली इसके द्वारा जमीन में उतर जायगी। घर में इस प्रकार लगे हुए लोह के सलिये को "लाइटनिंग कण्डक्टर" अथवा "बिजली वाहक" सलिया कहते हैं।

इस उपयोगी खोज से फ्रेंकलिन का नाम यूरोप में भी प्रसिद्ध हो गया। उसके विद्युत्सम्बन्धी लेख बड़ी उत्सुकता से सब जगह पढ़े जाने लगे और अच्छा विवेचन तथा रुचिकर भाषा होने के कारण उनकी बहुत प्रशंसा होने लगी। आकाश में से प्रयोग के लिये बिजली को ज़मीन पर खींच लाना यह बात

* माणिकलाल कृत (गुजराती) बिजली—पृष्ठ ३०।

सब को आश्चर्य्यजनक लगी। और ऐसी मोटी खोज फ़िला-डेल्फ़िया जैसे नगर में पड़े हुए फ्रेंकलिन जैसा सामान्य व्यक्ति कर सका, यह बात उन को और भी अचरज भरी जान पड़ी। इङ्गलैण्ड की "रायल सोसायटी" फ्रेंकलिन की विद्वत्ता पर इतनी प्रसन्नता हुई कि उसने सर्व सम्मति से उस को अपना सभासद् नियुक्त किया और एक पदक भी भेंट स्वरूप दिया। येल और हार्वर्ड कालेजों ने उसको सम्मानपूर्वक एम० ए० की उपाधि दी। अब तो विद्वत्समुदाय में उसकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई और उस का बड़ा आदर होने लगा।

अपना बिजली सम्बन्धी अभ्यास फ्रेंकलिन ने आगे भी बराबर जारी रक्खा। आकाश के बादलों में की बिजली भाव रूप है या अभाव रूप इस का निर्णय करने को उसने बहुतसे प्रयोग कर के देखे और अन्त में यह निश्चित किया कि वह अभाव रूप है इसके पश्चात् २० वर्ष तक उसने बिजलीके भिन्न २ प्रयोग करके देखे। उसके घर में बिजली सम्बन्धी औज़ारों का एक बहुत बड़ा संग्रह था। संसार के विद्युत्शास्त्रियों में उस का स्थान बहुत ऊँचा गिना जाने लगा। उसके आविष्कृत किये हुए बिजली-वाहक सलिये का उपयोग धीरे २ बढ़ने लगा। दस वर्ष में सब अमेरि-कन प्रदेशों में और बीस वर्ष में इङ्गलैण्ड में उस का उपयोग खूब बढ़ गया। बड़े २ मकान बनाने वाले उससे पूछते कि बिजली का सलिया मकानों में किस तरह लगाया जाता है। मि० डिज़रायली 'क्यूरी ओसिटिज़ आफ़ लिटरेचर' में लिखते हैं कि "फिलाडेलफिया में बेकार लोग फ्रेंकलिन के मकान पर आते और खिड़की के पास खड़े रह कर उसको बड़ा दुःख देते। इससे उसने अपनी खिड़की के कटहरे में बिजली भर दी इस से जो कोई कटहरे से लग कर खड़ा रहना चाहता तो उसको बड़ा धक्का लगता।"

सफलतापूर्वक प्रकृति का अवलोकन करने और विद्योन्नति करने के लिये मनुष्य में चार गुण अवश्य होने चाहियें। अर्थात् १ला अच्छी समझ, २रा धैर्य्य, ३रा फुर्ती और ४था स्वतंत्र आय। ये चारों गुण फ्रेंकलिन मे अच्छी तरह थे इसी से वह इतनी विद्योन्नति और ज्ञानवृद्धि कर सका। प्राकृतिक अनुसन्धान छोड़ कर आगे यदि उसको राजनीति में पड़ने का समय न आता तो इसमें सन्देह नहीं कि वह दूसरी और भी कई बातों का आविष्कार कर दिखाता।
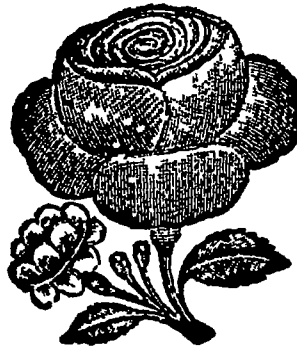
प्रकरण १४वां

१७५० में की हुई सार्वजनिक सेवाएँ।

पाठशाला स्थापित करने की योजना—पेन्सिल्वेनिया में युवकों को शिक्षा देने के सम्बन्ध में प्रार्थना—शाला के लिये मकान की व्यवस्था—औषधालय खोलने की योजना—डाक्टर वाण्ड—औषधालय स्थापित किया—गिलवर्ट टेनंट को चन्दा इकट्ठा करने के लिये उपदेश—शहर सफाई के लिये किया हुआ उद्योग—"यलोविलो" अमेरिका में पहिले पहिल फ्रेंकलिन ने दाखिल किया—"प्लास्टर आफ पेरिस" और कुछ वृक्ष लगाना—एडमण्ड किवन्सी को दाख के झाड के पौदे भेजना—जान आडन्स का फ्रेंकलिन के विषय में अपना मत—सगे सम्बन्धियों से प्रेम—फ्रेंकलिन की माता का ८४ वर्ष की आयु में लिखा हुआ पत्र—माता की मृत्यु—माता की कब्र पर फ्रेंकलिन का लगाया हुआ लेख—वहिन जेन के लिखे हुए पत्र—मृत्यु के विषय में फ्रेंकलिन के विचार—विद्याभ्यास और खोज—धार्मिक विचार।

फ्रेंकलिन अपना ही ज्ञान नहीं बढ़ाता था बल्कि उसको फैलाने के लिये भी प्रयत्न करता था। सन् १७४३ में उसका पुत्र १३ वर्ष का हो गया था। और उसको शिक्षा देने के लिये उसकी आर्थिक अवस्था भी अच्छी हो गई थी। इस समय फ्रेंकलिन को मालूम हुआ कि फिलाडेल्फिया अथवा न्यूयार्क में शिक्षा देने का कोई साधन नहीं है। इस कारण वहां एक

पाठशाला स्थापित करने को उसने कुछ आन्दोलन किया। परन्तु, युद्ध के कारण उस वर्ष उसको सफलता न हुई। और इसके पश्चात् ६—७ वर्ष तक भी पाठशाला विषयक योजना केवल योजना ही बनी रही। सन् १७४९ में जो सन्धि हुई थी उसके कारण कुछ शान्ति होगई थी। और फ्रैंकलिन के लिये अब अवकाश का समय आ गया था। किन्तु, इस वर्ष उसका पुत्र १९ वर्ष का हो गया था और अब अधिक पढ़ने के लिये उसका उपयुक्त समय निकल चुका था। फिर भी पाठशाला स्थापित करने के लिये फ्रैंकलिन ने अपनी योजना को सबके सन्मुख रखी। अपनी हमेशा की नीति के अनुसार प्रथम तो उसने इस बात की चर्चा जगटोमण्डली में ही चलाई। उसके पहिले सभासद् स्वयं मजदूरी कर करके अपना निर्वाह कर रहे थे। किन्तु, अब तो वे अच्छी दशा में हो गये थे। इस कारण अधिकांश सभासदो ने फ्रैंकलिन की योजना का हृदय से समर्थन किया, और धीरे २ इसके पक्ष में दूसरी उपमण्डलियों के भी बहुत लोग हो गये। इतना होने के पश्चात् फ्रैंकलिन ने यह बात प्रसिद्ध करने का विचार किया और "पेन्सिल्वेनियाँ में युवकों को शिक्षा देने के सम्बन्ध में प्रार्थना" इस नाम से एक ट्रैक्ट लिख कर अपने पत्र के प्रत्येक ग्राहक को भेंट स्वरूप भेजा। तथा अन्यान्य लोगों में भी उसको प्रचारित किया।

इस ट्रैक्ट का लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। फ्रैंकलिन की प्रार्थना सर्व साधारण को पसन्द आई, और थोड़े ही वाद विवाद के पश्चात् वह मंजूर हो गई। बात की बात में पाँच हजार पौण्ड इकट्ठे हो गये, और वर्ष पूरा होने से पहिले ही पाठशाला स्थापित हो गई। विद्यार्थियों का इतना अधिक जमाव हुआ कि थोड़े ही दिनों में एक और दूसरा त्था तथा बड़ा मकान लेने की आवश्यकता

हुई। चाहे जिस सम्प्रदाय के धर्मोपदेशक को व्याख्यान देने के काम में भी आ सके इस विचार से ह्वाइट फील्ड के समय जो मकान बनवाया गया था वह इस काम में लिया गया। लोगों का धार्मिक उत्साह ह्वाइट फील्ड के चले जाने पर कम हो गया था। इस मकान का किराया बराबर नहीं आता था इस कारण उस पर कुछ ऋण हो गया था। फ्रैंकलिन उस मकान और पाठशाला दोनों का ट्रस्टी था। उस मकान में उसके उद्देश के अनुसार प्रत्येक धर्म गुरु को व्याख्यान देने के लिये एक कमरा अलग रख कर पाठशाला भी हो सके ऐसी व्यवस्था की गई। ट्रस्टियों से वह सारा मकान पाठशाला के लिये ही मिल जाय इसके लिये फ्रैंकलिन ने बहुत प्रयत्न किया और इसमें उसको सफलता भी हुई। मकान का तमाम ऋण चुकाना तथा एक कमरा हमेशा के लिये व्याख्यान के निमित्त देना शाला के ट्रस्टियों ने स्वीकार कर लिया। इससे सारा मकान पाठशाला के लिये उसको मिल गया। इसके पश्चात् पाठशाला के लिये उसमें और और भी सब प्रकार की अनुकूल व्यवस्था कर दी गई। मज़-दूर और कारीगरों से काम लेना, आवश्यक सामान ख़रीदना, तथा देख रेख का और २ कार्य फ्रैंकलिन स्वयम् करता था। इस प्रकार उसकी पाठशाला सम्बन्धी इच्छा पूर्ण हुई। सन् १७७९ में यह पाठशाला "पेन्सिल्वेनियां की पाठशाला" हो गई और अभी तक इसी नाम से चल रही है तथा उस शहर की पाठशालाओं में सब से बड़ी मानी जाती है।

पाठशाला स्थापित होकर उसके भली प्रकार चल निकलने के पश्चात् फ्रैंकलिन को एक ऐसे ही और लोकोपयोगी कार्य्य करने की सूझी। उस समय फ़िलाडेल्फ़िया में एक अच्छे औषधालय की अत्यन्त आवश्यकता थी। विदेशी रोगी आते उनको खाली

पड़े हुए खंडहरो और डिलावर नदी के टापुओं में रखा जाता। इससे रोगियों और नगर निवासियों को बड़ी असुविधा होती थी। औषधालय स्थापित करने की योजना डाक्टर बाण्ड नामक फ्रैंकलिन के एक मित्र ने की थी जो नई होने के कारण किसी को ठीक न लगी और इसके लिये कोई चन्दा देने को भी राजी न हुआ। अन्त मे डाक्टर बाण्ड फ्रैंकलिन से सम्मति लेने को उसके घर पर आया, और कहा कि:—

तुम्हारा जिससे कुछ सम्बन्ध न हो ऐसी लोकोपयोगी योजना सर्व साधारण में नहीं फैल सकती। मैं जिस किसी से भी औषधालय के चन्दे के लिये मिलता हूँ वही मुझ से पूछता है कि क्या इस विषय में आपने फ्रैंकलिन की सम्मति ली है? उसका क्या विचार है? जब मैं इसके उत्तर में उनसे कहता हूँ कि फ्रैंकलिन के धंधे से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है इसलिये मैंने उसकी सम्मति नहीं ली, तो वे चन्दे की फहरिस्त में कुछ नहीं लिखते और कह देते हैं कि:—"अच्छा मैं विचार करूँगा।"

इस योजना को पूरी करने के लिये अपने मित्र के साथ फ्रैंकलिन ने तन मन से प्रयत्न करना आरम्भ किया। उसके पक्ष में उसने अपने पत्र मे कुछ लेख लिखे और चन्दे में स्वयम् ने अच्छी रक़म देकर दूसरों से भी दिलवाई। कुछ समय में ऐसा मालूम हुआ कि चन्दे का रुपया काफी न होगा इससे फ्रैंकलिन ने राज्य-मण्डली से सहायता लेने की तजवीज़ की। उसके ग्रामीण सभासद् आरम्भ में सहायता देने को राजी न थे। उनका यह उज्र था कि औषधालय शहर के लिये स्थापित होगा इस कारण नगर निवासियों को ही उसका खर्च बरदाश्त करना चाहिये। यह देख कर फ्रैंकलिन को चालाकी करनी पड़ी जिस में उसने अपना मतलब बना लिया। उसने राज्य मण्डली से

कहा कि तुम दो हज़ार रुपये की सहायता देना इस शर्त पर स्वीकार करो कि शहर के लोग चन्दा करके दो हज़ार पौण्ड इकट्ठे करें तब यह रक़म दे दी जाय। फ्रेंकलिन लिखता है कि, इस शर्त पर सहायता देना स्वीकृत हो गया। जो सभासद् सहायता देने के विरुद्ध थे उनको भी अब ऐसा मालूम होने लगा कि कुछ भी खर्च किये बिना उदारता दिखाने का अवसर आया है। इसके पश्चात् लोगो से चन्दा लिखाते समय सरकार का दिया हुआ वचन सुना सुना कर आग्रह पूर्वक उनसे रुपये लिखने को कहा। प्रत्येक मनुष्य की दी हुई रक़म सरकार की सहायता से दुगुनी हो ऐसा था इससे सब लोग बड़ी प्रसन्नता से कुछ न कुछ चन्दे में ज़रूर ही लिखते। इस प्रकार यह शर्त दो प्रकार से काम में आई थी।

दो एक वर्ष के पश्चात् उस स्थान पर पेन्सिलवेनियां के औषधालय के लिये एक मकान बनवाया गया। नींव का पत्थर एक प्रतिष्ठित व्यक्ति ने रखा और फ्रेंकलिन ने उस पर यह लिखा:—"सन् १७५५ ई० में दूसरा जार्ज राजा राज्य करता था। जो बड़ा प्रजावत्सल था। जिस समय फ़िलाडेल्फ़िया खूब आबाद था, उस समय यह मकान सरकार और अनेक उदार पुरुषों की सहायता से रोगी और निर्धन लोगो के लिये बनाया गया है। परम कृपालु परमात्मा इस कार्य्य में सफलता प्रदान करे।" यहां लिखने की आवश्यकता नहीं कि उस समय से आज तक पेन्सिलवेनियाँ का वह औषधायल रोगी और निर्धन लोगों का खूब दुःख निवारण कर रहा है। शहर की आबादी के साथ २ उसकी भी बहुत उन्नति हुई है और इस समय वह संसारके उत्तम श्रेणी के औषधालयो में गिना जाता है। यह औषधालय ४ हज़ार पौंड में बना था किन्तु आज तो उसकी जगह कई लाख रुपये की लागत का महल

खड़ा है जो एक जगत् प्रसिद्ध अस्पताल तथा कालिज भवन है।

चन्दे की फहरिस्त लिखवाने के काम में फ्रेंकलिन बड़ा प्रवीण गिना जाने लगा। गिलवर्ट टेनंट नामक पादरी का एक नया देवालय बनवाने का विचार था। इससे वह एक दिन फ्रेंकलिन के पास आया और उसकी सहायता तथा सम्मति माँगी। फ्रेंकलिन ने सहायता देना तो अस्वीकार कर दिया परन्तु सम्मति अवश्य दी। उसने कहा किः—"जो मनुष्य कुछ देने वाले हों उनके पास सब के पहिले जाना, जिनके लिये तुम्हें सन्देह हो कि कुछ देंगे या न देंगे उनके पास बाद में जाना और पहिले जिन लोगों ने कुछ दिया हो उन के नाम उनको दिखाना। सब से पीछे उनके पास जाना जो तुम्हे कुछ न देने वाले जान पड़ें। जाना उनके पास भी अवश्य। क्योंकि बहुत सम्भव है किसी के लिये तुमने अनुमान लगा लिया हो कि यह न देगा और संयोग से वह कुछ दे दे।" पादरी ने उसका बहुत आभार-प्रदर्शन किया और उसकी सम्मति के अनुसार प्रत्येक आदमी से सहायता माँगी। उसने देखा कि इस ढँग से काम करने पर उसको आवश्यकता थी उससे भी कहीं अधिक रुपया मिल गया और पार्क मोहल्ले में उस रुपये उसने एक बड़ा सुन्दर देवालय बना दिया।

सन् १७६० तक फ़िलाडेलफ़िया नगर की सड़क कच्ची थी। भूमि पर वर्षा के दिनो में इतना कीचड़ हो जाता था कि चलना भी कठिन होजाता था। फ्रेंकलिन बीस वर्ष से बीच बाज़ार में में रहने के कारण लोगों को दूकानों पर आने जाने में जो कष्ट होता था उसको अनुभव कर रहा था। अन्त में उसके प्रयत्न से बाज़ार के आस पास के रास्ते पर फ़र्शबन्दी हुई और अब केवल उस पर सफाई होने का काम ही शेष रह गया। फ्रेंकलिन कहता है:—"मुझको एक दीन मनुष्य मिला जो प्रत्येक घर के

स्वामी से प्रति मास छः पेन्स लेकर फ़र्शबन्दी पर दो वार झाड़ू निकालने और सफ़ाई रखने का काम करने को राज़ी था। इतने थोड़े खर्च से हरएक मकान वाले को कितना फ़ायदा हो सकता है, यह विस्तार से मैंने एक निबन्ध में छाप कर बताया। लोगों के पाँव मे लग कर इतनी धूल घर में न आवे इससे मकान साफ़ रखना ठीक है, दूकानों पर ग्राहक सुविधा से आ सकेंगे तो उन की वृद्धि होगी और दूकानदारों का लाभ होगा, हवा चलने पर धूल उड़ कर माल पर न लगेगी जिस से माल ख़राब होजाने का भय रहता है। आदि २ लाभ मैंने इस निबन्ध में दिखलाये। इसकी एक २ प्रति मैंने प्रत्येक घर में भेजी और एक दो दिन के बाद छः पेंस देने को कौन २ लोग प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करते हैं यह देखने को सब जगह घूम गया। सबने एक मत से हस्ताक्षर किये और कुछ समय तक उसका अच्छा अमल हुआ। बाज़ार के आसपास की फ़र्शबंदी की स्वच्छता देख कर नगर निवासी बड़े प्रसन्न हुए। इससे शहर के रास्तों पर फ़र्शबंदी करा देने के लिये सब लोगों ने अपनी इच्छा प्रगट की, और उसके लिये चन्दा देने को भी तैयार हो गये। फिर क्या था। १० वर्ष के पश्चात् सारे शहर में फ़र्शबन्दी हो गई।

सन् १७५२ में फ्रैंकलिन ग़रीब जर्मनो के लाभ के लिये स्थापित हुई एक मण्डली का ट्रस्टी नियुक्त हुआ। इस मण्डली में इङ्गलैंड, हालैण्ड और प्रुशिया तथा अमेरिकन प्रदेशों के और और भी कई लोग सभासद थे।

ऐसा कहा जाता है कि "यलो विलो" इस नाम से प्रसिद्ध एक वृक्ष अमेरिका में पहिले पहल लगाने का श्रेय फ्रैंकलिन को ही है। विदेश से सामान भर कर आई हुई एक टोकरी पानी में पड़ कर भीग गई थी। उस पर फ्रैंकलिन को

कुछ अंकुर से फूटे हुए मालूम हुए। इस समय जिस स्थान पर फिलाडेल्फिया की ज़कात बनी है वहां फ्रेंकलिन ने कुछ पौदे लगवाये। वे लग गये, और समय पाकर खूब बढ़े। "यलो विलो" वृक्ष जो अब टोकरे बनाने के काम में आता है इस प्रकार फ्रेंकलिन की बुद्धि से ही अमेरिका में आया। *

फ्रेंकलिन के लिये "प्लास्टर आफ़ पैरिस" के विषय की भी एक बात कही जाती है। घास के वीड़ † में प्लास्टर आफ पैरिस छाँटने से फायदा होता है यह बात फिलाडेल्फ़िया के कृषकों के ध्यान में न आती थी। एक रास्ते पर की वीड़ पर फ्रेंकलिन ने प्लास्टर के विषय में लिखा कि "इस स्थान पर प्लास्टर छाँट रखा है" सफ़ेद अक्षर थोड़े ही दिनों में मिट गये और इस अक्षर वाले स्थान पर घास जैसी एक सुन्दर नीले रंग की ऐसी जगह होगई वह वीड़ में अपने ढंग की एक ही दिखाई देने लगी। प्लास्टर छाँटने से घास कैसा अच्छा हो जाता है यह रास्ते पर चलने फिरने वाले कृषकों को प्रत्यक्ष दिखाई दिया इससे उनको उसका ज्ञान हुआ और फिर उसकी सुन्दरता और लाभ उनकी समझ में आ गये। कहां प्लास्टर आफ पैरिस की खाद का कृषकों का काम और कहाँ छापने का काम किन्तु, फ्रेंकलिन जो कोई काम करता था वह इसी हेतु से कि उससे कोई न कोई सार्वजनिक लाभ हो।

सफाई करने के झाड़ू बनाने का वृक्ष भी फ्रेंकलिन का लगाया हुआ कहा जाता है। एक नये झाड़ू पर बीज का दाना लगा हुआ मालूम होने से फ्रेंकलिन ने उसे रोप दिया और उस से उत्पन्न हुए बीज नगर में बेचे। यह बात उवाटसन के इतिहास में लिखी

---

* चेप्टर्स एग्री कल्चरल केमिस्ट्री पृष्ठ ७३

† जंगल।

हुई है परन्तु कहां तक ठीक है यह नहीं कहा जा सकता। सच्ची बात तो यह है कि फ्रेंकलिन ने बीज वरजीनियाँ से मँगवाये थे और उन्हें पेन्सिलवेनियां में रोप कर थोड़े २ बोस्टन आदि स्थानों पर अपने मित्रों को भेजे थे।

खेतीबाड़ी के सम्बन्ध में एक दूसरी बात जान आडम्स की डायरी में लिखी हुई है। जान आडम्स उस समय २४ वर्ष का था और क़ानून का अभ्यास कर रहा था। उस को स्वप्न मे भी ध्यान न था कि आगे चल कर मैं और फ्रेंकलिन एक ही स्थान पर काम करेंगे। जान आडम्स १७६० ईस्वी की २६ मई के दिन मि० एडमण्ड किवन्सी के यहां भोजन करने को गया था। फ्रेंकलिन की चालाकी और दृढ़ता के विषय में वहां सुनी हुई एक बात घर आ कर आडम्स ने अपनी डायरी में लिख ली। एक समय मसाचुसेट्स में फ्रेंकलिन मि० उवी बीड के देवालय मे गया था। वहां से मि० क्विन्सी के घर पर चला गया। उस समय बात ही बात में चाय पीते हुए फ्रेंकलिन ने कहा कि मैंने २६ दाख के पौधे कुछ मास पूर्व फिलाडेल्फ़िया में लगाये हैं और वे वहा ठीक तरह से जम गये हैं। इस पर मि० किवन्सी ने कहा:—"मेरे बाग में भी ये पौधे लगाने की मेरी इच्छा है। मेरा विश्वास है कि इस परगने में वे बहुतायत से होंगे।" इस पर फ्रेंकलिन बोला:—"यदि आप की इच्छा है तो कुछ कलमें * मैं भेजूँ" इस के उत्तर में किवन्सी ने कहा:—"आपकी बड़ी कृपा होगी, मुझे एकाध बार आप को कष्ट देना पड़ेगा।" यह बात इतनी ही होकर रह गई। कुछ सप्ताह पश्चात् फ्रेंकलिनके बोस्टन आढ़तिये ने मि० क्विन्सी को लिखा कि फ्रेंकलिन के आपके

---

* किसी पेड़ की टहनी जो दूसरी जगह लगाने के लिये काटी जाय।

लिये भेजे हुए दाख के पौधे एक जहाज़ में आ गये हैं उन को कहाँ भेजा जाय यह लिखने की कृपा कीजिये। कुछ दिनो बाद डाक द्वारा एक दूसरी पार्सल आई। दो वर्ष के पश्चात् फ्रैंकलिन फिर बोस्टन गया तो मि० क्विन्सी आभार प्रदर्शन के लिये उसके पास आया और कहा किः—"मैंने आपको बहुत कष्ट दिया।" इस के उत्तर में फ्रैंकलिन बोला—"नहीं साहब, कुछ नहीं; यदि ये पौधे आप के यहां लग जायँगे तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा। अपनी बात चीत हुई उस समय मैंने सोचा था उस की अपेक्षा मुझे बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ा है। मैंने सुना था कि शहर में ये पौधे मिल सकते हैं परन्तु तलाश करने से नहीं मिले तब मैंने यहां से ७० माइल की दूरी पर उन्हे एक गांव से मँगवाया।"

यह बात सुन कर युवक आडम्स दंग रह गया। वह लिखता है किः—"फ्रैंकलिन ने सारे शहर में पौधों को ढूंढने का परिश्रम किया और जब ये पौधे वहां न मिले तो सत्तर माइल की दूरी पर उसने उनको एक गाँव से मँगवाये। फिर इन पौधों को सारे परगने में बढ़ा कर संसार का उपकार करने की इच्छा से, जिन से उस का यत्किञ्चित परिचय था और जिन्होंने उस पर कोई उपकार किया था ऐसे सब मनुष्यो को एक २ बण्डल समुद्र के मार्ग द्वारा और कदाचित् वह खो जाय इस ख़याल से एक २ बण्डल डाक़ द्वारा भेजा।" यह उसकी काम करने की अद्भुत रीति, स्मरणशक्ति, और दृढ़ता का अद्भुत उदाहरण है।

अनेक लोकप्रिय मनुष्यों के सम्बन्ध में ऐसा कहा जाता है कि वे अपने घर में सबके अप्रिय होते हैं, और घर से बाहर उनकी प्रशंसा होती है। किन्तु, फ्रैंकलिन के लिये यह बात नहीं थी। जिनका इससे अधिक सहवास था वे इसको अधिक चाहते

थे। अपने इष्ट मित्रों के प्रति फ्रैंकलिन का बड़ा स्नेह और अनुराग था। उसकी माता, बहिन, भाई और दूसरे आत्मियों के लिखे हुए उसके नाम के पत्र बहुत ममता पूर्ण और मनोहर हैं। फ्रैंकलिन की उन्नति के समय उसकी माता धीरे २ कौटुम्बिक आपदाओं के कारण मरणोन्मुख होती जा रही थी। ८४ वर्ष की आयु के पश्चात् भी वह अपने पुत्र को पत्र लिखती और वह उसको लिखता।

ता० १ अक्टूबर सन् १७५१ के पत्र में उसकी माता लिखती है कि:—"अपने गाँव के लोगों में तेरी इतनी अधिक प्रतिष्ठा है कि तुझको सबने "ओल्डर मैन" (गाँव का मुखिया) की तरह चुन रक्खा है। यह सुन कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है यदि मैं यह न जानती हूँ कि इसका क्या अर्थ है या इससे अधिक सम्मान का पद तुझे मिलेगा या नहीं तो भी मैं आशा करती हूँ कि तू ईश्वर पर भरोसा रखेगा और उसकी तुझ पर जो कृपा-दृष्टि है उसके लिये उसका आभार मानेगा। क्योंकि उसने तुझको बहुत कुछ दिया है, और उसके लिये मैं अन्तःकरण से उसका आभार मानती हूँ। मुझे आशा है कि तू इस ढंग से बर्ताव रखेगा कि जिससे प्रत्येक स्थान पर लोग तुझसे प्रसन्न रहें। मुझको दमे का रोग है उसके कारण प्रायः निर्बलता बनी रहती है। इससे अधिक समय तक बैठ कर मुझसे लिखा नहीं जाता, तो भी मुझको रात्रि के समय अच्छी नींद आती है। मेरी खाँसी मिटने लगी है, और भोजन पर भी कुछ रुचि हो चली है। मेरे बुरे अक्षरों पर तू ध्यान मत देना। अनेक आदमी मुझसे कहते हैं कि मैं इतनी वृद्ध हो गई हूँ कि पत्र नहीं लिख सकती। मेरी आँखों से मुझको बराबर नहीं दिखाई देता और कान से भी इतना कम सुनने लगी हूँ कि घर में की गई बात भी मुझ से नहीं सुनी जाती।"

इस पत्र के नीचे फ्रैंकलिन की बहिन जेन मीकल उसको इस प्रकार लिखती है:—"माता कहती है कि मुझसे अधिक नहीं लिखा जाता इस कारण मैं अपने हाथ से लिखती हूँ कि बन्धुवर! तुम्हें उन्नत देखकर मुझे बड़ा हर्ष होता है। मेरा विश्वास है कि ईश्वर तुमको जैसे २ अधिक सम्मान देंगे वैसे २ तुम संसार का अधिकाधिक उपकार करोगे।"

फ्रैंकलिन की वृद्धा माता मई सन् १७५२ में स्वर्गगामिनी हुई। उसकी मृत देह उसके पति के पास बोस्टन में गाड़ी गई। उनकी समाधि पर फ्रैंकलिन ने नीचे लिखा हुआ पत्थर रखा:—

जोशिया फ्रैंकलिन और उसकी स्त्री अबीया इस स्थान
पर गाड़े गये हैं। दाम्पत्य जीवन में ५५ वर्ष
तक वे बड़े प्रेम से शामिल रहे और
उन्होंने बिना किसी जागीर अथवा
लाभकारी धन्धे के हमेशा
परिश्रम और प्रामाणिक
उद्योग पूर्वक ईश्वर
के आशीर्वाद से
अपने बड़े कुटुम्ब का सुख पूर्वक निर्वाह किया और तेरह
पुत्र तथा सात पौत्रों का बड़े स्नेह और इज्जत
से पालन किया। पाठक! इस उदाहरण
से अपने उद्योग और जीवन में
उत्तेजना लें और अनागत
विधाता पर भरोसा
रखें। यह नर-
पुङ्गव बड़ा
बुद्धिमान

और नीति निपुण था। साथ ही यह महिला-रत्न भी बड़ी
विचारशील और सदाचारिणी थी। उनका
सबसे छोटा पुत्र उनकी यादगार में
श्रद्धापूर्वक यह पत्थर रखता है।

जोशिया फ्रेंकलिन	अबीया फ्रेंकलिन
जन्म १६५५, मृत्यु १७४४	जन्म १६६७, मृत्यु ७५१२
आयु ८९ वर्ष	आयु ८५ वर्ष

स्नेहमयी माता की मृत्यु के पश्चात् फ्रेंकलिन के अपनी बहिन जेन को लिखे हुए पत्र बहुत ही स्नेह भरे और आनन्द-दायक हैं। एक समय उसके कन्या होने पर उसने लिखा कि:— "मेरी नयी भानेज को शुभाशीष। दाँत निकले पर उस के मुंह में रखने को इसके साथ एक सोने का टुकड़ा भेजता हूं उसे स्वीकार करना। दाँत आने पर चावने को मेवा लेते समय यह काम आवेगा।" दूसरी बार जब बहिन का लड़का मर गया तो फ्रेंकलिन ने लिखा कि:—"जैसे २ हम अधिक जीवित रहते हैं वैसे २ ईश्वर की प्रेरणा से ऐसी २ विपत्तियाँ अधिकाधिक होने की सम्भावना होती जाती है। यदि इस पर हम विचार करें और ऐसा समझें कि हमारा ईश्वर की शरण में होने का कर्त्तव्य है तो भी जैसा कि हम से पहिले लाखों मनुष्यों ने सहन किया है और हमारे पीछे से लाखो मनुष्य सहन करेंगे वह हम पर आ पड़ती है। तब हमारे सिर पर वास्तव में एक प्रकार की आपत्ति आ पड़ी है ऐसा प्रतीत होता है। चाहे जितनी ममता से सान्त्वना दी जाय तो भी अपने को शान्ति नहीं मिलती। मेरा अपना अनुभव तो यह है कि केवल स्वाभाविक स्नेह ही हम को सब से श्रेष्ठ सान्त्वना देने वाला है। मैं जानता हूँ कि तुम अपनी समझ के कारण अपना दुःख कम कर सको ऐसी

बहुत सी दलीलें, निमित्त और कारण तुझ को इस से पहिले सूझ आई होंगी और इस से मैं उन्हे फिर बता कर तेरे दुःख को ताजा नहीं करना चाहता। मैं यह देख कर प्रसन्न होता हूँ कि तू अपने दुःख में ईश्वर को नहीं भूलती और तेरे जो बालक जीवित हैं उनको ईश्वर का प्रसाद समझती है।"

इसके पश्चात् फ्रेंकलिन के कुटुम्ब में एक और मृत्यु हुई। तब उसने लिखा कि:—"जैसे २ अपनी संख्या कम होती जाती है वैसे २ हमें अपने पारस्परिक-प्रेम में वृद्धि करनी चाहिये। ऐसा करना हमारा कर्त्तव्य है इतना ही नहीं बल्कि यह अपने हित की बात है कारण कि आत्मियों में जैसे २ अधिक प्रेम होता है वैसे २ संसार भी उनका अधिकाधिक सम्मान करता है"।

मृत्यु के विषय में फ्रेंकलिन हमेशा आनन्द में बोलता। इसका भाई जान मर गया तब उसके लिये विलाप करने वाले एक मनुष्य ने फ्रेंकलिन को लिखा कि:—"जो दाँत निकलवा दिये जाते हैं उन से बड़ी प्रसन्नता से छुटकारा मिलता है। कारण कि उनके साथ दु.ख चला जाता है। जो मनुष्य सारे शरीर से मुक्त हो जाता है वह सब दुःखों से और दुःख तथा रोग के कारणों से मुक्त हो जाता है। अपना शरीर दुःख सहन करने योग्य है। हमेशा होती रहने वाली महमानदारी में अपना और अपने मित्रों का निमन्त्रण था। उनकी पहिले तैयार होने से वह अपने आगे गये हैं। क्योंकि अपन सब एक साथ सुविधा से नहीं जा सकते। जब उसके पीछे हमको भी जाना है और उस से कहाँ मिलना होगा यह भी हम जानते हैं तो हम को क्यों दु.खित होना चाहिये ?"

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि फ्रेंकलिन चाहे जिस कार्य्य में लगा होता तो भी विद्या सम्बन्धी अभ्यास करना वह

नहीं भूलता था। वह केवल बिजली का ही अभ्यास करता हो सो नहीं। वह हमेशा पुस्तकें पढ़ने में निमग्न रहता था। मि० लोगन को लिखी हुई उसकी चिट्ठियों पर से ऐसा जान पड़ता है कि इस मनुष्य के पास से वह बार बार पढ़ने को पुस्तकें लिया करता और पढ़ चुकने पर थोड़ी बहुत टीका टिप्पणी के साथ वापिस लौटा देता था। लोगन वृद्ध और अशक्त था। बिजली के नये प्रयोग उस को बताने और उसके कम्पित शरीर पर बिजली का प्रभाव देखने को अपना बिजली निकालने का औजार फ्रेंकलिन लोगन के घर पर ले जाया करता था।

फ्रेंकलिन ने अपने धार्मिक विचारों को कभी न बदला था। परन्तु, उसको विश्वास होगया था कि मनुष्य के काम काज में धर्म एक खास बात है। सन्देह पर आक्रमण करने से सन्देह मिट कर सच्चा धर्म नहीं निकलता। परन्तु, सत्य का विस्तार होने से सन्देह दूर होता है। सत्य बात जानने में आने से मन में से सन्देहास्पद विचार और भय अपने आप निकल जाते हैं। अपने मित्रों के साथ बात चीत में वह कहता कि ससार में ईश्वर का अस्तित्व अवश्य है। परन्तु, कोई धर्म विशेष उसका रचा हुआ नहीं है।

प्रकरण १५वां

डाक विभाग का उच्चाधिकारी

१७५३ ई०

फ्रेंकलिन और लोक सेवा—फ्रेंकलिन की भाषण देने की रीति—राज्य सभा में सभासद्—रिश्तेदारों को नौकरी देने के विषय में फ्रेंकलिन के विचार—इण्डियन लोगों के साथ क़ौल क़रार करने को ओहियो जाना—अमेरिका का डिप्टी पोस्ट मास्टर जनरल नियुक्त हुआ—डाक विभाग में किये हुए सुधार और उसके परिणाम—व्यापारी मण्डल में कारीगरों को प्रवेश न करने के लिये फ्रेंकलिन के विचार—कप्तान की लड़की को दी हुई टोपी ।

फ्रेंकलिन को अवकाश का समय तो मिल गया । परन्तु, वह उसको पढ़ने लिखने और अभ्यास करने में न लगा सका। वह बहुत ही नाहीं करता परन्तु, लोग दवाव डाल कर कोई न कोई काम डाल ही देते । पेन्सिल्वेनियाँ प्रदेश की रक्षा हो सके ऐसी तैयारियें करने में फ्रेंकलिन ने जो परिश्रम किया था उससे प्रत्येक जाति और श्रेणी के मनुष्य उस पर बहुत प्रसन्न होगये थे ।

ए—ला—शपेल की सन्धि से लोगों की दहशत जाती रही इसी अर्से में अर्थात् सन् १७४८ की वसन्तु ऋतु में फ्रेंकलिन और डेविड टाल का साझा नक्की हुआ था। अब से किसी

ओहदे की नौकरी न करने का फ्रेंकलिन ने दृढ़ निश्चय कर लिया था। किन्तु, फिर भी लोगों के आग्रह और दबाव के कारण उसका अपना निश्चय अधिक समय तक न रह सका। फ्रेंकलिन लिखता है कि—"मुझको अब निठल्ला हुआ जान कर लोगों ने मुझको अपने उपयोग में लेना शुरू किया। राज्य की प्रत्येक शाखा में मुझ पर कुछ न कुछ बोझ डाला गया।" परगने के हाकिम ने मुझको "जस्टिस आफ़ दी पीस" नियुक्त किया, नगर के कारपोरेशन ने अपना सभासद् बनाया, और कुछ समय के पश्चात् 'एल्डर मेन'। नागरिकों ने अपनी ओर से सभासद् की भांति चुन लिया।"

राज्य सभा में फ्रेंकलिन सभासद् की तरह था उस समय राज्य सभा में क्या २ बातें हुईं यह जानने का कोई साधन नहीं। क्योंकि उस समय सभासदों के भाषण का नोट नहीं लिया जाता था। कदाचित नोट लिया भी गया हो, परन्तु फ्रेंकलिन वाद विवाद में बहुत थोड़ा भाग लेता था। आरम्भ में वह अच्छा वक्ता नहीं था। कभी २ बोलता था सो भी बहुत थोड़ा, और अटक २ कर। किन्तु, लेखों की भांति उसके भाषण का प्रभाव भी लोगों पर बहुत होता था। एक स्थान पर वह लिख गया है कि:—"मैं अच्छा वक्ता नहीं था। प्रभावशाली भाषण तो बिल्कुल ही न दे सकता था। उपयुक्त शब्दों को ढूंढने में बहुत अटकता और भाषा भी पूरी शुद्ध न होती। किन्तु, यह होते हुए भी मैं अपनी सोची हुई बात में साधारणतया पार लग ही जाता था।" फ्रेंकलिन की सफलता का मूल कारण यह था कि दूसरों को बुरा लगे इस तरह वह कभी न बोलता था।

फ्रेंकलिन राज्य मण्डली का सभासद् हुआ तब सभा के कारकुन की जो उसकी जगह खाली हुई वह उसके पुत्र विलियम

को दी गई। फ्रेंकलिन ऐसे विचार का न था कि अपने रिश्तेदारों को कोई जगह देनी या दिलानी न चाहिये। वह अपने सम्बन्धियों और प्रेमियों का बहुत ध्यान रखता था। अपने अधिकार की कोई अच्छी जगह खाली होती तो वह अपने अथवा फ़ाल्जर कुटुम्ब के मनुष्यों में से किसी योग्य मनुष्य को पहिले स्थान देता। उस समय ऐसा न करना भी मानव-धर्म के विरुद्ध गिना जाता था।

फ्रेंकलिन राज्य सभा का सभासद् था उस समय वह और सभा का प्रमुख ओहियो के इण्डियन लोगों के साथ नये क़ौल क़रार नक्की करने को सभा की ओर से प्रतिनिधि नियुक्त हुए। फ्रेंच लोग इण्डियन लोगों के साथ झगड़ा करके अपने प्रदेश को बढ़ाते जारहे थे। फ्रेंचों का बल घटाना और अंग्रेज़ी तथा इण्डियन लोगों के बीच में दृढ़ सम्बन्ध स्थापित करना यही उस क़ौल क़रार का उद्देश था। प्रतिनिधिगण कालोइल स्थान पर मिले और वहां पर उनमें परस्पर क़ौल क़रार नक्की हुए। इस प्रसंग पर की गई फ्रेंकलिन की चतुरता जानने योग्य है। वह लिखता है कि:—"उन लोगों को शराब बेचने की हमने सख्त मनाई करदी थी। जब उन्होंने इस मनाही के विरुद्ध शिकायत की तब हमने उनसे कहा कि यदि तुम क़ौलक़रार नक्की होने तक मदिरा पिये विना रहोगे तो क़ौल क़रार नक्की होजाने पर हम तुमको बहुत मदिरा देंगे..............मदिरा उन्होंने अधिकार की भांति मांगी और उनको दी गई..............सन्ध्या समय उनके मुक़ाम में बहुत गड़बड़ होती इससे वहां क्या हो रहा है यह देखने को प्रतिनिधि गण उस ओर गये। हमें मालूम हुआ कि मैदान में उन्होंने कुछ जलाया था। स्त्रियाँ और पुरुष सब शराब के नशे के चूर थे और आपस में कुश्तम पछाड़ा कर

रहे थे। आग के उजेले में वे अर्ध नग्न और काले काले शरीर वाले मालूम हो रहे थे और बहुत चिल्ला चिल्ला कर एक दूसरे के पीछे लाठी लेकर भाग दौड़ कर रहे थे। उनको चुपचाप न कर सकने के कारण हम अपने मुक़ाम पर आगये। आधी रात को उनमें से कुछ लोग हमारे पास आये और शोर कर कर के फिर शराब मांगने लगे। लेकिन, हमने उनकी ओर कुछ लक्ष्य नहीं दिया। उस समय तो उन्होंने हमको बहुत तंग किया किन्तु, दूसरे दिन जब उन्हें इसका कुछ ज्ञान हुआ तो हमसे माफ़ी मांगने को उन्होंने अपने तीन वृद्ध मनुष्य हमारे पास भेजे जिन्होंने अपनी भूल स्वीकार की। किन्तु, उसका दोष शराब पर डाला और फिर कहा कि:—"ईश्वर ने संसार में जो जो वस्तुएँ बनाई हैं वे किसी न किसी उपयोग के लिये ही हैं। जिस उपयोग के लिये जो वस्तु बनाई गई हो उसको उसी उपयोग में लेना चाहिये।" जब शराब बनाया तो ईश्वर ने कहा कि:— "इण्डियन लोगों के बदमाश होने के लिये यह बनाया गया है" इस लिये उसके अनुसार होना ही चाहिये। "वास्तव में इन जंगली लोगों को नष्ट करने के लिये ईश्वर की ऐसी धारणा रही हो तो कोई आश्चर्य्य नहीं। क्योंकि समुद्र के किनारे रहने वाली इण्डियन जातियों को शराब ने ही नष्ट किया है।"

अभी तक फ्रेंकलिन फिलाडेल्फ़िया के पोस्टमास्टर के ओहदे पर था। इस पद पर रहते हुए उसको बीस वर्ष होने को आये थे। सन् १७५३ में अमेरिका का डिप्टी पोस्टमास्टर जनरल मर जाने से सरकार ने उसके स्थान पर बेञ्जामिन फ्रेंकलिन और विलियम हण्टर इन दो मनुष्यों की नियुक्ति की। उस समय अमेरिका के पोस्ट आफिसो से सरकार को कुछ लाभ न होता था। दोनों व्यक्तियों ने यह स्वीकार किया कि यदि हमें लाभ होगा तो हम ३००, ३०० पौण्ड वार्षिक सरकार को देंगे।

पोस्ट विभाग की त्रुटियां फ्रेंकलिन को अच्छी तरह मालूम हो गई थीं। अतः अपनी चतुराई और बुद्धिमानी से उसने इस विभाग का अच्छा सुधार किया जिसके फल—स्वरूप सन् १७५२ से उसमें लाभ होने लगा।

अपने लड़के को उसने पोस्ट आफिसों का हिसाब देखने पर नियुक्त किया, और बाद मे उसी को फिलाडेल्फिया के पोस्ट मास्टर की जगह दी। उसके पश्चात् एक जगह अपनी स्त्री के किसी सम्बन्धी को दी और फिर अपने एक भाई को। सन् १७५३ की ग्रीष्म ऋतु में वह मुआइना करने को निकला और सिवाय चार्लस्टन गाँव के और २ सब गाँवों के पोस्ट आफिसों की जाँच की। इस जाँच से सारे पोस्ट विभाग का सुधार हुआ और ऐसा मालूम होने लगा मानों सारा विभाग कुछ जागृत सा हो गया हो या नये ढग पर आया हो। चार वर्ष तक फ्रेंकलिन ने उसके सुधार के लिये बड़ा परिश्रम किया। यद्यपि इन चार वर्षों में उसको कुछ लाभ नहीं हुआ बल्कि उल्टे ९०० पौण्ड उसको अपने पास से खर्च करने पड़े। परन्तु, चार वर्ष पूरे हो चुकने पर फ्रेंकलिन की पद्धति का प्रचार होने लगा और खर्च निकाल कर कुछ नफ़ा भी रहने लगा। फ्रेंकलिन लिखता है कि उस समय से आयलैण्ड के पोस्ट विभाग की जितनी आमदनी होती थी उसकी अपेक्षा तिगुना लाभ अमेरिका के पोस्ट आफ़िसों से सरकार को होने लगा। यह लाभ अधिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि सन् १८०१ तक आयलैण्ड में से बीस हज़ार पौण्ड वार्षिक से अधिक लाभ न होता था।

अमेरिका के पोस्ट विभाग में किये हुए फ्रेंकलिन के सुधार अभी तक क़ायम हैं। फ्रेंकलिन की नियुक्ति से पहिले समाचार पत्र मुफ्त मे ले जाये जाते थे। किन्तु, उसने सब से पहिले उन्हीं

पर पोस्ट टैक्स लगाया। उससे पहिले पोस्ट मास्टर देदे उतने ही सामायिक पत्र हल्कारे लोग ले जाया करते थे। यदि कोई डाक व्यय देकर अपना समाचार पत्र भेजना चाहे तो उसका पत्र भेज दिया जाय यह रिवाज फ्रैंकलिन ने ही चलाया। पोस्ट मास्टर की स्वतन्त्रता के कारण उसके अनुचित अधिकार से फ्रैंकलिन को भी हानि उठानी पड़ी थी जिसका इस प्रकार अन्त हुआ। लन्दन में पेनी पोस्ट का रिवाज दूसरे चार्ल्स के समय से चलता था वैसा फ्रैंकलिन ने ही अमेरिका प्रदेशों में सब से प्रथम जारी किया। हल्कारों के द्वारा शीघ्रता से काम हो इसके लिये उसने उनकी संख्या बहुत कुछ बढ़ा दी। फिलाडेल्फिया और न्यूयार्क के बीच में गर्मी के दिनों में आठ दिन मे एक बार और जाड़े में पन्द्रह दिन में एक बार इस प्रकार डाक जाती थी; इसके बदले उसने गर्मी के दिनों में सप्ताह में तीन वार और जाड़े के दिनों में सप्ताह में एक बार इस प्रकार डाक जाने की व्यवस्था कर दी। बोस्टन से फ़िलाडेल्फ़िया पत्रोत्तर मिलने के लिये छः सप्ताह तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। इस अवधि में फ्रैंकलिन ने तीन सप्ताह की कमी कर दी। इसके साथ ही उसने डाक विभाग की दर में भी कमी कर दी। समुद्र पार जाने वाले पत्रो पर उसने १ शिलिङ्ग महसूल नियत किया जो अभी तक क़ायम था। और समुद्र के किनारे २ चाहे जितनी दूर पत्र भेजा जाय, उसका महसूल ४ पेन्स देना पड़ता था। खुश्की के रास्ते जाने वाले पत्रों पर साठ माइल पर ४ पेन्स, एक सौ माइल पर छः पेन्स, दो सौ माइल पर अठारह पेन्स और इससे अधिक प्रत्येक सो माइल पर दो पेन्स अधिक लेने का नियम कर दिया। उस समय डाक ले जाने के मार्ग जंगलों में हो कर केवल घोड़ों पर ही जाने के थे। जिनमें असुविधा होती थी। फ्रैंकलिन ने उनमे भी सुधार करवाया।

इस प्रकार सन् १७५३ के अखीर मे फ्रूँकलिन, राजा, हाकिम कारपोरेशन और जनता की सेवा में लग रहा था। बिजली के सम्बन्ध मे उसकी की हुई खोज के कारण वह अमेरिका में बहुत प्रख्यात हो गया था और पोस्ट मास्टर जनरल के ओहदे से उसका नाम बोस्टन से चार्लस्टन तक घर घर में होगया था। उस समय यूरोप में केवल दो ही अमेरिकन प्रसिद्ध थे। जोनायन एडवर्डस् का नाम धर्म शास्त्रियो में और बेञ्जामिन फ्रूँकलिन का तत्त्ववेत्ताओं में।

उस समय की एक यह बात भी कही जाती है कि फिलाडेल्फिया के व्यापारियों ने नृत्य करने की एक मण्डली स्थापित की और कारीगरों की अपेक्षा हम ऊंचे दर्जे के हैं यह बताने को मण्डली के नियमों में ऐसा नियम रखने की प्रार्थना की कि किसी कारीगर को, उसकी स्त्री को, अथवा लड़के को मण्डली मे दाखिल न किया जाय। मण्डली के नियमों को फ्रेंकलिन ने एक व्यवस्थापक को दिखला कर उससे अपनी सम्मति मांगी और कहा कि:—यह नियम तो ऐसा है कि वह ईश्वर को भी मण्डली में से प्रथक् कर देने को कहता है। इस व्यवस्थापक ने पूछा:—"सो किस तरह ?" फ्रेंकलिन ने उत्तर दिया:—"इस तरह कि सारे जगत् में सब से बड़ा कारीगर तो वही है बाइबिल में कहा है कि "ईश्वर ने नाप और वज़न से सारा संसार बनाया है" व्यापारी इससे शरमा गये और कारीगरो को मण्डली में दाखिल न करने का नियम निकाल दिया गया।

दूसरी एक बात फ्रेंकलिन स्वयम् इस प्रकार लिखता है:—"केप" "मे" * और फिलाडेल्फिया के बीच में फिरते हुए एक छोटे से जहाज़ के कप्तान ने हमारे लिये कुछ काम किया। लेकिन

* "मे" नामक खाड़ी।

अपनी मजदूरी लेने से इन्कार कर दिया। कप्तान के एक कन्या है, ऐसी मेरी स्त्री को खबर मिलने पर उसने उसको भेंट स्वरूप एक नये ढंग की टोपी भिजवाई। तीन वर्ष के पश्चात् केप 'मे' के एक वृद्ध कृषकके साथ वह कप्तान मेरे घर पर आया तबउस टोपी की बात निकाली और कहा कि मेरी पुत्री को यह टोपी बहुत पसन्द आई परन्तु हम लोगों को यह बहुत मँहगी पड़ी। मैंने पूछाः—"यह कैसे ?"

कप्तान ने उत्तर दियाः—"जब मेरी पुत्री इस टोपी को लगा कर देवालय में गई तो वहां उसकी इतनी अधिक प्रशंसा हुई कि सारे गांव की लड़कियों ने फ़िलाडेल्फ़िया से ऐसी टोपी मँगाने की इच्छा प्रगट की। मैंने और मेरी स्त्री ने गिन कर देखा तो इन टोपियों के खरीदने में एक सौ पौण्ड से कम खर्च नहीं होगा ऐसा मालूम हुआ।"

बीच ही में कृषक उठा और बोलाः—"यह तो ठीक है लेकिन तुम पूरी बात क्यों नहीं कहते। मैं तो जानता हूं कि इस प्रकार होने पर भी इस टोपी से अपने को लाभ हुआ है कारण कि अपनी लड़कियें फिलाडेल्फ़िया से टोपी खरीद सकें इसके लिये वहां के बाजार में बेचने के लिये ऊन के क़सीदे का काम होने लगा है। तुम जानते हो कि यह धंधा उत्तरोत्तर बढ़ता जायगा जिस से और भी अधिक लाभ होगा।"

प्रकरण १६वां

सात वर्ष का युद्ध

सन् १७५४-१७५५

सात वर्ष के युद्ध के कारण—उपनिवेशों के प्रतिनिधि की भाँति आल्वेनी में—मिलो नहीं तो मरे—उपनिवेशों के सम्मिलित करने के लिये फ्रैंकलिन की योजना और उसके अस्वीकृत होने के कारण—पश्चिमीय प्रदेशों में अँग्रेज़ों को वसाने की योजना—फ्रैंकलिन की हुई टीका—अमेरिका के विषय में इंगलैण्ड में अज्ञान—वोस्टन जाना—पेन्सिलवेनिया का प्रान्तीय शासक—गवर्नर मोरिस और उसका स्वभाव—किवन्सी ने रुपया दे दिया—जनरल ब्रेडक का पेन्सिलवेनिया पर एतराज़—फ्रैंकलिन का किया हुआ समाधान—गाड़ियां देना और दाना, घास तथा खुराक की व्यवस्था—ब्रेडक का पराजय—फ्रैंकलिन के विषय में ब्रेडक ने सेक्रेटरी आफ़ स्टेट पर अपना मत प्रगट किया—केथोराइन 'रे' को फ्रैंकलिन का लिखा हुआ पत्रोत्तर।

फ्रैंकलिन का किया हुआ पोस्ट आफ़िसो का सुधार विपत्ति के समय बहुत काम आया। क्योंकि एकत्र हुए जंगली और सुधरे हुए बैरियो की फौज से बचने की तय्यारियाँ करने के के लिये उपनिवेशों को दो एक वर्ष के पश्चात् उसकी आवश्यकता हुई और बचाव की तय्यारियाँ करने के लिये गाँव गाँव में बचाव

का सम्बन्ध होने लगा। उस में उन्हे बड़ी सुविधा हुई। जो झगड़ा "सात वर्ष का युद्ध" के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है और जिस से अमेरिकन प्रदेशों को इङ्गलैण्ड या फ्रांस की मातहती मे रहने का निश्चय हुआ उसी युद्ध की इस समय तय्यारी हो रही थी।

उत्तरी अमेरिका के लोगों की चिरकाल से यह इच्छा थी कि वहां से फ्रेंच लोगों को निकाल दिया जाय। फ्रेंच लोग उनको मछलियाँ नहीं पकड़ने देते थे। पश्चिमीय प्रदेशों पर आक्रमण करने की धमकी देते थे और उनके आदमियों को पकड़ पकड़ कर तंग किया करते थे। वे रोमन केथोलिक* थे। ब्रिटेन निवासियो से उनका घोर वैमनस्य था और निरकुश होने के कारण वे बहुत बलवान हो गये थे। केनेडा उन के ताबे में था, मिसिसिपि नदी की सीमा का वे दावा करते थे और नियाग्रा से मेक्सिको की खाड़ी तक क़िले की पंक्तियाँ बाँध कर अँग्रेज़ों को नोचे के प्रदेशो में भेज देने की तैयारियाँ कर रहे थे।

ए-ला-शपेल की संधि होने का कारण यह था कि फ्रांस और इङ्गलैण्ड लड़ाई से थक गये थे। फ्रांस ने सामुद्रिक प्रदेश खोया था और इङ्गलैण्ड के हाथ से उसका स्थल प्रदेश जाने ही वाला था।

इस प्रकार की गई संधि इतने थोड़े समय तक चली कि सन् १७५३ में उपनिवेशो को फ्रास के साथ सब से बड़े और अन्तिम युद्ध की तय्यारी करनी पड़ी। इस युद्ध को यूरोप में "सात वर्ष का युद्ध" कहा जाता है। यूरोप मे युद्ध आरम्भ हुआ उस से दो वर्ष पूर्व यह शुरू हुआ था। जो पराक्रम करने से प्रुशिया के राजा

---

* धर्म विशेष।

दूसरे फ्रेडरिक को "महान"* की पदवी मिली थी वह पराक्रम उसने इसी युद्ध में किया था। बैरियों की, गोलियो की आवाज़ जिस वाशिंग्टन के कान मे गायन की भाँति लगती थी उसे इस वीर पुरुष ने पहिले पहिल इसी युद्ध में सुनी थी। इस युद्ध के सब कारणों का वर्णन करने में तो ग्रन्थ के ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं अतएव जिन कारणों का फ्रेंकलिन के चरित्र से सम्बन्ध है उसी का इस पुस्तक में विचार किया जायगा।

फ्रांस के साथ युद्ध का पूर्ण निश्चय हो जाने पर इण्डियन लोगों के सरदारो से मिलने और उन की सम्मति से देश रक्षा की व्यवस्था निश्चित करने को सन् १७५४ के जून मास मे आल्वेनी नामक गाँव में २५ उत्तरी उपनिवेशो के प्रतिनिधियों की एक सभा हुई। इस सभा में पेन्सिलवेनियां की ओर से जान पेन, बेञ्जा-मिन फ्रेंकलिन, रिचर्ड पिटर्स और आइभाक नोरीस इन चार व्यक्तियों को भेजा गया। इस में मसाच्युसेट्स की ओर से टामस हचिन्सन आया। यह व्यक्ति आगे चल कर मसाच्यु-सेट्स का उच्चाधिकारी हुआ। इसके साथ फ्रेंकलिन का बहुत सम्बन्ध रहा है। प्रतिनिधि सभा का सभापति जेम्स डिलेन्सी नामक व्यक्ति चुना गया था। आल्वेनी गाँव, अंग्रेज लोगों के मित्र और फ्रांस के दुश्मन इण्डियन लोगों से समूह से भर गया था। सब प्रतितिधिगण इन लोगो को प्रसन्न करने के लिये कुछ न कुछ भेट करने की वस्तु लाये थे।

फ्रेंच लोग वास्तव में युद्ध करने वाले हैं ऐसा जब फ्रेंकलिन को मालूम हुआ तो उनके आक्रमण से बचने के लिये सब से सरल उपाय करने को उसकी इच्छा बलवती हो गई। उसको

---

* The Great—Fredrick the Great.

ऐसा जान पड़ा कि उत्तरी अमेरिका में फ्रेंच लोगों की सत्ता एक ही हाथ में है और इसी से वे दृढ़ हैं। इङ्गलैण्ड की सत्ता जुदे २ हिस्सों में बँट रही है और इसी से वह चाहिये जैसी बलवान नहीं है। उस समय अँग्रेज़ी उपनिवेश एक दूसरे से भिन्न थे और उन में परस्पर द्वेष भाव भी था। फ्रेंकलिन ने सोचा कि सब उपनिवेश एकत्र न हुए तो हम फ्रेंच लोगो का मुकाबिला न कर सकेंगे। आल्बेनी की सभा में जाने से पहिले उसने अपने गजट में इस आशय का एक लेख प्रकाशित किया और उदाहरण स्वरूप मे एक चित्र भी दिया। यह चित्र एक ऐसे सांप का था जिसके सात टुकड़े कर रखे थे क्योंकि उपनिवेशो की संख्या भी सात ही थी। प्रत्येक टुकड़े में एक २ उपनिवेश का आदि अक्षर था और सब टुकड़ों के नीचे बड़े २ अक्षरों में लिखा था कि:—"मिलो नहीं तो मरे" इसके अतिरिक्त फिलाडेल्फिया से आलबेनी जाते हुए मार्ग में उस ने सब प्रदेशों को एक हो जाने के सम्बन्ध में एक और योजना की थी। कतिपय मित्रों ने इस योजना को पसन्द की, इस कारण उसको प्रतिनिधि सभा में उपस्थित किये जाने का निश्चय हो गया।

आल्बेनी आते हुए उसको ख़बर मिली कि सब प्रतिनिधियों ने प्रदेश एकत्र होजाने की आवश्यकता प्रगट की थी और उन में से कुछ ने उस का बड़ा पक्ष लिया था। इस विषय पर विचार करने को शीघ्र ही सात मनुष्यों की एक उपसभा स्थापित हुई। इस उपसभा में पेन्सिलूवेनियां की ओर के प्रतिनिधियों में से सब ने फ्रेंकलिन को पसन्द किया। उस ने यह योजना उपसभा में उपस्थित की। दूसरे सभासदों की योजना के साथ उस का मिलान करने पर फ्रेंकलिन की योजना ही सब को ठीक लगी। उपसभा ने उस को पसन्द कर के कुछ संशोधन किया और फिर

उसको खास सभा में प्रवेश किया। बारह दिन तक उस पर वाद विवाद होने के पश्चात् मुख्य सभा ने भी उसको पसन्द कर लिया, परन्तु पार्लमेण्ट और राजा की स्वीकृत के बिना कुछ नहीं हो सकता था इस कारण स्वीकृत के लिये वह योजना आगे भेजी गई।

जिस योजना से अमेरिकन प्रदेश आगे एकत्रित हो कर एक हो गए, उसी से मिलती जुलती फ्रेंकलिन की यह योजना भी थी। इस में मुख्य २ बातें ये थीं कि प्रत्येक प्रदेश स्वतत्र है परन्तु युद्ध के समय सब को एक होकर एक खज़ाने से एक जनरल की अध्यक्षता में एक प्रजा की भांति युद्ध करना पड़ेगा और सब का सामान्य राज प्रबन्ध राजा की इच्छा से नियुक्त हुआ "प्रेसीडेण्ट जनरल" करेगा। उपनिवेशो का नियम बनाने वाली सभाओ के चुने हुए ४८ सभासदों की एक खास सभा एकत्रित हुए प्रदेशों की पार्लमेण्ट की भाति काम करेगी। इस पार्लमेण्ट का अधिवेशन वर्ष में एक बार होगा। किसी खास प्रसंग पर प्रेसीडेण्ट जनरल और सात सभासद् सारी सभा को बुला सकेंगे। किन्तु, सभासदों का निर्वाचित किया हुआ काम प्रेसीडेण्ट जनरल की सम्मति के बिना अमल न आ सकेगा। सभा की सम्मति के अनुसार प्रेसीडेण्ट जनरल को इण्डियन लोगों के साथ युद्ध और संधि करनी पड़ेगी। उस सभा के बनाये हुए नियम इङ्गलैंड की सभा के नियमों से मिलते जुलते होने चाहिये और वे भी ऐसे कि जिन्हे राजा पसन्द कर ले।

यह योजना बहुत लोगों को पसद आई। आल्बेनी से लौटते हुए फ्रेंकलिन न्यूयार्क आया तब उस से इतने आदमी मिलने को आते कि उसको क्षण भर का भी अवकाश न मिलता। ऐसी

उत्तम योजना बनाने के लिये सब लोग उस की बड़ी प्रशंसा करते, मुबारिकबादी देते और बड़ा सम्मान तथा प्रेम दिखाते। यह सब होते हुए भी इस योजना का यथावत् विस्तार नहीं हुआ; कारण कि इङ्गलैंड में उसके सम्बंध में लोगों का ऐसा मत था कि यदि इस योजना का प्रसार होगा तो लोगों का बल बढ़ जायगा और सब प्रदेश बलशाली हो जाँयगे।

अधिकारियों को ऐसा लगा कि इस का प्रसार हो जाने से अपनी सत्ता घट जायगी। जनता को ऐसा लगा कि इस का प्रसार होने से राजा का बल बढ़ जायगा। प्रादेशिक विभाग के अध्यक्ष को यह योजना प्रधान मण्डल के सन्मुख पेश करने योग्य नहीं लगी। अतः उसने इस के स्थान पर एक और ऐसी योजना बनाई जिस से युद्ध के समय इन प्रदेशों को वही सहायता मिली। परंतु आगे चल कर इस का परिणाम अच्छा नहीं हुआ। क्योंकि उस में एक यह नियम बड़ा कड़ा था कि युद्ध के समय यदि रुपए की आवश्यकता हो तो इङ्गलैण्ड के खजाने से लिया जाय। परंतु, युद्ध समाप्त होजाने के पश्चात् सब प्रदेशों पर किसी भी प्रकार का कर लगा कर इङ्गलैंड अपना रुपया वसूल करले।

उस समय अमेरिका के विषय मे इङ्गलैंड में बहुत अज्ञान फैला हुआ था। प्रदेशों का नाम तक अच्छी तरह न जानता हो ऐसा मनुष्य भी उनका प्रधान शासक हो सकता था। बहुत से अंगरेज स्त्री-पुरुष ऐसा समझते थे कि अमेरिका में रहने वाले सब स्त्री पुरुष काले हैं। लार्ड स्टरलिंग एक पत्र में लिखता है कि मुझे अमेरिका निवासी की भांति लन्दन में एक स्त्री ने पहिचाना था तब मुझे गोरा देख कर उस को बड़ा आश्चर्य हुआ था।

सन् १७५४ की बसन्त ऋतु पूरी होने को थी तब फ्रेंकलिन फिर अपने शहर बोस्टन में गया। वहाँ उस ने वह योजना देखी

जिसके द्वारा प्रदेशो को लड़ाई के अवसर पर एकत्रित कर के आर्थिक सहायता देने और सारे खर्च को वसूल करलेने की व्यवस्था सोची गई थी। बोस्टन के सूबा शर्ली ने यह योजना फ्रेंकलिन को घरू तौर पर बतलाई। यह योजना कैसी आपत्ति से भरी हुई है और उस से कैसे बुरे परिणाम होने की सम्भावना है यह फ्रेंकलिन समझ गया। उस ने इस सम्बंध में शर्ली को अपने विचार पत्र द्वारा लिख कर बतलाये। लड़ाई पूरी हो जाने पर पार्लमेण्ट ने स्टाम्प का नियम बना कर सब प्रदेशो पर कर लगाया उस समय उसका प्रतिवाद करने को जो दलीलें की गईं थीं उन सब को फ्रेंकलिन ने पहिले ही से अपने पत्रों में लिख दिया था। उस के गवर्नर शर्ली को लिखे हुए पत्रों का सारांश यह था कि ये प्रदेश अंग्रेजी हैं और इङ्गलैंड से यहाँ बसने को आये हैं इस कारण मेग्नाचार्टा * के अनुसार अंग्रेजों को मिले हुए अधिकारों में से वे पृथक् नहीं हो सकते। इङ्गलैंड की पार्लमेण्ट में प्रादेशिक सभासद् नहीं हैं इसलिये वह स्वेच्छा से प्रदेशों पर कर नही लगा सकती। बैरी के आक्रमण से प्रदेशो की स्वतंत्रता छिन जायगी और उन का जीवन आपत्तिमय बन जायगा। इसलिये दूर बैठी हुई इङ्गलैंड की पार्लमेण्ट की अपेक्षा यहाँ वाले इस बात को अधिक उत्तम रीति से जान सकते हैं कि बचाव के लिये कितना और कैसा लश्कर तैयार करना चाहिये और खर्च के लिये रुपया इकट्ठा करने को प्रदेशों पर कैसा और कितना कर लगाना चाहिये। प्रदेशों की सम्मति लिये विना उन पर उनकी इच्छा के विरुद्ध कर लगाना—उनको ब्रिटिश प्रजा की तरह नहीं, बल्कि पराजित प्रजा की भांति समझना होगा। स्वदेश में रहने वाले अंग्रेजों पर पार्लमेण्ट में उनके भेजे हुए सभासदो द्वारा उनकी सम्मति

---

* Magna Charta = अहदनामा।

लेकर कर लगाना और प्रदेशों में रहने वाले अंग्रेजों पर उन की व्यवस्थापिका सभा की सम्मति न लेना यह स्वदेश में रहने वाले और प्रदेशों मे बसने वाले अंग्रेजों के बीच में भिन्न भाव रखने के समान है। यह भेद-भाव अनुचित गिना जायगा और उस का परिणाम अच्छा नहीं होगा।

बोस्टन से वापिस आकर सन् १७५५ में फ्रेंकलिन प्रदेशों के कार्य्य वाहुल्य मे फँस गया। इस समय पेन्सिलवेनियां के सूबे की जगह चाहने योग्य न थी। व्यवस्थापिका सभा और सूबा में परस्पर खटपट चलती रहती थी। सूबे के स्थान पर कोई लम्बे समय तक नहीं टिकता था। उसको यह असुविधा होती थी कि कवेकर पंथ के लोग लड़ाई के काम के लिये खर्च की मजूरी नहीं देते थे। किन्तु, कवेकर लोगों का झगड़ा अधिक समय तक न निभा। पेसिल्वेनियाँ के सूबा और राजसभा के बीच में इसके लिये बार बार झगड़ा होता रहता था। सूबा पेन कुटुम्ब के इतने दबाव मे था कि इच्छा न रहते हुए भी उसको उन के पक्ष में रहना ही पड़ता था। व्यवस्थापिका सभा के सभासदों को पेन कुटुम्ब की माँग ऐसी अनुचित लगती थी कि उसका मुक़ाबिला न करके चुपचाप बैठे रहना वे नीचता और लज्जा से भरा हुआ गिनते थे।

सात वर्ष के झगड़े के समय प्रत्येक प्रदेश में अधिक कर लगाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस कारण पेन्सिलवेनियाँ में सूबा और व्यवस्थापिका सभा का पुराना पारस्परिक झगड़ा बढ़ गया। उस समय के सूबा हेमिल्टन ने तंग आ कर १७५४ के जून मास में अपने पद से त्याग पत्र दे दिया तब उस के स्थान पर रावर्ट हण्टर मोरिक नाम का एक फ्रेंकलिन का परिचित व्यक्ति नियुक्त हुआ। फ्रेंकलिन जब बोस्टन की ओर जा रहा था तब मोरिस उसको न्यूयार्क में मिला और उस से पूछा कि "मुझे

अपना कार्य करने में कुछ अड़चन तो न पड़ेगी ?" फ्रेंकलिन ने उत्तर दिया:—"ना, न पड़ेगी, इतना ही नहीं बल्कि तुम व्यवस्थापिका सभा से मिल कर चलोगे तो बहुत सुखी रहोगे।" इस पर सूबा ने फिर कहा:—"मेरे प्यारे मित्र, झगड़ा न करने से तुम क्यों रोकते हो ? तुम जानते हो कि मुझे झगड़ा करना अच्छा लगता है—इस में मेरा मनोरञ्जन होता है। किन्तु, फिर भी तुम्हारी बात मानने को मैं वचन देता हूँ कि जहाँ तक हो सकेगा मैं झगडे से दूर रहूँगा।" कुछ सप्ताह के पश्चात् बोस्टन से लौटती बार फ्रेंकलिन फिर न्यूयार्क आया तब उसे खबर मिली कि मोरिस और व्यवस्थापिका सभा के बीच में झगड़ा शुरू हो गया है। फ्रेंकलिन ने फिर फिलाडेल्फिया आकर व्यवस्थापिका सभा के सभासद् की भाँति अपनी जगह ली तब इस झगड़े में उस को भाग लेना पडा। सूबा के बनाये हुये विचार का खण्डन करने को बनी हुई कमिटी के प्रत्येक अधिवेशन में वह सभासद् नियुक्त होता और रिपोर्ट का मसविदा उस को ही तैयार करना पड़ता। इस रिपोर्ट मे कई बार सूबा को बुरे लगें ऐसे सख्त और कड़े वचन फ्रेंकलिन को लिखने पड़ते थे।

अपने कारण दूसरों की हानि न हो इस को ध्यान में रखते हुए फ्रेंकलिन हमेशा बड़ी उदार नीति रखता था। इस का एक उदाहरण हमें उसी के शब्दों में मिलता है जो उसने मोरिस के स्वभाव के विषय में कहे थे:—"यह मधुर भाषण करने वाला, मिथ्या सिद्धान्त करने में होशियार और वाद विवाद में विजय लाभ करे ऐसे गुण वाला था इस से स्वभावत: उस को झगड़ा करना अच्छा लगता था। बचपन से ही उसको ऐसी शिक्षा मिली थी। मैंने सुना है कि इस का पिता भोजन कर चुकने पर मेज़ के पास बैठता और मनोरञ्जन के लिये अपने बालको को वाद विवाद,

करने की टेव डालता। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि बच्चों को ऐसी टेव डालना कोई बुद्धिमानी नहीं है। मैंने देखा है कि झगड़ा करने वाले और लड़ाकू मनुष्य अपने कार्य्य में प्राय' अकृत-कार्य ही होते हैं और साथ ही अभागे भी।"

इस प्रकार झगड़ा चलता था तो भी फ्रैंकलिन और गवर्नर मोरिस में घरू तौर पर अच्छा सम्बन्ध बना रहा। वह फ्रैंकलिन को कई बार अपने घर पर भोजन करने के लिये निमन्त्रित करता और इस प्रकार अपना समय आनन्द में बिताता।

एक समय सूबा की मंजूरी के बिना लड़ाई के कार्य्य में फ्रैंकलिन ने आवश्यक कार्यवश रुपया लेलिया। दूसरी लड़ाइयों की तरह इस लड़ाई में भी अग्रगण्य होने वाला मसाच्युसेट्स परगना था। क्राउन पाइण्ट पर आक्रमण करने को मसाच्युसेट्स ने तैयारी करना शुरू की थी। इस कार्य्य में सहायता करने के लिये पेन्सिलवेनिया की मण्डली से प्रार्थना करने को किवन्सि फ़िलाडेल्फ़िया आया। पहिले जिन दाख के पौधों का वर्णन किया जा चुका है उन के सम्बन्ध में फ्रैंकलिन के निश्चय का उदाहरण अब भी उस के हृदय में ताज़ा था। इसलिये वह पहिले फ्रैंकलिन की सम्मति लेने को गया कि अब क्या करना चाहिये? फ्रैंकलिन को मिस्टर किवन्सि की प्रार्थना उचित जान पड़ी इस-लिये उस ने उस से शीघ्र ही एक प्रार्थना पत्र लिखवाया और स्वयम् ही उसको व्यवस्थापिका सभा में पेश किया। इतना ही ही नहीं उस के पक्ष में उसे जितना कुछ कहना चाहिये था, उतना कहा। सभाने दस हज़ार पौण्ड की सहायता देने का निश्चय किया। जिस नियम के अनुसार यह सहायता देने का निश्चय किया गया था उसी के अनुसार सरकारी लश्कर को दूसरी अनेक प्रकार की सहायता देने का निश्चय हुआ। कारण कि

जनरल वेडक वरजीनियाँ तक आ पहुँचा था और दूसरे सब प्रदेश उस को सहायता देने की तैयारियाँ करने में लग गये। कर में से पेन कुटुम्ब की जागीरें पृथक् रखने के लिये इस नियम मे एक धारा रखने का गवर्नर का विचार था लेकिन सभासदों ने बड़ा प्रतिवाद किया और उसको न रखने दिया। इससे गवर्नर ने इस नियम पर भी अपनी सम्मति नहीं दी।

इस नाजुक समय पर फ्रेंकलिन ने बड़ी बुद्धिमानी से काम कर के अपनी बात रक्खी। एक दुकान इस शर्त पर खुलने दीगई थी कि यदि किसी समय आवश्यकता हो तो वह गवर्नर की बिना सम्मति के भी रुपया दे दे। किन्तु इस दूकान में चाहिये जितना रुपया न होने से फ्रेंकलिन ने एक वर्ष में अदा कर देने के वादे से पाँच प्रति सैकड़ा ब्याज पर रुपया इकट्ठा कराया। अच्छा ब्याज मिलने के कारण बहुत लोग रुपया देने को राज़ी हो गये और आवश्यकता के अनुसार रुपया बड़ी सरलता से—थोड़ी देर में इकट्ठा हो गया। इस प्रकार मि० क्विन्सि सफल मनोरथ हो कर प्रसन्नतापूर्वक वापिस गया।

पेन्सिलवेनियाँ की व्यवस्थापिका सभा लश्कर को आर्थिक सहायता न दे सकी इस से जनरल ब्रेडक के मन में कुछ अविचार उत्पन्न हुआ। कुछ झूठे और चुगलखोर मनुष्यों ने उसको यह सुझाया कि पेन्सिलवेनियाँ के लोग राजा की सहायना करने से नाहीं करते हैं और गुप्त रूप से फ्रेंच लोगों की सहायता कर रहे हैं। इस से जनरल को बहुत क्रोध आया और वह फ्रेंच लोगों से लड़ाई करने की अपेक्षा पेन्सिलवेनियाँ से मुक़ाबिला करने को अधिक आतुर हो गया इस प्रकार ना समझी* होने से

---

* कुछ का कुछ समझ लेना।

व्यवस्थापिका सभा ने फ्रैंकलिन से ब्रेडक की सेवा में जाकर खुलासा करने की प्रार्थना की। प्रादेशिक हाकिमों के साथ जनरल ब्रेडक का पत्र व्यवहार बिना किसी अड़चन के शीघ्रता से चलता रहे ऐसी व्यवस्था करने को पोस्टमास्टर जनरल की हैसियत से फ्रैंकलिन को ब्रेडक के पास जाना था इसलिये यह निश्चित हुआ कि फ्रैंकलिन को सभा के प्रतिनिधि रूप से नहीं जाना चाहिये बल्कि पोस्टमास्टर जनरल की हैसियत से मुलाकात के समय बात ही बात में सभा की ओर से सब बातों का स्पष्टीकरण करने का कार्य्य फ्रैंकलिन ने अपने सिर पर लिया और अप्रैल मास के आरम्भ मे वह घोड़े पर सवार होकर ब्रेडक की छावनी के लिये प्रस्थानित होगया। उस समय ब्रेडक की छावनी फ्रेडरिक टाउन नामक एक गांव में थी जो फिलाडेल्फिया से १२० मील की दूरी पर था। फ्रैंकलिन के साथ न्यूयार्क और मसाच्युसेट्स के सूबा और उस का लड़का विलियम थे। सूबाओं को ब्रेडक ने सम्मति लेने के लिये बुलाया भी था।

फ्रैंकलिन ने छावनी में आकर सब से पहिले जनरल ब्रेडक की नासमझी दूर की। प्रति दिन जनरल के साथ भोजन करने के कारण उस को बात चीत करने लिये खूब समय मिल जाता था। उसने जनरल को विश्वास दिलाया कि पेन्सिलवेनियों के लोग राजा के सच्चे स्वामिभक्त और फ्रैंच लोगों के कट्टर शत्रु हैं। लगभग ८ दिन तक जनरल के साथ रह कर फ्रैंकलिन जाने के विचार में था कि इतने ही में लश्कर के लिये गाड़ियाँ तलाश करने को गये हुए अधिकारीगण आये और जनरल से कहने लगे कि गाड़ियाँ नहीं मिलतीं। जनरल क्रोधित हुआ और जोर से चिल्ला कर कहने लगा, परन्तु फल कुछ नहीं हुआ। उस ओर गाड़ियों का बिल्कुल अभाव था। सामान और रसद आदि जाने

का साधन न मिलने के कारण प्रबन्धकर्ताओं को जनरल ब्रेडक ने खूब फटकारा और कहा कि मेरी यात्रा सफल न होने की, कारण कि दो सौ गाड़ी और इतने ही घोड़ों की बरदारी के बिना लश्कर आगे नही चल सकता। और लश्कर के बढ़े बिना कृत-कार्य्यता नहीं हो सकती।

क्रोध से लाल हुआ जनरल इस प्रकार कह रहा था उस समय फ्रैंकलिन उसके पास ही था। उसने बड़ी नम्रतापूर्वक कहा कि यदि आपका लश्कर पेन्सिलवेनियाँ में उतरा होता तो बहुत अच्छा होता। वहां चाहिये जितनी बारबरदारी है इसलिये सुविधा से यह प्रबन्ध हो जाता। इस पर जनरल ने आतुरता पूर्वक फ्रैंकलिन की ओर मुँह करके कहा:—"यदि ऐसा है तो क्या तुम हमारे लिये वहाँ से बारबरदारी भेज सकोगे? बड़ी कृपा हो, यदि तुम इस कार्य्य को अपने सिर पर ले लो।" फ्रैंकलिन ने पूछा कि गाड़ी वालो को क्या किराया देना चाहिये? इस पर जनरल ने कहा कि जैसी तुम्हारी इच्छा हो। फ्रैंकलिन ने हिसाब लगाकर जनरल को बतलाया जिसको उसने स्वीकार किया और उतने ही रुपये पेशगी दे दिये। फ्रैंकलिन शीघ्र ही घोड़े पर सवार हुआ और अपने लड़के के साथ आठ मील की दूरी पर एक गाँव में गया जिसका नाम लेन्केस्टर था।

गाड़ियाँ इकट्ठी करने का काम फ्रैंकलिन ने बड़ी युक्तिपूर्वक किया। एक विज्ञप्ति छाप कर उसने कृषकों मे वितरित की और उस में ऐसी २ बातें लिखीं जिनसे उन लोगों को उत्साह मिले। गाड़ी और घोड़े उचित किराया देकर लेने का विचार था। अतः यह बात कृषकों के हृदय में उसने अच्छी तरह बैठाई। सरकारी किराये की दर कितनी अच्छी है इस बात का विवेचन करके अन्त में उसने इस प्रकार लिखा:—

"यदि ऐसा वाजबी किराया देने पर भी तुम प्रसन्नतापूर्वक सरकार और देश की सेवा न करोगे तो तुम्हारी स्वामिभक्ति मे बट्टा लग जायगा। सरकार का काम होना ही चाहिये। तुम्हारे बचाव के लिये दूर से आये हुए इतने सब बहादुर लड़ने वालों को तुम्हारी उपेक्षा के कारण बेकार बैठे रहना पड़े यह अनुचित है। गाड़ी और घोड़ों के बिना काम न चलने पर यदि यह बार-बरदारी बलात्कार लेना पड़ेगी तो तुमको अपने परिश्रम का कुछ बदला (किराया) न मिलेगा। और न तुम्हारी कोई दया ही करेगा। यह तो तुम भी जान सकते हो कि इस कार्य में मेरा व्यक्तिगत कुछ भी स्वार्थ नहीं है। न मैं अपने परिश्रम का कुछ बदला ही चाहता हूँ। यदि गाड़ी-घोड़े न मिलेंगे तो मुझे जनरल को सूचना देनी पड़ेगी और वह शीघ्र ही अपनी फ़ौज के साथ चढ़ाई कर देगा। इस प्रकार वह सब बारबरदारी बलात्कार ले जायगा। यदि ऐसा अवसर आया तो मुझे बड़ा दुःख होगा कारण कि मैं तुम्हारा सच्चा मित्र और हितैषी हूँ।"

इस विज्ञप्ति का लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। कृषकों को सरकार का विश्वास न था। जनरल ब्रेडक कौन हैं और सरकारी पैसा खर्च करने का उन को क्या अधिकार है इस बात को वे न जानते थे। उन का सन्देह दूर कर के भाड़ा देने के इक़रार की फ्रैंकलिन ने एक दस्तावेज़ लिख दी। ब्रेडक से लिये हुए सात सौ पौण्ड उसने कृषकों को पेशगी दे दिये और उन के अतिरिक्त दो सौ पौण्ड अपने घर से दिये। घर के दो सौ पौण्ड खर्च कर के तथा वीस हज़ार पौण्ड के गाड़ी घोड़े सुरक्षित रूप से वापिस ले आने की प्रतिज्ञा कर के फ्रैंकलिन वापिस छावनी में आया। बीस दिन में १५० गाड़ी, २२९ घोड़े, और घास दाने का उसने छावनी मे काफ़ी प्रबन्ध कर लिया। जनरल ने उसका

बड़ा आभार माना। उस के दो सौ पौण्ड वापिस दिये और लश्कर के चले जाने पर पीछे से खुराक आदि का समुचित प्रवन्ध कर देने के लिये प्रार्थना की। इङ्गलैण्ड में भेजे हुए पत्रों में उसने उस की बहुत प्रशंसा लिखी। फ्रेंकलिन ने खुराक भेजने के काम की देख रेख रखना स्वीकार कर लिया और इस के लिये उसने बड़ा परिश्रम किया। इस प्रकार लश्कर आगे बढ़ा। उस के पराजित होने का समाचार आया तब तक भी फ्रेंकलिन खुराक भेजता रहा। खुराक का जल्दी से जल्दी प्रबन्ध करने और भेजने मे इसने अपने घर के लगभग १३०० पौण्ड खर्च किये। जनरल ब्रेडक ने पराजित होने से पहिले फ्रेंकलिन को एक हजार पौण्ड देने की आज्ञा दी थी और शेष रुपया हिसाब होने पर पीछे से देने को कहा था। परन्तु, वह फिर नहीं मिला।

जनरल ब्रेडक की हार होगी ऐसा कोई न जानता था। लश्कर की भाग दौड़ में जान माल की बड़ी हानि हुई। बहुतसी गाड़ियां टूट गईं और घोड़े मर गये। उस समय गाड़ियों के मालिकों की जो कुछ हानि हुई उस को नक्की करने तथा किराया आदि का हिसाब करने का अवकाश न मिला। और फ्रेंकलिन ने सब प्रकार की जिम्मेवरी अपने ऊपर लेली थी इस कारण लोगो ने उस पर अपने हर्जाने का दावा कर दिया। अब फ्रेंकलिन के बिगड़ने का समय निकट आगया था किन्तु, ईश्वर तो दीन दुखियो का सब से बड़ा सहायक है। प्राय: देखा जाता है कि परोपकारी मनुष्य को संसार मे बहुत ठोकरें खानी पड़ती हैं। परन्तु अन्त में परमात्मा के यहां तो उसे न्याय ही मिलता है। अस्तु। इस विपत्ति के अवसर पर वही सर्वान्तर्यामी फ्रेंकलिन का सहायक हुआ—उसी ने उसकी लाज रक्खी। पराजित होने के तीन मास पश्चात् लोगों के दावों की समाअतश्च करने के लिये

* सुनवाई=मुकद्दमे पर विचार होना।

सरकार ने एक कमिटी नियुक्त की इस से फ्रेंकलिन अपनी जिम्मेवरी से किसी अंश तक बचगया।

इसकी की हुई जनरल ब्रेडक के लश्कर की सेवा शुश्रूषा और सहायता से उस को बड़ा सम्मान मिला। पेन्सिलवेनियाँ की व्यवस्थापिका सभा ने सर्व सम्मति से उस के आभार-प्रदर्शन का प्रस्ताव किया और लंदन में टामस पेन सेक्रेटरी ऑफ स्टेट्स के सन्मुख फ्रेंकलिन की तरफ़दारी करने गया तो उस को ख़बर लगी कि जनरल ब्रेडक ने उस का बड़ा पक्ष लिया है। केथेराइन "रे" उस पर बड़ा स्नेह रखती थी। उस ने सन् १७५५ के सितम्बर मास मे लिखे हुए एक पत्र में फ्रेंकलिन से पूछा था कि:—"तुम्हारी तबियत कैसी है और आजकल तुम क्या करते हो? यहाँ प्रत्येक मनुष्य अब भी तुम्हें बड़े आदर और प्रेम से स्मरण करता है।"

प्रकरण १७वां

सेनापति की हैसियत से रणक्षेत्र में

१७५५—१७५६

गवर्नर मोरिस की फ्रेंकलिन को दी हुई सलाह—पेज कुटुम्ब को कर से मुक्त करने के लिये किया हुआ उद्योग—इस कुटुम्ब के विरुद्ध इंगलैण्ड में उत्पन्न हुए भाव—स्वयं-सेवक बनाने के लिये फ्रेंकलिन की की हुई योजना—अंग्रेजों का अत्याचार—फ्रेंकलिन सेनापति होकर रणक्षेत्र में गया—मार्ग में पड़ी हुई आपत्तिया—वेथ्लेहाम की छावनी—कृषकों को बन्दूकें दीं—फ़ोर्ट एलन का किला बँधवाया—इण्डियन लोगों की तापने की रीति—व्यवस्थापिका सभा के अधिवेशन का समय निकट आजाने से केप्टिन कलेव्हाम को लश्कर सौंप कर वापिस फ़िलाडेल्फ़िया आना।

जनरल ब्रेडक के पराजित हो जाने की खबर फिलाडेल्फिया में पहुँची कि शीघ्र ही गवर्नर मोरिस ने आतुरता पूर्वक फ्रेंकलिन को बुलाया और अब क्या करना चाहिये इस विषय में उससे सम्मति मांगी। फ्रेंकलिन ने सम्मति दी कि गवर्नर को ब्रेडक के शेष बचे हुए लश्कर के अध्यक्ष कर्नल डनबार से प्रार्थना करनी चाहिये कि उसको लश्कर के साथ सरहद पर रखा जाय और सब प्रदेशों में से लश्कर इकट्ठा करके उसकी सहायता के लिये भेजा जावे उस समय तक वहीं रह कर दुश्मन

को आगे बढ़ने से रोके। परन्तु, डनबार और उसके मनुष्यों के मन में इतना भय बैठ गया था कि उन्होंने फिलाडेल्फ़िया पहुँचने तक भागना बन्द नहीं रखा।

युद्ध की सहायता करने को रुपया इकट्ठा करने के लिये जो विभाग बनाया गया था उसमें से पेन कुटुम्ब को मुक्त रखने की अपनी हठ गवर्नर ने ऐसे नाज़ुक समय पर भी न छोड़ी। व्यवस्थापिका सभा ने तो बड़ी रक़में स्वीकार करके ऐसा निश्चय किया कि परगने के सभी लोगों पर (मालिक सहित) उनकी स्थावर जंगम जायदाद के विचार से कर लगाया जाय। "सहित" शब्द निकाल कर उसके स्थान पर "बिना" शब्द न रखा जाय तब तक गवर्नर ने अपनी सम्मति देने से नाहीं करदी। गवर्नर के कहे मुवाफिक करने को व्यवस्थापिका सभा ने साफ नाहीं कर दिया। परिणाम यह हुआ कि लड़ाई के लिये एक पैसा भी न मिल सका। सभा का अधिवेशन होता, स्थगित होता और फिर होता। गवर्नर को संदेशे भेजे जाते परन्तु कुछ निर्णय नहीं होता। सारी गर्मी और सितम्बर तथा अक्टूबर मास इसी प्रकार बीत गये। जुलाई और अगस्त में बैरियों ने कुछ नहीं किया। परन्तु, सितम्बर और अक्टूबर में उन्होंने सब जगह कर लगा दिया। घर बार लूट लेने, हज़ारों लोगों को मार डालने और बच्चों को बलात्कार पकड़ ले जाने के समाचार पर समाचार आने लगे। एक आदमी ने तो मारे हुए एक कुटुम्ब की लाशों को खुली गाड़ी में डाल कर लोगों के हृदय में दया उत्पन्न करने और व्यवस्थापिका सभा को अधिवेशन के लिये प्रेरित करने को फिलाडेल्फ़िया की गली गली में घुमाया और गवर्नर के दरवाजे पर डाल दिया। एक आदमी ने ऐसी गप्प उड़ाई कि बर्क परगने के लोग फिलाडेल्फ़िया पर आक्रमण करके परगने के

बचाव के लिये गवर्नर और व्यवस्थापिका सभा के एकत्रित न होने देने की तय्यारियां कर रहे हैं। गवर्नर का मुक़ाबिल करने के जो जो कारण थे उनको फ्रेंकलिन और उसके मित्रों ने इङ्गलैण्ड में प्रगट करने की व्यवस्था की थी। इससे इस देश का प्रजा-मत पेन कुटुम्ब के विरुद्ध होगया। यहां तक कि कितनों ही ने यह प्रार्थना की कि परगने का बचाव करने में जब ये अपनी अनुभव हीनता का परिचय दे रहे हैं तो इनके पास से परगना छीन लेना चाहिये। इससे घबरा कर इस कुटुम्ब ने अपने खज़ाञ्ची को हुक्म लिखा कि बचाव के लिये मण्डली जो रुपया स्वीकार करे उसमें हमारी तरफ़ से पांच हज़ार पौण्ड दिये जायँ। इस हुक्म की बात सुन कर व्यवस्थापिका सभा ने कर में से इस कुटुम्ब को मुक्त न करने का शीघ्र ही प्रश्न किया और इस कुटुम्ब की जागीरें कर में से पृथक् करके ६० हज़ार पौण्ड मंजूर किये। ये रुपये खर्च करने को सात आदमियों की एक कमिटी बनाई गई जिनमें से फ्रेंकलिन भी एक था।

बहुत समय से दबा हुआ सारा पेन्सिलवेनियां का परगना उत्तेजित हो गया। पुराने झगड़े भूल जाने को फ्रेंकलिन ने सब से बहुत नम्रता की। गवर्नर, व्यवस्थापिका सभा, लश्करी कमिटी और क्वेकर पंथ के अतिरिक्त सब लोग अपने से बने उतना परिश्रम करने लगे। लश्करी कमिटी के सभासद् प्रति दिन मिलते। रविवार के दिन भी वे विश्राम नहीं करते। उन्होंने सरहद पर हथियार भेजे। खुराक इकट्ठी करके रखवाई और लोगों को क़वाअ़द सिखाई।

अपनी इच्छा से लश्कर में काम करें ऐसे स्वयम्-सेवक इकट्ठे करने में यह बड़ी असुविधा थी कि क्वेकर लोग हथियार लेने से नाहीं करते थे। स्वयं तो न लड़ें और बिना परिश्रम ही

जीत का आनन्द लूटें ऐसे इन लोगों की रक्षा के लिये लड़ने को गांव के लोग आनाकानी करते थे। विशुद्ध भाव से धार्मिक लगन के कारण हुए क्वेकर लोगों के मिथ्या आडम्बर को फ्रेंकलिन ने तुच्छ नहीं गिना। क्वेकर लोगों को क्षमा दिला कर उसने व्यवस्थापिका सभा द्वारा दूसरे लोगों में से स्वयम्-सेवक बनाने का नियम करवाया। इससे दूसरे लोगों में होती हुई बेदिली कम करने के लिये अ, ब और क नाम के तीन सुयोग्य नागरिकों के बीच में एक कल्पित संवाद लिख कर फ्रेंकलिन ने प्रकाशित किया।' कहा जाता है कि यह संवाद बड़ा विद्वत्ता पूर्ण था अतः उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। क—कहता है कि:—"मैं निर्बल नहीं हूँ परन्तु क्वेकर लोगों के बचाव के लिये नहीं लड़ूंगा।" अ ने यह कहा:—"अभिप्राय यह कि तुम्हारे बराबर कुछ चूहे बच जायँ इसके लिये तुम जहाज़ में से पानी न उलीचो।" परन्तु अभी सन्तुष्ट न हुए क ने उत्तर दिया:—"इस कार्य्य का परिणाम अच्छा हो तो आगामी चुनाव के समय क्वेकर लोगों के विरुद्ध अपन क्या करेंगे?" देशाभिमानी अ ने उत्तर दिया:—"मेरे मित्रो! इस समय पक्षपात-पूर्ण संकीर्ण विचारों को छोड़ दो और हम सब अंग्रेज़ तथा पेन्सिलवेनियाँ के नागरिक हैं ऐसा विचार करो। अपने राजा की सेवा, अपने देश की रक्षा और मान तथा अपने रक्त पिपासु बैरियों से बदला लेने का ही विचार करो। यदि अच्छा होगा तो लोग कहेंगे कि यह किसने किया। किन्तु, यह कुछ विशेष महत्त्व का नहीं है। अपनी सेवा और रक्षा करने की अपेक्षा दूसरों को बचाना और उनकी सेवा करना अधिक प्रशंसनीय माना जाता है। चलो, अपने देश की ख़ातिर दृढ़ता और उदारता से एकत्रित हों। देश के लिये मरना ही सबसे अच्छी मृत्यु है। सर्व शक्तिमान ईश्वर अपने प्रामाणिक प्रयत्न में हमें सफलता प्रदान करेगा।"

फ्रैंकलिन के प्रसारित करवाये हुए नियम के अनुसार हज़ारों लोगो ने बड़े हर्ष और उत्साह से हथियार लिये। इस समय फिलाडेल्फिया में लड़ाई की चर्चा के सिवाय और कोई बात ही नही सुनी जाती थी। नवम्बर के अखीर में ऐसी खबर आई कि नॉर्थम्पटन की ओर के गाँव दुश्मनों ने जला दिए और अपने अस्त्र शस्त्र द्वारा लोगों को बड़ी निर्दयता से काट डाला।

यह खबर सुन कर गवर्नर मोरिस ने फ्रैंकलिन से प्रार्थना की कि तुम लश्कर के अफ़सर बन कर उस प्रदेश की ओर जाओ और लोगों का भय दूर करो। फ्रैंकलिन ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। उसके साथ जाने को ५४० स्वयम्-सेवक हथियार ले ले कर तैयार हो गए। अपने पुत्र विलियम को उसने अपना A. D. C.=एडीकाँग बनाया। उसकी पत्नी ने मोदीखाने का सामान तयार किया और दिसम्बर के बीच में सेनापति फ्रैंकलिन अपना छोटा सा लश्कर ले कर उत्तर की ओर कूच कर गया।

एक तो ऋतु अच्छी नहीं थी दूसरे सेनापति और लश्कर के आदमी सभी प्रायः अनुभव-हीन थे अतः लश्कर को मुसाफिरी करते हुए अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ हुईं। किसी दिन खाने को आवश्यक वस्तुएँ न मिलतीं तो किसी दिन तेज़ हवा से रुकना पड़ता। मार्ग भी ऐसा ऊँचा नीचा और खड्डे खोचरे वाला था कि जिसमें जल्दी जल्दी न चला जाय। जिस ठिकाने जाना था वह शहर से ९० मील के लगभग था। परन्तु वहां तक पहुँचने में एक मास लगा। बेथ्लेहेम आ पहुँचा तब फ्रैंकलिन को मालूम हुआ कि क्वेकर लोग भी बचाव की तयारियां करने में लग गये हैं। घर में रहकर स्त्रियां इण्डियन लोगोपर पत्थर डालसकें इसके लिये

* ए० डी० सी०=एडीकाग।

लोगों ने अपने२ घरों की छतों पर पत्थर धर रखे थे। किसी घर २ में तो उनके ढेर के ढेर चुन रखे थे और हथियार भी रखे हुए थे।

बेथ्लेहम मध्यस्थल होने से फ्रेंकलिन ने वहाँ मुकाम किया और लकड़ी का क़िला बनाने को आसपास लश्कर की टुकड़ियाँ भेज दीं तथा उन पर और झाडून हटन पर चढ़ाई करने की तयारी करने को स्वयम् वहीं रहा।

इस चढ़ाई का कार्य्य सरल न था। फ्रेंकलिन स्वयम् एक बात कहता है जिससे मालूम होता है कि दुश्मन दिखाई न देते थे। परन्तु, वे निकट ही थे, और तयार थे। "हम बेथ्लेहाम से चलने की तयारी कर रहे कि ग्यारह कृषक आये और कहने लगे कि हमको अपने खेतों में से इण्डियन लोगों ने निकाल दिया है। कृपया हमें बन्दूक़ें दीजिए ताकि हम वापिस जाकर अपने जानवर ले आवें। मैंने प्रत्येक को एक २ बन्दूक़ तथा आवश्यकतानुसार बारूद गोली दी। हम कुछ मील चले ही थे कि पानी बरसने लगा और सारे दिन बरसा। मार्ग में आश्रय पाने योग्य हमें कोई मकान नहीं मिला। आख़िर पानी में कुटते पिटते हम एक जर्मन के घर के निकट पहुँचे और उसके अनाज भरने के छप्पर में गीले कपड़ों से जा कर ठहरे। यह अच्छा हुआ कि उस समय हम पर किसी ने चढ़ाई न की। हमारे पास उस समय साधारण हथियार थे और वर्षा के कारण हमारी बन्दूक़ों की चांपें भीग गई थीं। बन्दूकों चाँप कोरी रखने को इण्डियन लोगों की भांति हमारे पास कोई साधन न था। उस दिन उपरोक्त ग्यारह कृषकों को ये लोग मिले और उनमें से दस को मार डाला, एक जीवित रहा उसने हमसे कहा कि मेरे साथियों की बन्दूकों की चाँपें गीली हो जाने से न चलीं।"

रास्ते में अनेक विपत्तियां उठाकर लश्कर ग्रादन हटन आपहुँचा। एक आदमी अपनी डायरी में लिख गया है कि—"त्रास और विनाश के दृश्यों के अतिरिक्त यहां कुछ दिखाई नहीं देता। जिस स्थान पर एक समय बड़ा सुन्दर गाँव था वहां के सब स्थान अब उजड़े हुए लगते हैं जिन्हें देख कर बड़ी दया आती है। घर जला दिये गए हैं। उनमें रहने वालों को बड़ी बुरी तरह मारा गया है और खून से लथपथ मुर्दों को दफ़न करने वाला—गाड़ने वाला कोई न होने से वे जानवरों और पक्षियों की खुराक की भांति खुले पड़े हैं। सारांश यह कि घातकों से जितना भी अत्याचार हो सकता था उतना उन्होंने किया है। हमने यहां आने के पश्चात् इस प्रदेश के हित के लिये जितना हमसे हो सका उतना किया है किन्तु, जो कुछ किया वह सब फ्रैंकलिन के सहयोग से। उसमें चतुरता; न्याय परायणता, दया और धैर्य आदि ऐसे गुण हैं कि यहां उस का स्मारक बनाना अत्यन्त आवश्यक है।" ग्रादन हटन आ कर फ्रैंकलिन ने सबसे पहिले इधर उधर बिगड़ती और सड़ती हुई लाशों को दफ़न करवाया। फिर क़िला बनाने का स्थान निश्चित करके उसको बनवाना शुरू किया। वर्षा की असुविधा होते हुए भी उसने पाँच दिन में क़िला बनवा लिया और उस पर झण्डा चढ़ा कर उसका नाम फोर्ट "एलन" रखा। कुछ समय पश्चात् उसके पास थोड़ी दूर पर दूसरे और दो क़िले बँधवाये और सारा प्रदेश एक दम ऐसा बना दिया कि जर्मनी एकाएक उसको कुछ हानि न पहुँचा सके।

क़िला तयार होने के पश्चात् सेनापति फ्रैंकलिन छोटी छोटी टुकड़ियों को ले कर आसपास के प्रदेशों में फिरने को निकला। वह लिखता है कि "हमें इण्डियन लोग नहीं मिले परन्तु जिन टीबों पर बैठ कर वे हमारे कामों को देख रहे थे वह जगह हमें

मालूम हो गई। यहां हमारी की हुई एक युक्ति जानने योग्य है। सरदी के दिन होने के कारण वहां लोगों से चला नहीं जा सकता था। किन्तु, यदि जमीन की सतह पर आग सुलगाई जाय तो उस को दूर से हर कोई देख ले, इसलिये हमने तीन फुट चौड़े और इस से कुछ अधिक गहरे खड्डे खुदवाये। उनके भीतर आस पास लकड़ियाँ इकट्ठी कर के डाल दीं और खड्डे के किनारे २ पाँव लटकते रख कर बैठ गये। इस प्रकार हमारे किये हुए उजाले को कोई न देख न सका।"

तीनों क़िले पूरे कर के उनमें मोदीख़ाने का सामान भरने के लिये फ्रैंकलिन वहां रुका हुआ था इतने ही में गवर्नर मोरिस का पत्र आया कि कुछ दिनो के बाद में व्यवस्थापिका सभा का अधिवेशन करने वाला हूँ। इस कारण जैसे ही सरहद की स्थिति अच्छी हो जाय और किसी आकस्मिक विघ्न के आ उपस्थित होने का भय जाता रहे वैसे ही तुम यहाँ आजाओ। सभा के सभासदों में से फ्रैंकलिन के कुछ मित्रों ने भी उस को वापिस आने के किये आग्रह किया। उस समय केप्टिन कलेन्हाम नामक एक अनुभवी योद्धा ज्ञादन हटन का दृश्य देखने को न्यूइङ्गलैण्ड से वहां आया था। फ़ोर्ट एलन की अध्यक्षता स्वीकार करने के लिये फ्रैंकलिन ने उस से प्रार्थना की जिसको उसने स्वीकार कर लिया। फ्रैंकलिन ने उस को लिखा हुआ अधिकार दिया और लश्कर को उसकी सूचना दी। फिर उस की बहुत प्रशंसा कर के सब प्रकार से सावधान रहने के लिये उसको कुछ बातें बतलाईं। इस के पश्चात् वह वापिस फिलाडेल्फिया को चल दिया।

दो मास तक लश्कर में नौकरी कर के सन् १७५६ के फ़रवरी मास की १०वीं तारीख़ को फ्रैंकलिन वापिस फ़िलाडेल्फिया आया। उसके सकुशल वापिस आ जाने से सारे नगर निवासी

बड़े प्रमुदित हुए और उस की प्रशंसा करने लगे। गवर्नर तो उस पर ऐसा मोहित हो गया कि सेनापति का ओहदा फिर स्वीकार कर के फोर्ट डुकेन को जीतने जाने के लिये फ्रैंकलिन से कहने लगा। किन्तु, फ्रैंकलिन ने इस बड़े ओहदे को भी यह कह कर लेने से इन्कार कर दिया कि मैं अपने को इस योग्य नहीं समझता। पीछे फिलाडेल्फिया के बारह सौ मनुष्यों की टुकड़ी ने उस को अपने कर्नल की भांति पसन्द किया तब उस ओहदे को उसने स्वीकार कर लिया। कुछ समय पश्चात् इस लश्कर की बड़ी परेड पूरी हो जाने पर सब टुकड़ियें फ्रैंकलिन को उसके घर तक पहुँचाने को आई और बिदा होते समय उसके घर के आगे बंदूको के फैर कर के उस का सम्मान किया।

इङ्गलैण्ड मे लश्कर सम्बन्धी पुराना क़ानून रद्द होकर नया कानून हो जाने पर कुछ समय पश्चात् फ्रैंकलिन के लश्करी ओहदे का अन्त आया। उस के सरहद छोड़ कर वापिस आ जाने के नौ मास पश्चात् इण्डियन लोगों ने फोर्ट ऐलन पर एकदम हल्ला कर के उसको जीत लिया और गाँव जला कर उजाड़ दिया। पेन्सिलवेनियाँ की सरहद पर इण्डियन लोगों का जुल्म फिर से होने लगा। परन्तु, अब फ्रैंकलिन के सन्मुख युद्धक्षेत्र में आकर परगने का बचाव करने की अपेक्षा दूसरे ढंग से बचाव करने का अधिक गम्भीर और विचारणीय प्रश्न आया।

प्रकरण १८वां

पुराना झगड़ा बढ़ा

फ्रैंकलिन का अमेरिका पर प्रभाव—जागीरदारों का हाल—पेन्सिवेनियाँ के गवर्नर का जागीरदार की आज्ञानुसार चलना—कर से जागीरदारों को मुक्त करने के लिये गवर्नर का आग्रह—फ्रैंकलिन पर गवर्नर का एतराज—नया गवर्नर डेन्नी—डेन्नी और फ्रैंकलिन की बात चीत—व्यापार और कला कौशल को उत्तेजना देने वाली मण्डली का सभासद—गवर्नर के साथ हुआ पुराना झगड़ा बढ़ा—शराब पर का कर—गवर्नर का मूर्खता पूर्ण उत्तर—गवर्नर और जागीरदार के विरुद्ध इंगलैण्ड में शिकायत।

गवर्नर और व्यवस्थापिका सभा में फिर झगड़ा शुरू हुआ। परगने के मालिकों को जो ५००० पौण्ड देने का वचन दिया गया था उस को देने का अब उन का विचार न था। कृषकों पर चढ़ा हुआ लगान जैसे २ वसूल हो वैसे २ टुकड़े कर के अदा करने की उनकी इच्छा थी।

फ्रैंकलिन के जीवन का अधिकांश समय विशेष कर इसी झगड़े को सन्तोष जनक स्थिति पर लाने के लिये लेख लिखने भाषण देने और विचार करने में व्यतीत हुआ था। लोगों को अपने वास्तविक अधिकारों से परिचित कराने वाला फ्रैंकलिन ही था। जण्टो मण्डली द्वारा, समाचार पत्र द्वारा, बात चीत से,

पुस्तकालय की स्थापना से और दूसरे साधनों द्वारा फ्रैंकलिन ने लोगों में ज्ञान का प्रसार करने के लिये जितना परिश्रम किया है उतना और किसीने शायद् ही किया हो। यदि उस समय वहाँ फ्रैंकलिन जैसा नर रत्न उत्पन्न न हुआ होता तो जिस प्रकार अमेरिका इस समय ज्ञान और स्वतन्त्रता के आलोक से आलोकित होरहा है ऐसा होने के लिये उस को सैकड़ों वर्ष लग जाते। अस्तु। यहां पर फ्रैंकलिन के चरित्र की वास्तविकता जानने और समझने के लिये इस झगड़े के कारण का संक्षिप्त वर्णन करना ठीक होगा।

विलियम प्रेन को इङ्गलैण्ड के राजा दूसरे चार्ल्स के समय सन् १६८१ * में पेन्सिलवेनियाँ के परगने की जागीर मिली थी। इस जागीर में २ करोड़ ६० लाख एकड़ बड़ी उपजाऊ भूमि थी। इस बख़शीश के बदले में विलियम प्रेन ने दस वर्ष तक विण्डसर के महलमें बीवर नामक रूएँ वाले जन्तुके दो चमड़े और जो सोना चांदी मिले उसका ⅕ भाग राजा के ख़ज़ाने में देने की प्रतिज्ञा की थी। इङ्गलैण्ड के नियम के अनुसार तथा इङ्गलैण्ड की प्रजा को सोहे इस तरह सारे परगने की हुकूमत उस को मिलनी चाहिये थी। इण्डियन लोगों के साथ युद्ध करना या सन्धि करना, न्यायाधीश, मजिस्ट्रेट आदि शासकों की नियुक्ति करना खून और राजद्रोह के अतिरिक्त दूसरे अपराधियो को माफी देना आदि पेन के अधिकार में था। जिस कार्य्य को पैन स्वयम् कर सके उनके लिये अपने बदले किसी गवर्नर को नियुक्त कर के करा लेने का भी उस को अधिकार मिल गया था। केवल कर लगाना और नियम बनाना उसके अकेले के अधिकार मे न रखा गया था। परगने के अधिवासियों की चुनी हुई मण्डली की

---

* ५ जनवरी सन् १६८१ ई०

सम्मति के बिना ये काम उस अकेले से न हो सकते थे। भूमि का वह पूर्ण रीति से मालिक था। प्रतिवर्ष एक शिलिङ्ग नज़र लेने के नियमानुसार सौ एकड़ पर चालीस शिलिंग लेकर बहुत सी ज़मीन उसने बेच दी थी। इस प्रकार स्थापित हुई जागीर का मूल्य सन् १७५५ में एक करोड़ रुपया गिना जाता था। और उस की असली वार्षिक आय ३० हज़ार पौण्ड होती थी।

विलियम पेन ने दो विवाह किये थे। उसके छः लड़के थे। पेन्सिलवेनियाँ के परगने का उत्तराधिकार उसने अपनी दूसरी स्त्री के तीन लड़के जॉन टामस और रिचर्ड को दे दिया था। बड़ा भाई होने के कारण जॉन को एक भाग और दूसरों में से प्रत्येक को एक २ भाग दिया था। सन् १७४६ में जॉन मर गया और उसका उत्तराधिकारी टामस हुआ। इस प्रकार फ्रेंकलिन के समय में परगने के दो मालिक थे। $\frac{3}{4}$ का मालिक टामस और $\frac{1}{4}$ का रिचर्ड। टामस पेन सच्ची लगन से काम करने वाला, मितव्ययी और व्यवहार कुशल था। इसके विपरीत रिचर्ड पेन आलसी, उड़ाऊ खाऊ और अपव्ययी था। दोनों व्यक्तियों को अपनी २ मिल्कियत पर बड़ा घमण्ड था। लोगों के साथ उनका बर्ताव ऐसा था मानों सारे परगने के सब प्रकार वे ही स्वत्वा-धिकारी हों। अपनी ओर से गवर्नर की नियुक्ति करके उसके द्वारा वे अपना कारबार चलाते थे। दो मालिकों की नौकरी करने में कोई भी अभी तक सफलता लाभ न कर सका। परन्तु, पेन्सिल्वेनियाँ के गवर्नर को तो तीन मालिको की मरज़ी रखनी पड़ती थी। परगने के मालिक अप्रसन्न हो जायँ तो उसे एक तरफ कर दें। व्यवस्थापिका सभा की नाराज़ी हो तो वह उसका वेतन बन्द कर दे और राजा अप्रसन्न हो जाय तो सिर उड़वा दे। परगने के मालिकों की ओर से गवर्नर को गुप्त रीति से जो आज्ञा

होती उसको उसी के अनुसार चलना पड़ता। लोगों पर अपना मान और प्रभुता बनाये रखने को गवर्नर साफ तौर पर नहीं कहता कि मुझे यह कार्य्य करने की आज्ञा नहीं है, अथवा यह करने की है। बहुत वर्ष तक व्यवस्थापिका सभा की समझ में न आया कि गवर्नर अपने हठ से सामने आता है* या मालिकों के सिखाने से। आखिर को गवर्नर ने कह दिया कि परगने के मालिक की ओर से हुई आज्ञा के विरुद्ध कुछ भी करने की मुझे स्वतन्त्रता नहीं है।

मन मुटाव का मुख्य कारण यह हुआ था कि व्यवस्थापिका सभा किसी प्रकार का भी कर लगाने की सूचना करे तो उसमें से परगने के मालिको की जागीर को पृथक् रख कर गवर्नर ऋण लेता। इस प्रकार करने की उसको उनकी ओर से आज्ञा थी इस-लिये वह इस आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता था। दूसरी मिल्कियतों की तरह परगने के मालिक की मिल्कियत पर कर लगाया जावे तो उन पर लगने वाले कर की रक़म वर्ष भर में ५४० पौण्ड से अधिक होती थी। कर की सारी आय परगने की रक्षा के लिये व्यय की जाने को थी। परगने का बचाव न किया जाय तो सबसे अधिक हानि परगने के जागीदार की ही थी। यह होते हुए भी जागीरदार ऐसे संकीर्ण हृदय वाले थे कि इतनी रक़म के लिये भी अपनी हठ नहीं छोड़ते और व्यवस्थापिका सभा की कोई दलील न सुनते।

फ्रेंच सरकार के साथ होने वाली लड़ाई में सन् १७५४ से १७५८ तक पेन्सिलवेनियाँ प्रदेश ने अपने विपक्षियों के साथ लड़ने में दो लाख अठारह हज़ार पौण्ड दिये। परन्तु, पेन कुटुम्ब

---

* मुकाबिला करता है।

वालों को एक ताँबे का पैसा भी नहीं दिया। इङ्गलैण्ड में राजा अपनी घरू मिल्कियत के सम्बन्ध से राज्य के सामान्य कर में अपने हिस्से का कर जमा करता परन्तु पेन कुटुम्ब वाले मानो कोई सुल्तान या बादशाह हों इस प्रकार अपनी जागीरी का कर देने से नाहीं कर देते।

पेन भाइयों का बर्ताव अनुचित और नीचता पूर्ण होने पर भी पेन्सिलवेनियाँ में उनके पक्ष में कुछ ऐसे मनुष्य थे जो प्रतिष्ठित समझे जाते थे। मजिस्ट्रेट, कलेक्टर, न्यायाधीश और दूसरे अधिकारी अपने स्वार्थ की ओर दृष्टि रख कर उन का पक्ष लेते। अच्छा स्थान और मान मिलने की इच्छा रखने वाले भी उन्हीं के लाभ की बात कहते परन्तु पेन्सिलवेनियाँ की बस्ती में देश-हितैषी और लोक-हित-कर कार्य्य करने को तत्परता दिखाने वाले लोगों का कुछ दोष न था। पेन भाइयों के अनुचित बर्ताव के कारण कुछ आन्दोलन करने को ही उन्होंने फ्रेंकलिन के नेतृत्व में प्रयत्न किया था।

पिछले प्रकरण में कहा जा चुका है कि आदन हटन से व्यवस्थापिका सभा में उपस्थित होने को सन् १७५६ के फर्वरी मासमे फ्रेंकलिन आया था। सभाके अन्तिम अधिवेशन में पुराने झगड़े फिर पैदा हुए। जिस कर के साथ पेन कुटुम्ब की जागीरें जब्त न की जायँ उस को स्वीकार करने से गवर्नर बिलकुल इन्कार करता था और ऐसी शर्त किसी भी नियम में रखी जाय इस के लिये व्यवस्थापिका सभा नाहीं करती थी। इस बात पर खूब वाद विवाद होता। किन्तु, फल कुछ नहीं होता। आखिर को गवर्नर मोरिस ने तंग आकर अपनी दी हुई आज्ञाओं में से कुछ बतला दीं। जिन पर से स्पष्ट प्रकट हुआ कि वह लाचार है। मोरिस ने अपने ओहदे का त्याग पत्र भेज दिया था और वह

स्वीकार होकर नया गवर्नर आवे उस समय तक वही गवर्नर रहने वाला था।

मार्च सन् १७५६ में फ्रैंकलिन डाक विभाग के कार्य्य के लिये मेरिलेण्ड और वरजीनिया की ओर चल दिया। घर से निकलते समय उस को उस के अधिकार की पल्टनों में से ३०-४० घुड़ सवार कुछ दूर तक पहुंचाने को आये। यदि फ्रैंकलिन को इसकी पहिले से खबर होती तो वह उन को मना कर देता किंतु, अब वह उन से कुछ नहीं कह सका क्योंकि वे सब उस के दरवाज़े पर आकर खड़े हुए थे। शहर में और शहर के बाहर कुछ दूर तक वे लोग नंगी तलवारों के बीच में फ्रैंकलिन को बड़े सन्मान से ले गये। ऐसा सस्मान परगने के मालिक अथवा गवर्नर को भी कभी न मिला था। व्यवस्थापिका सभा में कहे हुए कुछ कटु वचनों के कारण परगने के मालिक उस से चिढ़े हुए थे और अब तो वे और भी अधिक चिढ़ गये। फ्रैंकलिन को अलहदा कर देने के लिये उन्होंने पोस्ट मास्टर जनरल को लिखा परन्तु उस का फल कुछ न हुआ।

फ्रैंकलिन की मुसाफिरी चार मास तक हुई। दो मास वर-जीनियाँ में आनन्द पूर्वक बिता कर समुद्र के मार्ग से वह न्यूयार्क गया और वहाँ से जुलाई के महीने में घर लौट आया। उस समय परगने का बचाव किस तरह करना इस विचार में वह बहुत व्यस्त रहता देखा गया। नया गवर्नर अभी नहीं आया था और उस के आने तक कुछ हो सके ऐसा भी न था। छः सप्ताह के पश्चात् फ्रैंकलिन ने लिखा कि:—"अपनी सरहद पर कर लगाया जाता है..... व्यवस्थापिका सभा का अधिवेशन हो रहा है और कुछ न कुछ करने को वह बहुत आतुर है। परन्तु, नया गवर्नर आने की प्रतीक्षा में है। उस के न आने तक कुछ नहीं हो

सकता।" ये शब्द लिखने से पहिले कुछ घंटे पहिले ही गवर्नर जहाज़ पर से उतरा था और फ़िलाडेल्फ़िया में आ पहुँचा था। १९ अगस्त सन् १७५६ को रॉबर्ट मोरिस का अधिकार पूरा हुआ और कप्तान विलियम डेन्नी ने उसका ओहदा पाया।

नया गवर्नर आ जाने से शहर में इस विषय की खूब चर्चा रही। इस प्रसंग को लेकर फ्रैंकलिन लिखता है कि:—"एक शैतान चला जाय और दूसरा आवे यह भी एक हर्ष की बात है। एक नाम वाला गया और दूसरा नाम वाला आया इस से सारा परगना हर्षित हो गया है। सब को ठगने वाली आशा ऐसा मनाती है कि इस मनुष्य के अच्छे गुण भी गवर्नर की भांति प्रकट होंगे। उस का स्वागत इस प्रकार किया गया है कि मानों हमारा कोई बड़ा बचाव करने वाला आया हो। परगने के खुशामदी मेयर और कारपोरेशन ने उसको प्रीति-भोज दिया है। इस भोज में व्यवस्थापिका सभा के सभासदों को निमन्त्रण मिलने से वे भी पिछली बात को भूल कर भोजन करने गये हैं।"

इस महमानदारी में, भोजन हो चुकने पर गवर्नर डेन्नी खड़ा हुआ और एक सुन्दर भाषण देकर फ्रैंकलिन को रायल सोसाइटी की ओर से एक सुन्दर पदक अर्पित किया। दूसरे लोग शराब पीने में लगे हुए थे उस समय गवर्नर डेन्नी फ्रैंकलिन को एक एकान्त कमरे में ले गया और खुशामद तथा लालच से उस को जागीरदारों के पक्ष में लेने का प्रयत्न करने लगा। फ्रैंकलिन कहता है कि उसने मुझसे बहुत कहा कि —"जागीरदार परगने की भलाई में ही प्रसन्न हैं। उन के साथ जो एक लम्बे समय से विरोध चल रहा है उस को छोड़ दिया जाय और उनमें तथा लोगों में परस्पर फिर ऐक्य हो जाय तो उससे सबका और विशेष कर तुम्हारा बहुत बड़ा लाभ है। लोगो और जागीरदारों में तुम

बहुत आसानी से ऐक्य स्थापन कर लोगे ऐसी हमको तुमसे पूर्ण आशा है। यदि तुम इसमें सहायता करोगे तो विश्वास रखना कि तुम को इसका बदला मिले बिना न रहेगा।" हम भोजन के कमरे में वापिस न गये इससे शराब पीने वाली मण्डली ने एक पात्र भर कर हमारे पास शराब भेजी। गवर्नर ने उस में से खूब पिया और उस के नशे में वह मुझ से और भी अधिक नम्रता कर के भाँति २ के प्रलोभन युक्त वचन देने लगा। फ्रेंकलिन ने गवनेर डेनी को उत्तर दिया कि—"ईश्वरकी कृपा से मेरी स्थिति ऐसी है कि जागीरदार के आश्रय की मुझे कुछ आवश्यकता नहीं। फिर मैं व्यवस्थापिका सभा का सभासद हूं इस कारण नियम क अनुसार उस का दिया हुआ कुछ भी मुझ से स्वीकार नहीं हो सकता। मैं पेन कुटुम्ब का दुश्मन नहीं हू। उनके कार्य मुझको अनुचित लगते हैं इसी से मैं उन का सामना करता हूं। मुझसे बन सकेगा वहाँ तक मैं तुम्हारे राज्य कारबार को सरल और लोकप्रिय बनाने की चेष्टा करूँगा। परन्तु, मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारे पहले गवर्नर ने जो आज्ञाएं प्रचारित की थीं उनको लेकर तुम नहीं आये हो" यह सुन कर गवर्नर ने कुछ उत्तर न दिया। इससे यह नहीं मालूम हुआ कि व्यवस्थापिका सभा ने उसके विरुद्ध कुछ और अनुमान किया हो। कारण कि सबने एक मत से उसको मान पत्र देकर उसका स्वागत किया और उसके खर्च के लिये ६०० पौण्ड की रकम मंजूर की। विरोध कर कर के वे थक गये थे और उन्हें आशा थी कि अब ऐसा करने का प्रसग न आयेगा परन्तु शान्ति अधिक समय तक न रही। गवर्नर डेनी की ओर से सभा के नाम एक पत्र आया उसी पर से जान पड़ा कि मोरिस आदि पहिले के गवर्नरों की भाँति वह भी तावेदार गवर्नर है और जागीरदार की ओर से हुई आज्ञाओं के अनुसार ही चलने वाला है। फ़ौरन, 'चलर्स

नोट और जागीरदार की मिल्कियत पर कर; इन तीन आवश्यक बातों पर क्या करना इस के लिये जागीरदार ने उस को खास सूचनाएँ दे दी थीं और उस के बाहर वह एक पाँव भी न रख सकता था।

गवर्नर और व्यवस्थापिका सभा किसी भी बात में एक मत न हुए। सभा का अधिवेंशन स्थगित हो जाने के पश्चात् जब अधिवेशन होता तो फिर विरोध होता। गवर्नर के आने के पश्चात् चार मास तक इसी प्रकार वाद विवाद और झगड़ा चलता रहा।

सन् १७५६ में फ्रैंकलिन को घड़ी भर का भी अवकाश न था। वह केवल राज दरबारी कार्य्यों में ही नहीं फँस रहा था बल्कि इस वर्ष लन्दन में स्थापित हुई व्यापार और कला कौशल को उत्तेजना देने वाली एक समिति का सभासद भी निर्वाचित होगया था। समिति ने आग्रहपूर्वक लिखा था कि पत्र-व्यवहार जारी रख कर समय समय पर सूचना देते रहना। नवम्बर मास में फिर इण्डियन लोगों से सलाह करने को वह गवनर डेनी के साथ सरहद पर गया और वहाँ कई दिन रह कर उसके साथ विचार किया परन्तु उसका कुछ भी फल न हुआ।

दिसम्बर सन् १७५६ में व्यवस्थापिका सभा का अधिवेशन फिर हुआ तब गवर्नर का झगड़ा और बढ़ गया। सभा को अब कुछ धैर्य्य न रहा। खज़ाना ख़ाली होगया था। सरहद पर रक्षा की कुछ व्यवस्था न थी। दुश्मन लोग पहिले की अपेक्षा अधिक कर लगा रहे थे। इस प्रकार, यह समय सब के एकत्रित होकर बचाव के लिये प्रयत्न करने का था; न कि लड़ाई झगड़े कर के बैठे रहने का। देश भक्ति को जानते वाली

व्यवस्थापिका सभा प्रदेशों की आपत्ति टालने को अपनी ओर से जो कुछ होसके उसके करने में तत्पर थी। इस नाजुक समय में मेन कुटुम्ब की जागीर पर कर लगाने का प्रश्न फिर एक ओर रख कर सभा ने सब प्रकार की शराब पर महसूल लगाने का निश्चय किया। ६० हजार पौण्ड का ऋण लेकर लड़ाई के लिये सरकार को सहायता स्वरूप देना और प्रति वर्ष की शराब के महसूल की आमदनी देकर इस क़र्ज को अदा करना ऐसा एक नियम बना कर उसने गवर्नर को भेजा। जकात २० वर्ष तक रखनी थी और इस नियम में कुछ आपत्तिजनक बात न थी। कारण कि जिस प्रश्न के लिये अभी तक झगड़ा हो रहा था वह इसमें न था। यह होते हुए भी गवर्नर ने अपनी सम्मति नहीं दी और कहा कि ऐसा नियम जारी करने के लिये मुझको मुमानिअत है। ख़र्च के लिये सोची हुई रक़म बहुत अधिक है और बीस वर्ष की अवधि भी बहुत लम्बी है। इसके अतिरिक्त इस नियम में दूसरी और छोटी २ बातें जो होनी चाहियें नहीं हैं। सभा की एक कमेटी और गवर्नर में परस्पर इस विषय पर बहुत दिन तक सलाह चलती रही। कुछ बातों का समाधान करने को सभा राज़ी थी। परन्तु, गवर्नर को दीगई आज्ञाओं के बाहर उससे एक पैर भी नहीं रखा जाता था। अमुक बात नियम में अवश्य दाखिल करने जैसी है ऐसा कमेटी विश्वास करे तब गवर्नर कहता कि यह तो ठीक है परन्तु, मेरी आज्ञाओं में इस विषय की स्पष्ट मनाई है। आख़िर को दस पंक्ति का मसविदा लिखकर गवर्नर ने पीछे भेजा और उसमें यह प्रकट किया कि अपनी सम्मति मैं नहीं देता। इस देश में गवर्नर और व्यवस्थापिका सभा का फैसला कर सके ऐसा कोई शासन न होने से सम्मति न देने के कारण मैं इसे इङ्गलैण्ड के राजा साहब के पास भेजूंगा।

यह हलका सा उत्तर आने के पश्चात् तीसरे दिन व्यवस्थापिका सभा ने सब झगड़ों पर विचार करके यह प्रस्ताव किया कि इतने समय तक अपना हक छोड़ देना और गवर्नर की सूचना के अनुसार नया मसविदा तय्यार करना।

यह आवश्यक कार्य्य पूरा हुआ कि शीघ्र ही गवर्नर की तरह व्यवस्थापिका सभा ने भी राजा से अपील करने का निश्चय किया। नियम और सनद के विरुद्ध जागीरदार की आज्ञा के अनुसार पेन्सिलवेनियाँ पर शासन किया जाय तो उसका कैसा फल होगा और पेन्सिलवेनियाँ की कैसी दुर्गति होगी तथा अभी कैसी दशा हुई है उसका इङ्गलैंड जाकर वहा के सत्ताधारियों के सन्मुख अक्षरशः वर्णन करने के लिये व्यवस्थापिका सभा में से दो व्यक्तियों को चुन कर इंगलैण्ड भेजने का विचार हुआ। बेञ्जामिन फ्रैंकलिन और आइझाक नोरीस; इन दो व्यक्तियों को उपयुक्त समझ कर उनसे इंगलैण्ड जाने की प्रार्थना की। आइझाक नोरीस बहुत वृद्ध हो जाने के कारण जाने को राजी न था इस कारण सभा ने अपने प्रतिनिधि की हैसियत से अकेले फ्रैंकलिन को ही भेजने का निश्चय किया। अपने लड़के विलियम को साथ ले जाने की फ्रैंकलिन की इच्छा थी इस कारण सभा ने उसका त्याग-पत्र स्वीकार करके उसको भी जाने की आज्ञा दे दी। इसके साथ ही यात्रा और इङ्गलैण्ड के व्यय के लिये १५०० पौण्ड की मंजूरी भी दी। थोड़े ही समय में काम पूरा हो जाने की आशा थी इस कारण यह सोचा गया था कि इस रक़म से काम चल जायगा।

प्रकरण १९वां

नियामक-समिति का प्रतिनिधि

सन् १७५७ से १७६२

लन्दन जाने की तैयारी—लार्ड लौड का समाधान—लंदन पहुँचना—कोलिन्सन के यहा ठहरना—मुलाकात के लिये विद्वानों का आना—क्रेवन स्ट्रीट में मकान लेकर रहना—पेन कुटुम्ब से मुलाकात—पेन कुटुम्ब की ओर से गवर्नर को गया हुआ उत्तर—विलियम पिट से मिलने का प्रयत्न—हिस्टोरिकल रिव्यू—गायन का शौक—१७५९ का फ्रेंकलिन—लन्दन के रास्ते साफ सुथरे कराने की योजना—केम्ब्रिज की यात्रा—जन्म भूमि में—स्काटलैण्ड जाना—पत्नी से पत्र-व्यवहार—अपनी इच्छाओं को पूरी करने में विघ्न—डेनी के पेन कुटुम्ब के विरुद्ध स्वीकृत किये हुए नियम—उसके सम्बन्ध में इगलैण्ड में नियुक्त हुई कमेटी का अभिप्राय—कमेटी का अभिप्राय बदलने को फ्रेंकलिन की की हुई युक्ति—सोचा हुआ अभिप्राय अन्त में पूर्ण हुआ—दुश्मनों के सम्बन्ध में फ्रेंकलिन के विचार—इंगलैण्ड में अधिक रुकना पड़ा—आबादी बढ़ाने के लिये फ्रेंकलिन के विचार—संधि के लिये किराये के लेखक—कनैडा को इगलैण्ड के अधिकार में रखने लिये की हुई सूचना—सद्गुणी होने की कला के विषय में लार्ड केम्स का लिखा हुआ पत्र।

नियामक समिति के प्रतिनिधि की हैसियत से इङ्गलैण्ड जाने की नियुक्त होने के पश्चात् फ्रेंकलिन वहाँ जाने की तैयारी में लगा। न्यूयार्क से छूटने वाले एक जहाज़ के लिये पिता पुत्र ने टिकट लिया और सामान आदि भी भेज दिया। जहाज़ के चलने में थोड़े ही दिन शेष थे कि इतने ही में अमेरिका के सरकारी लश्कर का सेनापति लार्ड लौडन, गवर्नर और नियामक समिति में समाधान करने को फ़िलाडेल्फ़िया आया। इस बड़े आदमी के बीच में पड़ जाने से क्या निपटारा होता है यह जानने को फ्रेंकलिन ने अपना जाना स्थगित रखा और इस प्रकार जहाज़ छूट गया।

दोनों पक्ष की हक़ीक़त सुनने की इच्छा से लार्ड लौडन ने एक दिन नियत करके गवर्नर डेनी और फ्रेंकलिन को अपने पास बुलाया। नियामक समिति की दलीलें फ्रेंकलिन ने स्पष्ट रूप से संक्षेप में कह सुनाई। गवर्नर डेनी को तो इतना ही कहना था कि मैं जागीरदार के साथ उस की आज्ञानुसार चलने को प्रतिज्ञाबद्ध हो चुका हूँ और अब यदि उस से विपरीत चलूँ तो उसमें मेरी हानि है। हानि न हो ऐसा यदि तुम कर सकते हो तो मैं तुम कहो वही करने को तैयार हूँ। लार्ड लौडन से कुछ भी समाधान न हो सका। इस में सेनापति के योग्य कुछ भी गुण न थे। ऐसे मनुष्य को ऐसा बड़ा ओहदा किस प्रकार मिला, यह फ्रेंकलिन को विस्मय-जनक मालूम होता था। उस समय इङ्गलैण्ड में बड़े २ ओहदे वसीले वालों और सिफ़ारशियों को दिये जाते थे यह बात फ्रेंकलिन को पीछे से मालूम हुई।

यथा समय फिर जहाज़ की व्यवस्था कर के पिता पुत्र न्यूयार्क परन्तु आज चले, कल चले इस प्रकार कुछ सप्ताह रुकनेके

पश्चात् जहाज रवाना हुआ। लार्ड लौड ने सरकारी डाक भेजने के लिये जहाज को रोक रखा था। वह इतना आलसी था कि आज कल आज कल करते उसने डाक तैयार करने में बहुत दिन निकाल दिये। अन्त में लम्बी यात्रा सकुशल पूर्ण करके फ्रेंकलिन कार्नवाल के फालमथ बन्दर पर उतरा। वहाँ से लन्दन २५० मील रहता है। पिता पुत्र मार्ग के दर्शनीय स्थानों को देखते हुए २६ जुलाई सन् १७५७ को लन्दन पहुँचे और अपने मित्र पिटर कालिन्सन के घर पर ठहरे।

यहाँ फ्रेंकलिन की इस यात्रा से सम्बन्ध रखने वाली दो एक बातें रह जाती हैं जिस से उस की जिज्ञासा प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। अतः आगे का वृतान्त लिखने से पहिले हम यहाँ उन का उल्लेख कर देना ठीक समझते हैं।

फ्रेंकलिन कहीं जा रहा हो और कोई भी कार्य कर रहा हो किन्तु, उस की दृष्टि प्रत्येक वस्तु पर पड़ती थी। जहाज़ में जाते हुए उसने देखा कि और २ जहाजों के चलने में तो समुद्र के जल में एक लकीर सी बनती है किन्तु दो जहाजों की नहीं बनती इस का क्या कारण है। वह आश्चर्यान्वित होकर इस का पता लगाने को कप्तान के पास गया और उसे बाहर लाकर यह दृश्य दिखाया। कप्तान ने देखते ही कह दिया कि बावरचियों ने बर्तन साफ किये हैं उस से जो चिकनाई गिरी है, यह उसी के कारण हैं। साथ ही यह भी कहा कि तुमने अकारण ही मेरा समय नष्ट किया। किन्तु, फ्रेंकलिन को इस की क्या परवाह थी वह तो इसी धुन में लग गया कि इसका ठीक २ अनुसन्धान करना चाहिये। अन्त में इस बात पर खूब विचार कर के वह इस परिणाम पर पहुँचा कि लकीर या लहर हवा के पानी से टकराने पर उठती है और तैल या किसी चिकनाई में वह नही टकरा पाती

इसी से ऐसा नहीं होता। जब यह विचार दृढ़ हो गया तो उसको उसके सिद्ध करने की इच्छा हुई। इसी में कुछ दिन लग गये और इस प्रकार जहाज़ में यात्रा करते हुए भी उसने अपने समय को व्यर्थ न खोया।

इस के पश्चात् जब जहाज़ विलायत के निकट पहुँचा तो रात होगई थी। कोहरा इतना अधिक पड़ रहा था कि मनुष्य एक दूसरे को नहीं देख पाते थे। कप्तान आदि सब सो रहे थे। केवल फ्रेंकलिन दो यात्रियों के साथ किनारे पर खड़ा था। इन लोगों को ऐसा मालूम हुआ मानो कोई रोशनी इनके पास ही जल रही है। यह प्रकाश उस लालटेन का था जो समुद्र के किनारे चट्टानों पर ऊँचे २ बुर्ज बना कर रोशनी के लिये रख दिये जाते हैं और जिन्हे 'लाइट हाउस' कहते हैं। अर्थात् ये इस बात के चिह्न होते हैं कि यहाँ जहाज़ को मत लाओ, नहीं तो वह चट्टान से टकरा कर टूट जायगा। इसे देख कर कप्तान अपने जहाज़ का रास्ता ठीक कर लेते हैं। यह जहाज़ चट्टान के इतना निकट पहुँच गया था कि वह थोड़ी ही देर में चट्टान से टकरा कर टूट जाता। भाग्यवश उन यात्रियों में से जो उस समय तट पर खड़े थे एक जंगी जहाज़ का कप्तान भी था उसने लपक कर पतवार को मोड़ा और साथ ही बड़े वेग से कहा कि 'जहाज़ को मोड़ो'। इसे सुनते ही मल्लाहों ने जो उस समय नौकरी दे रहे थे जहाज़ को जैसे-तैसे करके मोड़ा। तब कहीं जाकर जहाज़ और सब लोगों के प्राण बचे।

फ्रेंकलिन पर इस घटना का बड़ा प्रभाव पड़ा। अमेरिका में समुद्र तट पर कहीं एक भी 'लाइट हाउस' नहीं था। इस कारण इसने अपने मन में संकल्प किया कि अमेरिका पहुँच कर मैं अवश्य ही समुद्र तट पर 'लाइट हाउस' बनवाये जाने का प्रयत्न

करूंगा। यह था परोपकार और स्वदेशानुराग जो सर्वदा उसके हृदय को लोक-सेवा के लिये प्रेरित करता रहता था। जहाज़ से उतर कर इस जहाज़ के यात्रियों ने सब से पहिले एक गिर्जे में पहुँच कर परमात्मा को धन्यवाद दिया जिस की असीम अनुकम्पा से जहाज़ टूटते २ बचा और सब लोग सकुशल रहे। इसके पश्चात् सब को अपने २ स्थानों पर पहुँचने की पड़ी। ऊपर लिखा जा चुका है कि फ़ालमथ बन्दर से लन्दन २५० मील रहता है। किन्तु, उस समय रेलें नहीं थीं जो सहज ही में पहुँच जाते। घोड़ा गाड़ी द्वारा पिता पुत्र ने यह कठिन यात्रा पूरी की और लन्दन पहुँचे। अस्तु। कोलिन्सन का मकान बड़ा रमणीक था। फ्रेंकलिन के आने का समाचार पाकर इस अमेरिकन तत्त्वज्ञानी से मिलने को बड़े २ विद्वान् आने लगे और उसको आया जान कर बड़ी प्रसन्नता प्रकट करने लगे। जेम्स राल्फ अभी जीवित था। उसकी परिस्थिति बहुत कुछ सुधर गई थी। वह भी अपने पुराने मित्र से मिलने को दौड़ा हुआ आया और सगे सम्बन्धियों का कुशल वृत्त पूछ कर अपने पराक्रम का हाल सुनाने लगा। फ्रेंकलिन का नाम यूरोप में प्रसिद्ध करने वाला डाक्टर फ़ादरजील भी उस से मिलने को आया। मसाच्युसेट्स के गवर्नर मि० शिरले ने भी अपनी पुरानी जान पहिचान को ताज़ा की। डाक्टर जान्सन के मित्र स्ट्राहन नामक एक प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता का फ्रेंकलिन से पहिली मुलाक़ात में ही बड़ा स्नेह होगया। फ्रांस, जर्मनी, हालैंड और इटली से विद्युत-शास्त्रियों से बधाई—सूचक पत्र आने लगे। फ्रेंकलिन को जैसे ही कुछ अवकाश मिला कि उसने शीघ्र ही इंग्लैण्ड में पहिले पहिल बादल में से बिजली खींचने वाले और अपने आविष्कार में सहायता देने वाले डाक्टर केप्टन से भेंट की। पहिले पहिल लन्दन जाकर वह जिस छापेख़ाने में नौकर रहा था, वहां भी वह गया और सर्व कर्मचारियों को एक छापने का

इसी से ऐसा नहीं होता। जब यह विचार दृढ़ हो गया तो उसको उसके सिद्ध करने की इच्छा हुई। इसी में कुछ दिन लग गये और इस प्रकार जहाज़ में यात्रा करते हुए भी उसने अपने समय को व्यर्थ न खोया।

इस के पश्चात् जब जहाज़ विलायत के निकट पहुँचा तो रात होगई थी। कोहरा इतना अधिक पड़ रहा था कि मनुष्य एक दूसरे को नही देख पाते थे। कप्तान आदि सब सो रहे थे। केवल फ्रेंकलिन दो यात्रियों के साथ किनारे पर खड़ा था। इन लोगो को ऐसा मालूम हुआ मानो कोई रोशनी इनके पास ही जल रही है। यह प्रकाश उस लालटेन का था जो समुद्र के किनारे चट्टानों पर ऊँचे २ बुर्ज बना कर रोशनी के लिये रख दिये जाते हैं और जिन्हें 'लाइट हाउस' कहते हैं। अर्थात् ये इस बात के चिह्न होते हैं कि यहाँ जहाज़ को मत लाओ, नहीं तो वह चट्टान से टकरा कर टूट जायगा। इसे देख कर कप्तान अपने जहाज़ का रास्ता ठीक कर लेते हैं। यह जहाज़ चट्टान के इतना निकट पहुँच गया था कि वह थोड़ी ही देर में चट्टान से टकरा कर टूट जाता। भाग्यवश उन यात्रियों में से जो उस समय तट पर खड़े थे एक जंगी जहाज़ का कप्तान भी था उसने लपक कर पतवार को मोड़ा और साथ ही बड़े वेग से कहा कि 'जहाज़ को मोड़ो'। इसे सुनते ही मल्लाहों ने जो उस समय नौकरी दे रहे थे जहाज़ को जैसे तैसे करके मोड़ा। तब कहीं जाकर जहाज़ और सब लोगों के प्राण बचे।

फ्रेंकलिन पर इस घटना का बड़ा प्रभाव पड़ा। अमेरिका मे समुद्र तट पर कहीं एक भी 'लाइट हाउस' नहीं था। इस कारण उसने अपने मन में संकल्प किया कि अमेरिका पहुँच कर मैं अवश्य ही समुद्र तट पर 'लाइट हाउस' बनवाये जाने का प्रयत्न

करूंगा। यह था परोपकार और स्वदेशानुराग जो सर्वदा उसके हृदय को लोक-सेवा के लिये प्रेरित करता रहता था। जहाज़ से उतर कर इस जहाज़ के यात्रियों ने सब से पहिले एक गिर्जे में पहुँच कर परमात्मा को धन्यवाद दिया जिस की असीम अनुकम्पा से जहाज़ टूटते २ बचा और सब लोग सकुशल रहे। इसके पश्चात् सब को अपने २ स्थानो पर पहुँचने की पड़ी। ऊपर लिखा जा चुका है कि फ़ालमथ बन्दर से लन्दन २५० मील रहता है। किन्तु, उस समय रेलें नहीं थीं जो सहज ही में पहुँच जाते। घोड़ा गाड़ी द्वारा पिता पुत्र ने यह कठिन यात्रा पूरी की और लन्दन पहुँचे। अस्तु। कोलिन्सन का मकान बड़ा रमणीक था। फ्रेंकलिन के आने का समाचार पाकर इस अमेरिकन तत्त्वज्ञानी से मिलने को बड़े २ विद्वान् आने लगे और उसको आया जान कर बड़ी प्रसन्नता प्रकट करने लगे। जेम्स राल्फ अभी जीवित था। उसकी परिस्थति बहुत कुछ सुधर गई थी। वह भी अपने पुराने मित्र से मिलने को दौड़ा हुआ आया और सगे सम्बन्धियों का कुशल वृत्त पूछ कर अपने पराक्रम का हाल सुनाने लगा। फ्रेंकलिन का नाम यूरोप में प्रसिद्ध करने वाला डाक्टर फादरजील भी उस से मिलने को आया। मसाच्युसेट्स के गवर्नर मि० शिरले ने भी अपनी पुरानी जान पहिचान को ताज़ा की। डाक्टर जान्सन के मित्र स्ट्राहन नामक एक प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता का फ्रेंकलिन से पहिली मुलाक़ात में ही बड़ा स्नेह होगया। फ्रांस, जर्मनी, हालैंड और इटली से विद्युत-शास्त्रियों से बधाई—सूचक पत्र आने लगे। फ्रेंकलिन को जैसे ही कुछ अवकाश मिला कि उसने शीघ्र ही इंग्लैण्ड में पहिले पहिल बादल में से बिजली खींचने वाले और अपने आविष्कार में सहायता देने वाले डाक्टर केण्टन से भेंट की। पहिले पहिल लन्दन जाकर वह जिस छापेखाने में नौकर रहा था, वहां भी वह गया और सर्व कर्मचारियों को एक छापने का

यंत्र बता कर कहा कि:-"आओ, भाइयो! कुछ मनोरञ्जन करें। चालीस वर्ष पूर्व तुम्हारी भांति मजदूर की हैसियत से मैं भी इसी यंत्र से काम करता था"। ऐसा कह कर उसने थोड़ी सी शराब मगवाई स्वयम् पीकर शेष सबको पिलाई। जिस स्थान पर ३२ वर्ष पूर्व फ्रेंकलिन लोगों को शराब पीने की बुराइयां बता कर उपदेश दिया करता था उसी स्थान पर बैठ कर उसने स्वयम् शराव पी यह अनुचित हुआ। किन्तु, उसको बड़े आदमी हो जाने का घमण्ड नहीं था क्योंकि वह अपनी पहिले की स्थिति को नही भूला था। इस समय शराब पीने से अभिप्राय यही था कि उसने इस प्रकार प्रेस कर्मचारियों को "छापे की उन्नति" के "जाम" पिलाये।

कुछ दिन तक पिटर कोलिन्सन के यहां महमान की भांति ठहर कर फ्रेंकलिन ने अपने रहने को क्रेवन स्ट्रीट में एक अच्छा मकान लिया। इस घर की स्वामिनी मार्गरेट स्टिवन्सन नामक एक अच्छे स्वभाव की महिला थी। उस महिला और उसकी कन्या के साथ फ्रेंकलिन की खूब मित्रता होगई और वह अन्त समय तक रही। लन्दन में फ्रेंकलिन की रहन सहन उच्च श्रेणी के मनुष्य के समान थी। फिलाडेल्फिया से वह एक नौकर अपने लिये और एक अपने पुत्र के लिये ले आया था। किराये की गाड़ियां असुविधा जनक और बेडौल हैं, यह देख कर फ्रेंकलिन ने एक घर को गाड़ी रखी; जिससे इंग्लैण्ड के प्रधान और पार्लमेण्ट के सभासदों के यहां वह पेन्सिलवेनिया के प्रतिनिधि की हैसियत से शान के साथ जा सके। उसके लड़के का विचार बैरिस्टरी की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर घर जाने का था इस कारण वह मिडल टेम्पल नाम के एक 'ला स्कूल' (क़ानून की पाठशाला) में दाखिल हुआ और क़ानून की पुस्तकें पढ़ने लगा।

कुछ जम जाने पर फ्रेंकलिन अपने अभीष्ट साधन के लिये तयारी करने लगा। पहिले तो वह पेन कुटुम्बियों से मिला। नियामक समिति की प्रार्थना उनको सुनाई और पेन्सिलवेनियां के साथ न्याय की रीति से बर्ताव करने में उनका लाभ है ऐसा विश्वास दिलाने को सभ्यता और नम्रता के साथ जितना कहा जा सकता था, कहा किन्तु, उनकी बातचीत से उस को शीघ्र ही मालूम होगया कि उन के हृदय पर इस का कुछ प्रभाव न पड़ेगा। वे फ्रेंकलिन को असली उत्तर न देकर, क्रोध करते और खुले मन से न बोलते। बात चीत के समय याददाश्त के लिये फ्रेंकलिन ने एक काग़ज़ के टुकड़े पर शिकायत की बातों का सारांश लिख रखा था। उसमें चार बातें थीं—(१) बादशाह के फ़रमान से नियम बनाने की सत्ता नियामक समिति को है; न कि जागीरदार को जैसा कि गवर्नर को की हुई अपनी आज्ञा से वे इस सत्ता को उससे ले लेते हैं। (२) रुपया इकट्ठा करने तथा खर्च का अधिकार इस बादशाही फ़रमान के अनुसार नियामक समिति की सत्ता में है और जागीरदार की आज्ञा से यह सत्ता रद्द होती है। (३) कर में से जागीरदार की मिल्कियत रद्द करना अनुचित है। (४) इन शिकायतों का विचार करने और उस को दूर करने को जागीरदार से प्रार्थना कीजाती है कि जिस से वह मेल से रहे। यह कागज फ्रेंकलिन ने जागीरदार को दिया। इस पर उसने ऐसा ढोंग रचा मानों उस का बड़ा अपमान हुआ हो, और फिर कहा कि यह काग़ज़ तो बहुत छोटा और अस्पष्ट है, न तो इससे कुछ मतलब ही निकलता है और न इस पर किसी के हस्ताक्षर ही हैं, तारीख भी नहीं लिखी गई है, और किस को देने का है यह भी नहीं मालूम होता। फ्रेंकलिन ने उस काग़ज़ पर हस्ताक्षर किये और २० अगस्त सन् १७५७ को तारीख लगा कर देदिया। परन्तु, अब भी जागीरदार कहने

लगा कि हम नहीं समझते कि नियामक समिति क्या मांगती है और उस की क्या शिकायत है; हम को सब नियम देखने पड़ेंगे जिसमें बहुत समय लगेगा। इन दिनों छुट्टियां हैं और वकील लोग बाहर चले गये हैं। बिना वकीलों की सम्मति के हम ऐसी आवश्यक बात में हस्तक्षेप नहीं करते। वकीलों के आजाने पर उन की सम्मति ली जायगी।

इस पर से फ्रेंकलिन ने अनुमान कर लिया कि इन तिलों में तैल नहीं है—पेन महाशय से किसी प्रकार की आशा रखना आकाश-कुसुमवत् है। ज़बरदस्त लड़ाई किये बिना मैं अपने कार्य में सफलता लाभ न कर सकूंगा। अख़ीरी फ़ैसला देना राज महासभा (Privy Council) के हाथ में है और उसी के द्वारा इस का निपटारा होगा इस कारण जागीरदार को एक ओर छोड़ कर उसी को सच्ची २ हक़ीक़त समझाना अधिक लाभ-दायक है।

स्वास्थ्य अच्छा न होने से लगभग आठ सप्ताह तक तो फ्रेंक-लिन कुछ न कर सका। इसके पश्चात् उसको एक अच्छा बैरिस्टर मिल गया और उसकी सम्मति तथा सहायता से वह अपने पक्ष को सबल बनाने लगा। बारह महीने में जागीरदार ने शिकायत का जवाब दिया। इस जवाब को फ्रेंकलिन के पास न भेज कर उसने गवर्नर डेनी की मारफत नियामक समिति को बाला २ अमेरिका भेज दिया। यह उत्तर विस्तार से लिखा गया था परन्तु उस में सभा की किसी माँग को स्वीकार नहीं किया गया था और फ्रेंकलिन पर आक्षेप कर के यह लिखा गया था कि ऐसे प्रतिनिधि से कुछ नहीं हो सकता। इस कारण यदि सहृदय, शान्त और ठंडे मिज़ाज वाले व्यक्ति को प्रतिनिधि बना कर भेजे तो कुछ हो सकता है। इस लेख के कारण नियामक समिति पर फ्रेंकलिन के विरुद्ध कुछ प्रभाव न हुआ।

इस बीच में फ्रेंकलिन कुछ और ही प्रयत्न कर रहा था। नियामक-समिति और जागीरदार के आपसी झगड़ों का अन्तिम फैसला देने वाला राजा और उसका मन्त्रि-मण्डल ही था। रुग्णावस्था से उठने के पश्चात् फ्रेंकलिन एक ऐसे मनुष्य की खोज करने लगा कि जिसका राजा और मंत्रि मण्डल दोनों पर प्रभाव हो। विलियम पिट उस समय संसार भर में प्रथम श्रेणी का मनुष्य गिना जाता था। इसके कार्य-काल में दुनियाँ के सब भागों में इतनी अधिक सफलताएँ मिली थीं कि लोगों में उसकी बहुत ख्याति होगई थी। उसका कहना कोई न टाल सकता था। यदि यह महापुरुष फ्रेंकलिन की समस्या को अपने लक्ष्य में ले तो फ्रेंकलिन का वातावरण एक दम पलट जाय उसके अनुकूल होजाय ऐसी पूरी सम्भावना थी। उस से मुलाक़ात हो जाय, इसके लिये फ्रेंकलिन ने बहुत प्रयत्न किया, परंतु ऐसा सुयोग आया ही नहीं। उवुड और पाटर नामक उसके सेक्रेटरियों से फ्रेंकलिन की जान पहचान थी इस कारण उनके द्वारा उसने अपनी हक़ीक़त कहलाई। किन्तु रूबरू मिल कर स्वयम् बात चीत करने का प्रसग नहीं मिला। इंगलैण्ड में आये हुए उसको दो वर्ष होगये परंतु जिस कार्य के लिये वह आया था उसको पूर्ण करने के लिये बहुत थोड़ा प्रयत्न कर सका। सामयिक पत्रों में बुरे समाचार आने से लोगों के हृदय में यह बात बैठ गई थी कि यह सब दोष नियामक समिति का है। इस बुरी अफ़वाह को दूर करने के लिये फ्रेंकलिन और उसके पुत्र ने एक बड़ी पुस्तक लिखी जिसमें आदि से सब हक़ीक़त का सविस्तर वर्णन था। पुस्तक बड़ी जल्दी में तयार की गई थी परंतु उसकी लेखनशैली बड़ी प्रभावोत्पादक थी। ससार के विख्यात पुरुषों को जो सफ़लता मिली है वह अधिकांश में उनकी रचना-चातुरी और लेखन-पटुता के ही कारण। साक्रेटिस, फ्रेंकलिन, आडम स्मिथ, सिडनी स्मिथ, पामर्स्टन, कारलाइल, हेलिबार्ड

बीचर, लॉवेल, मेसन, स्पर्जन, गफ जैसे सभी महान कवि बड़े वक्ता और ज़बरदस्त शिक्षा. गुरु तथा उच्चाधिकारियों में रचना चातुरी की एक ख़ास ख़ूबी मालूम होती है। फ्रेंकलिन अपने मनोभाव प्रकट करने में अद्वितीय था। उसके हाथ से लिखा हुआ एक भी पर्चा ऐसा नहीं मिलता कि जिसमें कोई उपयोगी दृष्टान्त अथवा महत्त्वपूर्ण और प्रभावोत्पादक बात न हो।

इस पुस्तक का नाम 'हिस्टोरिकल रिव्यू' रखा गया था। लोगों पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। फ्रेंकलिन ने इसकी एक २ प्रति इंगलैण्ड और अमेरिका के प्राय: सभी प्रख्यात पुरुषों को भेजी। पांचसौ प्रति उसके साझेदार डेविड हाल को बेचने के लिये पेन्सिलवेनियाँ तथा पच्चीस अपने भतीजे मिकल को बोस्टन और पच्चीस न्यूयार्क भेजी। इंगलैण्ड में आने के पश्चात् पहिले दो वर्ष में इससे अधिक कुछ न हो सका। कार्य कुछ मन्दगति से चलता था इस कारण फ्रेंकलिन को खूब समय मिलता, और समय का सदुपयोग करना वह जानता था। बड़े २ विद्वान् पुरुषों के समागम में उसका समय अच्छा कटता। उधर विद्युत् कला का भी उसको शौक था। अपने घर में उसने बिजली की मशीन लगा ली। उसके द्वारा कुछ न कुछ प्रयोग करके वह अपने मित्रों का मनोरंजन किया करता।

गायन का शौक़ होनेसे उसका समय बड़े आनन्दसे बीतता। प्रख्यात जर्मन गवैया हेण्डल उस समय लन्दन में ही था इस कारण फ्रेंकलिन को उसका गाना सुनने का भी अवसर मिल गया। फ्रेंकलिन का यह अभिप्राय था कि गाते समय जो चीज़ गाई जारही है वह स्पष्ट रीति से सब की समझ में आनी चाहिये। आवाज़ या स्वर इतना तेज नहीं होना चाहिये कि गाने की चीज दब जाय और ठीक २ न सुनाई दे। इसके अतिरिक्त गायन का

दूसरा कोई अच्छा उपयोग है ही नहीं। उस समय गेरिक नामक व्यक्ति नाट्यकला में बड़ा प्रवीण था। फ्रेंकलिन को नाटक देखने का शौक भी आरम्भ से ही था। इस कारण लन्दन में गेरिक का कौशल देखने को भी वह जाया करता।

उस समय के विद्वान् मनुष्यों की संगति में फ्रेंकलिन को कैसा आनन्द आता था यह उसके पत्रों को पढ़ने से अच्छी तरह जाना जा सकता है। हमें स्मरण रखना चाहिये कि सन् १७२४ अथवा १७४४ फ्रेंकलिन जैसा था उसकी अपेक्षा सन् १७५९ का फ्रेंकलिन कुछ बातों में भिन्न ही प्रकृति का होगया था। उसका शरीर ५३ वर्ष के सुखी गृहस्थ की भाँति भारी होगया था। जहाँ पहिले की अपेक्षा वह अधिक कर्त्तव्यशील होगया था वहां उसका आराम पाने का शौक़ भी बढ़ गया था। भोजन के पश्चात् कुछ देर बैठने और विश्राम लेने में वह कुछ हर्ज नहीं समझता था। साधारण परिचित व्यक्तियों में वह बहुत कम बोलता, किन्तु अपने घनिष्ठ मित्रों के साथ होता तब तो बड़ा हँस मुख और बातूनी मालूम होता। गाना गाने में, हाज़िर जबाबी में, और मज़ाक करने में उसको कोई नहीं पहुंचता था। उस समय के एक पत्र में फ्रेंकलिन ने लिखा है कि:—"मुझे ऐसा मालूम होता है कि पहिले की तरह साथियों के साथ फिरने, गप्पाष्टक लगाने, और हँसी करने में मुझे अब भी अच्छा लगता है। परन्तु, उसके साथ ही वृद्ध पुरुषों के अनुभव सिद्ध और चतुरता पूर्ण वाक्य मुझे पहिले की अपेक्षा अधिक अच्छे लगते हैं। उसके स्वभाव में कभी परिवर्त्तन नहीं हुआ। इधर उधर सुधार करने की उसकी रुचि तो हमेशा समान ही रही। एक समय उसने लन्दन के रास्तों को सुधारने का विचार किया। प्रतिदिन प्रातःकाल दूकानें खुलने से पहिले शहर की सड़कों की सफाई होजाने की व्यवस्था

करने को उसने एक योजना तयार की। वह लिखता है कि:—
"थोड़े से व्यय और समय में सड़क पर कितनी सफ़ाई रह सकती है यह एक आकस्मिक घटना से मेरी समझ में आगया। क्रेवन स्ट्रीट में मेरे दरवाजे के आगे एक दिन एक दीन स्त्री को मैंने झाड़ू लगाते हुए देखी। वह ऐसी दिखाई देती थी मानों अभी बीमारीसे उठी हो। मैंने उससे पूछा कि तुमको इधर सफाई करने को किसने कहा है। इस पर उसने उत्तर दिया कि:—"किसी ने नहीं। मैं ग़रीब हूँ, इसलिये मुझे कुछ मिल जायगा और इस प्रकार मैं अपने पेट की ज्वाला शान्त कर सकूंगी यही सोच कर मैं बड़े आदमियों के घर के सामने झाड़ू लगाती हूँ।" मैंने उस से कहा कि सारा मुहल्ला साफ़ कर डाल, मैं तुझ को एक शिलिंग दूंगा। यह बात नौ बजे हुई थी। दोपहर को बारह बजे वह अपनी मज़दूरी मांगने आई। मैंने पहिले उस को धीरे २ सफ़ाई करते देखी थी इस कारण मुझे विश्वास नहीं हुआ कि इतने थोड़े समय में उसने पूरी सफ़ाई कर दी होगी। मैंने अपने नौकर को वहाँ भेजा उसने वहाँ जाकर देखा और फिर आकर मुझसे कहा कि इसने सारा मुहल्ला साफ़ कर दिया है और सब कूड़े को नाली में डाल दिया है। इसके पश्चात् वर्षा होने से सारी धूल धुल गई और रास्ता तथा नाली साफ़ होगई। इस घटना का उसके हृदय पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। वह सोचने लगा कि जब यह वृद्धा इतनी बड़ी सड़क को ३ घण्टे में झाड़ आई तब यदि झाड़ू लगाने वाले आदमी रखे जायँ तो वे और भी जल्दी झाड़ देंगे। उसने लन्दन और वेस्ट मिनिस्टर की शहर की सफ़ाई की एक स्कीम बना डाली और जब डाक्टर फ़ादर लिंग उसके पास आये तो उन्हें ये सब समाचार कह सुनाये। सुन कर वे बहुत हंसे और कहने लगे यह विचार तो तुम जैसे उदार चित्त और परोपकारियों का है। लन्दन की क्या पूछते हो। यहां का तो बाबा आदम ही

निराला है। यहाँ प्रतिदिन डाके पड़ते हैं। किन्तु, किसी से इतना नहीं होता जो इसका प्रबन्ध करे। सर जान फील्डिंग ने मि० ग्रेन वाइल से जो इस समय महा सचिव हैं यहाँ तक कह दिया कि यदि आप केवल २४ सवारों की नौकरी बोल दें कि वे रात में घूम २ कर पहरा दिया करें तो लन्दन और उसके निकटवर्ती स्थान लुटेरों से मुक्त हो जायँ। यह कैसा अन्धेर है कि नाटक से अपने घरों पर जाते हुए लोग तक लुट जाते हैं। किन्तु, इसका उपाय करे कौन ? सड़क पर झाड़ू न लगने से तो ऐसी विशेष हानि भी नहीं है। केवल थोड़ी सी धूल ही आँखों में जाती है।

अब क्या उपाय था ? सिवाय इसके कि फ्रेंकलिन चुप हो जाता। किन्तु, नहीं। वह तो अपनी धुन का पक्का था। शहर सफाई के लिये वह बराबर प्रयत्न करता रहा और तभी चुप हुआ जब उसे इसमें सफलता मिल गई।

\+ + + +

फ्रेंकलिन इंगलैण्ड में रहा तब तक प्रति वर्ष ग्रीष्म ऋतु में कुछ सप्ताह अपने पुत्र के साथ यात्रा में बिताता। सन् १७५८ में उसने केम्ब्रिज के जगत्-विख्यात विश्वविद्यालय को देखा। वहाँ की विद्वन्मण्डली ने उसका बड़ा सम्मान किया और उसने भी वहाँ अपने कुछ नवीन आविष्कार करके दिखाये। एडिनबर्ग और सेंट एंड्रूज़ के विश्वविद्यालयों ने भी इसका बड़ा सम्मान किया और डाक्टर की उपाधि दी। म्यूनिसिपैलिटी ने उसको शहर की "आज़ादी" भेंट की और अमेरिका जाने से पूर्व आक्सफर्ड विश्व विद्यालय ने भी उसको डाक्टर आफ लॉ* की उपाधि से विभूषित किया।

---

* Doctor of Law.

इसके पश्चात् वह अपने बाप दादों की जन्म भूमि में गया और वहाँ अपने सगे सम्बन्धिओं से मिला। एवेलीगबरों में उसकी रिश्तेदार एक वृद्धा इतनी अधिक आयु की थी कि उसका बाप ७३ वर्ष पहिले जब इङ्गलैण्ड छोड़ कर अमेरिका गया था उस समय की बात उसको याद थी। यह बाई निर्धन, सन्तोषी और स्वतंत्र-प्रकृति वाली थी। बेञ्जामिन काका के कुछ पत्र उसने फ्रैंकलिन को पढ़ने के लिये दिये। इनमें फ्रैंकलिन और उसकी बहिन छोटे थे उस समय की कुछ बातें लिखी हुई थीं। एवेलीगबरो से एक्टन आकर तलाश करने से जिस स्थान पर उसके पूर्वज लुहार का काम करते थे वह स्थान फ्रैंकलिन को मिल गया। उनका तीस एकड़ का एक खेत बिक चुका था। किन्तु, झोंपड़ी अब भी फ्रैंकलिन हाउस के नाम से विख्यात थी और उसमें गाँव की पाठशाला होती थी। वहाँ पिता पुत्र ने अपने सगे सम्बन्धियों को ढूँढ़ लिया।

इस प्रकार अपने पूर्वजों की जन्म भूमि में घूम फिर कर पिता पुत्र वापिस लन्दन आये। †

---

† डाक्टर दयानिधान जी ने अपनी पुस्तक 'बेञ्जामिन फ्रैंकलिन का जीवन चरित्र (प्रकाशक शंकरदत्त जी शर्मा मुरादाबाद।) में लिखा है कि—

"फ्रैंकलिन ने तो अमेरिका प्रस्थान किया और उसका पुत्र विलियम विलायत में ही रह गया। कारण यह कि एक सुयोग्य किशोरी से उसका प्रेम हो गया था जो अमेरिका की रहने वाली थी। इस सम्बन्ध में दोनों के माता पिता की सम्मति थीं। कुछ समय पश्चात् विवाह करके विलियम अपनी पत्नी सहित स्वदेश को आया। सबने उनका बड़े प्रेम से स्वागत किया और फ्रैंकलिन स्वयं जाकर पुत्र तथा पुत्र-वधू को बर्लिङ्गटन पहुंचा आया क्योंकि विलियम वहां का गवर्नर नियुक्त हो गया था।

सन् १७५९ की ग्रीष्म ऋतु में फ्रैंकलिन ने छः सप्ताह स्कॉटलैण्ड की यात्रा करने में बिताये। उस साल सेन्ट एन्ड्रयूज के विश्वविद्यालय की ओर से उसको डाक्टर की सम्मान सूचक उपाधि मिली। अब फ्रैंकलिन डाक्टर की भाँति गिना जाने लगा। यह उपाधि मिलने से ही कदाचित् उसको उस वर्ष की ग्रीष्म ऋतु में स्कॉटलैण्ड जाने की इच्छा हुई थी। इस प्रसंग पर उसका स्कॉटलैण्ड में बड़ा आदर हुआ। एडिनबर्ग की कारपोरेशन ने उसको उस शहर की "स्वतन्त्रता" प्रदान की। बड़े २ लोगों ने उसको अपने यहाँ भोजन के लिये निमन्त्रित किया और विद्वान् लोगों ने उसके साथ मित्रता करके अपने को गौरवान्वित समझा। ह्यूम, राबर्टसन और लार्ड केम्स इनमें मुख्य थे। लन्दन से आने पर फ्रैंकलिन ने लार्ड केम्स को लिखे हुए पत्र में लिखा कि:—"स्कॉटलैण्ड में हमने जो कुछ देखा सुना, जो कुछ सुख तथा आनन्द लूटा और आपकी जैसी कृपा रही उस सम्बन्ध में यार्क पहुँचने तक बातचीत चली। वहाँ हमारा अपनी धारणा से अधिक आदर सत्कार हुआ। संक्षेप में मैं यह कह सकता हूँ, कि मेरे जीवन में ऐसा कभी न मिला हुआ सुख मुझे इन छः सप्ताह के भीतर स्कॉटलैण्ड में मिला है। इसका मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा है कि गहरे सम्बन्ध के कारण दूसरे किसी ठिकाने पर मेरा मन नहीं जाता तो मैं अपने अवशिष्ट जीवन को सुख शान्ति से व्यतीत करने के लिये स्कॉटलैण्ड में रहना ही पसन्द करता।"

इन आनन्द के दिनों में भी फ्रैंकलिन का अन्तःकरण फ़िलाडेल्फ़िया में अपने घर में लग रहा था। उसकी पत्नी ने उसको लिखा था कि यहाँ के मनुष्य आपके कारण मुझ पर बड़ा स्नेह रखते हैं और उनसे बातचीत करने का अवसर मिलने से मुझे

बड़ा आनन्द मिलता है। किन्तु, इतनी आयु में आपके अभाव में गार्हस्थ्य सुख के बिना सन्तोष नहीं मिलता। अपने कुटुम्ब से दूर रहने के कारण मुझे अशान्ति और व्याकुलता रहती है क्योंकि प्रति क्षण उनसे मिलने की उत्कण्ठा बनी रहती है। इस कारण कई बार जब मैं किसी आनन्द दायक मण्डली में होती हूँ तो भी निःश्वास* लेती हूं।" अपने घर को सजाने और अपनी स्त्री तथा पुत्री के लिये फ्रेंकलिन नई २ सुन्दर वस्तुएँ घर पर भेजता और घर से इसकी स्त्री भी उसके लिये उत्तमोत्तम खाद्य पदार्थ बना बना कर इङ्गलैण्ड भेजती।

फ्रेंकलिन की स्त्री पत्र भेजने में बड़ी फुरती रखती थी। उसकी ओर से नियमित रूप से पत्र आते थे। सन् १७५८ में लिखे हुए एक पत्र में उसने फ्रेंकलिन को एक बड़ी आश्चर्य-जनक खबर भेजी कि गप्प उड़ रही है कि तुमको कोई विशेष सम्मान युक्त उपाधि और पेन्सिलवेनियाँ के गवर्नर का स्थान मिल गया है। यह गप्प सत्य नहीं थी परन्तु इङ्गलैण्ड में फ्रेंकलिन का बड़ा सत्कार हुआ है इसको उसकी स्त्री जान चुकी थी। इसलिये उसने सोचा, सम्भव है, ऐसा हो जाय। मि० स्ट्रेहन ने उसको एक पत्र में लिखा था कि:—"कृपा करके तुम यहाँ आओ, और अपने जीवन को दाम्पत्य रूप में सुखपूर्वक व्यतीत करो जिससे तुम्हारे पति की संगति का लाभ मुझे हमेशा मिलता रहे। तुम्हारे पति से साक्षात् न होने से पहिले ही उनकी अद्भुत लेखन कला और विद्वत्ता एवम् प्रतिष्ठा के कारण उनके विषय में मैंने अपना मत निश्चित कर लिया था किन्तु; प्रत्यक्ष देख लेने और उनके सहवास का सुअवसर मिलने के पश्चात् से तो मेरी वह धारणा बहुत ऊँची हो गई है। मैंने उनके विषय में जो कुछ देखा सुना था

---

* दुःख की आह।

उसकी अपेक्षा मैंने उनको और भी उच्च श्रेणी का पाया। मैंने अपनी आयु में ऐसा कोई मनुष्य नहीं देखा जिसके समागम से इतना आनन्द प्राप्त हो। कोई किसी बात में अच्छा होता है, और कोई किसी बात में। परन्तु ये तो सभी बातों में अच्छे हैं। इसके बाद मि० स्ट्रेहन फ्रेंकलिन के पुत्र के विषय में लिखते हैं कि—"अमेरिका से आये हुए जो युवक मेरे देखने में आये हैं उनमें तुम्हारे पुत्र को मैंने सर्वश्रेष्ठ पाया। इसकी समझ ऐसी अच्छी है जैसी इसकी बराबरी के दूसरे युवकों में नहीं देखी जाती। इसका पिता इसके साथ अपने मित्र तथा भाई की भाँति बर्ताव रखता है और अपने सुयोग्य पिता के साथ रहने के कारण इसको सुधरने का अच्छा अवसर मिलता है। इससे मुझे मालूम होता है कि समय पाकर यह भी इस देश के लिये अपने पिता की भाँति बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा।" मि० स्ट्रेहन की धारणा थी कि मेरे पत्र से फ्रेंकलिन की स्त्री इङ्गलैण्ड आ जायगी किन्तु, फ्रेंकलिन जानता था कि मेरी स्त्री को सामुद्रिक यात्रा पसन्द नहीं है इससे वह न आयगी आख़िर को ऐसा ही हुआ। मि० स्ट्रेहन को उसने साफ़ नाहीं लिख दी कि मैं इंगलैण्ड न आ सकूंगी।

इस प्रकार फ्रेंकलिन के तीन वर्ष इंगलैण्ड में व्यतीत हुए। काम के लिये रुके रहना पड़ा उस समय को उसने मनोरञ्जक मण्डली में, पदार्थ विज्ञान के प्रयोग में, गायन में, नाट्य कला में, और पार्श्ववर्ती प्रदेशों की यात्रा आदि में व्यतीत किया। वह उसको कुछ बुरा न लगा। जिस कार्य के लिये वह आया था वह सन् १७६० की ग्रीष्म ऋतु में पूरा होने को आया किन्तु, फ्रेंकलिन को पूरे तौर पर सफलता नहीं मिली पेन्सिल-वेनियाँ का परगना वर्जीनियाँ और न्यूयार्क की भाँति ख़ालसे

कर लेने के लिये उसने सरकार से प्रार्थना की। परन्तु उसको यह उत्तर मिला कि जागीरदार की सम्मति के बिना वैसा होना कठिन है। इस योजना में कृतकार्य न होने पर जो और बातें रही थीं उनकी ओर उसने लक्ष्य दिया:—(१) दूसरों की मिल्कियत की भाँति जागीरदार की मिल्कियत पर भी कर लिया जाय (२) जागीरदार अपने गवर्नर को मन मानी आज्ञाएँ देकर उनके अनुसार चलने के लिये नियामक समिति को न सतावे। इन दोनों बातों का स्वीकार हो जाना कोई सहज की बात नहीं थी क्योंकि जिनसे न्याय की प्रार्थना की गई थी वे मनुष्य पेन कुटुम्ब जैसे ही थे।

सन् १७५७ में फ्रेंकलिन इङ्गलैण्ड गया उसके पश्चात् गवर्नर डेनी और व्यवस्थापिका सभा का पारस्परिक झगड़ा पहिले की अपेक्षा अधिक उग्र होगया था। दोनों के बीच में समाधान कराने वाला फ्रेंकलिन जैसे शान्त स्वभाव का कोई व्यक्ति न होने से झगड़ा कम न होता था और पहिले के गवर्नरों की भांति गवर्नर डेनी भी इस वैमनस्य से तंग आ गया था। १७५८ में उसने जागीरदार की आज्ञा के विरुद्ध कुछ ऐसे नियमों के लिये सम्मति दी कि जिसमें दूसरी मिल्कियतों की भांति जागीरदार की मिल्कियत पर भी कर लगाने का निश्चय किया गया था। जागीरदार को यह खबर लगते ही उसने डेनी को अलग करके उसके स्थान पर जेम्स हेमिल्टन नामक मनुष्य को नियुक्त किये जाने का प्रस्ताव किया जो स्वीकृत हो गया। हेमिल्टन फ़िलाडेल्फ़िया निवासी था। जागीरदार की ओर से उसको भी दूसरे गवर्नरों की भांति कड़ी आज्ञाएँ दी गई थीं परन्तु ऐसी आज्ञाओं के विरुद्ध उसने भी कुछ नियमों पर अपना मत दिया। जागीरदारों की सनद में एक ऐसी थी कि नियामक-समिति और गवर्नर के

प्रसारित किये हुए नियम पर राजाकी सम्मति मिलनी चाहिये। अतः उन्होंने ऐसी व्यवस्था की कि अपनी आज्ञाओं के विरुद्ध गवर्नर के सम्मति दिये हुए नियम राजा से रद्द करादें। उन १९ नियमों में से कुछ नियम ऐसे थे कि जिनके सम्बन्ध में किसी को कोई आपत्ति न थी। केवल ११ नियमों पर जागीरदारों ने आपत्ति की थी। सब मिल्कियतों पर कर लगा कर १ लाख पौण्ड एकत्रित करने का भी एक नियम था। इस नियम का जो परिणाम हो उसी के अनुसार दूसरे दस का होने वाला था। पेन कुटुम्ब वालों ने वकील खड़ा करके उसको रद्द कराने के लिये मुकद्दमा चलाया। यह देखकर फ्रैंकलिन ने भी वकील करके यह बताया कि ये नियम उचित और इङ्गलैण्ड के नियम के अनुसार ही हैं। अर्ल ऑफ हेली फॉक्स और दूसरे चार व्यक्तियों की एक कमिटी नियुक्त करके राजा ने इस सम्बन्ध में रिपोर्ट मांगी। कमिटी ने फ्रैंकलिन और व्यवस्थापिका सभा के विरुद्ध रिपोर्ट की और दिखाया कि सब मिल्कियतों पर समान रूप से कर लगाना न्याय से, इङ्गलैण्ड के नियम से और राजा के अधिकार से अनुचित है।

कमेटी के इस प्रकार मत दे देने पर सफलता की आशा रखना व्यर्थ था। परन्तु, फ्रैंकलिन ऐसा पुरुष न था जो हिम्मत हार कर बैठ जाय। उसने ऐसी युक्ति की कि जिससे कमेटी अपनी इस रिपोर्ट को वापिस लेकर दूसरी और रिपोर्ट करे जिसमें उसका पक्ष समर्थन हो। १ लाख पौण्ड इकट्ठा करने का नियम रद्द हो जाय तो पेन्सिलवेनियाँ में लोकोपयोगी कार्य्य के लिये रुपये की तंगी आ जाने और जागीरदारों का बल बढ़ जाने की सम्भावना थी। फ्रैंकलिन ने सोचा कि बीच के मार्ग का अवलम्बन किया जाय तो कुछ हो सकता है। उसने कमेटी से

प्रार्थना की कि नियम को रद्द करने की अपेक्षा उसमें जो आपत्ति-जनक अंश है उसमें सुधार करने की सूचना दो तो मैं सुधार करने का दूसरा नियम व्यवस्थापिका सभा में पेश करा सकता हूँ। जागीरदारों की सारी मिल्कियत पर कर लगाना ठीक न हो तो आमदनी होने वाली मिल्कियत पर कर क़ायम रख कर दूसरी बिना मपी हुई और बिना पैदायश वाली भूमि पर के कर की माफी दिलाओ। इस पर कमेटी ने दूसरी ऐसी रिपोर्ट की कि पेन्सिलवेनियाँ की नियामक-समिति के प्रतिनिधि के कथनानुसार नियमों में सुधार किया जाय तो उसको रद्द करने की आवश्य-कता नहीं। इस रिपोर्ट में की गई सूचना के अनुसार आज्ञा करना राजा ने मंजूर किया। इस सम्बन्ध में फ्रैंकलिन ने लार्ड केम्स को लिखा कि—"हमको अनेक अंशों में सतोष मिले इस प्रकार शिकायत का कुछ अन्त आया है।"

इसके पश्चात् सभा ने फिर एक कमेटी नियुक्त की। जिसने अपनी यह रिपोर्ट पेश की कि:—

(१) जागीर की उस भूमि पर जो अनुर्वरा थी और जिसकी पैमायश नहीं हुई थी कुछ कर नहीं लगाया गया है।

(२) जिस भूमि की पैमायश हो चुकी है उस पर भी न्याय-पूर्वक उचित कर लगाया गया है।

(३) जागीर की सारी मिल्कियत पर ५५६ पौण्ड ४ शिलिंग १० पेंस कर होता है जो सारे कर का पाँचवाँ भाग है।

(४) कर सम्बन्धी इस व्यवस्था में कोई अन्याय नहीं हुआ है।

हमें यह न समझना चाहिये कि इङ्गलैण्ड में रह कर फ्रैंक-लिन के किये हुए काम को पेन्सिलवेनियाँ के सब लोग पसन्द करते होंगे। उसके पक्ष में परगने का अधिकांश भाग था और

वे सब उसकी वाहवाही करते थे। किन्तु, इसकी अनुपस्थिति मे जागीरदारों का पक्ष भी सबल होगया था और उनकी संख्या बढ़ गई थी। उस पक्ष के लोग उसकी निन्दा करते और समाचार पत्र तथा पुस्तकों की सहायता से उस पर खूब वाग्प्रहार करते। फ्रैंकलिन की स्त्री ने अभी तक अपने पति की केवल प्रशंसा ही सुनी थी इस कारण इस अपवाद को सुन कर उसको बहुत रंज हुआ। उसने फ्रैंकलिन को इसकी सूचना दी। फ्रैंकलिन ने उसको उत्तर लिखा कि—"मेरे विषय की ऐसी झूठी अफवाहों से तुझको बुरा लगता है इसका मुझे खेद है। किन्तु, प्रियतमे! याद रखना कि जहाँ तक ईश्वर सहायक है और उसकी प्रदान की हुई सद्बुद्धि मुझ में क़ायम है वहाँ तक मेरे द्वारा ऐसा कोई अनुचित कार्य्य न होगा जिसकी लोग निन्दा करें।" एक दूसरे पत्र में वह लिखता है:—"किसी के झूँठे और ईर्षा भरे वचनों से तू अपने मन मे दुखित मत होना। ईश्वर के प्रदान किये हुए सुख और अपने मित्रों के समागम में तू प्रसन्नतापूर्वक रहना। और सत्य की जय होती है इसे मत भूलना।"

अपने पति के वियोग में निर्बल हुई इस अबला को इन पत्रों से बड़ा आश्वासन मिला। वह सोचती थी कि मेरे पति को इङ्गलैण्ड भेजने का अभिप्राय सिद्ध होगा और वर्ष पूरा होने से पहिले ही वह घर पर लौट आयँगे। परन्तु, पेन्सिलवेनियाँ विषयक दूसरे कुछ और कार्य्यों के कारण फ्रैंकलिन को शरद् ऋतु लगने तक इङ्गलैण्ड में ही रहना पड़ा और शरद् ऋतु में उस समय सामुद्रिक यात्रा करना खतरनाक गिना जाता था, इस कारण वह वहाँ से न चल सका। दूसरे वर्ष में भी कुछ सरकारी और खानगी कार्य्यों के कारण उसको वहीं रहना पड़ा।

सन् १७६० के "एनुअल रजिस्टर" (Annual Register) में जन-संख्या बढ़ाने के विषय पर फ्रेंकलिन का एक लेख छपा था। उस समय लोगों में प्रायः ऐसा भ्रान्तिजनक विचार फैल रहा था कि अमेरिकन प्रदेशों के बढ़ते जाने से इङ्गलैण्ड निर्धन होता जाता है। इस कारण इसका प्रतिवाद करने को ही उक्त लेख प्रकाशित हुआ था। बहुत से अङ्गरेज़ यह जानते थे कि इङ्गलैण्ड का पैसा और आबादी अमेरिका की ओर खिंचती जा रही है इसी से वहां धन और जन सख्या की वृद्धि हो रही है। इस भ्रान्ति को दूर करने के लिये फ्रेंकलिन ने अपने निबन्ध में जो जो बातें लिखी थीं वे ही उसके पश्चात् के सुविख्यात अर्थ-शास्त्री आडम स्मिथ ने भी लिखी हैं। फ्रेंकलिन कहता है कि:—

"एक दूसरे की खाद्य-सामग्री में विघ्न डाल कर या एकत्रित हो कर वनस्पति तथा प्राणियों की सतति बढ़ाने में कोई असुविधा नहीं होती। पृथ्वी तल पर दूसरी किसी जाति की वनस्पति न हो तो धीरे २ सारी पृथ्वी पर एक प्रकार का अन्त आ जाय। इसी प्रकार यदि पृथ्वी पर दूसरी बस्ती न हो तो अङ्गरेज प्रजा के समान एक ही प्रजा से थोड़े समय में सारी पृथ्वी भर सकती है। उत्तरी अमेरिका में पहिले लगभग ८० हज़ार अङ्गरेज गये थे। किंतु, अब वहाँ लगभग दस लाख अंग्रेजों की बस्ती हो गई है। यह होने पर भी इंगलैण्ड की आबादी पहिले की अपेक्षा कम नहीं हुई, बल्कि माल की खपत अधिक होने से व्यापार को उत्तेजना मिल रही है और बस्ती बराबर बढ़ रही है। अमेरिका की इस समय की दस लाख मनुष्यों की बस्ती २५ वर्ष में दुगनी हो जायगी ऐसा मान लिया जाय तो भी आज से एक सौ वर्ष पीछे वहाँ अधिकांश बस्ती अंग्रेजों की ही होगी। इस प्रकार स्थल और समुद्र पर ब्रिटिश राज्य की सत्ता में इससे कितनी अधिक वृद्धि होगी ?

फ्रैंकलिन ने अपने इस निबन्ध में साबित कर दिया कि गुलामी के कारण गुलाम रखने वाले की ही अधिक हानि होती है। मालिक अपनी अकर्मण्यता के कारण बैठे २ निर्बल हो जाता है और अन्त में तीन चार पीढ़ियों के पश्चात् उसकी सन्तति अशक्त बन कर किसी काम की नहीं रह जाती।

तीसरा जार्ज गद्दी पर बैठा कि शीघ्र ही सारे राज्य में संधि के लिये शोर गुल होने लगा। पिट की भाँति फ्रैंकलिन का भी विचार था कि जब तक विपक्षी चिरस्थायी संधि न करलें लड़ते ही रहना चाहिये। इंग्लैण्ड में उस समय पेट के खातिर लिखने वाले —भाड़े के टट्टू—लेखक बहुत थे। फ्रांस ने ऐसे लेखकों को रिश्वत दे दे कर संधि करने के पक्ष में पुस्तकें, निबंध और लेख लिखवाये थे। संधि करने के इच्छुक अंग्रेज दरबारियों के पास भी कई ऐसे ही भाड़ेतू लेखक थे। संधि कराने में ऐसा प्रयत्न हो रहा है यह बात प्रसिद्ध करने के लिये "एक ब्रिटेन निवासी" के हस्ताक्षर से फ्रैंकलिन ने "मारनिंग क्रानिकल" समाचार पत्र में एक लेख छपवाया। इसका नाम "बैरी का ध्यान संधि की ओर आकृष्ट करने के उपाय" रक्खा गया था। इस कल्पित निबंध में एक पादरी स्पेन के किसी पुराने बादशाह को शिक्षा देता है कि यदि तुम्हे अपने विपक्षियों के विचारों में परिवर्तन कराना हो तो तुमको अपने देश के ग्रंथकार, पत्र-सम्पादक और उपदेशकों की खातिर करनी चाहिये।

संधि हो जाय तो इङ्गलैण्ड के जीते हुए देश के अतिरिक्त अमेरिका में केनेडा या ग्वाडालोप के टापू रखने चाहियें इस विषय पर उन दिनों बड़ी चर्चा चल रही थी और उस पर बड़े २ राजनीति-विशारदों में मतभेद हो रहा था। फ्रैंकलिन ने एक

पुस्तक लिखकर उसके द्वारा सूचना दी कि यदि उत्तरी अमेरिका के अंग्रेजी प्रदेशों का हित चाहते हो तो केनेडा को इंग्लैण्ड के अधीन रक्खो। यदि वह फ्रेंच लोगों के हाथों में रहेगा तो उन लोगों की अंग्रेजी प्रदेशों पर हमेशा वक्रदृष्टि रहेगी। अस्तु।

"सद्गुणी होने की कला" पर एक पुस्तक लिखने के लिये फ्रेंकलिन का सन् १७३२ से ही विचार था। किंतु, उसको समय नहीं मिला था ऐसा पहिले कहा जा चुका है। इस अवधि में लार्ड केम्स को लिखे हुए एक पत्र में फ्रेंकलिन ने इस पुस्तक के सम्बन्ध मे लिखा कि.—"युवकों के लिये सद्गुणी होने की कला" इस नाम की एक पुस्तक लिखने का मेरा विचार है। इसमें किन २ बातों का समावेश होगा वह इस नाम से तुम्हारी समझ में न आयगा। मेरा उद्देश्य कुमार्ग पर चलने वाले मनुष्यों को सुमार्ग पर लाने का है। मैं जानता हूं कि भूले भटके लोग ऐसा चाहते हैं। किन्तु, यह परिवर्तन कैसे हो? उन लोगों को यह खबर नहीं कि हम कई बार निश्चय करते हैं और साथ ही प्रयत्न भी। परन्तु, उनका निश्चय दृढ़ नहीं होता। और न वे इसके लिये यथावत् प्रयत्न ही करते है। इसी से उन्हें सफलता नहीं होती। सदाचारी कैसे होना यह बात जब तक वे दूसरों को अपने आचारण द्वारा न बता दें तब तक उनका कुछ प्रभाव नहीं हो सकता। बल्कि, यह तो एक ऐसी बात है कि खाद्य-सामग्री, लकड़ी और कपड़े कहाँ से लाये जायँ यह बताये बिना एक भूखे, सरदी से ठिठुरे हुए नंगे मनुष्य से कहना कि तुम खाओ, तापो और पहिनो। अनेक मनुष्यों में कुछ गुण स्वभावतः ही होते हैं। परन्तु, इस प्रकार किसी मनुष्य में सभी गुण नहीं आ सकते। सद्गुण प्राप्त करना और जो प्राप्त किये जा सकें उन्हें तथा जो स्वाभाविक रीति से मिले हों उनको सुरक्षित

रखना यह भी एक कला है। जिस प्रकार चित्रकारी आदि दूसरी कलाएँ हैं इसी प्रकार यह भी एक है।

+ + + +

सन् १७६१ की ग्रीष्म ऋतु में फ्रेंकलिन और उसका पुत्र यात्रा करने को हालैण्ड गये और सितम्बर में तीसरा जार्ज गद्दी पर बैठा उस समय वापिस आये। फिर सन् १७६२ की वसन्त ऋतु में उन्होंने अपने देश को वापिस आने की तैयारी करना शुरू किया।

मि० स्ट्रेहन और अन्यान्य मित्रगण फ्रेंकलिन से आग्रह-पूर्वक कहते रहे कि इंगलैण्ड तुम्हारा ही देश है ऐसा समझ कर अब यहीं रहो तो अच्छा। फ्रेंकलिन को भी लन्दन तथा वहाँ का मित्र-मण्डल बहुत प्रिय लगता था किंतु, अपनी जन्म भूमि को छोड़ कर इङ्गलैण्ड में रहने की बात उसको पसन्द न आई।

प्रकरण २० वां

दूसरी बार लन्दन में

सन् १७६२-१७६४

आक्सफर्ड विश्वविद्यालय से डी० सी० एल० की पदवी—फ्रैंकलिन का पुत्र न्यूजर्सी का गवर्नर नियुक्त हुआ—फ़िलाडेल्फ़िया जाने की तैयारी—मार्ग में की हुई खोज—घर आने पर लार्ड केम्स को लिखा हुआ पत्र—मकान बनाने का विचार—सात वर्ष के झगड़े का अन्त—अमेरिका में इण्डियन लोगों के साथ युद्ध—जॉन पेन गवर्नर—इण्डियन लोगों के विरुद्ध विचार—पेक्सटन के घुड़ सवार—इस सम्बन्ध में फ्रैंकलिन के विचार—मित्रता रखने वाले इण्डियनों की रक्षा के लिये की हुई व्यवस्था—गवर्नर पेन की विज्ञप्ति—पेन और नियामक-समिति में झगड़ा—परगना ख़ालसा करने तथा स्टाम्प एक्ट जारी न करने के लिये सरकार से प्रार्थना करने को फ्रैंकलिन का फिर इगलैण्ड जाना।

सन् १७६२ का अधिकांश भाग डाक्टर फ्रैंकलिन ने केवल घर जाने में ही बिताया था। उसने वसन्त ऋतु से ही लन्दन छोड़ने की तैयारी करना शुरू कर दिया था। उसके आने की खबर सुन कर अमेरिका के उसके मित्रों को जितनी प्रसन्नता

हुई उसी प्रकार उसके जाने का हाल सुन कर यूरोप के मित्र दुखित हुए। इङ्गलैण्ड छोड़ने के दिनों की कुछ और बातें जानने योग्य हैं।

सन् १७६२ की फ़रवरी की २२वीं तारीख़ को आक्सफ़र्ड विश्वविद्यालय ने निश्चय किया कि डाक्टर फ़्रैंकलिन इधर आवें तब उनको सम्मान स्वरूप "डी० सी० एल०" की उपाधि दी जाय। इसके एक मास के पश्चात् ही फ़्रैंकलिन आक्सफ़र्ड गया। वहाँ उसने "डी० सी० एल०" की उपाधि प्राप्त की और इस प्रकार अब वह डवल डाक्टर होगया। इसी समय उसके पुत्र को भी एम० ए० (मास्टर आफ़ आर्ट) की उपाधि मिली।

फ़्रैंकलिन का पुत्र क़ानून का अभ्यास पूरा करके बैरिस्टरी की परीक्षा में उत्तीर्ण होगया था। पिता के साथ रहने के कारण उसकी अनेक बड़े २ आदमियों से मित्रता होगई थी। तीसरे जार्ज के कृपापात्र लार्ड ब्यूट के साथ भी फ़्रैंकलिन का अच्छा परिचय होगया था। उस समय न्यूजर्स के गवर्नर की जगह ख़ाली होने से लार्ड ब्यूट ने अवसर देख कर इस जगह पर विलियम फ़्रैंकलिन को नियुक्त कर दिया। अगस्त के अन्तिम सप्ताह में अपने बाप दादों के देश को अन्तिम नमस्कार करके फ़्रैंकलिन घर की ओर चला। इस यात्रा में समुद्र बहुत शान्त रहा। एक जहाज़ में से दूसरे में सरलता से जा सकने के कारण उनकी यह यात्रा बड़े आनन्द और मनोरञ्जन के साथ पूर्ण हुई।

इस यात्रा में फ़्रैंकलिन ने अपने मित्र लार्ड केम्स की "विवेचन शास्त्र के मूल तत्त्व" नामक पुस्तक पढ़ी। उसके पश्चात् उसने अपने एक मित्र को पत्र लिख कर उस पर अपना अभिप्राय प्रकट करते हुए बताया कि उसमें प्रकाशित स्कॉटलैण्ड के पुराने गीत बड़े मधुर हैं।

अनुसंधान करने में फ्रेंकलिन का मन कैसा चपल था और वह कैसा सिद्धहस्त होगया था इस का नमूना दिखाने को इस यात्रा में उसके किये प्रयोग का संक्षिप्त वर्णन करना यहाँ उपयुक्त होगा। गर्मी के दिन होने से जहाज में यात्रियों को सोने बैठने के कमरे की खिड़कियें खुली रखनी पड़ती थीं। इससे मोमबत्तियों के दीपक हवा से बुझ जाते थे और बड़ी असुविधा होती थी। मदीरा टापू में आने के पश्चात् जलाने का तैल मिल गया। एक गिलास में कार्क और लोहे के सहारे दीपक को रख कर फ्रेंकलिन ने एक प्रकार का दीपक बनाया और उसको कमरे की छत पर लटका दिया। इस दीपक से खूब प्रकाश रहने लगा। गिलास में ⅓ भाग पानी का, ⅓ तैल का और ⅓ खाली रखा गया था। दीपक की 'लो' गिलास के आस पास की ऊँचाई के भीतर रहने से वायु अधिक न लगती और वह स्थिर रहता। एक दिन भोजन करते समय फ्रेंकलिन ने देखा कि तैल का भाग स्थिर रहता है परन्तु नीचे जो पानी का भाग है वह हिलता डुलता है सब तैल जल चुका और केवल पानी रह गया तब तक दीपक को जलता हुआ रखा गया। जहाज की गति यद्यपि पहिले की तरह ही थी तो भी पानी का भाग अब स्थिर ही रहा। रात को जब उसमें तैल डाला गया तो फिर पानी का भाग हिलता और तैल का स्थिर रहा। इस प्रकार उसने सारी यात्रा में यही प्रयोग बार२ किया। आगे चल कर जहाजों में इसी प्रकार के दीपकों द्वारा प्रकाश करने की व्यवस्था होने लगी।

पोर्ट स्मथ छोड़ने के नौ सप्ताह के पश्चात् फ्रेंकलिन अपनी जन्मभूमि में आ पहुँचा। घर आकर उसने लार्ड केम्स को लिखा कि:—"छः वर्ष के वियोग के पश्चात् मैं पहिली नवम्बर को अपने घर पर सकुशल पहुँच कर अपनी स्त्री तथा पुत्री के शामिल हुआ हूँ।

मेरी पुत्री अब बड़ी हो गई है और मेरी अनुपस्थिति में भी उसने विद्या तथा कला कौशल मे निपुणता प्राप्त करली है। मेरे मित्र मुझ पर पहिले की भाँति ही प्रेम और श्रद्धा रखते हैं। मेरे यहां वापिस आते ही मुझसे मिलने के लिये आये हुए मित्रों से मेरा घर सदा भरा रहता है। मेरी अविद्यमानता में नियामक समिति में फ़िलाडेल्फ़िया की ओर से सभासद् की भाँति प्रतिवर्ष मेरा चुनाव होता था। मैं नियामक समिति में उपस्थित हुआ तब अध्यक्ष के द्वारा मुझे समिति ने शाबाशी दी और तीन हज़ार पौण्ड बख़शीश में देने का निश्चय किया। फ़रवरी मास में मेरा पुत्र और पुत्रवधू घर पर आये हैं। मेरे इङ्गलैण्ड छोड़ देने के पश्चात् मेरी सम्मति से उसने वेस्ट इण्डिया की एक युवती के साथ विवाह कर लिया है और यह सम्बन्ध अच्छा हुआ है। जब यह अपनी नियुक्ति की जगह पर गया तब मैं भी इसके साथ वहाँ गया था। वहाँ सभी श्रेणी के लोगों ने मिलकर इसका स्वागत किया था। मैंने देखा कि वहाँ वह सबसे हिल मिल कर कार्य्य करता है। उसके और इसके गाँव के बीच में केवल एक नदी है। मुझ से इसका गाँव १७ मील की दूरी पर है इससे हम प्रायः मिलते रहते हैं।"

घर आने के पश्चात् फ्रैंकलिन पहिले की भाँति अपने काम काज में लग गया। दूसरे वर्ष की ग्रीष्म ऋतु में पोस्ट आफ़िसों के सम्बन्ध में उसने १६०० मील की यात्रा की और अपने भाई बन्धु तथा स्नेहियों से भेंट करके अपने परिचय को ताज़ा किया। इस समय फ्रैंकलिन की आयु ५७ वर्ष की हो चुकी थी। १५ वर्ष से वह देश सेवा कर रहा था। सन् १७४८ में उसने अपना धंधा छोड़ दिया। वह जिस सुख को पाने की आशा रखता था वह समय अभी न आया था। अब उसने एक नया और सब

प्रकार की सुविधा वाला मकान बनवाया और उसी में अपना समय विश्राम में, पदार्थ विज्ञान के चमत्कार में, सद्गुणी होने की पुस्तक लिखने में और मित्रों के साथ मन बहलाने में व्यतीत करने का विचार किया। परन्तु यह विचार उसका विचार मात्र ही रह गया। कुछ अपरिहार्य कारणों से उसको फिर बाहर जाना पड़ा।

सात वर्ष का झगड़ा सन् १७६३ ईस्वी की १०वीं फरवरी को संधि हो जाने से मिट गया। इस सधि से यूरोप में लड़ाई का अन्त आया परन्तु, अमेरिका में वैसा नहीं हुआ। उत्तरी अमेरिका के इण्डियन लोगों की सन्धि हुई तब कुछ विचार नहीं किया गया था और न उनसे सन्धि के विषय में ही पूछा गया था। संधि होने से पहिले वे जिस प्रकार लूट मार और अत्याचार करते थे उसी प्रकार सन्धि होने के पश्चात् भी करने लगे। नियेग्रा से फ्लोरिडा तक के प्रदेशों में उन्होंने गाँव जला दिये, बहुत से कुटुम्बों को मार काट डाला, खेती उजाड़ दी, और स्त्री तथा बच्चों को गिरफ़्तार कर लिया। उस समय पेन्सिलवेनिया मे सबसे अधिक हानि हुई।

अक्टूबर मास में फिर गवर्नर की बदली हुई। गवर्नर हेमिल्टन ने त्याग पत्र दिया और उसके स्थान पर मि० जॉन पेन इङ्गलैण्ड से आया, जॉन पेन जागीरदार के कुटुम्ब का था इसलिये लोगों ने यह समझा कि इसके शासन काल में जागीरदार और नियामक समिति के झगड़े टूट जायँगे यही सोच कर जागीरदार ने ख़ास तौर पर उसी को भेजा है।

\+ + + + +

इण्डियन लोगों की लूट मार यहाँ तक चलने लगी कि इण्डियनों का नाम सुन कर हर एक गोरे को भय होने लगा। कितने ही

सम्प्रदायों के लोगों में और विशेष कर स्काच और आइरिश प्रेस बिटेरियन पंथ के लोगों में ऐसी धारणा चली कि क्वेकर लोगों के विचारों के अनुसार इण्डियन लोगों पर वृथा दृष्टि रखी जाती है यह बात देव को पसन्द नहीं और इस कारण देव ने क्रोधित होकर जान बूझ कर इण्डियन लोगों का जुल्म बढ़ाया है। इण्डियन लोगों को न काट डाला जाय तब तक देव शान्त नहीं होने के। दिसम्बर मास में कुछ मूर्ख गोरे खिस्तियों ने एक ऐसा जंगली और दिल दहलाने वाला काम किया कि जिसका हाल सुन कर सबके मन में दुःख उत्पन्न हुआ। लेन्केस्टर के पास एक निरपराधी और दीन इण्डियन गृहस्थ रहता था। इसके पूर्वज बड़े इज्जतदार थे और इसका सारा कुटुम्ब विलियम पेन के समय से गोरे लोगों के साथ हिल मिल कर रहता आया था। दूसरे इण्डियनों की भाँति कर लगवाने में इस कुटुम्ब ने बिल्कुल भाग नहीं लिया था। इसमें ७ पुरुष, ५ स्त्री और ८ बालक इस प्रकार २० व्यक्ति थे। ये लोग गुणवान और समझदार थे। इन्होंने अपना नाम अंग्रेजी रखा था और अपने अङ्गरेज पड़ोसियों के साथ ये हिल मिल कर रहते थे। १० दिसम्बर को पेकस्टन परगने के कुछ स्कॉच और आइरिश लोग घोड़ों पर सवार होकर हथियारों के साथ इस ग़रीब की झोंपड़ी पर टूट पड़े। और जो लोग इनके हाथ आये उनको मार कर झोंपड़ा जला दिया। भाग्य-वश ऐसा हुआ कि उस समय घर में केवल ६ ही व्यक्ति थे। शेष १४ बाहर थे इसलिये वे बच गये। इन चौदह व्यक्तियों को लेन्केस्टर के मजिस्ट्रेट ने आश्रय देकर लेन्केस्टर की जेल में सुरक्षित रूप से रहने को भेज दिया। दो सप्ताह के पश्चात् उन्हीं घुड़ सवारों ने आकर जेल को घेर लिया और बलात्कार भीतर घुस कर अवशिष्ट घातक कार्य को पूरा करना शुरू कर दिया। उस समय का यथार्थ वर्णन करते हुए हृदय विदीर्ण होता है।

उन बेचारों के पास कोई हथियार नहीं था और इस कारण अपनी रक्षा करने या उन अत्याचारियों में से निकल भागने का उनके पास कोई उपाय न होने के कारण वे बड़ी आर्तवाणी में कहने लगे कि हम तुम्हारे दुश्मन नहीं हैं बल्कि, तुमको चाहते हैं। हमने अपने जीवन में तुम्हारी या तुम्हारे जाति भाइयों की कोई हानि नहीं की है। अतः हम पर दया करके छोड़ दो। परन्तु, उन निर्दइयों पर इसका कुछ प्रभाव न हुआ। उन्होंने इस स्थिति में भी सबके सिर धड़ से अलग कर दिये। इस हत्यारे को उसके मित्रों ने इस प्रकार छुपा रखा कि मजिस्ट्रेट ने बहुत प्रयत्न किया किन्तु, उसका कुछ पता नहीं लगा। गवर्नर ने भी उनको पकड़े जाने का वारण्ट निकाला परन्तु उसका भी कुछ प्रभाव नहीं हुआ। बल्कि, उल्टे कई लोग घातकों को बचाने के लिये उनका यहाँ तक पक्ष लेने को खड़े होगये कि अपने आत्मियों की मृत्यु के कारण शेष बचे हुए लोग पागल होगये और उन्होंने उस पागलपन में ही अपने बचे खुचे लोगों को मार डाला है। यह दुष्कर्म्म पेन्सिलवेनियाँ के लोगों की अनुमति से हुआ है यह बात छिपाने को फ्रैंकलिन ने एक छोटी सी पुस्तक लिखी जिसका अभिप्राय यह था कि यह कार्य कितना निन्दनीय और लज्जास्पद है। स्पष्ट किन्तु, नम्र भाषा में उसने इस हत्याकाण्ड की वास्तविकता पर प्रकाश डाला और बेचारे इण्डियन कैसे ग़रीब और सीधे थे तथा उनके काम और आयु क्या थी आदि भी उसमें लिखी और अन्त में यह भी बताया कि शरण में आने वाले दुश्मन को क्षमा करके बचाना और अनाथ तथा अशरण की रक्षा करना ही सच्ची वीरता है।

इस पुस्तक का कुछ स्थानों में बड़ा प्रभाव पड़ा। परन्तु घातक तथा उन्हीं जैसे और लोगों के कठोर हृदय बिलकुल द्रवित

न हुए। अपने जाति भाइयों पर होने वाले अत्याचारों से त्रास पाकर, अंग्रेज लोगों के साथ मित्रता रखने वाले दूसरे १४० इण्डियन लोग अपने प्राण बचाने को फिलाडेल्फिया भाग आये। यहां उनको खाना पीना और आश्रय मिला। उनके साथ उनका धर्म गुरु भी आया था। वह उनके साथ रह कर सब से प्रति दिन नियमपूर्वक ईश प्रार्थना करवाता। इन इण्डियनों को मारने का निश्चय करके पेकस्टन से सैकड़ों लोग दो हथियार बन्द जत्थों के साथ फ़िलाडेल्फ़िया पर आक्रमण करने को निकले। फिलाडेल्फिया में बड़ी खलबली मच गई। गवर्नर पेन घबड़ा गया। अपने पहिले के गवर्नरों की भांति वह भी फ्रेंकलिन के पास दौड़ कर सलाह लेने को गया। इस समय गवर्नर पेन ने फ्रेंकलिन के घर पर ही डेरा डाल दिया। समय २ पर वह उसी की सलाह से हुक्म दिया करता। फ्रेंकलिन ने नगर की रक्षा के लिये फिर एक मण्डली स्थापित की और शीघ्र ही बनाई हुई १००० मनुष्यों की पल्टन के अफसर की भांति बाहर निकला। फ्रेंकलिन लिखता है कि:—"गवर्नर पेन मैं कहता सो ही करता, इस प्रकार जैसा कि मैं एक समय पहिले हुआ था उसी प्रकार इस समय भी लगभग ४८ घंटे के लिये एक बड़ा आदमी हो गया।"

पेकस्टन वालों का झुण्ड फ़िलाडेल्फिया से ७ मील की दूरी पर बसे हुए जर्मन टाउन तक आ पहुंचा था। गवर्नर के प्रार्थना करने पर फ्रेंकलिन तथा दूसरे तीन आदमी और बलवाइयों को समझाने के लिये जर्मन टाउन गये। स्वयं सेवकों की नई तैयार की हुई हथियार बन्द पल्टन शहर में ही रही। उनकी सहायता के लिये सरकारी लश्कर में से भी एक टुकड़ी आ गई। जिस मकान में इण्डियन लोगों को आश्रय दिया गया था उसके आस पास खाई खुदवादी गई थी। कवेकर लोग हथियार नहीं लेते थे परंतु

खाई खोदने में रात दिन काम करते थे। नगर निवासी व्याकुल हो रहे थे कि क्या आपत्ति आ गई। डाक्टर फ्रैंकलिन ने पेकस्टन के अफ़सरों को विश्वास दिलाया कि इण्डियन लोग ऐसे सुरक्षित स्थान में हैं कि उनको ले जाना कठिन है। अन्त में हुआ भी यही विपक्षी वहीं से वापिस लौट गये।

अब गवर्नर पेन अपने असली लक्षण बताने लगा। जिस भय में से वह अपना बचाव करना चाहता था उसमें से फ्रैंकलिन ने उसको निकाला था। किन्तु, उसको नीचा दिखाने वाले फ्रैंकलिन का यह उपकार सदा उसके मन में खटका करता था। वह पेकस्टन के बलवाइयों और उनके पक्ष के लोगों की खुशामद करने लगा। इन खूनियों पर फौजदारी में मामला चला कर उनको उचित दण्ड दिलाने के लिये फ्रैंकलिन और उसके मित्र कहते तो गवर्नर उसकी उपेक्षा कर देता और अब खुल्लम खुल्ला उनका पक्ष लेने लगा। घातकों की प्रशंसा और इण्डियन लोगों को आश्रय देने वालों की निन्दा से भरी हुई पुस्तकें गांव गांव में बिकने लगीं। पेकस्टन पक्ष को प्रसन्न करने के लिये गवर्नर ने एक लज्जा से भरा हुआ विज्ञापन प्रकट किया जिसमें इस प्रकार इनाम देने के लिये लिखा था:—इण्डियन पुरुष को पकड़ कर लाने वाले को १५० डालर इनाम, स्त्री को पकड़ कर लाने वाले को १३८ डालर और पुरुष के मस्तक को लावे उसको १३४ डालर तथा स्त्री की खोपड़ी लाने वाले को ५० डालर इनाम! खोपड़ी इण्डियन की है अथवा अपने पक्ष वाले की इसका निर्णय करने लिये विज्ञापन में कुछ खुलासा न था। इस प्रकार सन् १७६४ में फ्रैंकलिन के सामने ये दो जुदे २ पक्ष एकत्रिक हुए:—गवर्नर और पेन कुटुम्ब के पक्ष वाले, पेकस्टन वाले पागल (!) और उनके पक्ष वाले।

पहले के गवर्नरों ने नियामक समिति के नियम में विघ्न डाल कर परगनों में झगडा फैला रखा था और नियामक समिति की ऐसी धारणा थी कि गवर्नर पेन वैसा न करेगा। परन्तु, यह धारणा ठीक न हुई। इङ्गलैण्ड के दरबार में फ्रेंकलिन ने जो सफलता प्राप्त की थी उसका भी कुछ फल नहीं हुआ। सन् १७६४ में नियामक समिति ने परगने की रक्षा के लिये आवश्यकता के दो मसौदे तैयार किये थे। उन दोनों पर गवर्नर ने अपनी सम्मति देने से नाहीं करदी। एक मसौदा सिरबंदी * बनाने के सम्बन्ध में था और इसको फ्रेंकलिन ने स्वयम् बनाया था। इसके अनुसार ऊपर के अधिकारी को चुन सकने की सत्ता प्रत्येक टुकडी के मनुष्यों को दी गई थी। वह धारा निकाल कर वह यह सत्ता गवर्नर को देने की धारा उसमें न लगाई जाय तब तक इस मसौदे पर अपनी सम्मति न देने के लिये गवर्नर पेन ने हठ पकड़ लिया, दूसरा मसौदा इण्डियनों के साथ युद्ध करने के खर्च के लिये पचास हज़ार पौण्ड इकट्ठे करने के सम्बन्ध में था। इसमें जागीरदार और दूसरों की मिल्कियत पर बराबर कर लगाने की एक धारा थी। इस धारा को निकाल कर उसके बदले में गवर्नर दूसरी इस आशय की धारा रखवाना चाहता था कि दूसरे लोग अपनी अनुर्वरा भूमि पर जो कर दें, उतनी ही जागीरदार अपनी उपजाऊ भूमि पर दें। गवर्नर के मसौदे के अस्वीकार करने के पश्चात् क्या हुआ इसका फ्रेंकलिन इस प्रकार वर्णन करता है:—गवर्नर पेन ने अपना राज्य प्रबन्ध ऐसी उत्तम रीति से आरम्भ किया था कि उससे हमेशा अच्छी ही आशा की जाती थी। किन्तु, अन्त में ऐसा विदित हुआ कि उपद्रव बढ़ने

* सिबदी। काम पड़े तो लडना, अन्यथा अपना धंधा करना इस शर्त पर रखा हुआ लश्कर।

वाली आज्ञाएँ निर्मूल नहीं हुई, बल्कि, और बढ़ गई हैं। जिस समय गवर्नर प्रत्येक कल्पित प्रसङ्ग से लाभ उठा कर नियामक समिति को गालियां देने लगा और अपमान जनक आज्ञाएँ भेजने लगा तब इसमें कुछ आश्चर्य नहीं, यदि पुराने घाव फिर ताजा हो गये और कृपा का बदला विश्वास घातकता में परिणत करने वाले व्यक्ति से उचित सम्मति मिलने की कुछ आशा न रही।

नियामक समिति ने खूब वाद विवाद चला कर जागीरदार के राज्य प्रबन्ध में जो २ दुःख उठाने पड़ते थे उन्हें दिखलाने को सर्व सम्मति से २५ प्रस्ताव किये और अन्त में यह निश्चय किया कि जागीरदार के पास से सरकार परगने को खरीद कर खालसे कर ले और फिर उस को अपने राज्य प्रबन्ध में ले ले इस अभि-प्राय का एक प्रार्थना पत्र लिख कर सरकार को भेजना या नहीं इस सम्बन्ध में प्रत्येक सभासद् को आपस में सलाह कर के समिति के अधिवेशन में अपना मत देना चाहिये।

२०वीं मार्च को नियामक समिति कुछ समय के लिये स्थगित रही और सात सप्ताह के पश्चात् उस का फिर अधिवेशन हुआ। इस बीच में दोनो पक्ष वालों ने एक पुस्तक छपा कर जागीरदार के कारबार में आने वाले दुःखों का प्रभावोत्पादक भाषा में वर्णन किया। गाँव गाँव में सभाएँ हुईं और प्रार्थना पत्र लिखवाये गये। राज्य-प्रबन्ध बदल जाने के पक्ष में ३००० हस्ता-क्षर युक्त अर्जियाँ आईं। विपक्ष की अर्जियों पर तीन सौ हस्ता-क्षर भी न थे। लोगों की कैसी इच्छा है यह हस्ताक्षर की संख्या पर से स्पष्ट होगया। पेन्सिलवेनियाँ के परगने को खालसे करने के लिये सरकार से प्रार्थना करने का प्रस्ताव बहु मत से पास हुआ।

नियामक समिति का अध्यक्ष आइज़ाक नोरिस इस तरह का अधिक फेरफार करने के विरुद्ध था। इस कारण प्रार्थनापत्र

पर हस्ताक्षर करने का अवसर न आने देने को उसने अन्त में अध्यक्ष पने से त्याग पत्र दे दिया। इस कारण सर्व सम्मति से फ्रेंकलिन अध्यक्ष चुना गया। उसने बड़ी प्रसन्नता से निवेदन पत्र पर अपने हस्ताक्षर किये। किन्तु, वह अधिक समय तक अध्यक्ष नहीं रहा। नियामक समिति के सभासदों का चुनाव प्रति वर्ष होने के कारण अध्यक्ष भी प्रति वर्ष नया नियुक्त होता था। पहिली अक्टूबर को नये चुनाव का दिन था। जागीरदार का कारबार आगे चले या पूरा हो इस का आधार नये चुनाव पर ही निर्भर था। जागीरदार की ओर से ऐसी तजवीज़ चलाई गई कि नये चुनाव के समय अपने पक्ष के सभासदों की सख्या बढ़े। इससे विपक्षियों ने भी अपना प्रयत्न शुरू किया।

मि० जॉन डिकिन्सन नामक एक मालदार और अच्छी हैसियत वाला गृहस्थ भी नियामक समिति का सभासद् था। यह राज्य कारबार में बदला बदली करने के विरुद्ध था और राजा से प्रार्थना करने के विरुद्ध बड़े कड़े शब्दों मे बोला था। नये चुनाव के समय लोगों पर प्रभाव डालने को उस ने अपना वक्तव्य छपाया और एक मित्र से प्रस्तावना लिखवा कर जन-साधारण में उस को वितरित किया। मि० जोज़ेफ गेल्लोवे नामक एक व्यक्ति नगर की ओर से चुने जाने के लिये उम्मेदवार था जो परगना खालसा किये जाने को प्रार्थना पत्र देने के पक्ष में था। उसने अपना भाषण फ्रेंकलिन से प्रस्तावना लिखवा कर छपवाया। इस प्रस्तावना में फ्रेंकलिन ने जागीरदारी राज्य प्रबन्ध की खूब पोल खोली थी।

गेल्लोवे और फ्रेंकलिन नगर की ओर से उम्मेदवार थे। इन दोनों की हार हुई। चार हजार मत में से फ्रेंकलिन के विपक्षियों

वाली आज्ञाएँ निर्मूल नहीं हुई, बल्कि, और बढ़ गई हैं। जिस समय गवर्नर प्रत्येक कल्पित प्रसङ्ग से लाभ उठा कर नियामक समिति को गालियां देने लगा और अपमान जनक आज्ञाएँ भेजने लगा तब इसमें कुछ आश्चर्य नहीं, यदि पुराने घाव फिर ताजा हो गये और कृपा का बदला विश्वास घातकता में परिणत करने वाले व्यक्ति से उचित सम्मति मिलने की कुछ आशा न रही।

नियामक समिति ने खूब वाद विवाद चला कर जागीरदार के राज्य प्रबन्ध में जो २ दुःख उठाने पड़ते थे उन्हें दिखलाने को सर्व सम्मति से २५ प्रस्ताव किये और अन्त में यह निश्चय किया कि जागीरदार के पास से सरकार परगने को ख़रीद कर ख़ालसे कर ले और फिर उस को अपने राज्य प्रबन्ध में ले ले इस अभिप्राय का एक प्रार्थना पत्र लिख कर सरकार को भेजना या नहीं इस सम्बन्ध में प्रत्येक सभासद् को आपस में सलाह कर के समिति के अधिवेशन में अपना मत देना चाहिये।

२०वीं मार्च को नियामक समिति कुछ समय के लिये स्थगित रही और सात सप्ताह के पश्चात् उस का फिर अधिवेशन हुआ। इस बीच में दोनो पक्ष वालों ने एक पुस्तक छपा कर जागीरदार के कारबार में आने वाले दुःखो का प्रभावोत्पादक भाषा में वर्णन किया। गाँव गाँव में सभाएँ हुई और प्रार्थना पत्र लिखवाये गये। राज्य-प्रबन्ध बदल जाने के पक्ष में ३००० हस्ताक्षर युक्त अर्जियाँ आई। विपक्ष की अर्जियों पर तीन सौ हस्ताक्षर भी न थे। लोगों की कैसी इच्छा है यह हस्ताक्षर की संख्या पर से स्पष्ट होगया। पेन्सिलवेनियाँ के परगने को ख़ालसे करने के लिये सरकार से प्रार्थना करने का प्रस्ताव बहु मत से पास हुआ।

नियामक समिति का अध्यक्ष आइज़ाक नोरिस इस तरह का अधिक फेरफार करने के विरुद्ध था। इस कारण प्रार्थनापत्र

पर हस्ताक्षर करने का अवसर न आने देने को उसने अन्त में अध्यक्ष पने से त्याग पत्र दे दिया। इस कारण सर्व सम्मति से फ्रैंकलिन अध्यक्ष चुना गया। उसने बड़ी प्रसन्नता से निवेदन पत्र पर अपने हस्ताक्षर किये। किन्तु, वह अधिक समय तक अध्यक्ष नहीं रहा। नियामक समिति के सभासदों का चुनाव प्रति वर्ष होने के कारण अध्यक्ष भी प्रति वर्ष नया नियुक्त होता था। पहिली अक्टूबर को नये चुनाव का दिन था। जागीर-दार का कारबार आगे चले या पूरा हो इस का आधार नये चुनाव पर ही निर्भर था। जागीरदार की ओर से ऐसी तजवीज़ चलाई गई कि नये चुनाव के समय अपने पक्ष के सभासदों की संख्या बढ़े। इससे विपक्षियों ने भी अपना प्रयत्न शुरू किया।

मि० जॉन डिकिन्सन नामक एक मालदार और अच्छी हैसियत वाला गृहस्थ भी नियामक समिति का सभासद् था। यह राज्य कारबार में बदला बदली करने के विरुद्ध था और राजा से प्रार्थना करने के विरुद्ध बड़े कड़े शब्दों में बोला था। नये चुनाव के समय लोगों पर प्रभाव डालने को उसने अपना वक्तव्य छपाया और एक मित्र से प्रस्तावना लिखवा कर जन-साधारण में उस को वितरित किया। मि० जोज़ेफ गेल्लोवे नामक एक व्यक्ति नगर की ओर से चुने जाने के लिये उम्मेदवार था जो परगना खालसा किये जाने को प्रार्थना पत्र देने के पक्ष में था। उसने अपना भाषण फ्रैंकलिन से प्रस्तावना लिखवा कर छपवाया। इस प्रस्तावना में फ्रैंकलिन ने जागीरदारी राज्य प्रबन्ध की खूब पोल खोली थी।

गेल्लोवे और फ्रैंकलिन नगर की ओर से उम्मेदवार थे। इन दोनों की हार हुई। चार हज़ार मत में से फ्रैंकलिन के विपक्षियों

को २५ अधिक मिले। तो भी इकट्ठे में से जागीरदार के विपत्ती सभासदों की संख्या लगभग उतनी ही हुई जितनी गत वर्ष हुई थी। चुनाव के कुछ दिन पश्चात् नई समिति का अधिवेशन हुआ और अधिवेशन प्रारम्भ होते ही निवेदन पत्र का प्रश्न उठा।

सन् १७६४ के आरम्भ में इङ्गलैण्ड के प्रधान गेन्विल्ल ने अमेरिकन प्रदेशों के मुख़्त्यारों को बुला कर कहा कि सात वर्ष के झगड़े के कारण इङ्गलैण्ड पर सात करोड़ ३० लाख पौण्ड का ऋण हो गया है। हमारा इरादा यह है कि अमेरिका में स्टाम्प एक्ट जारी करके, इस ऋण का कुछ भाग उस पर डाल दिया जाय परन्तु इसके अतिरिक्त किसी दूसरे प्रकार का कर लगाने की बात हमें सुझाओगे तो हम उस पर अधिक ध्यान देंगे। अपने प्रदेशों को भी इसकी सूचना दे देना। प्रदेशों में यह खबर पहुँची तब उन्हें बड़ा आश्चर्य्य हुआ। पहिले जब इङ्गलैण्ड को सहायता की आवश्यकता होती थी तब प्रत्येक देश को सूचना दी जाती थी और इस प्रकार प्रत्येक प्रदेश अपने यहाँ की नियामक समिति के द्वारा कर लगा कर हो सकती उतनी सहायता करते थे। इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट ने बाला बाला अमेरिका पर कर नहीं लगाया था। पेन्सिलवेनियाँ की नियामक समिति ने निश्चय किया कि परम्परागत रीति के अनुसार जब २ माँग की जाती है तभी तब यह सभा अपनी शक्ति के अनुसार सरकार की सहायता करती आई है और उस प्रकार अब भी आवश्यकता के समय करेगी।

पेन्सिलवेनियाँ की नई नियामक समिति में परगना ख़ालसा करने का प्रार्थनापत्र भेजने का प्रश्न उठते ही ऐसा प्रस्ताव हुआ कि डाक्टर फ्रैंकलिन स्वयम् जाकर निवेदन पत्र पेश करे, इसके लिये उसको अपने प्रतिनिधि रूप से इङ्गलैण्ड भेजा जाय। यह

अपनी ओर से न केवल अच्छी वकालत ही करेगा बल्कि इङ्गलैण्ड जो अपने ऊपर बिना अधिकार के स्टाम्प एक्ट जारी करना चाहता है इस सम्बन्ध में अपने कैसे विचार हैं यह बात भी प्रधानों को जना सकेगा। फ्रैंकलिन की नियुक्ति न होने देने के लिये जागीरदारों के पक्ष वालों ने बड़ा प्रयत्न किया। डिकिन्सन बोला कि—"यह मनुष्य कितना अधिक अप्रिय है इस बात का इस पर से ही ख़याल करो कि १४ वर्ष तक लगातार सभासद् रहने पर भी वह अभी के चुनाव में बराबर मत न पा सका। एक विद्वान् की भाँति उसकी योग्यता चाहे जितनी अच्छी हो परन्तु, राजनैतिक बातों में उसकी सम्मति के अनुसार चलने में अपने ऊपर आपत्ति और सङ्कट आये बिना न रहेगा। प्रधान लोग इसको धिक्कारते हैं इस कारण इसके द्वारा तुम्हारा काम बिगड़े बिना न रहेगा... "आदि।" परन्तु, डिकेन्सन का प्रयत्न निष्फल हुआ। फ्रैंकलिन को प्रतिनिधि की भाँति चुन कर इङ्गलैण्ड भेजने का प्रस्ताव अन्त में पास हो ही गया।

फ्रैंकलिन ने अपनी नियुक्ति को स्वीकार किया और इङ्गलैण्ड जाने की तैयारी करने लगा। परगने की तिजोरी खाली होने से नियामक समिति ने ऋण लेने का विचार किया। २—१ घण्टे में ही ११०० पौण्ड इकट्ठे होगये। फ्रैंकलिन को आशा थी कि थोड़े ही दिन में वापिस आजाऊँगा इससे उसने केवल ५०० पौण्ड ही लिये और १० नवम्बर को वह फिलाडेल्फिया से चल दिया। जिस जहाज़ से वह जाने वाला था वह फिलाडेल्फिया से १५ माइल चेस्टर बन्दर पर था। तीन सौ नागरिक घोड़ों पर सवार होकर उसको वहाँ तक पहुँचाने को आये। ३० दिन की जलयात्रा के पश्चात् वह १० दिसम्बर को लन्दन पहुँच गया और क्रेवन स्ट्रीट वाले अपने पुराने मकान में प्रविष्ट हुआ।

प्रकरण २१वां

स्टाम्प और ज़कात एक्ट के विरुद्ध इंग्लैण्ड में आन्दोलन।

सन् १७६५-१७६६

ग्रेन्विल्ल की मुलाक़ात—स्टाम्प एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन—स्टाम्प एक्ट जारी हुआ—पेन्सिल वेनिया परगने को खालसे करने के लिये फ्रैंकयिन की की हुई व्यवस्था—स्टाम्प एक्ट से अमेरिका में हुआ प्रभाव—फ्रैंकलिन स्टाम्प एक्ट को पसन्द करता है ऐसी नासमझी होने का कारण और उसका परिणाम—स्टाम्प एक्ट के विरुद्ध इंग्लैण्ड का प्रजा-मत—नया प्रधान मण्डल—पार्लामेण्ट में फ्रैंकलिन की साक्षी—साक्षी में प्रकट किये हुए विचार अमेरिकनों को मालूम हुए तब फ्रैंकलिन के विरुद्ध की नासमझी दूर हुई—स्टाम्प एक्ट का रद्द होना—फ्रैंकलिन का पत्नी को लिखा हुआ पत्र—हालेण्ड यात्रा—स्टाम्प एक्ट रद्द होने से अमेरिका में फैली हुई प्रसन्नता—प्रदेशों पर इंग्लैण्ड की पार्लामेण्ट के अधिकार प्रगट करने का नियम—स्टाम्प एक्ट जारी कराने को चली हुई तजवीज़—प्रधान मण्डल में परिवर्त्तन—ज़कात का कानून जारी हुआ—इस क़ानून से अमेरिका में पहिले की भांति असन्तोष होने के कारण।

लन्दन में आते ही फ्रेंकलिन को मालूम हुआ कि प्रदेशों के अधिकारी स्टाम्प एक्ट सम्बन्धी विचारों में पड़े हुए हैं। मुख्य अधिकारी ग्रेन्विल्ल प्रदेशों पर कर लगाने का निश्चय कर चुका था और वह उसका मसौदा पार्लामेण्ट में पेश करने की तैयारी कर रहा था। फ्रेंकलिन और दूसरे प्रदेशों के प्रधान स्टाम्प एक्ट का जारी होना बन्द कराने को क्या उपाय करना इसका विचार करने को प्रति दिन इकट्ठे होने लगे। उन्होंने यह निश्चय किया कि मुख्य प्रधान ग्रेन्विल्ल से रूबरू मिल कर अपनी हानियाँ बताई जायँ। ग्रेन्विल्ल ने उनसे मिलना स्वीकार कर लिया और २ फरवरी सन् १७६५ को अपने आफ़िस में वह फ्रेंकलिन तथा दूसरे तीन और प्रधानों की बातें सुनने को बैठा।

प्रधानों की बातें बहुत संक्षेप में थीं। उनको केवल इतना ही कहना था कि प्रदेशों पर कर लगाया जाय तो उनकी पार्लामेण्ट (नियामक समितियों) के द्वारा लगाना चाहिये। इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट में प्रादेशिक सभासद् नहीं हैं और किस प्रदेश पर इस समय कितना कर है और वे किस प्रकार का नया कर दे सकेंगे इस बात को इंगलैण्ड की पार्लामेण्ट नहीं जानती इस कारण इंगलैण्ड की पार्लामेण्ट का प्रदेशों पर कर लगाने का नियम जारी करना अनुचित है।

ग्रेन्विल्ल ने कहा कि प्रदेशों पर कर लगाये बिना छुटकारा नहीं होने का। यदि स्टाम्प एक्ट जारी हो जाने में तुम अपनी कुछ हानि समझते हो तो और कोई रीति बताओ जिसके अनुसार कर लगाया जाय। परन्तु, इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट कर तो अवश्य लगावेगी। फ्रेंकलिन ने कहा कि इङ्गलैण्ड को चाहिये जितना रुपया देने में हमें कोई आपत्ति नहीं। पहिले भी हमने उसकी सहायता करने से कभी नाहीं नहीं की। अन्तिम युद्ध के

अवसर पर हमारी नियामक समितियों ने बड़ी २ रक़में स्वीकार करके सरकार की सेवा में पेश की थीं। प्रचलित नियमानुसार राजा को चाहिये जितना रुपया इकट्ठा कर के देने में हमारी पेन्सिलवेनियां की मण्डली ने सन् १७६४ में एक मत से यह निश्चय किया है और उस प्रस्ताव की नक़ल आपको देने के लिये मुझे दी है जो यह है, ऐसा कह कर उसने वह नक़ल ग्रेन्विल्ल को दे दी। इस पर ग्रेन्विल्ल ने कहा कि यह तो ठीक है परन्तु, प्रत्येक प्रदेश को किस प्रमाण से कितनी रक़म देनी चाहिये इस का निर्णय तुम कर सकोगे क्या? मुख्त्यारों को स्वीकार करना पड़ा कि यह वे नहीं कह सकते। इस उत्तर का सहारा लेकर ग्रेन्विल्ल ने कहा कि जब ऐसा ही है तो स्टाम्प एक्ट इस प्रकार अमल में आवेगा कि जिस से प्रत्येक प्रदेश पर उसकी हैसियत के अनुसार कर लेगा। इस कारण तुम्हें कोई आपत्ति न होनी चाहिये। इस पर प्रधान बोले कि हमको ख़ास आपत्ति यह है कि इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट हम से बहुत दूर है और उसमें हमारा कोई आदमी नहीं है इस कारण यदि यह पार्लामेण्ट हमारी दलीलों को सुने बिना तथा हमारी स्थिति को जाने बिना हम पर कर लगायेगी तो हमारी स्वतन्त्रता नाम मात्र को भी न रहेगी। यदि इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट ही हम पर कर लगाने का निश्चय करे तो फिर हमारी अपनी नियामक समितियों की कोई आवश्यकता न रहने से वह अपने आप ही बन्द हो जायँगी। इसपर ग्रेन्विल्ल ने कहा कि तुम्हारी नियामक समितियों को बन्द करने का सरकार का अभिप्राय नहीं है, पार्लामेण्ट में स्टाम्प एक्ट का मसौदा पेश करने का मैंने वचन दिया है इस कारण मैं तो उसको पेश करूंगा। तुम्हें जो कुछ कहना हो वह पार्लामेण्ट में कहना। परन्तु, तुम्हारे प्रदेशों को सूचित कर देना कि सब कार्य झगड़ा न करते हुए धीरज और शान्तिपूर्वक करें।

प्रधान लोग अपने २ स्थानों को वापिस गये, मसौदा पार्लामेण्ट में पेश हुआ और कुछ सप्ताह में बहु मत से स्वीकृत भी होगया। सभा में उसके विरुद्ध केवल पचास मत हुए थे। अमीरों की सभा में तो एक भी विरुद्ध मत न था। राजा ने अपने हस्ताक्षर कर दिये और इस प्रकार देखते ही देखते स्टाम्प एक्ट जारी हो गया।

इस नियम का कैसा बुरा परिणाम होगा यह बात इङ्गलैण्ड में किसी के ध्यान में न आई थी। स्टाम्प के कर में से प्रति वर्ष एक लाख पौण्ड की आय होगी ऐसा अनुमान किया गया था। इतनी सी रक़म के लिये अमेरिका कोई बड़ा झगड़ा करेगा ऐसी किसी अंग्रेज़ को कल्पना तक न हुई थी।

स्टाम्प एक्ट जारी हो जाने पर पेन्सिलवेनियाँ का परगना खालसा किये जाने की प्रार्थना पर लक्ष देने का फ्रेंकलिन को अवसर मिला। इस प्रार्थना के सम्बन्ध में यहाँ उसका कुछ वर्णन कर देना ठीक होगा। फ्रेंकलिन ने यह प्रार्थना पेश की और उसका अमल कराने को नियामक समिति ने छः वार प्रयत्न किया। पेन लोग इसके मुक़ाबिले में कमर कस कर खड़े हुए। सन् १७६५ में प्रार्थना पेश हुई तब से सन् १७७५ तक (अमेरिका में राजकीय उथल पुथल आरम्भ हुई तब तक) इस प्रार्थना के महत्त्व के अनुसार उसका विचार करने के लिये प्रधान मण्डली को शान्तिपूर्वक सलाह करने का समय नहीं मिला। जब अमेरिका में स्वतन्त्रता प्रविष्ट हुई तब पेन भाइयों ने अपनी खुशी से जागीरें बेचने की तजवीजें करना शुरू किया। पेन्सिल-वेनियाँ के परगने ने उनको एक लाख चालीस हज़ार पौण्ड दिये और इंगलैण्ड की सरकार ने उनके कुटुम्ब के बड़े बूढ़ों के लिये ४००० पौण्ड वार्षिक नियत कर दिये। यह रक़म उनको बहुत

थोड़ी लगी तो भी उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया और इस प्रकार परगनों से उनका सम्बन्ध विच्छेद होगया।

स्टाम्प एक्ट जारी होने की खबर अमेरिका में पहुँचते ही वहाँ जो हाल हो रहा था उसकी खबर अब इगलैण्ड में आने लगीं। इस एक्ट के सन्मुख जनता ने कैसा भारी झगड़ा उठाया इसके समाचार प्रत्येक जहाज़ के साथ आने लगे। स्थान २ पर सभाएँ होकर प्रस्ताव किये जाने लगे कि यह एक्ट रद्द न हो तब तक इगलैण्ड का बना हुआ माल न लिया जाय। स्टाम्प कागज़ बेचने को नौकर नियुक्त हुए तब तो लोग बिल्कुल बिगड़ खड़े हुए। पेन्सिलवेनियाँ में स्टाम्प विभाग का हाकिम जान ह्यूजीज नामक फ्रैंकलिन का एक मित्र था। वह बड़ा भला आदमी था किन्तु, एक दम सबका अप्रिय हो गया। लोगों ने उसको धमकी दी कि तुम्हारा घर बार जला कर लूट लेंगे। इस कारण उसको रात दिन अपने मकान पर पहरा रखना पड़ता था।

प्रदेशों में स्टाम्प विभाग का हाकिम नियुक्त होने से पहिले ग्रेन्विल्ल ने प्रादेशिक अधिकारियों को बुला कर कहा था कि इङ्ग-लैण्ड से अधिकारी भेजे जायँ तो वहां के लोगों को अच्छा नहीं लगेगा इस कारण मेरा ऐसा विचार है कि अमेरिका में से किसी मनुष्य को चुना जाय। यदि कोई योग्य व्यक्ति तुम्हारी दृष्टि में हो तो मुझे बताओ। इस प्रकार ग्रेन्विल्ल के कहने से फ्रैंकलिन ने पेन्सिलवेनियाँ के लिये जान ह्यूजीज का नाम बताया था।

इस अवसर का लाभ लेकर फ्रैंकलिन के राजकीय दुश्मनों ने उस से बैर करना शुरू किया। उन्होंने ऐसी बात चलाई कि फ्रैंकलिन स्टाम्प एक्ट को पसन्द करता है और यह उसी ने जारी कराया है। उसका अमल करने को उसने अपने ही मनुष्य

नियुक्त किये हैं और वह स्वयम् स्टाम्प विभाग का हाकिम हो जाने के लिये खटपट कर रहा है। कुछ अज्ञानी लोगों ने तो बेतरह उसका पीछा किया और कुछ ऐसे व्यङ्ग चित्र बना २ कर सार्वजनिक स्थानों पर रखे गये मानों शैतान फ्रैंकलिन के कान में कोई मतलब की बात कह रहा हो। उस के विरुद्ध उन्होंने कई पुस्तकें प्रकाशित कीं। जिस घर में फ्रैंकलिन की स्त्री रहती थी उसको गिरा देने के लिये भी कुछ नीच मनुष्यों ने इरादा किया। गवर्नर फ्रैंकलिन आतुरता से न्यूजर्स से फिलाडेल्फिया आया और अपने सगे सम्बन्धियों को अपने घर बर्लिंगटन ले गया, केवल उस की स्त्री ही साहस करके घर पर रही। ९ दिन तक इस अबला को भय के मारे घर के भीतर बैठा रहना पड़ा।

१ नवम्बर को स्टाम्प एक्ट अमल में आने वाला था। इस तारीख के पहिले ही इङ्गलैण्ड में खबर फैल रही थी कि सब प्रदेश एक मत से इस नियम का अमल न होने देने का निश्चय कर चुके हैं। इङ्गलैण्ड का बना हुआ माल अमेरिका से कोई न मँगाता था इस से इङ्गलैण्ड का व्यापार बिगड़ जाने का अवसर आगया था। शीघ्रता से जारी किये गये स्टाम्प एक्ट के सामने खास इङ्गलैण्ड तक में हलचल होने लगी। परिणाम में ग्रेन्विल का शासन पूरा होकर उसके स्थान पर मारक्विस आफ राकिंगहाम की अध्यक्षता मे लिबरल पक्ष का अमल हुआ। नये प्रधान का सेक्रेटरी एडमण्ड बर्क, डाक्टर फ्रैंकलिन का चिर-परिचित मित्र था जो अमेरिका के साथ हार्दिक सहानुभूति रखता था।

देशभक्त डाक्टर फ्रैंकलिन रात दिन ईमानदारी से अमेरिका की ओर से आन्दोलन चलाने के उपाय सोचा करता। पार्लमेण्ट के सभासदों के घर जा जा कर वह उनसे मिलता, उनको अमेरिका के सम्बन्ध में सब खबरें देता और वे चाहते इस तरह का

खुलासा करके उदाहरण और दलीलों से उनके भ्रान्तिपूर्ण विचारों को बदलता।

नये राज्य मण्डल में बर्क के विचारों का बड़ा प्रभाव पड़ता था। उसके तथा फ्रेंकलिन के विचार एकही तरह के थे। बर्क कहता कि अमेरिका सम्बन्धी अज्ञान के कारण ही पर्लामेण्ट ने भूल की है। इस कारण जब अमेरिका सम्बन्धी पूरी जानकारी होगी तभी सच्चा रास्ता सूझ पड़ेगा। इस पर से यह निश्चय किया गया कि पार्लामेण्ट में अमेरिका सम्बन्धी साक्षियां लेनी चाहिये। इस पर अमेरिका के साथ सम्बन्ध रखने वाले सैकड़ों मनुष्य साक्षी देने को आये। इस प्रसङ्ग पर डाक्टर फ्रेंकलिन की दी हुई साक्षी सब से श्रेष्ठ गिनी जाती है। उससे पूछे हुए प्रश्नों के उत्तर उसने ऐसी स्पष्टता और निर्भयता से दिये कि स्टाम्प एक्ट के पक्ष मे सभासदों में से भी कइयों के विचार उसकी साक्षी सुन कर फिर गये। लिबरल पक्ष में फ्रेंकलिन के बहुत मित्र थे और वे उसके विचारों से परिचित थे इस कारण वे उससे ऐसे प्रश्न करते जिसका उत्तर स्टाम्प एक्ट के विरुद्ध ही आवे। एक पक्ष के प्रश्न का उद्देश फ्रेंकलिन को अपने विचार प्रगट कर सकने का अवसर देने का था किन्तु, दूसरे पक्ष का उसको घबराहट तथा भुलावे में डाल कर अपने मत को सहायता मिले ऐसी बातें उसके मुँह से कहलवाने का था। फ्रेंकलिन ने बिना कुछ हिच किचाहट के सब प्रश्नों के उत्तर दिये।

फ्रेंकलिन की साक्षी लेते समय पूछे हुए प्रश्नो के उत्तर में उसने कहा कि अमेरिकनों को अपने देश में कई तरह के कर देने पड़ते हैं इस कारण और अधिक कर उनसे इस समय न दिया जायगा? ऐसा होते हुए भी कर की आवश्यकता हो तो उनकी नियामक समितियों की मारफ़त

लगाये हुए कर वे प्रसन्नतापूर्वक देंगे, परन्तु इङ्गलैंड की पर्लामेण्ट का लगाय हुआ कर तो वे कभी न देंगे। बलात्कार किये बिना स्टाम्प का अमल वहां न होने का। यदि स्टाम्प की दर कम कर दी जाय तो भी वे अपनी प्रसन्नता से उसका अमल न करेंगे। स्टाम्प एक्ट के बदले दूसरे नियम का अमल किया जाय तो उसे भी वे न मानेंगे। किसी विशेष प्रकार के कर के लिये उनको कोई आपत्ति नहीं, उनकी आपत्ति तो यह है कि उन पर इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट से कर लगना ही नहीं चाहिए। और इसी से उनका आन्दोलन पार्लामेण्ट जो कर लगा रही है उस नीति के विरुद्ध है। इङ्गलैण्ड, इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट, और इङ्गलैण्ड का बना हुआ माल इन सब की ओर अमेरिका निवासी बड़ी मान भरी दृष्टि से देखते थे, परन्तु स्टाम्प एक्ट जारी होने के पश्चात् उनकी ओर वे तुच्छ दृष्टि से देखते हैं। अमेरिका बड़ा कला-कौशल पूर्ण देश है, अपने देश का माल तैयार होने में देर लगेगी तो भी अमेरिकन लोग इङ्गलैण्ड का माल न खरीदेंगे और अपने देश में कपड़ा तैयार हो वहां तक अपने पुराने कपड़ों को पहिन कर सन्तोष मान लेंगे। वे अपने क़र्ज़दारों पर का ऋण रद्द होजाने देंगे, परन्तु स्टाम्प का उपयोग न करेंगे। हथियार लेकर लड़ें ऐसे अमेरिका में हज़ारों आदमी हैं। इङ्गलैण्ड की पर्लामेण्ट ने अमेरिका में डाक विभाग खोला है सही, परन्तु उसके द्वारा पत्र भेजने वाला व्यक्ति जो कर देता है वह पत्र पहुँचाने के परिश्रम का बदला है। इस कर को स्टाम्प कर की भांति समझना उचित नहीं। स्टाम्प कर तो अखीर में बेचारे ग़रीब आदमियों पर पड़े होगा। कारण कि, क़र्ज़दारों का अधिकाश भाग ग़रीब लोगों में से ही होता है और उनको व्याज देना पड़ता है। इसके अतिरिक्त स्टाम्प खर्च भी देना पड़ेगा इस प्रकार व्याज की एक भारी रक़म हो जायगी।

स्टाम्प एक्ट रद्द होजाय तो भी अमेरिका पर कर लगाने के अधिकार को अमेरिकन लोग स्वीकार न करेंगे।

एक व्यक्ति ने पूछा कि स्टाम्प एक्ट में कुछ सुधार कर दिया जाय तो इस नियम को सब प्रदेश पसन्द करेंगे या नहीं? इस पर फ्रेंकलिन ने गम्भीरता से उत्तर दिया:—

"मुझे स्वीकार करना चाहिए कि सुधार करने की एक बात पर मैंने विचार कर देखा है। यदि ये सुधार कर दिये जायँ तो नियम भले ही बना रहे किन्तु, फिर भी हमारे लोग उसका प्रतिवाद न करेंगे। यह सुधार बहुत संक्षिप्त है—थोड़ा है केवल एक ही शब्द का फेरफार करना है। जिस धारा में इस प्रकार लिखा है कि यह नियम सन् १७६५ के नवम्बर की पहिली तारीख से अमल में आयगा उसमें सुधार होना चाहिये। मेरी इच्छा ऐसी है कि इस धारा में सन् १७६५ में जो पहिला अङ्क (१) है उसके बदले (२) करो, फिर भले ही नियम बना रहे।"

फ्रेंकलिन के कथन में कोई त्रुटि निकालने वाला नहीं था, अपने देश की वकालत इस खूबी से कर सके ऐसे व्यक्ति को टोरी पक्ष वाले भी कुछ दोष न दे सके। बर्क कहता है कि इसकी साक्षी ली गई उस समय का दृश्य ऐसा था मानों शिष्य-मण्डली गुरु की परीक्षा ले रही हो। डाक्टर फोधर गिल ने फिलाडेल्फिया के अपने एक मित्र को लिखा था कि:—"उसने प्रत्येक प्रश्न का उत्तर ऐसी स्पष्टता और सन्तोष जनक रीति से दया है और इस विषय पर अपने विचार ऐसी सरलता और दृढ़ता से प्रगट किये हैं कि उस के कारण उसको बड़ा सम्मान मिला है और इससे अमेरिका के हक में बहुत लाभ हुआ है।"

फ्रेंकलिन की साक्षी का वृत्तांत कुछ समय के पश्चात् अमेरिका के सामायिक पत्रों में प्रगट हुआ और लोगों के पढ़ने में आया तब कहीं जाकर उनके दिल से उस विषय की नासमझी दूर हुई। कुछ समय के पश्चात् पार्लामेण्ट में स्टाम्प एक्ट रद्द करने की प्रार्थना पेश हुई और भारी वाद विवाद के पश्चात् स्वीकृत हो गई। ग्रेन्विल्ल ने अपनी डायरी में इसके सम्बन्ध में लिखा है कि:—'शुक्रवार २१ वी फरवरी सन् १७६६ के दिन मि० कोन्वे ने स्टाम्प एक्ट रद्द करने की प्रार्थना की, और मि० ग्रे कूपर ने उस के सहारा लगाया। सभा प्रातःकाल के ४ बजे तक होती रही। अन्त में १०८ व्यक्तियों के बहुमत से स्टाम्प का नियम रद्द करने के लिए की गई प्रार्थना स्वीकार हुई।'

स्टाम्प का नियम रद्द होने से फ्रेंकलिन मारे हर्ष के फूला न समाता था। उसने शीघ्र ही अपने मित्रों को पत्र लिख २ कर इस शुभ-संवाद की सूचना दे दी। अपनी पत्नी को उसने लिखा कि:—'स्टाम्प क़ानून रद्द होगया है इस कारण मैं तुमको यहां का बना हुआ नया वस्त्र भेजता हूं। यदि दोनों देशों के बीच में व्यापार बिल्कुल बन्द हो जाता तो भी अपने घर के बने हुए जैसे कपड़े मैंने पहिले पहिने थे उस से मुझे विश्वास था कि बिना किसी असुविधा के अपने घर पर कपड़े तैयार हो सकेंगे। यह बात मैंने पार्लामेण्ट मे प्रगट की थी और कहा था कि अमेरिकनों के इस समय के कपड़े फट जायँगे तब वे अपने हाथसे नये बना बना कर अपना काम चलायेंगे, परन्तु स्टाम्प का क़ानून रद्द न होगा तब तक इगलैंड से न मंगायेंगे।'

अब फ्रेंकलिन ने वापिस घर आने के लिये नियामक समिति से आज्ञा मागी और वहां से उत्तर आवे तब तक वह हालैण्ड और हानोवर की ओर यात्रा करने को चल दिया। घर पर

वापिस आने की आज्ञा देने के बदले में नियामक समिति ने उस को एक वर्ष के लिए और इङ्गलैंड रहने की प्रार्थना की।

स्टाम्प का क़ानून रद्द होने की खबर अमेरिका आ पहुंची तब तो वहां के लोगों को बड़ा हर्ष हुआ। बोस्टन में तो ऐसे आनन्द के समय कोई भी मनुष्य दुखी न रहे इसके लिए क़ैदियों को भी छोड़ दिया गया। जिस जहाज़ के द्वारा यह खुश खबरी आई थी उसके कप्तान और खलासियों को फ़िलाडेल्फ़िया की जनता ने सरोपाव * दिया। रात्रि को शहर में रोशनी की गई और सारी रात और दिन भर लोगों को मुफ्त में खूब शराब पिलाया गया। दूसरे दिन गवर्नर पेन ने तीन सौ मनुष्यों को एक प्रीति भोज दिया और वहां सब ने एकत्रित होकर माननीय डाक्टर फ्रेंकलिन की स्वास्थ्य कामना की। तथा राजा के आने वाले जन्म दिवस से इङ्गलैंड में बने हुए कपड़े पहिन कर पुराने देशी कपड़े ग़रीबों को दे देने का निश्चय किया।

परन्तु, यह हर्ष—यह प्रसन्नता अधिक समय तक न रही। इङ्गलैंड में स्टाम्प का क़ानून रद्द होजाने से और ही प्रभाव हुआ था। इस क़ानून को रद्द करने की चेष्टा होरही थी तभी से मालूम हुआ था कि तीसरे जार्ज को यह बात पसन्द नहीं है। राजा और उसके मिलने वालों को प्रसन्न रखने के लिये प्रधान मण्डल ने प्रगट किया था कि स्टाम्प का क़ानून रद्द किया जायगा परन्तु उससे पहिले एक दूसरा क़ानून जारी करके ऐसा प्रगट किया जायगा कि प्रदेशों पर इंग्लैण्ड की पार्लामेण्ट की निरंकुश सत्ता है। इस प्रकार अधिकार प्रगट करने का मसौदा पेश करके प्रदेशों पर इंग्लैण्ड की पार्लामेण्ट की निरंकुश सत्ता है। ऐसा अधिकार प्रगट करने की आज्ञा क़ानून प्रधान मण्डल ने जारी कराई।

* पगड़ी दुपट्टा—पुरस्कार विशेष।

तो भी स्टाम्प का क़ानून रद्द किये जाने की बात राजा को मालूम न हुई। जिसकी सम्मति का कुछ मूल्य न था उसने अपनी अपनी सम्मति दी तो थी किन्तु उस का अन्तःकरण दुविधा में ही पड़ा रहता था। उस समय पार्लामेण्ट के सभासदों को रिश्वत देकर उनको अपना कर लेने के लिये राजा के पास बहुत साधन थे, अनेक सभासदों को राजा की ओर से पेन्शन मिलती थी और उन की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जाती थी। ग्रेन्विल्ल और उसके पक्ष के सभासदों का मत तो राजा के जैसा ही था। जो रिश्वत लेना चाहते उन को मान और ओहदे आदि दिये जाते। स्टाम्प का कानून रद्द होजाने के पश्चात् चार मास में तो राजा का पक्ष इतना बलवान हो गया कि राकिंग हाम के प्रधान मण्डल को त्याग पत्र देना पड़ा। जिस प्रकार पहिले स्टाम्प का क़ानून अप्रिय होगया था उसी प्रकार अब नये प्रधान मण्डल में इस क़ानून का रद्द होना अप्रिय होगया।

नये प्रधान मण्डल में ख़ज़ानची का ओहदा चार्ल्स टाउनसेंड को मिला। यह व्यक्ति बड़ा चलता पुर्ज़ा था। वह सन् १७६५ में स्टाम्प का क़ानून जारी किये जाने के पक्ष में था और सन् १७६६ में समयानुसार अपने विचार बदल कर यह क़ानून रद्द किये जाने के पक्ष में भी हो गया। इस प्रकार उस ने अब सन् १७६७ में अमेरिका पर स्टाम्प के क़ानून की भांति दूसरा कोई और कर लगाने की योजना करना शुरू की। समय की गति के अनुसार चलकर सब को प्रसन्न रखना उसका मुख्य उद्देश था। काग़ज, रंग, काच और चाय पर महसूल लगाने का उस ने एक ऐसा मसौदा तैयार किया जिसके द्वारा ४० हज़ार पौण्ड की वार्षिक आय हो। इस मसौदे को इङ्गलैंड और अमेरिका दोनों देशों में पसन्द कराने के लिए उसने यह दलील की कि अमेरिकन

लोगों ने स्टाम्प के क़ानून के सम्बन्ध में ऐसा झगड़ा उठाया था कि इङ्गलैंड की पार्लामेएट को अमेरिका मे कर लगाने का अधिकार नहीं है, इस नये कर का अमल अमेरिका से बाहर ही हो सकता है, इसके अतिरिक्त यह कर बाहर से आने वाले माल पर लगने का है इस कारण उस पर आपत्ति करने का कोई कारण नहीं दिखाई देता। बस! पार्लामेएट में राजा का पक्ष सबल हो जाने के कारण यह नया मसौदा सुविधा से मंजूर होगया।

जिस नीति के विरुद्ध अमेरिका को ऐसी आपत्ति थी उसका प्रश्न इस नये करके कारण स्वभावतः फिर उत्पन्न हुआ। कारण कि इङ्गलैंड की पार्लामेएट मे अमेरिका का प्रतिनिधि न होते हुए भी यह कर उसने अमेरिका पर लगा दिया जिसका सारा भार कर लिए जाने वाले माल का प्रयोग करने वाले अमेरिकनों पर ही पड़ने वाला था। इस कारण जैसे ही इस करके नियम की स्वीकृति की सूचना अमेरिका में पहुंची वैसे ही स्टाम्प एक्ट की भांति वहां के निवासियों ने उसका भी विरोध करने का निश्चय किया।

प्रकरण २२वां

इंगलैण्ड में रह कर की हुई देश सेवा

सन् १७६७ से १७७२ तक

फ्रान्स की यात्रा—प्रदेशों ने जकात के नियमों का विरोध किया—असन्तोष के कारण—"कृषकों का पत्र"—सामयिक पत्रों में लेख—प्रधान मण्डल में परिवर्त्तन—लार्ड हिल्स बरो—फ्रैंकलिन इंगलैण्ड में—अमेरिका जाने की तत्परता—ज्योर्जिया, न्यूजर्स और मसाच्युसेटस प्रदेशों ने फ्रैंकलिन को अपना प्रतिनिधि चुना—फ्रैंकलिन की आर्थिक स्थिति—आर्थरली—प्रधान मण्डल का मनस्ताप—फ्रैंकलिन को प्रदेशों की दी हुई सलाह—फिलाडेल्फिया के व्यापारियों को लिखा हुआ पत्र—मि० स्ट्रेहन को दिया हुआ उत्तर—चाय के अतिरिक्त दूसरी वस्तुओं पर का महसूल पार्लामेण्ट ने निकाल दिया—अमेरिकनों में उत्तेजना—फ्रैंकलिन की प्रधान मण्डल को दी हुई धमकी—फ्रैंकलिन की दृढ़ता—हिल्स बरो की मुलाकात—एलीगेनी पर्वत के पश्चिम में प्रदेश स्थापित करने की योजना—हिल्सबरो का त्याग पत्र—लार्ड डार्टमथ—मसाच्युसेटस की प्रार्थनाओं के साथ उसकी मुलाकात—बड़े राज्य को छोटा करने के नियम—प्रूशिया के राजा का ढिंढोरा—इन लेखों का प्रभाव।

स्टाम्प एक्ट रद्द हो जाने के पश्चात् हुई शान्ति का लाभ लेकर फ्रेंकलिन यूरोप की यात्रा को निकला था ऐसा पिछले प्रकरण में कहा गया है। यात्रा में सर जान प्रिंगले नामक डाक्टर और फ्रेंकलिन का खास मित्र, उसका साथी था। लन्दन में फ्रान्स के एलची की ओर से वहा के प्रख्यात पुरुषों के नाम फ्रेंकलिन ने कुछ परिचय-पत्र ले लिये थे। सन् १७६७ के सितम्बर मास में वे पेरिस आये। विद्युत सम्बन्धी की हुई शोधों से फ्रेंकलिन का नाम फ्रान्स के विद्वानों में पहिले से ही प्रसिद्ध हो चुका था। जहां गया वहीं उसका अच्छा आदर सत्कार हुआ। फ्रान्स के राजा और उसके कुटुम्बियों के साथ उसकी मुलाकात कराई गई, वहा से अन्यान्य राजकीय-पुरुषों के साथ उसका परिचय हुआ। सारांश यह कि इस यात्रा से उसकी फ्रान्स संबंधी बहुत जानकारी बढ़ गई और उसके मित्र मण्डल में भी खूब वृद्धि हुई।

फ्रेंकलिन एक मास के पश्चात् वापिस लन्दन आया तब उसे मालूम हुआ कि मि० टाउन्सेण्ड के जकात वाले नियम से अमेरिका में बड़ी खलबली हो रही है। जकात की आमदनी में से गवर्नर, न्यायाधीश और दूसरे अमलदारों का वेतन देने का सरकार का विचार था। इस प्रकार हो तो ये सब अमलदार सरकार के ताबेदार हो जायँ और प्रादेशिक नियामक-समितियों की अपेक्षा न रखें। यह जकात का नियम, रद्द किये हुए स्टाम्प एक्ट की भाँति ही था। प्रदेशों ने उसका विरोध करने का विचार किया। बोस्टन निवासियों ने निश्चय किया कि इङ्गलैण्ड का बना हुआ माल न लेना चाहिये और दूसरे देशों से आने वाला सब प्रकार का माल अपने देश में तैयार करना चाहिये। इससे इङ्गलैण्ड के प्रधान मण्डल को बड़ा क्रोध आया और वह कहने

लगा कि अमेरिकन जान बूझ कर पार्लमेण्ट का अपमान करते हैं और झगड़ा उठाते हैं। प्रदेशों के कुछ मित्रों को भी ऐसा लगा कि अभी मुकाबिला करने का समय नहीं आया है। बोस्टन के लोगों का किया हुआ कार्य सामान्यतः सब पक्ष वालों ने निन्द-नीय समझा। बात कुछ ठण्डी करने और अमेरिकनों के सामने होने के सच्चे कारण बताने को फ्रैंकलिन ने "अमेरिका में असन्तोष होने के सन् १७६८ से पहिले के कारण" इस नाम से एक निबन्ध लिखा और उसको "लन्दन क्रानिकल" नामक पत्र में छपवाया। सम्पादक ने फ्रैंकलिन के लेख में बहुत परिवर्तन कर दिया था तो भी यह लेख प्रसंगानुकूल ऐसे माध्यमिक मार्ग का अवलम्बन करके लिखा गया था कि विपक्षियों पर भी उसका प्रभाव पड़े बिना न रहे। उसमें प्रदेशों में असन्तोष उत्पन्न होने के आरम्भ से उस समय तक के कारणों का ऐसी खबी से वर्णन किया गया था कि उसी पर से पढ़ने वाले के मन में सारी हक़ीक़त का चित्र खिंच जाय। बोस्टन के लोगों का किया हुआ निश्चय, इङ्गलैण्ड की सरकार के अनुचित कृत्यों का स्वाभाविक परिणाम है यह बात भी फ्रैंकलिन ने इस लेख में साबित कर दी। दूसरे शहरों ने बोस्टन का उदाहरण लेकर उसी के अनुस र निश्चय किया और थोड़े ही समय में सब प्रदेशों ने इङ्गलैण्ड का माल काम में न लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

नये जकात कर के सामने अमेरिकनों की इच्छा प्रकट करने वाली कुछ खुली चिट्ठियाँ अमेरिकन पत्रों में "कृषक" के हस्ताक्षर से प्रकाशित हुई थीं। फ्रैंकलिन को इन पत्रों की नक्ल सन् १७६८ के आरम्भ में मिली। इन का लेखक फ्रैंकलिन का विपक्षी फ़िलाडे-ल्फ़िया निवासी जान डिकेन्सन था। सामान्य दुःख के समय भीतरी लड़ाई झगड़ों को भूल कर फ्रैंकलिन ने ये पत्र इङ्गलैण्ड में

छपवाये और एक बड़ी प्रस्तावना लिख कर उन की खूब प्रशंसा की। इङ्गलैण्ड में इस प्रस्तावना के कारण इन पत्रों की इतनी प्रसिद्धि हुई कि कुछ ही समय में उस का फ्रेंच भाषा में अनुवाद करके किसी ने उन को पेरिस से भी प्रकाशित किया। अमेरिकन विषयों पर सामयिक पत्रों में फ्रेंकलिन कुछ न कुछ हमेशा लिखा करता था और उसमें अपना सच्चा नाम प्रगट न करके "एटीकस" "पेसिफिकस" "सिकन्डस," "एमिकस" आदि उप नाम दे दिया करता था। ये सब लेख जानकारी, ढंग और चतुराई से भरे हुए हैं जिन में अमेरिकनों का बड़ा उत्तम और प्रभावोत्पादक रीति से बचाव किया गया है।

सन् १७६८ के आरम्भ में प्रधान मण्डल में फेरफार हुआ। अमेरिका सम्बन्धी कार्य अभी तक लार्ड शेलबर्न के हाथ में था वह अब से अमेरिका का पृथक् विभाग निकाल कर लार्ड हिल्सबरो को दिया गया। लार्ड हिल्स बरो अमेरिका का सेक्रेटरी आफ स्टेट तो था ही किन्तु बोर्ड आफ ट्रेड का सभापति भी था। दो बड़े ओहदे पर होने के कारण उस की सत्ता इतनी अधिक थी कि अमेरिका का अच्छा बुरा करना उसी के हाथ में था, यह व्यक्ति प्रामाणिक और अच्छे उद्देशों वाला था, परन्तु था ज़िद्दी। अपनी बात को अथवा अपने मत को वह हठ कर के भी पूरी करवाता। अभी यह नहीं मालूम हुआ था कि प्रदेशों के विषय में इस की धारणा अच्छी नहीं है फिर भी उसकी नियुक्ति से अमेरिका का भला हो ऐसा प्रदेशों के प्रतिनिधियों को विदित नहीं हुआ। आरम्भ में लार्ड हिल्सबरो का प्रतिनिधियों के साथ अच्छा बर्ताव था। वह ध्यान पूर्वक उन की हक़ीक़त सुनता था। डाक्टर फ्रेंकलिन पर उसकी बड़ी कृपा थी। उस के साथ अमेरिकन विषयों पर वह कई बार बातचीत करता और कहता कि

तुम्हारे विचार मुझे बड़े महत्त्व के मालूम होते हैं। इन दिनों ऐसी अफवाह उड़ी थी कि लार्ड हिल्सबरो अपने अधीनस्थ विभाग में फ्रैंकलिन को किसी ओहदे पर नियुक्त करने वाले हैं। इस सम्बन्ध में एक पत्र में फ्रैंकलिन ने लिखा है, "लार्ड हिल्स बरो के नीचे उपमन्त्री की भाँति मेरी नियुक्ति किये जाने के लिये प्रयत्न किया जा रहा है ऐसा मेरे सुनने में आया है परन्तु यह सम्भव नहीं। कारण, प्रधान मण्डल जानता है कि मुझ में बहुत से अमेरिकन गुण हैं।" तो भी यह तो सच्ची बात है कि ड्यूक आफ ग्रेफटन की सूचना से अमेरिका के पोस्ट मास्टर के स्थान के बदले फ्रैंकलिन को इङ्गलैण्ड में कोई अच्छी जगह दिये जाने के सम्बन्ध में विचार हुआ था और इसके लिये फ्रैंकलिन से उस की इच्छा भी पूछी गई थी। परन्तु, उसने साफ इन्कार कर दिया था। अपने पुत्र को भेजे हुए एक पत्र में उसने लिखा कि "अब मेरी घर पर आकर विश्राम करने की इतनी इच्छा होती है कि इस जगह की अपेक्षा मुझे अपनी पुरानी जगह पर घर बैठने दिया जाय तो मैं अधिक प्रसन्न होऊँ। अमेरिका के काम काज में मैं जो तत्परता दिखाता हूँ उसको देखते हुए, मैं इस समय है वही जगह ले लेता तो भी मुझे दुःख न होता...... मैं वृद्ध हुआ हूँ। अब मेरी लोभ वृत्ति नहीं रही। यहाँ रहने पर मैं अपने देश की अधिक सेवा कर सकूँगा इसी आशा से पड़ा हुआ हूँ, अन्यथा मेरा मन एक क्षण का भी विलम्ब न करके घर पर आजाने को होरहा है। क्योंकि वहाँ मैं अपने जीवन को निश्चिन्ततापूर्वक बिता सकूँगा"।

अन्त में फ्रैंकलिन को जगह देने की कोशिश का कुछ फल नहीं हुआ। उसकी बुद्धि, उस का ज्ञान और मान इतना था कि यदि किसी प्रकार उस जगह को यह मंजूर कर ले तो इसके द्वारा

बड़ा काम हो इस बात को प्रधान मण्डल जानता था। इसकी ईमानदारी ऐसी थी कि इस को फोड़ लेने की आशा करना व्यर्थ था। यही समझ कर इस बात को प्रधान मण्डल ने अधिक न बढ़ाया। फ्रैंकलिन को जगह मिलने की खबर अमेरिका पहुँची तब पेन्सिल्वेनियाँ में उसके राजकीय शत्रुओं ने उसका आदर कम कराने के लिये फिर प्रयत्न करना आरम्भ किया। उन्होंने यह बात फैलाई कि फ्रैंकलिन देश का विश्वास घात करके प्रधान मण्डल से मिल गया है और उपमंत्री का स्थान लेने की खटपट कर रहा है। परन्तु, इस निर्मूल बात का कुछ प्रभाव नहीं हुआ। और अन्त में सब ने यह सहज ही जान लिया कि यह बात झूठी है।

अमेरिका के सम्बन्ध में इङ्गलैण्ड निवासियों की आँखें खोलने को फ्रैंकलिन के किये हुये परिश्रम का प्रत्यक्ष में कुछ फल नहीं हुआ। सन् १७६८ में सारा इङ्गलैण्ड "स्वतन्त्रता" के प्रश्न में डूबा हुआ था। उस समय यह सम्भव न था कि अमेरिका जैसे दूर के देश की स्थिति को कोई सुनता और उस पर कुछ विचार किया जाता, तो भी फ्रैंकलिन के देश बन्धु उसके परिश्रम का मूल्य समझते थे और उनका विश्वास था कि अन्त में उसके परिश्रम का फल अच्छा ही निकलेगा। उस वर्ष बसन्त ऋतु में वह निराश होकर वापिस अमेरिका जाने की तैयारी कर रहा था कि इतने ही में उसको खबर मिली कि जार्जिया परगने ने उसको अपने प्रतिनिधि के रूप में चुना है और सर्व सम्मति से वहां उसकी नियुक्ति भी हो गई है। इस परगने में उसका किसी से परिचय न था। किन्तु फिर भी उसने यह सोच कर कि उन लोगों ने मेरे द्वारा कुछ लाभ होने की आशा से ही मेरी नियुक्ति की होगी, घर जाने का विचार छोड़ दिया और कुछ

समय वहा रहने का निश्चय किया। दूसरे वर्ष उस को न्यूजर्स परगने ने अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया और तीसरे वर्ष मसाच्युसेट्स परगने ने भी वही किया। इन नियुक्तियों से तथा इंगलैंड में रहने के लिए उसके अमेरिकन मित्रों का बहुत आग्रह होने के कारण उसको इङ्गलैंड में ही रहना पड़ा। इस प्रकार दस वर्ष तक बराबर ऐसा ही होता रहा कि वह घर जाने की तय्यारी करता और प्रति वर्ष उसको अपना विचार स्थगित कर देना पड़ता।

इन नई नियुक्तियो से उसकी आर्थिक अवस्था किसी अंश तक सुधर गई थी। उसे पेन्सिल्वेनियां से ५०० पौण्ड, मसाच्युसेटस से ४००, जार्जिया से २०० और न्यूजर्स से १०० पौण्ड मिलते थे। मसाच्युसेटस में कुछ लोगों ने उसकी नियुक्ति का विरोध किया था, और उसका कारण यह बताया जाता था कि इसके विचार बहुत नरम हैं। उन लोगों की ऐसी धारणा इस लिये होगई थी कि यद्यपि वह इगलैण्ड में अमेरिका सम्बन्धी आन्दोलन बड़े जोरों से कर रहा था तथापि अपने देशवासियो को शान्त और सहनशील रहने का उपदेश दिया करता था। इसके अतिरिक्त जागीरदार के पक्ष वाले भी उसका प्रभाव घटाने को उसके सम्बन्ध मे मन मानी बातें फैलाया करते थे। यह होते हुए भी अधिक मत फ्रेंकलिन को ही मिले और अन्त में उसकी नियुक्ति दृढ़ हो गई। अमेरिका वापिस आने के समय उसकी अनुपस्थति में आर्थरली नामक व्यक्ति भी उसके साथ ही चुन लिया गया और यथा समय वह कार्य-भार सम्भाल ले इसके लिये उसे सूचना भी दे दी गई।

फ्रेंकलिन को मिले हुए नये सम्मान से प्रधान मण्डल की ईर्षाग्नि बढ़ गई थी, क्योंकि उसमें चतुर और विचारशील व्यक्ति तो रहे नहीं थे। केवल राजा के खुशोमदियों का दौर दौरा था और तीसरा जार्ज बुद्धि थोड़ी रखता था, इससे बुद्धिवान

प्रधान उसको पसन्द नहीं आते थे। पहली और दूसरी श्रेणी के राजनीतिज्ञ पुरुष उससे तंग आकर राज्य प्रबन्ध से दूर रहने लगे थे। केवल तीसरे दर्जे के मनुष्य प्रधान-मण्डल के बड़े २ ओहदों पर हो गये थे। ऐसा हो जाने के पश्चात् प्रधान मण्डल आँखें मीच कर काम करे और अमेरिका की शिकायत कोई न सुने इसमें क्या आश्चर्य ?

अब फ्रैंकलिन ने निश्चित रूप में यह जान लिया कि प्रधान मण्डल अमेरिका की शिकायतें न सुनेगा, तो उसने अपने अमेरिकन मित्रों को लिखा कि अंग्रेजी माल को न मँगाने और उपयोग में न लेने के प्रस्ताव को अब आप लोग कार्य रूप में परिणत कर दें। प्रधान मण्डल ऐसा हठ सा करके बैठा है कि उसका प्रचलित किया हुआ नियम चाहे जितना भूल भरा हो, किन्तु, उसका पालन होना ही चाहिये। राजा की कोई भी प्रजा पार्लामेण्ट के बनाये हुए नियम का विरोध करे यह उसका अपमान है, इस कारण परिणाम का विचार किये बिना बलात्कार करना पड़े तो भी कोई हानि न समझ कर उसका पालन कराना ही चाहिये।

प्रधान मण्डल का ऐसा विचार होने से फ्रैंकलिन जैसे सहनशील व्यक्ति को भी समाधान की कुछ आशा न रही। वह प्रार्थनाएँ कर कर के थक गया था और किसी प्रकार भी सुनवाई न होने से अन्त में उसने तंग आकर अपने देशवासियों को यही अनुमति दी कि इस नियम का पालन हमको नहीं करना चाहिये। इसके लिये तुम जो कुछ प्रयत्न करना चाहो वह बराबर करना। इस पर उन्होंने कर देकर इङ्गलैण्ड की वस्तुएँ ख़रीदने के बदले सब वस्तुएँ अपने ही देश में बनाने के लिये पहिले निश्चय के अनुसार कार्य्यारम्भ कर दिया। कर लगने वाली कोई वस्तु

नहीं मँगाई जाने लगी और विदेशी माल का मँगवाना एक प्रकार से बिल्कुल बंद कर दिया गया।

फ़िलाडेल्फिया के व्यापारियों की एक मण्डली ने इंगलैण्ड से माल न मँगवाने के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव किया था उसकी प्रतिलिपि उसने फ्रैंकलिन को भेजी और उससे प्रार्थना की कि इंग्लैण्ड के जिन व्यापारियों का अमेरिका के साथ सम्बन्ध था उनको यह अवश्य दिखावें। इसके उत्तर में फ्रैंकलिन ने सन् १७६९ के जुलाई मास में उन लोगों को लिखा कि—"अपने देश के हानि लाभ का विचार करके जो उपयोगी और प्रशंसनीय कार्य तुमने आरम्भ किया है उस पर डटे रहना। अंग्रेज़ी माल न मँगाकर केवल तुम्हारे देश में उत्पन्न होने वाले माल का ही उपयोग करोगे तो अपने देश की स्वतंत्रता तुमको फिर मिलेगी। इतना ही नहीं, बल्कि वह ऐसी दृढ़तर रीति पर स्थापित होगी जिसको तुम्हारे वंशज भी भोगेंगे।" इस प्रकार शाबाशी देकर उसने अपने देश वासियों को बड़ा आश्वासन और प्रोत्साहन दिया। यद्यपि वह अपने देश में नहीं था किन्तु दूर रह कर भी अपने देश हित के प्रत्येक कार्य्यों में ऐसे उत्साह से भाग ले रहा था मानों वह वहीं हो।

नई पार्लमेंट का अधिवेशन होने से पहले मि० स्ट्रेहन ने फ्रैंकलिन से इस अभिप्राय का एक प्रश्न किया कि यदि कस्टम एक्ट का कुछ भाग इस प्रकार रद्द कर दिया जावे कि पार्लमेंट का अधिकार उसमें बना रहे तो अमेरिकन लोग उसको पसन्द करेंगे या नहीं? इस पर फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया कि यदि पार्लमेंट अपना अधिकार बना रखना चाहे तो सब से सुगम उपाय यह है कि वह अपने अधिकार की सत्ता का उपयोग न करे। नियमानुसार पार्लमेंट की सत्ता हम पर है ही नहीं ऐसा होने

पर भी हमको हानि पहुंचा सके ऐसे व्यापार आदि के सम्बन्ध में पार्लामेंट की की हुई व्यवस्था का हम प्रसन्नतापूर्वक पालन करेंगे। किन्तु, बिना अधिकार के वह हम पर कर का बोझा लादती है उसे हम सहन नहीं कर सकते। ज़कात के कर के सम्बन्ध में हमको कोई आपत्ति नहीं, हमारा अभिप्राय तो केवल यही है कि हम पर पार्लामेंट कस्टम अथवा और किसी प्रकार का कर न लगावें। हम पर कर लगा कर, उससे होने वाली आय की व्यवस्था करने का अधिकार पार्लामेंट को नहीं है। पार्लामेंट की इस प्रकार अनधिकार चेष्टा से हमारे अधिकार नष्ट होते हैं और हमारी अपनी नियामक-समिति की सत्ता घटती है। यदि बिना किसी विरोध के हम पार्लामेंट को अपने ऊपर इतना कर लगाने देंगे तो आगे चलकर वह अपनी सत्ता का ऐसा उपयोग करेगी कि हमारी नियामक समिति की कुछ सत्ता न रहेगी और फिर वह बिना हमारी सम्मति लिये हम पर चाहे जैसा कर लगा सकेगी। हमारा झगड़ा यही है कि हम पर इंग्लैण्ड की पार्लामेंट किसी प्रकार का कर लगा ही न सके और इस कारण जब तक उसका हम पर लगाया हुआ कर बिल्कुल रद्द न कर दिया जावेगा हम शान्त न होंगे।

कुछ समय के पश्चात् इस विषय की चर्चा पार्लामेंट में फिर छिड़ी। तीन वर्ष के अनुभव के पश्चात् सन् १७७० के अप्रैल मास में प्रधान मण्डल को विदित हुआ कि अमेरिकन लोग बाहर से बिल्कुल माल नहीं मँगवाते इस कारण इंग्लैण्ड का व्यापार नष्ट हो रहा है। इस पर उन्होंने अमेरिका सम्बन्धी कर के नियम में यह परिवर्त्तन किया कि चाय के अतिरिक्त दूसरी वस्तुओं पर से महसूल उठा दिया जाय। यह सुधार अमेरिकन लोगों की अधिकार रक्षा के लिए नहीं बल्कि इंग्लैण्ड के व्यापार की उन्नति के लिये किया गया था। चाय पर थोड़ा महसूल था

किंतु, कर लगाने का अधिकार पार्लामेंट को ही है, ऐसा प्रगट करने के अभिप्राय से ही वह क़ायम रखा गया था। इसका फल यह हुआ कि अमेरिकन लोगों का क्रोध शान्त होने के बदले पहिले की अपेक्षा और बढ़ गया। उनको ऐसा प्रतीत हुआ कि जकात की वस्तुएँ घटाने में पार्लामेंट कदाचित् ऐसा समझती है कि हम लोग कर लगाने की नीति के विरुद्ध आन्दोलन नहीं कर रहे हैं बल्कि कर के पैसे के लिये लड़ रहे हैं और यह बात और भी स्पष्ट करने के लिये कि हमारा झगड़ा कर के पैसे के लिये नहीं बल्कि नीति के सम्बन्ध में है उन्होंने पहिले की अपेक्षा अधिक सगठित रूप से एकत्रित होकर यह निश्चय किया इंग्लैण्ड से किसी भी प्रकार का माल अपने देश में न आने दिया जाय।

इंग्लैण्ड और अमेरिका में चले हुए इस झगड़े के सम्बन्ध में फ्रेंकलिन जिस स्वतंत्रता से अपने विचार मित्रों पर प्रकट करता था वे इंग्लैण्ड के प्रधान-मण्डल को अच्छे नहीं लगते थे। उसके लिखे हुए कुछ पत्र मण्डल में गुप्त रूप से पहुँच गये थे अत. उसने चेतावनी की भांति उसकी ओर सङ्केत किया था कि यदि तुम लोगों को भड़काना न छोड़ दोगे तो तुम को पोस्टमास्टर जनरल के पद से पृथक् कर दिया जायगा। समाचार पत्रों में से कुछ पत्र ऐसे भी थे जिनको राजकीय सहायता मिलती थी। वे समय समय पर उसका बड़ा अपमान किया करते थे और लिखते थे कि यदि सरकार के विरुद्ध ही आन्दोलन करना है तो तुम्हे अपने पद से त्याग पत्र दे देना चाहिये।

अमेरिका के डाक विभाग का सुधार करने में फ्रेंकलिन को जो परिश्रम करना पड़ा था उसको देखते हुए उसको ऐसी आशका कभी हुई ही न थी केवल अपने राजनैतिक विचारों के

कारण कभी मैं इस पद से अलग किया जाऊंगा। उसने तो ऐसा निश्चय कर लिया था कि चाहे जो हो जाय, किंतु, मैं स्वतः तो कभी त्याग-पत्र न दूँगा। हाँ, सरकार चाहे तो भले ही इस पद को मुझ से छीन ले। किंतु, मैं अपने अन्तःकरण की प्रेरणा के विरुद्ध तो कभी न चलूंगा।

एक पत्र में फ्रेंकलिन लिखता है कि:—"जिन पत्रों पर प्रधान मण्डल को आपत्ति है वे मेरे ही लिखे हुए हैं, इसमें तो कोई सन्देह नहीं। किंतु, मैं विवश था, क्योंकि स्वदेश के प्रति मेरा जो कर्त्तव्य था उसी से प्रेरित होकर मैंने वैसा किया है। पोस्ट मास्टर की हैसियत से मेरा कर्त्तव्य पृथक् है और स्वदेश-विषयक पृथक्। कुछ समय पूर्व स्टाम्प एक्ट रद्द कराने के लिये मैंने जो प्रयत्न किया था अथवा उस आन्दोलन में जो कुछ भाग लिया था उसके लिये उस समय का प्रधान-मण्डल मुझ पर स्नेह-भाव और प्रसन्नता दिखाता था उस समय मैं कहता था कि अमेरिका के लिये इङ्गलैण्ड में किसी प्रकार का नियम न होना चाहिये। और यदि कोई हो भी तो उसे रद्द कर देना चाहिये। मेरा वही अभिप्राय अब भी है। जिस प्रकार राजा अपने मंत्री को बदला करता है उसी प्रकार मैं भी अपने विचारों को बदलता रहता हूँ, ऐसी कल्पना करना ही व्यर्थ है क्योंकि मैं अपने निश्चय पर अटल हूं। प्रायः ऐसा कहा जाता है कि सरकार के प्रत्येक कर्मचारी को प्रधान-मण्डल की इच्छानुसार चलना चाहिये, फिर चाहे वह उसे अच्छा लगे या न लगे और मैं इस नीति का अनुसरण नहीं करता हूँ इसी से वह मुझ पर अप्रसन्न रहता है। परन्तु, मैंने ऐसा सुना है कि मेरे व्यक्तित्त्व के विषय में उनका मत अच्छा है और इसीसे वे मुझे इस पद पर से न हटायँगे। यह बात दूसरी है कि अब वे अपना मत परिवर्तन करके मुझे हटा भी दें। किन्तु, इस भय से

में अपने राजनैतिक विचारों को कभी बदलने का नहीं। मेरा तो यह सिद्धान्त है कि स्वार्थ के विचार से अपने निश्चित संकल्पों में मनुष्य को कभी परिवर्त्तन न करना चाहिये और जिस समय जो बात सच्ची हो वह निडर होकर कहनी चाहिये।"

इस प्रसंग पर लार्ड हिल्स बरो उस पर जल उठा। अमेरिकन लोगों को नरम करके उनसे सरकारी आज्ञा का पालन कराने को वह आगे बढ़ने की इच्छा करता था किन्तु फ्रेंकलिन उसको बड़ी बुद्धिमानी से रोक देता था। कई वर्षों से मसाच्युसेट्स के कुछ लोगों से राजनैतिक विषयों के सम्बन्ध में उसका पत्र व्यवहार चल रहा था। उसमें से डाक्टर सेम्युएल कूपर नामक एक विद्वान् को जो पत्र भेजे गये थे वे कुछ लोगों के देखने में आये थे। उन से उन्हें मालूम हो गया था कि फ्रेंकलिन कैसे विचारों वाला व्यक्ति है और क्या करता है। सन् १७७० के अक्टूबर मास में मसाच्युसेट्स परगने की राज्य-मण्डली ने फ्रेंकलिन को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया और सारे परगने के प्रार्थियों की सूची भेज कर उस से प्रार्थना की कि इनको न्याय प्राप्त कराने के लिये तुम से जितना प्रयत्न किया जा सके, करना। प्रार्थना पत्रादि आ जाने पर फ्रेंकलिन अपनी नियुक्ति की सूचना देने की इच्छा से सबसे पहिले तो अमेरिका के सेक्रेटरी आफ स्टेट—लार्ड हिल्स बरो से मिलने को गया। हिल्स बरो उस समय घर में ही था। किन्तु, उसने नौकर से कहला दिया कि अभी 'साहब' बाहर गये हैं। इस पर फ्रेंकलिन लौट कर कुछ दूर गया ही था कि दूसरे नौकर ने आकर कहा:— "चलिये, आपको साहब बुलाते हैं।" इस बर्ताव से फ्रेंकलिन को कुछ आश्चर्य्य हुआ। किन्तु, फिर भी वह गया और मिलने को आने का कारण पूछने पर उसने उत्तर दिया कि:—"मसाच्युसेट्स की नियामक-समिति ने मुझको अपना प्रतिनिधि (वकील)

नियुक्त किया है, यह आप पर प्रगट करने को आया हूं।" यह सुन कर हिल्स बरो ने कहाः—"मिस्टर फ्रेंकलिन, मुझे तुम्हारी भूल को ठीक करना चाहिये। तुमको वकील नियुक्त नहीं किया गया है।" इस पर फ्रेंकलिन ने उत्तर दियाः— "मैं नही समझ सका कि आप क्या कह रहे हैं? मेरे पास इस नियुक्ति की सनद है।" हिल्स बरो ने प्रत्युत्तर में कहाः—"बेशक तुमको नियामक-समिति ने नियुक्त किया होगा। किन्तु, गवर्नर हचिन्सन ने उसको स्वीकार नहीं किया, ऐसा मुझे विश्वसनीय रूप से विदित हुआ है।" ऐसा कह कर उसने अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को बुलाया और हचिन्सन का आया हुआ पत्र ले आने को कहा। पत्र में इस सम्बन्ध में कुछ भी न लिखा था। उसको देख कर फ्रेंकलिन बोलाः— "आप कहते हैं ऐसा नहीं हो सकता। प्रतिनिधि की नियुक्ति नियामक-समिति करती है। इससे गवर्नर का कोई सम्बन्ध नहीं। यदि आप कृपापूर्वक मेरी सनद को देखेंगे तो विदित हो जायगा कि मुझको नियामक-समिति ने नियुक्त किया है।" ऐसा कह कर फ्रेंकलिन ने अपनी जेब में से सनद निकाल कर उसके आगे रख दी। हिल्स बरो ने उसे उठाली किन्तु, बिना पढ़े ही क्रोध में आकर कहा कि नियामक-समिति अपनी इच्छा से ही प्रतिनिधि की नियुक्ति करदे यह ठीक नहीं। जिस प्रतिनिधि को समिति तथा गवर्नर दोनों मिल कर नियुक्त नहीं करते उसको हम प्रतिनिधि नहीं मानते। इस पर फ्रेंकलिन बोला किः— "इस में गवर्नर की सम्मति की कोई आवश्यकता नही क्योंकि प्रतिनिधि को जनता का कार्य करना पड़ता है, न कि गवर्नर का। इस कारण बिना गवर्नर के मध्यस्थ हुए कोई भी ऐसा प्रतिनिधि जिसको समिति ने नियुक्त किया हो, बिना किसी आपत्ति के वहां का प्रतिनिधि माना जाता है। ऐसी कार्यवाही बरसों से होती आ रही है और अब तक उसमें झगड़े की कोई बात नहीं प्रतीत हुई।"

इस प्रकार फ्रैंकलिन ने हिल्स बरो को कई प्रकार से समझाया। परन्तु, उसने एक भी बात न मानी क्योंकि वह तो पहिले से ही ऐसा निश्चय कर चुका था। उसके अपमान-सूचक बर्ताव को फ्रैंकलिन अब तक सहन कर रहा था। किन्तु, जब उसको यह विदित हुआ कि मसाच्युसेट्स की नियामक-समिति का अपमान करने के इरादे से ही उसने यह हठ पकड़ रखी है तो उसने कहा कि— "मेरी नियुक्ति को तुम स्वीकार करो यह मैं आवश्यक नहीं समझता क्योंकि इस समय के वातावरण को देखते हुए समितियों को अपने प्रतिनिधियों के द्वारा किसी प्रकार का लाभ होना कठिन है।"

प्रतिनिधियों की नियुक्ति गवर्नर की सम्मति से होनी चाहिये ऐसा हिल्स बरो का जो विचार था, वह नया था, और था भी समितियो के लिये हानिकारक। यदि इसका अमल होने लगे तो प्रजा को अपनी शिकायतें राजा अथवा राजमंत्री तक पहुंचाने का कोई साधन न रहे, कारण कि फिर गवर्नर ऐसे किसी व्यक्ति की नियुक्ति को स्वीकार नहीं कर सकता जो लोकप्रिय हो। इसके स्थान पर वे ऐसे ही मनुष्यों की नियुक्ति करेगा जो उस के पक्ष के हों और यह आशा नही कि ऐसे लोगों से जनता का कुछ हित-साधन हो।

लार्ड हिल्स बरो ने बोर्ड आफ ट्रेड से कह कर ऐसा प्रस्ताव करवाया कि यदि किसी प्रतिनिधि की नियुक्ति बिना गवर्नर की सम्मति के हुई हो तो उसको प्रतिनिधि न समझा जाय। उधर नियामक-समितियों ने इस प्रस्ताव का अमल न करते हुए अपनी नियुक्ति के प्रतिनिधियों को भेजना जारी रक्खा। इस प्रकार जनता की प्रार्थनाओं को भेज कर उनके विषय में

सदों से घरू तौर पर मिल कर किसी प्रकार की सम्मति लेने में बड़ी कठिनाई उपस्थित हो गई।

एलिगेनी पर्वत के पश्चिमी भाग के जंगलों में कुछ गाँव आबाद करने के लिये फ्रेंकलिन बीस वर्ष से कह रहा था। उसका कहना था कि वहां आबादी होजाने से इण्डियन लोग दूर चले जायँगे और अपना व्यापार बढ़ जायगा। इसको पहिले तो किसी ने न सुना किंतु, अन्त में सन् १७७१ में एक कम्पनी ने इस कार्य को करने का निश्चय करके सरकार में प्रार्थना पत्र भेजा। इस कम्पनी के डायरेक्टरों में से फ्रेंकलिन भी था। सम्मति के लिये वह प्रार्थनापत्र बोर्ड आफ़ ट्रेड में भेजा गया। उस पर बोर्ड के सभापति ने अपनी यह सम्मति दी कि कम्पनी को भूमि न मिलनी चाहिये। इस पर फ्रेंकलिन ने शीघ्र ही एक छोटी सी पुस्तक लिख कर अपनी अकाट्य-युक्तियों से उसका विरोध किया। सन् १७७२ के जुलाई मास मे वह प्रार्थनापत्र प्रीवीकौन्सिल में आया वहाँ पर हिल्स बरो का अभिप्राय और फ्रेंकलिन की दलीलें साथ साथ पढ़ी गयीं। वहाँ से बोर्ड आफ़ ट्रेड का अभिप्राय अस्वीकार हुआ और प्रार्थियों की इच्छानुसार भूमि मिलने की मंजूरी हो गई। इससे हिल्स बरो चिढ़ गया। उसको यह बात ऐसी बुरी लगी कि उसने अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया। उसका स्थान लार्ड डार्ट मथ को मिला। यह व्यक्ति स्टाम्प एक्ट रद्द किये जाने के पक्ष में था और अमेरिका के प्रति हार्दिक सहानुभूति रखता था। इसके अतिरिक्त वह फ्रेंकलिन का मित्र भी था। यह भी कहा जाता है कि फ्रेंकलिन की शिफा-रिश से ही उसको वह जगह मिली थी। अमेरिका के प्रतिनि-धियों के विषय में हिल्स बरो ने जो निर्णय किया था उसको डार्ट मथ ने रद्द कर दिया और उनकी नियुक्ति को उचित मान कर

उनकी भेंट लेने लगा। वह कहता था कि यदि अमेरिकन लोग सब्र रक्खेंगे और शान्ति से काम लेंगे तो मैं बहुत थोड़ी अवधि में उनकी शिकायतों को दूर करवा दूंगा। प्रदेशों के मुख्तयारों को भी वह समय समय पर बुलाता रहता और उनसे सम्मति लिया करता था।

फ्रेंकलिन नये मंत्री से पहले पहल मिलने को गया तब जाते ही उसने मसाच्युसेट्स की नियामक-समिति की राजा को भेजी हुई प्रार्थना उसको दी। अब तक गवर्नर का वेतन नियामक-समिति ही स्वीकार कर के दिया करती थी। किंतु, प्रचलित प्रथा के अनुसार न करके गवर्नर हचिन्सन ने अपना वेतन सरकार की ओर से लेना आरम्भ कर दिया। इस नई रीति के अनुसार ऐसा हो गया था मानो गवर्नर पर नियामक-समिति की कुछ भी सत्ता नहीं है। क्योंकि उसकी कुछ भी अपेक्षा न करके गवर्नर अब चाहे जो कर सकता था। अब प्रजा को प्रसन्न रखने की उसको कुछ आवश्यकता न रही। वेतन देने वाले की अधीनता में रह कर उसकी आज्ञानुसार काम करना ही उसका उत्तरदायित्व और कर्त्तव्य रह गया, और इस प्रकार अब उसको किसी से भय खाने का कोई कारण न रहा। गवर्नर का वेतन स्वीकार करने का अधिकार जाय तो उसके साथ ही अपना महत्त्व भी कम होता है यह बात मसाच्युसेट्स की नियामक-समिति अच्छी तरह जानती थी। अतएव इस नवीन पद्धति के विरुद्ध उसने कुछ प्रस्ताव किये और अपनी सुनवाई होने तथा न्याय मिलने के लिये राजा से प्रार्थना की। यह प्रार्थनापत्र समिति के मुख़्त्यार की हैसियत से फ्रेंकलिन ने लार्ड डार्टमथ को दिया। जब दूसरी बार वह गया तो डार्टमथ ने उस प्रसंग को लेकर कहा कि यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं यह प्रार्थनापत्र आगे भेजने में कोई हानि नहीं समझता। लेकिन, मेरी सलाह मान कर

थोड़े दिन सब्र रक्खो तो अधिक उत्तम होगा। क्योंकि इसके कारण जो झगड़ा इस समय चल रहा है, वह और भी अधिक बढ़ेगा और सरकार तुम पर अधिक अप्रसन्न हो जायगी। इस पर फ्रेंकलिन बोला कि समिति ने अच्छी तरह विचार और निश्चय करके ही यह प्रार्थना पत्र भेजा है और मुझे ऐसा दिखाई देता है कि इस सम्बन्ध में वह अपने विचार नहीं बदलेगी। फिर भी यदि आपका आग्रह हो तो मैं उससे पूछूँ यदि वह कह दे तो भले ही इस प्रार्थना को आगे न भेजी जाय।

नियामक-समिति के प्रार्थना भेजने के पश्चात् बोस्टन में ख़बर आई कि गवर्नर की भाँति न्यायाधीशों के वेतन भी सरकार ने देने आरम्भ कर दिये हैं। इसको सुन कर लोग ऐसे बिगड़े कि उन्होंने एक बड़ी भारी सभा करके सरकारी नीति के विरुद्ध आन्दोलन करने का निश्चय किया। स्टाम्प एक्ट जारी करके सरकार ने जो अमेरिकन लोगों की स्वतन्त्रता का अपहरण कर लिया था उसकी उन्होंने बड़ी तीव्र आलोचना की, और अपने प्रस्तावों की प्रतिलिपि प्रत्येक नगर और गांव में भेजी तथा सबको सूचित किया कि सभाएँ करके, उसमें इस प्रस्ताव का समर्थन किया जाय। बोस्टन निवासियों को भेजा हुआ प्रस्तावों का यह पत्र जब फ्रेंकलिन को मिला तो उसने उसके साथ अपना कुछ और भी वक्तव्य जोड़ दिया उसमें प्रदेशों की स्थिति और उनकी शिकायतें सरकार की उपेक्षा आदि बातों का प्रभावोत्पादक शब्दों में वर्णन किया गया था। जब नियामक-समिति फिर एकत्रित हुई तो उसने भी बोस्टन-निवासियों की भाँति वैसे ही प्रस्ताव किये और एक और प्रार्थना पत्र लिखकर सरकार में पेश करने के लिये फ्रेंकलिन के पास भेजा। वह शीघ्र ही लार्ड डार्टमथ से

मिला और उस से कहा कि अब चुपचाप बैठे रहने में कोई लाभ नहीं अतः कृपा कर इस प्रार्थना पत्र को पहिले की अर्जी के साथ आगे भेज दीजिए। डार्टमथ ने ऐसा ही करने का वचन दिया।

इस समय प्रकाशित किये हुये फ्रेंकलिन के दो लेख बड़े उत्तम हुए हैं। अमेरिका की शिकायतों को साधारण रूप में लिखा जाय तो यह सम्भव न था कि उसको अधिक लोग पढ़ेंगे इस कारण उसने अपने लेखों का आरम्भ बड़े आकर्षक ढंग से किया था और उनके शीर्षक भी ऐसे रक्खे थे जिन्हें देखकर लोगों की इच्छा अकारण ही उनको पढ़ने की हो जाय। एक लेख का शीर्षक था "बड़े राज्य को छोटा करने के नियम"। इंग्लैण्ड की सरकार के अमेरिका पर किए हुए अन्त के पांच सात अनुचित कृत्यों से बीस भाग करके ही उनको उसने उपर्युक्त लेख का रूप दिया था। इसका उद्देश्य यह बताना था कि अमेरिका की शिकायतें न सुनी गईं तो इंग्लैण्ड उसको खो बैठेगा। दूसरे लेख का शीर्षक था "प्रूशिया के राजा का ढिंढोरा"। इस ढिंढोरे में प्रूशिया का राजा प्रगट करता है कि हमारे पूर्वज हेजीस्ट, होर्सा, आदि ने इंग्लैण्ड में जिन प्रदेशों की स्थापना की थी उनके निवासी अब उन्नत तथा मालदार हुए हैं और हमें रुपये की आवश्यकता है इस कारण आज्ञा दी जाती है कि अपनी तिजोरी भरने के लिए शीघ्र ही हमारी प्रजा—इङ्गलैण्ड निवासियों—पर कर लगाया जायगा। जो जो कारण इंग्लैंड ने अमेरिका पर कर लगाते समय बताये थे उनका फ्रेंकलिन ने इस ढिंढोरे में बड़ी मनोरञ्जक रीति से वर्णन किया था जिसको पढ़ कर स्वभावतः हँसी आती थी।

इन दोनों लेखों का बड़ा प्रभाव पड़ा। लगभग सभी समाचार पत्रों में ये प्रकाशित हुए और हजारों मनुष्यों ने उन्हे पढ़ा

यद्यपि ये बिना नाम के प्रकाशित हुए थे तो भी यह बात छिपी न रही कि उनका लेखक फ्रेंकलिन ही है । इन लेखों से अमेरिकन पत्रवालों को जितना आनन्द हुआ उतना ही सरकारी पत्रवालों को क्रोध आया । उनको भय था कि ऐसे लेखो से जनता में सरकार के किये हुए कार्य्यों के विषय में असन्तोष और कुविचार उत्पन्न होंगे और इस प्रकार परस्पर का झगड़ा जोर पकड़ेगा । अब वे उन लेखों के लेखक के प्रति अप्रसन्नता दिखाने लगे और यह प्रयत्न करने लगे कि जिस प्रकार भी हो सके अपने इस कटक को दूर करना चाहिये ।

प्रकरण २३वां

लन्दन में अभ्यास और एकान्त जीवन।

फ्रैंकलिन का लन्दन का घर—सेली फ्रैंकलिन का मि० बाख के साथ विवाह—जँवाई* को दी हुई शिक्षा—बच्चों को लाड प्यार में न रखने के लिये अपनी स्त्री को दिये हुए उपदेश—फ्रैंकलिन की लोकोपयोगी काम करने की प्रवृत्ति—पेसिफ़िक टापुओं से खुराक और जानवर भेजने के लिये की हुई हलचल—अँग्रेज़ी भाषा की अनियमितता पर विचार—प्रकृति अवलोकन—मदिरा के शीशे में डूबी हुई, मक्खी जीती होगई—इस सम्बन्ध में फ्रैंकलिन के विचार—धुँआ न फैलाने वाला चूल्हा—बिजली की कमेटी में सभासद्—फ्रैंकलिन के मित्र—नीति का बीज गणित—आयर्लैंण्ड की यात्रा—पानी पर तेल के प्रभाव का प्रयोग—फ्रैंकलिन के लेख।
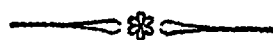
"फ्रैंकलिन, बेंजामिन, एस्क्वायर, फ़िलाडेल्फिया का एजेन्ट, क्रेवन स्ट्रीट, स्ट्रेण्ड" इस प्रकार सन् १७७० की डाइरेक्टरी में फ्रैंकलिन का परिचय दिया गया है। इङ्गलैंड में इसके साथ इसका पौत्र विलियम टेम्पल फ्रैंकलिन रहता था। यह बालक ऐसा दिखाई देता था मानो भविष्य में

* दामाद।

एक होनहार नागरिक बनेगा। वह बाल्यावस्था से ही अपने दादा के पास रहता था और दादा का उस पर बड़ा स्नेह था।

बालक टेम्पल के अतिरिक्त सेली फ्रेंकलिन नामक अपने एक रिश्तेदार की लड़की भी फ्रेंकलिन के पास रहती थी। उसको शिक्षा देने का उत्तरदायित्व फ्रेंकलिन ने अपने ऊपर लिया था। सन् १७३३ में जब उसकी अवस्था अधिक हुई तो उसने विचार किया कि इसका विवाह किसी धनवान कृषक से करना चाहिये। फ्रेंकलिन के घर के मालिक की लड़की मिस स्टिवन्सन का विवाह डाक्टर ह्युंसन नामक एक सुविख्यात वैद्य के साथ हुआ था। इस सुखी दम्पति तथा उनके बालकों पर फ्रेंकलिन बड़ा प्रेम रखता था।

अमेरिका में उसके घर के निकट जो जो नई पुरानी बातें होतीं उनकी सूचना फ्रेंकलिन की स्त्री उसको अपने विस्तृत पत्र में बराबर भेजा करती थी। इसके साथ ही वह घर का भी सब हाल पूरा २ लिखती थी। नया मकान कितना बन चुका, कितना बनना रहा और किस कमरे में किस २ तरह का क्या २ सामान रखा गया, कितने मजदूर काम पर लग रहे हैं और उन्हें क्या मजदूरी दी जाती है। अब तक कितना व्यय हो चुका और आगे कितना और व्यय होने की सम्भावना है...आदि। फ्रेंकलिन के लन्दन जाने के पश्चात् रिचर्ड बाख नामक एक व्यापारी ने उसकी लड़की सेली को मांगा था। कन्या को वर पसंद था, मां को भी इसमें कोई आपत्ति न थी, किंतु फ्रेंकलिन की क्या इच्छा है, यह अभी विदित नहीं हुआ था। अतः यह जानने को उसकी स्त्री ने एक पत्र भेज कर उससे पूछा। विचारानन्तर फ्रेंकलिन ने भी आज्ञा दे दी। इस प्रकार फ्रेंकलिन की अनुपस्थिति में सन् १७६७ के अक्टूबर मास में इनका विवाह फ़िला-

डेल्फिया में हो गया। फ्रैंकलिन की स्त्री अकेली थी इस कारण अपनी लड़की और जँवाई को उसने आठ वर्ष तक अपने पास रक्खा। फ्रैंकलिन की स्त्री प्रति सप्ताह अमेरिका के नये २ फल अपने पति को जहाज़ द्वारा भेजती थी। उन सब को फ्रैंकलिन नहीं खा पाता था अतः बचे हुए फलों को वह अपने इष्ट मित्रों में भेंट स्वरूप बांट देता था।

मि० बाख जब सन् १७७१ में इङ्गलैण्ड आया तो फ्रैंकलिन ने उसको पहिले पहिल देखा। उसकी इच्छा अमेरिका में सरकारी नौकरी करने की थी। अतः वह इस आशा से वहां गया था कि फ्रैंकलिन इसके लिये मेरी कुछ शिफारिश कर देगा। किंतु, उस समय इंग्लैण्ड और अमेरिका में जैसा सम्बन्ध था उसको देखते हुए फ्रैंकलिन यह अच्छा नहीं समझता था कि अपने किसी रिश्तेदार के लिये नौकरी के मामले में कुछ खटपट की जाय। अतः उसने मि० बाख को सम्मति दी कि तुम नौकरी करने की अपेक्षा अमेरिका जाकर कोई स्वतन्त्र धंधा करो तो अधिक उत्तम हो। वहां तुम कोई दूकान खोल लो और केवल नक़द रुपये लेकर व्यापार करो। अपने धन्धे में उद्योग से लगे रहना और साख जमाये रखना। इस प्रकार प्रामाणिक रीति से कार्य करने पर उसमें अवश्य ही तुम्हें अच्छी सफलता मिलेगी। मि० बाख ने ऐसा ही किया और कुछ ही समय में उसे अपने रोज़गार में अच्छा लाभ हुआ।

सेली फ्रैंकलिन और मि० बाख के कुछ समय पश्चात् एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वह बड़ा चंचल और होनहार बालक था। फ्रैंकलिन की स्त्री का उस बालक पर बड़ा स्नेह था। अपने प्रत्येक पत्र में उस बालक के सम्बन्ध में भी वह फ्रैंकलिन को कुछ न कुछ लिखा करती थी। प्रायः बड़े बूढ़ों के अनुचित लाड़ प्यार

में बालक बिगड़ जाते हैं। अतः फ्रेंकलिन अपनी स्त्री को लिखा करता था कि बालक को सुमार्ग पर लाने का प्रयत्न करना और उसके सुधार के लिये यदि उसके माता पिता उसको किसी प्रकार की ताड़ना दें तो तुम बीच में मत बोलना। ऐसा करने से बालक किस प्रकार बिगड़ जाते हैं इसके लिये वह एक पत्र में लिखता है:—

"एक बालक मार्ग में खड़ा खड़ा रो रहा था इतने में दूसरे बालक ने आकर उससे पूछा कि भाई, क्यों रोता है? इस पर पहिले बालक ने कहा कि मुझे मेरी माता ने एक पैसा दे कर दही लेने को भेजा था किंतु मेरी असावधानी से कटोरा गिर गया। दही तो गया ही, किंतु, कटोरा भी फूट गया। मुझे भय है कि अब माता मुझे मारेगी।" इस पर दूसरा बालक बोला:— "जा, जा, नहीं-मारेगी" बालक ने फिर कहा:— "नहीं भाई, अवश्य मारेगी"। इस पर दूसरा बालक फिर बोला कि:— "क्या तेरे दादी नहीं है?

फ्रेंकलिन दस वर्ष तक इंगलैण्ड में रहा। इस अवधि में उस की वृत्ति हमेशा लोकोपयोगी कार्य्य करने में रही। यदि कहीं उसे कोई औषधालय दिखाई देता तो शीघ्र ही उसे अपने स्थापित किये हुए फिलाडेल्फिया के औषधालय का स्मरण हो आता। वह औषधालय का निरीक्षण करता और जो जो नियम, सूचनाएं, व्यवस्था क्रम आदि नवीन बातें देखता उन्हें लिख कर वह अपने औषधालय को भेजता। एक बार जब उसे विदित हुआ कि औषधालय के कार्यकर्त्ताओं का विचार वैद्यकग्रन्थों के संग्रह करने का है तो उसने अपने पास जो एक वैद्यक शास्त्र का उपयोगी ग्रन्थ था वह भेंट स्वरूप भेजा और दूसरे लोगों से मिलकर उनको भी कुछ ग्रन्थ औषधालय के लिये दान-स्वरूप भेजने को

प्रेरित किया। पेन्सिल्वेनियां में रेशम तय्यार करने का कारखाना खोलने के लिये उसने अनेक उपयोगी साधन जुटाये और एक मण्डली ऐसी स्थापित की जो इस कार्य्य को सुचारु रूप से कर सके। कारखाना खुल गया और कार्य्यकर्त्ताओं के परिश्रम से वह भली प्रकार चल निकला। पहिले पहल तैयार किया हुआ रेशम सर जॉन प्रिंगले के द्वारा उन्होंने रानी को भेंट स्वरूप भेजा। यह भेंट केवल भेंट ही समझली गई हो ऐसा नहीं बल्कि रानी ने उसको अपनी ख़ास पोशाक बनाने के काम में लिया। इसके पश्चात् फ्रेंकलिन को जब यह विदित हुआ कि हार्वर्ड कालेज के लिये एक दूरबीन की आवश्यकता है तो उसने वह भी तय्यार करके भेजी। वह इस कालेज को अपनी ओर से समय २ पर कुछ उपयोगी पुस्तकें भेंट स्वरूप भेजा करता था। अमेरिका से जो नवयुवक कानून का अभ्यास करने को इङ्गलैण्ड आते उनकी वह बहुत सहायता करता और एक सच्चे अभिभावक की भांति उनकी सम्हाल रखता था। उसको परोपकार करने का सब से अच्छा अवसर सन् १७७१ में मिला था। इस वर्ष के जून मास में केप्टिन कुक नामक व्यक्ति संसार का भ्रमण करके आया था। फ्रेंकलिन के मित्र मंडल में केप्टिन कुक की की हुई नई खोज की चर्चा चलने पर एक व्यक्ति ने कहा कि पेसिफिक टापुओं में एक बड़ी शूरवीर जाति के लोग रहते हैं। किंतु, बेचारों के देश में अनाज बिल्कुल उत्पन्न नहीं होता। वहां सिवाय कुत्तों के कोई जानवर भी नहीं होता। इङ्गलैण्ड जैसे सुधरे हुए देश का कर्त्तव्य है कि उनको कुछ खाद्य पदार्थ भेजे। यह विचार फ्रेंकलिन को बहुत पसन्द आया। उसने शीघ्र ही कहा कि यदि उन लोगों को खाद्य पदार्थों और जानवरों का एक जहाज़ भेजा जाय तो मैं बड़ी प्रसन्नता से उसके लिये एक अच्छी रक़म सहायता स्वरूप देने को उद्यत हूँ। अस्तु

चन्दा करके आवश्यक वस्तुएं ख़रीदना और एक जहाज़ भर कर वहां भेजना यह विचार सब को पसन्द आया। मि० अलेक्ज़ाण्डर डार्लीम्पल नामक एक नाविक वहां उपस्थित था। उसने कहा कि इस यात्रा में ३ वर्ष लगेंगे और लगभग पन्द्रह हज़ार पौण्ड व्यय होगा। यदि जहाज़ भेजना निश्चित कर लिया गया हो तो मैं कप्तान की हैसियत से जाने को सहर्ष तय्यार हूँ। इस सब हक़ीक़त को लेकर एक विज्ञापन तय्यार किया गया जिस में फ्रेंकलिन ने संक्षिप्त किंतु प्रभावोत्पादक शब्दों में लिखा कि इस योजना में सहयोग देना इङ्गलैण्ड जैसे व्यापार-प्रधान देश का प्रधान धर्म है। इतना ही नहीं इसमें उसका अपना स्वार्थ भी है। क्योंकि ऐसे प्रदेशों में सुधार होने से वहां इङ्गलैण्ड में बनी हुई वस्तुओं की अवश्य ही आवश्यकता होगी और उनकी ख़पत होने से उसका व्यापार (रोज़गार) बढ़ेगा।

यह योजना कार्य रूप में परिणत हो जाय इतने रुपये थोड़े ही समय में इकट्ठे हो गये। उक्त प्रदेश में आवश्यक वस्तुएँ किसी जहाज़ में न भेज कर केप्टिन कूक के साथ ही भेजने की व्यवस्था सोची गई क्योंकि वह अपनी खोज सम्बन्धी यात्रा के लिये फिर उधर जाने वाला था। अनेक प्रकार के जानवर, अनाज आदि वस्तुएँ केप्टिन कूक ने उन टापुओं में पहुँचाईं। इस प्रकार यह प्रारम्भ हुआ शुभ कार्य आगे चल कर पादरी आदि परोपकारी लोगों की सहायता से उन प्रदेशों के निवासियों के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ।

अंग्रेज़ी भाषा की अनियमित लेखन शैली और उच्चारण प्रणाली के सम्बन्ध में डाक्टर फ्रेंकलिन कई वार अनेक प्रकार से युक्ति युक्त दलीलें उठाया करता था। वह प्रायः हँसी में कहा करता कि जो इस भाषा के लिखने मे भूल करते हैं वे ही सची

और शुद्ध भाषा लिखना जानते हैं। कारण कि वे अक्षरों को उन के उच्चारण के अनुसार प्रयोग में लाते हैं। वह कहता कि "टफ़" शब्दों को जब "Tuf" लिखने से काम चल सकता है तो फिर उसको "Tough" इस प्रकार लिखने की क्या आवश्यकता है? "बो" शब्द को "Bo" लिखने में सुविधा होती है तो फिर उसको "Beau" इस प्रकार लिखने से क्या होता है?… — आदि २।

फ्रैंकलिन का प्रकृति को अवलोकन करने का शौक़ जैसा बचपन में था वह युवावस्था में भी बना रहा। वायु, जल, प्रकाश, ऋतु-परिवर्तन आदि के कारणों की खोज करने में वह अपना बहुत समय लगाता था। श्वासोश्वास से वायु दूषित होती है इस की खोज करने का श्रेय डाक्टर स्मॉल नामक विद्वान फ्रैंकलिन को ही देता है। घर, पाठशाला, औषधालय आदि में खुले तौर पर ताज़ा वायु का प्रवेश होना कितना आवश्यक और उपयोगी है इस पर वह लोगों का ध्यान आकर्षित किया करता था। हाउस ऑफ कामन्स के भवन में अधिक वायु और प्रकाश किस प्रकार लाया जाय इसके लिये जब वहाँ विचार हो रहा था तो उस समय फ्रैंकलिन से भी सम्मति ली गई थी। फ्रैंकलिन के सारे जीवन की बातें छोड़ कर केवल उन्हीं दिनों की उसकी इस प्रकार की तत्त्वज्ञान की सारी बातों का उल्लेख किया जाय जो उसने अपनी खोज द्वारा इङ्गलैण्ड में की तो भी उनसे कई बड़े २ ग्रन्थों की रचना हो सकती है। वह किसी भी वस्तु को व्यर्थ समझ कर तुच्छ दृष्टि से नहीं देखता था, बल्कि साधारण से साधारण बातों में भी जब तक उसका समाधान न हो जाता कुछ न कुछ मनन किया ही करता था। वह प्रत्येक बात का कारण जानने की जिज्ञासा रखता था और उसको अपने ही परिश्रम से खोज कर

आनन्दानुभव करता था। सुनी हुई आश्चर्य जनक बातें कहाँ तक सत्य हैं उनको वह स्वयं परीक्षा करके देखा करता था। एक दिन भोजन करते समय शराब की बोतल में से जब उसने प्याले में शराब निकाली तो उसमें से २-३ मरी हुई मक्खियें निकल पड़ीं। यह बोतल कई मास पूर्व उसने वर्जीनियाँ में भरवाई थी। एक बार उसने किसी से सुना था कि शराब में डूब कर मर जाने वाली मक्खी सूरज की किरणों से जीवित हो जाती है। अतः इस समय उसे ध्यान आया कि यह बात ठीक है या नहीं इस की आजमाइश करना चाहिये। यह सोच कर उसने शराब को एक चलनी में छान लिया और उसमें बारीक छेदों के कारण जो मरी हुई मक्खियाँ अटक गई थीं उनको चलनी समेत धूप में रख दिया तीन घंटे के बाद उनमें से दो मक्खियाँ कुछ हिलने लगीं मानों उनमें कुछ चेतन शक्ति आई हो। इस पर उसने उनके पंख और पाँव जो सिकुड़े हुए से थे, ठीक किये तो वे जीवित होकर उड़ गईं। तीसरी सन्ध्या समय तक मरी हुई ही पड़ी रही अतः उस के जीने की आशा छोड़ कर उसने उसे फेंक दिया।

इस प्रसंग को लेकर फ्रेंकलिन लिखता है कि:—"चाहे जिस समय जीवित कर लिया जाय इस प्रकार मनुष्य को डुबाये रखने की युक्ति हाथ आ जाय तो कैसा अच्छा! एक सौ वर्ष के पश्चात् अमेरिका की कैसी दशा होगी यह देखने की मेरी बड़ी उत्कण्ठा है अतः यदि ऐसी कोई युक्ति हाथ लग जाय तो मृत्यु से मरने की अपेक्षा कुछ मित्रों के साथ मदिरा के पीपों में डूब कर मर जाने और सौ वर्ष पश्चात् अपने प्यारे देश के सूर्य की गरमी से जीवित हो जाने को मैं अधिक पसन्द करूँ!"

लन्दन में पहिले जिस प्रकार से कोयले काम में लाये जाते थे उनसे धुआं बहुत फैलता था। इसलिये फ्रेंकलिन ने सन्

१७७२ में एक ऐसा चूल्हा बनाया जिसमें धुआँ अधिक न हो और जितना हो वह भी उसी में समा जाय। जब चूल्हा बन चुका और ठीक २ काम देने लगा तो उसने इसका विज्ञापन देने का विचार किया। किंतु, अनेक राजकीय कार्य्यों में फँसे रहने से उसको अवकाश न मिला। अन्त में उसके इस आविष्कार का प्रचार होने का सन् १८४० में अवसर आया।

बिजली के सम्बन्ध में आश्चर्य जनक खोज करने के कारण फ्रेंकलिन की विद्वत्समाज में बड़ी ख्याति हो गई थी। सन् १७६९ में सेन्टपाल गिर्जे की रक्षा के लिये उस पर बिजली के सलिये लगाने की सब से सुगम रीति निकालने को जो एक कमेटी बनी उसके सभासदों में इसका भी नाम रक्खा गया। इसी प्रकार बारूद गोली के कारखाने की रक्षा के लिये जो कमेटी सन् १७७२ के लगभग बनी उसमें भी उसको चुना गया। कमेटी की रिपोर्ट फ्रेंकलिन से ही लिखवाई गई थी जिसमें उसने बारीक नोक वाले सलिये रखने की सम्मति दी। एक व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य सब सभासदों ने फ्रेंकलिन की सम्मति का ही समर्थन किया। उस व्यक्ति ने अपनी यह सम्मति दी थी कि सलिये का सिरा कुछ मोटा रहना चाहिये। इस पर खूब वाद विवाद हुआ। किंतु, अन्त में बहुसम्मति इसके ही पक्ष की होने के कारण सरकार ने भी उसे ही स्वीकार किया। इस प्रकार उपर्युक्त दोनों स्थानों के अतिरिक्त बकिंगहाम के महल पर भी वैसा ही सलिया लगाया गया।

फ्रेंकलिन को देशाटन करने का बड़ा शौक था। प्रति वर्ष वह अवकाश का समय देखकर बाहर फिरने को निकलता और दो तीन मास भ्रमण करके तबियत सुधारता। इसके मित्रों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जाती थी। बड़े २ अमीर उमराव उसकी सत्संगति में रहना अपने लिये सम्मान और गौरव की बात

समझते थे। किसी के यहाँ कोई भी छोटे से छोटा खुशी का काम होता तो भी फ्रैंकलिन को उसमें अवश्य निमन्त्रित किया जाता। लन्दन के मौसम में परगने के बड़े बड़े आदमी आकर वहाँ रहते थे। उस समय फ्रैंकलिन को सप्ताह में ६ बार अपने परिचितों के घर पर भोजन करने को जाना पड़ता था। अनेक विद्वान् और उदार विचार वाले धर्म गुरुओं से फ्रैंकलिन की गहरी मित्रता होगई थी। इनमें डाक्टर प्राइस, मि० प्रिस्टली और डाक्टर शिपली मुख्य थे।

डाक्टर प्रिस्टली ने एक समय फ्रैंकलिन से पूछा कि अमुक कार्य करना चाहिए या नहीं इस में जब तुम्हें कुछ असमंजस हो जाता हो तब तुम क्या करते हो? इस प्रश्न का दिया हुआ उत्तर उसका नीति का बीजगणित कहा जाता है। उसने कहा कि:— "मैं एक काग़ज़ लेकर उसमें दो खाने करता हूँ। इसके पश्चात् किसी भी कार्य के पक्ष और विपक्ष की दलीलें उस पर पृथक् २ लिख लेता हूँ। २-४ दिन तक विचार करके उन दलीलों को मैं फिर गिन कर देखता हूँ। जिस पक्ष में अधिक दलीलें होती हैं मैं उसी प्रकार करता हूँ। ऐसा करने से मुझे बड़ा लाभ होता है जिस में प्रत्यक्ष लाभ तो यही है कि मुझसे ऐसा कोई कार्य नहीं होने पाता जिसको 'बिना विचारे किया हुआ कार्य' कहते हैं।"

आयरलैंड की यात्रा करने का फ्रैंकलिन का बहुत दिन से विचार था। इस विचार को वह सन् १७७२ में कार्य रूप में परिणत कर सका। जिस समय वह वहां गया तो वहां के देश भक्त लोगों ने बड़े उत्साह और सम्मानपूर्वक उसका स्वागत किया और इस खुशी में अनेक प्रीति-भोज हुए। लार्ड हिल्स-बरो जो इङ्गलैण्ड में फ्रैंकलिन पर वक्र दृष्टि रखता था वह उसको

आग्रहपूर्वक अपने घर ले गया और बडी प्रसन्नता से उसका आतिथ्य सत्कार किया। आयर्लैंएड निवासी अधिकतर निर्धन हैं यह देखकर फ्रेंकलिन को आश्चर्य हुआ इस पर से उसको विश्वास हुआ कि यहा के निवासियों की अपेक्षा अमेरिकन लोग हजार दर्जे अधिक सुखी और प्रसन्न हैं। वहाँ से कुछ समय के पश्चात् वह स्काटलैएड गया और वहाँ कुछ सप्ताह अपने इष्ट मित्रों के साथ आमोद प्रमोद में निकाल कर तीन मास का भ्रमण करके वापिस लन्दन आया।

सन् १७७२ की ग्रीष्म ऋतु के कुछ सप्ताह उसने लार्ड डिस्पेन्सर के गावों में बिताये। वहां रह कर उसने एक प्रार्थना की पुस्तक लिखी। आगे चलकर वह प्रकाशित भी हुई किन्तु, उसका यथोचित प्रचार नहीं हुआ।

वायु के कारण हिलते हुए जल पर तेल डालने से हिलता हुआ पानी बन्द हो जाता है यह दिखाने को उसने भिन्न २ अवसरों पर भिन्न २ प्रकार के प्रयोग कर के दिखलाये थे। जिस समय सर जॉन प्रिंगल के साथ वह उत्तरी इङ्गलैएड में भ्रमण के लिए गया था उस समय ऐसा प्रयोग उसने चिस्विक स्थान के निकट डरवएट नदी के जल में बडी सफलता के साथ किया। उस समय डाक्टर ब्राउनिंग भी वहीं उपस्थित था। उसके प्रश्न के उत्तर में फ्रेंकलिन ने इस सबंध में किये हुए प्रयोगों का सारा इतिहास उसे कहकर सुना दिया और पानी को शांत करने का तैल में ऐसा कौन सा गुण है यह भी समझाया। अनेक प्रयोग करके फ्रेंकलिन ने यह प्रमाणित कर दिया कि तालाब अथवा सरोवर में पानी हवा के वेग से हिल रहा हो तो उस पर थोड़ा सा तैल डाल देने से वह शान्त हो जाता है।

फ्रेंकलिन का मस्तिष्क, उसकी जिज्ञासा प्रवृत्ति, अवलोकन शक्ति और सच्ची लगन इन सब के मिलने और होने से ही वह तत्त्वज्ञान की उत्तमोत्तम खोजें करने में समर्थ हुआ। वह हमेशा कुछ न कुछ किया ही करता था। अकर्मण्यता तो उसके पास हो कर भी न निकली थी। उसने जो जो लोकोपयोगी कार्य्य किये वे कम नहीं हैं किन्तु, इस से उसकी मनस्तुष्टि हो गई हो यह न समझ लेना चाहिये। अपने देश के राजकीय कार्य्यों में उसका बहुत समय गया अन्यथा वह अपने परिश्रम से हमारे लिए तत्त्वज्ञान की और भी अनेकानेक समस्याएं हल करके रख जाता।

लेखक की हैसियत से भी संसार को उसने बहुत कुछ ज्ञान-प्रदान किया। किंतु, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है यदि राज-कीय कार्य्यों में उसको इतना अधिक समय न देना पड़ता तो वह साहित्य में भी कोई उत्तम सृष्टि करता। उसके सम्पादन काल में सामयिक पत्रों की जैसी रीति नीति रही, उसने समय २ पर जैसे निबन्ध लिखे और विभिन्न विषयों पर उसके जो सन्निप्त नोट मिलते हैं उनको देखने से यह सहज में ही अनुमान किया जा सकता है कि उसका अधिक समय विद्याभ्यास में ही बीतता था।

पेरिस के बर बोडुवर्ग नामक विद्वान् ने उसके लेखों का फ्रेंच भाषा मे अनुवाद करके सन् १७७३ में प्रकाशित कराया था उसमें उसने उसके कुछ राजनैतिक विचारों का भी समावेश किया था, उसी वर्ष अङ्गरेजी भाषा में भी उसकी पांचवीं आवृत्ति हुई थी।

प्रकरण २४वां

हचिन्सन के पत्र ।

१७७४

बोस्टन में सेना का भय—इस सम्बन्ध में पार्लमेण्ट के एक सभासद के साथ बातचीत—हचिन्सन आदि के पत्र—मि० कशिंग को लिखा हुआ पत्र—हचिन्सन के पत्र अमेरिका में प्रकाशित हुए—हचिन्सन और ओलिवर को पृथक् कराने के लिये प्रार्थना—टामस ह्वेटली और टेम्पल में द्वन्द्व युद्ध—पत्र किस प्रकार अमेरिका गये इसका किया हुआ फ्रैंकलिन का स्पष्टीकरण—फ्रैंकलिन पर टामस का किया हुआ दावा—हचिन्सन और ओलिवर को पृथक् कराने की प्रार्थना के विषय में प्रिवीकौन्सिल में चली हुई चर्चा—प्रार्थना सम्बन्धी किम्बदन्तियाँ—प्रिवीकौन्सिल में चले हुए कार्य्यों का वर्णन—नियामक समिति की प्रार्थना अस्वीकार हुई—फ्रैंकलिन का डिप्टी पोस्टमास्टर के पद से पृथक् होना—कौन्सिल के प्रस्ताव से अमेरिका में हुआ प्रभाव—हचिन्सन का त्याग पत्र ।

बोस्टन निवासियों को डराकर जकात का क़ानून अपने अधीन करने के लिये प्रधान मण्डल ने सन् १७६८ में बोस्टन पर एक बड़ी सेना भेजी। इनमें से १४ पल्टनों के जहाज़ों ने बन्दरगाह पर और दो ने नगर में पड़ाव डाला।

सन् १७७२ में एक दिन पार्लीमेंट के एक सभासद् से इस विषय में फ्रेंकलिन कुछ बातचीत कर रहा था। बात ही बात में उसने कह दिया कि प्रधान मण्डल इस प्रकार ज़ोर जुल्म करता है यह ठीक नहीं। यह सब काम प्रधान मण्डल का ही है। लेकिन, अमेरिकन लोग ऐसा समझते हैं कि यह सब कुछ इंग्लैण्ड की प्रजा द्वारा ही हो रहा है। इस प्रकार की नासमझी होने से अमेरिका में उपद्रव खड़ा होता है और लोगों के विरुद्ध होने से इङ्गलैण्ड निवासी उनके विषय में बुरे अभिप्राय सोचते हैं। इस पर पार्लीमेण्ट के सभासद् ने कहा कि तुम वास्तविक बात नहीं जानते हो। प्रधान मण्डल ने अपनी इच्छा से फ़ौज नहीं भेजी है बल्कि कुछ अमेरिकन निवासियों ने ऐसा प्रगट किया था कि हमारे देश की भलाई के लिये लोगों पर कुछ रोब रखने को कुछ सेना भेजी जाय तो अच्छा हो। इस पर फ्रेंकलिन बोला कि ऐसा नहीं हो सकता। सभासद् ने फिर कहा कि इस में झूठ बिलकुल नहीं है यह तुम्हें आगे चलकर स्वय विदित हो जायगा। कुछ दिन के पश्चात् वह सभासद् उस से फिर मिला और उसके हाथ में उसने कुछ ऐसे पत्र दिये जो अमेरिका से आये हुए थे। उन पत्रों पर लिखा हुआ पता फाड़ डाला गया था किंतु, उस सभासद ने कहा कि ये विलियम व्हेटली नामक एक सभासद के नाम पर भेजे गये थे। वह प्रधान मण्डल में एक मुख्य कर्मचारी था। जब ये पत्र प्रधान मण्डल के देखने में आये तो उस ने फौज भेजने का विचार किया। इन पत्रों में से छः पत्र तो गवर्नर हचिन्सन के लिखे हुए थे। वह अमेरिका का रहने वाला, और हारवर्ड कालेज का ग्रेजुएट था। आरम्भ में वह संस्थानों के पक्ष में था किंतु, पीछे से उच्च पद पाने की उमंग में प्रधान मण्डल के पक्ष में चला गया। चार पत्र एन्ड्रू ओलिवर नामक मसाच्युसेट्स के एक दूसरे व्यक्ति द्वारा लिखे हुए थे। यह

व्यक्ति मसाच्युसेट्स के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर के पद पर था। शेष पत्र जकात और दूसरे सरकारी विभाग के कुछ कर्मचारियों के लिखे हुए थे यह पत्र गुप्त नहीं थे बल्कि ख़ास तौर पर इसी हेतु से लिखे गए थे कि वे किसी प्रकार प्रधान मण्डल तक पहुँचे और उस पर इनका प्रभाव पड़े। प्रधान मण्डल के अतिरिक्त और भी कई व्यक्तियों ने उनको देखा था। सन् १७७२ में व्हेटली मर गया तब दूसरे काग़ज़ों के साथ वे भी दफ़्तर में मिले। इन पत्रों में अमेरिका के कतिपय निवासियों ने अपने देश बन्धुओं के विषय में कुछ अशुभ चिन्तना की थी। उन लोगों ने लिखा था कि यहाँ जितने भले आदमी हैं वे तो अपने देश और संस्थानों में परस्पर स्नेह बने रहने के इच्छुक हैं केवल थोडे से झगड़ालु और राजद्रोही मनुष्य ऐसे हैं जो असन्तोष और झगड़ा फैलाने के लिये लोगों को उकसा रहे हैं। यदि सरकार सेना भेज कर कुछ सख्ती करेगी तो वे लोग सहज में ही शान्त हो जायँगे। इन पत्रों को पढ़ने से फ्रेंकलिन को विश्वास हो गया कि ये करतूतें मेरे देश के कुछ खुशामदी लोगों की हैं। सभासद ने फ्रेंकलिन की इच्छानुसार उन पत्रों को इस शर्त पर देना स्वीकार कर लिया कि न तो इन की प्रति लिपि की जाय, न ये छापे जायँ और विना कुछ परिवर्तन हुए इसी दशा में वापिस दे दिये जायँ। दिसम्बर सन् १७७२ में फ्रेंकलिन ने ये पत्र, मसाच्युसेट्स की नियामक मण्डली की पत्र व्यवहार कमेटी के सभापति मि० कशिंग को भेज दिये और लिखा कि:—"मैं आप को सूचना देता हूँ कि मेरे हाथ में कुछ ऐसे पत्र आये हैं जो मानों अपनी वर्तमान शिकायतों के मूल कारण हों। ये पत्र मुझे किस प्रकार मिले यह बताने की मुझे स्वतंत्रता नहीं है। इसके अतिरिक्त मैं वचन दे चुका हूँ कि इन पत्रों की प्रतिलिपि न की जायगी और न उन्हें छपाया ही जायगा। हाँ, इतनी स्वतंत्रता अवश्य है कि संस्थानों के मुख्य २ व्यक्तियों

में से जो उन्हें देखना चाहें देख सकते हैं। मैंने जैसा वचन किसी को दिया है इसका तुम भी बराबर पालन करोगे ऐसी आशा रख कर मैं तुम्हें ये असली पत्र जिस दशा में मिले हैं उसी दशा में भेजता हूँ। ये किस के लिखे हुए हैं, यह बात इनको देखने पर विदित हो सकेगी। यदि उनका भेद खुल जायगा तो कदाचित् वे इसे अच्छा न समझेंगे। किन्तु, यदि वे भले आदमी होंगे अथवा अपनी गणना भलों में कराने के इच्छुक होंगे तो वे स्वीकार करेंगे कि सभी देशवासी और संस्थानों में परस्पर प्रेम रहना चाहिये। वे लज्जित तो अवश्य होंगे क्योंकि जन साधारण के आगे अब यह बात स्पष्ट रूप में आ जायगी कि उनकी प्रामाणिकता और देश भक्ति कसी है। यदि वे केवल खेद प्रगट करके ही रह जायँ तब तो जानना चाहिये कि उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ किंतु, इससे वे आगे के लिये कुछ शिक्षा ग्रहण करें तो अच्छा है। मैं समझता हूँ सरकार का इसमें कोई दोष नहीं है कि वह हमारे साथ अनुचित बर्ताव करती है। क्योंकि अब यह स्पष्ट होता जा रहा है कि हमने ही अपने हाथों से अपने पैरों पर कुल्हाड़ी लगाई है—हमारी सम्मति, सूचना और माँग के बल पर ही सरकार ने धोखा खाकर ऐसी सख्ती करने का विचार किया है। मेरा ख़याल ऐसा है कि कदाचित् तुमको भी यह बात ठीक मालूम होगी। मुझे रह रह कर खेद होता है कि मुझे इन पत्रों को प्रकाशित करने का अधिकार नहीं है। हाँ, तुमको मैं इतनी आज्ञा देता हूँ कि तुम इन पत्रों को देख कर पत्र व्यवहार कमेटी के सभासदों को भी दिखा सकते हो। इसके सिवाय बोडोइन, पीट्स, चोन्सि, कूपर और विन्थोप आदि के अतिरिक्त अन्य जिस किसी को योग्य समझो इनको दिखलाना और इस प्रकार काम हो जाने के पश्चात् ये पत्र सुरक्षित रूप से मुझे लौटा देना।"

अमेरिका पहुँचने पर ये पत्र कई लोगों को दिखाये गये। जान आडम्स नामक बेरिस्टर जहाँ जाता वहीं उन पत्रों को ले जाता और जो कोई माँगता उसी को बताता। थोड़े ही समय में इनकी चर्चा सारे देश में फैल गई और इतनी माँगे आने लगीं कि फ्रेंकलिन को पत्र व्यवहार कमेटी से यह प्रार्थना करने को विवश होना पड़ा कि कृपा कर इन पत्रों की प्रतिलिपि करने की आज्ञा प्रदान की जाय। इस पर उसकी यह प्रार्थना तो स्वीकार नहीं हुई। किंतु, इतनी स्वतंत्रता और मिल गई कि तुम इनको चाहे जितने समय तक रख सकते हो और चाहे जिस को दिखा सकते हो। जून मास में नियामक मण्डली की बैठक हुई तब सभासदों ने पत्रों के सम्बन्ध में इतनी पूछताछ करना आरम्भ किया कि कमरे के दरवाजे बन्द करके सब पत्रों को मण्डली के सन्मुख पढ़े जाने का निश्चय हुआ। पत्र पढ़े गये। किन्तु, प्रतिलिपि करने का प्रतिबन्ध था इस कारण आगे कुछ कार्य्यवाही न हो सकी। कुछ समय के पश्चात् एकाएक एक दिन उन पत्रों की छपी हुई प्रतिलिपियाँ आगई। उनके आने पर यह प्रगट कर दिया गया कि य इङ्गलैण्ड की डाक से हाल ही में आई हैं।

नियामक मण्डली ने पत्रों की बात जान लेने पर ऐसा विचार किया कि राजा से प्रार्थना करके हचिन्सन और ओलिवर को अपने २ पदों से पृथक् कराया जाय। प्रार्थना पत्र तय्यार किया गया और फ्रेंकलिन के पास भेजा गया। फ्रेंकलिन ने वह लार्ड डार्टमथ को दिया और जैसे बने वैसे जल्दी ही राजा के पास भेजने की विनती की। डार्टमथ ने उत्तर दिया कि जैसे ही मुझे राजा से मिलने का अवसर मिलेगा वैसे ही मैं इसे उनकी सेवा में पेश करूगा। ऐसा बचन दे देने पर भी वह प्रार्थना पत्र कई दिन तक उसके आफ़िस में ही इधर उधर पड़ा रहा।

कुछ समय के पश्चात् ऐसा हुआ कि अमेरिका में प्रकट होने वाली पत्रों की प्रतिलिपियां लन्दन पहुँच गईं और प्रायः सभी सामयिक पत्रों में छप गईं इस पर से यह पूछ ताछ आरम्भ हुई कि ये पत्र अमेरिका कैसे गये ? इसकी छान बीन होने पर लोगों को मैयत उवेटली के भाई टामस पर सन्देह हुआ क्योंकि मैयत का उत्तराधिकारी वही हुआ था और उसकी सब वस्तुएँ उसको ही मिली थीं। इस बेचारे ने इन पत्रों को कभी देखा भी न था। उसका सदेह जोन टेम्पल पर था, कारण कि उसने उससे मैयत के कागज़ पत्र देखने की आज्ञा माँगी थी। टामस की ऐसी धारणा थी कि जिस समय मैंने टेम्पल को अपने भाई के पत्रादि देखने की आज्ञा दी थी उसी समय यह उन पत्रों को ले गया है। यह बात सत्य न थी, इस कारण इसका परिणाम यह हुआ कि टामस उवेटली और टेम्पल में परस्पर झगड़ा हो गया। जिसमें टामस उवेटली बुरी तरह घायल हुआ। थोड़े दिन के पश्चात् जब फ्रेंकलिन को ऐसा विदित हुआ कि उन में फिर लड़ाई होने वाली है तो उसने सोचा कि अब इनके बीच में पड़कर समझौता करा देना मेरा कर्त्तव्य है। उसने शीघ्र ही "पब्लिक एडवर टाइज़र" नामक सामयिक पत्र द्वारा एक विज्ञप्ति निकाली कि पत्र अमेरिका भेजने का उत्तरदायित्व मुझ पर है। ये पत्र टामस को उस के भाई से नहीं मिले हैं अतः यह सम्भव नहीं कि वह इन्हें किसी को दे दे अथवा टेम्पल जैसा व्यक्ति उस से ले सके। इस प्रकार जब वास्तविक बात प्रगट हुई तो डाक्टर फ्रेंकलिन पर चारों ओर से वाग्प्रहार होने लगा। एक ओर टामस उवेटली के मित्र ऐसा कहने लगे कि जब यह सच्ची बात जानता था तो उसने उसे पहिले से ही क्यों प्रगट न किया जिससे इन दोनों में जो परस्पर व्यर्थ ही झगड़ा हुआ, न हो पाता। दूसरी ओर से प्रधान मण्डल के आश्रित लोग ये पत्र लेकर अमेरिका

भेजने के कारण उसको गालियाँ देने लगे और खरी खोटी सुनाने लगे। पहिले दोषारोपण के विषय में इतना ही कहना बस होगा कि उन दोनों का झगड़ा हो चुका तब तक फ्रेंकलिन को उसकी खबर ही न हुई जब उसे खबर हुई तो उसने वास्तविक बात को प्रगट करके टामस और टेम्पल को दोष मुक्त ठहराया और इस प्रकार उनके झगड़े का अन्त आया। इसके लिये फ्रेंकलिन की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। दूसरे आरोप के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि उसने ये पत्र अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये नहीं भेजे थे बल्कि कर्तव्य के नाते—अपने देश की सेवा के लिये भेजे थे। और इन पत्रों को प्राप्त करने के लिये उसने किसी अनुचित मार्ग का अवलम्बन नहीं किया था।

टामस व्वेटली पर फ्रेंकलिन ने कई बार अनेक उपकार किये थे और अमेरिका में भूमि दिलाने के लिये उसने उसकी अच्छी सहायता की थी। अब पत्रों के सम्बन्ध में भी फ्रेंकलिन ने सारा भार अपने ऊपर लेकर उसको एक प्रकार से निर्दोष कर दिया था। किंतु, टामस इन सब बातों को भूल गया और उसने फ्रेंक-लिन पर दावा कर दिया इतना ही नहीं उसने वे पत्र अमेरिका भेज कर कुछ स्वार्थ साधन किया है ऐसा प्रसिद्ध कर के उसको मिले हुए लाभ के रुपये मिलने की इच्छा प्रगट की। इस पर फ्रेंकलिन ने यह उत्तर दिया कि पत्र मुझे मिले उस समय उन पर कुछ पता ठिकाना न था और न मुझे यही खबर थी कि ये किसके लिखे हुए हैं। इसके अतिरिक्त इनसे मुझे कुछ लाभ भी नहीं हुआ है।

ये पत्र किस प्रकार अमेरिका गये इसका सामयिक पत्र द्वारा स्पष्टीकरण करने के १४ दिन पश्चात् उसको नोटिस मिला कि राजा ने उसके प्रार्थनापत्र को प्रिवीकौन्सिल में भेजा है और

तीन दिन के पश्चात् उसकी सुनवाई होने वाली है अतः उसे इस दिन उपस्थित होना चाहिये। इसके अनुसार वह १४ जनवरी सन् १७७४ को मि० बोलन नामक मसाच्युसेट्स कौन्सिल के एक मुख्तार को साथ लेकर पहुँचा। प्रार्थना पत्र पढ़े जाने के पश्चात् फ्रेंकलिन से पूछा गया कि तुम्हारा इस सम्बन्ध में और क्या विशेष वक्तव्य है। उसने उत्तर दिया कि मि० बोलन मेरी ओर से पैरवी करेंगे। मि० बोलन कुछ कहने लगा तो कौन्सिल के सभासदों ने उसको यह कह कर रोक दिया कि तुम नियामक मण्डली के वकील नहीं हो अतः तुमको इस मामले में पैरवी करने का कोई अधिकार नहीं है। इस पर फ्रेंकलिन ने कहा कि हचिन्सन तथा ओलिवर की ओर से एक प्रख्यात बैरिस्टर वेडर बर्न नियुक्त हुए हैं और वे इस सम्बन्ध में कुछ बोलना चाहते हैं। फिर हमको ही वकील खड़ा करने का अधिकार किस क़ानून के अनुसार नहीं दिया जा रहा है? उसने अपनी प्रार्थना के सम्बन्ध में सफ़ाई के रूप में कुछ पत्रों की प्रतिलिपियाँ पेश कीं। इस पर वेडर बर्न ने यह आपत्ति की कि ये पत्र नियामक मण्डली को किस प्रकार मिले, किस किसने इनको देखा और ये असल में किस के लिखे हुए हैं इन बातों का जब तक सन्तोष जनक उत्तर नहीं मिल जाता तब तक प्रतिलिपियों को नहीं पढ़ा जा सकता। मुख्य न्यायाधीश का अभिप्राय भी ऐसा ही था। वह बोला कि जिन काग़ज़ों पर किसी का पता ठिकाना नहीं और जिनके लिये यह भी नहीं मालूम होता कि ये किसने किसको भेजे हैं उन पर से किसी व्यक्ति पर कोई अपराध नहीं लगाया जा सकता। इस पर फ्रेंकलिन खड़ा होकर बोला कि विपक्षी की ओर से जब बेरिस्टर को बोलने की आज्ञा दे दी गई है तो हमें भी अपना बेरिस्टर क्यों नहीं नियत करने दिया जाता? पहिले हमें यह विदित नहीं था कि इस छोटे से मामले में क़ानून के ऐसे २

बारीक और गूढ़ प्रश्न किये जायँगे। हम तो यही समझे हुए थे कि अपने प्रार्थना पत्र में हमने जो कुछ लिखा है उसके विषय में आप लोग स्वयं ही पूछताछ करके उस पर उचित आज्ञा दे देंगे। यदि आपकी ऐसी ही इच्छा है कि क़ानूनी वाद विवाद ही किया जाय तो हमें भी अवसर दिया जाय। यह प्रार्थना स्वीकार हुई और तीन सप्ताह के लिये तहक़ीक़ात स्थगित की गई।

फ्रैंकलिन लिखता है कि:—"अब नगर मे ऐसी चर्चा होने लगी कि मुझे भरी कौन्सिल में वेडरबर्न ने बहुत सी भली बुरी सुनाईं और गालियाँ दीं। यद्यपि ऐसा हुआ नहीं था। हाँ, उसका ऐसा इरादा अवश्य था। कुछ लोगों से मैंने ऐसा भी सुना कि मैंने पत्र बाहर भेजे इसके लिये प्रधान मण्डल और दरबारी लोग मुझ से अप्रसन्न हैं। मुझे ही झगड़े का मूल कारण बताया जाता है और सामयिक पत्रों मे मेरी कुछ निन्दा करने का भी विचार हो रहा है। इतना ही नहीं एकाध बार विश्वसनीय रूप से मुझे ऐसा भी विदित हुआ कि मुझे शीघ्र ही क़ैद किया जायगा और मेरे सब काग़ज़ पत्र छीन कर मुझे न्यूगेट की जेल में बन्द किया जायगा। इसके अतिरिक्त मेरा पद भी सदा के लिये छीन लिया जायगा। सम्भवतः ऐसा प्रस्ताव बहु सम्मति से पास भी हो गया है और इस प्रार्थनापत्र का विचार हो जाने के पश्चात् उसको प्रयोग में लाया जायगा। पहिले मेरी निन्दा इस लिये की जायगी जिससे मेरे साथ उपर्युक्त बातों मे से जो कुछ भी हो उसके लिये कोई यह न कह सके कि मेरे साथ अन्याय किया गया है। प्रार्थनापत्र का क्या फल होगा यह बात भी कुछ लोग जानते हैं। वे कहते हैं कि उस प्रार्थना के सम्बन्ध में तुम्हें कदापि अभीष्ट सिद्धि न होगी। सरकार नियामक मण्डली पर एतराज़ करके गवर्नर को सम्मान देना चाहती है। ये सब बातें

इन लोगों को कैसे विदित हुईं यह नहीं कहा जा सकता। कदाचित यह उनका अनुमान मात्र ही था।"

नियामक मण्डली की ओर से मि० डनिंग और मि० ली नामक दो सुविख्यात बैरिस्टरों को फ्रैंकलिन ने बुलवाया। निश्चित तिथि के दिन फिर प्रार्थना के सम्बन्ध में विचार हुआ। उस समय जो कुछ कार्यवाही हुई उसका कुछ वर्णन डाक्टर फ्रैंकलिन ने इस प्रकार किया है:—

"मुझे पहिले से सूचना मिल चुकी थी। किंतु, यह होते हुए भी मैं नहीं समझता था कि कौन्सिल में, इस समय जो मुख्य काम है उसको छोड़कर उस मनुष्य पर कोई दूसरा ही अपराध लगा दिया जायगा जिसके सम्बन्ध में उसके पास इस समय कोई तय्यारी नहीं है। किंतु, फिर भी इसी प्रकार हुआ। मैं समझता हूँ वहुत करके ऐसा करने का पहिले से ही निश्चय हो गया था। कारण कि मैं देखता था कि वहाँ सब दरबारियों का ऐसा जमघट लगा हुआ था जैसे उनको किसी प्रीतिभोज में पहिले से निमन्त्रित किया गया हो। साथ ही सभासदों की संख्या भी उस दिन ३५ थी जितनी कभी न होती थी। इसके अतिरिक्त कुछ दर्शक भी थे।

"तहकीक़ात शुरू होने पर, प्रार्थनापत्र के साथ भेजा हुआ लार्ड डार्टमथ को मेरा लिखा हुआ पत्र भी पढ़ा गया। इसके पश्चात् प्रार्थनापत्र के पढ़ने का नम्बर आया। फिर नियामक मण्डली के प्रस्ताव पढ़े गये और सब से पीछे पत्र। पहिले की तहक़ीकात में प्रगट किया गया था कि पत्रों के सम्बन्ध में वेडरबर्न को कुछ आपत्ति है किंतु, इस समय उसने कोई आपत्ति न की। तब हमारे बैरिस्टर मि० डनिंग ने अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया और जिन जिन बातों पर उसको जो कुछ कहना था वह

अच्छी तरह कहा। किंतु, फेंफड़े का रोग होने के कारण उसकी आवाज जैसी चाहिये वैसी ज़ोरदार न थी। फिर उसने विपक्षी की ओर से कुछ कहा। आरम्भ में उसने अन्त के दस वर्षों का परगने का इतिहास सुनाया जिसमें परगने के लोगों को उसने स्पष्ट रूप से खूब फटकार बताई और गवर्नर की प्रशंसा की। उसके वक्तव्य का सब से उत्तम अंश अपने एजेण्ट के विरुद्ध था। मुझे एक घंटे तक चुपचाप उसकी बौछारें सहनी पड़ीं। किन्तु, किसी से यह न कहा गया कि यह तो प्रार्थनापत्र लाने वाला नौकर है और इस प्रार्थना से उसके बर्ताव का कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि पत्र प्राप्त करने और उन्हें अमेरिका भेजने में उसने कोई बुरा काम भी किया है तो उसका इस न्यायालय मे कुछ न्याय न होने का। इसके विषय में तो दूसरे न्यायालय में प्रयत्न हो रहा है। कौन्सिल में इस समय जो प्रार्थनापत्र उपस्थित था उसके विषय में बिना सम्बन्ध की बातों पर बोलने से किसी ने वेडरबर्न को मना नहीं किया। बल्कि बहुत से सभासदों का बर्ताव मुझे ऐसा मालूम हुआ मानों मेरे विरुद्ध यहाँ जो कुछ हो रहा है इससे उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। वेडरबर्न के वक्तव्य का यह अंश इतना अच्छा गिना गया कि मेरी निन्दा फैलाने को वह छपवाया गया। इतना अवश्य हुआ कि जो बहुत बुरा अंश था उसको छपते समय निकाल डाला गया। अतः जो कुछ कार्यवाही वहाँ हुई उसके मुकाबले में छपा हुआ अंश अधिक बुरा नहीं है। इसके साथ में इसकी एक प्रतिलिपि तुम्हारे पास भी भेजता हूँ। मेरे मित्र मुझे सम्मति देते हैं कि मुझे भी उसका उत्तर लिख कर छपवा देना चाहिये इस कारण मैंने उसे तय्यार करना शुरू किया है।

मि० डन्निंग ने उत्तर दिया इतने ही में कार्य समाप्त हो गया। उसका स्वास्थ्य अच्छा न होने और बहुत देर तक खड़ा

रहने के कारण वह थक सा गया था और इसी लिये उसकी आवाज़ ऐसी धीमी निकलती थी कि उसको सब लोग ठीक २ नहीं सुन पाते थे। जो बातें मैंने सुनी उन्हें उसने यथावत् रीति से प्रगट किया था किंतु, उसका कुछ प्रभाव नहीं हुआ।

"कौन्सिल ने उसी दिन रिपोर्ट की। उसकी नक्ल मैं तुमको इस पत्र के साथ भेजता हूँ। इस पर से तुमको विदित होगा कि इसमें प्रार्थियों और प्रार्थना पत्र की कड़ी आलोचना की गई है।"

न्याय के इस विचित्र स्वरूप से आश्चर्य करने की कोई बात नहीं। कौन्सिल ने रिपोर्ट की थी कि:—"यह प्रार्थना भूल भरी, अनुचित, आधार हीन, और कुविचारों से पूर्ण है। इसका मुख्य अभिप्राय यह मालूम होता है कि प्रार्थीगण मसाच्युसेट्स परगने में चले हुए झगड़े को और अधिक बढ़ाकर अशान्ति उत्पन्न किया चाहते हैं। गवर्नर हचिन्सन तथा उसके लेफ्टिनेन्ट मि० ओलीवंट की प्रतिष्ठा, प्रामाणिकता और सद्व्यवहार में बट्टा लगावे ऐसी कोई बात उनके विरुद्ध प्रमाणित नहीं होती अतः हमारी नम्रतापूर्वक यह विनय है कि यह प्रार्थना अस्वीकार करनी चाहिये।" राजा ने इस रिपोर्ट को पसन्द किया और प्रार्थना अस्वीकृत हुई।

दूसरे दिन फ्रैंकलिन को आज्ञा मिली कि तुमको अमेरिका के डिप्टी पोस्ट मास्टरी के पद पर से पृथक् किया गया है। इससे फ्रैंकलिन को कोई खेद और आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि कौन्सिल में जो मामला चल रहा था और पहिले से वह जो कुछ सुन चुका था उस पर से उसको ऐसी ही सम्भावना थी। उसको अब यह भी विश्वास हो गया कि सरकार के विचार जनता की ओर से अच्छे नहीं हैं और उसको उसकी प्रार्थना उचित नहीं

जँचती अतएव यह आशा करना कि देश में सुख शान्ति रहेगी, व्यर्थ है। बिना शिकायत को अच्छी तरह सुने दाद नहीं मिल सकती। अतः यह तो जानना ही चाहिये कि शिकायतें क्या हैं ? और इसके लिये प्रार्थना पत्र लेना आवश्यक है। किन्तु, अब जब प्रजा प्रार्थना करती है तो सरकार उसमें अपना अपमान समझती है और जिसके द्वारा प्रार्थना भेजी जाती है उसे अपराधी ठहरा कर दण्ड दिया जाता है तो अब प्रार्थना करने से भी कुछ लाभ नहीं। फ्रैंकलिन के साथ सरकार ने जैसा कुछ बर्ताव किया वह उसको बुरा लगा किन्तु उसने सहन शीलतापूर्वक उस सब को बरदाश्त किया। उसका अन्तःकरण उससे कहता कि तैंने किसी के साथ कोई बुरा काम नहीं किया, केवल सच्चाई और ईमानदारी से अपने देश की सेवा की है। बस यही उसके लिये सब से बड़ी सान्त्वना थी।

इस घटना का वर्णन जब अमेरिका पहुँचा तो लोगों के मन में सरकार के प्रति बहुत घृणा और तिरस्कार के भाव उत्पन्न हुए जहाँ तहाँ फ्रैंकलिन की वाहवाही होने लगी। और स्थान २ पर वेडरबर्न तथा हचिन्सन के पुतले बना २ कर जलाये गये। हचिन्सन ने जब यह सुना तो उससे अपना ऐसा तिरस्कार न सहा गया अतएव वह अपने पद से त्याग पत्र देकर इङ्गलैण्ड चला गया। वहां सरकार ने उसको अच्छी पेन्शन दी किन्तु, उसमें उसका भली प्रकार निर्वाह न हुआ। कुछ वर्ष चिन्ता और दुःख में निकाल कर अन्त में वह मर गया और मरा भी इस रीति से कि किसी ने पूछा भी नहीं कि उसकी क्या दशा हुई। फ्रैंकलिन को जब सरकार ने पोस्ट मास्टरी के पद पर से पृथक् कर दिया तो देश भक्त अमेरिकनों ने अपने पत्रादि डाक द्वारा न भेज कर घरू तौर पर भेजना शुरू कर दिया। फ्रैंकलिन उस

पद पर था उस समय सरकार को डाक विभाग से तीन हजार पौण्ड वार्षिक की आय होती थी वह एक दम बन्द हो गई।

हचिन्सन के पत्र फ्रेंकलिन को जिस व्यक्ति के द्वारा मिले थे उसका नाम अब भी कोई न जान पाया था। भरोसे की बात किस प्रकार गुप्त रखनी चाहिये इस बात को फ्रेंकलिन भली प्रकार जानता था। उस व्यक्ति ने फ्रेंकलिन से कह दिया था कि मेरा नाम प्रगट मत करना अतः उसने उसका नाम अपने खास मित्रों पर भी प्रगट नहीं किया था।

प्रकरण २५वां

वापिस अमेरिका जाना

सन् १७७४-७५

अमेरिका वापिस जाने का निश्चय—कुछ समय इस विचार को स्थगित रखने के कारण—मि० क्विन्सि के पुत्र का अमेरिका से लन्दन आना—फ्रैंकलिन की पत्नी का मृत्यु-संवाद—उसकी पत्नी के गुण—संस्थानों की प्रथम कांग्रेस द्वारा भेजी हुई प्रार्थना—गेलोवे की प्रार्थना के सम्बन्ध में फ्रैंकलिन के विचार—फ्रैंकलिन का भविष्य—लार्ड चेथाम की मुलाक़ात—फ्रैंकलिन के विचार जानने को प्रधान मण्डल की की हुई गुप्त व्यवस्था—मिसेज हो—डाक्टर फ्रोथर गिल और डेविड बार्कलि के साथ की हुई फ्रैंकलिन की बातचीत—फ्रैंकलिन की तय्यार की हुई समाधान की शर्तें—लार्ड हो की मुलाक़ात—लार्ड चेथाम की पार्लामेण्ट में की हुई प्रार्थना—फ्रैंकलिन के विषय में लार्ड चेथाम का अभिप्राय—फ्रैंकलिन की दृढ़ता—वापिस घर जाना।

अब फ्रैंकलिन ने प्रधानों से मिलना बन्द कर दिया और यथा सम्भव शीघ्र ही लन्दन से चले जाने का विचार किया। मसाच्युसेट्स सम्बन्धी काग़ज़ पत्र उसने मि० आर्थरली को

सौंप दिये। किन्तु, वह किसी आवश्यक कार्य वश कुछ मास के लिये बाहर जाने वाला था अतः जब तक वह वापिस न आ जाय तब तक फ्रैंकलिन ने अमेरिका वापिस जाना स्थगित रक्खा। इतने ही में खबर आई कि सब संस्थानों की सम्मिलित कांग्रेस शीघ्र ही किसी स्थान पर होने वाली है अतः उसके मित्रों ने भी आग्रह किया कि इसका क्या फल होता है और उसमें क्या २ प्रस्ताव होते हैं यह प्रकाशित हो तब तक तुम इंग्लैण्ड में ही रहो। सन् १७७४ में लिखे हुए पत्र में फ्रैंकलिन लिखता है कि "मेरा यहाँ रहना बड़ा जोखम भरा हुआ है ऐसा कई लोग कहते हैं। कदाचित् संयोग से फौज और बोस्टन के लोगों में कुछ मार काट हो जाय तो मेरा अनुमान है कि मुझे शीघ्र ही पकड़ लिया जायगा कारण कि लोगों की ऐसी धारणा है कि जनता में कुविचार फैला कर अशान्ति उत्पन्न करने वाला मैं ही हूँ। प्रधान मण्डल तो इस बात को खुल्लम खुल्ला कहता है। इसी से कई मित्र मुझे सम्मति दिया करते हैं कि तुम्हे अपने काग़ज़ पत्र सुरक्षित रखने चाहियें और स्वयं भी बहुत सावधान रहना चाहिये। कई तो यहां तक कहते हैं कि तुम्हे शीघ्राति शीघ्र इस देश को छोड़ देना चाहिये। यह सब होते हुए भी कांग्रेस का परिणाम विदित हो तब तक के लिये मैंने यहीं रहने का साहस किया है। क्योंकि कुछ लोग कहते हैं, बहुत सम्भव है तुम्हारे यहां रहने से कोई बात ऐसी निकल आवे जो उपयोगी सिद्ध हो। वैसे मैं निरपराधी हूं यह तो मेरा अटल विश्वास है। बहुत तो यह होगा कि सन्देह पर मुझे कैद कर लिया जायगा तो भी मुझ से हो सकेगा वहा तक मैं ऐसा प्रसग न आने दूंगा। क्योंकि यदि ऐसा हो जाय तो मुझे बहुत आर्थिक हानि उठानी पड़े, कष्ट सहना पड़े और अपने जीवन को जोखम में डाल देना पड़े।"

उस वर्ष के नवम्बर मास में जोशिया किन्सि नामक बोस्टन का एक प्रख्यात बैरिस्टर लन्दन में आया। ब्रिटिश सरकार की निरंकुशता के सामने किन्सि की समानता कर सके ऐसा वहां कोई व्यक्ति न था। पहिले जिस फ्रैंकलिन के मित्र मि० किन्सि का उल्लेख हो चुका है उसका यह पुत्र था। इसके आ जाने से फ्रैंकलिन को एक मन भाता साथी मिला। अमेरिका में जो जो बातें हुई थीं उनकी फ्रैंकलिन को इसके साथ बातचीत करने पर सन्तोषप्रद जानकारी मिली। इन दोनों के विचार प्रायः मिलते-जुलते से ही थे इस कारण थोड़े ही समय में उनमें परस्पर प्रगाढ़ स्नेह हो गया। किन्सि अपने पिता को लिखे हुए सन् १७७४ के नवम्बर मास की २७वीं तारीख के पत्र में लिखता है कि "डाक्टर फ्रैंकलिन वास्तव में सच्चा अमेरिकन है, इस पर तुम्हें पूरा विश्वास और भरोसा रखना चाहिये। वह ऐसे संकीर्ण विचारों वाला नहीं है जो केवल ज़कात के कर से मुक्त हो जाने पर ही प्रयत्न रहित हो कर बैठ जाय। उसका विचार देश को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त कराने का है। इस विषय पर वह स्पष्ट शब्दों में बड़ी उत्तम रीति से साहसपूर्वक बातें करता है और मेरी भांति उसका भी दृढ़ विश्वास है कि अमेरिका एक दिन अवश्य ही स्वतंत्र होगा।" किन्सि चार मास तक इङ्गलैण्ड में रहा इस अवधि में वह प्रति दिन नियमित रूप से फ्रैंकलिन से मिलता। लार्ड नार्थ, लार्ड डार्टमथ और अन्य प्रधानों के इच्छा प्रगट करने पर वह उनसे भी मिला और उनके तथा पार्लमेण्ट के अन्य सभासदों के साथ उसने उसी निर्भीकता और स्पष्टता से बातचीत की जिस प्रकार वह अपने इष्ट मित्रों में किया करता था। इतना ही नहीं अपने देश की परिस्थिति और अधिकार आदि का भी उसने बड़े अच्छे ढंग से वर्णन किया।

फ्रैंकलिन यह आशा बाँध रहा था कि दस वर्ष के वियोग के पश्चात् अब मैं शीघ्र ही अपनी धर्म पत्नी से जाकर मिलूँगा किंतु इसी बीच में उसको उसकी मृत्यु का अशुभ-संवाद मिला। उसको एकाएक अर्द्धाङ्ग (लकवा) की बीमारी हो गई थी इस कारण उसका शरीर ऐसा शिथिल होगया कि केवल पांच दिन की बीमारी से ही सन् १७७४ के दिसम्बर मास में उसका देहान्त हो गया। वैसे कई मास से वह साधारण बीमार रहा करती थी। किन्तु, इतनी शीघ्रता से उसकी मृत्यु हो जायगी इसकी किसी को भी कल्पना न थी। इस पतिव्रता ने ४४ वर्ष तक वैवाहिक जीवन भोगा। इतनी लम्बी अवधि में इन दम्पति में एक दिन भी किसी प्रकार का मन मुटाव या झगड़ा न हुआ। दीन अवस्था से लेकर धनवान् हो जाने तक वह समान रूप से अपने पति की सेवा में तत्पर रही। वह अपने घरू कार्यों के अतिरिक्त पति के कार्यों में इतनी अधिक सहायता देती थी कि जैसी एक सहायक व्यक्ति से भी नहीं मिल सकती। इसी का यह फल था कि फ्रैंकलिन को पर्याप्त अवकाश मिलता था। पति की कमाई को वह ऐसी मितव्ययिता और चतुराई से व्यय करती थी कि इस विषय में फ्रैंकलिन को कुछ विशेष प्रयत्न न करना पड़ता था। सच पूछिये तो अपनी पत्नी के सद्गुणों के कारण ही फ्रैंकलिन दस वर्ष तक इङ्गलैण्ड में रह कर स्वदेश-सेवा कर सका। यह बड़े दुःख की बात है कि उसकी मृत्यु अपने पति की अनुपस्थिति में उसके वियोग में हुई।

फ्रैंकलिन की अनुपस्थिति में उसकी स्त्री के साथ हुआ उसका पत्र व्यवहार, आदि से अन्त तक प्रेम से परिपूर्ण है। इन दोनों में परस्पर कितना स्नेह और ममता थी यह उनको पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है। जिस प्रकार उसकी स्त्री उसके लिये

अमेरिका से फल आदि भेजा करती थी उसी भाँति वह भी उसकी प्रसन्नता के लिये नई २ वस्तुएँ भेजा करता था जो उसके लिये उपयोगी हों। उसकी चतुराई और मितव्ययिता पर उसको इतना विश्वास था कि अपनी अनुपस्थिति में उसने घर का सब काम काज उसको ही सौंप रक्खा था और वह निश्चिन्त रहता था। पत्नी की मृत्यु के पश्चात् एक स्त्री को लिखे हुए पत्र में वह लिखता है कि:—

"मितव्ययिता से मनुष्य मालदार बनता है यह गुण मैं अपने तौर पर प्राप्त न कर सका था। सौभाग्य से यह गुण मेरी धर्म-पत्नी में था और इसी से मेरे मालदार होने में वही कारणी-भूत थी।"

अमेरिका में पहिली कांग्रेस हुई उस समय इंग्लैण्ड में पार्लामेण्ट का नया चुनाव हुआ था। नई पार्लामेण्ट में अमेरिका के विपक्षियों की संख्या पहिले की अपेक्षा अधिक थी। अतः इंग्लैण्ड के साथ मेल करने के विचार से सब संस्थानों की कांग्रेस ने एक मत होकर एक प्रार्थना पत्र तैयार किया और उसको राजा के पास भेजने का निश्चय किया। यह प्रार्थना पत्र बहुत नम्रता भरे शब्दों में लिखा हुआ था और उसमें अमेरिकन लोगों को न्याय मिलने की प्रार्थना की गई थी। उसको राजा के पास पहुँचाने के लिये संस्थानों के मुख्त्यारों की ओर भेजा गया। दिसम्बर सन् १७७४ में इस प्रार्थना पत्र के पहुँचते ही फ्रेंकलिन ने सब मुख्त्यारों को बुलाया और सारी हकीकत समझाई। किन्तु 'ली' और 'बोलन' के अतिरिक्त सब मुख्त्यारों ने यह प्रगट किया कि हमारे संस्थानों की ओर से हमें कुछ खबर नहीं मिली है इस कारण इस प्रार्थना पत्र के सम्बन्ध में हम अधिक नहीं बोल सकते। फ्रेंकलिन, ली, और बोलन ये तीन व्यक्ति लार्ड डार्टमथ के

कार्यालय में प्रार्थना पत्र लेकर गये और उसको राजा के पास भेज देने की विनय की। लार्ड डार्टमथ ने एक दिन उस प्रार्थना पत्र को पढ़ कर समझ लेने को अपने पास रक्खी और दूसरे दिन कहा कि मैं इसे भेज दूंगा। इसके कुछ दिन पश्चात् उसने फ्रेंक-लिन को लिखा कि प्रार्थना पत्र राजा के पास पहुंच गया है और अब पार्लमेण्ट में पेश होगा। अन्त में वह पार्लमेण्ट में भी पेश हुआ किन्तु, उस पर किसी ने विशेप ध्यान नहीं दिया। हज़ारों काग़ज़ जो पहिले से पड़े हुए थे उन्हीं में वह भी डाल दिया गया। इस पर फ्रेंकलिन ने प्रार्थना की कि हमको रूबरू पार्लमेण्ट में उपस्थित होकर अपनी शिकायतें सुनाने की आज्ञा दी जाय। किन्तु, वह अस्वीकार हुई। जिस समय प्रार्थना पत्र पढ़ा गया, उस पर बड़ा वाद विवाद हुआ। कुछ सभासदों ने तो अमेरि-कनों पर खूब गालियो की बौछार की। लार्ड सेन्डविच ने कहा कि अमेरिकन ऐसे डरपोक हैं कि वे तोप के धड़ाके मात्र से बिखर जायंगे। कुछ ने यह कहा कि इनकी शिकायतें मन कल्पित और निमूल हैं। यदि वे हठ न छोड़ें तो फ़ौज के बल से उनको नरम करना चाहिये।

पहिली कांग्रेस हुई थी उस समय गेलोवे नामक पेन्सिल्वेनियां के एक सभासद ने ग्रेट ब्रिटेन और संस्थानों को एकत्रित करने की एक योजना प्रार्थना पत्र की भांति पेश की थी। किन्तु, वह किसी को पसन्द न आई। इससे गेलोवे को बड़ा बुरा लगा। उसने उसको छपवाली और कांग्रेस के किये हुए कार्यों के संबन्ध में अनेक निराधार टिप्पणियां लिख कर वितरित कर दिया। उसकी एक प्रति डाक्टर फ्रेंकलिन को भी भेजी। फ्रेंकलिन ने उत्तर दिया कि एकत्रित होने का विचार करने से पहिले कुछ आवश्यक बातों का निर्णय हो जाना चाहिये। इन बातों में से कुछ मुख्य २ इस प्रकार की थीं:—

(१) इग्लैण्ड की पार्लामेण्ट को संस्थानों पर कर लगाने का अधिकार है ऐसा जो नियम बनाया गया है वह रद्द होना चाहिये।

(२) संस्थानों पर कर डाला जाय इस प्रकार के पार्लमेण्ट के किये हुए सब नियम रद्द होने चाहियें।

(३) संस्थानों के नियम तथा प्रबन्ध में परिवर्तन करने के जो नियम पार्लामेण्ट ने बनाये हैं वे रद्द होने चाहियें।

(४) व्यापार-रोजगार के विषय में जो नियम प्रतिबन्धक स्वरूप हैं वे रद्द होने चाहियें।

(५) नौका सम्बन्धी नियमो में कुछ उलट फेर होना चाहिये।

फ्रेंकलिन ने लिखा कि इस प्रकार का सुधार हो जाने पर एकत्रित होने का विचार करो तो कोई हानि नहीं। तो भी मेरा व्यक्तिगत अभिप्राय तो ऐसा है कि ग्रेट ब्रिटेन के साथ इस समय की अपेक्षा अधिक संबध हो जाने पर अमेरिका को कोई लाभ नहीं होने का।

एक वर्ष पूर्व ही फ्रेंकलिन यह भविष्यवाणी कह चुका था कि संस्थानों के सम्बन्ध मे यदि प्रधान मण्डल अपना अडगा लगाये ही रक्खेगा तो दोनो देशों में अवश्य ही युद्ध होगा और अमेरिका स्वतत्र होकर इंग्लैण्ड से पृथक् हो जायगा। ऐसा प्रसंग न आवे इसके लिये प्रधानो की राजनीति बदलने को फ्रेंकलिन से जो कुछ बन पड़ता, करता। लिबरल पक्ष के कुछ ऐसे सभासद् जो फ्रेंकलिन के जैसे ही विचार वाले थे उनको यह बात मालूम थी इस लिये वे उससे सम्मति लेते और जो कुछ बन पड़ता सहायता करते थे। इग्लैण्ड की सरकार की

नीति को नापसन्द करने वाले ऐसे वीर पुरुषों में से लार्ड चेथाम भी एक था। फ्रैंकलिन की भाँति उसका भी विश्वास था कि यदि इङ्गलैण्ड अपनी हठ न छोड़ेगा तो संस्थानों को खो बैठेगा। इस कारण ऐसा अवसर न आने देने को प्रधानों के विचारों में परिवर्तन करने के लिये उसने पार्लामेण्ट में जितना हो सके प्रयत्न करने का निश्चय किया। अगस्त सन् १७७४ में फ्रैंकलिन केप्टिन मि० सारजेण्ट के यहाँ गया। उस समय लार्ड चेथाम की ओर से उसके पास पत्र आया कि मेरा निवासस्थान, हेइज्, तुम आये हो वहाँ से कुछ दूर है। अतः कृपा करके मेरे घर पर अवश्य आना। दूसरे दिन लार्ड चेथाम की ओर से लार्ड स्टेन होप आया और उस को हेईज् ले गया'।

वहाँ स्वाभाविक रीति से अमेरिका के सम्बन्ध में चर्चा उठी। लार्ड चेथाम बोला कि मसाच्युसेट्स के लिये हाल ही में कुछ कठोर नियम जारी हुए हैं उनको मैं नापसन्द करता हूँ। इन परगनों के निवासियों के प्रति मेरी पूरी सहानुभूति है। मुझे आशा है कि, ये लोग साहस न छोड़कर अपने अधिकारों को बनाये रखने के विचार से एकत्र रह कर लड़ाई छेड़ेंगे। इस पर फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया कि मेरा विश्वास है कि वे दृढ़ रहेंगे। इसके पश्चात् अमेरिकनों की शिकायतों का स्वरूप, कारण, तथा पार्लामेण्ट का उनके अधिकार छीनने का प्रयत्न और नियम आदि पर वह खूब बोला। उसने यह भी कहा कि प्रधान मण्डल बिना कुछ सोचे समझे आँखें मीच कर काम कर रहा है अतः संस्थान उनका सामना किये बिना न रहेंगे। इस प्रकार फ्रैंकलिन की खुले दिल से कही हुई बातों को सुन कर लार्ड चेथाम बहुत प्रसन्न हुआ और बोला कि अवकाश मिलने पर तुम मुझ से फिर भी आकर मिलना।

संस्थानों के साथ चले हुए झगड़े का समाधान करने को प्रधान मण्डल ने गुप्त रीति से अपने कुछ जासूस फ्रेंकलिन के पास भेजे और वह यह जानने का प्रयत्न करने लगा कि इस सम्बन्ध में फ्रेंकलिन के विचार कैसे हैं।

एक दिन फ्रेंकलिन रायल सोसाइटी की एक सभा में गया था वहाँ मि० रेपर नामक एक सभासद ने मिसेज हो नामक युवती से उसका परिचय कराया और कहा कि यह तुम्हारे साथ सतरंज खेलना चाहती हैं। यह लार्ड हो की बहन थी। फ्रेंकलिन शतरंज खेलने का बड़ा शौक़ीन था और यह स्त्री एक कुलीन घराने की थी अतः उसने उसके साथ खेलना स्वीकार कर लिया। उसको स्वप्न में भी यह ध्यान न था कि इससे मेरा परिचय कराने में खेलने के अतिरिक्त और भी कोई रहस्य है। एक दिन निश्चित समय पर वह उसके घर पर खेलने को गया और २-१ बाजी खेल कर फिर खेलने आने का वचन देकर वापिस आया।

अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार कुछ दिन के पश्चात् वह फिर गया और पहिले की भाँति खेला। खेल की समाप्ति पर लार्ड हो की बहन ने गणित पर कुछ चर्चा छेड़ी, गणित पर चली हुई चर्चा राजनीति की ओर आ गई और उसने राजकीय बातों पर बातचीत करते हुए पूछा कि "ग्रेट ब्रिटेन और संस्थानों में जो झगड़ा चल रहा है उसके लिये क्या करने का विचार है? मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि कदाचित् युद्ध तो न होगा।"

फ्रेंकलिनः—"मेरी सम्मति में एक दूसरे को परस्पर मिल कर प्रेम-सम्बन्ध कर लेना चाहिये। क्योंकि युद्ध से किसी को लाभ न होने का—दोनों की हानि होगी।"

मिसेज हो:—मैं तो यही कहूंगी कि इस झगड़े को निपटाने के लिये मध्यस्थ की भाँति सरकार तुम्हें रक्खे तो बहुत अच्छा हो। जैसा अच्छा काम तुम कर सकोगे वैसा और किसी से न हो सकेगा। तुम जानते नहीं कि क्या यह और किसी से होने जैसा है?"

फ्रेंकलिन:—"निस्सन्देह, हो सकता है। किन्तु, दोनों पक्ष वाले समाधान होने को अच्छा समझते हों तब। वैसे झगड़े की कोई खास बात है भी नहीं। दो चार समझदार आदमी आधे घण्टे में निपटा दें ऐसी कुछ छोटी २ बातें हैं। मेरे विषय में तुम्हारा मत अच्छा है इसके लिए मैं तुम्हारा उपकार मानता हूं। किन्तु, ऐसे अच्छे काम में प्रधान लोग मुझे डालें यह कभी सम्भव नहीं। वे तो मुझे गालियाँ देना ही अच्छा समझते हैं और इसी योग्य मानते हैं।"

मिसेज हो:—"इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप के साथ उन्होंने ऐसा बर्ताव किया है जो सर्वथा लज्जास्पद है। किन्तु, इसका उन्हें दुःख है और अब वे इसके लिये खेद प्रगट करते हैं।"

यह बात प्रसंग आ जाने पर चलाई गई थी अतः फ्रेंकलिन को कुछ सन्देह नहीं हुआ। इस के पश्चात् मिसेज हो के आग्रह पूर्वक यह कहने पर कि फिर भी अवश्य आइयेगा फ्रेंकलिन ने पुनः आने का वचन दिया।

इन्हीं दिनों में डाक्टर फोधरगील और डेविड बार्कलि भी उसके पास आये और कहने लगे कि.—"संस्थानों के झगडे ने

बड़ा भीषण रूप धारण कर लिया है अतः यदि आप कृपा करके कोई समाधान हो जाने की युक्ति बतावें तो अच्छा हो। यह कार्य आप के सिवाय और किसी से न होने का। सच पूछिये तो यह आप का कर्त्तव्य भी है कि समाधान करावें। इस पर फ्रेंकलिन ने उत्तर दिया:—"यह नहीं मालूम होता कि प्रधानों की इच्छा समाधान करने की है और मुझ से तो जो कुछ अब तक बन पड़ा अच्छा ही किया है किंतु, प्रधानों ने उसको न मानकर उल्टे ऐसे काम किये हैं जिनके कारण सस्थान और भी उत्तेजित हों"। इस पर उपर्युक्त दोनों व्यक्ति बोले कि:—"आप विश्वास रखिये कि प्रधानों की इच्छा कदापि ऐसी नहीं है कि झगड़ा बढ़ाया जाय। वे अब जल्दी से जल्दी समाधान हो जाने के इच्छुक हैं और इसकी पूर्ति हो जायगी ऐसा आप की ओर से सन्तोष जनक उत्तर मिल जाने पर वे आप की शर्तों को सहर्ष अंगीकार करेंगे। इस पर विचार करके आप जो कुछ चाहते हों और जिनको संस्थान स्वीकार करलें ऐसी शर्तें आप हमें लिख दीजिये।" इस के पश्चात् कुछ देर तक टालटूल करके फ्रेंकलिन ने एक मसौदा तय्यार करके देना स्वीकार कर लिया और कुछ दिन के पश्चात् उसको देखने के लिये आने की उनको सूचना दे दी।

यथा समय फ्रेंकलिन ने १७ बातों का एक मसौदा तैयार किया जिसमें अमेरिकनों की सब शिकायतें और उनको दूर करने के उपाय बताये। अपने इस मसौदे में उसने स्वीकार किया कि बोस्टन नगर में जो चाय की खेती नष्ट हुई है उसकी क्षति पूर्ति इंग्लैण्ड को करनी चाहिये। किंतु, पार्लामेण्ट का जारी किया हुआ चाय विषयक ज़क़ात क़ानून और मसाच्युसेट्स के विरुद्ध जारी किये हुए दूसरे क़ानून रद्द कर देने की इच्छा प्रगट की। इसके अतिरिक्त यह भी कि सब प्रकार के क़ानून संस्थानो की

नियामक मण्डली की ओर से जारी होने चाहियें और शान्ति के समय संस्थानों से किसी प्रकार की सहायता न माँगनी चाहिये तथा संस्थानों की नियामक मण्डली की सम्मति के बिना उनमें फ़ौज न भेजनी चाहिये और न्यायाधीश, गवर्नर आदि अधिकारियों का वेतन नियामक मण्डली द्वारा दिया जाना चाहिये। उनको उसी समय तक अपने पद पर रक्खा जाय जब तक वे सच्चाई और ईमान्दारी से काम करें।

डाक्टर फ़ोथरगिल और मि० बार्कले आये तब फ्रेंकलिन ने उनको अपना तैयार किया हुआ मसौदा दिखाया और उसमें की प्रत्येक बात को व्याख्या करके समझाया। उन्होंने बहुत सी बातें पसन्द न कीं। किंतु, फिर भी इस पर कुछ विचार हो सकता है या नहीं यह देखने को वह मसौदा प्रधान को दिखाने के लिये उन्होंने फ्रेंकलिन से आज्ञा माँगी। इस पर फ्रेंकलिन के यह कहने पर कि इसे तुम्हारी इच्छा हो उसको दिखा सकते हो, मि० बार्कलि ने अपने हाथ से उसकी दो प्रतिलिपियाँ करलीं।

मिसेज हो को वचन देने के अनुसार अब फ्रेंकलिन के वहाँ जाने का समय आया। वह गया और जैसे ही उसने उसके घर में प्रवेश किया, मिसेज हो ने कहा कि मेरा भाई तुमसे मिलना चाहता है। यदि कहो तो उसे बुलाऊँ। फ्रेंकलिन ने बड़ी प्रसन्नता से यह स्वीकार कर लिया इस पर एक आदमी दौड़ा हुआ गया और लार्ड हो को बुला लाया। उसने आकर फ्रेंकलिन का बहुत गुणगान किया और कहा कि तुम से मिलने का मेरा यही उद्देश्य है कि अमेरिकनों की जो दशा हुई है वह तुम्हें विदित ही है अतः इस झगड़े का अन्त किस प्रकार हो सकता है, यह मैं तुम से जानना चाहता हूँ। इसके पश्चात् दोनों में इस विषय पर बड़ी

देर तक बातें होती रहीं। अन्त में लार्ड हो ने कहा कि तुम अपने विचार किसी काग़ज़ पर लिख कर मुझे दो तो हम जब पुनः मिलेंगे तब इस पर विचार करेंगे। इस पर उसने अपने सब विचार कुछ दिन पश्चात् लिपिबद्ध करके देने के लिये फ्रेंकलिन को वचन दिया।

कांग्रेस की ओर से जो काग़ज़ पत्र आते थे उन सब को फ्रेंकलिन लार्ड चेथाम को दिखाया करता था। कांग्रेस के काम की ओर यह महान् पुरुष बड़ी सहानुभूति दिखाता था। वह अमेरिका का अन्तःकरण से भला चाहता था। कुछ समय के पश्चात् जब वह अमेरिका विषयक एक प्रार्थना पत्र पार्लामेण्ट में पेश करने वाला था तो उस समय उपस्थित रहने के लिये उसने फ्रेंकलिन को सूचना भेजी।

निश्चित् समय से कुछ पहिले फ्रेंकलिन लार्ड हो के पास गया। किंतु, अपने विचारों को लिपिबद्ध करके जो काग़ज़ वह फ्रेंकलिन को देना चाहता था उसको अभी तैयार न कर पाया था। फ्रेंकलिन ने कहा कि सेनापति की हैसियत से उसे अमेरिका भेजने की चर्चा चल रही है। इस पर लार्ड हो ने कहा कि, इसके बदले मुझे, वहाँ समाधान करने को भेजें तो अधिक उत्तम हो। बार्कली की की हुई फ्रेंकलिन के मसौदे की नक़लें पीछे से उसने अपनी जेब में से निकाल कर कहा कि इसमें की शर्त्तें ऐसी कड़ी हैं कि पार्लामेण्ट उन्हें कभी स्वीकार न करेगी। यदि तुम इन शर्त्तों को ज़रा सुविधा जनक कर दो तो अच्छा हो। इस पर फ्रेंकलिन ने कहा कि मैंने पहिले जो कुछ लिखा है सब बहुत सोच विचार के पश्चात् लिखा है अतः खेद है, मैं इसमें कोई परिवर्तन न कर सकूँगा। इतने पर भी लार्ड हो को बुरा न लगे इस विचार से,

उसने दूसरा मसौदा बना देना स्वीकार कर लिया। कांग्रेस की राजा से की हुई प्रार्थना पर से फ्रेंकलिन ने दूसरा मसौदा तैयार करके लार्ड हो को भेज दिया और फिर ये दोनों मसौदे लार्ड हो ने प्रधान तथा दूसरे उच्च पदाधिकारियों को दिखलाये।

इसके कुछ दिन पश्चात् फ्रेंकलिन को ऐसा समाचार मिला कि लार्ड चेथाम पार्लामेण्ट में एक प्रार्थना पेश करने वाला है और वह चाहता है कि जिस दिन वह उस को पेश करे फ्रेंकलिन भी वहीं उपस्थित रहे। पार्लामेण्ट में सरदार अथवा बड़े आदमियों के अतिरिक्त सब का प्रवेश निषेध था। किन्तु, फ्रेंकलिन को लार्ड स्टेन्होप ने अपने साथ ले जाकर वहां प्रविष्ट करा दिया। बोस्टन से फौज पीछे बुला लेने को लार्ड चेथाम ने प्रार्थना की। लार्ड चेथाम और उसको सहायता देने वाले लार्ड केम्ड के दिये हुए भाषणों में अमेरिकनों के पक्ष में अच्छे २ विचार प्रगट किये गये थे किन्तु, फिर भी यह प्रार्थना बहुसम्मति से व्यर्थ होगई। अमेरिका के साथ समाधान करने को चेथाम के मन में जो विचार थे उन्हें उस ने लिख कर फ्रेंकलिन को दिये और कहा कि इसी अभिप्राय का एक मसौदा मैं भी पार्लामेण्ट में पेश करने वाला हूँ। ये विचार ठीक थे, किन्तु, इस पर से फ्रेंकलिन को यह विश्वास नहीं हुआ कि इन के कारण संस्थानों को सन्तोष हो जायगा। लार्ड चेथाम ने कहा कि यह ठीक है, किन्तु, इस समय जब पार्लामेण्ट और संस्थानों दोनों ने हठ पकड़ रक्खा है तो इस दशा में बीच के मार्ग का अवलम्बन किये बिना समाधान न हो सकेगा, शेष जो कुछ रहेगा सो पीछे से देखा जायगा। सन् १७७५ के फरवरी मास की पहिली तारीख को लार्ड चेथाम ने अपना मसौदा पेश किया और उस को स्वीकृत कराने के लिये उसी समय उस ने पार्लामेण्ट में एक प्रभावशाली भाषण देकर

कई दलीलें कीं; किन्तु, उस का कुछ फल न हुआ क्योंकि प्रधान और उनके पक्ष वालों ने उसके विरुद्ध कई बातें कही। अन्त में बहुमत से वह मसौदा अस्वीकृत हुआ। यह मसौदा पेश हुआ उस समय भी लार्ड स्टेन्होप की सहायता से ही फ्रेंकलिन पार्लीमेण्ट में प्रविष्ट हो सका था।

वाद विवाद के समय लार्ड सेण्डविच ने फ्रेंकलिन खड़ा था उस ओर दृष्टि फेर कर कहा कि मुझे विश्वास नहीं होता कि यह मसौदा चेथाम जैसे अंग्रेज के हाथ का है। बल्कि, मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि इस मसौदे को तय्यार करने वाला वही पहिला देश द्रोही है जो मेरे सामने खड़ा है। इस के उत्तर में चेथाम ने कहा:—"आप विश्वास रखियेगा कि यह मसौदा मेरे ही हाथ का है। आपने जिस व्यक्ति पर सन्देह किया है वह बेचारा तो अमेरिका विषयक बातों से बिल्कुल अनजान है। वह अपने ज्ञान और बुद्धि के कारण सारे यूरोप में अपने बोइल और न्यूटन के समान मान प्राप्त कर चुका है और वह न केवल अंग्रेज प्रजा ही की बल्कि सारी मनुष्य जाति की प्रत्यक्ष शोभा है। यदि इस समय मैं मुख्य प्रधान होता तो ऐसी आवश्यक समस्या के विषय में उससे सम्मति लिये बिना न रहता।"

फ्रेंकलिन की धारणा ऐसी थी कि अब मुझे समाधान के झगड़ों में न डाला जायगा। परन्तु, एक दो दिन ही के पश्चात् डाक्टर फोधरगिल और मि० बार्कली पुनः उस के पास आये और उसको एक कागज देकर कहने लगे कि एक बड़े आदमी ने तुम्हारे मसौदे में से कुछ बातो को पसन्द किया है और कुछ विवादास्पद बतलाई हैं वे तुमको इस कागज के पढ़ने पर मालूम होंगी। इस के उत्तर में फ्रेंकलिन ने थोड़े में इतना ही

कहा कि पार्लामेण्ट हमारे प्रबन्ध में हस्तक्षेप कर सकने का अधिकार चाहती है, किन्तु, यह न होने का; क्योंकि यदि हम उसे यह अधिकार दे दें तो वह उचितानुचित का विचार न करके हमारे साथ जो कुछ चाहे करेगी। प्रत्युत्तर में दोनों व्यक्ति बोले कि चाहे जैसे करके समाधान तो करना ही पड़ेगा क्योंकि उस में अमेरिका का लाभ है। यदि समाधान न हुआ तो ग्रेट ब्रिटेन अमेरिका के व्यापार-प्रधान बंदरगाहों को नष्ट भ्रष्ट कर देगा और हमें इस बात के लिये विवश करेगा कि हम उस की शरण में जाने की अपेक्षा करें। फ्रैंकलिन यह सुनते ही मारे क्रोध के लाल पीला हो गया और बोला कि "मेरे पास जो थोड़ी बहुत मिल्कियत है, वह केवल मकान ही मात्र है; यदि उन्हें आवश्यकता हो तो उसे भले ही जला दें। ऐसी मिल्कियत छीन लेने का ही भय दिखा कर यदि पार्लामेण्ट अपना अधिकार जमाना चाहती है तो उसका सामना करने में मैं पीछे पैर न रक्खूंगा। जो हम को हानि पहुँचाने की इच्छा कर रहा हो उसे पहिले अपना विचार कर लेना चाहिये।" छिपे जासूसों को भेज कर झगड़ा बढ़ाने में प्रधानों का चाहे जो अभिप्राय हो किन्तु, यह बात तो सर्वांश में सत्य है कि इतने पर भी फ्रैंकलिन अपने कर्त्तव्य पथ से तिल भर भी न डिगा। दस वर्ष से वह अमेरिका नहीं गया था। वहां जो कुछ होता था उसकी खबर उसके पास लिखी हुई ही आती थी और उसी पर से वह अटकल लगा लेता था कि मेरे देश की इस समय क्या दशा है? अमेरिका में रह कर अपनी आँखों से वहां की दशा देखने का अवसर उसे न मिला था। किंतु, अपने देश को अधिकार प्राप्त कराने के लिये वह वहां से दूर बैठा हुआ भी इस दृढ़ता से आन्दोलन कर रहा था जैसी किसी और मनुष्य से आशा नहीं की जा सकती।

इन बातों के आ उपस्थित होने से फ्रेंकलिन को अपने इरादे से अधिक समय तक इङ्गलैण्ड में रहना पड़ा। किन्तु, अब आगे व्यर्थ ही अधिक समय तक वहां ठहरना उसने ठीक न समझा। सन् १७७५ के मार्च मास की २१ वीं तारीख को वह वहाँ से चल दिया और ५ मई को फ़िलाडेल्फ़िया आन पहुँचा। अपनी यात्रा का यह समय उसने दोनों देशों में समाधान होने के लिये जो जो बातें हुई उन का वर्णन लिखने तथा समुद्र की उष्णता कैसे नापी जाती है इस का प्रयोग करने में बिताया।

प्रकरण २८ वां

अमेरिका में राजकीय हलचल ।

सन् १७७५-७६

काग्रेस का सभासद्—उसका कार्य—सैन्य रक्षा की तैयारियां—राजा की प्रार्थना—संरक्षक समिति के सभासद् की भांति फ्रेंकलिन ने पेन्सिल्वेनियां की रक्षा के लिये तय्यारियां करने में सहायता की—एकता होने की योजना—काग्रेस में की हुई सेवायें—काग्रेस की नियत की हुई कमेटी के सभासद् की हैसियत से जनरल की छावनी में केम्ब्रिज गया—विदेशों में गुप्त पत्र व्यवहार—केनेडा जाना—स्वतंत्रता की घोषणा का प्रस्ताव—कहानियाँ—पेन्सिल्वेनियां की राज्य प्रबन्ध सुधारक मण्डली का सभापति—एक नियामक मण्डली रखने के विषय में उसके विचार—लार्ड हो के साथ पत्र व्यवहार और उससे भेट—फ्रान्स के दरबार में अमेरिकन राजदूत नियुक्त हुआ—काग्रेस को रुपये दिये ।

संस्थानों की जातीय महासभा (कांग्रेस) का द्वितीय अधिवेशन १० मई को फिलाडेल्फिया में होने वाला था । अमेरिका में आने के दूसरे ही दिन उक्त महासभा के लिये पेन्सिल्वेनियां वालों ने फ्रेंकलिन को अपना प्रतिनिधि चुन लिया । इस समय

लीग्जंगटन और कोन कोर्ड वाले पहिले के युद्ध समाचारों से सारे देश में हलचल मच रही थी। इस युद्ध में अगुआ होने वाली ब्रिटिश सेना थी। न्यू इङ्गलैण्ड के कृषक इससे इतने उत्तेजित होगये कि शस्त्र ले लेकर तत्काल ही समर भूमि में जा धमके। सारा देश क्रोधाग्नि से उद्दीप्त हो उठा और एक स्वर से युद्ध की घोषणा करने लगा। कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन के समय ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका के बीच का सम्बन्ध कुछ और ही प्रकार का हो गया था। ब्रिटिश सेना ने बेचारे अमेरिकनों का रक्तपात किया था इस कारण जो थोड़े से अमेरिकन राजा के पक्ष मे होकर शांति के इच्छुक थे वे भी उकता गये। प्रत्येक विचारशील मनुष्य को स्पष्ट मालूम होगया कि अब अंतिम समय आ गया है। भावी युद्ध अनिवार्य है अतः इसमें यह निर्णय करना है कि या तो हम स्वतन्त्रता ही प्राप्त करते हैं या फिर सर्वदा को गुलामी ही में फँसते हैं। समस्त प्रजा और कांग्रेस के अधिकांश सभासदों का यही निश्चय था कि एकदम युद्ध घोषणा कर दी जाय क्योंकि बैठे रहने से तो कुछ मिल नहीं सकता। बल्कि उल्टा हम पर अधिक अत्याचार किया जाता है इस विचार के व्यक्तियों में फ्रैंकलिन सर्व प्रथम था। उस समय कुछ व्यक्ति ऐसे विचारों के भी थे जो यह समझे हुए थे कि इङ्गलैण्ड जैसे बलवान शत्रु से लड़कर कुछ भी हाथ न लगने का और कुछ ऐसे थे जो अपनी स्वार्थपरता के कारण इङ्गलैण्ड के विरुद्ध युद्ध घोषणा करने के पक्ष में थे।

कुछ दिन गरमागरम झगड़े होने के पश्चात् यह निर्णय हुआ कि पार्लामेंट ने अन्यायपूर्ण नियमों की रचना की है और उन नियमों का जबरदस्ती अमल करने के लिये ही यह युद्ध छेड़ा गया है। अतएव सस्थान निवासियों को

बचाव की तैयारी करनी चाहिये। स्वतंत्रता के उपासकों को तो यही निर्णय करना अभीष्ट था क्योंकि इसके कारण उन्हें सेना आदि जुटा कर युद्ध की तैयारी करने का अवसर मिल गया। इसमें सफलता हो जाने पर स्वतंत्रता के मित्रों ने इस पक्ष की ओर से विपक्षियों के साथ शान्ति स्थापन के अभिप्राय से इस आशय का एक प्रार्थना पत्र स्वीकार हो जाने दिया कि "ब्रिटिश राज्य न्याय प्रिय है। यदि संस्थानों की वास्तविक परिस्थिति उसे बतला दी जाय तो वह अपने विचारों को अमल में लाने के लिये हम पर सैनिक बल का प्रयोग न करेगा अतएव राजा की सेवा में दूसरी बार प्रार्थना पत्र भेजना आवश्यक है"। किंतु, एक दम युद्ध छेड़ देने के पक्षपातियों को यह विचार अच्छा नहीं मालूम हुआ। एक ओर हथियार उठाने का प्रस्ताव, और दूसरी ओर शान्ति की आकांक्षा, ये दोनों ऐसी विरुद्ध बातें थीं जिससे इस पक्ष ने यह समझ लिया था कि इस प्रार्थना पर विचार होना असम्भव है। फिर भी प्रार्थना करने में उन्होंने कोई हानि न समझी क्योंकि ऐसा करने से युद्ध की तय्यारियों को बन्द कर देने का तो कोई कारण था ही नहीं। इस पक्ष की ऐसी धारणा थी कि जिस प्रकार पहली अर्ज़ी रद्दी में फेंक दी गई थी उसी तरह यह भी फेंक दी जायगी। किंतु, फिर भी बहु सम्मति से इस अर्ज़ी का भेजा जाना निश्चित होगया। यद्यपि यह सब जान गये थे कि पहली अर्जी अस्वीकृत होने पर दूसरी भेजना अपना अपमान करवाना है; किंतु, यह सोच कर कि जहाँ तक हो सके झगड़ा शान्ति से निमट जाय तो अच्छा है उन्होने ब्रिटेन के सामने फिर झुक जाने में कोई बुराई न समझी।

अर्ज़ी का मसौदा तय्यार करने वाली समिति में फ्रैंकलिन भी था। इस से यह प्रतीत होता है कि वह प्रार्थना भेजने के

विरुद्ध था। किंतु, उसके पक्ष में था ऐसा कहने का भी कोई प्रमाण नहीं मिलता। उसने उस समय अपने एक मित्र को लिखा था कि:—"संस्थानों के साथ मैत्री-भाव बना रहे इसके लिये ग्रेट ब्रिटेन को एक और अवसर देने के लिये सरकार के पास दूसरी बार नम्रता भरी प्रार्थना भेजी जाने का प्रस्ताव बड़ी कठिनाई से स्वीकृत हो पाया है। किंतु, वह इस अवसर का सदुपयोग करेगा ऐसा मुझे नहीं जँचता। अतः मैं तो यही मानता हूँ कि अब उसके हाथ से ये संस्थान निकल जाने के समान ही हैं"।

जॉन डिकिन्सन इस प्रार्थना पत्र को भेजने का प्रबल पक्षपाती था। इसने देश की ऐसी सेवा की थी कि उसको प्रोत्साहित करने के लिये ही प्रार्थना पत्र भेजने का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया था। वह पत्र बहुत ही नम्र शब्दों में लिखा गया था और जैसे ही वह स्वीकृत हुआ डिकिन्सन ने प्रसन्न होकर कहा कि:— "सभापति महोदय! इस प्रार्थना पत्र में केवल एक ही शब्द ऐसा है जिसे मैं पसन्द नहीं करता हूँ और वह है 'कांग्रेस'।" इसे सुन कर वर्जीनियाँ का सभासद् मि० हेरिस बोला कि:— "महाशय, इस अर्जी में केवल एक ही शब्द ऐसा है जिसे मैं पसन्द करता हूँ और वह है 'कांग्रेस'।"

फ्रेंकलिन को कांग्रेस के काम के अतिरिक्त पेन्सिल्वेनियाँ की नियामक मण्डली द्वारा निर्धारित संरक्षण-कमेटी के सभापति की हैसियत से अन्यान्य कार्यों में भी कड़ा परिश्रम करना पड़ता था। इस कमेटी में पचीस सदस्य थे। सिबंदी के सैनिकों की जब २ आवश्यकता हो तब उन्हें शीघ्र ही एकत्रित करना, उनका वेतन चुकाना, खुराक देना तथा परगने की रक्षा के लिये आवश्यक साधन जुटाना और सब प्रकार की समुचित व्यवस्था

रखना; ये कार्य इसी कमेटी के सुपुर्द किये गये थे और इनमे व्यय करने के लिये ३५ हज़ार पौण्ड की रक़म इसको दी गई थी। इसका कार्य्य बड़ा उत्तरदायित्वपूर्ण और श्रम-साध्य था। फ्रैंकलिन ने लगातार आठ मास तक जी तोड़ परिश्रम किया। प्रातःकाल के ६ बजे से ९ बजे तक वह इस कमेटी में कार्य करता और फिर कांग्रेस में जाता। वहाँ बराबर सन्ध्या के ४ बजे तक कार्य करता रहता। संरक्षण कमेटी का मुख्य कार्य नगर की रक्षा करना था।

डिलावर नदी में लड़ाई के जहाज़ तय्यार रखना तथा वैरियों के आक्रमण रोकने के लिये अन्य सुव्यवस्था आदि कार्य कमेटी ने बड़ी शीघ्रता से समाप्त कर डाले। ये कार्य इस खूबी से किये गये थे कि ब्रेंडिवाइन की लड़ाई के पश्चात् जब शत्रु ने वहाँ चढ़ाई की तो उसे दो मास तक दूर ही दूर रहना पड़ा।

इस भाँति उस समय फ्रैंकलिन अनेक-कार्यों में संलग्न था। इसी बीच उसने संस्थानों के एकीकरण की योजना का मार्ग ढूंढ़ निकाला और २१ जुलाई को अपनी योजना कांग्रेस के सामने रख दी। उस समय तो यह योजना कार्य रूप में परिणत न हुई क्योंकि अनेक मनुष्यों की ऐसी धारणा हो रही थी कि अभी एकता-स्थापन का समय नहीं आया है। किंतु, आगे चल कर समय ने दिखा दिया कि फ्रैंकलिन की योजना बड़ी उपयोगी है। जो योजना अन्त में स्वीकृत हुई उसमें और फ्रैंकलिन की योजना में अन्तर होते हुए भी वह अमेरिका की तत्कालीन शासन प्रणाली से बहुत कुछ मिलती हुई थी। प्रत्येक संस्थान में १६ से ६० वर्ष की तक आयु के मनुष्यों पर कर लगाना, कांग्रेस में सभासद् भेजना और प्रत्येक सभासद् का एक मत रहना अभीष्ट था। इस योजना की सब बातों को देखते हुए ऐसा विदित होता

था कि उसका इतना प्रभाव होने वाला है मानों संस्थानों ने स्वतंत्रता की घोषणा करदी हो।

ब्रिटिश सरकार ने डाक-विभाग सम्बन्धी जो व्यवस्था की थी वह इस समय होने वाली हलचल और गड़बड़ में टूट गई। अतः कांग्रेस ने फिर से नई व्यवस्था की और एक हज़ार डालर वार्षिक वेतन पर फ्रैंकलिन को पोस्ट मास्टर जनरल नियुक्त कर दिया। काम यह सुपुर्द हुआ कि जहाँ आवश्यकता हो वहाँ नये डाकघर खोल कर उनकी व्यवस्था के लिये अपेक्षित कर्मचारियों की नियुक्ति करना।

कुछ मास तक कांग्रेस में सैनिक व्यवस्था सम्बन्धी विचार होता रहा क्योंकि यह एक आवश्यक और मुख्य कार्य था। भिन्न २ विषयों पर विचार करने को पृथक् २ कमेटियाँ नियत की गई थीं। फ्रैंकलिन वृद्ध हो गया था और उसके सिर पर अनेक उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य थे किंतु, फिर भी वह और कितनी ही सभा समितियों का सभासद् था और उन सभी में एक युवा पुरुष की भाँति फुर्ती और तेज़ी से काम करता था। वह बारूद गोली और लड़ाई के हथियार बनवाने वाली एक गुप्त कमेटी का भी सभासद् था। उस समय इस कार्य्य के लिये अमेरिका में बहुत थोड़े साधन थे। इसने उस कमेटी में रह कर विदेशी व्यापारियों से कुछ ऐसी गुप्त प्रतिज्ञाएं कीं, जिससे इंग्लैण्ड की सरकार यह न जानने पावे कि इसने बारूद गोली मँगवाने की कोई व्यवस्था की है। इसके साथ ही उसने इसके बदले में अपने यहाँ से तम्बाकू तथा दूसरा माल भेजना प्रारम्भ कर दिया।

कांग्रेस ने सब से पहिले तो सैनिक व्यवस्था की, फिर सेनापति और दूसरे अधिकारियों की नियुक्ति की। इनसे निवृत्त हो जाने पर कर सम्बन्धी विचार होने लगा। इसके लिये उन्होंने दो

लाख डालर के चलनी नोट निकाले। जनरल वाशिंग्टन के सेनापति का पद ग्रहण करने से पहिले बोस्टन के आक्रमण के लिये कांग्रेस के नियत किये हुए सैनिकों की अवधि समाप्त होने को आई तब नई सेना तैयार करने का कार्य्य नये सेनापति पर आया इस कार्य में उसकी सहायता के लिये कांग्रेस ने डाक्टर फ्रैंकलिन, टामस लिन्च और बेन्जामिन हेरिसन को सेनापति के पास भेजा इन्होंने कुछ दिन वहाँ रह कर सेनापति से सलाह करके ऐसी योजना की कि वह प्रसन्न होगया और सोचा हुआ कार्य पूर्ण हुआ।

सेना सम्बन्धी विचार पूर्ण हो जाने पर कांग्रेस ने अन्य राष्ट्रों के साथ संधि करने की ओर लक्ष दिया। इंग्लैण्ड, आयर्लैण्ड और यूरोप के अन्य राज्यों के ऐसे अधिवासियों के साथ जो अमेरिका के प्रति सहानुभूति रखते थे गुप्त पत्र व्यवहार करने और मित्रता बढ़ाने के लिये १७ नवम्बर को एक कमेटी नियत की गई। यूरोप में रह कर उपार्जन किया हुआ फ्रैंकलिन का ज्ञान इसमें बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ। उसने विदेश के अनेक विश्वसनीय पुरुषों से यह जानने के लिये पत्र व्यवहार करना आरम्भ किया कि उन देशों में अमेरिका की वर्त्तमान हलचल के विषय में लोगों के क्या विचार हैं। किसका रूख अमेरिका की ओर है और किससे समय आने पर सहायता मिल सकती है। हालैण्ड के मि० डुमास नामक व्यक्ति से फ्रैंकलिन का अच्छा परिचय था और डुमास की अनेक देशों के राजदूतों से जो उसके देश में थे, गहरी मित्रता थी। इस कारण, इसके द्वारा विभिन्न देशों का रूख जानने के लिये फ्रैंकलिन ने इसके साथ पत्र व्यवहार आरम्भ किया और अमेरिका के साथ अन्य देशों की सहानुभूति एवम् सहायता करवाने के लिये उसको गुप्त रीति से अमेरिका में नौकर रखने का अभिवचन दिया। लन्दन में रहने वाले आर्थरली

नामक व्यक्ति को भी उसने इसी आशय का एक पत्र लिखा और फ्रांस के डाक्टर डुबर्ग को भी इसके लिये प्रयत्न करने की सूचना दी। इन पत्रों को पहुँचाने के लिये खास प्रबन्ध किया गया था क्योंकि डाक द्वारा भेजे जाने में इस गुप्त कार्यवाही के रहस्योद्घाटन की सम्भावना थी।

डुमास, ली, तथा डुबर्ग को लिखे हुए पत्रों के उत्तर आने से पूर्व ही गुप्त पत्र व्यवहार कमेटी ने फ्रांस के साथ प्रतिज्ञा-बद्ध होकर उसकी सहायता प्राप्त करने को एक प्रतिनिधि भेजने का प्रस्ताव पास किया और इसके लिये 'सिलास डीन' नामक एक चतुर राजदूत नियत किया गया। वहाँ जाकर इसे क्या २ करना होगा यह सब क्रम बद्ध रूप से लिख कर फ्रेंकलिन ने उसे दे दिया और अपने मित्रों से परिचय करवाने को कुछ पत्र भी लिख दिये। मुख्य बातें ये थीं:—

(१) उसे फ्रांस में व्यापारी बन कर रहना चाहिये और कुछ माल खरीदना चाहिये।

(२) अमेरिकन मित्रों के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध रखना चाहिये।

(३) जब फ्रांस के प्रधान सचिव से भेट करने का समय आवे तब उसे यह कहना चाहिये कि कांग्रेस के लिये, आवश्यकता होने पर वहाँ युद्धोपकरण नहीं मिलता है अतः यूरोप के किसी भी देश के द्वारा उसे प्राप्त करने के लिये मुझे भेजा गया है। कांग्रेस अन्य देशों की अपेक्षा फ्रांस की मैत्री स्थापित रखने की अधिक इच्छुक है इसी से मैं यहाँ आया हूँ। अमेरिकन संस्थान जैसे स्वतन्त्रता के लिये लड़ने वाले देश की सहायता करने के कारण फ्रांस से आपकी मित्रता बढ़ेगी और साथ ही व्यापार से भी अधिक लाभ होगा। मुझे

पच्चीस हज़ार सैनिकों के लिये शस्त्र और वस्त्र मिलने चाहियें। इनका मूल्य व्यापार प्रारम्भ होने पर कांग्रेस देगी।

माल खरीदने के लिये डीन को रुपयों की आवश्यकता थी अतएव कांग्रेस ने चालीस हज़ार पौण्ड मूल्य की तम्बाकू और चाँवल उसकी रवानगी से पहिले ही रवाना कर दिये। डीन जिस कार्य्य के लिये भेजा गया था वह कार्य पूर्ण रूप से गुप्त रखा गया था और यह निर्णय कर लिया था कि डीन अपना कल्पित नाम "टिमोथी जान्स" रख कर व्यापारिक पत्र व्यवहार करे। अस्तु।

सब प्रकार की व्यवस्था हो जाने के पश्चात् अप्रैल में वह अमेरिका से रवाना हुआ और जून में फ्रांस आ पहुँचा। किन्तु, डीन के रवाना करने पर यह बात अधिक काल तक गुप्त न रह सकी। उसके फ्रांस में जाने के थोड़े ही दिनों बाद यह खबर सवत्र फैल गई कि डीन अमेरिकन कांग्रेस की ओर से एलची (राजदूत) बन कर यहाँ आया है।

कांग्रेस की गुप्त समिति जब इस प्रकार डीन इत्यादि को अन्य देशों में भेजने के कार्य में संलग्न थी उस समय सर्व साधारण का ध्यान केनेडा की ओर लगा हुआ था। झगड़ा आरम्भ होते ही अमेरिका ने केनेडा को लालच देकर अपने साथ करने का भरसक प्रयत्न किया था और आशा थी कि वह इन लोगों के साथ हो जायगा किन्तु, आगे चल कर यह आशा निराशा में परिणत हो गई—केनेडा ने अमेरिका के संयुक्त राज्य का साथ नहीं दिया क्योंकि केनेडा निवासियों से समय २ पर अंग्रेज संस्थानों का झगड़ा होता रहता था और देशाभिमान तथा धर्म परायणता के कारण दोनों में परस्पर मन मुटाव हो गया था। युद्धारम्भ होने के एक वर्ष तक संस्थानिकों की सेना केनेडा में थी

उस समय केनेडा निवासियों का एक भाग अमेरिका के पक्ष में था जो धीरे २ घट कर अन्त में निःशेष हो गया।

क्विबेक के सम्मुख माण्टगोमरी के हारते ही केनेडा का रुख अमेरिका की ओर से बदल गया। उसी समय इंग्लैण्ड से नई सेना अमेरिका में आ धमकी। ऐसी आशंका होने लगी कि वह अमेरिकन सेना को पराजित करके उस का समूल विनाश कर डालेगी। अतएव अमेरिकन कांग्रेस ने डाक्टर फ्रेंकलिन, सेमुएल चेज और चार्ल्स केरोल को अपने कमिश्नर नियत करके केनेडा में इस अभिप्राय से भेजा कि जिस से राज्य प्रबन्ध निश्चित होकर सेना सम्बन्धी व्यवस्था की जा सके।

ये लोग सन् १७७६ के मार्च मास की २०वीं तारीख को फ़िलाडेल्फ़िया से रवाना हुए किंतु, मार्ग ठीक न होने से अप्रैल मास के अन्त में वे मोंटरियल पहुँचे। रास्ते की ख़राबी से उन्हें इस यात्रा से बड़े कष्ट उठाने पड़े, किंतु फिर भी कुछ फल न हुआ। ब्रिटेन की सेना के सम्मुख अमेरिकन सैन्य बिल्कुल थोड़ी थी और क्विबेक की पराजय के पश्चात् इसका क़दम पीछे हटने लग गया था अतः यह सम्भव न था कि इस विपन्नावस्था में केनेडा उसका साथ देकर स्वयं विपत्ति में पड़ेगा। इस यात्रा में होने वाले कष्ट और साथ ही अपने कार्य की असफलता के कारण फ्रेंकलिन का शरीर बहुत जर्जर होगया था। मोंटरियल में पन्द्रह दिन ठहर कर वह वहाँ से वापस लौटा और जून मास में फ़िलाडेल्फ़िया पहुँच गया वहाँ पहुँचते ही उसने अपने पद का त्याग पत्र भेज दिया क्योंकि शरीर की अस्वस्थता के कारण उसे कितने दिनों तक अनुपस्थित रहना होगा इसका कुछ निश्चय नहीं था, और यह उसकी आदत में न था कि कार्य भार सिर पर

लेकर उसे पूर्ण रूप से न करना। इस कार्य भार से मुक्त होकर जब वह घर आया तब उसको कांग्रेस के कार्य्यों पर पूर्ण रूप से मनन करने का अवसर मिला।

इस समय कांग्रेस के सम्मुख एक अत्यन्त प्रयोजनीय प्रश्न उपस्थित था। समाचार पत्रों, सार्वजनिक भाषणों और सर्व साधारण में इस आन्दोलन की पूर्ण रूप से चर्चा हो रही थी कि इंग्लैण्ड के अन्यायपूर्ण पराधीनता के जूए को अमेरिका किस प्रकार एकदम उतार कर फेंक सकता है। प्रजा का अधिकांश भाग स्वतंत्रता प्राप्त करने को आतुर हो रहा था।

वर्जीनियाँ की राजनैतिक परिषद् ने यह प्रश्न कांग्रेस में उठाने के लिये अपने प्रतिनिधियों को लिखा। इस समाचार को पाकर उक्त परिषद् के प्रतिनिधि मिस्टर रिचर्ड हेनरी ली ने कांग्रेस में एक प्रार्थना पत्र भेजा जिस का आशय यह था कि अमेरिका को इंग्लैण्ड के फौलादी पंजे से पूर्ण स्वतंत्र कर दिया जाय। इस पर कांग्रेस में बड़ा वाद विवाद हुआ और मुख्य २ सभासदों ने अपने २ विचार प्रकाशित किये। अनेकों का इस विषय में यह मत था कि स्वतंत्रता प्राप्त किये बिना अमेरिका सुखी नहीं हो सकता और कुछ लोग यह समझ रहे थे कि अभी ऐसा करने का समय नहीं आया है। इस विरोधी दल का मुखिया जॉन डिकिन्सन था। उसकी उक्तियों का जॉन आडम्स तथा अन्यान्य लोगों ने बड़ा युक्ति युक्त खण्डन किया। इस पर प्रार्थना पत्र स्वीकृत हो गया। अन्त में स्वतन्त्रता का विज्ञापन तय्यार करने के लिये जेफ़रसन, आडम्स, फ्रैंकलिन, शरमन और विलिंग्टन इन पाँच व्यक्तियों की एक कमेटी नियत की गई। जेफरसन ने विज्ञापन लिख कर तय्यार कर डाला और फ्रैंकलिन तथा

आडम्स ने थोड़ा सा सुधार करके उसे स्वीकृति के लिये कांग्रेस में भेज दिया। इस पर लगातार तीन दिन तक वाद विवाद होता रहा और ४ जौलाई को वह स्वीकृत हो गया। उस दिन से यह प्रसिद्ध कर दिया गया कि "युनाइटेड स्टेट्स (संयुक्त राज्य) संयुक्त प्रजा है।"

जेफ़रसन फ्रेंकलिन के विषय में इस से सम्बन्ध रखने वाली एक बात लिख गया है कि मेरे तय्यार किये हुए मस्विदे के पढ़े जाने पर उपस्थित सभासदों में तद्विषयक बातचीत होने लगी। उस पर खूब वाद विवाद तथा अनेक प्रकार की आलोचना प्रत्यालोचना हुई और रद्दोबदल होकर ऐसी काट छाँट होने लगी कि उस का असली स्वरूप भी एकदम नष्ट होजाने की आशका होने लगी। उस समय मैं फ्रेंकलिन के निकट बैठा था। वह समझ गया कि अपने तैयार किये हुए मस्विदे में काट छाँट होते देख कर मुझे दुःख हो रहा है इस पर वह मुझ से कहने लगा कि यदि सभा समितियों में विवादास्पद विषयों पर कोई मस्विदा तय्यार करना पड़े तो मैं यथा सम्भव इस भार को अपने ऊपर कभी न लूंगा। मुझे इस विषय में जो अनुभव हुआ है उसे कहता हूँ:—

"जिस समय मैं साइन बोर्ड लिखने का काम करता था उसी समय मेरा एक मित्र टोपियाँ बनाकर बेचने के काम में लगा हुआ था। उसने इस आशय का साइन बोर्ड बनवाना चाहा कि "जान टाम्सन, टोपियाँ बनाने वाला, टोपियाँ बनाता है और नक़द मूल्य लेकर बेचता है।" उसने ये शब्द लिखवा कर इसके साथ टोपी की तस्वीर भी देनी चाही और अपने अन्य मित्रों को दिखा कर उन से सम्मति ली। उसे देख कर एक ने कहा कि

"टोपियाँ बनाने वाला" ये शब्द व्यर्थ हैं क्योंकि उन के पश्चात् ही यह लिखा हुआ है कि "टोपियाँ बनाता है"। इस से यह बात सिद्ध हो गई कि तुम टोपियाँ बनाने वाले हो। इस की सम्मति के अनुसार उक्त शब्द काट दिये गये। दूसरा बोला कि "बनाता है।" इन शब्दों की भी आवश्यकता नहीं। क्योकि टोपियाँ किसने बनाई हैं यह जानने की ग्राहकों को क्या आवश्यकता होगी। यदि टोपियाँ अच्छी हुई और लोगों को पसन्द आई तो वे उन्हें अवश्य ही खरीदेंगे फिर वे चाहे किसी की बनाई हुई हों। इस सम्मति पर उस में फिर संशोधन किया गया और ये शब्द निकाल दिये गये। तीसरे व्यक्ति ने उसे देख कर कहा कि 'नक़द मूल्य" ये शब्द भी निरर्थक हैं कारण कि इस गाँव में उधार बेचने की प्रणाली ही नहीं है। यह सुन कर ये शब्द भी निकाल दिये गये। अब रह गया—"जान टाम्सन टोपियाँ बेचता है।" चौथे ने उसे देख कर यह सलाह दी कि "बेचता है" ये शब्द तो बिल्कुल निष्प्रयोजनीय हैं क्योंकि तुम मुफ्त दोगे यह तो कोई न समझेगा। सभी यह जानते हैं कि तुम बेच रहे हो, फिर ये शब्द क्यों रखे जायँ। अब यह शब्द भी काट दिया गया। इतने ही में किसी ने यह सुझाया कि "टोपियाँ" शब्द तो एक दम निरर्थक प्रतीत होता है क्योंकि साइन बोर्ड पर टोपी का चित्र दिया ही हुआ है। इस पर यह शब्द भी निकाल दिया गया। अब उस के तय्यार किये हुए नमूने में केवल "जान टाम्सन" और टोपी की आकृति मात्र रह गये।"

स्वतंत्रता के प्रसिद्धि पत्र पर हस्ताक्षर करते समय कही हुई फ्रैंकलिन की एक और मज़ेदार बात कही जाती है। जिस समय हस्ताक्षर हो रहे थे उसी समय हेन कॉक बोला कि, "हम सबों को एकत्रित रहना चाहिये। विभिन्न पक्ष निर्माण करके खींचा-

तानी न करते हुए हम को एक ही पक्ष पर लटक जाना चाहिये"। इस के उत्तर में फ्रैंकलिन ने कहा कि,—"यह सच है, यदि हम सब एक पक्ष पर न लटके तो फिर एक अवसर ऐसा आयेगा कि हम पृथक् २ (फाँसी पर) लटकते हुए दिखाई देंगे।"

स्वतंत्रता की घोषणा का प्रस्ताव करने से पहिले लगभग २ मास पूर्व कांग्रेस ने सूचना दी थी कि जिन संस्थानों के राज्य प्रबन्ध में परिवर्त्तन करने की आवश्यकता हो उनको अपने प्रतिनिधियों द्वारा व्यवस्था करा लेनी चाहिये। इसके अनुसार पेन्सिल्वेनियाँ के प्रतिनिधि अपने परगने का राज्य-प्रबन्ध निर्धारित करने के लिये जुलाई मास में एकत्रित हुए। एक सभा करके उन्होंने फ्रेंकलिन को अपना सभापति बनाया और लगातार दो मास तक वहाँ इस सम्बन्ध में खूब विचार हुआ। फ्रैंकलिन को कांग्रेस में भी काम करना पड़ता था अतः वह उक्त सभा में पूर्ण रूप से योग न दे सकता था। ऐसी दशा में यह नहीं कहा जा सकता कि नया राज्य प्रबन्ध निर्धारित करने में उसने कितना भाग लिया था। किन्तु, फिर भी ऐसा अनुमान किया जाता है कि जिस तत्त्व पर वह निर्धारित हुआ था उसमें इसकी भी सम्मति थी। आगे जाकर जब इसमें परिवर्त्तन करने का विचार उठा तो फ्रेंकलिन ने इस (निर्धारित प्रबन्ध) के पक्ष में आन्दोलन चलाया था यही एक ऐसी बात है जो किसी अंश तक उपर्युक्त अनुमान की पुष्टि करती है। नये राज्य प्रबन्ध में अधिकारों के पद क्रमानुसार दिये जाने का निर्णय हुआ और मत देने का अधिकार, प्रेसों की स्वतंत्रता तथा इच्छानुसार धर्मपालन करने की स्वाधीनता के प्रति अधिक उदार भाव प्रदर्शित किये जाने का अभिवचन मिला।

इस नये राज्य प्रबन्ध में एक सबसे आवश्यक परिवर्त्तन यह किया गया कि शासन समिति की दो शाखाओं के बदले केवल एक ही रखी गई जिसको फ्रेंकलिन ने सुझाया था। पेन्सिल्वेनियाँ में जागीरदारों का अमल था तब प्रजा के प्रतिनिधियों के प्रसार किये हुए आवश्यक और उत्तम नियमों को गवर्नर तथा उसकी कौन्सिल अस्वीकार करती और उन्हें कार्य रूप में परिणत न होने देती। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड जैसे देश में भी प्रजा के प्रतिनिधियों की पसन्द की हुई बात को सरदार लोग अपने स्वार्थ के कारण कई बार अस्वीकार कर देते थे। इन दोनों पर विचार करते हुए फ्रेंकलिन ने यह सोचा कि दो पृथक् शासन समितियाँ रखने की अपेक्षा एक ही समिति में एकत्रित होकर कार्य्य किया जाय तो जनता का अधिक हित साधन हो सकता है। इसके अतिरिक्त ऐसा हो जाने से छोटी सभा और बड़ी सभा इस प्रकार के भेद भाव से प्रजा सत्तात्मक राज्य के मुख्य उद्देश्य (स्वतंत्रता और समानता) को जो एक प्रकार का धक्का लगता है, न लगेगा।

इस एक पक्षी दलील का इतना प्रभाव हुआ कि फ्रेंकलिन के सभापति की हैसियत से दिये हुए संक्षिप्त अभिभाषण को सुनकर सभा ने नये शासन-प्रबन्ध में एक सभा रखने का निश्चय किया। फ्रेंकलिन की दलील भ्रम से ख़ाली नहीं थी किन्तु, फिर भी उसके पक्ष में उसने जो दृष्टान्त दिये उनसे विदित होता है कि उसमें साधारण किन्तु, प्रभावोत्पादक दृष्टान्त देकर श्रोताओं के मन पर प्रभाव डाल सकने की अपूर्व शक्ति थी।

एक ही राज सभा रखने के विचार के विरुद्ध अनेक प्रवीण लेखकों ने अपनी २ दलीलें उठाईं। फ्रांस में टरगो और रोशेफ़ो-

कोल्ड जैसे प्रख्यात व्यक्तियों ने भी एक ही राजसभा रखने की योजना सोची थी और उसका [illegible] करके भी देखा गया था। किन्तु, परिणाम अच्छा न होने से किसी ने उसका अनुसरण न किया। अब अमेरिका का यह विचार भी भ्रान्तिपूर्ण विदित होता है।

कांग्रेस का पहिला अधिवेशन हुआ तब उसमें ऐसा प्रस्ताव हुआ था कि प्रत्येक संस्थान चाहे जितने प्रतिनिधि भेजे तब भी सब का मत एक ही समझा जायगा। किसी संस्थान के प्रतिनिनिधियों में किसी विषय पर मत भेद हो तो जिस पक्ष मे अधिक मत हो उसी के अनुरूप उस संस्थान की ओर से मत दिया जाता था। इस प्रकार छोटे बड़े प्रत्येक सस्थानों को समानरूप से एक मत देने का निश्चय हुआ था जिसको फ्रेंकलिन पसन्द न करता था। स्वतन्त्रता प्रकाशित होने के पश्चात् एकत्र हुए संस्थानो के लिये नये राज्य प्रबन्ध का मस्विदा बनाया गया उसमें भी प्रत्येक संस्थान को एक एक मत देने की प्राचीन प्रणाली क़ायम रखी गई थी। इसके विरुद्ध फ्रेंकलिन ने बड़ा आन्दोलन चलाया और यह बाधा उपस्थित की कि यह प्रणाली अनुचित है। एक एक मत की प्रणाली से छोटे बड़े सब को समान अधिकार रहता है। प्रारम्भ में यह प्रथा कदाचित् उपयोगी होगी; किन्तु, फ्रेंकलिन का ऐसा अभिप्राय था कि इस समय जब प्रत्येक सस्थान के सम्बन्ध में यह निर्णय हो सकता है कि उसमें कितनी योग्यता और महत्त्व है तो ऐसी दशा में यह प्रणाली ज्यों की त्यों बनी रखना ठीक नहीं जँचता। अपने मत पर वह इतना दृढ़ था कि पेन्सिल्वेनियाँ का राज्य प्रबन्ध निश्चित करने को एकत्रित हुई सभा में उसने प्रार्थना की कि यदि प्रत्येक संस्थानों में एक २ मत

देने की प्रथा प्रचलित न हो तो हम संस्थानों के एकीकरण में योग न देंगे।

इस अवसर पर प्रसंग को देख कर सब संस्थानों को हिल-मिल कर रहना चाहिये अन्यथा सबका नाश हो जायगा ऐसे चतुरतापूर्ण विचार से उसने अपना प्रार्थना पत्र वापिस ले लिया और उसे स्वीकृत कराने का शीघ्र ही कोई प्रयत्न नहीं किया। आगे चलकर शान्ति स्थापित होने पर नया शासन प्रबन्ध निश्चित हुआ तब उसमें फ्रैंकलिन के मतानुसार संशोधन किया गया।

उस समय लन्दन में पार्लमेन्ट का उद्घाटन करते समय राजाओं के दिये हुए भाषणों पर से विदित हुआ कि उनका ऐसा विचार है कि कुछ अधिकारियों को अपना मुखिया नियत करके अमेरिका भेजना चाहिये और उन्हें यह अधिकार देना चाहिये कि जो अमेरिकन अपने बर्ताव पर पश्चात्ताप करके राजा के आधीन होने के इच्छुक हो उनको क्षमा कर दिया जाय।

पार्लमेण्ट के इस अधिवेशन में प्रधान सचिव लार्ड नार्थ ने अमेरिकन संस्थानों के साथ व्यापार न करके सब प्रकार का सम्बन्ध-विच्छेद कर लेने का मस्विदा पेश किया। इसमें भी राजा के दिये हुए भाषण में बताये गये विचारो को पूर्ण करने के लिये अधिकारियों की नियुक्ति कर सकने की कुछ धाराएँ रखी गई थीं। सन् १७७६ की वसन्त ऋतु में जनरल वाशिंगटन की आधीनस्थ सेना न्यूयार्क छावनी में आ गई थी। जून मास में हेली फाक्स से चल कर जनरल हो भी आ पहुँचा। और कुछ ही समय में उसका भाई भी यूरोप से फ़ौज लेकर आ गया। इन दोनों भाइयों को माफी देने वाले अधिकारी नियुक्त किये गये थे। लार्ड हो ने आते ही अपनी सत्ता और कार्य का विस्तृत परिचय

तथा उसको प्रकाशित करने का घोषणा पत्र जनरल वाशिंगटन के पास भेजे। इनमें यह दिखलाया गया था कि जो लोग राजा की शरण में आ जायँ उनको क्षमा किया जायगा।

जनरल वाशिंगटन ने यह पत्र कांग्रेस को भेजा। वहां इसके सम्बन्ध में कुछ विवाद उपस्थित न हुआ। जिनके मन में यह आशा हो जाय कि राजा की ओर से न्याय प्राप्त होगा, उनको यह विश्वास दिलाने को कि हमारी स्वतंत्रता की रक्षा अपनी वीरता से ही होगी, घोषणा पत्र प्रकाशित करने की आज्ञा दी गई।

लार्ड हो ने फ्रेंकलिन को घरू तौर पर एक पत्र लिखा जिसमें उसकी बहुत प्रशंसा करके प्रार्थना की कि दोनों देशों के झगड़े का अन्त हो जाय तो अच्छा। इसके उत्तर में फ्रेंकलिन ने लिखा कि मुझे खेद के साथ लिखना पड़ता है कि जिस कार्य के लिये आप आये हैं उसमें सफलता की कोई आशा नहीं दिखाई देती। प्रधान मंत्रियों के बर्ताव और विचारों पर कुछ टीका टिप्पणी करके उसने उक्त पत्र में लिखा कि "ब्रिटिश राज्य रूपी सुन्दर और उत्तम चीनी का प्याला टूट न जाय इसके लिये मैंने हार्दिक इच्छा और सच्ची लगन से प्रयत्न किया। कारण मैं जानता था कि यदि एक बार यह प्याला टूट गया तो इसके बने रहने में जो महत्त्व और मूल्य है वह टुकड़ों में न रहेगा। यही नहीं, बल्कि टूट जाने पर फिर न तो उसे जोड़ा जा सकेगा और न उसमें वह शक्ति और मजबूती ही रहेगी। आपको स्मरण होगा कि, अपनी बहन के सन्मुख जिस समय आपने मुझे लन्दन में शान्ति और समाधान की आशा दिलाई थी तो मेरे नेत्रों में से किस प्रकार हर्ष की अश्रुधारा प्रवाहित हो चली थी।"

दुर्भाग्य से यह आशा सफल नहीं हुई। इतना ही नहीं, बल्कि इस आपत्ति को दूर करने के लिये मैं प्रयत्न कर रहा था

उसके बदले मुझे ही उसका मूल कारण समझा जाने लगा । जब मुझ पर इस प्रकार अकारण ही नासमझी फैलने लगी तो मुझे बड़ा दुःख हुआ । सन्तोष केवल इतना ही था कि इस देश में अनेक बुद्धिमान पुरुष मुझ से मित्र भाव रखते हैं उसी प्रकार लार्ड हो की भी मुझ पर पूर्ण ममता है ।

शान्ति स्थापित करने के विवाद में कुछ करने योग्य कोई बात नहीं दिखाई दी इससे लांग टापू की लड़ाई हुई और जनरल सुलीवान को पकड़ कर क़ैद कर दिया गया । उसको लार्ड हो के जहाज़ पर ले जाया गया और फिर झगड़ा खड़ा न करने की शर्त्त पर छोड़ा गया । उसके साथ लार्ड हो ने कहलाया कि मेरी इच्छा कांग्रेस के कुछ सभासदों से घरू तौर पर मिल कर बातचीत करने की है । इसके लिये वे अपनी सुविधानुसार समय और स्थान निश्चित करें । इस पर कांग्रेस ने फ्रेंकलिन, जॉन आडम्स और एडवर्ड रटलेज को अपना प्रतिनिधि नियुक्त करके भेजा । ये लोग ११ वीं सितम्बर को लार्ड हो से मिले । उसने उनसे कहा कि मैं तुमको कांग्रेस की कमेटी की भाँति नहीं मान सकता । सलाह करने और विरोध मिटाने के लिये किसी भी गृहस्थ से मिलना न मिलना मेरे अधिकार की बात है । इस पर कमेटी के मेम्बरों ने कहा कि तुम हमें जिस श्रेणी में समझते हो वैसा ही गिनो । हमें तो केवल यही जानना है कि तुम क्या कहना चाहते हो ? हम फिर भी कांग्रेस के सभासद् हैं और उस सभा की ओर से आये हैं अतः यह निर्विवाद है कि हम कांग्रेस के प्रतिनिधि रूप से आये हैं ।

भेंट करके तीनों व्यक्ति वापिस गये और उन्होंने कांग्रेस के आगे यह प्रगट किया कि विदित होता है सम्मति करने का लार्ड

हो को कुछ अधिकार नहीं है। उसको तो केवल शरण में आकर माफ़ी मांगने वाले लोगों को ही माफ़ी देने का है। वर्क के कथनानुसार "युद्ध करके समाधान कराने" का यह अन्तिम प्रयत्न था। किन्तु ऐसा प्रयत्न सफल नहीं हो सकता यह स्पष्ट है जो प्रधानों को भी विदित है।

अमेरिकन संस्थानों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करने के पश्चात् स्वतंत्र सत्ता की भाँति दूसरे देशों के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ने की व्यवस्था करना आरम्भ की थी। फ्रांस के साथ प्रतिज्ञा करने और युद्ध की सामग्री प्राप्त करने की गुप्त रीति तो कभी से हो चुकी थी। अब उन्होंने खुले तौर से व्यवस्था करना प्रारम्भ किया। कांग्रेस को अन्य देशों की सहायता की बड़ी आवश्यकता थी और उस सहायता करने वाले देश के साथ लाभदायक व्यापार करने की उनको सुविधा थी। फ्रांस के दरबार से सम्मति लेने की व्यवस्था करने में कुछ फल होने की सम्भावना न थी। कारण कि फ्रांस के साथ अन्तिम युद्ध में इङ्गलैण्ड ने उससे जो कड़ी शर्तें स्वीकार करवाई थीं वे उसके मन में अब भी खटक रही थीं। ऐसा माना जाता था कि इङ्गलैण्ड से मनमुटाव करने वाले फ्रांस, इङ्गलैण्ड और उसके संस्थानों में चला हुआ पारस्परिक विरोध इङ्गलैण्ड की शक्ति घटा देगा। अतः कांग्रेस ने इसका लाभ उठाने को यह अवसर हाथ से न जाने दिया। अमेरिका का काम करने को फ्रांस के दरबार में फ्रेंकलिन, सीलासडीन और आर्थर ली राजदूत नियुक्त हुए और उन्हें संधि का मसौदा, कार्य करने की याद्दाश्त तथा अधिकार पत्र तय्यार करके दिये गये। सीलासडीन तो पहिले से ही फ्रांस गया हुआ था और आर्थरली इङ्गलैण्ड में था। केवल फ्रेंकलिन रहा सो उसने यात्रा की तय्यारी करना प्रारम्भ किया। २६ अक्टूबर को विलियम

टेम्पल, फ्रेंकलिन और 'बेंजामिन फ्रेंकलिन बाश' नामक अपने दो पौत्रों के साथ फ्रेंकलिन ने फ़िलाडेल्फ़िया से प्रस्थान किया। एक रात चेस्टर रह कर दूसरे दिन "रिप्रिसल" नामक लड़ाई के जहाज़ द्वारा वे फ्रांस की ओर चल दिये।

अपने देश हित के कार्य्यों में फ्रेंकलिन की कैसी लगन थी और उसका परिणाम अच्छा ही होगा इसका उसको कितना विश्वास था इसके प्रमाण स्वरूप इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि फ़िलाडेल्फ़िया छोड़ने से पूर्व उसने अपना तमाम पैसा एकत्रित करके लगभग ४ हज़ार पोण्ड की रक़म ऋण स्वरूप कांग्रेस को सौंप दी थी।

प्रकरण २७ वां

फ्रांस के दरबार में एलची (राजदूत)

सन् १७७६—७७

फ्रास की यात्रा—नान्टज़ पहुँचना—पेरिस जाना—स्वागत—नाम का प्रभाव—उसके चित्र—काउण्ट डी वरगेन से भेट—फ्रास की ओर से आर्थिक सहायता—अमेरिका को युद्ध की सामग्री भेजी—ठेका—यूरोपीय राज्यों के साथ प्रतिज्ञा करने के विरुद्ध अभिप्राय—लार्ड स्टोर मण्ट—अमेरिकन सेना में नौकरी के लिये विदेशियों की प्रार्थना—लाफ़े—अमेरिका के साथ प्रतिज्ञाएँ करने को फ्रास का किया हुआ विलम्ब—इस सम्बन्ध में काउण्ट डी आदि से भेट—व्यापार और मित्रता—सहायता के वचन—फ्रैंकलिन और राजदूत मण्डल की राजा के साथ मुलाक़ात।

डिलावर से तीस दिन की यात्रा करने के पश्चात् "रिप्रिसल" जहाज़ लायर नदी के सगम पर आ पहुँचा। नदी की उष्णता नापने के लिये फ्रैंकलिन ने इङ्गलैण्ड से अमेरिका आते हुए जो प्रयोग करके देखे थे उनको उसने इस यात्रा में पुनः करके देखा। पहिली वार जो कुछ मालूम हुआ था उसी प्रकार इस बार भी हुआ। मार्ग में कहीं २ अंग्रेज़ी युद्ध के जहाज़

मिलते और इनका पीछा करते, किंतु, इन्हें यह आज्ञा थी कि यथा सम्भव बिना युद्ध किये ही फ्रांस के किनारे की ओर चले जाने का प्रयत्न करें। अतः उसका पालन करने को कुछ चालाकी करके उन्होंने अपने पीछे पड़ने वालों के साथ युद्ध होने का अवसर न आने दिया। किनारे पहुँचने से दो दिन पूर्व उन्होंने माल भरे हुए दो अंग्रेजी जहाजों को पकड़ कर अपने साथ ले लिया।

ये जहाज़ नान्टज़ बन्दर को जाने वाले थे। किंतु, वायु प्रतिकूल होने से न जा सके थे। किबेरन की खाड़ी में चार दिन रुके रहने के पश्चात् फ्रेंकलिन और उसके पौत्र "ओरे" नामक एक छोटे से गाँव में उतरे और वहाँ से ७० मील की पैदल यात्रा करके ७ दिसम्बर को नान्टज़ आ पहुँचे।

फ्रेंकलिन फ्रांस में आने वाला है, ऐसा कोई न जानता था। कारण कि, वहाँ उसकी नियुक्ति की कोई सूचना न आई थी। फिर भी लोगों ने अनुमान किया कि वह किसी महत्त्वपूर्ण सरकारी कार्य्य के लिये नियुक्त हुए बिना इतनी दूर नहीं आ सकता। उसके शुभागमन का संवाद पाकर अमेरिकन मित्र बड़े प्रमुदित हुए और आनन्दपूर्वक मिलने लगे। कुछ दिन पश्चात् इस उपलक्ष में एक वृहत् प्रीति भोज दिया गया। यात्रा से श्रमित हो जाने के कारण फ्रेंकलिन मि० ग्रेयल के एक एकान्त भवन में कुछ समय के लिये विश्राम करने को ठहरा। वहाँ अमेरिका के सम्बन्ध में समाचार जानने को उसके पास बहुत लोग आया करते थे और प्रायः सदा ही एक भीड़ सी लगी रहती थी। नान्टज़ से कांग्रेस के सभापति ने उसको इस प्रकार पत्र लिखा—

"हमको यात्रा में अधिक दिन नहीं लगे। किंतु, बार २ तूफ़ान आने से मेरे स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव नहीं हुआ अतः

शरीर में निर्बलता प्रतीत होती है। वैसे अब तो उत्तरोत्तर स्वास्थ्य सुधार हो रहा है और ऐसा अनुमान होता है कि मैं कुछ दिन के पश्चात् पेरिस जाने योग्य हो जाऊँगा। यहाँ की सरकार कांग्रेस की ओर से आये हुए राजदूत का निःसङ्कोच रीति से सम्मान करने को प्रसन्न है या नहीं यह जाने बिना मैंने अपना यहाँ आने का प्रयोजन किसी पर प्रगट नहीं किया है। यहाँ की सरकार की क्या इच्छा है इस सम्बन्ध में पूछ ताछ करके मुझे सूचना देने के लिये मैंने कमेटी के पत्र लेकर अपने एक ख़ास व्यक्ति को मि० डीन के पास भेजा है। अपना नियुक्ति पत्र भी उसके साथ ही है। यहाँ की जनता की ऐसी धारणा है कि मैं शर्त्त और प्रतिज्ञा करने को आया हूँ। मुझ से जो लोग मिलने को आते हैं उनकी बातचीत और मेरे प्रति किये हुए उनके सभ्यतापूर्ण व्यवहारों से मुझे ऐसा विदित होता है कि वे इस बात से बड़े प्रसन्न हैं।"

नान्टज़ में आठ दिन रह कर फ्रेंकलिन पेरिस के लिये प्रस्थानित हुआ। मार्ग में वह एक भोजनालय में ठहरा जहाँ उसे सूचना मिली कि रोम राज्य का एक सुप्रसिद्ध इतिहास वेत्ता गिब्बन भी वहीं ठहरा हुआ है। फ्रेंकलिन का उससे पहिले कभी परिचय न हुआ था किंतु, उसने उससे कहलाया कि आज सन्ध्या को साथ २ ही भोजन करेंगे। इसके उत्तर में गिब्बन ने कहला भेजा कि डाक्टर फ्रेंकलिन एक विद्वान् पुरुष हैं इस कारण उनके प्रति मेरी बड़ी श्रद्धा है। किंतु, अपने राजा की बलवा ख़ोर प्रजा की भाँति होने के कारण मैं उनके साथ बातचीत भी नहीं कर सकता। इसके प्रत्युत्तर में फ्रेंकलिन ने उसको लिखा किः—"अपने राजनैतिक मतभेद के कारण आपने मुझे अपनी भेट से वञ्चित रखा इसका मुझे कोई विचार नहीं है।

बल्कि आप एक सज्जन व्यक्ति हैं और इतिहास के विद्वान् हैं अतः आपके प्रति मेरे अच्छे भाव हैं। इस समय आपसे यदि मैं एक आवश्यक आग्रह करूँ तो कदाचित् आप उसे अनुचित न समझ कर अवश्य ध्यान देंगे। आप अनेक राज्यों के इतिहास लेखक हैं अतः मेरा यह कहना है कि जिस समय इङ्गलैण्ड के इतिहास को लिखने का समय आवे उस समय उससे सम्बन्ध रखने वाली जो कुछ सच्ची बातें मेरे पास हैं उन्हे यदि आप चाहेंगे तो आपको सूचना पाने पर मैं सहर्ष दूंगा।"

२१ वीं दिसम्बर को फ्रैंकलिन पेरिस नगर में आ पहुँचा। मि० डोन वहीं था और मि० ली दूसरे दिन आ गया। इस प्रकार यह राजदूत मण्डल संगठित होकर अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिये प्रयत्नशील हुआ। फ्रैंकलिन ने पेरिस के पास पेसे नामक गाँव में लेरें डी शोमन नामक अपने एक परम प्रिय अमेरिकन मित्र के यहाँ अपना डेरा जमाया, और जब तक फ्रांस में रहा उसने अपना निवास वहीं रक्खा।

फ्रैंकलिन पेरिस में आया है यह बात शीघ्र ही सारे यूरोप में फैल गई। तीस वर्ष पूर्व की हुई अपनी विद्युत सम्बन्धी खोज से वह वहाँ के उन्नत देशों में एक विद्वान और तत्त्ववेत्ता की भाँति खूब ख्याति प्राप्त कर चुका था। उसके लेखों का अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका था। "दीन बन्धु" (गरीब रिचर्ड) तथा अन्य छोटे बड़े लेख जो सांसारिक अनुभवों से युक्त और चतुरता पूर्ण वचनों से भरे हुए थे उनके भी भाषान्तर हो चुके थे। इङ्गलैण्ड में रह कर उसकी की हुई देश-सेवा, अपने देश के अधिकार के लिये किया हुआ उसका साहस तथा सच्ची लगन और पार्लामेण्ट में दिये हुए उसके प्रभावोत्पादक भाषण, और प्रधान मंत्रियों का उसके साथ किया हुआ अनुचित व्यवहार

आदि बातें सारे यूरोप में फैल गई थीं। सबको यह निश्चय हो गया था कि फ्रेंकलिन एक सच्चा देशभक्त और परोपकारी पुरुष है। एक प्रथम श्रेणी का इतिहास। लेखक उसके सम्बन्ध में लिख गया है:—

"फ्रांस में फ्रेंकलिन के नाम का जो प्रभाव हुआ उस पर से यह कहा जा सकता है कि चाहे दरबार में न सही, किन्तु, फ्रेंच जैसे स्वतंत्र देश की जनता में तो उसने अपने आने का अभिप्राय कभी का सफल कर लिया था। राजनैतिक रीति रिवाजों के अनुसार वह प्रधान मंत्रियों से तो बारबार न मिल सका था, किंतु, राज्य के मुख्य २ पदाधिकारियों के समागम का तो उसको खूब अवसर मिला था। सब पर उसकी योग्यता का सिक्का जम गया था। लोग समझने लगे थे कि फ्रेंकलिन की भाँति ही इस के देशवासियों की भी बड़ी प्रतिभापूर्ण योग्यता होगी। 'पेसे' के जिस भवन में वह रहता था वहाँ जाकर जिस को इस से भेंट करने का सुअवसर प्राप्त होता वह अपने को बड़ा भाग्यशाली समझता। इस वयोवृद्ध महापुरुष की मुख मुद्रा 'फोशिअन' जैसी और विचार साक्रेटिस की भाँति थे। राज दरबारी लोग उस की प्रतिभा को देख २ कर चकित हो जाते थे और उसको एक सुलझा हुआ राजनीतिज्ञ समझते थे। युवक-गण अमेरिका का नाम प्रसिद्ध करने की उत्कण्ठा से आतुर होकर उससे अमेरिकन सेना के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न किया करते थे। जब वह खुले दिल से स्पष्ट शब्दों में भविष्य के लिये निश्चय पूर्वक ऐसा कहता कि अमेरिका की हार होगी और इस समय हमारा देश बड़ी विचारणीय अवस्था में है तो युवकों के हृदयों में प्रजा सत्तात्मक राज्य के सैनिकों की तन मन धन से सहायता करने की इच्छा बलवती हो जाती थी।"

उपरोक्त वर्णन के पश्चात् फ्रांस दरबार के साथ फ्रैंकलिन ने जो प्रतिज्ञाएँ और शर्तें करने का प्रयत्न किया उसकी चर्चा निष्प्रयोजनीय हो जाती है। उस के सद् गुण और कीर्ति ही उस समय सब प्रकार का कार्य्य कर रहे थे। उसको आये हुए अभी दूसरा वर्ष भी न हुआ था। किन्तु, इतनी ही अवधि में उसने सर्वसाधारण पर अपना बड़ा पक्का विश्वास जमा दिया था, जिस से किसी को यह कहने का साहस ही न होता था कि फ्रैंकलिन के देश भाइयों की सहायता न करनी चाहिये।

उस समय फ्रांस में फ्रैंकलिन के बीसियों प्रकार के छोटे मोटे चित्र छप कर विकने लगे थे। कोई उन्हे कांच में मढ़वाता था तो कोई अँगूठी में जड़वाता था और कोई अपनी जेब में रहने वाली डिब्बियों पर लगवाता था। इसके अतिरिक्त प्रवीण चित्रकार अनेक प्रकार के रग बिरगे सुंदर चित्र बना बना कर बेचते थे जिन्हे लोग बड़ी प्रसन्नता स खरीदते थे और खूब रुपया देते थे। अभिप्राय यह है कि उस समय वहाँ के निवासी उस पर इतने अनुरक्त हो गये थे कि उस के प्रति प्रेम प्रदर्शित करने की कोई बात नहीं उठा रखते थे।

कांग्रेस ने फ्रेंच सरकार में पेश करने के व्यापारिक शर्त्तों का मसविदा तैयार करके अपने एलचियो को दे दिया था और यह सूचित कर दिया था कि उन को एकत्रित उपनिवेशों (संस्थानों) के व्यय से फ्रेंच सरकार के द्वारा लड़ाई के जहाज तैयार करके भेजना पड़ेगा, ऋण लेना होगा और युद्ध के लिये आवश्यक सामान जुटा कर भेजना पड़ेगा तथा वहाँ (फ्रांस) के दरबार में अन्यान्य देशों के राजदूतो के द्वारा यह मालूम करना होगा कि उन के देश का बर्ताव कैसा है। इस के साथ ही एकत्रित उपनिवेशों की स्वतंत्रता और राजसत्ता स्वीकार करवानी और

ऐसे देशो के साथ मित्र भाव तथा व्यापारिक शर्तें करनी पड़ेंगी। व्यय आदि के लिये आवश्यक रुपया अमेरिकन जहाजो द्वारा समय २ पर बराबर पहुँचता रहे इसकी यथावत् व्यवस्था करदी गई थी।

फ्रांस के मन्त्रि मण्डल में वैदेशिक विभाग* का मंत्री काउण्ट डी वरगेन था। २८ वीं दिसम्बर को उसने वरसेल के महल में अमेरिकन राजदूतों से भेंट की। उनका उसने बड़ा सम्मान किया और प्रसन्नतापूर्वक बातचीत की। राजदूतों ने अपनी प्रतिज्ञाएँ और शर्तों का मस्विदा उसके सामने रखकर अपने आने का प्रयोजन कह सुनाया। इस पर वरगेन ने उनसे कहा "मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हू कि आप इस राज्य में रहेंगे तब तक सरकार आप की रक्षा करेगी। अपने मस्विदे में आपने जिन २ बातो का उल्लेख किया है उन पर सरकार पूरा ध्यान देगी। फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन के बीच में इस समय जो नियम प्रचलित है उसी का अनुसरण करके आपको हमारे बन्दर में जहाज लान और व्यापार करने के लिये जितनी स्वतंत्रता दी जा सकेगी, सहर्ष दी जायगी।"

इसके पश्चात् वरगेन ने राजदूतो से अमेरिका के प्रचलित आन्दोलन का सारा वर्णन लिखकर देने को कहा। इस प्रकार यह मुलाक़ात पूरी हुई और सारा वर्णन लिखकर यथा समय भेजा गया, किंतु उसका कोई उत्तर न मिला। बात यह थी कि यदि फ्रेंच सरकार अमेरिकन लोगों का खुले तौर पर पक्ष ले ले तो उसको इङ्गलैंड के साथ शीघ्र ही युद्ध करना पड़े इस कारण वह सहसा स्पष्ट उत्तर देने को तैयार न थी। काउण्ट वरगेन ने

---

* Foreign Seciretary.

राजपूतों को सलाह दी कि तुमको स्पेन के राजदूत काउण्ट डी अरण्डा से मिलकर यह मालूम करना चाहिये कि वहाँ की सरकार का क्या विचार है? यदि स्पेन और फ्रांस का एक मत होगा तो तुम्हारा कार्य बड़ी सुगमता से हो जायगा। इस सम्मति के अनुसार राजदूतों ने उससे मिलकर सब हक़ीकत कही। अरण्डा ने वचन दिया कि मैं तुम्हारी अर्जी अपनी सरकार के पास भिजवा दूंगा और आशा है कि वह फ्रांस सरकार के साथ मिलकर काम करेगी।

इस प्रकार ऊपर से कुछ ढीलापन दिखाने पर भी फ्रेंच सरकार का भीतरी विचार अमेरिका को पूरी सहायता देने का था। बोमार शे नामक व्यक्ति को अमेरिकनों ने बहुत सा रुपया देकर गुप्त रूप से युद्ध की तैयारी प्रारम्भ करवादी। इंग्लैण्ड यह न जान ले कि फ्रांस इस प्रकार अमेरिका की सहायता कर रहा है इसके लिये यह सहायता कार्य इस ढंग से किया जा रहा था कि किसी को इसकी कल्पना भी न हो सकी। बोमार शे ने बहुत सा सामान इकट्ठा करके एक दूकान खोल दी और मानों उसने व्यापार के लिये ही ऐसा किया हो इस प्रकार अमेरिकन राज्यों को सब प्रकार की वस्तुएं उधार देने लगा। कांग्रेस को उसके बदले में तम्बाकू तथा अपने यहां उत्पन्न होने वाली अन्यान्य वस्तुएँ भेजनी थीं।

फ्रैंकलिन के फ्रांस में आने से पहले ही यह सामान पृथक् २ जहाज़ों द्वारा अमेरिका भेजा जा चुका था और उसमें से अधिकांश सुरक्षित रूप से पहुँच भी गया था। फ्रेंच सरकार ने कांग्रेस के माँगे हुये जहाज़ों को देना स्वीकार न किया। किंतु, राजदूतों ने घरू तौर पर सूचना दी कि अमेरिकन राज्यों को आवश्यक वस्तुएँ ख़रीदने के लिये वह २० लाख रुपये तक ऋण के

रूप में देगी। राजदूतों ने पहिले ऐसा समझा था कि यह ऋण कुछ अमेरिकन मित्र अपनी ओर से दे रहे हैं और शान्ति होने से पहले वह वापिस न लिया जायगा। किन्तु, सच्ची बात यह थी कि यह रक़म फ्रांस के खज़ाने से दी गई थी और प्रत्येक तीन मास में ५ लाख रुपये के परिमाण से मिली थी। इस रुपये से राजदूत युद्ध के हथियार तथा आवश्यकतानुसार और २ वस्तुएँ खरीद कर अमेरिका को भेजने लगे। उन्होंने एक जहाज़ आमस्टर डाम में और एक नाइन्टज़ में बनवाया।

यह सब व्यवस्था बहुत ही गुप्त रीति से की जारही थी किंतु, फिर भी अंग्रेज़ी राजदूत स्टारमराट ने स्थान २ पर अपने जो जासूस नियत कर रखे थे उनके द्वारा अमेरिका को मिलने वाली सहायता का रहस्य प्रगट होने लगा। उसने शीघ्र ही फ्रेंच सरकार को लिखा कि किसी प्रकार ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि अमेरिका को फ्रांस से बिल्कुल सहायता न मिल सके। इस पर फ्रेंच सरकार ने स्टारमराट को प्रोत्साहित करने के लिये आज्ञा निकाली कि अमेरिकन राजदूतों ने जो जहाज़ तैयार करवाये हैं उनको पकड़ा जाय। किंतु, जब इस पर भी अमेरिका वालों ने अंग्रेज़ी जहाज़ों को पकड़ २ कर फ्रांस के बन्दरों में बेचना जारी रक्खा तो अंग्रेजों ने झगड़ा खड़ा किया और काउराट वरगेन ने अमेरिकन राजदूतों को पत्र लिखकर फटकारा तथा आगे के लिये ऐसा न हो इसके लिये उन्हें हिदायत करदी कि तुम्हें भविष्य में ऐसा कोई कार्य न करना चाहिये जिसके कारण इङ्गलैंड के साथ की हुई हमारी प्रतिज्ञाओं मे बाधा उपस्थित हों। फ्रांस सरकार की वास्तविक इच्छा को राजदूत जानते थे इस कारण वे उपर्युक्त दिखावटी आज्ञा से बिल्कुल भयभीत न हुये। बल्कि उनको जो जो सामान मिल सका उसे उन्होंने बराबर अमेरिका भेजना जारी रक्खा।

अन्तर केवल इतना ही रहा कि अब पूर्वापेक्षा अधिक सावधानी से काम लिया जाने लगा।

फ्रांस की ओर काम करने वालों में फ्रेंकलिन और डीन ही मुख्य थे। यूरोप के दूसरे देशों से प्रार्थना करने और उनकी सहायता माँगने के लिये राजदूतों ने कांग्रेस को अधिकार दे दिया था अतः उसकी इच्छानुसार काम करने लिये उन्होंने आर्थरली को पहले स्पेन और फिर प्रूशिया भेज दिया। इस कार्य में लगे रहने से उसको बहुत समय तक फ्रांस से बाहर रहना पड़ा। फ्रेंकलिन सहायता के लिये दूसरे देशों की खुशामद करना पसन्द न करता था अतः जब कांग्रेस में सहायता माँगने की चर्चा चली तो उसने इसका विरोध किया। उसकी धारणा थी कि अन्यान्य देशों के अधिकारीगण स्वतः ही आकर सहायता करने की इच्छा प्रगट करें उस समय तक प्रतीक्षा करने में ही अमेरिका की भलाई और प्रतिष्ठा है। किंतु, बहुतों का विचार इससे विपरीत होने के कारण यूरोप में भिन्न २ देशों से सहायता माँगने को समय २ पर राजदूत अथवा प्रतिनिधि भेजते रहना भी ठीक समझा गया था। यह अवश्य है कि इस प्रकार करने से कोई अधिक हितकारी परिणाम नहीं हुआ। फ्रेंकलिन को फ्रांस में आये हुए कुछ ही दिन हुए थे कि काग्रेस ने उसको अपना राजदूत नियुक्त करके स्पेन सरकार से सहायता माँगने को जाने के लिये कहा। किंतु, जब फ्रेंकलिन ने ऐसा सुना कि इससे पूर्व यह कार्य मि० लीन को सौंपा गया था और उसके द्वारा यह विदित हुआ था कि स्पेन की सरकार किसी प्रकार की सहायता देने को तय्यार नहीं है तो इसने वहाँ का राजदूत होने से नाहीं करदी, और कांग्रेस का समाधान हो जाय इस ढंग से उसके कारण भी लिख कर भेज दिये।

इसी समय फ्रांस के दरबार में रहने वाले अमेरिकन राजदूतों को ऐसी सूचना मिली कि समुद्र में जिन अमेरिकन क़ैदियों को पकड़ा गया था उन पर इंग्लैण्ड में बड़ा अत्याचार किया जा रहा है। उस समय कुछ अमेरिकन क़ैदियो को अफ्रीका और एशिया स्थित ब्रिटिश राज्यों में भेज दिया गया था और कुछ को बलात्कार फ़ौज में भर्ती करके अपने देश वासियों से युद्ध करने के लिये विवश किया जा रहा था। इसके साथ ही अमेरिका वालों ने जो अंग्रेज़ कैदी पकड़े थे उनको अमेरिकन जहाजों द्वारा फ्रांस मे लाया गया था। उनसे अमेरिकन क़ैदियों का बदला करने के लिये राजदूतों ने लार्ड स्टार मन्ट को पत्र लिखा, जिसका उसने कुछ उत्तर न दिया। तब राजदूतों ने दूसरा पत्र भेजा। इस के उत्तर में लार्ड स्टारमन्ट ने कुछ अस्पष्ट शब्दो में लिखा कि "राजा से क्षमा माँगने को आने के अतिरिक्त दूसरे प्रसंग पर राजा का एलची बलवाइयों की प्रार्थना पर कुछ विचार नहीं कर सकता।" इस प्रकार राजदूतों ने उसे अपमान जनक और अनर्गल शब्दों से पूर्ण पत्र को लार्ड स्टारमन्ट के पास वापिस भेजा और उस में प्रगट किया कि ग्रेट ब्रिटेन और युनाइटेड स्टेट्स (संयुक्त राज्य) जैसे दो देशो के हित की दृष्टि से लिखे हुए पत्र का तुम ने हमको ऐसा लज्जास्पद और अपमानजनक उत्तर भेजा है जो सर्वथा अनुचित है। किंतु, इङ्गलैंड के मंत्री उन के राजदूतो की भाति नासमझ न थे। अमेरिकन जहाजो द्वारा पकड़े हुए कैदियों की बढ़ती हुई सख्या से उनको विश्वास हो गया था कि दया की खातिर न सही तो कम से कम स्वार्थ के खातिर ही कैदियों का बदला करना लाभदायक है।

फ्रैंकलिन ने फ्रांस में पांव रक्खा तब से ही अमेरिकन सेना में नौकरी मिल जाने की इच्छा रखने वाले हज़ारों लोग उसके

पास इस अभिप्राय से आने लगे कि वह कांग्रेस को अथवा जनरल वार्शिगटन को सिफारिशी पत्र लिख दे। भिन्न २ देशों से, विभिन्न भाषाओं में उसके पास सैकड़ों अर्जियां आतीं जिनमें से कुछ अपनी योग्यता का बखान करते, कोई प्रमाण पत्र भेजते और कोई अपने प्रार्थना पत्र के साथ किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पत्र भेजते। किंतु सब की इच्छा कैसे पूर्ण की जा सकती थी और बिल्कुल नाहीं कर देने में भी कितनों ही के हतोत्साह और अप्रसन्न हो जाने की आशंका रहती थी। इस कारण फ्रैंकलिन ने एक सुगम उपाय निकाल लिया था। जो कोई उसके पास जाता उस से वह समझा कर कह देता कि भाई, इस नियुक्ति के सम्बन्ध में मुझे कोई अधिकार नहीं है। इसके अतिरिक्त सेना के रिक्त स्थानों की बहुत कुछ पूर्ति हो चुकी है अतः मेरे कहने पर कोई अकारण ही नियुक्त किये हुए व्यक्ति को अलग कैसे करेगा। यदि तुम अमेरिका गये भी तो तुम्हें निराश होकर लौटना पड़ेगा। इस विषय में अपने एक मित्र को पत्रोत्तर देते समय उसने लिखा कि:— "ऐसा एक भी दिन नहीं जाता जिस दिन मुझे नौकरी के लिये कोई उम्मेदवार न मिला हो अथवा कोई प्रार्थना-पत्र न आया हो। किंतु, इस प्रकार मुझे कितने व्यक्तियों को हताश और दुखी करना पड़ता है इसका तुम अनुमान भी न कर सकोगे। बहुत से लोग मेरे मित्रों के पास जाते हैं और उन के सिफ़ारिशी पत्र मेरे पास लाते हैं। प्रार्थियों के अतिरिक्त लगभग सभी महकमों के बड़े से बड़े अधिकारी और अन्यान्य स्त्री पुरुषों का सुबह से शाम तक ऐसा तांता लगा रहता है कि मुझे क्षण भर को चैन नहीं मिलता।" इसी प्रसंग पर एक प्रार्थी को फ्रैंकलिन ने लिखा था:—

"तुम मुझ से पूछते हो कि मैं इतने बड़े ओहदे पर होकर भी तुम्हारी सिफ़ारिश क्यों नहीं कर सकता? यह ठीक है। किंतु

अपनी योग्यता का विचार करते समय तुम इस बात को भूल जाते हो कि दूसरे लोग भी उसे जानते हैं या नहीं। यदि तुम थोड़ा सा विचार करोगे तो तुम्हे विश्वास हो जायगा कि तुम्हारे जैसे व्यक्ति की सिफ़ारिश करने पर—जिसकी योग्यता को मैं बिल्कुल नहीं जानता—मेरी सम्मति का क्या मूल्य रह सकता है? तुम सेना में भरती होकर अथवा किसी दूसरे प्रकार से जो अपने देश की सेवा करना चाहते हो इसके लिये मैं सहर्ष तुम्हारी प्रशंसा करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारी अमेरिका जाने के विषय में जो इच्छा है उसकी पूर्ति के लिये मै तुम्हारी सहायता कर सकूं तो बहुत अच्छा। यहां के और २ लोग भी वहां जाकर हमारी फ़ौज में भरती होने के अभिलाषी हैं। किंतु, उनको मैं इसके लिये प्रोत्साहन और उत्तेजन नहीं दे सकता क्योंकि वैसा करने की मुझे आज्ञा नहीं है। इस के अतिरिक्त वे वहां गये भी तो उनको कहां प्रविष्ट कराना यह ज़रा कठिन समस्या हो जाती है। अतः मै सब से अच्छा यही समझता हूं कि इतनी लम्बी, उत्तरदायित्व पूर्ण और श्रम एवं व्यय साध्य यात्रा न करके तुम अपने घर पर ही रहो और अपने हितैषियों से सम्मति लेकर कोई उपयोगी कार्य्य प्रारम्भ करो।"

इतना होने पर भी फ्रैंकलिन ने बिना कुछ असमञ्जस किये एक मनुष्य के लिये कांग्रेस को सिफ़ारिश लिखदी। कुछ समय पश्चात् विदित हुआ कि वह व्यक्ति बड़ा योग्य साबित हुआ है और उसके सम्बन्ध में जैसी आशा की जाती थी उसको उस ने पूर्ण कर दिया है। फ्रैंकलिन और डीन ने कांग्रेस को भेजे हुए पत्र में लिखा था कि:—"मारक्विस डी लाफे नामक एक कुलीन और उच्च घराने का मनुष्य अपनी सेना में भरती होने के लिये कुछ साथियों के साथ अमेरिका की ओर जहाज़ द्वारा प्रस्थानित हो

गया है। यहां यह बड़ा लोकप्रिय है और सब की सम्मति लेकर ही वहां आ रहा है। हमें आशा है कि आपकी ओर से उसका समुचित आदर सत्कार होगा और इस देश में उसके कारण कभी कोई ऐसी बात न होगी जिस से किसी प्रकार की हानि की संभावना हो। जो लोग उसके कार्य्यों को अविचार पूर्ण मानते है वे भी उसकी कर्त्तव्य परायणता और पराक्रम का बखान करते हैं। यदि आपने उसका सम्मान किया तो न केवल उसके सगे सम्बन्धी ही, बल्कि सारा फ्रांस प्रसन्नतापूर्वक हमें अपने कार्य्य में पूरी २ सहायता देगा जिसमें सफलता-लाभ करने को हम यहां आये हैं। वह अपनी स्त्री को यहीं छोड़ गया है अतः हमे आशा है कि अपने सेनापति लाफे के क्रोध को वे अधिक न भड़कने देंगे इसके लिये केवल इतनी ही आवश्यकता है कि विना अनिवार्य्य आवश्यकता के उसको किसी ऐसे स्थान पर युद्ध के लिये न भेजा जाय जहां जाकर उसका जीवन संकट में पड़जाय।"

फ्रेंकलिन को जब फ्रांस में आये हुए दस मास हो गये तो फ्रेंच सरकार ने अमेरिकन झगड़े में खुले तौर से भाग लेने को अपनी इच्छा प्रगट की। किंतु, इस विषय में वहां के प्रधान लोगों में एक मत नहीं था। काउण्ट वरगेन और मोरिया का ऐसा मत था कि अमेरिका का पक्ष लेकर इङ्गलैंड से युद्ध करना। टरगो तथा कुछ दूसरे मंत्री इङ्गलैंड के साथ युद्ध करना अनुचित समझते थे। स्वयं राजा ने भी युद्ध करने की बात को बड़े असमंजस के पश्चात् स्वीकार की थी। सन् १७७६ की लड़ाइयो के ऐसे बुरे परिणाम हुए थे कि अमेरिका का पक्ष लेने को किसी का जी न चाहता था। अमेरिकन सेना का केनेडा खाली करना, लांग टापू में हुई पराजय, वाशिंग्टन का क़िला खो देना, न्यूजर्से में वाशिंग्टन की सेना का पीछे हटना, और कांग्रेस का फ़िलाडे-

लिफया से बाल्टिमोर भाग जाना—इन सब विपरीत कारणों पर से यूरोप के बहुत लोग ऐसा अनुमान करते थे कि थोड़े ही समय में झगड़े का अन्त आ जायगा। यह समय विदेशियों के साथ मित्र भाव का सम्बन्ध जोड़ कर सहायता की आशा रखने का न था। साथ ही यह भी कोई न जानता था कि अमेरिकन लोग अन्त तक अपनी हठ और झगड़े पर डटे रहेंगे और उनमें मेल, बल, पराक्रम, और निश्चय ऐसा ही बना रहेगा। फ्रांसीसी मंत्रियों को भय था कि यदि किसी समय इङ्गलैंड और अमेरिका में सुलह हो जायगी तो अपनी बुरी दशा होगी, यही कारण था कि अभी तक उसने खुले तौर से संयुक्त राज्य के साथ मैत्री भाव न जोड़ा था।

किंतु, सन् १७७७ में अमेरिका का भाग्य खुला। इस वर्ष उसकी ऐसी विजय हुई कि सन् १७७६ में हुई पराजय को लोग एकदम भूल गये। बरगोइन्न की सेना के पकड़े जाने और जनरल वाशिंग्टन की अधीनता में पेन्सिल्वेनियां के निकट दिखाई हुई अमेरिकन सेना की वीरता से यूरोप में उसकी धाक सी जम गई। सब को विश्वास होने लगा कि अमेरिका पीछे न हटने का, क्योंकि उसमें पूरा २ बल और दृढ़ता है। ४ दिसम्बर को एक जहाज फ्रांस में ऐसी खबर लेकर आया कि बरगोइन कैद हो गये और जर्मन टाउन की जीत हो गई। राजदूतों को जैसे ही यह सवाद मिला, उन्होंने शीघ्र ही प्रधानमण्डल को सूचित किया। दो दिन के पश्चात् राजा के मंत्रि मण्डल का एक प्रधान कर्म्म-चारी मि० जीरोल्ड काउएट बरगेन और मोरिया की आज्ञा से फ्रेंकलिन के पास उससे मिलने को आया और बोला कि तुम्हारे देश बन्धुओं ने जो विजय प्राप्त की है उसके लिये मैं अपनी सर-कार की ओर से तुमको बधाई देने को आया हूँ। इसके पश्चात्

दूसरी कई प्रकार की बातचीत करने के पश्चात् जीरोल्ड ने कहा कि इस सरकार के साथ संधि करने के सम्बन्ध में तुम फ़िर बात चलाना। फ्रेंकलिन ने कुछ समय पश्चात् एक प्रार्थना पत्र तय्यार किया और तीनों राजदूतों के हस्ताक्षर करवा कर उसको काउण्ट डी० वरगेन के पास भेजा। वरगेन ने संधि की शर्तों का मसौदा निश्चय करने के लिये राजदूतों से विचार करने को १२ वीं तारीख़ नियत की। इस दिन फ्रांस की ओर से काउण्ट वरगेन, और मि० जीरोल्ड तथा अमेरिका की ओर से वहां के राजदूत एकत्रित हुए। प्रारम्भ में वरगेन ने वाशिंग्टन की वीरता का बखान किया और अमेरिका की विजय होने के कारण उसकी भावी उन्नति के विषय में अपनी हार्दिक प्रसन्नता प्रगट की। इसके पश्चात् मतलब की बात चली। वरगेन ने पूछा कि अमेरिका किस प्रकार की शर्तें और प्रतिज्ञाएँ करने को तय्यार है? इसके उत्तर में फ्रेंकलिन ने अमेरिका से आया हुआ मस्विदा दिखाया और कहा कि इसमें जो कुछ परिवर्त्तन करना अभीष्ट हो वह बताया जाय। वरगेन कुछ परिवर्त्तन की बातें बताईं। किंतु, वे विशेष महत्त्व की न थीं। उसने यह भी प्रगट किया कि इस राज्य के साथ स्पेन का ऐसा सम्बन्ध है कि बिना उससे पूछे कोई नई संधि या सम्बन्ध हम नहीं कर सकते। इस संधि में स्पेन योग देगा या नहीं, यह पूछने को आज एक ख़ास व्यक्ति भेजा जायगा और वहां से तीन सप्ताह में उत्तर आने पर इसका निर्णय हो सकेगा।

तीन सप्ताह पूरे न हो पाये थे कि इतने ही में मि० जीरोल्ड फिर मिलने को आया और राजदूतों से कहने लगा कि:—"हमारे राजा साहब ने प्रधान मण्डल की सम्मति से संयुक्त राज्य की स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली है और उनके साथ मित्रता का सम्बन्ध

स्थापित करके सहायता देने का निश्चय किया है। हमारी इच्छा ऐसी शर्तें और प्रतिज्ञाएँ करने की हैं जो स्थायी रूप से हों और अधिक समय तक चलें। इसके लिये यह आवश्यक है कि दोनों पक्ष वालों को समान अधिकार प्राप्त हों जिससे उनको बनाये रखने में उभय पक्ष को लाभ पहुँचे। राज्यों की वर्त्तमान परिस्थिति का विचार करके हम ऐसी शर्त्तें स्वीकार नहीं करवाना चाहते कि जिनको किसी दूसरी स्थिति में वे प्रसन्नता से स्वीकार न करें। जहाँ तक हो सके उन की स्वतन्त्रता को सहारा लगाने का ही हमने निश्चय किया है इस कारण कदाचित् हमें इंग्लैण्ड से युद्ध करना पड़े तो भी उसका व्यय अथवा हानि तुमसे न माँगी जायगी। हमें तो तुमसे केवल इतना ही स्वीकार कराना अभीष्ट है कि इग्लैण्ड के साथ सधि करके सयुक्त राज्य अपनी स्वतंत्रता न छोड़ेंगे और न फिर इग्लैण्ड की आधीनता में आवेंगे।"

अन्त में यह विदित हुआ कि इस कार्य्य में किसी प्रकार का भाग लेने की स्पेन सरकार की इच्छा नहीं है इस कारण अमेरिका और फ्रांस का पारस्परिक विवाद बिना विलम्ब के आगे चला कर कुछ समय के पश्चात् पूरा किया गया। इस प्रतिज्ञा पत्रकी शर्तें अधिकतर काग्रेस के तय्यार किये हुए मस्विदे के अनुरूप ही थीं। इसके पश्चात् फ्रास के मत्री ने मित्रता की सधि का दूसरा मस्विदा पेश किया। पहिले की अपेक्षा यह अधिक विस्तृत था। उसका अमल उसी दशा में होने वाला था जब फ्रास और इंग्लैण्ड में युद्ध छिड़े। उसमें की सब से पहिली शर्त्त यह थी कि अमेरिका का झगड़ा चले तब तक दोनों पक्ष वालों को एकत्रित होकर युद्ध करना और एक दूसरे की सहायता करना। दूसरी यह थी कि यदि उत्तरी अमेरिका के किन्हीं अंग्रेजी प्रदेशों को अमेरिकन राज्य जीत लें तो वे प्रदेश उनकी अधीनता में

रहें। मेक्सिको की खाड़ी अथवा उसके पास के किसी प्रदेश को फ्रांस का राजा जीत ले तो वह उसकी अधीनता में रहे। किसी पक्ष को बिना किसी दूसरे पक्ष की सम्मति लिये ग्रेट ब्रिटेन के साथ किसी प्रकार की संधि न करनी चाहिये। जब तक ऐसी संधि न हो जाय जो एकत्रित राज्यों की स्वतन्त्रता स्वीकार करवा कर युद्ध का अन्त करवा दे तब तक किसी पक्ष को युद्ध बन्द न करना चाहिये। एकत्रित राज्यों ने प्रतिज्ञा की कि अमेरिका का जो भाग इस समय फ्रांस की अधीनता में है और आगे जो आवेगा उसको हम सुरक्षित रक्खेंगे। फ्रांस ने भी यह प्रतिज्ञा की कि एकत्रित राज्यों की स्वतंत्रता और राजसत्ता को हम सुरक्षित रक्खेंगे और इस समय जितना प्रदेश उनकी अधीनता मे है तथा जो अब होगा उसको हम बचावेंगे।

इन दोनों प्रतिज्ञा पत्रों में दोनो पक्ष वालों के हित की रक्षा का ध्यान रख कर जो शर्तें की गईं वे इस ढंग की थीं जिनसे विदित हो कि ये लोग समान पदवी वाले हैं। व्यापार सम्बन्धी प्रतिज्ञा में दोनों पक्ष वालों को एक ही प्रकार के व्यापार कर सकने के अधिकार दिये गये। किंतु, इसमे इतनी गुन्जाइश जरूर रक्खी गई कि यदि ये ही अधिकार कभी किसी तीसरे व्यक्ति को देने की इच्छा हो तो सुविधा से दिये जा सकें। सहायता और मित्रता की प्रतिज्ञाओं से, इंग्लैण्ड, अमेरिका की स्वतंत्रता को स्वीकार करके संधि करे तब तक फ्रांस की ओर से उसको सहायता दिये जाने का अभिवचन मिला। फ्रांस को किसी प्रकार का बदला लेने की इच्छा तो थी ही नहीं। राज्य इंग्लैण्ड से पृथक् हों और इंग्लैण्ड का बल कम हो बस उसका अभीष्ट तो इतना ही था। फिर अमेरिकन व्यापार को अभी तक इंग्लैण्ड अपनी ही अधीनता में लिये हुए था और इस प्रकार अपनी खूब आर्थिक

उन्नति कर रहा था उसमें से भी अब फ्रांस को कुछ भाग मिलेगा ऐसा अवसर आया। यह जितना इंग्लैण्ड को हानिकारक था उतना ही फ्रांस के लिये उपयोगी था। विजय अथवा पुरस्कार के रूप में कोई प्रदेश मिल जाय, ऐसा फ्रांस को कुछ लोभ न था। उसने तो इंग्लैण्ड के अन्तिम युद्ध में केनेडा और सेन्ट लारेन्स की खाड़ी के टापुओं को खोया था उनको प्राप्त करने की भी आवश्यकता न थी। अमेरिकन झगड़े में योग देने से उसका केवल यही उद्देश्य था कि किसी प्रकार इंग्लैण्ड का बढ़ता हुआ ज़ोर घट जाय।

इन दोनों प्रतिज्ञा पत्रों पर ६ फरवरी सन् १७७८ को पेरिस में हस्ताक्षर हुए। एक विश्वसनीय व्यक्ति के द्वारा उनको अमेरिका भेजा गया और कांग्रेस ने उन्हे शीघ्र ही स्वीकार कर लिया। इसको सुन कर सारे देश में हर्ष और प्रसन्नता छा गई। वाशिंग्टन ने खुशी मनाने के लिये एक दिन नियत किया और खूब जल्से करवाये। अब सबको पूरा २ भरोसा हो गया कि चाहे जो विघ्न आ उपस्थित हो। किंतु, अन्त में स्वतन्त्रता की प्राप्ति अवश्यम्भावी है। बात थी भी ठीक क्योंकि फ्रांस से अन्त समय तक सहायता मिलने का वचन मिल चुका था और यह एक प्रकार से निश्चित था कि फ्रांस जैसे पराक्रमी देश को जीतना कठिन है। साथ ही यह भी सब कोई जानते थे कि फ्रांस जो कुछ एक बार कह देता है उसका अवश्य ही पालन करता है।

प्रत्येक व्यक्ति के मुंह से फ्रांस के राजा की प्रशंसा के शब्द निकलने लगे। मनुष्य जाति के जन्म सिद्ध अधिकारों को छीनने वाला कोई राजा किसी प्रतिष्ठित राजगद्दी का उत्तराधिकारी बन जाय तो भी प्रजा सत्तात्मक राज्य को चाहने वाली प्रजा उसका गुण गान नहीं करती। किंतु, इस समय जनता द्वारा राजा की

जो प्रशंसा हो रही थी उसका केवल यही कारण था कि फ्रांस ने जो जो वचन दिये थे उनका उसने अन्त समय तक पालन किया था ।

२० वी मार्च को राजा ने वरसेल के राजमहल में एक दरबार करके अमेरिकन राजदूतों से भेंट की और उनको स्वतन्त्र राज्य के प्रतिनिधि की भांति बैठक दी । इस दरबार का वर्णन करते हुए एक फ्रेंच इतिहास लेखक फ्रेंकलिन के सम्बन्ध में लिखता है:—"तमाशा देखने की इच्छा से आये हुए अनेक अमेरिकन तथा अन्य देशों के मनुष्य उसके साथ आये थे । उसकी आयु, दिखावा, सादगी और सबसे बढ़कर उसके जीवन की जानने योग्य घटनाएँ लोगों को उसकी ओर आकर्षित करती थीं । लोग उसको देख देख कर मारे हर्ष के करतल ध्वनि करते थे और इस प्रकार वहाँ ऐसा जान पड़ता था मानों सारा मानव समाज हार्दिक प्रसन्नता से उसका स्वागत कर रहा है ।

"राजा की मुलाक़ात हो जाने पर फ्रेंकलिन जब वैदेशिक-विभाग के मन्त्री से मिलने को जा रहा था तो उसने देखा कि स्थान २ पर लोग उसे देखने की उत्कण्ठा से समुत्सुक खड़े हैं जिनके हर्ष का पार नहीं है । जैसे ही वह आगे बढ़ा कि लोगों ने भाँति २ से उसका स्वागत करना आरम्भ किया । सारे पेरिस में सैकड़ों जगह उसका ऐसा ही सम्मान हुआ ।"

अब फ्रेंकलिन और उसके देश के अन्य राजदूत दूसरे देशों के राजदूतों की भाँति दरबार में जाने लगे और समादरणीय स्थान पाने लगे । मेडम कम्पन कहता है कि उस समय फ्रेंकलिन अमेरिकन कृषकों की पोशाक पहनता था । उसका सादा जीवन और रहन सहन दूसरे दरबारियों के चमकीले और भड़कीले वस्त्रों से भिन्न प्रकार की थी । जिन देशों ने अमेरिका की

स्वतन्त्रता स्वीकार न की थी वहाँ के राजदूतों से सरकारी आज्ञा-नुसार अमेरिका का राजदूत किसी प्रकार का सम्बन्ध न रख सकता था। किन्तु, यह होते हुए भी कई लोग गुप्त रीति से फ्रैंकलिन के पास आते, उससे मिलते और मित्रता रखते थे। सरकारी आज्ञानुसार दूसरे राजदूतों को कितनी सावधानी रखनी पड़ती थी इसका फ्रैंकलिन एक स्थान पर वर्णन कर गया है। रशिया का राजकुमार पेरिस में आया तब उसने अपने तथा अपने साथी राजदूतों के परिचय पत्र* दूसरे राज्यों के राजदूतों के पास भेजे। पत्र लाने वाला व्यक्ति भूल से एक पत्र फ्रैंकलिन के यहाँ भी दे गया। फ्रैंकलिन को इस प्रकार का यह प्रथम ही पत्र मिला था। अतः इस विषय में वह यह निर्णय नहीं कर सका कि मुझे क्या करना चाहिये। विचारोपरान्त उसने एक वृद्ध अनुभवी व्यक्ति से सम्मति ली जो सब प्रकार के रीति रिवाज जानता था। उसने कहा कि तुमको गाड़ी में बैठ कर रशिया के राजदूत के मकान पर चले जाना चाहिये और द्वार-रक्षक की पुस्तक में अपना नाम लिखा देना चाहिये। फ्रैंकलिन ने ऐसा ही किया। जब वह घर पर वापिस आया तो क्या देखता है कि पत्र लाने वाला व्यक्ति घबराया हुआ आ रहा है। वह बोला कि मैं भूल से आपके यहां भी एक पत्र दे गया था। उसी दिन सन्ध्या को ली रोय नामक फ्रैंकलिन और रशियन राजकुमार का मित्र फ्रैंकलिन के पास आया और कहने लगा कि राजकुमार को एक भूल हो जाने के कारण बड़ा खेद है। रशिया ने अभी अमेरिका की स्वतन्त्रता स्वीकार नहीं की है इस कारण राजकुमार से तुम न मिल सकोगे। किंतु, मुझे उसने तुम्हारे पास यह संदेशा लेकर भेजा है कि—"मेरे हृदय में फ्रैंकलिन के प्रति

---

*'Visiting Card.

सद्भाव हैं और उसको मैं सम्मान की दृष्टि से देखता हूं"। इस पर फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया कि—"ऐसे सम्मान का मैं निरादर नहीं करता; किंतु, उसके पाने को लालायित भी नहीं हूं। रही मिलने की बात सो मैं अपनी इच्छा से तो आही न रहा था। मुझे ऐसी सम्मति मिली कि पत्र मिलने पर नियमानुसार मुझे जाना चाहिये इसी से मैं गया था। यदि इसी पर से राजकुमार को असमंजस हो रहा हो तो वह व्यर्थ है क्योंकि उसका तो एक बड़ा सरल उपाय है, भेंट करने को आने वालों की सूची में से वह मेरा नाम काट दें और मैं अपने यहां आये हुए पत्र को जला दूंगा।"

प्रकरण २८ वां

फ्रांस में सर्वाधिकारी राजदूत।

सन् १७७८ से १७८१

इंग्लैण्ड और फ्रास में युद्ध की तय्यारियाँ—एम. जीरोल्ड—जॉन आडम्स—इंग्लैण्ड और अमेरिका में परस्पर समाधान कराने को इंग्लैण्ड का प्रयत्न—इटन—पुल्टने—हार्टली—गुप्तदूत—फ्रेंकलिन के मित्र—वोल्टेर की मुलाकात—सर्वाधिकारी राजदूत नियुक्त हुआ—उसको वापिस बुलवाने के लिये वैरियों का प्रयत्न—आर्थर ली—राल्फ इंमार्ड—सर विलियम जान्स पेरिस में मिलने को आया—केप्टिन कूक का जहाज़ न पकड़ने का विचार—आज्ञापत्र देना—पालजान्स—मारक्विस डी लाफे—सर हम्फीडेवी—फ्रेंकलिन के राजनैतिक और फुटकर लेखों की मि० वोग द्वारा प्रकाशित आवृत्ति—फ्रास की सेना अमेरिका भेजना—उत्तरी यूरोप के देशों का युद्ध में भाग न लेने वाले देश का जहाज़ न पकडने का प्रस्ताव—घरेलु जहाजों को समुद्र में लूट मार करने की आज्ञा देने के सम्बन्ध में फ्रेंकलिन के विचार—आडम्स और वरगेन का पत्र व्यवहार—इस विषय में फ्रेंकलिन का अभिप्राय—वैरियों के दोषारोपण और उनका खण्डन—फ्रेंकलिन के सम्बन्ध में काउण्ट वरगेन का अभिप्राय—उसके पद सम्बन्धी कार्य—कर्नल जान

लारेन्स—फ्रेंकलिन का त्याग पत्र देने का विचार—हार्टली द्वारा सम्मति के लिये इंग्लैंड की नई सूचनाऐं—फ्रेंकलिन का उत्तर—पेसे और ऑटील में उसके मित्र—मेडम ब्रिलन और हेल्वेशियस।

इंग्लैण्ड में फ्रांस के राजदूत ने प्रधान मण्डल को सूचना दी कि संयुक्त राज्य और फ्रांस में परस्पर व्यापार करने और मित्र-भाव रखने के क़ौल क़रार हुए हैं। यह कार्य्य—"हमको युद्ध में संयुक्त राज्य के मित्र की भाँति भाग लेना है" ऐसा कहने क समान होने के कारण लार्ड स्टोर मण्ट को पेरिस छोड़कर वापिस आजाने की आज्ञा दी गई। फ्रास में कभी से युद्ध की तय्यारियाँ होने लगी थीं। टुलोन के निकट एक बेड़ा तय्यार किया गया था जो सेनापति डी० एस्टिंग की अधीनता में अप्रैल मास में अमेरिका की ओर चल दिया। एम. जीरोल्ड को फ्रांस के राजदूत की भाँति अमेरिका भेजने का प्रस्ताव होजाने से वह भी इसी बेड़े के साथ अमेरिका गया। सीलास डी ने फ्रांसीसी अधिकारियों के साथ अमेरिकन सेना में नौकरी देने की प्रतिज्ञा करके कांग्रेस को बड़ी कठिनाई में डाल दिया था अतः उसको वापिस बुला लिया गया। वह भी इसी बेड़े के जहाज़ में अमेरिका गया। उसके स्थान पर मि० जॉन आडम्स की नियुक्ति हुई। डीन जाने की तय्यारी में लग रहा था इतने ही में जॉन आडम्स आ पहुँचा।

इंग्लैण्ड के मंत्रियों को विश्वास हुआ कि अब निश्चय ही अपनी धारणा से कहीं अधिक व्यापक और भारी झगड़ा होगा जिसका फल भी कदाचित् गहरा हो। ऐसा समझा जाने लगा कि

कुछ समय में स्पेन भी फ्रांस का ही अनुकरण करेगा अतः यह अत्यन्त आवश्यकीय प्रतीत होने लगा कि अमेरिका के साथ कुछ ऐसी शर्तों के साथ समाधान किया जाय जिनके कारण राजा की भी कोई हानि न हो और पार्लामेंट की प्रतिष्ठा भी बनी रहे। इसके लिये पार्लामेंट में खूब वाद-विवाद होने के पश्चात् यही निर्णय हुआ कि कांग्रेस के साथ सधि करने के लिये प्रतिनिधि भेजे जायँ और उनको इतना अधिकार दिया जाय कि वे किसी प्रकार भी प्रयत्न करके समाधाना करावें।

इन दिनों में उपयुक्त विचार को कार्य रूप में परिणत करने को कुछ गुप्त दूत भी भेजे जाने लगे जो विशेष कर डा० फ्रेंकलिन को फोड़ने का प्रयत्न करते थे। फ्रांस के साथ क़ौल क़रार न होने से पहले भी फ्रेंकलिन के पास एक व्यक्ति आया था जिसका नाम हटन था। यह व्यक्ति वयोवृद्ध और प्रधान मण्डल का विश्वासपात्र था। उसको फ्रेंकलिन ने उत्तर दिया कि समाधान की शर्तों को बतलाने का मुझे अधिकार नहीं है। किंतु, तुम जो कुछ कहना चाहो उसको सुनने और विचार करने को मैं सहर्ष तय्यार हूँ। इस पर हटन वापिस लन्दन चला गया और वहाँ से उसने पत्र भेजा कि मुझे किस प्रकार की शर्तें कहनी चाहिये इसके लिये सूत्र रूप से आप कुछ सूचना देंगे तो बड़ी कृपा होगी, मुझे ऐसा जान पड़ता है कि अमेरिका को स्वतंत्रता के अतिरिक्त और सब प्रकार के अधिकार मिल जायँगे। इसके उत्तर में फ्रेंकलिन ने लिखा कि स्वतन्त्रता दिये बिना किसी को संधि हो जाने की आशा नहीं करनी चाहिये।

कुछ समय पश्चात् हटन के पीछे विलियम पुल्टने नामक पार्लामेंट का एक योग्य सभासद इसी खटपट के लिये फ्रेंकलिन

के पास आया। पेरिस में आकर उसने अपना नाम विलियम्स रक्खा। उसको लार्ड नार्थ ने भेजा था; परन्तु, सरकारी तौर पर उसे किसी प्रकार का कोई अधिकार नहीं दिया गया था। उसने वहाँ आकर फ्रेंकलिन से बातचीत की और उठते समय उसे संधि-पत्र का एक मस्विदा दिखाया। फ्रेंकलिन ने शीघ्र ही इसको यह उत्तर दिया कि एकत्र हुए राज्य अपनी प्रसन्नता से ग्रेट ब्रिटेन की अधीनता में आजायँ ऐसा अब नहीं हो सकता। तुमने मुझे जो शर्तें दिखाई हैं उन पर से मुझे ऐसा जान पड़ता है कि हम पर पार्लमेंट की पूर्ण सत्ता है ऐसा विचार अभी प्रधान मण्डल के हृदय में से नहीं निकल पाया है। उनकी सम्भवतः ऐसी धारणा है कि संधि करने के पश्चात् जो अधिकार वे हमें दें वे भी उनकी महरबानी में दाखिल हैं। इधर अमेरिका में हम लोगों के विचार इसके बिल्कुल विपरीत और भिन्न हैं। ऐसी दशा में इन शर्तों के अनुसार यहाँ या वहाँ कोई संधि करना स्वीकार करेगा यह आशा करना व्यर्थ है ·····इंग्लैण्ड के प्रति इस समय भी मेरी इतनी सहानुभूति है कि उसकी ख़ातिर तथा युद्ध में मनुष्यों की दुर्दशा न हो इसके लिये आप लोगों की भाँति मैं भी अन्तःकरण से शान्ति स्थापित हुई देखने का अभिलाषी हूँ। संधि करने का सब से सुगम उपाय यह है कि इंग्लैण्ड को अमेरिका की स्वतंत्रता स्वीकार करना तथा उसके पश्चात् युद्ध बन्द रखने को हमारे साथ संधि सम्बन्धी क़ौल--करार करना और फ्रांस की भाँति मित्रता, संधि और व्यापार सम्बन्धी पृथक् क़ौल--क़रार करने चाहिए।

संधि सम्बन्धी अपने किये हुए प्रयत्नों में असफल हो जाने के कारण मंत्रीगण निराश होकर प्रयत्न रहित हो गये हों सो नहीं। उन्होंने डेविड हार्टली नामक पार्लमेण्ट के एक दूसरे सभासद्

को इसी कार्य के लिये फिर भेजा। हार्टली ने अमेरिका के सम्बन्ध में सरकार के बढ़ाये हुए अन्याय पूर्ण क़दमों के सामने बड़े ज़ोर का आन्दोलन चला रक्खा था किंतु उसकी कार्यप्रणाली और बर्ताव ऐसा उत्तम था कि उस पर दोनों पक्ष वाले भरोसा करते थे। जिस समय फ्रैंकलिन इंग्लैण्ड में था उस समय उस की हार्टली से बड़ी घनिष्ट मित्रता हो गई थी, जो अब पत्र व्यवहार के रूप में चल रही थी। हार्टली बड़ा दयालु था। वह इंग्लैण्ड में रक्खे हुए अमेरिकन कैदियों की बड़ी देख भाल और सँभाल रखता था, समय २ पर उन से मिलता रहता था तथा उनके दुःख दूर करने को चन्दा एकत्रित करवाता रहता था और उनकी ओर से मंत्रियों से मिल २ कर उनकी अदला बदली करवाने का प्रयत्न करता रहता था। उसको फ्रैंकलिन के विचार जानने को भेजने के लिये प्रधान मण्डल ने बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया था। हार्टली ने फ्रैंकलिन के आगे समाधान सम्बन्धी एक भी शर्त प्रगट नहीं की। केवल उससे इतना ही पूछा कि:—
"सम्मति करने के लिये अमेरिका अन्य देशों की अपेक्षा इंग्लैण्ड को श्रेष्ठ अधिकार देगा या नहीं और इग्लैण्ड की श्रेणी मे रह कर वहाँ के वैरियों के साथ युद्ध करना उसके लिये अनिवार्य्य हो जायगा या नहीं? यदि इङ्गलैण्ड फ्रांस के साथ युद्ध करे तो अमेरिका के निवासी फ्रांस के साथ रहकर इग्लैण्ड से युद्ध करेंगे या नहीं?" इन में से फ्रैंकलिन ने पहले प्रश्न के उत्तर में तो नाहीं करदी और दूसरे प्रश्न के उत्तर मे कहा कि फ्रांस ने हमारे साथ मित्रता का बर्त्ताव किया है इसके लिये यदि इग्लैण्ड उसके साथ युद्ध करेगा तो जब तक युद्ध जारी रहेगा हम उसके साथ मेल नहीं कर सकते। सारांश यह कि इस सम्बन्ध में जैसा उत्तर हार्टली के पूर्ववर्ती जासूस लेकर लौटे थे उसी अवस्था में उसको भी जाना पड़ा।

पेरिस से प्रस्थानित होते समय हार्टली ने फ्रेंकलिन को एक पत्र लिखा जिसका आशय यह था कि—"जिस समय कोई लड़ाई झगड़े का समय आजाय तब तुम अपनी पूरी २ रक्षा और सम्भाल रखना। यदि ऐसा समय आ उपस्थित हुआ तो क्या होगा यह मैं नहीं कह सकता, क्योंकि मनुष्य बड़े उपद्रवी होते हैं।" इसके उत्तर में फ्रेंकलिन ने लिखा कि:—"तुम्हारी हितकारी सूचना के लिये मैं अनुग्रहीत हुआ। अपनी दीर्घायु मैं लगभग पूरी करने को आया हूँ, इस कारण जितनी आयु शेष है उसकी मैं कोई आवश्यकता नहीं समझता।" किसी बजाज की दूकान पर थोड़े से कपड़े के लिये ग्राहक बड़ी सिरफोड़ी करता है उसी भाँति मैं भी यह कहने को तय्यार हूँ कि—"यह टुकड़ा किसी काम का नहीं है अतः इस को देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है तुम इसका जो कुछ मूल्य देना चाहते हो देकर इसे ले जाओ। मेरे जैसे बुड्ढे आदमी का सब से सरल और उत्तम उपयोग तो यही है कि उसे उसको स्पष्टोक्ति के लिये मार डाला जाय।"

उस समय ऐसा भी विदित हुआ था कि फ्रेंकलिन के आस पास कुछ गुप्तचर फिरा करते हैं। ऊपर जिस पत्र का उल्लेख हो चुका है उसके पश्चात् पेरिस मे फ्रेंकलिन के एक मित्र के पते पर फिर एक चिट्ठी गुम नाम की आई जिसका अभिप्राय यह था:—"हार्टली ने लार्ड केम्डन को आज प्रातःकाल ऐसा संवाद भेजा है कि अमेरिकन राजदूत और विशेष कर डाक्टर फ्रेंकलिन इस समय फ्रास में बड़ी विपत्ति मे हैं। फ्रास के मन्त्रि मण्डल ने उनके पीछे इतने गुप्तचर छोड़ रक्खे हैं कि वे स्वतंत्र होते हुए भी ऐसी स्थिति में हैं मानो उनको किसी ने क़ैद कर रक्खा हो। जो हो, किसी को इसकी चर्चा नहीं करनी चाहिये।" यह पत्र जब फ्रेंकलिन के देखने में आया तो वह

बोला कि:—"कृपा कर आप अपने मित्र को लिख दीजिये कि हार्टली ने ऐसा कभी प्रसिद्ध नहीं किया होगा क्योंकि इस ढंग की उसको यहाँ से कोई खबर नहीं भेजी गई है। हमारे मन में तो ऐसा विचार कभी आया ही नहीं। फ्रांस सरकार भले ही मेरे पीछे हजारों की संख्या में गुप्तचर रक्खे, मुझे इसकी कुछ चिन्ता नहीं, क्योंकि मैं कभी ऐसा कोई कार्य्य नहीं करता जो फ्रांस सरकार से गुप्त हो।"

इसके पीछे इंग्लैण्ड की ओर से फिर एक गुप्तचर भेजा गया जिसने अपना वास्तविक नाम छुपा कर चार्ल्स डी० विसनस्टिन नामक कल्पित नाम रक्खा और फ्रेंकलिन को एक ऐसा पत्र भेजा जिस को देखने पर यह जाना जा सके कि यह ब्रूशेल्स से आया है। इस पत्र में एक ओर मित्र-भाव झलकता था तो दूसरी ओर ऐसा आभास मिलता था मानों उसे धमकी दी जा रही है। साथ ही इस में ऐसा भी उल्लेख था कि अमेरिका का राज प्रबन्ध किस ढंग का रक्खा जाय। पत्र-लेखक ने फ्रेंच लोगों के विषय में लिखा था कि 'उनके पक्ष वालों को फँसाये बिना कुछ न हो सकेगा। इग्लैण्ड एक ऐसा पराक्रमशाली देश है जिस को कोई नहीं जीत सकता। ऐसा भी लिख कर सावधान किया कि "यदि इङ्गलैण्ड के विरोधी बने रहे तो किसी दिन वह बिना तुम्हारे प्राण लिये न छोड़ेगा। पार्लामेण्ट राज्यों की स्वतंत्रता स्वीकार न करेगी और जो करेगी तो जनता उसे कभी अंगीकार न करने की। राज्यों पर से हमारे अधिकार को छीन ले ऐसा कोई दिखाई नहीं देता अतः जैसे २ समय आता जायगा वैसे वैसे हम अथवा हमारे वंशज उस अधिकार को उत्तरोत्तर बढ़ाने का ही प्रयत्न करेंगे। बीच में श्रमित होजाने के कारण इतना भले ही होजाय कि हम कुछ समय के लिये विश्राम करने ठहर

जायँ किन्तु, फिर से ज़बरदस्त लड़ाई आरम्भ करेंगे इसमें भी किसी को किसी प्रकार का सन्देह नहीं समझना चाहिये।" इस प्रकार कई प्रकार की धमकियाँ देने के पश्चात् उसने पत्रान्त में कुछ प्रलोभन दिया। वह इस प्रकार कि:—"राज्यों के लिये नये शासन प्रबन्ध में कांग्रेस को रक्खा जायगा और प्रति सातवें वर्ष उस का एक अधिवेशन हुआ करेगा। फ्रेंकलिन, वाशिंग्टन और आडम्स जैसे प्रख्यात पुरुषों को बड़े २ पद मिलेंगे अथवा जागीरी या कोई ऐसी बख़शीश मिलेगी जिसको वे जीवन पर्य्यन्त भोग सकें। यदि संयोग से अमेरिका के लिये कुछ खास सरदारों की पदवियाँ निकाली जायँगी तो उस में भी यह ध्यान रक्खा जायगा कि अधिक सम्मान तथा प्रतिष्ठा का स्थान इन्हीं को मिले।"

फ्रेंकलिन बड़ा चतुर था। इस पत्र पर से उस ने ऐसा अनुमान किया कि यद्यपि यह पत्र ब्रूशेल्स का लिखा हुआ है तथापि उसका लेखक पेरिस में ही होना चाहिये। इसके अतिरिक्त उस की यह भी धारणा थी कि यह पत्र अवश्य ही इङ्गलैण्ड के मंत्रियों की अनुमति से लिखा गया है इस कारण उसने इस का उत्तर इस प्रकार लिखा:—"तुम ऐसा सोचते हो कि इंग्लैण्ड हमारी स्वतन्त्रता को स्वीकार करेगा ऐसे भ्रान्तिपूर्ण विचार से हम फूल गये हैं। किंतु, इसके विपरीत हमारी तो यह धारणा है कि कदाचित् तुम्हारे मन में ऐसा गुमान है कि हमारी स्वतन्त्रता स्वीकार करने में तुम्हारी हम पर बड़ी भारी कृपा है। इस कृपा को प्राप्त करने की हमारी इच्छा है और इसे तुम दो या न दो किंतु, तुम्हारा इसमें कुछ न कुछ हित अवश्य है। इस कृपा के लिये हमने तुमसे कभी कोई याचना नहीं की। हमारा तो तुमसे इतना ही कहना है कि हमको स्वतंत्र प्रजा न समझोगे तब तक हमारी तुम्हारे साथ संधि नहीं हो सकती। जिस प्रकार तुम्हारे

राजा ने "फ्रांस का राजा" ऐसा नाम मात्र का नाम अनेक वर्ष तक रखा था उसी प्रकार अब भी तुम हमारे अधिकारों का खिलौना हाथ में ले लो और उसे भले ही अपने वंशजों को सौंप दो, किंतु, यदि उसे कभी उपयोग में न लो तो उसमें हमारी कोई हानि नहीं।

लड़ाई बन्द करना अभीष्ट हो तो सब से सरल उपाय यह है कि—"तुम्हे खुले तौर से कांग्रेस के साथ क़ौल क़रार करने को मैदान में आना चाहिये।" हमारे सद्गुणों का, हमारी चतुराई का और हमारी बुद्धिमानी का बखान करने से तथा खुशामद करने अथवा प्रलोभन देने से तुम्हारी धारणा पूरी नहीं हो सकती, जब तुमको ऐसा विश्वास हो जाय तो इसी मार्ग का अवलम्बन करना।"

इस प्रकार बड़े २ पदों का प्रलोभन और जागीरें आदि देने का विश्वास दिलाने वाले इस पत्र के उत्तर में फ्रेंकलिन ने ऐसी २ अनेक बातें स्पष्ट रूप से लिख दीं। अन्त में यह भी लिख दिया कि अमेरिकन लोग इतने पतित नहीं हैं जो स्वार्थ के वश में हो कर सहज में ही अपने देश को वैरियों के हाथ में सौंप दें।

फ्रेंकलिन को फ्रांस में आये हुए अब लगभग १८ मास हो गये। इस अवधि में उसके मित्रों की खूब वृद्धि हुई। टरगो, बफ़न, डी एलेम्बर्ट, कॉन डॉरसेट, ला रॉशे फ़ोकोल्ड, ली रोय, मोरे लेट, रेयनल, मेडली आदि बड़े २ विद्वान और प्रवीण तत्त्वज्ञानियों से उसकी बड़ी घनिष्ट मैत्री होगई। वह फ्रांस की सुप्रसिद्ध विद्वत्परिषद में कई बार जाता और सम्मान प्राप्त करता। वाल्टेर अन्तिम समय पेरिस में आया तब उसने फ्रेंकलिन से मिलने की इच्छा प्रगट की। यथा समय दोनों की भेट हुई तो वाल्टेर ने अंग्रेजी भाषा में बातचीत प्रारम्भ की। बीच ही में

माडम डेनीस बोल उठी कि डाक्टर फ्रेंकलिन को फ्रेंच भाषा आती है, अतः आप इसी भाषा में बातचीत कीजिये ताकि हम भी समझ सकें। इस पर वाल्टेर ने उत्तर दिया कि—"बाई साहब क्षमा कीजिये। फ्रेंकलिन की मातृभाषा से मैं अनभिज्ञ नहीं हूँ, यह उन्हें विदित हो जाय इसी से मैं ऐसा करता हूँ और इसमें मैं अपना गौरव समझता हूँ।"

फ्रांस के साथ खुले तौर से मित्रता करने से पहिले जिस प्रकार अमेरिकन राजदूतों का काम चलता था उसी प्रकार उसके पश्चात् भी चलने लगा। प्रतिदिन नौका सम्बन्धी बहुत सा करने का काम आता। पकड़े हुये जहाज अब बिना रोक टोक के फ्रेंच बन्दरों में आ सकते थे, उनको बेचने का काम राजदूतों को करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त फ्रेंच सरकार की ओर से समय २ पर आर्थिक सहायता मिलती रहती थी वह और अमेरिका से जो माल आता उसको जहाजों द्वारा भेजना, युद्ध का सामान खरीदना और इसी प्रकार के और भी कई आवश्यक कार्य एक पर एक चलने लगे। इस सारे काम के करवाने में फ्रेंकलिन को जान आडम्स की ओर से अच्छी सहायता मिलती थी।

फ्रेंकलिन से सभी श्रेणी के लोग मिलने को आया करते थे और कई प्रकार की पूछताछ तथा प्रार्थनाएँ किया करते थे। एक दिन का वर्णन यहाँ दिया जाता है:—

"पेसे, ता० १३ दिसम्बर सन् १७७८; आज मेरे पास एक मनुष्य आया जिसने कहा कि मैंने एक ऐसे यंत्र की खोज की है जो जल, वायु और अग्नि म से बिना किसी की सहायता लिये स्वतः चलता है और बड़ी शक्ति रखता है। उसको मैंने प्रयोग मे लाकर आजमाइश करके देख लिया है। यदि तुम मेरे घर पर आओ तो उसे दिखा सकता हूँ। यदि खरीदना चाहोगे तो मैं दो

सौ लुई* उसके मूल्य-स्वरूप लेकर तुमको दे दूंगा। यह बात मेरे मानने में नहीं आई। किंतु, फिर भी मैं ने उसके घर पर जाकर देख आने को कह दिया है।"

मोन्सियर काडर नामक एक व्यक्ति ऐसी प्रार्थना लेकर आया कि मुझे ६०० मनुष्य दो तो मैं उन की सहायता से इङ्गलैण्ड और स्काटलेण्ड की सीमा में जाकर तमाम गाँवों को जला दू और वहाँ क निवासियों को घेर कर ऐसी त्रास दूं कि अमेरिका मे अंग्रेजों का जोर बहुत कम हो जाय। मैंने इस को शाबासी देकर कहा कि तुम्हारा कहना ठीक है। किन्तु, मैं इस बात को पसद नहीं करता, क्योंकि प्रथम तो ऐसे कार्य्यों के लिये मेरे पास पैसा नहीं है दूसरे इस देश की सरकार वैसा करने के लिये मुझे आज्ञा भी नहीं दे सकती।

एक मनुष्य इस अभिप्राय से आया कि-मुझे उत्तेजना दो और सरकार मे मेरा परिचय कराओ। कारण मैंने ऐसी युक्ति का काम किया है कि जिस में कोई भी सैनिक अपने हथियार तथा कपड़े और चौबीस घंटे तक चल सके इतनी खुराक अपने पास छिपा कर रख सकता है और देखने पर साधारण यात्री की भाँति प्रतीत हो सकता है। इस रीति के अनुसार किसी भी स्थान पर—चाहे जिस नगर में—एक एक करके अनेक मनुष्य सेना में भरती किये जा सकते हैं और आवश्यकता के समय उन्हे एकत्रित करके एकदम वैरी पर आक्रमण किया जा सकता है। इस के उत्तर में मैंने कहा कि मेरा सेना सम्बन्धी कार्य्यों से कोई सम्बन्ध न होने के कारण इस विषय में मैं तुम्हे अपनी ओर से कुछ मत नहीं दे सकता। अच्छा हो, यदि तुम

---

* एक प्रकार की फ्रेंच मुद्रा।

यहाँ के सेनाध्यक्ष से मिलो। इस पर वह बोला कि यहाँ मेरा किसी से परिचय नहीं है इस कारण मैं नहीं मिल सकता। इस प्रकार के अनेक व्यक्ति अपना २ अभिप्राय लेकर प्रायः प्रति दिन मेरे पास आया करते हैं और आते भी बहुत बड़ी संख्या में हैं जिन से मिलने जुलने और बातचीत करने में मेरा बहुत सा समय नष्ट होता है। सम्भव है, इन में कोई व्यक्ति ऐसा भी आता हो जिस की सम्मति के अनुसार कार्य करना उपयोगी हो सके; परन्तु, मैं तो अपने आस पास के छल कपट पूर्ण वायुमण्डल को देख कर ऐसा सावधान हो गया हूँ कि उनको 'नकार' के अतिरिक्त मुझे कोई उत्तर देते नहीं बनता।

आज एक विद्वान की ओर से एक पुस्तक आई है जिन से मेरा कभी परिचय नहीं हुआ। इस में किसी अँधेरी कोठरी मे किये गये कुछ प्रयोगों के साथ अग्नि के मूलतत्वों का विवेचन किया गया है। यह पुस्तक अच्छे ढग से लिखी गई जान पड़ती है। भाषा अंग्रेजी है किन्तु, लेखन शैली फ्रेंच जैसी विदित होती है। मेरी इच्छा है कि इस में के कुछ प्रयोग करके देखूँ। इस के अतिरिक्त मैं इस पर अपनी और कोई सम्मति नहीं दे सकता।

डाक्टर फ्रैंकलिन और मि० आडम्स ने कांग्रेस को लिखा था कि तीन वकीलों की आवश्यकता नहीं क्योंकि तीनों का कार्य्य एक ही व्यक्ति इस से बहुत थोड़े व्यय में भली प्रकार कर सकता है। इस सूचनानुसार १४ सितम्बर को केवल फ्रैंकलिन ही सर्वाधिकारी राजदूत की भाँति नियुक्त किया गया। मि० आडम्स वापिस अमेरिका गया और मि० ली कुछ दिन तक फिर वहीं रहा। उस के पास स्पेन के राजदूत की भाँति कुछ कार्य्य था, किन्तु, वह स्पेन के दरबार में फिर नहीं गया।

फ्रेंकलिन ने सरकारी अथवा सार्वजनिक हित के जो जो कार्य किये उसका सारा वर्णन इस पुस्तक में नहीं किया जा सकता। इसी से ऊपर मुख्य २ बातों का बहुत संक्षेप में उल्लेख किया गया है। फिर भी उस को बदनाम करने और अपने देश बन्धुओं की दृष्टि में गिराने के लिये अनेक अदूरदर्शी व्यक्तियों ने बहुत प्रयत्न किया था उस का कुछ दिग्ददर्शन कराना यहां अनुचित न होगा।

फ्रेंकलिन के विरोधियों मे सब से अग्रणी मि० आर्थरली था। इस का जन्म वर्जिनियाँ में हुआ था और रिश्ते में वह रिचर्ड हेनरी ली का भाई होता था। झगड़ा होने से कुछ वर्ष पूर्व वह लन्दन गया था और वहाँ जाकर उसने बेरिस्टरी की परीक्षा पास करके वकालत करना शुरू की थी। वह बुद्धिवान था, लिखने में पटु था और स्वदेश हित के कार्य्यों में भाग लिया करता था। किन्तु, उसका स्वभाव अच्छा नहीं था। वह किसी का विश्वास नहीं रखता था, प्रतिस्पर्द्धा को पसन्द नहीं करता था और उसके सम्बन्ध में कोई उस से मिलता तो झगडा मिटाने के बदले वह और बढ़ा देता था। जिस समय डा० फ्रेंकलिन लन्दन में मसाच्यु सेट्स के प्रतिनिधि पद पर था तो ऐसा विचार हो रहा था कि यदि वह अपने पद से त्यागपत्र दे दे तो उस स्थान पर मि० ली की नियुक्ति कर दी जाय। किन्तु, कारण वश फ्रेंक-लिन को इङ्गलैण्ड मे अधिक रहना पड़ा और ली को सफलता न मिल सकी। उसी समय से उसके मन में फ्रेंकलिन के प्रति कुछ दुर्भाव उत्पन्न हो गये थे। ली को भरोसा हो गया था कि फ्रेंकलिन जीते जी अपने पद से त्याग पत्र न देने का इस कारण उस पर जैसे बने वैसे समय २ पर कुछ दोषारोपण कराते रहना चाहिये। ऐसे कुविचार से उसने मसाच्यु सेट्स की राज्य

मण्डली के मुख्य २ सभासदों को पत्र लिखने आरम्भ किये। फ्रैंकलिन इस विरोध-भाव को न जान पाया था, इस कारण वह प्रत्येक बात में ली की सम्मति लिया करता था और उसको अपना हितैषी समझे हुए था। अस्तु। ली के तत्कालीन आरोपों से यद्यपि फ्रैंकलिन का कुछ बना बिगड़ा न था, तथापि कुछ व्यक्तियों के हृदय में उसकी ओर से कई बातों के लिये सन्देह अवश्य उत्पन्न होगया था जो चिरकाल तक बना रहा।

फ्रैंकलिन फ्रांस में आया उस से पहिले डीन और ली मे कुछ पारस्परिक मन मुटाव होगया था। युद्ध की सामग्री अमेरिका भेजने की सब से सरल और सुविधाजनक कौनसी रीति है इस विषय में बोमारशे ने ली का अभिप्राय पूछा था और उस की सम्मति के अनुसार कुछ व्यवस्था भी की थी। ली की ऐसी धारणा थी कि सामग्री भेजने में कार्य्य-भार तो सारा मुझ पर ही आवेगा। किन्तु, डीन कांग्रेस के प्रतिनिधि रूप से पेरिस आ गया और उसने बोमारशे से मिल कर सब प्रकार की व्यवस्था कर ली। कारण कि कांग्रेस की आज्ञानुसार यह कार्य्य उसके अकेले के अधिकार का था। यह बात सुन कर ली पेरिस गया और डीन पर अपने कार्य्य में हस्तक्षेप करने का दोषारोपण करके उस का बोमारशे से झगड़ा करवाना शुरू करा दिया,। किन्तु, सफलता न मिलने के कारण वह खिन्न होकर वापिस लन्दन चला गया।

पेरिस में जिस समय तीनों वकील मिले उस समय ली का रुख इस प्रकार झगड़ा बढ़ाने की ओर था। उसके ६-७ मास तक स्पेन और जर्मनी की ओर जाते रहने के कारण फ्रैंकलिन और डीन ने बड़ी निश्चिन्तता से कार्य किया। किंतु, वहां से लौट आने पर अपने वहमी और अदूरदर्शी स्वभाव के कारण उसने

फिर झगड़े के बीज बोना शुरू किया। अपने सहयोगियों के किये हुए कार्य्यों में उसने बहुत सी त्रुटियाँ दिखाई और ऐसा प्रसिद्ध कर दिया कि इन्होंने व्यर्थ मे ही बहुत सा रुपया उड़ा दिया है। इन्होंने अपने मित्रों को भी खूब खिलाया है और खुद भी उनसे कमीशन आदि ठहरा कर अपने घर बना लिये हैं। वह इतने से ही चुप हो गया हो, सो नहीं। कांग्रेस के सभासदों को लिखे हुए पत्रों में भी वह डीन और फ्रैंकलिन की प्रामाणिकता में सन्देह प्रकट करने लगा। यद्यपि अपने कथन का उसके पास कोई प्रमाण न था किंतु, मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा होता है कि बिना प्रमाण की बात से भी उसके हृदय पर कुछ प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। सन् १७७७ के अक्टूबर तक तो कुछ पत्र कांग्रेस के सभासदों को छोड़ कर ली के भाई तथा सेम्युएल आडम्स के पास तक पहुंच गये थे जिनमें ली ने लिखा था कि मेरे सहयोगियों की असावधानी और स्वार्थपरता के कारण फ्रांस में अमेरिका का कार्य्य बड़े झमेले में पड़ गया है। ये लोग मेरी उपयोगी सूचना और सम्मति पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते। मेरा उन पर कुछ दबाव भी नहीं है जो मैं कुछ विशेष कह सकूँ। इन पत्रों में ली ने ऐसा भी लिख दिया था कि मुझे कहाँ नियुक्त करना इसके लिये जब कांग्रेस में कोई बात चले तो मुझे फ्रांस के दरबार में ही रखाने की चेष्टा की जाय, कारण कि यह दरबार मुख्य है। इन पत्रों में उसने फ्रैंकलिन को वियेना और डीन को हालैण्ड भेज दिये जाने की सम्मति दी थी। ली ने एक पत्र में लिखा कि—"मेरी सूचना के अनुसार मुझे फ्रांस में रखा जाय और फ्रैंकलिन तथा डीन को वियेना और हालैण्ड भेजा जाय तो जिनके द्वारा सरकारी पैसा उड़ा है उनसे हिसाब माँगने की मुझे सत्ता मिलेगी। यदि ऐसा न होगा तो ये लोग हिसाब नहीं देंगे, और दे भी देंगे तो वह कल्पित और झूँठा होगा इस प्रकार जिन लोगों

को सरकारी पैसे की लूट में भाग मिलने वाला है उनकी सहायता से लूट खाने वाले लोग न पकड़े जायँगे, यदि मेरे कथनानुसार व्यवस्था की जायगी तो सोचा हुआ कार्य शीघ्र ही पूरा हो जायगा।

ली की धारणा कैसी थी, यह ऊपर के शब्दों से स्पष्ट हो जाता है, अतः इस सम्बन्ध में अधिक विवेचन करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। ली ने ऐसी खटपट कई मास तक चलाई। एक समय उसने ऐसी खबर फैला दी कि डाक्टर फ्रैंकलिन ने लूट मार करने के लिये एक जहाज़ भेजा है और उसके द्वारा जो लाभ होगा उसमें उसने अपना भाग भी रक्खा है। दूसरी वार उसने ऐसी बात प्रसिद्ध कर दी कि फ्रैंकलिन और कांग्रेस के कार्यकर्त्तागण मिल गये हैं और खूब पैसा खा रहे हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन बातों में सत्य का बिल्कुल अंश न था। ली अपने अनुचित स्वार्थ साधन के लिये ही यह सब कर रहा था। उसे कुछ सफलता न हुई। किंतु, इस से यह नहीं हुआ कि वह निराश होकर पीछे हट गया हो। उसकी बातें बिल्कुल झूँठी और निर्मूल हैं यह जानते हुए भी लोगो ने उनको किसी अंश तक सत्य मान लिया। कांग्रेस में उस समय इतना मतभेद और पक्षपात चल रहा था कि विरोधियों का ऐसे दोषारोपणों को सत्य मान लेना कोई आश्चर्य की बात न थी।

फ्रैंकलिन के विरोधियोंमें मि० राल्फ ईजार्ड नामक व्यक्ति भी एक था। टस्कनी के दरबार में नियुक्त हुए वकील की भाँति वह दो वर्ष तक पेरिस में रहा था; किंतु, वहाँ कोई अधिक काम न होने के कारण उसको वापिस बुला लिया गया था। फ्रैंकलिन के साथ उसका विरोध होने के दो कारण थे। वह चाहता था कि फ्रान्स के साथ जो मित्रता करने के क़ौल क़रार चल रहे हैं उनमें मेरी सम्मति ली जाय और फ्रैंकलिन ने उससे यह सोचकर

सम्मति नहीं ली थी कि फ्रांस सरकार के साथ उसकी नियुक्ति का कोई सम्बन्ध नहीं है। इस बात को ईजार्ड ने बुरी समझी और उसने फ्रेंकलिन से इसका कारण पूछा। किंतु, कारण पूछने का उसको कोई अधिकार न था, अतः फ्रेंकलिन ने कुछ उत्तर न दिया। इससे ईजार्ड ने अपना अपमान समझा और यहीं से विरोध का बीज-वपन हुआ। दूसरा कारण यह था कि जब से फ्रेंकलिन फ्रास में सर्वाधिकारी राजदूत हुआ तब से यूरोप के दूसरे दरबारों में कांग्रेस के भेजे हुए राजदूतों को जाने वाला रुपया भी उसी के द्वारा जाने लगा। इसके अतिरिक्त सारे राज-दूतों का वेतन भी उसी के हाथ से दिया जाने लगा। ईजार्ड को फ्रेंकलिन ने बारह हज़ार पौण्ड दिये थे। किंतु, टस्कनी के दरबार में जाने का प्रसङ्ग न आने से कांग्रेस की ओर से सूचना न आ जाय तब तक अधिक रुपया देने से फ्रेंकलिन ने नाहीं कर दी। इससे ईजार्ड अप्रसन्न हो गया और उसी दिन से उसके साथ प्रत्यक्ष विरोध दिखाने लगा।

उपर्युक्त दोनों व्यक्तियों के साथ मिलकर उनके दूसरे मिलने वाले लोग जो झूँठी सच्ची बातें फैलाते थे उससे कांग्रेस में फ्रेंक-लिन के विरुद्ध विचार होने लगा। उस समय फ्रेंकलिन ने यह आवश्यक नहीं समझा कि अपने को सच्चा और निर्दोष प्रमा-णित करने के लिये किसी को कुछ लिखे। उसके विरुद्ध जो जो षड्यन्त्र रचे जाते थे उन सबकी उसको ख़बर थी और षड्यन्त्र कारियों से भी वह अनभिज्ञ नहीं था। क्योंकि इस सम्बन्ध में उसके मित्रों से उसको समय २ पर सूचना मिलती रहती थी। उसके मित्रों ने उससे बहुत कहा कि सर्वसाधारण की जानकारी के लिये वह अपने विषय में कुछ लिखा पढ़ी करे; किंतु वह तो अपनी प्रामाणिकता पर भरोसा रख कर चुपचाप बैठा रहा।

उसको मौन देखकर अमेरिका में उसके विरुद्ध उड़ती हुई बातों को लोग सच्ची समझने लगे और अन्त में एक दिन ऐसा आया कि उसको वापिस बुला लेने के लिये कांग्रेस में प्रार्थना पत्र पेश हो गया। उस समय ३५ सभासद् उपस्थित थे जिनमें से ८ व्यक्ति उसको वापिस बुला लिये जाने के पक्ष में थे और २७ ने अपना मत इसके विरुद्ध दिया था। विरुद्ध मत देने वाले सभी व्यक्ति फ्रेंकलिन के मित्र न थे किंतु, वे भली प्रकार जानते थे कि वह चाहे जैसा हो किंतु, उसकी जगह का काम कर सकने वाला उसके जैसा कोई योग्य व्यक्ति दिखाई नहीं देता।

अपने विरोधियों के सम्बन्ध में फ्रेंकलिन ने जो विचार प्रकट किये हैं उन में से कुछ यहाँ दिये जाते हैं। ली और ईजार्ड के विरोध भाव प्रदर्शित करने के लगभग अठारह मास पश्चात् फ्रेंकलिन ने कांग्रेस की वैदेशिक-विभाग सम्बन्धी कमेटी को लिखे हुए एक पत्र में लिखा कि:—"यूरोप के राजदूतों को हिलमिल कर रहने के विषय में कांग्रेस ने जो सम्मति दी है वह उपयुक्त है। झगड़ा न करने के लिये मैंने तो प्रस्ताव ही किया था और इसी से मि० ली और ईजार्ड की ओर से मुझ पर किये गये आक्षेप और क्रोध से भरे हुए अपमान सूचक पत्र आने पर भी मैंने उनका कुछ उत्तर न देने का निश्चय सा कर लिया है। मुझे ऐसा पता लगा है कि ये दोनों व्यक्ति मेरे विरुद्ध बड़े लम्बे २ पत्र लिखते हैं और ऐसा करने का कारण एक व्यक्ति ऐसा प्रकट करता है कि मैं जो कुछ उसके विरुद्ध लिखता हूँ उसका कोई प्रभाव न होने पावे इसके लिये ही वह ऐसा करता है। किंतु, आप जानते हैं कि मैंने अपने एक भी पत्र में उसके सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा।"

फ्रेंकलिन के दामाद ने एक पत्र में उसको सूचना दी थी कि यहाँ बहुत से आदमी आपके विरुद्ध कई प्रकार की उल्टी सीधी

बातें फैलाया करते हैं। इसके उत्तर में फ्रैंकलिन ने लिखा कि—
ठीक है, इससे मेरा कुछ बनता बिगड़ता नहीं। और यदि कुछ बने बिगड़े भी तो मैं उससे नहीं घबराता। मेरा विश्वास है कि पहिले मुझ से पूछे बिना (उत्तर देने का अवसर न देकर) न्यायी कांग्रेस मुझ पर किये गये मिथ्या रोपों पर कोई ध्यान न देगी। मैंने किसी व्यक्ति की कोई हानि नहीं की और न किसी को व्यर्थ ही अपमानित या कलङ्कित करने की चेष्टा की। किंतु फिर भी लोग मुझसे वैर—भाव रखते हैं और मेरा बढ़ा हुआ सम्मान, सर्व साधारण का मेरे प्रति प्रेम तथा सहानुभूति आदि उनके मनमें ईर्षा उत्पन्न करते हैं, यह आश्चर्य की बात है। दो वर्ष के पश्चात् मि० होपकिन्सन नामक एक सद्गृहस्थ को लिखे हुए पत्र में उसने लिखा कि—"मित्रों और वैरियों के सम्बन्ध में तुम लिखते हो उसके लिये मुझे ईश्वर का आभार मानना चाहिये कि मेरे मित्रों की कमी नहीं है—वलिक उनकी एक बड़ी अतुल निधि है। मेरे मित्र अधिक हैं और वैरी थोड़े हैं यह कुछ बुरा नहीं है। वैरी अपनी भूलों का सुधार करते हैं और आगे वैसा करने का सहसा साहस नहीं करते। प्रशंसा से फूल कर भुलावे में पड़ने से उनका बर्ताव हमें बचाये रखता है और उनका अदूर-दर्शिता पूर्ण वाग्प्रहार मित्रों को अपना हित साधन करवाने को अधिकाधिक प्रेरित करता है। अभी जहाँ तक मुझे विदित हुआ है मेरे दो से अधिक विरोधी नहीं हैं। इनमें भी एक के विरोधी-भाव का कारण तो मैं ही हूँ, कारण कि यदि मैंने उसकी प्रशंसा की होती तो वह मेरा विरोधी न बनता। दूसरे की दुश्मनी का उत्तरदायित्व फ्रेंच लोगों पर है, कारण कि इन लोगों ने मेरा बहुत अधिक सम्मान बढ़ाया जिसको मैंने तो सहन कर लिया; किंतु, इन लोगों से सहन न हो सका। वे जितना मुझे धिक्कारते हैं उतना ही दूसरे भी मुझे नहीं धिक्कारें यह उनसे

नहीं हो सकता, इस कारण वे दुखी होते हैं। इन व्यक्तियों में से एक दूसरे को चाहते हैं उससे अधिक मेरे मित्र मुझको न चाहते होते तो मैं भी दुखी होता।"

इंग्लैण्ड के प्रधानों ने अभी समाधान सम्बन्धी विचारों को रचनात्मक रूप नहीं दिया था। सन् १७७९ के मई मास में मि० विलियम जॉन्स—जो आगे चल कर सर विलियम जान्स हुआ और अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है—पेरिस में आया। रायल सोसायटी के सभासद् की भाँति फ्रैंकलिन के साथ पहिले ही इंग्लैण्ड में उसका परिचय हो चुका था। मंत्रियों की ओर से प्रतिनिधि की हैसियत से आया हूँ ऐसा स्पष्ट रूप से कहे बिना उसने बात ही बात में ऐसे विचार प्रकट किये जिन पर से यह सहज ही में अनुमान हो सकता था कि उसको सिखा पढ़ा कर भेजा गया है। "प्लेबियस के वाक्य" (Fragment of plebius) नामक एक विद्वत्ता पूर्ण लेख उसने फ्रैंकलिन को दिखाया। यह लेख इस प्रकार लिखा गया था मानो आथेन्स की राज्य व्यवस्था पर प्लेबियस की लिखी हुई सुविख्यात पुस्तक में से उसको अक्षरशः उद्धृत कर लिया गया है। केरिया के साथ मित्रता करने वाले ग्रीस के टापुओं के साथ आथेन्स का जो युद्ध हुआ था उसी का इसमें वर्णन किया गया है। ग्रीस के कल्पित युद्ध तथा इङ्गलैण्ड, फ्रांस और संयुक्त राज्यों में चलने वाले सच्चे युद्ध की समानता दिखा कर परिणाम में लिखा है कि युद्ध होने से पहिले लड़ने वाली प्रजा के जो जो अधिकार थे वे उसी प्रकार बने रहे। केवल नामों में परिवर्तन होने से एक मत हुआ। इससे पूर्व प्रजा से जो कुछ कहा गया था उसकी अपेक्षा अब अमेरिका को अधिक उपयोगी शर्तें दिये जाने को कहा गया था, किन्तु, स्वतन्त्रता स्वीकार करने से नाहीं करदी गई थी।

पहिले की भाँति इस वाद विवाद और प्रयत्न का कुछ फल नहीं हुआ।

जिस कार्य्य से मनुष्य जाति का कुछ भी हितसाधन हो उसको स्वयं करने और कार्य्यकर्ताओं को सहायता पहुंचाने के लिये फ्रेंकलिन हमेशा तत्पर रहता था। जिस समय केप्टिन कूक अपनी खोज सम्बन्धी यात्रा से वापिस लौटने की तय्यारी में था तब फ्रेंकलिन ने अमेरिकन जहाज़ों के कप्तानों को लिख दिया था कि केप्टिन कूक के जहाज़ों को पकड़ा या लूटा न जाय, बल्कि मनुष्यता के नाते उन्हें अपना मित्र समझ कर उनकी जो कुछ सहायता की जा सके. की जाय। यथा समय ऐसा ही हुआ और इस सौजन्यतापूर्ण व्यवहार की ब्रिटिश सरकार ने बड़ी क़दर की और जब केप्टिन कूक की इस यात्रा से सम्बन्ध रखने वाली पुस्तक प्रकाशित हुई तो राजा की अनुमति से बोर्ड आफ एडमिरल्टी* ने एक प्रशंसा सूचक पत्र के साथ उसकी एक प्रति फ्रेंकलिन को भेट-स्वरूप भेजी। रॉयल सोसाइटी ने केप्टिन कूक के सम्मान स्वरूप जो एक स्वर्ण पदक तैयार करवाया था वह भी फ्रेंकलिन को दिया गया। इसी प्रकार फ्रेंकलिन ने और भी अनेक ऐसे प्रशंसनीय कार्य्य किये। लेब्रेडोर के तट पर मोरोवियन पादरियों का एक उपनिवेश था वहाँ प्रतिवर्ष लन्दन से खाद्य सामग्री का एक जहाज़ भर कर भेजा जाता था। मि० हटन की प्रार्थना पर फ्रेंकलिन इस जहाज़ को जाने की आज्ञा दे दिया करता था, इस कारण युद्ध के अवसर पर अमेरिकन जहाज़ भी उसे न रोकते थे। एक बार वेस्ट इण्डीज़ के विपद्ग्रस्त लोगों के लिये अन्न वस्त्र लेकर

---

* जल सेना विभाग की कमेटी।

डब्लिन के कुछ परोपकारी लोगों ने एक जहाज़ भेजा था उसको भी फ्रैंकलिन ने विना रोक टोक चले जाने की आज्ञा दे दी थी।

दुखियों के दुःख निवारण करने और अनाथों की सहायता के लिये फ्रैंकलिन सदा तत्पर रहता था। सहायता भी केवल साधारण नहीं, बल्कि जिसको वह आर्थिक संकट में देखता उसको रुपये पैसे देने में बड़ी उदार वृत्ति रखता था। इस प्रकार की उसकी सहायता करना दूसरों के लिये अनुकरणीय कही जा सकती है। एक समय की बात है, जब एक अंग्रेज पादरी फ्रांस में क़ैद था, और कारावास-जनित कष्ट भोग रहा था। उसको कुछ आर्थिक सहायता देते हुए एक पत्र में फ्रैंकलिन ने लिखा था कि "इस समय तुम जैसे आर्थिक संकट में हो, वैसी ही विपत्ति में पड़े हुए जब तुम किसी व्यक्ति को पाओ तो तुम भी उसकी इतनी ही सहायता करना जितनी मैंने तुम्हारी की है। यद्यपि तुम्हारी यत्किञ्चित सहायता करके मैंने अपना कर्त्तव्य पालन किया है तथापि यदि तुम इसे मेरा उपकार समझते हो तो उसका बदला तुम किसी और दुःखी मनुष्य की सहायता करके देना। इस प्रकार थोड़े ही पैसे से अनेक मनुष्यों की सहायता हो सकेगी। सहायता और सहानुभूति का चक्र सदा फिरता हुआ रखना चाहिये क्योंकि मनुष्य जाति अपना एक कुटुम्ब ही तो है!"

पाल जोन्स नामक एक वीर योद्धा अमेरिकन राज्यों में कुछ समय तक नौकर रहा था। उसने बैरियों पर अनेक वार विजय प्राप्त की थी। 'ड्रेक" नामक अंग्रेज़ी जहाज़ को हराने के पश्चात् वह अपने "रेन्जर" जहाज़ को लेकर फ्रांस के निकट आ गया। तब फ्रांस की सरकार ने इंगलैण्ड के पार्श्ववर्ती प्रदेशों पर

आक्रमण करने के लिये एक बड़ी सेना के साथ उसको भेजने का निश्चय किया। इस सेना के दो विभाग थे अर्थात् स्थली और सामुद्रिक। मार्क्विस डी० लाफ़े अमेरिका में अनेक बार विजय और सम्मान प्राप्त कर चुका था अतः उसको इस सेना का सेनापति नियुक्त किया गया और उसके साथ अमेरिकन जहाज़ के कप्तान की हैसियत से पाल जोन्स को भेजा गया। पाल जोन्स को आज्ञा देने का कार्य्य फ्रेंकलिन ने किया। लाफ़े और जोन्स जाने की तय्यारी में लग ही रहे थे कि फ्रांस सरकार ने एक दूसरी व्यवस्था सोची। उसने सारी व्यवस्था को एकदम बदल दिया। किन्तु जोन्स को यह बात पसन्द न आई। वह अपने साथ एक छोटे से जहाज़ी बेड़े को लेकर चल दिया। यथा समय वह बैरियों के पास पहुंचा और अपने पराक्रम से उसने अभूतपूर्व विजय प्राप्त की। इस प्रसग पर लूट में मिली हुई वस्तुओं को बेच कर पाल जोन्स तथा उसके अधीनस्थ कर्म-चारियों ने परस्पर जो भाग किया उसमें उनका झगड़ा हो गया जिसका समाधान करना बड़ा कठिन था। किन्तु, फ्रेंकलिन ने उसमें बड़ी चतुरता दिखाई और उनके झगड़े को सन्तोष जनक रीति से शान्त कर दिया।

सरकारी कार्य्य का बड़ा भारी उत्तरदायित्व होते हुए भी फ्रेंकलिन अपना अध्ययन और मनन बराबर जारी रखता था। सन् १७७९ में उसने पेरिस की रायल इकाडेमी में एक निबन्ध पढ़ा जो बड़ा विद्वत्तापूर्ण था। उसी वर्ष उसके लेखों का संग्रह मि० बेन्जामिन वोगन नामक एक लन्दन निवासी व्यक्ति ने प्रकाशित किया। इसमें लेखों का चुनाव बड़ी उत्तम रीति से किया गया था और आवश्यकतानुसार टीका टिप्पणी भी दी गई थी।

इंग्लैण्ड के साथ संधि करनी पड़े तो वह काम सर्वाधिकारी राजदूत की भांति फ्रेंकलिन से हो सके ऐसा न था अतः उसने कांग्रेस को सूचना दी कि इस कार्य्य के लिये सब प्रकार के अधिकार देकर एक दूसरे राजदूत को भेजा जाय। इसी समय जॉन आडम्स जैसे ही अमेरिका वापिस आया वैसे ही इस कार्य के लिये उसकी नियुक्ति करके वापिस भेज दिया गया।

फ्रांस और अमेरिका में परस्पर मित्रभाव रखने की शर्तें हो जाने के पश्चात् ऐसा प्रश्न उठा कि अमेरिकन सेना की सहायता करने को फ्रास की सेना वहाँ भेजना चाहिये या नहीं ? कुछ लोगों का ऐसा मत था कि ऐसा करना कुछ समझदारी का काम नहीं है। इग्लैण्ड और फ्रांस में चले हुए अन्तिम युद्ध में अमेरिकन सेना ने इंग्लैण्ड की सेना के साथ रह कर सीमा प्रान्त के फ्रासीसी उपनिवेशों के साथ युद्ध किया था इस कारण यह बात सन्देहास्पद थी कि फ्रांसीसी सेना अमेरिकन सेना के साथ रह कर लड़ सकेगी। इस मत के लोगों की धारणा ऐसी थी कि फ्रांस केवल जल सेना और पैसे की सहायता करे तो भी ठीक है। फ्रांस के मंत्रियों का मत भी ऐसा ही था, इस कारण उन्होंने दो वर्ष तक ऐसी सहायता की थी। किन्तु, अमेरिकन राज्यों में अनेकों का विचार इससे विपरीत था, क्योंकि उनका अनुमान ऐसा था कि फ्रांस के साथ आती हुई वैर भाव की भावनाएँ ऐसे संकट के अवसर पर प्रकाश में न आवेंगी और अपनी स्वतंत्रता को जोखम में डालना कोई पसन्द न करेगा। लाफे को विश्वास हो गया था कि यह मत ठीक है। अमेरिका में वह डेढ़ वर्ष तक रहा था। उसके साथ तथा अन्यान्य फ्रेंच शासकों के साथ अमेरिकन लोगों का जैसा मित्रता पूर्ण बर्ताव रहा था उस पर से उनको विश्वास हो गया था कि यदि फ्रांसीसी सेना अमेरिका भेजी

जाय तो अमेरिकन लोग उसके साथ भी वैसा ही प्रेम पूर्ण बर्ताव करेंगे। लाफे ने इस सम्बन्ध में जनरल वाशिंग्टन से बातचीत की थी, उससे उसको भी निश्चय हो गया था कि फ्रांसीसी सेना को अमेरिका भेजने में कोई भय की बात नहीं है। इसके लिये लाफे ने ऐसा करने को फ्रांस के मंत्रियों से प्रार्थना की। उन्होंने पहिले तो कुछ आगा पीछा किया किन्तु अन्त में लाफे की अकाट्य दलीलों से उनको भी विश्वास हो गया कि निस्सन्देह अमेरिकन और फ्रेंच लोग एकत्रित रह कर युद्ध कर सकेंगे। सन् १७८० के प्रारम्भ में काउण्ट डी रेशम्बो की अधीनता में फ्रेंच सेना और केवेलीअर डी हरने के नेतृत्व में जलसेना को अमेरिका भेजे जाने की तयारियाँ होने लगीं।

इस कार्य में लाफे को फ्रेंकलिन से बड़ी सहायता मिली। इन दोनों ने मिलकर अमेरिकन सेना के उपयोग के लिये जो लड़ाई के हथियार, वस्त्र और दूसरी सामग्री का बहुत बड़ा संग्रह प्राप्त किया था, वह भी सेना के साथ भेज दिया। इस शुभ संवाद की बधाई देने और फ्रांसीसी सेना आवे तब उसका स्वागत किस प्रकार किया जाय इसके लिये लाफे जनरल वाशिंग्टन और कांग्रेस से सम्मति लेने को चल दिया।

रशियन सरकार की सूचनानुसार उत्तरी यूरोप के देशों ने लड़ाई में भाग न लेने वाले देशों के सम्बन्ध में कुछ नियम बनाये थे, जो फ्रेंकलिन को इतने पसन्द आये कि बिना कांग्रेस का मत लिये इन नियमों के अनुसार चलने के लिये उसने अमेरकिन जहाजों को आज्ञा भेज दी। पहिले युद्ध होता था तब ऐसा किया जाता था कि समुद्र में जिस स्थान पर बैरियों का माल मिल जाय वहीं पकड़ लिया जाय। यदि युद्ध में भाग न लेने वाले देश के

जहाज पर कोई माल मिलता तो उसको पकड़ लिया जाता और उस के सामान को लेकर खाली जहाज उसके मालिक को वापिस दे दिया जाता। उत्तरी प्रदेशों ने यह नियम बदल कर ऐसा नया नियम कर दिया कि जिस माल पर महसूल न हो ऐसा माल युद्ध में भाग न लेने वाले देश के जहाज पर मिले तो उसको न पकड़ा जाय। यह नियम ऐसा उचित और व्यापारोपयोगी था कि उस को स्वीकार करने में फ्रैंकलिन ने बिल्कुल विलम्ब न किया। उस का अभिप्राय तो यहाँ तक था कि इस से भी अधिक सरल नियम होना चाहिये जिस से व्यापारी लोग युद्ध के अवसर पर अपना २ धधा बिना किसी हरकत के कर सकें और हानि से बचे रहें। युद्ध में भाग न लेने वाले देश के जहाजों को वह अपने मित्र के घर के समान समझता था और कहता था कि यदि ऐसे घर में किसी बैरी का माल भरा हुआ हो तो भी उसकी हानि न करनी चाहिये। कृषक, माली तथा अन्यान्य श्रमजीवी लोग जिन का निर्वाह मजदूरी पर ही होता है और जो मनुष्य जाति की खाद्य सामग्री की पूर्ति करने को निशिवासर परिश्रम करते हैं उनको युद्ध के प्रसग पर किसी प्रकार की हानि पहुँचाना बहुत निन्दनीय कार्य्य है, उनके कार्य्य में किसी प्रकार का विघ्न नहीं डालना चाहिये, क्योंकि उसका जो बुरा परिणाम होता है उसका प्रभाव मनुष्य मात्र पर पड़ता है अतः उन्हे जब तक उनकी वस्तु का समुचित मूल्य न दे दिया जाय, बलात्कार कोई वस्तु न लेनी चाहिये।

फ्रैंकलिन का ऐसा भी अभिप्राय था कि घरू जहाज को युद्ध के समय बैरी के व्यापार को धक्का पहुंचाने के लिये सरकारी तौर पर समुद्र में फिरने की आज्ञा देना किसी को चोरी करने की स्वतंत्रता देने के समान है। इस सम्बन्ध में उसने बड़ा युक्तियुक्त

और विद्वत्ता पूर्ण निबन्ध लिखा है जिस में ऐसी प्रथा को नीति-विरुद्ध, घातक और सुधरे हुए देश के लिये आक्षेपजनक प्रमाणित किया है। वह लिखता है कि—"दूसरे देशों के व्यापारियों पर आक्रमण कर के उनका माल असवाब छीनना और उनको तथा उनके कुटुम्ब को नष्ट करना बहुत बुरा काम है"

यदि इङ्गलैण्ड संधि करना चाहे तो उसके लिये क़ौल क़रार निश्चित करने को किसी व्यक्ति को सर्वाधिकार देकर भेजा जाय ऐसा फ्रैंकलिन ने लिखा था और उस पर कांग्रेस ने जान आडम्स को भेजा था यह पहिले लिखा जा चुका है। मि० आडम्स को पेरिस में आये हुए कुछ समय हुआ ही था कि इतने ही में ऐसी खबर आई कि कांग्रेस ने निश्चय किया है कि चांदी के सिक्के (डालर) के बदले में काग़ज़ का तमाम चलनी सिक्का पीछा खींच लेना चाहिये। यह निश्चय ऐसा अस्पष्ट था कि वह केवल अमेरिकनों के लिये ही है अथवा विदेशियों के लिये भी इसकी स्पष्टीकरण नहीं होता था। फ्रांस की सरकार यह निर्णय न कर सकी कि उसको क्या करना चाहिये। काउण्ट डी वरगेन ने मि० आडम्स को पत्र लिख कर पूछा कि तुम अमेरिका से अभी आये ही हो अतः यदि यह जानते हो कि इस सम्बन्ध में कांग्रेस का क्या स्पष्ट निर्णय है और उससे उसका क्या उद्देश्य है तो लिखो। आडम्स ने उत्तर दिया कि इस विषय में निश्चित और स्पष्ट रूप से मैं कुछ नहीं लिख सकता किन्तु, मेरा अपना व्यक्तिगत मत तो ऐसा है कि कांग्रेस के निश्चय का अमल अमेरिकनों और विदेशियों सब पर होना चाहिये। अपने मत की पुष्टि में आडम्स ने कुछ दलीलें भी लिख भेजीं। इसको देख कर काउण्ट वरगेन को बड़ा आश्चर्य हुआ। कांग्रेस के विश्वास से फ्रेंच व्यापारियों न कांग्रेस के चलती नोटों को स्वीकार करके सब प्रकार का माल

अमेरिका भेजा था । उस समय यह बात उनके ध्यान में भी न थी कि अपनी ही इच्छा से कोई नोटों का मूल्य घटा देगा इसी से काउण्ट वरगेन का अभिप्राय यह था कि कांग्रेस के निश्चय का उन पर अमल होना अन्याय पूर्ण है । कुछ सप्ताह पश्चात् इस सम्बन्ध में फिर पत्रव्यवहार होने लगा और उसमें संयुक्त राज्य और फ्रांस में परस्पर हुई शर्तें आदि की बातें भी चलने लगीं । अपना मत सच्चा और उचित है ऐसा प्रमाणित करने के लिये मि० आडम्स ने आवेश में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जिनसे काउण्ट वरगेन और फ्रांस के राजा को कुछ बुरा लगा । काउण्ट वरगेन ने सारे पत्र व्यवहार की प्रति लिपियाँ फ्रेंक-लिन के पास भिजवाईं और प्रार्थना की कि आप इनको कांग्रेस में भेज दें । इनको भेजते हुए फ्रेंकलिन ने कांग्रेस के सभापति को लिखा:—

"मि० आडम्स यह समझते हैं कि हमें फ्रांस देश का इतना आभार-प्रदर्शन नहीं करना चाहिये, जितना किया जा रहा है । कारण कि हम जितने उसके कृतज्ञ और ऋणी हैं उसकी अपेक्षा वह हमारा अधिक ऋणी है । मुझे जान पड़ता है कि मि० आडम्स की ऐसी धारणा भ्रान्तिजनक है । हमें इस सरकार के प्रति अधिक विवेक और नम्रता प्रदर्शित करनी चाहिये । यहां का राजा नवयुवक तथा गुणवान है और मेरा विश्वास है कि वह अपने जैसे अत्याचार सहन करने वाले देश की सहायता करने में आनं-दानुभव करता है, और इसी में अपनी कीर्ति समझता है । मेरा विचार ऐसा है कि हमें उसका आभार मान कर उसके आनन्द में वृद्धि करनी चाहिये । यह अपना कर्त्तव्य तो है ही, किन्तु साथ ही इसमें कुछ स्वार्थ भी है । ऐसा न करके और किसी मार्ग का अव-लम्बन करना अपने लिये अनुचित और हानिकारक है । मैं

अथवा दूसरा कोई व्यक्ति अपने देश का जितना भला चाहते हैं उतना ही मि० आडम्स भी चाहते हैं। किन्तु उनका अनुमान ऐसा है कि यदि हम कुछ कठोरता और लापर्वाही रखेंगे तो हमें फ्रांस अधिक सहायता देगा। क्या करना चाहिये, यह निश्चित करने का कार्य कांग्रेस का है।"

फ्रेंकलिन के विरोधी उस पर यह आक्षेप करते थे कि वह फ्रांस सरकार की खुशामद करता है। किन्तु, वास्तव में वह खुशामद कैसी थी यह जानने को उसका ऊपर दिया हुआ पत्र ही पर्याप्त है। इसको खुशामद नहीं कही जा सकती क्योंकि किसी के प्रति उसकी कृपा या उपकार के बदले में आभार प्रदर्शन करना खुशामद नहीं बल्कि न्याय और नीति के अनुसार एक उचित शिष्टाचार है। फिर फ्रेंकलिन को तो उन लोगों से अपने देश-हित के लिये अभी बहुत से काम निकालने थे अतः उन्हें प्रसन्न रखना अत्यन्त आवश्यक और उपयोगी था। इन सब बातों को सोच समझ कर ही फ्रेंकलिन किसी की परवाह न करके अपना कार्य किये जाता था। लोगों में इतनी समझ कहाँ थी जो यह जान पाते कि फ्रेंकलिन की यह खुशामद खुशामद नहीं बल्कि उसकी राजनीज्ञता है। आगे चल कर सर्व साधारण ने देखा कि फ्रांस के राजा तथा मन्त्री सबका उस पर भरोसा है और वे लोग उसे अपना एक विश्वसनीय व्यक्ति समझते हैं। इतना ही नहीं उसके कथन पर सब पूरा २ ध्यान देते हैं और आवश्यकता होने पर उसकी सम्मति के अनुसार कार्य करते हैं। कांग्रेस की आर्थिक अवस्था सन्तोषजनक न होने के कारण पैसे के लिये फ्रेंकलिन को फ्रांस सरकार से बार बार प्रार्थना करनी पड़ती और यह उसी का प्रभाव था जो उसको एक भी अवसर असफल होने का न आया। उसने जब जो कुछ चाहा वैसा ही हुआ। युद्ध के अवसर पर

कांग्रेस फ्रैंकलिन पर हज़ारों हुण्डियाँ लिखती थी किन्तु, वह उन्हें मुद्दत पर सिकार देता था, इसका यही कारण था कि वह जिस समय फ्रांस सरकार से जितना रुपया मांगता फौरन मिल जाता। कुछ समय पश्चात् मि० जे० स्पेन दरबार में तथा मि० आडम्स हालैण्ड दरबार में राजदूत नियुक्त हुए। इन देशों से रुपया प्राप्त हो जाने की आशा से उन पर भी हुण्डियाँ भेजी गईं किन्तु, वे उनको न सिकार सके अतः उनका रुपया भी फ्रैंकलिन पर ही पड़ा। सदा की भाँति इस बार भी उसने फ्रांस सरकार से रुपया मँगवा लिया और कांग्रेस की साख न जाने दी। इस प्रकार रुपया दे देने से सरकार को असुविधा होती है, ऐसा कहा जाता था। किंतु, ऐसा कोई नहीं था जो फ्रैंकलिन से रूबरू नाहीं कर देता। यह सब फ्रैंकलिन के विवेक और विनय का कारण था। उस के विरोधी उस के इस गुण को अधीनता कहते थे और इसी से उन्होंने ऐसी बात प्रसिद्ध कर रक्खी थी कि वह फ्रैंच सरकार की अनुचित ख़ुशामद करके अपने उच्च पद का कुछ विचार नहीं रखता है। इतना ही नहीं, उन्होंने यह बात भी फैला दी थी कि फ्रांस के मन्त्रीगण अपना स्वार्थ-साधन करने के लिये उसको प्रसन्न रखते हैं, किंतु, अन्त में वे अपने को धोखा देंगे। फ्रैंकलिन की कीर्ति को बट्टा लगाने और फ्रांस सरकार का उस पर से विश्वास उठवाने के लिये इस प्रकार अनेक बे सिर पैर की बातें फैलाने में कुछ तथ्य न था और न कोई प्रमाण अथवा सत्यता का ही अंश था। किन्तु, फिर भी इस का परिणाम यह हुआ कि फ्रैंकलिन को पीछा बुला लेने के लिये कांग्रेस में प्रयत्न होने लगा। फ्रांस-स्थित संयुक्त राज्य का राजदूत एम० डी० लालूजर्न फिलाडेल्फ़िया से सन् १७८० के दिसम्बर मास की १५ वीं तारीख़ को काउण्ड वरगेन के नाम लिखे हुए एक पत्र में लिखता है:—"फ्रैंकलिन को पीछे बुला

लेने को कांग्रेस में हर तरह से खटपट चल रही है और मसाच्युसेट्स के प्रतिनिधिगण उसको बुला लेने का बड़ा आग्रह कर रहे हैं।"

उपर्युक्त पत्र भेजने के दो मास पश्चात् काउण्ट डी वरगेन ने उसका उत्तर भेजते हुए लिखा कि:— "यदि डाक्टर फ्रेंकलिन के विषय में तुम से कोई तुम्हारा मत पूछे तो तुम निडर होकर कहना कि उसकी स्वदेशहितैषिता और मनुष्य मात्र के प्रति सद् व्यवहार के लिये हमारा बड़ा ऊँचा मत है। उसके अनेक प्रशस्त गुणों के कारण तथा उसकी सच्चाई और ईमान्दारी में हमारा विश्वास है इस कारण कांग्रेस ने उसके सन्मुख इस समय जो आर्थिक प्रश्न उपस्थित कर दिया है उस पर से ही हम ने उसकी सहायता करने का निश्चय किया है इस कारण कोई भी व्यक्ति यह प्रश्न कर सकता है कि उसका बर्ताव ऐसा है या नहीं जो किसी समय उसके देश के लिये हानिकारक सिद्ध हो और दूसरा कोई भी मनुष्य ऐसा कार्य्य कर सकता है या नहीं जैसा उसने किया है तो हम कहेंगे कि यद्यपि डा० फ्रेंकलिन के प्रति हमारा मत बड़ा ऊँचा है तो भी उसकी अवस्था के विचार से जो उसकी नियुक्ति की गई थी उसके अनुरूप कार्य दक्षता वह न दिखा सका। इसका हमें बड़ा खेद है कि कई आवश्यक बातों की सूचना जो समय २ पर उसे कांग्रेस को देनी चाहिये, न देकर वह चुपचाप बैठा रहता है। फिर भी हमारा ऐसा अभिप्राय है कि उसको इस समय बुलाना उचित नहीं कहीं उसके स्थान पर जो व्यक्ति नियुक्त किया जाय वह नासमझ, झगड़ालू और अभिमानी न प्रमाणित हो जो अपने देश-का अशुभचिन्तक हो। यदि ऐसा हुआ तो उसके साथ हमारा सहयोग न रह सकेगा। नया मनुष्य नियुक्त करने में एक यही बात

विचारणीय है। अतः यही उपाय उत्तम जान पड़ता है कि फ्रैंकलिन की सहायता के लिये ऐसा मनुष्य नियुक्त किया जाय जो बड़ा चतुर, सावधान और विवेकी हो।"

फ्रांस सरकार का फ्रैंकलिन के विषय में कैसा मत था इसका इस पत्र से सहज में ही स्पष्टीकरण हो जाता है। फ्रांस सरकार उसको इसीलिये रखना चाहती हो कि वह खुशामद करने वाला है, यह बात नहीं थी, बल्कि उसकी वृद्धावस्था के साथ २ दो महान रोगों ने भी उसे घेर रक्खा था। एक संधिवात और दूसरा पथरी। इनके कारण उसको कभी २ कई सप्ताह तक रोग-शय्या पर पड़ा रहना पड़ता था। बीमारी के कारण वह निर्बल होता जाता था और किसी कार्य को चाहिये जैसी तेजी के साथ न कर पाता था। इतना होते हुए भी कांग्रेस ने उसकी सहायता के लिये कोई आदमी न दिया। उसे सारा काम था तो स्वयं करना पड़ता था अथवा घरू तौर पर वह अपने पौत्र को बुला लिया करता था। कांग्रेस ने उसको कोई सहायक न दिया इस बात से उस समय और भी आश्चर्य्य होता है जब हम देखते हैं कि मि० जे और मि० आडम्स के सुपुर्द बहुत थोड़ा कार्य होते हुए भी कांग्रेस ने उनको दो ऐसे सहायक दिये थे जो बड़े होशियार और कार्य पटु थे। उधर फ्रैंकलिन को अपने अनेक उत्तरदायित्त्वपूर्ण कार्य्यों के अतिरिक्त फ्रैंच बन्दरों में आने वाले व्यापारिक जहाजों का कार्य भी करना होता था जिसमें उसको बड़ा परिश्रम उठाना पड़ता और बहुत समय देना पड़ता था। फ्रांस के बन्दरों का जो कार्य था उसके लिये एक कमेटी बना कर उसको इस कार्य से मुक्त कर देने के लिये उसने कांग्रेस को कई बार लिखा, किंतु उस पर कोई विचार नहीं किया गया। इस पर से सहज ही यह अनुमान होता है कि उसको

वापिस बुला लेने के लिये उसके विरोधियों के निरन्तर प्रयत्न करने पर भी कांग्रेस ने उसको अपने पद के उपयुक्त समझ कर ही वापिस न बुलाया क्योंकि उसकी योग्यता और शक्ति पर कांग्रेस को पूरा भरोसा था। फ्रांस में जो कुछ कार्य हो रहा था उसकी वह नियमित रूप से कांग्रेस को कोई सूचना न देता था और आर्थिक सहायता के सम्बन्ध में फ्रांस की याचना न करने को भी वह न कहता था उस कारण काउण्ट डी वरगेन फ्रेंकलिन पर दोषारोपण करता था। किंतु, वास्तव में वह अनुचित था। फ्रेंकलिन जानता था कि फ़िलाडेल्फिया में फ्रांस के राजदूत को फ्रांस सरकार की ओर से सब समाचार नियमित रूप से भेजे जाते हैं और कांग्रेस को भी उसकी सूचना हो जाती है इस कारण वह यह आवश्यक नहीं समझता था कि अपनी ओर से भी कांग्रेस को पृथक् सूचना दे। इसका कारण उसकी ओर का कुछ प्रमाद या आलस्य समझना भूल की बात है, क्योंकि उस समय अन्यान्य बातों के लिये किया हुआ फ्रेंकलिन का पत्र व्यवहार इतना विस्तृत और प्रचुर है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उस वृद्धावस्था में भी कार्य करने की उसमें असाधारण शक्ति और योग्यता थी, क्योंकि इस अवस्था में इतना कार्य्य कोई विरला पुरुष ही कर सकता होगा।

फ्रांस सरकार की ओर से प्रति वर्ष लगभग ३० लाख लिवर ऋण दिया जाता था। सन् १७८१ में फ्रेंकलिन ने ४० लाख लिवर प्राप्त किये और ६० लाख फ्रांस सरकार ने सहायता-स्वरूप बख्शीश में दिये। यह रुपया प्राप्त हो जाने पर कांग्रेस के भेजने से कर्नल जॉन लारेन्स फ्रांस में आया और सेना की आवश्यकताएँ बता कर रुपया और सेना सम्बन्धी सामान की सहायता माँगने लगा। फ्रेंकलिन ने लारेन्स की प्रार्थना पर

उसकी बहुत सहायता की, और उससे सफलता भी हुई; किंतु, फ्रांस इतनी अधिक आर्थिक सहायता कर चुका था कि उससे अब सहज में ही आवश्यकतानुसार रुपया मिल जाना ज़रा विचारणीय हो गया था। फिर भी अमेरिका को फ्रांस ने अपनी ज़मानत पर हालैण्ड से एक करोड़ रुपया दिलाना स्वीकार कर लिया।

इसी समय फ्रेंकलिन ने कांग्रेस को अपने पद का त्यागपत्र भेज कर प्रार्थना की कि उसके स्थान पर किसी और व्यक्ति की नियुक्ति कर दी जाय। कांग्रेस के सभापति को लिखे हुए पत्र में से यहाँ कुछ अंश दिया जाता है जिसमें उसने ऐसा करने के कारण दिखाये थे:—

"× × × अब मैं अपने विषय में कुछ प्रार्थना करने की आज्ञा चाहता हूँ। इस सम्बन्ध में अब तक मैंने कांग्रेस को इतना विवश नहीं किया था, किन्तु, अब मेरी आयु का ७५ वाँ वर्ष पूर्ण हो चुका है। गत शीतकाल में मुझे बड़े ज़ोर का संधिवात रोग हो गया था जिससे मुझे बहुत निर्बलता जान पड़ती है। निरन्तर की व्याधि के कारण अब मैं अपनी पहिली जैसी शक्ति प्राप्त कर सकूंगा यह असम्भव सा हो गया है। यद्यपि अपनी मानसिक शक्ति पर मुझे अब भी वैसा ही भरोसा है। चाहे उसमें निर्बलता आगई हो, किन्तु, मुझे ऐसा नहीं जान पड़ता।

"मैं देखता हूँ कि कार्य पटुता में जो चालाकी का मिश्रण होना चाहिये वह मुझ में नहीं है। पहिले वह कुछ था भी, किन्तु, अवस्था के साथ २ उसका भी अब लोप हो गया है। इसके अतिरिक्त इस पद का कार्य बड़ा श्रमसाध्य है, जिसका करना अब मेरी शक्ति से बाहर है। कार्य्याधिक्य के कारण मुझे

चौबीसों घंटे घर पर जुटे रहना पड़ता है। आपकी ओर से आई हुई हुँडियें लेने और उन्हे स्वीकारने से मुझे इतना भी अवकाश नही मिलता कि थोड़ी देर के लिये स्वच्छ वायु में घूम फिर सकूं—व्यायाम करने की तो बात ही दूर रही। पहिले मैं कुछ समय के लिये प्रति वर्ष भ्रमण में निकल जाया करता था, जहाँ वायु सेवन और व्यायाम के लिये मुझे पूरी सुविधा मिल जाती थी। इसी का यह फल था कि मेरा स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहता था। मेरे जैसे वयोवृद्ध व्यक्ति को अपनी आयु बढ़ाने के लिये शरीर की अनेक प्रकार से रक्षा करनी चाहिये जो रात दिन कार्य में लगे रहने के कारण नहीं हो पाती।

"सरकारी कार्य्य के साथ २ मैं लगभग ५० वर्ष से जो कुछ मुझ से बन पड़ता है लोकोपयोगी कार्य भी करता हूँ। उसका अपने देश बन्धुओं की ओर से मुझे खूब सम्मान मिल चुका है अतः इस सम्बन्ध में भी मेरी विशेष लालसा नहीं रही। अपने जाति बन्धुओं के हृदय में मेरे लिये स्थान है, इससे बढ़ कर अपनी सेवा का उत्तम पुरस्कार मेरे लिये और क्या हो सकता है? साधारण स्थिति से लेकर अब तक मैंने जो कुछ सांसारिक आनन्द उठाया है वह मेरे लिये यथेष्ट है और अब मेरी कोई महत्त्वाकांक्षा शेष नहीं है। हाँ, एक आशा और मस्तिष्क में घूम रही है और वह है, अवशिष्ट जीवन का विश्राम। कांग्रेस से मुझे पूरी आशा है कि वह मेरे स्थान पर किसी दूसरे व्यक्ति को भेजकर मेरे जीवन की इस अन्तिम और आवश्यक अभिलाषा को अवश्य पूर्ण करेगी। यहाँ मैं इतना उल्लेख कर देना आवश्यक समझता हूँ और उसकी सत्यता में विश्वास करने का भरोसा दिलाता हूँ कि मैं जो अपने पद से त्यागपत्र दे रहा हूँ उसका यह कारण नहीं है कि जो कार्य्य इस समय हाथ में लिया गया है

उसमें सफलता की आशा नहीं है। न यही बात है कि किसी व्यक्तिगत निर्बलता के कारण मेरा मन नौकरी पर से उचट गया है। ऊपर बताए हुए कारणों के अतिरिक्त मेरे त्यागपत्र देने का और कोई कारण नहीं है। मैं सामुद्रिक यात्रा की कठिनाइयों को झेल सकूं ऐसी मेरी स्थिति नहीं रही है और युद्ध प्रसंग पर क़ैदियों को पकड़ने की ज़िम्मेदारी से मैं पृथक् रहना चाहता हूँ इस कारण शान्ति-स्थापित होने तक मेरा यहीं रहने का विचार है। बहुत सम्भव है, मेरे अवशिष्ट जीवन का यहीं अन्त हो जाय, तो मेरे स्थान पर जो व्यक्ति आवेगा उसके कार्य्य में मेरा ज्ञान और अनुभव आ जाने पर उसमें मैं बड़ी प्रसन्नता मनाऊँगा। यदि वह मुझे किसी योग्य समझ कर कोई सम्मति पूछेगा तो मैं सहर्ष दूंगा और अपनी जान पहिचान से उसका पूरा सहयोग करूँगा।"

कांग्रेस ने फ्रूँकलिन का त्यागपत्र स्वीकार करने से नाहीं कर दी। इतना ही नहीं, बल्कि मि० आडम्स के साथ संधि करने के कार्य्य के लिये जिन चार व्यक्तियों की नियुक्ति की थी, उनमें उसका नाम भी रक्खा। फ्रूँकलिन ने अपनी प्रसन्नता और कार्य-मुक्त हो जाने की कामना से त्यागपत्र दिया था किन्तु, कांग्रेस ने उसे अस्वीकार करते हुए उसको उसी पद पर बना रक्खा यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि कांग्रेस की उसके प्रति बड़ी श्रद्धा थी। उसके विरोधियों को इससे बड़ा मनस्ताप हुआ। मानों कुमार्ग पर जाते हुए उनको किसी ने एकाकी रोकने का चेष्टा की हो। उनको अपने प्रयत्न में सफल होने की आशा न रही। फ्रूँकलिन को भी अनिच्छापूर्वक कांग्रेस का प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा। वह लिखता है:—"मेरी वृद्धावस्था के कारण कदाचित् अपने कार्य में मुझ से किसी समय त्रुटि हो जाय, इस

भय से मैं पृथक् होना चाहता था. किंतु, उनकी धारणा के अनुसार मैं अभी कुछ काम का समझा गया हूँ अतः उनके प्रस्ताव को नहीं टाल सकता। मुझसे जो कुछ टूटी फूटी सेवा हो सकेगी, करूँगा।"

इंग्लैण्ड में रक्खे हुए अमेरिकन क़ैदियों के सम्बन्ध में फ्रेंकलिन और उसके मित्र हार्टली में परस्पर पत्र व्यवहार चल रहा था। इसका लाभ लेकर हार्टली मंत्रियों के आग्रह से बार २ संधि के सम्बन्ध में लिखा करता था। उसकी की हुई सूचनाओं का अभिप्राय ऐसा जान पड़ता है कि उसका पत्र व्यवहार लार्ड नार्थ के देखने में भी आता था और लार्ड नार्थ इस पत्र व्यवहार को पसन्द करता था। इङ्गलैण्ड के प्रधानों का विचार ऐसा प्रतीत होता था मानों वे संयुक्त राज्य को फ्रांस से पृथक् समझ कर अकेले संयुक्त राज्य के साथ ही संधि कर लेने के इच्छुक हैं। किंतु, ऐसा करना कांग्रेस के किये गये क़ौल क़रारों के अनुसार बिल्कुल विपरीत था, क्योंकि उसके अनुसार बिना फ्रांस की सम्मति लिये इङ्गलैण्ड के साथ सधि न करने को संयुक्त राज्य बाध्य थे। पराक्रमी फ्रांस से मैत्रीभाव छोड कर इङ्गलैण्ड के साथ सलाह करने की बात को फ्रेंकलिन पसन्द नहीं करता था। अतः उसने हार्टली को लिखा कि:—"तुम हमारे साथ संधि करो उससे पहिले जिस प्रकार तुम्हें हालैण्ड और स्काटलैण्ड से अपना सम्बन्ध विच्छेद करने की आवश्यकता नहीं उसी प्रकार हमारे लिये भी फ्रांस से अपना सम्बन्ध तोड़ना अनिवार्य नहीं है। फ्रांस के साथ हमारा जो मित्रता का सम्बन्ध है उससे हमारे साथ संधि करने में तुम्हारी कोई हानि नहीं है। यदि यह सूचना लार्ड नार्थ की होती तो सारा संसार यह कहता कि उसका उद्देश्य हमको छोड़कर अपने मित्रोंको हमारा विरोधी बनाने का है।

यह देश हमारी रक्षा के लिये केवल अपनी कृपा से प्रेरित होकर ही युद्ध में आया है। अत हमारा यह धर्म है कि उसके साथ हमारे जो क़ौल क़रार हो चुके हैं, उन्हे हम किसी भी अवस्था में न तोड़ें। स्पष्ट रीति से यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार के चाहे कोई क़ौल क़रार हों या न हों तो भी उसकी प्रसन्नता के अनुसार चलने को हम बाध्य हैं। यदि ऐसी प्रतिज्ञा न की गई हो तो भी प्रामाणिकता की दृष्टि से किसी अमेरिकन को इसके विपरीत इंग्लैण्ड के साथ संधि करने की अपेक्षा अपना दाहिना हाथ काट डालना अधिक उत्तम और श्रेयस्कर है।"

हार्टली की दूसरी सूचना यह थी कि दस वर्ष तक युद्ध बन्द रखना और इस अवधि में कदाचित् इंगलैण्ड फ्रांस के साथ युद्ध आरम्भ करदे तो भी संयुक्त राज्य को फ्रांस की सहायता न करनी चाहिये। इस पर फ्रेंकलिन ने उत्तर दिया कि—"फ्रांस के साथ विश्वासघात कराके तुम हमारी स्थिति ऐसी कराना चाहते हो कि कुछ वर्ष विश्राम लेकर यदि तुम फिर युद्ध आरम्भ कर दो तो हमारी सहायता के लिये कोई खड़ा न हो। हम ऐसे निपट मूर्ख नहीं हैं जो तुम्हारी बात में आकर ऐसा स्वीकार करलें।"

संयुक्त राज्य को फ्रांस से पृथक् करने के लिये ब्रिटिश मन्त्रियों ने बहुत प्रयत्न किया, किन्तु उन्हें सफलता न हुई। यदि अपनी युक्ति में वे कृतकार्य हो गये होते तो अमेरिका की क्या हस्ती थी जो इंगलैण्ड के साथ इतने साहस के साथ अकेला ही अड़ा रहता। इंगलैण्ड ने केवल अमेरिका के साथ ही खटपट न चला रक्खी थी, बल्कि संयुक्त राज्य से पृथक् हो जाने के लिये फ्रांस को भी बहुतसा लालच बता रक्खा था। किन्तु फ्रांस के राजा और वहाँ का मन्त्रिमण्डल फ्रेंकलिन की भांति अन्तःकरण से अपने किये हुए क़ौल क़रारों पर दृढ़ थे। उन्होंने इंगलैण्ड को

स्पष्ट रीति से उत्तर दे दिया कि जब तक तुम संयुक्त राज्य की स्वतन्त्रता स्वीकार न करोगे तब तक युद्ध बन्द करने अथवा संधि करने की बात पर कुछ ध्यान न दिया जायगा।

फ्रांस में फ्रेंकलिन के मित्रों की बहुतायत थी। इसके अतिरिक्त पेसे में उसके पड़ोसियों के साथ उसकी बड़ी घनिष्टता हो गई थी। उसकी सेवा करने और उसके लिये हर प्रकार का कष्ट उठाने को वे सब हमेशा तत्पर रहते थे। मि० ब्रिलन के घर में तो वह ऐसा हिलमिल गया था मानो घर का ही मनुष्य हो। ओरिटल में मेडम हेल्वेशियस नाम की एक वृद्धा और भली स्त्री के घर पर वह प्रायः जाया करता था और वहीं पर लीरोय, लारोशे, फोकोल्ड, ली विलर्ड आदि उसके अन्यान्य मित्र भी आ जाते थे। वृद्धा एक विद्वान और विदुषी स्त्री थी। विद्वानों की सत्सगति में रह कर उसके विचार बड़े परिष्कृत हो गये थे। "संधिवात के साथ बातचीत" जैसे अनेक मनोरञ्जक और लोकप्रिय निबन्धों में से अधिकतर पेसे और ओरिटल में एकत्र हुए उसके मित्रों के मनोरञ्जन के लिये ही लिखे गये थे। ऐसे लेखों से वह अपना दुःख भूल जाता था और अपने मित्रों का भी मनोरञ्जन करता था। पेसे और ओरिटल की मित्रता फ्रेंकलिन वहाँ रहा तभी तक रही हो यह नहीं, बल्कि अमेरिका चले जाने पर भी उसकी आयु पर्यन्त वह पत्र व्यवहार के रूप में जारी रही।

प्रकरण २९ वां

इंग्लैण्ड ने संयुक्त राज्य की स्वतंत्रता स्वीकार कर ली।

सन् १७८२

संधि विषयक वार्तालाप—इस सम्बन्ध में पार्लमेण्ट का वाद विवाद—मंत्रियों में परिवर्तन—वाद विवाद किस ढंग का होना चाहिये, इस विषय में फ्रेंकलिन से सम्मति लेने को ओसवाल्ड का पेरिस जाना—ग्रेन विल्ल का अधिकार पत्र फ्रेंकलिन ने नापसन्द किया—फ़ोकस—शेलबर्न-फिट्ज़ हरबर्ट—अमेरिका के साथ शर्तें निश्चित करने को ओसवाल्ड का आना—फ्रेंकलिन ने संधि सम्बन्धी आवश्यक और उपयोगी शर्तें बताईं—वाद विवाद—स्वतंत्रता—सीमा तथा मछलियाँ मारने का अधिकार—राजकीय पक्ष वालों को हानि पहुँचाने का प्रयत्न—युद्ध में अमेरिकनों को हुई हानि का बदला दिलाये जाने के लिये फ्रेंकलिन की प्रार्थना—शर्तें निश्चित हुई—हस्ताक्षर—कांग्रेस की स्वीकृति।

सन् १७८२ के आरम्भ में ब्रिटिश मंत्रियों ने संधि करने का विचार करना शुरू किया। यार्क टाउन के समीप लार्ड कार्नवालिस की अधीनस्थ सेना की पराजय, नया लश्कर अमेरिका भेजने में मंत्रियों की असमर्थता, युद्ध का प्रचुर व्यय और

हालैण्ड का इंग्लैण्ड से विरोध करके अमेरिका तथा फ्रांस से मिल जाना—इन सब कारणों से अब इंग्लैण्डवासियों की आंखें खुलीं और संधि की चर्चा होने लगी। कार्नवालिस के पराजित होने का संवाद इङ्गलैण्ड में पहुँचने के पश्चात् पार्लामेण्ट का अधिवेशन हुआ और उसमें दिये हुए राजाओं के भाषणों में पहिले की अपेक्षा किसी अंश तक थोड़ा जोश दिखाया गया। यद्यपि अमेरिकन लोग पाँच वर्ष से स्वतंत्र प्रजा की भाँति अपनी स्वतंत्रता को निभा रहे थे और उन्होंने दो ब्रिटिश लश्करों को पराजित करके क़ैद कर लिया था, जिससे अंग्रेज़ों के हृदयों में से जीतने की आशा बिल्कुल जाती रही थी, तथापि राजा लोग अब भी अपने भाषणों में उनके विषय में "हमारी उपद्रवी और धोका देने वाली प्रजा" जैसे शब्द बोलते थे। पार्लामेण्ट में ही नहीं, सर्वसाधारण में भी मानों इसकी चर्चा बड़े ज़ोरों से हो रही हो, और उसका पार्लामेण्ट पर भी प्रभाव पड़ा हो, ऐसे चिह्न दिखाई देने लगे, और प्रधानों के पक्ष वालों की संख्या घटने लगी। कुछ समय के पश्चात् जनरल कोन्वे ने प्रार्थना की कि अमेरिका के साथ जो झगड़ा हो रहा है उसको समाप्त करके शान्ति की व्यवस्था करने को राजा से प्रार्थना करनी चाहिये। इस प्रार्थना पर पार्लामेण्ट में दोनों पक्षों की ओर से खूब वाद विवाद हुआ। अन्त में एकमत अधिक मिलने से प्रधानों ने उसको रद्द कर दिया और लड़ाई जारी रखने का ही निश्चय हुआ। केवल एक ही मत अधिक मिला, इसका कारण यह कभी नहीं हो सकता कि इसमें प्रधानों की शक्ति ही मुख्य थी। लार्ड नार्थ को जब यह विदित हुआ कि प्रधानों के त्यागपत्र देने का अवसर आ गया है तो उसने भी अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। प्रधानमण्डल में परिवर्तन हुआ, और उसके साथ ही अमेरिका सम्बन्धी विचारों में भी फेरबदल हुआ। नई शासन

व्यवस्था मार्च मास में प्रारम्भ हुई। मारक्विस-आफ रॉकिंगहाम प्रधान मन्त्री हुआ और मि० फ़ाक्स तथा लार्ड शेलबर्न ये दो उसके सहायक मन्त्री नियुक्त हुए। नये मंत्रिमण्डल ने ऐसी युक्ति से अधिकारों को अपने वश में लिया था कि उनके समय में अमेरिका को मानों बिना किसी विघ्न के स्वतंत्रता मिल जायगी। उन्होंने बड़े अच्छे ढंग से अपना कार्य्यारम्भ किया था। फाक्स और शेलबर्न फ्रूँकलिन के साथ संधि सम्बन्धी पत्र व्यवहार करने लगे। उन्होंने अप्रैल मास में मि० रिचर्ड ओसवाल्ड नामक व्यक्ति को बहुत से अधिकार देकर फ्रूँकलिन के साथ विचार करने को पेरिस भेजा और युद्ध में लगे हुए अन्यान्य देशों के साथ किस प्रकार संधि की जाय इसके लिये सम्मति लेने को काउण्ट डी वरगेन के पास मि० टाम्स ग्रेनविल को भेजा गया। इस प्रकार बहुत प्रयत्न हुए, खूब वाद विवाद चला, किन्तु, जब तक संधि करने के लिये राजा को अधिकार दिये जाने का पार्लामेण्ट प्रस्ताव न करे तब तक कुछ हो सकेगा, ऐसी आशा नहीं बँधी।

क़ौल क़रार करने के वाद विवाद के सम्बन्ध में फ्रूँकलिन ने ऐसी सूचना दी कि इंग्लैण्ड के वाद विवाद करने वालों में से एक अमेरिका सम्बन्धी विवाद करने को, और एक यूरोपियन देशों के विषय में विवाद करने को अपनी पृथक् २ दलीलें और अधिकार लेकर आवें तो अच्छा हो, क्योंकि इन दोनों में पृथक् २ बातें होने के कारण वाद-विवाद का कार्य्य पृथक् २ चलाने से वह शीघ्रता से और सुगमतापूर्वक हो जायगा। ब्रिटिश मंत्रियों ने इस सूचना को स्वीकार किया और अपने वाद-विवाद करने वालों को भिन्न २ अधिकार पत्र दिये।

मि० ग्रेनविल्ल तथा मि० ओसवाल्ड ने काउण्ट डी वरगेन और डा० फ्रेंकलिन के साथ चलती हुई संधि सम्बन्धी चर्चा में प्रारम्भ से ही विश्वास दिलाया कि अमेरिकनों को स्वतंत्रता देने का निश्चय किया गया है। फ्रांस तथा इंग्लैण्ड के मन्त्रियों ने यह पहिले ही निर्णय कर लिया था कि वाद विवाद पेरिस में किया जाय। मि० ग्रेनविल्ल पेरिस में ही रहा, किंतु मि० ओसवाल्ड कुछ समय के लिये लन्दन हो आया। ओसवाल्ड की अनुपस्थिति में ग्रेनविल्ल को मिले हुए अधिकार का उसने यह अर्थ समझा कि उसको फ्रांस तथा अमेरिका दोनों के साथ वाद विवाद करने का अधिकार है। जब फ्रेंकलिन ने उसकी भूल बताई तब ग्रेनविल्ल ने कहा कि यद्यपि अधिकार पत्र में अमेरिका के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा तथापि मेरे अधिकारपत्र में अमेरिका का समावेश हो सकता है। इसको फ्रेंकलिन ने स्वीकार नहीं किया और कहा कि अमेरिका के साथ वाद-विवाद करने का अधिकार जब तक स्पष्ट रूप से लिख कर न दे दिया जायगा तब तक सधि सम्बन्धी कोई बात नहीं हो सकेगी। फ्रेंकलिन का आग्रह देख कर मि० ग्रेनविल्ल ने अपना अधिकार पत्र एक खास व्यक्ति के साथ लन्दन भिजवाया और उसमें ऐसा संशोधन करके वापिस मँगवाया कि " फ्रांस अथवा दूसरे किसी राजा या राज्य के साथ " वाद विवाद करने का उसको अधिकार है। किंतु, फ्रेंकलिन को इससे भी सन्तोष नहीं हुआ। इस अधिकार पत्र को पढ़ चुकने पर उसने ग्रेनविल्ल से कहा कि " दूसरे किसी राज्य के साथ " ऐसे अस्पष्ट शब्दों से जिसको तुम्हारी सरकार राज्य की भाँति नहीं मानती, उससे वाद विवाद करने का अधिकार नहीं पाया जाता। अन्त में फ्रेंकलिन ने संयुक्त राज्यों के सम्बन्ध में मि० ग्रेनविल्ल को मिले हुए इस अधिकार पर से वाद विवाद करना अस्वीकार कर दिया।

उचित शर्तों पर सधि करने को इङ्गलैण्ड तय्यार है ऐसा कह कर भी मि० ओस वाल्ड और मि० ग्रेनविल्ल ने इस प्रकार चालाकी करना आरम्भ किया इससे काउण्ट डी वरगेन और डा० फ्रेंकलिन अप्रसन्न हुए। उन्हें ऐसा सन्देह हुआ कि इङ्गलैण्ड की इच्छा युद्ध जारी रखने की है। किंतु, समय अधिक लगे इस अभिप्राय से वह ऐसा छल करता है। वेस्ट इण्डीज्ञ में इस समय कई अवसरों पर विजय प्राप्त हुई थी इससे उपर्युक्त सन्देह और भी दृढ़ हो गया और उभय पक्ष वालों को ऐसा प्रतीत हुआ मानों अभी इङ्गलैण्ड को विजय प्राप्त होने की आशा है। वैसे तो इस सन्देह के अनेक कारण थे किंतु, कुछ समय के पश्चात् ऐसा जान पड़ा कि मुख्य कारण कोई और ही था। ऐसा संवाद आया कि मारक्विस आफ़ रॉकिंगहम की मृत्यु हो गई है और प्रधान मंडल में परिवर्तन हुआ है। रॉकिंगहम का मंत्रित्व केवल ढाई मास चलने के पश्चात् जुलाई मास में यह घटना हुई थी। अर्ल आफ़ शेलवर्न प्रधान सचिव हुआ और अर्ल गेन्थम तथा मि० टाउन्सेण्ड उपप्रधान नियुक्त हुए। मि० फाक्स त्यागपत्र देकर पृथक् हो गया, और त्याग पत्र देने का कारण उसने पार्लमेण्ट में यह प्रकट किया कि—"मैं सोचता था कि अमेरिका को बिना किसी शर्त के स्वतंत्रता दी जाने वाली है इस कारण मैं उसको स्वतंत्र करने का वचन दे चुका हूँ। किंतु, अब मुझे ऐसा सुनाई दिया है कि प्रधान मण्डल के विचार में परिवर्तन हो गया है। इस कारण ही मैंने त्यागपत्र दिया है।" क्योंकि इसके अतिरिक्त मेरे पास और कोई उपाय नहीं है। लार्ड शेलवर्न उपनिवेशों के पक्ष में था, और चाहता था कि युद्ध बन्द हो जाय। वह स्वतंत्रता स्वीकार करने का विचार भी कई बार प्रकट कर चुका था किंतु, नये शासन प्रबन्ध में स्वतंत्रता की बात तो बिल्कुल एक ओर कर दी गई थी केवल सम्मति लेने

और देने के उद्देश्य से ही उसने प्रधान पद लिया था। इस कारण ऐसा समझा जाता था कि स्वतंत्रता के प्रश्न पर उसके विचारों में परिवर्तन हो गया है। पार्लामेण्ट में उसके पक्ष वाले भी इसी प्रकार कहते थे। लार्ड शेलवर्न और मि० फ़ाक्स में पहिले से ही राजनैतिक मतभेद था। जिस समय संधि की चर्चा हो रही थी उस समय भी उनमें एकमत न था ऐसी अवस्था में शेलवर्न के शासन काल में फ़ाक्स का उससे मिल कर रहना सम्भव न था।

नये मंत्रिमण्डल का निर्वाचन हो चुकने पर संधि की सलाह करने के लिये कुछ और ही प्रकार का वाद विवाद होने लगा। मि० फ़ाक्स का कथन सत्य प्रतीत होने लगा कि पेरिस में भेजे हुए वकीलों को फ्रेंकलिन के सन्मुख स्वतंत्रता स्वीकार करने को कहा गया था, किंतु, फिर भी स्वतंत्रता की बात को पहिले स्वीकार करके वाद विवाद करने का शेलवर्न का इरादा न था। राकिंगहम की मृत्यु के पश्चात् नये प्रधान मण्डल का ऐसा विचार हुआ था कि संधि सम्बन्धी वाद विवाद इस ढंग से करना चाहिए कि व्यापारिक अधिकारों में अथवा प्रदेशों की बख़्शीश में संयुक्त राज्यों से किसी प्रकार का बदला लिये बिना स्वतंत्रता स्वीकार न करनी पड़े। ऐसा विचार होने के कारण मि० फ़ाक्स की ओर से नियुक्त हुए मि० ग्रेनविल को पेरिस से वापिस बुला लिया गया और उसके स्थान पर मि० फ़िट्ज़ हरबर्ट नामक व्यक्ति को भेजा गया। फ्रांस, स्पेन और हालैण्ड के साथ वाद विवाद करने का अधिकार उसको दे दिया गया और अमेरिका का ओसवाल्ड के आधीन रहने दिया। संधि सम्बन्धी वाद विवाद करने में फ्रेंकलिन के साथ रहने को नियुक्त हुए अधिकारियों में से अभी तक कोई भी पेरिस में नहीं आये थे।

आडम्स हालैण्ड में था, और मि० जे स्पेन में । मि० जे कुछ समय के पश्चात् आगया । चौथा अधिकारी मि० लारेन्स इङ्गलैण्ड में क़ैद था । उसको भी कुछ दिन के पश्चात् लार्ड कार्नवालिस के परिवर्तन काल में छोड़ दिया गया था । किंतु, सधि सम्बन्धी वाद विवाद लगभग पूरा होने को आ गया अतः वह उसमें किसी प्रकार का भाग न ले सका ।

क्या क्या करना ? इस सम्बन्ध में लार्ड शेलबर्न की ओर से ओसवाल्ड को पहिले से ही सूचनाएँ मिल चुकी थीं । उसका अधिकार पत्र पीछे से दिया जाने वाला था । इससे पहिले के तीन मास में फ्रूँकलिन से उसकी कई बार भेंट हो चुकी थी और उन्होंने संधि करने के विषय में मुख्य २ बातों पर बातचीत भी करली थी । अतः अब ओसवाल्ड ने वाद विवाद करने के उद्देश्य से कुछ चर्चा चलाई । अपने प्रयोजन के अनुसार उसमें जो जो शर्तें होनी चाहिये थीं उनको फ्रेंकलिन ने एक क़ाग़ज पर लिखा और उसे दिखाकर कहा कि अपने सहयोगियों की सम्मति के बिना मुझसे कोई भी निश्चित बात नहीं कही जा सकती । यह अवश्य है कि मेरी धारणा के अनुसार शर्तें इस प्रकार की होनी चाहियें । उसकी सूचना में दो प्रकार की शर्तें थीं एक को वह बहुत आवश्यक तथा प्रयोजनीय समझता था और दूसरी को गौण । इङ्गलैण्ड की सरकार सदा के लिये उनके अनुसार चले इस प्रकार की संधि करनी हो तो उसको दोनों प्रकार की शर्तें स्वीकार करनी चाहियें ।

आवश्यक शर्तें इस प्रकार थीं:—(१) उपनिवेशों को सब प्रकार की पूर्ण स्वतंत्रता देनी और वहाँ से इङ्गलैण्ड को अपनी सेना वापिस बुला लेनी । (२) स्वतंत्र और इङ्गलैण्ड के अधीनस्थ उपनिवेशों की सीमा निर्धारित करनी (३) पहिले की भाँति जिस

प्रकार केनेडा की सीमा निर्धारित की गई हो उसको वहीं रखनी (४) न्यू फाउलैण्ड और दूसरे स्थानों के किनारों पर मछलियें तथा ह्वेल जाति की मछलियो को पकड़ने की स्वाधीनता दे देनी।

दूसरी शर्तें ये थीं:—(१) नगरों को जला देने से जिन जिन मनुष्यों की हानि हुई हो उनकी क्षति-पूर्ति करना (२) उपनिवेशों को तग करने में बड़ी भूल की गई है इस प्रकार का पार्लामेण्ट में एक प्रस्ताव उठाकर उसे स्वीकार करवाना कि हमको इसका खेद है (३)उपनिवेशों के जहाज़ों को ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैण्ड में व्यापार सम्बन्धी ब्रिटिश जहाज़ों के समान अधिकार देना (४) सारा केनेडा वापिस दे देना। इन शर्तों को स्वीकार करना न करना इङ्गलैण्ड की इच्छा पर था। किंतु, फ्रेंकलिन यह कहता था कि इन शर्तों को अंगीकार किये बिना संयुक्त राज्यों की प्रजा की मनस्तुष्टि न होगी।

फ्रेंकलिन तथा ओसवाल्ड के बीच में वाद विवाद होने लगा तभी से लगभग तीन मास तो प्रारम्भिक वाद विवाद में ही चले गये। इस विवाद में तीन बातो का निर्णय करना था। अर्थात् स्वतंत्रता, सीमा और मछलियां पकड़ने का अधिकार। स्वतंत्रता की स्वीकृति के सम्बन्ध में तो अब कोई झगड़ा शेष न रहा था। सीमा निर्धारित होने में अभी गोलमाल चल रहा था। बहुत झगड़ा होने और मानचित्र (नक्शे) तथा प्रमाण आदि देखकर अन्त में सीमा सम्बन्धी प्रश्न भी सन्तोषजनक रूप में निश्चित हो गया। वाद विवाद लगभग समाप्त होने को आया इतने में ही कुछ अधिक उपयोगी शर्तें निकलवा देने के विचार से इंग्लैण्ड ने सीमा निर्धारित करने का प्रश्न फिर उठाया। युद्ध के

अवसर पर तेरह उपनिवेशों में से राजा के पक्ष वालों को देश-निकाला देकर उनकी जायदाद ज़ब्त करली गई थी। अतः इङ्गलैण्ड का उद्देश्य अब यह था कि इन लोगों की क्षति पूर्ति करने की शर्त्त को अमेरिका स्वीकार करे। यदि यह शर्त्त स्वीकार न की जाय तो इसके बदले में मछलियाँ पकड़ने का अधिकार रख लेना यही इङ्गलैण्ड की इच्छा थी। राजा के पक्ष वालों के लिये संयुक्त राज्यों के वकीलों ने कुछ भी करने की आशा नहीं दिलाई। बल्कि, उन्होंने ऐसी आपत्ति की कि राजा के पक्ष वालों की जो जायदाद उपनिवेशों ने लेली है वह लौटानी या नहीं यह उनके अधिकार की बात है इसके लिये कांग्रेस को हस्तक्षेप करने का कुछ अधिकार नहीं है। क़ौल क़रारों में ऐसी शर्त्त रक्खी जाय तो भी वह उपनिवेशों के लिये हानिकारक सिद्ध न होगी। लोगों को हानि पहुंचाना हमें अभीष्ट भी नहीं है और न यह न्यायानुकूल ही है। युद्ध के मूल कारण ये लोग ही हैं क्योंकि गाँवों को जलाने में भी ये लोग ही अग्रणी थे। अपने देश को छोड़ कर इन लोगों ने अपने विरोधियों के साथ मित्रता की थी ऐसी दशा में यदि उनको किसी से अपनी क्षति पूर्ति करानी हो तो अपने मित्रों से ही करानी चाहिये। यदि इनकी क्षतिपूर्ति करना अभीष्ट ही हो तो उन्होंने जो गाँव आदि जला कर हमारी हानि की है वह भी उनसे वसूल करनी चाहिये। इसकी सब से सुगम रीति यह है कि दोनों का हिसाब किया जाय और जिसका लेना निकले उसको ही दिलाया जाय।

यह सूचना इङ्गलैण्ड के वकीलों को पसन्द नहीं आई। उन्होंने कहा कि राजा के पक्ष वालों की क्षति पूर्ति करना अंगीकार न हो तो, प्रधान मन्त्रियों से, बिना पूछे हम से आगे क़दम नहीं रक्खा जाता। इस अवसर पर फ्रैंकलिन ने एक नई

शर्त्त यह उपस्थित की कि खुली रीति से युद्ध की घोषणा करने से पूर्व इङ्गलैण्ड ने जो हमारे जहाजों को लूट लिया है उसका हिसाब हो जाना चाहिये और उसके द्वारा हमारे पक्ष को जो हानि पहुँची है वह मिलनी चाहिये। उसने ओसवाल्ड से कहा कि मंत्रियों के विचार करने को यह शर्त्त उनके पास भेज दें।

जब फ्रैंकलिन ने यह शर्त्त आगे भेजी तो इंग्लैण्ड के वकील ज़रा नरम हुए। अब उन्होंने प्रधानों का अभिप्राय लेना स्थगित कर दिया। वास्तव में देखा जाय तो उनको मंत्रियों की सम्मति लेने की आवश्यकता भी न थी। उनकी दृष्टि में जो शर्तें अच्छी जचें उन्हीं को निश्चित करने का उन्हें अधिकार था। अन्त में यह निर्णय हुआ कि राजा के पक्ष वालों को हर्जाना देने के लिये उपनिवेशों को कांग्रेस से प्रेरणा करनी चाहिये और उसके साथ यह भी प्रकट किया गया कि इस सूचना को उपनिवेश मानेंगे ऐसी आशा नहीं की जा सकती। दूसरी यह शर्त्त निश्चित हुई कि युद्ध से पहिले दिया हुआ ऋण वसूल करने के सम्बन्ध में दोनों में से किसी भी देश को कोई आपत्ति न करनी चाहिये। अन्त की ये दोनों शर्त्तें कुछ विशेष महत्त्व की नहीं थीं। किन्तु, फिर भी ब्रिटिश साहूकारों तथा राजकीय पक्ष वालों की ऊहा-पोह मिटाने के अभिप्राय से इङ्गलैण्ड के वकील उसको आवश्यक और महत्त्वपूर्ण समझते थे।

फ्रैंकलिन की बताई हुई व्यापार सम्बन्धी शर्त वाद-विवाद में अभी नहीं रक्खी गई थी। इस समय तक जो कुछ हुआ था उसमें संधि की आवश्यकता का ही लक्ष्य रक्खा गया था। व्यापार सम्बन्धी क़ौल क़रारों पर विचार करना बाद के लिये छोड़ दिया गया था। अन्त में वाद विवाद इस ढग से पूर्ण हुआ

कि अमेरिकन राजदूतों ने अपनी जो जो माँगें पहिले उपस्थित की थीं उन्हीं को स्वीकार कर लिया गया। संधि की शर्तों का मसविदा निश्चित हुआ और उस पर सन् १७८२ की ३०वीं नवम्बर को वकीलों के हस्ताक्षर हो गये। कांग्रेस ने इसे स्वीकार रक्खा और जनता ने भी उसका समर्थन तथा अनुमोदन किया। सब ने इसमें अपनी प्रसन्नता प्रकट की और इस प्रकार फ्रेंकलिन तथा उसके सहयोगियों का वाद-विवाद विषयक परिश्रम सफल हुआ।

प्रकरण ३०वां

अमेरिका को प्रस्थान।

सन् १७८२ से १७८४

फ्रांस सरकार को सूचना दिये बिना संधि की शर्तों का निर्णय—इसके कारण—संदेह—सीमा निर्धारित करने तथा मछलियें मारने के अधिकार के सम्बन्ध में फ्रेंकलिन विषयक झूठी बातें—ऋण चुकाने का प्रस्ताव—स्वीडन के साथ प्रतिज्ञाएँ—इंग्लैण्ड के साथ अन्तिम संधि की स्वीकृति—फ्रेंकलिन का उपदेश—प्राण विनिमय समिति में नियुक्ति—अमेरिका वापिस जाने को कांग्रेस से प्रार्थना और उसकी स्वीकृति—जाफ़रसन की नियुक्ति—प्रूशिया के साथ क़ौल करार—घर जाने के लिं फ्रेंकलिन की तय्यारी—पेसे से हार्वेडी प्रेस तक की यात्रा—साउथम्पटन फ़िलाडेल्फ़िया—यात्रा में लिखे हुए निबंध—मानपत्र।

अमेरिकन वकीलों ने इंग्लैण्ड के साथ संधि की शर्तें निश्चित कीं उनमें यह एक आश्चर्यजनक बात थी कि वैसा करने में फ्रांस सरकार की सम्मति ली ही नहीं गई थी और बिना उसकी सम्मति के संधि न करने को संयुक्त राज्य प्रतिज्ञाबद्ध हो चुके थे। इसके अतिरिक्त कांग्रेस ने भी वकीलों को स्पष्ट सूचना दे दी थी कि अपने उदार मित्र फ्रांस के राजा के मंत्रियों को प्रत्येक बात की सूचना समय २ देनी चाहिये और

बिना उनकी सम्मति के संधि सम्बन्धी वाद विवाद में कोई बात निश्चित न करनी चाहिये। वकीलों की निश्चित की हुई शर्तों के अनुसार कोई बात तय नहीं हुई थी। किंतु, फिर भी उन शर्तों के अनुसार ही अन्त में प्रत्येक बात तय होने वाली थी अतः इस सम्बन्ध में उनके लिये फ्रांस से सम्मति लेना अनिवार्य्य था। अमेरिका विषयक शर्तों का निर्णय होकर हस्ताक्षर होने लगे उस समय फ्रांस तथा दूसरे यूरोपियन देशों के साथ चले हुए वाद विवाद में क्या निर्णय होता है यह जब तक विदित न हो जाता तब तक प्रतीक्षा करने का अमेरिकन वकीलों का कर्त्तव्य था, किंतु, वैसा न करके, फ्रांस से बिना पूछे ही उन्होंने शर्तें निश्चित कर लीं। इतना ही नहीं बल्कि संयुक्त राज्यों की दक्षिण की सीमा को निर्धारित करने के सम्बन्ध में जो शर्तें हुई थीं उनको फ्रांस से गुप्त रखी जाने का निश्चय हो गया था।

अमेरिकन वकीलों का ऐसा अनुचित व्यवहार काउण्ट डी वरगेन को बहुत बुरा लगा। जब संधि की शर्तों पर बिना पूछे ही हस्ताक्षर कर देने की बात उसने सुनी तो उसे बड़ा क्रोध आया। अमेरिकन वकीलों ने एकत्रित होकर उसका कुछ भी समाधान नहीं किया और फ्रेंकलिन पर ही सारा कार्य्य छोड़ दिया। फ्रेंकलिन ने जहां तक हो सका फ्रांस सरकार का क्रोध शान्त करने का प्रयत्न किया। निश्चित शर्तों में फ्रांस को कोई आपत्ति न थी, किन्तु, इस सम्बन्ध में उससे सम्मति नहीं ली गई यही उसकी अप्रसन्नता का कारण था।

अमेरिकन वकीलों ने फ्रांस से गुप्त रख कर इन शर्तों को निश्चित किया इसका कारण केवल यही था कि उनको फ्रांस पर कुछ सन्देह हो गया था। उनकी समझ में यह आया था कि फ्रांस युद्ध से घबरा गया है और चाहता है कि चाहे जिन शर्तों

पर इङ्गलैण्ड से संधि कर ली जाय। काउण्ट डी वरगेन तथा फ़िलाडेल्फ़िया का फ्रेंच राजदूत सीमा निर्धारित करने तथा मछलियां पकड़ने के अधिकार प्राप्त होने के सम्बन्ध में अमेरिका की की हुई माँग में कुछ कमी करवाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त उन्हें यह भी सम्मति देते थे कि राजा के पक्ष वालों की क्षतिपूर्ति करवाने में भी ज़ोर लगाया जाय। अमेरिका के साथ सन्तोषजनक संधि हो तब तक युद्ध जारी रखने को फ्रांस प्रतिज्ञावद्ध हो चुका था। उधर फ्रांस के विषय में अमेरिकन वकीलों के मन में यह सन्देह उत्पन्न हो गया था कि संधि सम्बन्धी शर्तें निश्चित करने में अमेरिका कोई बड़ी मांग करेगा तो उसे इङ्गलैण्ड स्वीकार न करेगा। इस प्रकार युद्ध का अन्त न आवेगा इसी से फ्रांस की ऐसी इच्छा है कि चाहे जिन शर्तों पर जल्दी से जल्दी संधि कर ली जाय। इस सन्देह की पुष्टि इस बात से और हो गई कि जिस समय वाद विवाद हो रहा था उस समय का काउण्ट डी वरगेन का एक कर्मचारी एम० डी० रेनीवल दो तीन बार लन्दन हो आया था। मि० जे को इस से और भी अधिक सन्देह हो गया कि इंग्लैण्ड और फ्रांस में अमेरिका के विषय में अवश्य ही कोई गुप्त-सलाह हो रही है। यह सन्देह सच्चा नहीं था। एम० डी० रेनीवल स्पेन के साथ होने वाली सुलह के सम्बन्ध में उसका स्पष्टीकरण करने को इंग्लैण्ड गया था। उसको अमेरिका सम्बन्धी किसी विषय पर बात चीत करने की मनाही कर दी गई थी।

अमेरिकन वकीलों को फ़्रांस पर सन्देह हो गया है ऐसा जब इंग्लैण्ड के वकीलों को विदित हुआ तो उन्होंने इस अनुकूल अवसर का लाभ लेकर अमेरिका तथा फ्रांस के बीच में विरोध करा देने का विचार करना आरम्भ कर दिया। मछलियां

पकड़ने के अधिकारों के सम्बन्ध में फिलाडेल्फिया के फ्रेंच राजदूत के एक कर्मचारी ने उसको पत्र लिखा था, जिसमें एक स्थान पर प्रसंग वश ऐसा भी लिख दिया था कि इसमें अमेरिकनों का कोई अधिकार नहीं रक्खा गया है। इस पत्र को इंग्लैण्ड के वकीलों ने अमेरिकन वकीलों के पास भिजवा दिया। यह पत्र सरकारी तौर पर नहीं लिखा गया था। उसमें केवल उक्त कर्मचारी की घरू बातों का ही उल्लेख था। फिर भी उस समय अमेरिकन वकीलों के मन पर उसका प्रभाव पड़ा और सन्देह की मात्रा बढ़ी।

अमेरिकन वकीलों ने फ्रांस को सूचना दिये बिना ही क़ौल क़रार की बातें निश्चित कर लीं। उसका कारण उपर्युक्त वर्णन से उत्पन्न सन्देह ही था। वस्तुतः फ्रास पर ऐसा सन्देह करने का कोई और प्रामाणिक कारण नहीं था। उन्होंने अमेरिका के साथ जो जो प्रतिज्ञाएँ की थीं उनका आरम्भ से अन्त तक पालन किया था।

संधि सम्बन्धी शर्तें निश्चित हो जाने के कुछ समय पश्चात् अमेरिका में ऐसी गप्प चली कि डाक्टर फ्रेंकलिन सीमा तथा मछलियाँ पकड़ने के अधिकारों के सम्बन्ध में कुछ आग्रह नहीं दिखाता, और इन अधिकारों को छोड़कर भी वह संधि कर लेने में अपनी प्रसन्नता प्रकट करता है इस गप्प की सूचना डाक्टर कूपर ने फ्रेंकलिन को दी और लिखा इससे तुम्हारी निन्दा होती है। सीमा निर्धारित करने तथा मछलियाँ पकड़ने की बातें फ्रेंकलिन ने आवश्यक शर्तों में रक्खी थी और वाद विवाद के समय आरम्भ से अन्त तक उसने इन पर खूब बहस की थी अतः इस गप्प का हाल सुनकर वह बड़ा खिन्न हुआ। डाक्टर कूपर का हवाला देकर उसने इस सम्बन्ध में शीघ्र ही दूसरे वकीलों को

पत्र लिखा और उसमें प्रकट किया कि–"क़ौल, क़रार की शर्तें निश्चित करवाने में मेरे सहयोगियों को उनके मित्र चाहे जो सहायता दें, उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं। किंतु, मैंने जो अपने जीवन के पचास वर्ष विश्वसनीय और उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर रह कर व्यतीत किये हैं उनमें अब अपने अन्तकाल के समय किसी प्रकार की अप्रामाणिकता अथवा कलंक की छाप न लग जाय इसके लिये मुझ पर किये गये मिथ्या दोषारोपण का प्रतिवाद किये बिना मैं चुप नहीं रह सकता। इस कार्य्य मे मैंने कितना परिश्रम उठाया है, इसको तुम भली प्रकार जानते हो। तुम्हें इसमें सच्चा और पक्षपात रहित साक्षी समझ कर तुम्हारे तथा तुम्हारे सहयोगियों के पास यह पत्र भेजकर मैं न्याय की याचना करता हूँ। मुझे भरोसा है कि अपने ऊपर किये गये दोषारोपण झूठे सिद्ध होंगे और मेरे हक़ में उनका कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़ेगा। आशा है, आप लोगों से उचित न्याय मिलेगा।" इसके उत्तर में मि० जे ने लिखा कि–"क़ौल क़रारों में सीमा तथा मछलियाँ मारने के सम्बन्ध में अपने को जो अधिकार मिले हैं उनको प्राप्त करने का तुमने अच्छा प्रयत्न किया था, ऐसा स्वीकार करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। वाद विवाद के समय इन दोनों बातों का तुमने खूब पक्ष लिया था और अपनी जानकारी से मैं यह निःसङ्कोच होकर कह सकता हूँ कि इन अधिकारों के प्राप्त कराने का अधिकांश श्रेय तुमको ही है।"

संधि के क़ौल क़रारों पर वाद विवाद चल रहा था उसी बीच में १६वीं जुलाई को फ्रेंकलिन ने, फ्रांस से संयुक्त राज्यों ने जो रुपया लिया था उसका हिसाब करके उसको चुकाने की प्रतिज्ञा की। तीस लाख लिवर मित्रता होने से पहिले और साठ लाख उसके पश्चात् फ्रांस ने दिये थे यह बख़्शीश की भाँति गिने

जाते थे और शेष एक करोड़ अस्सी लाख ऋण की भाँति निकले। इनका ५ प्रति शत सूद लगाकर सन् १७८८ की पहिली जनवरी को चुकाये जाने वाले थे। किंतु, इतनी बड़ी रक़म एक साथ चुका देना संयुक्त राज्यों के लिये सम्भव न था, इस कारण प्रति वर्ष १५ लाख लिवर प्रति तीन मास के हिसाब से लेना फ्रांस के राजा ने स्वीकार कर लिया। इंग्लैण्ड के साथ संधि होजाने के ३ वर्ष पश्चात् से इस वादे की पहिली क़िस्त शुरू होगी ऐसा निश्चय होगया था। फ्रांस सरकार ने उदारतापूर्वक यह भी स्वीकार कर लिया कि संधि न होने तक इस रक़म पर जो व्याज चढ़ेगा वह न लिया जायगा। यह व्यवस्था संयुक्त राज्यों के लिये बड़ी उपयोगी और सुविधाजनक थी जिसका श्रेय भी डाक्टर फ्रैंकलिन को ही है।

संधि की शर्तों पर हस्ताक्षर हुए, उससे कुछ मास पूर्व पेरिस विभाग का स्वीडन निवासी राजदूत काउण्ट डी फ्रूज फ्रैंकलिन से मिलने को आया और बोला कि हमारे राजा कांग्रेस के साथ मित्रता का सम्बन्ध जोड़ने को तैयार हैं। उन्होंने मुझे आपसे इस सम्बन्ध में बातचीत करने को भेजा है। यहाँ यह स्मरण रखने की बात है कि ग्रेट ब्रिटेन ने उपनिवेशों की स्वतन्त्रता स्वीकार की उससे प्रथम अपनी ओर से मित्रता की इच्छा दिखाने वालों में स्वीडन अग्रणी था। काउण्ट डी फ्रूज की कही हुई बात फ्रैंकलिन ने कांग्रेस पर प्रकट की जिसे उसने पसन्द किया और स्वीडन के साथ क़ौल क़रार निश्चित करने का फ्रैंकलिन को अधिकार दे दिया। कुछ समय के पश्चात् वे निश्चित हुए और उन पर फ्रैंकलिन तथा काउण्ट डी फ्रूज ने हस्ताक्षर कर दिये।

संधि सम्बन्धी जो शर्तें वकीलों ने निश्चित की थीं वे इंग्लैण्ड की पार्लामेण्ट में नापसन्द हुईं, और उन पर खूब वाद विवाद

हुआ। अन्त में लार्ड शेलवर्न के त्यागपत्र दे देने का प्रसंग आ गया। शेलवर्न के पश्चात् जो प्रधान मण्डल बनाया गया उसने उन शर्तों में फेरफार करके ऐसे रूप में कर दिया जिनको इंग्लैण्ड की प्रजा पसन्द करले। व्यापार सम्बन्धी पारस्परिक स्वतंत्रता के लिये कुछ नई शर्तें रक्खी गईं, किंतु वे इस रूप में निश्चित न हो सकीं जिन्हें दोनों पक्ष वाले सहर्ष स्वीकार करलें। फल यह हुआ कि पहिले के वाद विवाद में जो शर्तें निश्चित हुई थीं उन्हीं के अनुसार संधि पत्र लिख लिया गया और उस पर सन् १७८३ के सितम्बर की तीसरी तारीख को हस्ताक्षर हो गये। उसी दिन इंग्लैण्ड, फ्रांस तथा स्पेन में जो शर्तें निश्चित हुई थीं उनके अनुसार दूसरा संधि पत्र लिखा गया और हस्ताक्षर भी हो गये। इन संधिपत्रों को दोनों देशों की सरकार ने स्वीकार कर लिया और इस प्रकार अमेरिका स्थित एक प्रचण्ड आन्दोलन का अन्त आया—संयुक्त राज्य इंग्लैण्ड से स्वाधीन हुए। इस अवसर पर फ्रेंकलिन को लिखा हुआ उसके मित्र चार्ल्स टाम्सन का पत्र उसके देश बन्धुओं के सदा स्मरण रखने योग्य है।

"ईश्वर का आभार मानों कि जिस बड़े और उत्तरदायित्व-पूर्ण झगड़े में हम लोग पड़े थे उसका इस प्रकार अन्त आया है और बड़ा उपयोगी निर्णय हुआ है। मैं नहीं जानता था कि ऐसा प्रसंग आने तक मैं जीवित रहूँगा। किन्तु अब तो लालच होता है कि राष्ट्रीय शान्ति में अपने सुख के कुछ वर्ष और व्यतीत करूँ तो अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त कर सकूँगा और साथ ही दीर्घजीवी भी हो सकूँगा। इस अवसर पर हम लोगों को यह न भूल जाना चाहिये कि हमारा आनन्दमय और संरक्षणपूर्ण भविष्य अपने मेल और सद्गुणों पर ही निर्भर है। ग्रेट ब्रिटेन ने जो कुछ खोया है उसको प्राप्त करने के लिये वह अब बराबर किसी अनुकूल अवसर को प्राप्त करने की चेष्टा में

रहेगा। यदि हम अपने ऋण को चुकाने की चिन्ता रक्खेंगे, जिन्होंने अपने साथ मित्रता तथा सहानुभूति दिखा कर हमारी सहायता की है उनके कृतघ्न हो जायँगे तो सब के दिलों पर से हमारा विश्वास उठ जायगा—साख चली जायगी और साख के कारण हम में जो शक्ति है वह भी न रहेगी। इसका फल यह होगा कि विरोधियों को हम पर पुनः आक्रमण करने का अवसर मिल जायगा। अतः हमें भविष्य में बहुत सावधान और सचेष्ट रहने की आवश्यकता है। यह समझ कर कि हम संरक्षित हैं किसी भुलावे में न पड़ना चाहिये और न अपने आमोद प्रमोद में व्यर्थ का व्यय कर के निर्धन और निर्बल ही बन जाना चाहिये। आन्तरिक द्वेष और मतभेद से हमें आपस में ही न लड़ मरना चाहिये क्योंकि संसार में मेल और सगठन में अपूर्व शक्ति है। इनके रहते हुए विपक्षियों को अपने विरुद्ध कुछ भी करने का साहस न होगा। हमें ऐसा भूलकर भी न करना चाहिये कि सरकारी रुपया चुकाने में पीछे रह जाँय और अपने घर के अनावश्यक व्यय को बढ़ा कर एक दूसरा ऋण का बोझ लाद लें। सैनिक शक्ति और शिक्षा सम्बन्धी योग्यता भी हमें खूब बढ़ानी चाहिये। आवश्यकता के समय शीघ्र ही काम दे जायँ ऐसे युद्ध के हथियार भी हमें बनाते और बढ़ाते रहना चाहिये। ऐसा न होने से विरोधियों का साहस बढ़ जाता है। हमें स्मरण रखना चाहिये कि युद्ध करने का प्रसंग न आवे ऐसी तय्यारियाँ करने में जो व्यय होता है वह युद्ध छिड़ जाने पर जो व्यय होता है उसकी अपेक्षा प्रत्येक अवस्था में थोड़ा ही होता है।"

उस समय फ्रांस में "प्राण विनिमय"* के चमत्कारों की ओर लोगों का ध्यान इतना अधिक आकर्षित हो रहा था कि

* Animal Magnetism.

उसकी अच्छाई के सम्बन्ध में शास्त्रीय रीति से, अनुसन्धान करवाना सरकार ने आवश्यक समझा। मेस्मर के शिष्य, गेलसन ने अपने प्रयोगों से जनता को मुग्ध कर लिया था। वह लोगों को इकट्ठा कर कर के अपने चमत्कार दिखाया करता था और इस प्रकार खूब पैसा कमाता था। "रायल एकाडेमी" और "फ़ेकल्टी आफ मेडीसिन' नामक विद्वानों की सभाओं में से सरकार ने नौ व्यक्तियों की एक समिति बनाई और उसको इसका अनुसन्धान करने की आज्ञा दी। फ्रेंकलिन को इसका अध्यक्ष चुना गया था। सन् १७८४ के मार्च से अगस्त तक समिति ने इसकी खोज कर ली। उनके आगे बहुत से प्रयोग किये गये और अनेक आश्चर्यजनक चमत्कार दिखाये गये। डा० फ्रेंकलिन पर भी कुछ प्रयोग किये गये, किन्तु, उनका कोई प्रभाव नहीं हुआ। अपनी बात को सत्य प्रमाणित करने के लिये गेलसन को यथेष्ट समय दिया गया था। बहुत दिनों के पश्चात् जब समिति ने भली प्रकार खोज करली तो रिपोर्ट की कि "प्राण विनिमय" कोई भिन्न शक्ति है इसका हमारे सन्मुख कोई प्रामाणिक उदाहरण नहीं आया। हमें ऐसा जान पड़ता है कि इसका जो प्रभाव बताया जाता है वह निर्बल मनुष्य की कल्पना शक्ति से हो सकता है।

खोज का कार्य्य आरम्भ होने से पहिले डाक्टर फ्रैंकलिन ने एम० डी० ला० कोन्डमिन को लिखा कि—"प्राण विनिमय" के सम्बन्ध में मेरा ऐसा मत है कि उसका मुझ पर कुछ प्रभाव न हो अथवा मैं उसकी शक्ति प्रत्यक्ष न देख लूँ तब तक उसकी यथार्थता में मुझे सन्देह ही रहेगा। किसी भयङ्कर व्याधि से छुटकारा पाये हुए रोगी अभी मेरे देखने में नहीं आये। अनेक रोग ऐसे होते हैं जो स्वभावतः अपने आप ही मिट जाते हैं।

ऐसे अवसर पर मनुष्य स्वयं तो ठगाता ही है किन्तु, दूसरों को भी ठगता है। अपने दीर्घ जीवन में मैंने अनेक उपाय ऐसे देखे हैं अतः मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि सब प्रकार के रोगों को मिटाने के लिये इस नये उपचार की सफलता पर जो बड़ी बड़ी आशाएं बाँधी जाती हैं वे अन्त में झूठी और कल्पित सिद्ध होंगी। फिर भी जब तक भ्रान्ति का यह प्रवाह चल रहा है, ठीक है। इससे भी अन्त में कुछ न कुछ लाभ ही होगा। प्रत्येक धन सम्पन्न नगर में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो रोग ग्रसित रहते हैं। वे औषधि-सेवन के ऐसे आदी हो जाते हैं कि उसी से उनका शरीर बिगड़ जाता है। केवल वैद्य के सङ्केत और करतल-स्पर्श मात्र से अथवा उसके निकट रक्खे हुए लोह के सलिये से रोग मिट जाते हैं ऐसा जब अधिकतर लोग मानने लगें और औषधि लेना बन्द कर दें तो सम्भव है कुछ लाभ होने लगे।"

मि० जे के अमेरिका चले जाने से उसके स्थान पर मि०जाफरसन की नियुक्ति हुई। कांग्रेस ने यूरोप के मुख्य २ देशों के साथ मित्रता का सम्बन्ध जोड़ने के लिये फ्रेंकलिन, आडम्स और जाफ़रसन को नये अधिकार पत्र दिये। तीनों व्यक्तियों ने मिलकर पेरिस के दरबार में जो विदेशी राजदूत उपस्थित थे उनको पत्र लिखकर कांग्रेस की इच्छा प्रकट की। प्रूशिया, डेन्मार्क, पोर्तगाल, और टस्कनी ने इनकी बात को पसन्द की और तत्सम्बन्धी शर्तें निश्चित करने के लिये अपने २ राजदूतों को अधिकार दिया। किन्तु, प्रूशिया के अतिरिक्त अन्य देशों के साथ अन्तिम निर्णय नहीं हुआ। फिर भी उन्होंने संयुक्त राज्यों के साथ मित्रता का भाव दिखाकर दूसरे देशों के जहाज़ों की भाँति इस देश के जहाज़ों को भी अपने बंदरों में आने जाने की स्वाधीनता दे दी।

इङ्गलैण्ड के साथ संधिपत्र हो जाने के पश्चात् फ्रैंकलिन के सिर से सर्वाधिकारी राजदूत की भाँति कार्य्य करने का बोझ कम हुआ। किंतु, पत्रव्यवहार करने का कार्य्य तो वैसा ही बना रहा। युद्ध के अवसर पर अमेरिकन सेना में गये हुए फ्रैंच अधिकारियों के सगे सम्बन्धी उनके विषय में कई बातें पूछा करते थे। राजनीति एवम् समाज शास्त्र आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर रचना करने वाले लेखकगण अपनी रचनाओं को भेजकर उन पर सम्मति माँगा करते थे। अमेरिका में जाकर बसने वाले लोग उसका अभिप्राय पूछते तथा वहाँ जाने से क्या २ लाभ हैं और किस विभाग में जाना अधिक उपयोगी है, कौनसा धंधा अधिक लाभप्रद और सुविधाजनक है आदि २ के सम्बन्ध में पूछताछ करते रहते थे। अतः प्रत्येक व्यक्ति को पृथक् २ उत्तर देने की झंझट से बचने और अमेरिका के विषय में सब लोगों को जानकारी हो जाव इसके लिये फ्रैंकलिन ने "अमेरिका में बसने को जाने वालों के लिये उपयोगी सूचनाएँ" इस नाम की एक छोटी सी पुस्तक लिखकर प्रकाशित करवा दी। इसके अनुवाद जर्मन तथा अन्य कई भाषाओं में हुए।

इस प्रकार सब लोग उसकी योग्यता पर मुग्ध थे और इसी से उसके अनुयायी बन रहे थे। किंतु, जैसा कि प्रायः देखा जाता है, जहाँ किसी महान् पुरुष के अनुयायी होते हैं, वहाँ उसके विरोधी और ईर्षालु मनुष्य भी अवश्य पाये जाते हैं। फ्रैंकलिन के विरोधियों का भी एकदम अभाव नहीं था। इस दल वालों में से अनेक लोग तुच्छ और हास्यास्पद विषयों को लेकर उसको वृथा ही मानसिक दुःख पहुँचाने की धुन में रहते थे। इसके लिये वे उसको पत्र लिखते और इसके अतिरिक्त और जो कुछ नीचता कर पाते उसके करने में कोई प्रयत्न शेष न छोड़ते—

चाहे सफलता न मिले। एक समाचार पत्र में ऐसा संवाद प्रकाशित हुआ कि डाक्टर फ्रैंकलिन बड़े अनुभवी चिकित्सक हैं। उनके पास जलोदर आदि अनेक भयंकर रोगों की औषधियाँ हैं। यह बात शीघ्र ही सारे देश में फैल गई और ऐसी औषधियों के लिये उत्सुक जनता के पत्रों का उसके पास ढेर लग गया।

सन् १७७८ में समाच्युसेट्स राज्य के नॉर फ़ॉक परगने में एक नया गाँव बसाया गया जिसका नाम फ्रैंकलिन रक्खा गया। इस वर्ष के पश्चात् उसका नाम कई गाँवों को दिया गया। इस समय तेरह में से एक भी राज्य ऐसा नहीं है जिसमें फ्रैंकलिन नाम का कोई गाँव न हो। ओहियो में १९ गाँव हैं। फ्रैंकलिन नाम के बीस परगने हैं। संयुक्त राज्यों के मानचित्र* में फ्रैंक-लिन का नाम १२६ वार आता है।

अमेरिका जाकर अवशिष्ट जीवन को अपने कुटुम्बियों के साथ बिताने की फ्रैंकलिन की इच्छा ऐसी बढ़ गई थी कि त्याग-पत्र स्वीकार कर उसको कार्य-मुक्त कर देने के लिये वह कांग्रेस से जल्दी २ प्रार्थना करने लगा। किन्तु, कांग्रेस उसको इसलिये बार बार अस्वीकार कर देती थी कि उसके बिना काम नहीं चल सकता था। आरम्भ में फ्रैंकलिन पेरिस जाना चाहता था, फिर उसने इटली और जर्मनी जाने का भी विचार किया। किंतु, रुग्णावस्था की बढ़ी हुई निर्बलता से वह बड़ा अशक्त हो गया था अतः अपने सब विचारों को बदल कर अन्त में उसने अमेरिका जाना ही अधिक उत्तम समझा।

अन्त में कांग्रेस ने फ्रैंकलिन की प्रार्थना स्वीकार करली। सन् १७८५ के मार्च मास की ७वीं तारीख को "आनरेबल

---

* नक़्शा।

बेंजामिन फ्रेंकलिन" को वापिस अमेरिका आने की आज्ञा दिये जाने का निश्चय हुआ और १० मार्च को उसके स्थान पर टॉमस जाफ़रसन की नियुक्ति हुई।

फ्रांस में फ्रेंकलिन साढ़े सात वर्ष तक रहा था इस अवधि में वह बराबर एक न एक अत्यावश्यक सरकारी कार्य्य में लगा रहा। स्वतंत्रता के वीर की भाँति वह यथेष्ट ख्याति प्राप्त कर चुका था और एक सुप्रसिद्ध तत्त्वज्ञ की भाँति सारे यूरोप में सम्मान लाभ कर चुका था। सच पूछा जाय तो विद्वत्समाज में जितना आदर उसको मिला उतना और किसी को प्राप्त नहीं हुआ। मित्रों का इसके समान प्रेम कदाचित् ही और किसी पर रहा हो। उसके प्रस्थान का समय निकट आया जानकर सब लोगों का चित्त खिन्न होने लगा। वे सब अपने एक वीर की अन्तिम भेंट तथा विदाई करने को बड़ी प्रबल इच्छा दिखाने लगे। फ्रांस के दरबारी उसका गुणगान करने लगे। काउण्ट डी वरगेन ने प्रकट किया कि—"राजासाहिब की आपके प्रति बड़ी शुभभावनाएँ हैं। आपने अपने देश की जो सराहनीय सेवा की है उसके पुरस्कार अथवा बदले के रूप में आपको समुचित आदर मिलेगा ऐसी आशा है। मुझे विश्वास है कि आप मुझे न भूलेंगे और निश्चय समझेंगे कि मैं शुद्धान्तःकरण से आपकी उन्नति और सफलता चाहता हूँ। ईश्वर आपका उत्तरोत्तर अभ्युदय करे।" जल सेना विभाग के अध्यक्ष ने उसको लिखा कि—"मैंने अभी कुछ घंटे हुए तभी सुना है कि आप यहाँ से प्रस्थानित होने वाले हैं, यदि इस संवाद को मैंने कुछ दिन पूर्व सुना होता तो मैं आपके लिये राजा से कह कर सरकारी तौर पर एक जहाज़ का प्रबन्ध करवा देता जो आपको अपने देश में बड़े आराम से पहुँचा आता। इसके साथ ही मैं कुछ और भी ऐसी व्यवस्था करता जिससे यह विदित हो जाता कि

आपकी की हुई स्वदेश सेवा के कारण राजा साहब तथा अन्यान्य कर्मचारियों की दृष्टि में आपके प्रति कितना सम्मान है और आपको कितना लोकप्रिय समझा जाता है।"

फ्रेंकलिन ऐसा निर्बल होगया था कि उससे गाड़ी में बैठकर मार्ग-जनित श्रम सहन नहीं किया जा सकता था। अतएव पेसे से हावर्डी ग्रेस तक जाने के लिये रानी ने उसको अपनी एक खास गाड़ी दी जिसमें वह बड़े आराम से गया। छटे दिन वह हावर्डी ग्रेस आ पहुँचा। वहाँ तीन दिन रहकर वह साउथम्प्टन को प्रस्थानित हो गया क्योंकि अमेरिका जाने वाला जहाज वहीं से छूटने वाला था। साउथम्प्टन में विशप शिपली, बेंजामिन वोगन और इंग्लैण्ड के अन्य मित्रों के साथ उसकी भेंट हुई। सब लोग एक दूसर से मिलकर बड़े प्रसन्न हुए। उसका पुत्र विलियम भी दस वर्ष क पश्चात् उससे यहीं मिला। साउथम्प्टन में चार दिन रहकर फ्रेंकलिन फिलाडेल्फ़िया को चल दिया। यात्रा में अवकाश के समय विशप शिपली ने उसको अपना आत्म चरित्र आगे लिखने की प्रेरणा की थी जिसका लिखना उसने शिपली के साथ रहकर कुछ वर्ष पूर्व आरम्भ किया था किंतु, फ्रेंकलिन ने उसको न लिखकर अन्यान्य विषयों पर कुछ निबन्ध लिख डाले। इस आश्चर्यजनक शक्ति-सम्पन्न वृद्ध पुरुष का स्वास्थ्य यात्रा मे ऐसा सुधर गया था कि उसने थोड़े ही दिन में कई विस्तृत निबन्ध बड़ी सरलता से लिख डाले। ४८ दिन की यात्रा के पश्चात् वह १४वीं सितम्बर को फिलाडेल्फिया आ पहुँचा। उसका स्वागत करने को बन्दर पर लोगों का मेला सा लग गया था। हिप हिप, हुर्रे की आवाज तथा करतलध्वनि के साथ सब लोग उसको घर तक पहुँचाने गये।

दूसरे दिन फ़िलाडेल्फ़िया की राजसभा ने उसको सादर मानपत्र दिया। उसके सकुशल घर आ जाने के लिये बधाई देते हुए मानपत्र के अन्त में इस प्रकार लिखा गया था:—"हमारा विश्वास है कि हम जो कुछ कहेंगे वह सारे देश की उक्ति मानी जायगी। आपकी की हुई देश-सेवा इतने महत्त्व की है कि उसके लिये न केवल वर्त्तमान समय के लोग ही आपका आभार मानेंगे बल्कि अमर और अक्षय कीर्ति के साथ आपका नाम इस देश के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायगा और हमारी भावी संतति सहस्र मुख से आपका गुण गान करेगी।" इसी आशय के मानपत्र उसे अमेरिकन फ़िलासोफ़िकल सोसाइटी तथा पेन्सिल्वि-नियाँ यूनीवर्सिटी और अन्यान्य सभा समितियों की ओर से भी दिये गये। फ्रैंकलिन ने बड़ी योग्यता के साथ प्रत्येक का उत्तर दिया और कहा कि मैंने अपने कर्त्तव्य पालन के अतिरिक्त विशेष कुछ भी नहीं किया है।

प्रकरण ३१वां

पेन्सिल्वेनियाँ का प्रमुख ।

सन् १७८५ से १७६०

यात्रा से स्वास्थ्य-सुधार—पेन्सिल्वेनियाँ की नियामक-समिति से सभासद—प्रमुख—पेन्सिल्वेनियाँ की उन्नति—फ्रेंकलिन की सांसारिक-स्थिति—संयुक्त राज्यों के शासन-सुधार के लिये सभा का अधिवेशन—फ्रेंकलिन की भाषण करने की शैली—सभा में प्रार्थना करने का प्रस्ताव—धार्मिक विचार—उच्च पदाधिकारियों को वेतन न लेने के सम्बन्ध में फ्रेंकलिन के विचार—कान्स्टिटयूशन—सभा में अन्तिम वक्तृता—सूर्योदय का चित्र—फ़िलाडेल्फ़िया में उत्सव—कटलर पादरी—हिसाब करने और फ्रेंकलिन का आभार प्रदर्शन करने के लिये कांग्रेस का दुर्लक्ष—फ्रेंकलिन के उदार विचार—दुर्लक्ष का स्पष्टीकरण—ग्रीक और लेटिन भाषा सीखने के विषय में विचार—जीवन के अन्तिम समय में किये हुए कार्य्य ।

दीर्घ-कालीन सामुद्रिक यात्रा से फ्रेंकलिन का स्वास्थ्य बहुत ही अच्छा हो गया । अपने परम प्यारे फ़िला-डेल्फ़िया में वह अपनी आयु के ८० वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी एक युवक की भाँति चल फिर सकता था । उसके कपोल—युग्मों पर गुलाबी रंग, नेत्रों में तेज और ध्वनि में उच्चता आगई थी ।

वह एक शक्तिशाली एवम् प्रसन्न चित्त वाले मनुष्य की भाँति, बातचीत करता था।

फ्रांस परित्याग करने के पश्चात् फ्रैंकलिन का विचार अपनी आयु का अवशिष्ट अंश विरक्त अवस्था में बिताने का था। किंतु, उसका यह विचार पूर्ण न हो सका। वहाँ आने के थोड़े ही दिन पश्चात् वह पेन्सिल्वेनियां की नियामक-समिति का सभासद् नियुक्त होगया। इच्छा न रहते भी लोकाग्रह से उसे यह पद स्वीकार करना पड़ा। सभासदों का निर्वाचन हो जाने पर कुछ ही समय के पश्चात् नियामक-समिति ने उसे सब का अध्यक्ष निश्चित कर दिया, जो अन्य राज्यों के गवर्नर की कोटि का था। नियामक-समिति में ७७ सभासद् थे। उनमें से प्रथम वर्ष ही ७६ व्यक्तियों ने फ्रैंकलिन को अपना मुख्य अधिष्ठाता नियत किये जाने की सम्मति दी। केवल एक सभासद् ने उसके विरुद्ध मत प्रकट किया। मुख्य अधिष्ठाता का निर्वाचन प्रति वर्ष होता था। किंतु, नियमानुसार एक मनुष्य भी तीन वर्ष तक इस पद पर रखा जा सकता था। यद्यपि प्रथम वर्ष इसके विरुद्ध एक सम्मति थी तथापि आगे दूसरे और तीसरे वर्ष की नियुक्त में वह भी न रही इस वृद्धावस्था में सर्वानुमति से जो उसकी नियुक्ति प्रमुख कार्यकर्ता के स्थान पर हुई थी इससे उसकी कार्यकारिणी शक्ति का पूर्ण रूप से अनुमान किया जा सकता है।

फ्रैंकलिन के नेतृत्व में पेन्सिल्वेनियाँ की सुख शान्ति में खूब वृद्धि हुई। इङ्गलैण्ड के समाचारपत्रों में बारम्बार ये समाचार निकला करते थे कि इङ्गलैण्ड के अधिकार में से निकल जाने के कारण उपनिवेशों में दीनता और किसी अंश तक दरिद्रता व्याप्त होगई है इसी से वहाँ नित नये दुःखों की वृद्धि होती जा रही है।

किंतु, स्मरण रहे कि ये बातें सत्य नहीं थीं क्योंकि वास्तव में उपनिवेशों की स्थिति तो पूर्वापेक्षा सुधार रही थी।

नगरों में स्थावर पूंजी* (घर इत्यादि) का मूल्य बढ़कर लगभग चौगुना हो गया था। कृषि-कार्य में भी वृद्धि होने लगी थी और कृषकों को उसका मूल्य भी पर्याप्त मिलने लगा था। अब वहाँ अन्य देशों से आने वाले माल की खपत न होती थी। श्रम जीवी लोगों को भी अच्छी मज़दूरी मिलने लगी थी। ऐसे वैभव-सम्पन्न समय में फ्रूँकलिन प्रमुख-पद पर कार्य कर रहा था। इस पद के कार्य-भार का उस पर अधिक बोझ न था। किन्तु, उसे दिन भर में इतने व्यक्तियों से मुलाकात करनी पड़ती थी कि उसे बिल्कुल अवकाश न मिलता था। उसका गार्हस्थ्य-जीवन सुखप्रद हो चला था। उसने अपने उपार्जित द्रव्य से फ़िलाडेल्फ़िया में कई मकान ख़रीद लिये थे जिनसे उसको उनके किराये की एक अच्छी रक़म मिल जाती थी। अपनी पत्नी की देख रेख में लगभग २० वर्ष पूर्व जो उसने एक बड़ा भारी मकान बनवाना प्रारम्भ किया था उसमें भी कुछ कार्य शेष रह गया था जिसको अब पूरा करवा दिया। यह मकान तिमज़िला था। पहिली मंजिल में दार्शनिक लोगों की सभा हुआ करती थी। दूसरी पर फ्रूँकलिन का पुस्तकालय था और तीसरी पर वह, उसकी कन्या, उसकी कन्या के छः पुत्र तथा उसका दामाद रहते थे। एक मित्र को, उसके लिखे हुए पत्र के उत्तर में फ्रूँकलिन लिखता है कि तेईस वर्षों तक विदेशों में नौकरी करनेके अनन्तर अब मुझे अपने घर पर रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मेरे रहने के लिये मैंने कई वर्ष पूर्व अपने घर को बड़ी अच्छी रीति पर बनवाया था। किंतु, उसके उपभोग का

---

* जायदाद मिल्कियत।

समय अब उपलब्ध हुआ है। अपने घर में मेरी खबरदारी के लिये मेरी प्यारी पुत्री, जामाता और उसके छः बच्चे रहते हैं। इन लोगों के कारण मुझे कोई कष्ट नहीं होने पाता और इनके तथा अपने मित्रों के सहवास में मैं अपने दिन बड़े ही आनन्द में व्यतीत करता हूँ।

इन सुख के दिनों में वह अपने यूरोपीय मित्रों को भूल नहीं गया था। उनके साथ नियमित रीति से पत्र व्यवहार जारी रख कर उसने अपना सम्बन्ध स्थिर रक्खा था। मित्रों के लिये जैसी भावनाएँ और लगन उसकी जवानी में थे उसी प्रकार के भाव और लगन को उसने आजन्म स्थित रक्खा।

स्वतंत्रता का युद्ध समाप्त होने पर संयुक्त राज्यों की राज्य व्यवस्था में सुधार करने की नितान्त आवश्यकता थी। युद्ध के समय कांग्रेस ने देश के शासन का कार्य्य चला रक्खा था। किंतु, शान्ति और सुख का समय आने पर समस्त राज्यों की प्रजा के मन में मित्रता का भाव स्थिर रहने तथा स्थानिक सम्बन्ध के राग-द्वेष को भूलकर अन्त में संगठित रूप से समस्त राज्य के नियमो पर ध्यान देते हुए प्रचलित शासन प्रणाली में परिवर्तन करने की आवश्यकता है ऐसा अनेकों का मत था। सर्व प्रथम एलक्जेण्डर हेमिल्टन ने सन् १७८० में शासन-सुधार सम्बन्धी बात उठाई थी और इस सुधार की स्कीम का निर्णय करने के लिये राज्यों के मुखियाओं को एकत्रित करने के लिये भी प्रार्थना की थी। इस प्रार्थना पर छः वर्ष तक विचार होने के पश्चात् अन्त में सन् १७८७ के मई मास के दूसरे सोमवार को फ़िलाडलफ़िया में उक्त मुखियाओं की सभा होने का निश्चय हुआ। इस सभा में पेन्सिल्वेनियाँ की ओर से चुने हुए सभासदों में फ्रेंकलिन भी था। सभा ने चार मास तक राज्य-व्यवस्था की स्कीम पर विचार

किंतु, स्मरण रहे कि ये बातें सत्य नहीं थीं क्योंकि वास्तव में उपनिवेशों की स्थिति तो पूर्वापेक्षा सुधार रही थी।

नगरों में स्थावर पूंजी* (घर इत्यादि) का मूल्य बढ़कर लगभग चौगुना हो गया था। कृषि-कार्य में भी वृद्धि होने लगी थी और कृषकों को उसका मूल्य भी पर्याप्त मिलने लगा था। अब वहाँ अन्य देशों से आने वाले माल की खपत न होती थी। श्रम जीवी लोगो को भी अच्छी मजदूरी मिलने लगी थी। ऐसे वैभव-सम्पन्न समय में फ्रैंकलिन प्रमुख-पद पर कार्य कर रहा था। इस पद के कार्य-भार का उस पर अधिक बोझ न था। किन्तु, उसे दिन भर में इतने व्यक्तियों से मुलाकात करनी पड़ती थी कि उसे बिल्कुल अवकाश न मिलता था। उसका गार्हस्थ्य-जीवन सुखप्रद हो चला था। उसने अपने उपार्जित द्रव्य से फ़िलाडेल्फ़िया में कई मकान ख़रीद लिये थे जिनसे उसको उनके किराये की एक अच्छी रक़म मिल जाती थी। अपनी पत्नी की देख रेख में लगभग २० वर्ष पूर्व जो उसने एक बड़ा भारी मकान् बनवाना प्रारम्भ किया था उसमें भी कुछ कार्य शेष रह गया था जिसको अब पूरा करवा दिया। यह मकान तिमज़िला था। पहिली मंजिल में दार्शनिक लोगों की सभा हुआ करती थी। दूसरी पर फ्रैंकलिन का पुस्तकालय था और तीसरी पर वह, उसकी कन्या, उसकी कन्या के छः पुत्र तथा उसका दामाद रहते थे। एक मित्र को, उसके लिखे हुए पत्र के उत्तर में फ्रैंकलिन लिखता है कि तेईस वर्षों तक विदेशों में नौकरी करनेके अनन्तर अब मुझे अपने घर पर रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मेरे रहने के लिये मैंने कई वर्ष पूर्व अपने घर को बड़ी अच्छी रीति पर बनवाया था। किंतु, उसके उपभोग का

* जायदाद मिल्कियत।

समय अब उपलब्ध हुआ है। अपने घर में मेरी खबरदारी के लिये मेरी प्यारी पुत्री, जामाता और उसके छः बच्चे रहते हैं। इन लोगों के कारण मुझे कोई कष्ट नहीं होने पाता और इनके तथा अपने मित्रों के सहवास में मैं अपने दिन बड़े ही आनन्द में व्यतीत करता हूँ।

इन सुख के दिनों में वह अपने यूरोपीय मित्रों को भूल नहीं गया था। उनके साथ नियमित रीति से पत्र व्यवहार जारी रख कर उसने अपना सम्बन्ध स्थिर रक्खा था। मित्रों के लिये जैसी भावनाएँ और लगन उसकी जवानी में थे उसी प्रकार के भाव और लगन को उसने आजन्म स्थित रक्खा।

स्वतन्त्रता का युद्ध समाप्त होने पर संयुक्त राज्यों की राज्य व्यवस्था में सुधार करने की नितान्त आवश्यकता थी। युद्ध के समय कांग्रेस ने देश के शासन का कार्य्य चला रक्खा था। किंतु, शान्ति और सुख का समय आने पर समस्त राज्यों की प्रजा के मन में मित्रता का भाव स्थिर रहने तथा स्थानिक सम्बन्ध के राग-द्वेष को भूलकर अन्त में संगठित रूप से समस्त राज्य के नियमों पर ध्यान देते हुए प्रचलित शासन प्रणाली में परिवर्तन करने की आवश्यकता है ऐसा अनेकों का मत था। सर्व प्रथम एलक्जेण्डर हेमिल्टन ने सन् १७८० में शासन-सुधार सम्बन्धी बात उठाई थी और इस सुधार की स्कीम का निर्णय करने के लिये राज्यों के मुखियाओं को एकत्रित करने के लिये भी प्रार्थना की थी। इस प्रार्थना पर छः वर्ष तक विचार होने के पश्चात् अन्त में सन् १७८७ के मई मास के दूसरे सोमवार को फ़िलाडेल्फिया में उक्त मुखियाओं की सभा होने का निश्चय हुआ। इस सभा में पेन्सिल्वेनियाँ की ओर से चुने हुए सभासदों में फ्रैंकलिन भी था। सभा ने चार मास तक राज्य-व्यवस्था की स्कीम पर विचार

किया। उस समय फ्रैंकलिन की आयु ८२ वर्ष की थी। पेन्सिल्वेनियाँ के मुखिया की हैसियत से उसे और भी अनेक कार्य करने पड़ते थे, किंतु, फिर भी वह नियमित रूप से सभा में उपस्थित हुआ करता था और जो कुछ कार्य होता उसमें तन, मन से योग दिया करता था। सभा में जो भाषण देना होता उसे वह पहिले ही लिख लेता था और स्वयं ही पढ़ता या किसी दूसरे व्यक्ति से पढ़वाता था। वह आडम्बर को छोड़ कर सदा ही प्रायः थोड़ी किन्तु, सारगर्भित और स्पष्ट बात कहता था। उसके भाषण करने की शैली ऐसी परिमार्जित थी कि श्रोताओं के मन पर उसका अपूर्व प्रभाव होता था। इतना होने पर भी उसे अपनी वक्तृत्त्व-शक्ति का अभिमान न था। किसी विशेष कारण के उपस्थित हुए बिना वह कभी किसी सभा में नहीं बोलता और जब कभी बोलने लगता तो संक्षेप में, सरल भाषा द्वारा अत्यन्त सारगर्भित बात बोलता था।

सभा का कार्य चलते हुए तीन सप्ताह होगये। किंतु, किसी भी बात का निश्चय न हो सका। सम्मतियाँ लेते समय निर्णय होने वाली बात पर इतना मतभेद हो जाता था जिससे वाद-विवाद में ही बहुत सा समय चला जाता था। उस समय फ्रैंकलिन ने अपनी एक इस आशय की प्रार्थना पेश की कि प्रतिदिन कार्य्यारम्भ से पूर्व ईश-प्रार्थना की जाया करे। ग्रेट ब्रिटेन के साथ युद्धारम्भ होते ही हम लोग परमात्मा से सहायता मिलने के लिये इस हाल में प्रार्थना किया करते थे। उसने हमारी प्रार्थना सुनी और हमारी मनोकामना पूर्ण हुई। इस द्वंद्व युद्ध में जो लोग सम्मिलित हुए थे उनको ईश्वरीय कृपा के अनेक उदाहरण मिले होंगे। आज इस सभा में निर्भय बैठकर हमें अपने भविष्य के लिये राजकीय सुख स्थापित करने के उपाय निर्णय करने को

सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ है । यह उस परम कृपालु, परमात्मा का ही प्रताप है । क्या हम लोग, हमारे ऐसे बलवान सहायक को भूल गये हैं ? अथवा अब उसकी सहायता की आवश्यकता नहीं रही ? मैं बहुत आयु व्यतीत कर चुका हूँ और ज्यों २ मेरी आयु अधिक होती जा रही है, त्यों २ मुझे निश्चय हो रहा है कि मानव-समाज के सारे कार्यों को चलाने वाला ईश्वर ही है । एक चिड़िया भी उसकी बिना इच्छा के पृथ्वी पर नहीं आती, तो फिर क्या उसकी सहायता के बिना सारे देश का अभ्युदय हो सकेगा ? ·· ·····अतएव मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रत्येक अधिवेशन का कार्य आरम्भ होने से पूर्व हमें ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिये और अपने कार्य की सफलता के लिये उससे सहायता की याचना करनी चाहिये । प्रार्थना के समय धर्म गुरु के स्थान पर कार्य करने के लिये नगर के किसी पादरी को बुलाना चाहिये । इस पर विचार हुआ उस समय तीन चार सभासदों के सिवाय अन्य किसी को इसकी आवश्यकता प्रतीत न हुई अतः उसका यह प्रस्ताव रद्द हो गया ।

अन्तिम अवस्था में फ्रेंकलिन के धार्मिक विचार कैसे थे, यह उसके उपर्युक्त प्रस्ताव से स्पष्ट हो जाता है । उसकी मृत्यु के पाँच सप्ताह पूर्व एक कालेज के प्रिन्सपल डाक्टर स्टाइल्स ने उससे उसके धार्मिक विचार पूछे थे । जिसके उत्तर में उसने कहा था कि "इस संसार के कर्त्ता ईश्वर को मैं मानता हूँ । उसकी प्रजा पालक दीर्घ-दृष्टि से वह सारे विश्व का शासन चला रहा है और ऐसी खूबी से चला रहा है कि बड़े २ प्रकाण्ड विद्वानों और विज्ञान वेत्ताओं तकको उसकी अनन्त शक्ति का पार नहीं मिलता। उसकी प्रार्थना करना—उसका गुणगान करना प्रत्येक व्यक्ति के लिये अनिवार्य्य है । इसका सबसे अच्छा उपाय यह है कि हमारे

जाति भाई—जो उस (ईश्वर) के पुत्र हैं, उनका भला किया जाय। मनुष्य की आत्मा अमर है तथा इस योनि में किये हुए पुण्य और पापों का बदला उसको अपनी भावी योनि में अवश्य मिलेगा मेरी ऐसी धारणा है कि सारे सत्य धर्मों का मूल मन्त्र यही है।

फ्रैंकलिन की सम्मति में प्रजा सत्तात्मक राज्य के कार्य-कर्ताओं को वेतन न लेना चाहिये। नियामक-समिति के सन्मुख उक्त विषय पर व्याख्यान देते हुए उसने कहा था कि "मानव-समाज के काम काजों पर मनोविकारों का बड़ा प्रभाव पड़ता है। पहला कीर्ति-लोभ और दूसरा द्रव्य-लोभ। किंतु, एक ही धारणा में जहाँ ये दोनों एकत्रित होजायँ तब तो इनका बड़ा सर्व-व्यापी प्रभाव हो जाता है। ऐसे मनुष्यों को यदि कोई ऐसी नौकरी दी जाय जिससे द्रव्य लाभ और सम्मान दोनों मिलें तो वे परिश्रम करने में कोई बात न उठा रखेंगे। ग्रेटब्रिटेन में ऐसी नौक-रियाँ बहुत हैं इसी से वहाँ के राजकीय कारोबार में कभी २ एक तूफ़ान सा उठ खड़ा होता है। नौकरियों को प्राप्त करने की प्रति-स्पर्द्धा के कारण पक्षपात बढ़ जाता है और उसके फल स्वरूप जनता में मत-विभिन्नता होकर दो दल हो जाते हैं। इसका प्रभाव राज्य की महासभा पर भी पड़ता है और उसमें बड़ी गड़-बड़ी होने लगती है। कभी २ तो व्यर्थ में ही झगड़ा मोल लेकर युद्ध का निमन्त्रण दे देने का अवसर आ जाता है। अन्त में अपनी इच्छा के विरुद्ध अनुकूल और प्रतिकूल सब प्रकार की शर्तों को स्वीकार करके संधि करनी पड़ती है। झगड़ा खड़ा करके, एक दूसरे की निन्दा करके, झूँठ सत्य बोलकर और वाद-विवाद करके कैसे मनुष्य प्रतिष्ठित पदों को प्राप्त कर सकते हैं? चतुर और मर्यादाशील व्यक्ति, सुख शान्ति के इच्छुक और

सबका भला चाहने वाले मनुष्य, जो बड़े विश्वासपात्र होते हैं उनको अच्छे पद न मिलेंगे। रिश्वत खोर और प्रपंची लोग जो अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिये मानापमान का विचार छोड़ कर चाहे जो कर बैठें ऐसों को स्थान मिलता है। ऐसे लोग तुम्हारे राज्य में घुस जायँगे और उल्टे तुम्हीं पर हुकूमत चलायँगे।। फ्रेंकलिन का अभिप्राय यह था कि सच्चे देशभक्तों को केवल अपना निर्वाह हो जाय इतना ही वेतन लेना चाहिये और अधिक की आशा ही न करनी चाहिये। वस्तुतः देखा जाय तो देश सेवा करने का आनन्द और उसके कारण जनता की ओर से मिला हुआ सम्मान अपने परिश्रम का अच्छा पुरस्कार है।

पेन्सिल्वेनियाँ के प्रमुख पद पर रह कर फ्रेंकलिन ने तीन वर्ष तक जो कुछ वार्षिक पाया वह सब उसने लोकोपयोगी कार्यों के करने कराने में व्यय किया। उसमें से एक पाई भी अपने पास नहीं रक्खी। अपनी पचास वर्ष तक की हुई नौकरी में उसको जो कुछ वेतन मिला तथा और जो कुछ आय हुई उस सब का योग उसके पास से व्यय हुई रकम के योग से थोड़ा था। पैसे का लालच छोड़ कर केवल देश हित की कामना से ही उसने ऐसे पदों के उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यों का बोझ अपने सिर पर लिया था।

उपनिवेशों के मुख्तारों ने सभा में भिन्नभिन्न सूचनाएँ पेश की थीं जिन पर खूब वाद विवाद हो कर अन्त में "कान्स्टिट्यूशन" नाम का एक नई राज्य-व्यवस्था का मसौदा तय्यार किया गया और उस पर सबके हस्ताक्षर हुए। "कान्स्टिट्यूशन" की बहुत सी धाराएँ इस रीति से स्वीकार करवाना जिन से सब उपनिवेशों को सन्तोष हो जाय इसका श्रेय फ्रेंकलिन और वाशिंग्टन को ही है। सभा का कार्य पूर्ण हो जाने के पश्चात् मसौदे पर हस्ताक्षर

होने वाले थे उस समय फ्रूँकलिन का दिया हुआ भाषण उदार वृत्ति, व्यवहारिक ज्ञान तथा नम्रता के विचार से बड़ी प्रशंसा प्राप्त कर चुका है। भाषण के उत्तरार्द्ध में उसने कहा था कि "इन क़ानूनों पर मैं हस्ताक्षर करता हूँ इसका यह कारण है कि इनसे अच्छे क़ानून बनने की मुझे आशा नहीं है। इन क़ानूनों को जो रूप देने की मेरी इच्छा थी उसको मैं सार्वजनिक-हित की दृष्टि से छोड़े देता हूँ। अपनी इच्छा का एक शब्द भी मैंने प्रकट नहीं किया है। अपने जिन विचारों के कारण मेरी वैसी इच्छा हुई थी उनका उदय इसी हॉल में हुआ था और इसी में उनका अन्त भी होगा।"

क़ानूनो पर हस्ताक्षर हुए उस समय फ्रूँकलिन ने अपने पास बैठे हुऐ सभासदों से कहा कि अध्यक्ष की कुरसी के पीछे सूर्य का चित्र रखा हुआ है। उसके सन्मुख वाद विवाद चल रहा था उस समय मैं देख रहा था। मेरी समझ में यह नही आया कि यह चित्र उगते हुए सूर्य का है अथवा अस्त होने का। किंतु अब अन्तिम समय विदित हुआ है कि यह उगते हुये सूर्य का है, अस्त होते का नहीं।

सभा में क़ानूनों पर हस्ताक्षर होने के पश्चात् उसके सभापति जनरल वाशिंग्टन ने उस मसौदे को कांग्रेस की ओर भेजा और वहाँ से उसकी एक एक प्रति विचार हो कर स्वीकृति के लिये प्रत्येक उपनिवेश में गई। ऐसा निश्चय हो गया था कि यदि इस मसौदे को नव उपनिवेश स्वीकार करलें तो उसका अमल किया जाय। सन् १७८८ के जून मास की २८वीं तारीख़ तक उसको दस उपनिवेशों ने स्वीकार किया। इस दिन की स्मृति में फ़िलाडेल्फ़िया में बड़ी धूमधाम हुई। जनता की ओर से एक जुलूस निकाला गया,प्रीति भोज दिया गया और जेम्स विलसनने २०हज़ार

मनुष्यों की उपस्थिति में एक शिक्षाप्रद भाषण दिया। जुलूस में एक गाड़ी पर छापेखाने का सब सामान रक्खा गया था। इस प्रसंग को लेकर फ्रैंकलिन ने छापाखाने पर एक बड़ी शिक्षाजनक कविता लिखी थी। वह गाड़ी पर रक्खे हुए छापेखाने में छपी और लोगों में उसकी बिक्री भी हुई।

उस समय फ्रैंकलिन का रहन सहन कैसा था। इसका कटलर नामक एक पादरी ने अपनी डायरी में यथार्थ वर्णन किया है। ये महाशय फ़िलाडेल्फ़िया गये थे और वहाँ फ्रैंकलिन से भी मिले थे। उसकी डायरी के १३ जुलाई १७८७ के पृष्ठ पर से यहाँ कुछ अंश दिया जाता है:—

"डाक्टर फ्रैंकलिन मार्केट स्ट्रीट में रहता है। मैं उससे मिलने को गया उस समय वह कुछ स्त्री पुरुषों के साथ एक शहतूत के वृक्ष की छाया में घास पर बैठा था। मि० गेरी ने उसको मेरा परिचय दिया तब उसने अपनी कुरसी पर से उठ कर मेरा हाथ पकड़ा, और पास की कुरसी पर बिठाते हुए बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। बातचीत होने लगी। वह बड़ा प्रसन्न चित्त था। उसकी मुखाकृति से ऐसा प्रतीत होता था मानो मुझसे मिल कर उसको बड़ा आनन्द हुआ है। फिर उसने कहा कि इस नगर में, खूब आये। उसकी आवाज़ कुछ धीमी थी किंतु, चेहरा प्रकाशवान्, विशुद्ध और दर्शनीय था। उसके नाम के पत्र, मैंने उसे दे दिये। पत्रों को पढ़ चुकने पर उसने फिर मेरा हाथ पकड़ा और मेरी प्रशंसा करते हुए उसने अपने निकट बैठे हुए व्यक्तियों को मेरा परिचय कराया। इन व्यक्तियों में अधिकतर राज्य-व्यवस्था के नये क़ानून निश्चित करने को हुई सभा के सभासद् थे।

"हमारी बातें होने लगीं और अँधेरा होने तक होती रहीं। चाय का टेबिल उस वृक्ष के नीचे निकट ही रखा था। डाक्टर फ्रैंकलिन की

पुत्री और मि० बाख की पत्नी ने सबको चाय दी। पुत्री के साथ उसके तीन बच्चे भी थे जो अपने दादा के साथ बड़े हिले हुए थे। फ्रेंकलिन ने उसी समय आई हुई एक निराले ढंग की वस्तु देखने को मुझ से कहा। उसको देख कर वह बड़ा आनन्दित हुआ था। वह वस्तु और कुछ नहीं। एक कांच में रक्खा हुआ दो मुंह वाला साँप था। नगर से चार मील की दूरी पर डिलावर और स्क्युल्किल नदियों के संगम पर से उसको पकड़ा गया था। वह दस इंच लम्बा और परिमाण में खूब मोटा था। उसके दोनों मस्तक पूरे थे। फ्रेंकलिन ने समझा कि ऐसा साँप पहिले कभी मैंने देखा है। मुझे भी ऐसा ही लगा। फ्रेंकलिन ने उसके लिये मुझसे कहा कि इस प्रकार के साँपों की भी एक जाति होती है इसमें आश्चर्य की कुछ बात नहीं है। इसका शरीर और आकृति पूरी २ है जिसको देखने से यह अनुमान होता है कि इसकी आयु अधिक होगी इसी प्रकार का एक साँप मैंने अन्तिम युद्ध के दिनों मे चेम्पलेन झील के निकट देखा था इससे मुझे अब और भी निश्चय हो गया कि साँप की ऐसी भी एक जाति अवश्य होनी चाहिये इसके पश्चात् उसने कहा कि यदि यह साँप छोटे २ झाड़ वाली भूमि पर चल रहा हो वहाँ इसका एक मस्तक किसी झाड़ी के एक ओर तथा दूसरा दूसरी ओर जाने लगे और दोनों में से एक भी पीछे न फिरना चाहे तो इस बेचारे की कैसी दशा हो। इस प्रकार उस साँप की उपमा जब उसने अमेरिका से दी थी उस समय सभा में कुछ हँसी की बात हुई थी उसको वह मुझसे कहने लगा था। सभा में जो कुछ कार्यवाही हुई उसको गुप्त रखने का आदेश है, इस बात को वह उस समय भूल गया मालूम होता था। किंतु, जब उसको इसका ध्यान आया तो इस बात को बन्द करके वह कुछ और ही चर्चा करने लगा। अतएव उसकी बात मैं पूरी न सुन पाया।

"अँधेरा हो जाने पर हम घर में गये। वहाँ उसका पुस्तकालय तथा विद्याभ्यास का स्थान देखा। यह स्थान बड़े अच्छे ढंग से सजा रक्खा था। पुस्तकों से भरी हुई अलमारियों से दीवारें मानों ढक गई हैं, ऐसा दिखाई देता था। मेरा अनुमान है कि ऐसा विशाल पुस्तकालय अमेरिका में अन्यत्र कहीं न होगा जिसको किसी पुस्तक-प्रेमी ने घरू तौर पर अपने पुस्तक-प्रेम से प्रेरित होकर स्थापित किया हो। उसके यहाँ वैद्यक (डाक्टरी) और चिकित्सा शास्त्र की पुस्तकों का संग्रह तो था ही। किंतु, शरीर-रचना से सम्बन्ध रखने वाले कुछ चित्र तथा यन्त्रादि का भी अच्छा संग्रह था। मुझे उसने एक काच ऐसा दिखाया जिसमें स्पष्ट दिखाई देता था कि शरीर में रक्त का संचार किस प्रकार होता है। इसके अतिरिक्त एक दूसरी आश्चर्य जनक वस्तु पत्रों तथा दूसरे किसी भी प्रकार के लेखों की प्रतिलिपि लेने का प्रेस था। इसके द्वारा असली, काग़ज़ की प्रतिलिपि २ मिनट में बड़ी सुगमता से उत्तम रीति पर आ जाती थी। इस प्रेस को उसने कहीं से ख़रीदा हो सो नहीं। उसी ने अपनी कल्पना से उसका आविष्कार किया था। किसी ऐसी बड़ी अलमारी पर जहाँ हाथ न पहुँच सके वहाँ पुस्तक रखने और निकालने को उसने एक ऐसा हाथ बनाया था जिसके द्वारा पुस्तक या कोई भी वस्तु ऊँची जगह से उतारी या रक्खी जा सके। इसके पश्चात् उसने पंखे वाली एक ऐसी आराम कुरसी बताई जिस पर बैठकर मनुष्य पढ़ता रहे और पीछे से अपने आप पंखा चलता रहे। फिर और अपनी बनाई हुई कई आश्चर्यजनक वस्तुएँ उसने मुझे दिखाईं। उसके घर में संसार के महान पुरुषों के अनेक चित्र तथा मिट्टी और मोम के बने हुए उत्तमोत्तम पुतले देखने में आये जिनका उसने बड़े परिश्रम से संग्रह किया था।

"जिस वस्तु को मुझे दिखाने की फ्रेंकलिन की खास इच्छा थी वह वनस्पति शास्त्र का एक बड़ा ग्रन्थ था। उसके पुस्तकालय में सबसे अधिक प्रसन्नता मुझे इस ग्रन्थ को देख कर ही हुई। यह ग्रन्थ इतना बड़ा था कि उसको उठाकर दिखाने के लिये फ्रेंकलिन को बड़ा परिश्रम करना पडा। अशक्त मनुष्य को भी कभी २ अपना बल दिखाने की इच्छा हो जाती है उसी के अनुसार कदाचित् यह दिखाने को कि वृद्ध होते हुए भी मुझ में कितना बल है, किसी की सहायता लिये बिना उसने यह कार्य्य किया था। इस वृहद् ग्रन्थ में लिनियस का सारा वनस्पति शास्त्र आ गया था। आवश्यकतानुसार इस में रंगीन चित्रों की भी प्रचुरता थी। इसको देखकर मैं तो दंग रह गया! इसके देखने में मैंने दो घंटे लगाए। उस समय मेरे साथ के दूसरे लोग अन्यान्य वस्तुओं का निरीक्षण करने में लग रहे थे। जब मैं उक्त पुस्तक को देख चुका तो हमारी बातचीत पुनः आरम्भ हुई। फ्रेंकलिन अत्यन्त खेद के साथ कहने लगा कि बचपन से मैंने इस शास्त्र का अभ्यास नहीं किया अतः इस विषय का मुझ में बहुत ही थोड़ा ज्ञान है। मेरी महत्त्वाकांक्षा है कि इस विषय में मैं पूरी प्रवीणता प्राप्त करूँ। उसकी बातों से ऐसा जान पड़ता था मानो इस शास्त्र में पारङ्गत होने की उसकी उत्कट अभिलाषा है। मैं ने उस से कहा कि तुम अपना आरम्भ किया हुआ अभ्यास जारी रक्खो, यही क्या थोड़ा है। माना कि अमेरिका में इस समय इस शास्त्र की ओर किसी का लक्ष्य नहीं है, किन्तु, मेरा दृढ़ विश्वास है कि निकट भविष्य में ऐसा अवसर आयगा कि यूरोप निवासी जितनी रुचि से इसका अध्ययन करते हैं उसकी अपेक्षा अधिक प्रेम से अमेरिका के लोग भी इसका अभ्यास करने लगेंगे। इस एक पुस्तक को ही यदि मैं भली प्रकार देखता तो तीन मास लग जाते। अतः यद्यपि उसने मुझ से उक्त

पुस्तक को और देखने का आग्रह किया किंतु, समयाभाव के कारण मैने वैसा न किया।

"बात चीत मे तत्वज्ञान और विशेष कर पदार्थ विज्ञान शास्त्र पर बोलने को वह अधिक उत्सुक प्रतीत हुआ। मुझे उस के अगाध पाण्डित्य से बड़ा आनन्द हुआ। वयोवृद्ध होते हुए भी उसकी स्मरणशक्ति बड़ी प्रबल थी। उसका मस्तिष्क परिस्कृत और सबल था। उसकी रहन सहन सादी थी किन्तु, देखने में उसका सब ढंग सुख, शान्ति और स्वतन्त्रता का था। उसके बोलने की शैली बड़ी मनमोहक तथा चित्ताकर्षक थी। चलते समय उसने मुझ से पुनः मिलने का आग्रह किया था। किन्तु, मैं वहां फिर अधिक नहीं ठहरा अतः वैसा न हो सका। दस बजे रात को बिदा लेकर मैं अपने स्थान पर लौट आया।"

पेन्सिल्वेनियां के प्रमुख की हैसियत से फ्रैंकलिन का तीसरा वर्ष सन् १७८८ के अक्टूबर मास में पूरा हुआ। इसके पश्चात् उसने किसी प्रकार के सरकारी पद का कार्य-भार अपने हाथ में नहीं लिया था किन्तु, फिर भी समय २ पर अनेक आवश्यक बातों पर उससे सम्मति ली जाती थी। अपने लिखे हुए आत्म-चरित्र के लिखने में भी अब उसने कुछ समय देना आरम्भ किया, जिसको उसने अधूरा छोड़ रक्खा था।

फ्रैंकलिन ने चिरकाल तक ईमानदारी के साथ अपने देश की जो सेवा की उसे कांग्रेस को अपने लक्ष्य में रखना चाहिये था किन्तु, उसने वैसा नहीं किया। इतना ही नहीं, फ्रांस में उसने अपने पास से जो कुछ व्यय किया था उसका हिसाब करने को भी वह राजी न हुई। जब उसका हिसाब करने में भी कांग्रेस ने उपेक्षा की तो फ्रैंकलिन को यह बात अच्छी नहीं लगी।

फ्रांस छोड़ने के पूर्व फ्रैंकलिन ने कांग्रेस द्वारा भेजे हुए मि० बर्कले को तमाम हिसाब दिखा दिया था। उसकी जांच के अनुसार फ्रैंकलिन के हिसाब में केवल छः सेंट * का फ़र्क था। इस हिसाब को नक्की करने के लिए बर्कले तय्यार था परन्तु, फ्रैंकलिन ने ऐसी इच्छा प्रकट की कि इस हिसाब में की रक़मों के अतिरिक्त और भी कुछ ऐसा व्यय हुआ है जो इसमें जुड़ना चाहिये। किन्तु, उसे स्वीकृत करने का तुम्हें अधिकार नहीं दिया गया है अतः इस सब हिसाब को कांग्रेस के पास भेज देना चाहिये। इसके अनुसार सारा हिसाब कांग्रेस को भेज दिया गया। फ्रैंकलिन ने फ़िलाडेल्फ़िया आने के पश्चात् पहला कार्य यह किया कि इस हिसाब को नक्की करवाने के लिये अपने पौत्र को कांग्रेस के पास न्यूयार्क को भेजा। उसको यह उत्तर मिला कि यद्यपि फ्रैंकलिन के हिसाब की मि० बर्कले ने जांच कर ली है, तथापि फ्रांस से कुछ और बातें पूछने की आवश्यकता है अतः उनके न आने तक इस पर विचार न हो सकेगा। इसके पश्चात् फ्रैंकलिन ने बहुत दिन तक प्रतीक्षा की किन्तु, कांग्रेस की ओर से उसको कोई उत्तर नहीं मिला लाचार हो, उसने कांग्रेस के सभापति को एक पत्र लिखा और प्रार्थना की कि जैसे बने वैसे इस हिसाब को जल्दी नक्की कर देने की कृपा कीजाय। उक्त पत्र में वह लिखता है कि "यह हिसाब तीन वर्ष से कांग्रेस में पड़ा हुआ है किन्तु, आज तक मुझे यह विदित नहीं हुआ कि कांग्रेस को अमुक रक़म पर यह आपत्ति है। कुछ समय से लोगों में ऐसी चर्चा हो रही है और समाचारपत्रों में भी प्रकाशित हुई है कि मुझे सौंपे हुए रुपयों में से मैंने बहुत कुछ अपने निजी कार्य्य में लगाया है और इस प्रकार कांग्रेस का ऋणी होने के कारण मैं हिसाब देने मे टाल टूल करता हूं

---

* तीन आने।

इस कारण से और इसलिये भी कि मेरी अवस्था ऐसी होगई है कि अधिक जीने की मुझे आशा नहीं है, मैं सादर विनय करता हूं कि कांग्रेस को कृपा पूर्वक अविलम्ब हिसाब की जाच अपने हाथ में लेना चाहिये। यदि कोई रकम ऐसी हो जो समझ में न आती हो अथवा जिसको स्वीकार न किया जा सकता हो तो उसकी सूचना मुझे दी जाय, और उसका खुलासा करने या कारण बताने का अवसर दिया जाय। इस प्रकार जल्दी से जल्दी इस हिसाब को नक्की कर दिया जाय। आशा है, मेरी प्रार्थना स्वीकार कर मेरे हित और जनता के संतोष के लिये कांग्रेस इस कार्य्य को जल्दी हाथ में लेगी।"

इस पत्र के साथ फ्रैंकलिन ने कांग्रेस के सेक्रेटरी चार्ल्स टॉम्सन को एक प्राइवेट पत्र पृथक् भेजा था जिसमें यह दिखलाया था कि कांग्रेस के आदेशानुसार कार्य्य करने में उसको कितनी आर्थिक हानि उठानी पड़ी है। स्टाम्प एक्ट तथा उसके जैसे इङ्गलैण्ड की पार्लिमेण्ट के अन्यान्य बलात्कार पूर्वक किये हुए कार्य्यों के विरुद्ध आन्दोलन करने में उसने प्रति वर्ष तीन सौ पौण्ड वेतन की पोस्टमास्टरी का पद खो दिया था। फ्रांस जाने से पूर्व उसने लगभग तीन हज़ार पौण्ड कांग्रेस को ऋण की भाँति दिये थे तथा फ़िलाडेल्फिया की रक्षा सम्बन्धी व्यवस्था करने तथा केनेडा जाने में अपना बड़ा अमूल्य समय नष्ट किया था। फ्रांस जाने के लिये उसको सब प्रकार के मार्ग व्यय आदि के अतिरिक्त पाँच सौ पौण्ड नक़द प्रति वर्ष देने की प्रतिज्ञा की गई थी और खाने पीने के खर्च के सिवाय एक हज़ार पौण्ड वार्षिक वेतन का सेक्रेटरी देने का भी वचन दिया गया था किन्तु, सेक्रेटरी नहीं दिया गया अतः उसको आठ वर्ष तक अपने पौत्र को रखकर उसके द्वारा सब प्रकार का सरकारी कार्य्य करवाना पड़ा था

जिससे उसकी शिक्षा अधूरी रह गई थी। फिर फ्रांस में उसको केवल राजदूत का ही कार्य्य नहीं करना पड़ता था बल्कि कौन्सिल, कांग्रेस के साहूकार तथा जल-सेना विभाग आदि के कार्य्य भी करने पड़े थे। उस पर फ्रांस के कार्य्य का इतना बोझ डाला गया था कि अपने स्वास्थ्य सुधार के लिये वह कभी बाहर भ्रमण न कर सका था और इसी से बैठे बिठाये उसको सधिवात जैसा कष्टदायक रोग मोल ले लेना पड़ा था। इन सब बातों को देखते हुए कांग्रेस का कर्त्तव्य तो यह था कि वह इसके पारिश्रमिक-स्वरूप अच्छी जागीर बख़शीश में देती और कुछ वार्षिक भी नियत कर देती किन्तु उसके तथा उसके कुटुम्ब के निर्वाह का कोई विचार न करके अपनी ही स्वार्थसिद्धि में उसने अपने कर्त्तव्य का पालन समझ लिया। इतना ही नहीं उसका हिसाब के अनुसार जो रुपया कांग्रेस पर निकलता था वह भी न दिया यह कैसे आश्चर्य और दुःख की बात है। फ्रैंकलिन जैसा महान् पुरुष अनेक संकट झेलकर—अपने सुख का छोड़कर अनवरत परिश्रम से स्वदेश-सेवा करे और उसको कांग्रेस शाबाशी देने तक की आवश्यकता न समझे यह कैसी कृतघ्नता है! वह स्वयं कैसी उदार-वृत्ति वाला था यह बात उसके टॉम्सन को लिखे हुए पत्र के अन्तिम अंश पर से स्पष्ट हो जाती है:—"इस पत्र मे मैंने तुमको जो कुछ लिखा है वह सब तुम्हे अपना अभिन्न हृदय समझ कर। क्योंकि मुझे प्रकाशित रूप में कोई शिकायत नहीं करनी है। यदि मुझे पहिले ही यह विदित हो जाता कि कांग्रेस के द्वारा मुझे अपने अहर्निश किये हुए परिश्रम का यही पुरस्कार मिलेगा तो भी मैं अपने स्वदेश-सेवा के कर्त्तव्य पालन में किसी प्रकार की त्रुटि न करता। अब मुझे दुःख होता है तो केवल इसी से कि कांग्रेस का यह व्यवहार प्रशंसा करने योग्य नहीं—निन्दनीय है। मैं भली प्रकार जानता हूं कि जिनके सभासदों में बारम्बार परिवर्तन होता

रहता है वे सभाएँ कैसी होती हैं। मेरे जैसा नौकर दूर देश में रह कर कार्य्य कर रहा हो तब एक दो अदूरदर्शी और ईर्षालु मनुष्य युक्ति पूर्वक उसके विरोधी बनकर उसके विषय में बुरा भला कहें तो उसके कारण न्यायी सज्जन और प्रामाणिक पुरुषों के हृदय में से भी उपकार की मात्रा घट जानी सम्भव है यह भी मैं जानता हूं। इन सब बातों को सोचकर भी यदि मेरे हृदय में कोई बुरी कल्पना हागई हो तो मैं उसको निकाले देता हूं।"

डाक्टर जरेड स्पार्क्स ऐसा अनुमान करते हैं कि कांग्रेस ने फ्रेंकलिन की सेवाओं की क़दर नहीं की इसका कारण यह था कि नया क़ानून होने से पहिले, पुरानी कांग्रेस में इतने थोड़े सभासद आते थे कि यह बात चल कर ही रह गई होगी—आगे न बढ़ी होगी। इसके अतिरिक्त उसका प्रबल विरोधी सर आर्थरली उस समय कोषाध्यक्ष था अतः जब तक वह हिसाब को न जांच ले तब तक कुछ हो नहीं सकता था। जो हो, यह तो निश्चित है कि आज दिन तक भी सयुक्त राज्य फ्रेंकलिन का ऋणी है।

चालीस वर्ष पूर्व फ़िलाडेल्फ़िया में पाठशाला स्थापित करवाने में फ्रेंकलिन ने जो उत्साह दिखाया था वह उसकी वृद्धावस्था में ताज़ा होगया था। फ्रेंकलिन कहा करता था कि इस शाला में ग्रीक तथा लेटिन भाषा का पाठ्यक्रम इतना बढ़ा दिया गया है कि शाला को स्थापित करने का उद्देश्य पूर्ण नही होता। इस पाठशाला को स्थापित करते समय अंग्रेजी भाषा द्वारा ज्ञान प्राप्ति का जो उद्देश्य रखा गया था वह नहीं होता। शाला की कार्य-कारिणी समिति का अधिवेशन कई बार उसके घर पर होता था। एक दिन वहां ग्रीक तथा लेटिन भाषा के अध्ययन पर कुछ चर्चा होने लगी उस समय फ्रेंकलिन ने कहा कि इन भाषाओं के सीखने में परीक्षार्थियों का समय व्यर्थ जाता है। पहिले लम्बी

बांहों के कुरते पहिनने की प्रथा निकली उस समय ऐसा करने का कारण यह था कि सर्दी पड़े तब बाहों को लम्बी कर के हाथ ढक लिये जायँ। अब मोजे हो जाने से उनकी आवश्यकता न रही। किन्तु, फिर भी लम्बी बांहें रखने की रिवाज जारी है। यही बात टोपी के लिये भी है। जिस समय छत्रियें न थीं उस समय ऐसी टोपियों का पहनना शुरू हुआ जिनसे धूप और वर्षा में रक्षा हो सके। अब छत्रियाँ हो जाने पर वैसी टोपियों की आवश्यकता न रहते हुए भी उनके प्रयोग की प्रथा चल रही है। इसी प्रकार लेटिन भाषा के लिये भी हुआ है। जिस ज़माने में प्रत्येक विषय की पुस्तकें इसी भाषा में थीं उस समय पाठशालाओं मे यह भाषा सिखाई जाना आवश्यक और उपयोगी था। किन्तु, अब जब हमारी देशी भाषा में सब प्रकार की पुस्तकें होगई हैं तो उस भाषा को सीखने की कोई आवश्यकता नहीं रही। अब भी उसको पढ़ाने में समय लगाना व्यर्थ है।

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में फ्रैंकलिन रुग्णावस्था के कारण कई प्रकार के दुःख उठाया करता था। किन्तु, इस अवस्था में भी आलस्य को वह पास न फटकने देता था। उन दिनों में जैसे ही उसे रोग-जनित पीड़ा से कुछ चैन मिलता कि वह कुछ न कुछ लिखने पढ़ने में लग जाता। इस प्रकार की उसकी अनेक छोटी २ पुस्तकें तथा लेखादि सामयिक पत्रों में प्रकाशित हुए थे। कुछ सामयिक पत्रों के अधिपति प्रेस-स्वातन्त्र्य का उलटा अर्थ समझ कर अपने पत्रों में लोगों पर बड़े वाग्प्रहार किया करते थे। उनकी "कोर्ट आफ़ दी प्रेस" शीर्षक लेख में फ्रैंकलिन ने खूब ख़बर ली है। एक दूसरे लेख में नये "कान्स्टिट्यूशन" के विरोधियों को भी उसने अच्छी तरह फटकार बताई है। इसके अतिरिक्त उसने काले आदमियों को सुधारने की

एक बड़ी अच्छी योजना तैयार की थी तथा गुलाम रखने की प्रथाको बन्द कर देने के लिये आन्दोलन करनेकी फिलाडेल्फिया में जो एक सभा स्थापित हुई उसका सभापति होना सहर्ष स्वीकार किया था। हब्शी गुलामों के सम्बन्ध में इस सभा ने कांग्रेस को एक प्रार्थना पत्र भेजा था इस पर फ्रैंकलिन ने हस्ताक्षर किये। यह उसका स्वदेश-सेवा और मानव-हित सम्बन्धी अन्तिम कार्य था। इसके साथ ही इस विषय पर उसने एक लेख भी लिखा जो उस का अन्तिम और सार्वजनिक वक्तव्य था। जेक्सन नामक जॉर्जिया प्रदेश की ओर के कांग्रेस के सभासद ने हब्शियों को गुलाम रखे जाने के पक्ष में एक भाषण दिया था उसकी दलीलों का फ्रैंक-लिन ने बड़ी बुद्धिमानी और चतुराई से युक्तियुक्त उत्तर दिया था और उसमें यह स्पष्ट कर दिया था कि जेक्सन के विचार कैसे अप्रामाणिक और अनुपयुक्त हैं। यह लेख फ्रैंकलिन ने अपनी मृत्यु से बीस दिन पूर्व लिखा था। फिर भी अद्भुत कल्पना शक्ति और अकाट्य युक्तियों के विचार से वह बड़े महत्त्व का है।

प्रकरण ३२वां

अन्तिमदिन

फ्रैंकलिन का स्वास्थ्य—जार्ज वाशिंगटन को लिखा हुआ पत्र—उसके साथ मित्रता—रुग्णावस्था और मृत्यु—डाक्टर रश का पत्र—मिसेज मेरी ब्रूसन के पत्र का अंश—कृबरिस्तान में शव को ले जाते समय जनता की भीड़—कांग्रेस का शोक-प्रदर्शन—फ्रांस का शोक-प्रदर्शन—फ्रैंकलिन का दिखावा—उसका वसियतनामा—औषधालय को प्रदान किया हुआ दान—कारीगरों को सहायता देने की योजना—फ्रैंकलिन का परिवार—मृत्यु के पश्चात् प्राप्त हुआ सम्मान—बोस्टन निवासियों द्वारा फ्रैंकलिन के माता पिता की क़ब्र का जीर्णोद्धार—सन् १८५६ में फ्रैंकलिन की प्रतिमा स्थापित करते समय निकला हुआ जुलूस—भाषण—भोज—फ्रैंकलिन के लेखों का संग्रह।

अन्तिम दिनों में फ्रैंकलिन की मनोवृत्ति और स्वास्थ्य कैसा था यह उसके १६वीं सितम्बर सन् १७८६ को प्रेसीडेण्ट वाशिंगटन के नाम लिखे हुए पत्र से विदित होता है। इस पत्र में उसने लिखा था कि:—"रोग और तज्जनित कष्ट के कारण लिखने को बैठने में मुझे बड़ी असुविधा होती है। किन्तु, फिर भी मेरा जँवाई मि० बाख न्यूयार्क जाता है उसके तुम साथी हुए उसकी तथा तुम्हारे शासन काल में अपना नया राज्य शक्तिशाली होता

आता है इसकी बधाई का पत्र लिख कर तुमको भेजे बिना मुझसे नहीं रहा जाता। तुम्हारा स्वास्थ्य हमें बड़ा प्रिय लगता है। मैं अपने सुख के विचार से तो अच्छा होता यदि दो वर्ष पूर्व ही मर जाता, क्योंकि मेरे ये वर्ष रुग्णावस्था के कारण बड़ी कठिनाई में व्यतीत हुए हैं किन्तु, अब मुझे प्रसन्नता होती है जब मैं अपने देश की इस समय की उन्नत दशा को अपनी आँखों से देख रहा हूँ। अब मैं अपना ८४ वाँ वर्ष पूरा करने वाला हूं। कदाचित् यह वर्ष पूर्ण होने के साथ २ मेरे जीवन की भी इति श्री हो जायगी। यहां मैंने जो कुछ देखा है वह यदि मुझे अपनी भावी योनि मे स्मरण रह जायगा तो मेरे मित्रो! देश बन्धुओ! याद रखना कि मैं तुम्हारे प्रति ऐसा ही स्नेह, ममता और प्रेम बनाये रक्खूँगा।"

वाशिंग्टन ने उपर्युक्त पत्र का उत्तर बड़े प्रेम-पूर्ण शब्दों में दिया था। इन दोनों देश-भक्तों ने अपने देश की सेवा बड़ी ईमान-दारी और दृढ़ता से की थी। इनमें परस्पर बड़ी गहरी मित्रता थी। क़ानून निश्चित होते समय फिलाडेलफिया में जो एक वृहद् सभा हुई थी उसमें योग देने को वाशिंग्टन भी आया था। उस समय वह सब से पहिले फ्रैंकलिन से उसके घर पर जाकर मिल आया था। उसके पश्चात् जब कांग्रेस का सभापतित्व ग्रहण करने को वह फ़िलाडेलफ़िया होकर न्यूयार्क जा रहा था तबभी फ्रैंकलिन से मिलने को गया था।

फ्रैंकलिन की बीमारी बढ़ती गई तब भी सन् १७९० के अप्रैल मास के आरम्भ तक उसने उसकी कोई परवाह न की। इसके पश्चात् उसे ज्वर आने लगा और छाती में बड़े ज़ोर का दर्द होने लगा। उसका उपचार करने वाले जॉन जोन्स ने उसकी रुग्णावस्था का इस प्रकार वर्णन किया है:—

"पथरी का दर्द जो उसके वर्षों से चल रहा था वह उसके जीवन के अन्तिम वर्ष में इतना बढ़ गया था कि वह अधिकतर बिस्तर पर ही पड़ा रहता था। अधिक वेदना होने पर उसको सहन करने के लिये वह अफ़ीम का अर्क पी लिया करता था। कष्ट के समय को भी वह पढ़ने लिखने अथवा अपने कुटुम्बियों के साथ बात चीत करने और इष्ट मित्रों से मिलने में बड़े आनन्द से व्यतीत करता था। कई बार तो कार्यवश आये हुए लोगों के साथ लोकोपयोगी कार्यों पर विचार करने में वह घटों बिता देता था। प्रत्येक बात में वह अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य—परोपकार करने का स्वभाव तथा तत्परता—दिखाया करता था। अन्तिम समय तक उसकी असाधारण बुद्धि और तर्क शक्ति अपनी वास्तविक अवस्था में रही। कई बार वह बड़ी मनोरञ्जक बातें करता और अपने पास बैठे रहने वालों को हँसा देता।

"अमल में उसकी मृत्यु से सोलह दिन पूर्व ज्वर ने अधिक ज़ोर पकड़ा। आरम्भ में ३–४ दिन तक ज्वर की भीषणता के कुछ चिह्न नहीं दिखाई दिये। उसके पश्चात् ऐसा अनुमान होता है कि उसकी छाती में असह्य वेदना होने लगी थी, क्योंकि वह कहने लगा था कि मेरी छाती में दर्द होता है। यह दर्द अन्त में बहुत बढ़ गया और उसके साथ ही दम और खाँसी भी ज़ोर की हो चली। ऐसी स्थिति में—असह्य वेदना के कारण—कभी २ उसके मुखसे निराशा और अधीरताका शब्द निकल जाता तो वह कहता कि मैं जिस प्रकार चाहता हूं उस तरह मुझ से दर्द सहन नहीं किया जाता। परमात्मा ने उसको हलकी और दरिद्र अवस्था से संसार में मान मर्यादा पूर्ण और एक अंश तक सम्पत्तिशाली बना दिया था इस कृपा को मुख पर लाकर वह उसके प्रति बड़ी कृतज्ञता—ज्ञापन करता और पूर्ण आभार मानते हुए कहता कि

मेरा विश्वास है कि अब मैं संसार में कुछ कर सकने योग्य नहीं हूं—इसी से परमपिता ने मुझे ससार से सम्बन्ध-विच्छेद करने को यह वेदना पहुंचाई है। इस प्रकार मृत्यु से पाच दिन पूर्व उसकी यह अवस्था थी। इसके पश्चात् उसकी वेदना तथा दम और खाँसी एकाएक मिट गये और ऐसा प्रतीत होने लगा मानों उसका स्वास्थ्य सुधार हो रहा है। यह जान कर कि अब वह नीरोग हो जायगा, उसके आत्मीय जन प्रसन्न होने लगे। किन्तु, उसके फेंफड़े की जगह जो एक फोड़ा होगया था, उसमें से एकाएक बहुतसा पीव निकला। जहाँ तक उसमें शक्ति रही वह पीव को बाहर निकालता रहा किन्तु जब बहुत अशक्त हो गया तो फेंफड़े धीरे २ भर गये और वह मूर्छितसा होगया। अन्तमें १७ वी अप्रैल सन् १७९० की रात को ग्यारह बजे ८४ वर्ष और ३ मास का दीर्घ तथा उपयोगी जीवन बिता कर वह शान्त-भाव से स्वर्गगामी हुआ।"

फ्रेंकलिन की मृत्यु के एक सप्ताह पश्चात् डाक्टर रश ने डाक्टर प्राइसको लिखे हुए पत्रमे यह सूचना दी थी:—"सामयिकपत्रों द्वारा तुम्हे विदित होगया होगा कि अपना परममित्र डाक्टर फ्रेंकलिन स्वर्गगामी होगया है। अपने जीवनकी मध्यम अवस्थामें वह अपनी चतुराई और बुद्धिमानी से जितना प्रसिद्ध हुआ था वह उसके अन्तकाल तक बनी रही। मृत्यु के सम्बन्ध में वह अपने आत्मियों से प्रसन्नचित्त और खुले मन से बातचीत किया करता था। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व एक दिन उसने बिस्तर से उठ कर कहा था कि मेरा बिछौना साफ़ कर दो जिससे मैं इस रीति से मरूं जिसमें अच्छा लगे। उसकी पुत्री ने उससे कहा था कि आप नीरोगता प्राप्त करेंगे और अभी बहुत वर्ष जियेंगे। इसका उसने यह उत्तर दिया था कि "बेटी, अब मैं जीवित न रहूंगा।" सुगमता से साँस

"पथरी का दर्द जो उसके वर्षों से चल रहा था वह उसके जीवन के अन्तिम वर्ष में इतना बढ़ गया था कि वह अधिकतर बिस्तर पर ही पड़ा रहता था। अधिक वेदना होने पर उसको सहन करने के लिये वह अफ़ीम का अर्क पी लिया करता था। कष्ट के समय को भी वह पढ़ने लिखने अथवा अपने कुटुम्बियों के साथ बात चीत करने और इष्ट मित्रों से मिलने में बड़े आनन्द से व्यतीत करता था। कई बार तो कार्यवश आये हुए लोगों के साथ लोकोपयोगी कार्यों पर विचार करने में वह घंटों बिता देता था। प्रत्येक बात में वह अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य—परोपकार करने का स्वभाव तथा तत्परता–दिखाया करता था। अन्तिम समय तक उसकी असाधारण बुद्धि और तर्क शक्ति अपनी वास्तविक अवस्था में रही। कई बार वह बड़ी मनोरञ्जक बातें करता और अपने पास बैठे रहने वालों को हँसा देता।

"असल में उसकी मृत्यु से सोलह दिन पूर्व ज्वर ने अधिक ज़ोर पकड़ा। आरम्भ में ३–४ दिन तक ज्वर की भीषणता के कुछ चिह्न नहीं दिखाई दिये। उसके पश्चात् ऐसा अनुमान होता है कि उसकी छाती में असह्य वेदना होने लगी थी, क्योंकि वह कहने लगा था कि मेरी छाती में दर्द होता है। यह दर्द अन्त में बहुत बढ़ गया और उसके साथ ही दम और खाँसी भी ज़ोर की हो चली। ऐसी स्थिति में—असह्य वेदना के कारण–कभी २ उसके मुखसे निराशा और अधीरताका शब्द निकल जाता तो वह कहता कि मैं जिस प्रकार चाहता हूं उस तरह मुझ से दर्द सहन नहीं किया जाता। परमात्मा ने उसको हलकी और दरिद्र अवस्था से संसार में मान मर्यादा पूर्ण और एक अंश तक सम्पत्तिशाली बना दिया था इस कृपा को मुख पर लाकर वह उसके प्रति बड़ी कृतज्ञता–ज्ञापन करता और पूर्ण आभार मानते हुए कहता कि

मेरा विश्वास है कि अब मैं संसार में कुछ कर सकने योग्य नहीं हूं—इसी से परमपिता ने मुझे ससार से सम्बन्ध-विच्छेद करने को यह वेदना पहुंचाई है। इस प्रकार मृत्यु से पाच दिन पूर्व उसकी यह अवस्था थी। इसके पश्चात् उसकी वेदना तथा दम और खाँसी एकाएक मिट गये और ऐसा प्रतीत होने लगा मानों उसका स्वास्थ्य सुधार हो रहा है। यह जान कर कि अब वह नीरोग हो जायगा, उसके आत्मीय जन प्रसन्न होने लगे। किन्तु, उसके फेंफड़े की जगह जो एक फोड़ा होगया था, उसमें से एकाएक बहुतसा पीव निकला। जहाँ तक उसमें शक्ति रही वह पीव को बाहर निकालता रहा किन्तु जब बहुत अशक्त हो गया तो फेंफड़े धीरे २ भर गये और वह मूर्छितसा होगया। अन्तमें १७ वीं अप्रैल सन् १७९० की रात को ग्यारह बजे ८४ वर्ष और ३ मास का दीर्घ तथा उपयोगी जीवन बिता कर वह शान्त-भाव से स्वर्गगामी हुआ।"

फ्रेंकलिन की मृत्यु के एक सप्ताह पश्चात् डाक्टर रश ने डाक्टर प्राइसको लिखे हुए पत्रमे यह सूचना दी थी:—"सामयिकपत्रों द्वारा तुम्हें विदित होगया होगा कि अपना परममित्र डाक्टर फ्रेंकलिन स्वर्गगामी होगया है। अपने जीवनकी मध्यम अवस्थामें वह अपनी चतुराई और बुद्धिमानी से जितना प्रसिद्ध हुआ था वह उसके अन्तकाल तक बनी रही। मृत्यु के सम्बन्ध में वह अपने आत्मियों से प्रसन्नचित्त और खुले मन से बातचीत किया करता था। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व एक दिन उसने बिस्तर से उठ कर कहा था कि मेरा बिछौना साफ़ कर दो जिससे मैं इस रीति से मरूं जिसमें अच्छा लगे। उसकी पुत्री ने उससे कहा था कि आप नीरोगता प्राप्त करेंगे और अभी बहुत वर्ष जियेंगे। इसका उसने यह उत्तर दिया था कि "बेटी, अब मैं जीवित न रहूंगा।" सुगमता से साँस

लिया जा सके इसके लिये उससे करवट बदलने को कहा गया तो वह बोला कि:—"रहने दो, मरने वाले आदमी से कोई कार्य सुगमतापूर्वक नहीं हो सकता।"

नीचे का वर्णन मिसेज़ मेरी ह्यूस को फ्रैंकलिन के इङ्गलैण्ड निवासी मित्र मि० विनी के फिलाडेल्फिया से ता० ५ मई सन् १७९० के दिन लिखे हुए पत्र में से लिया गया है:—

"अपने परमप्रिय और ममता रखने वाले आदरणीय मित्र को जिसके अगाध-ज्ञान-सागर में हम लोग गोते लगाया करते थे और जिसकी परोपकार-वृत्ति अपूर्व थी हमने खो दिया है। उसकी मृत्यु के समय मैं उसके निकट ही थी अतः अपने व्यक्तिगत अनुभव से मैं कह सकती हूं कि अन्तिम समय के असह्य दुःख को उसने बड़ी शान्ति और स्वाभाविक धैर्य्य से सहन किया था। दो वर्ष की लगातार भयंकर बीमारी में दो मास से अधिक समय तक वह कभी स्वस्थ नहीं रहा। किन्तु यह कभी नहीं हुआ कि इसकी उसने बड़ी चिन्ता की हो या कभी उदास बैठा हो। जब तक असह्य कष्ट न होने लगता तब तक वह अपना समय प्रसन्न चित्त से बातचीत करने और लिखने पढ़ने में ही बिताया करता था।

"अपने मित्र के साथ बिताये हुए गई ग्रीष्म ऋतु के एक दिन को मैं कभी नहीं भूल सकती। मैं उससे मिलने गई तब वह बहुत दर्द होने के कारण बिस्तर पर लेटा हुआ था। जब उसका दर्द कुछ कम हुआ तो मैंने पूछा कि क्या कुछ पढ़ूं इसके उत्तर में उसने "हाँ" कहा। उस समय मेरे हाथ में जॉन्सन की "कवि चरित्र" नामक पुस्तक आ गई। उसमें से मैंने उसके प्रिय कवि वाटसन का चरित्र पढ़ा। इसको सुन कर वह ऊँघने के

बदले जगने लगा और सारी पीड़ा को भूल गया। स्मरणशक्ति ऐसी होगई कि कवि वाटसन की कविताओं में से वह शीघ्र ही कुछ को जबानी बोल गया और उसकी खूबियों की विस्तार से व्याख्या करने लगा।

"इसी प्रकार एक समय कोई पादरी साहब उससे मिलने को आये उस समय उसको बड़ी पीड़ा हो रही थी। यह देखकर पादरी साहब वापिस जाने लगे तो फ्रेंकलिन ने उन्हें रोक लिया और कहा कि बैठिये, जाइये नहीं, यह पीडा तो कभी न कभी जाती ही रहेगी। फिर है भी तो यह मेरे लाभ के लिये ही। आप जिस विषय की बातचीत करेंगे, वह ऐसा विषय है जिसका फल सुख है, और सो भी अनित्य।"

"जब वह मरने लगा तो उसने अपनी पुत्री से कहा कि प्रभु ईसामसीह का वह चित्र जिसमें वे सूली पर लटक रहे हैं, मेरे सामने लटका दो। जब वह लटका दिया गया तो वह उसे देख कर बोला:—

"बेटी, सारा! वास्तव में यह चित्र हमेशा नेत्रों के सन्मुख रहने योग्य है। यह उस महात्मा का है जो इस ससार में मनुष्यों को प्रेम का पाठ पढ़ाने के लिये अवतीर्ण हुआ था।"

फ्रेंकलिन का शव क़ब्ररिस्तान में पहुँचाने की क्रिया २१वीं अप्रैल को हुई। गिनती करने से मालूम हुआ कि उस समय २० हज़ार की अपेक्षा अधिक मनुष्य एकत्रित हुए थे। पादरी, कारपोरेशन के सभासद, पेन्सिल्वेनियाँ राजसभा के मेम्बर, फिलासोफ़िकल तथा अन्य अनेक सभा समितियों के कार्य कर्त्तागण, न्यायाधीश, सेठ साहूकार आदि सभी जातियों के बहुसख्यक लोग क़ब्ररिस्तान तक आये। सब ने बड़ा शोक-प्रदर्शन किया।

देवस्थानों के घण्टे बजाये गये, तथा बन्दरों में जहाजों के झण्डे झुकाये गये। जिस समय शव को भूमि पर रक्खा गया उस समय तोप की आवाज हुई। फ्रेंकलिन का उसकी अर्द्धाङ्गिनी के निकट क्राइस्ट चर्च के क़ब्रिस्तान में भूमि-दाह किया गया। उभय दम्पति की क़बरो पर एक सगमरमर का पत्थर रखा हुआ है और उस पर फ्रेंकलिन के वसियतनामे में लिखे अनुसार उनकी मृत्यु तिथि के अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखा गया है।

न्यूयार्क में जब कांग्रेस को यह अशुभ संवाद मिला तो मि० मेडिस से प्रार्थना करने पर सर्वानुमति स निश्चय हुआ कि "अपना एक देशबन्धु जो मनुष्य जाति का शिरोमणि था, और जिसने अपनी विद्या-बुद्धि स अपने देश की अतुलनीय तथा बहुमूल्य सेवा की है उसकी स्मृति रक्षा और सम्मान के लिये सब सभासदों को शोक-चिह्न स्वरूप एक मास तक अपने हाथों पर काला पट्टा बाँधना चाहिये।" अमेरिकन फ़िलासोफिकल सोसाइटी ने अपने एक विद्वान् सभासद् डाक्टर विलियम स्मिथ के द्वारा "फ्रेंकलिन के सद्गुण और अनुकरणीय लक्षण" पर एक व्याख्यान करवाया। फ्रांस की राजसभा ने भी तीन दिन तक शोक मनाने का निश्चय किया और अपने सभापति से कांग्रेस को सहानुभूति तथा समवेदना का पत्र भिजवाया। पेरिस में नगर निवासियों की एक सावजनिक सभा हुई जिसमें जनता के अतिरिक्त अधिकारीगण भी सम्मिलित थे। सब ने हार्दिक दुःख प्रकट करते हुए फ्रेंकलिन के गुणों का वर्णन किया। इसके अतिरिक्त और भी अनेक सभा सोसाइटियों ने शोक-प्रदर्शन के प्रस्ताव किये और कई विद्वान् लेखकों तथा कवियों ने गद्य-पद्य-मय रचनाओं द्वारा उसका गुणगान किया।

फ्रैंकलिन के शरीर की बनावट पुष्ट और मजबूत थी। पिछले वर्षों में वह खूब हृष्टपुष्ट दिखाई देता था। उसकी ऊँचाई ५ फुट, १० इंच के लगभग थी। आँखें मञ्जरी* और चेहरा चपल था। स्वभाव मिलनसार, कुछ सकोची और कोमल था। उसकी बातचीत तथा व्यवहार में आकर्षण था। वह छोटे बड़े सब अवस्था वाले मनुष्यों से समान भाव से मिलता था। मित्रों से वह सदा ही निःसंकोच भाव रखता था। किंतु अपरिचित व्यक्तियों से अथवा किसी सभ्य मण्डली में वह बहुत थोड़ी बातचीत करता था। उसके प्रचुर ज्ञान तथा यथेष्ट सासारिक अनुभव के कारण प्रत्येक विषय के जिज्ञासु को बातचीत करने में बड़ा लाभ और सन्तोष प्राप्त होता था। उसके सद्विचार तथा विनोद पूर्ण भाषण के कारण उसकी संगति में रहने वाले अथवा वार्तालाप करने वाले किसी व्यक्ति का जी नहीं ऊबता था।

जब फ्रैंकलिन ने समझा कि मेरा अन्तकाल निकट आ गया है तो उसने अपनी मिल्कियत का वसियतनामा लिखा। जिन जिन व्यक्तियों के उस पर अधिकार थे उन सबको याद करके उनकी योग्यतानुसार नक़द रुपया अथवा कोई भी वस्तु दे देने का निश्चय कर लिया। सन् १७८८ में उसकी जायदाद लगभग डेढ़ लाख डालर के थी। इसमें से उसने अपने पुत्र विलियम को थोड़ी रकम दी और इसका कारण यह बताया कि उसने अन्तिम युद्ध में मेरे देश के विरुद्ध भाग लिया है। फिलाडेल्फिया में उसकी जो मिल्कियत थी उसका अधिकांश भाग उसने अपनी पुत्री सहारा तथा जवाँई मि० बाख और उसके बच्चों को दिया। बहन जेन मिकम को बोस्टन का मकान दिया और ६० पौण्ड नक़द वार्षिक

---

* माँजरी, बिल्ली की सी।

नियत कर दिये। लोगों में उसका जो ऋण था वह सब फिला-डेल्फ़िया के औषधालय को दे दिया। ऐसा करने का कारण वह यह प्रकट करता है कि कुछ ऋण ऐसा भी है जिसकी अवधि हो चुकी है और उसके वसूल हो जाने की बहुत थोड़ी आशा है। किन्तु, इस के साथ ही मेरा यह भी विश्वास है कि कर्ज़दार उसको धर्मार्थ दिया हुआ दान समझ कर लौटा देंगे। पच्चीस वर्ष तक के कारीगरों तथा उद्योग धंधा सीखने वाले अपने शिष्यों आदि को सहायता पहुँचाने के लिये उसने बोस्टन तथा फ़िला-डेल्फिया को एक एक हज़ार पौण्ड दिये और कहा कि विश्वस-नीय जमानत लेकर उनको आवश्यकतानुसार रुपया सूद पर दिया जाय। शर्त यह की कि ६० पौण्ड से अधिक किसी को न दिया जाय और यह भी उनको ही दिया जाय जो उद्योग धंधा करना चाहे। इसकी व्यवस्था का कार्य्य उसने एक कमिटी के आधीन कर दिया था। यदि यह योजना एक सौ वर्ष तक चल जाय तो ५ प्रति सैकड़ा ब्याज की दर से उसके एक लाख इकत्तीस हज़ार पौण्ड हो जायँगे। इसमें सफलता मिल जाय तो एक सौ वर्ष के पश्चात् इस रक़म में से एक लाख पौण्ड बोस्टन निवासियों के आराम के लिये पुल, क़िले, मकान, धर्म-शालाएँ, औषधालय आदि बनवाने के उपयोगी कार्यों में व्यय किया जाय और शेष के ३१ हज़ार पौण्ड मूल योजना की भांति कारीगरों को दिये जाने के लिये रखे जायँ। इन ३१ हज़ार पौण्ड की दूसरे सौ वर्ष तक समुचित व्यवस्था रहे तो उसके ४० लाख ६१ हज़ार पौण्ड हो जायँगे। यदि ऐसा हो जाय तो इनमें से १० लाख ३१ हज़ार पौण्ड मैं बोस्टन निवासियों को दिये जाने का प्रस्ताव करता हूँ और शेष ३० लाख पौण्ड आवश्यकतानुसार लोकोपयोगी कार्यों में व्यय करने के लिये सरकार को भेंट करता हूँ।

एक अखरोट की बनी हुई लकड़ी को जिसे वह अपने हाथ में रखता था और जिसमें सोने की मूंठ पर स्वतन्त्रता देवी का चित्र बना हुआ था उसने अपने मित्र जार्ज वाशिंगटन को भेट की।

पहिले एक प्रकरण में कहा जा चुका है कि जब फ्रेंकलिन फ्रांस से चलने लगा तो उसे सम्राज्ञी ने अपनी डोली तथा एक सरकारी जहाज़ दिया था जिसमें वह सुख से स्वदेश पहुँच जाय। उसी समय फ्रांस के सम्राट् ने भी उसे अपना एक चित्र दिया था जिसके चौखटे में ४०८ हीरे जड़े हुए थे। किन्तु यह पता नहीं चलता कि वसीयत करते समय यह चित्र उसने किसको दिया। वह गुणग्राही तो था ही। सम्भव है इससे पूर्व ही वह इस चित्र को किसी और की भेट कर चुका हो या यह कि इसकी गणना पृथक् न की गई हो और वह उसके भवन की ही शोभा बढ़ाता रहा हो।

फ्रेंकलिन ने औषधालय को जो दान दिया था उससे उसको कोई लाभ न पहुँचा। उसकी मृत्यु के सात वर्ष पश्चात् औषधालय की व्यवस्थापक कमेटी ने ऐसा निश्चय किया कि ऋण की रक़में बहुत छोटी २ हैं। अनेक क़र्ज़दारों का कुछ पता भी नहीं चलता और अधिकतर रक़में ३० से ६० वर्ष तक की पुरानी हैं जिनको वसूल करने का नियमानुसार कोई उपाय नहीं दिखाई देता इस कारण क़र्ज़दारों की दस्तावेजें तथा वहियें आदि काग़ज़ात आभार सहित डा० फ्रेंकलिन की मिल्कियत के व्यवस्थापकों को लौटा दी जायँ।

फ़िलाडेल्फिया और बोस्टन के कारीगरों की सहायता के लिये दी हुई दो हज़ार पौण्ड की रक़म से भी सोचा हुआ लाभ

नहीं हुआ। जिनको ऋण दिया गया था उनसे पीछे वसूल करने का व्यवस्थापक कमेटी ने समुचित प्रयत्न नहीं किया इस कारण वह रुपया लोगों में डूब गया। उसके पश्चात् जमानत आदि लेने के कड़े नियम रखने के कारण कोई सहायता लेने को आगे नहीं बढ़ा और धीरे २ बड़े पैमाने पर धंधे रोजगार चलने लग गये इससे ६० हजार पौण्ड के समान रक़म यथेष्ट नहीं समझी गई। उधर फ्रेंकलिन ने जो एक ही पेशे के लोगों को ऋण दिये जाने की शर्त करदी थी उसमें आवश्यकतानुसार वृद्धि न करके व्यवस्थापक कमेटी ने ६० पौण्ड का ही नियम बनाये रक्खा इसलिये फ्रेंकलिन की उद्देश्य-पूर्ति न हो सकी।

यहाँ फ्रेंकलिन के वंशजों के सम्बन्ध में पाठकों को कुछ जानकारी करा देना अनुपयुक्त न होगा। गवर्नर विलियम फ्रेंकलिन ८२ वर्ष की आयु तक लन्दन में रहा। राजनैतिक हलचल के पश्चात् उसने फिर विवाह किया था किंतु, इस से उसके कोई सन्तान न हुई। सन् १८१६ में वह मर गया। उसकी प्रथम पत्नी से उत्पन्न हुआ पुत्र विलियम टेम्पल फ्रेंकलिन, अपने दादा की मृत्यु के पश्चात् पिता के साथ इङ्गलैण्ड में रहने को गया था। वहाँ से वापिस अमेरिका नहीं आया। पेरिस में सन् १८२३ में वह मर गया।

बेंजामिन और डेबोरा फ्रेंकलिन के फ्रांसीस फोल्जर और सहारा ये दो बच्चे बची हुए थे। फ्रांसीस सन् १७३२ के जून मास में उत्पन्न हुआ था और चार वर्ष का होकर सन् १७३६ में मर गया था। सहारा का जन्म सन् १७४४ में हुआ था और जैसा कि पहिले लिखा जा चुका है सन् १७६७ में मि० बाख के साथ उसका विवाह हुआ था। सन् १८०८ में वह मर गई और मि० बाख का भी सन् १८११ में देहान्त हो गया। इसके आठ

पुत्र हुए थे। ये तथा उनकी सन्तान मिलकर सन् १८६३ में इस वंश के ११० मनुष्य जीवित थे।

फ्रैंकलिन ने अपनी जीवितावस्था में जो सम्मान और लोक-प्रियता प्राप्त की थी वह उसकी मृत्यु के पश्चात् भी बनी रही। उसके समकालीन पुरुषों ने उसका अपने हृदय में जो आदर रक्खा उसको उसके बाद की जनता ने भी कम न किया। एकत्रित हुए उपनिवेशों में जिस प्रकार ऐसा कोई बिरला ही परगना होगा जिस में फ्रैंकलिन के नाम का कोई गाँव न हो। इसी प्रकार भाग्य से ही कोई ऐसा नगर निकलेगा जिसमें फ्रैंकलिन मोहल्ला, फ्रैंकलिन चौक, फ्रैंकलिन होटल, फ्रैंकलिन बैंक, फ्रैंकलिन सभा, फ्रैंकलिन क्लब आदि न हों। प्रायः सभी बड़े २ नगरों में उसकी स्मृति का कोई न कोई चिह्न अवश्य है। ऐसा कदाचित् ही कोई स्थान होगा जहाँ फ्रैंकलिन का चित्र न हो। पेरिस के सरकारी पुस्तका-लय में उसकी भिन्न २ अवस्थाओं की और भिन्न २ प्रकार की एक सौ से भी अधिक तसवीरें हैं।

संयुक्त राज्यों के बड़े २ नगरों में जो अनेक प्रेस हैं वे अब भी फ्रैंकलिन के जन्म दिन पर उत्सव मनाते और उसका गुण-गान करते हैं। किन्तु, अपने सुविख्यात नागरिक के गुणों की क़दर करने वालों में बोस्टन का स्थान सर्वोपरि है, वहाँ के निवा-सियों ने सन् १७९३ में अपने नगर में एक सार्वजनिक चौक बनवाया, जिसका नाम फ्रैंकलिन चौक रक्खा गया। फ्रैंकलिन के माता पिता की क़ब्रों पर का लेख अधिक समय हो जाने से घिस गया था अतः सन् १८२७ में बोस्टन के कुछ नागरिकों ने उसके स्थान पर एक नया स्मृति स्तम्भ रखवाया और पहिले के लेख को पुनः खुदवा कर उसकी इमारत में नीचे लिखा हुआ लेख और बढ़ाया:—

ऊपर के लेख वाली
संगमरमर के पत्थर की तख्ती
अधिक समय की होजाने से घिस जाने के कारण
अमेरिका के सुविख्यात पुरुष
बेंजामिन फ्रैंकलिन की स्मृति के लिये
उस पर गौरव करने वाले और उस पर श्रद्धा
रखने वाले बोस्टन के कुछ नागरिकों ने
इस विचार से कि,
हमारे देश की भावी सन्तान उसको सदा याद रक्खे
कि वह बोस्टन में सन् १७०६ में उत्पन्न हुआ था,
उसके माता पिता की क़ब्र पर
यह स्तम्भ रखवाया है।
१८२७.

सन् १८५६ मे फ्रैंकलिन की मूर्ति सिटी हाल के आगे रखी जाने की योजना हुई उस समय ऐसी धूम धाम हुई जैसी पहिले कभी नहीं देखी गई। फ्रैंकलिन की प्रतिमा अमेरिका के प्रसिद्ध शिल्पी होरेशियो ग्रीनफ़ से तैयार कराये जाने को जैसे ही एक गृहस्थ ने बात उठाई वैसे ही लगभग दो हजार मनुष्यों ने अपनी अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसके व्यय के लिये सहायता दी। यथा समय मूर्ति तयार हुई और उसको स्थापित करने के लिये १७वीं सितम्बर सन् १८५६ की तारीख़ निश्चित की गई। इस दिन के आमोद-प्रमोद के लिये लोगों ने कई सप्ताह पूर्व से तैयारी करना प्रारम्भ कर दिया था। इस तारीख़ को बोस्टन में बड़ी चहल-पहल हो रही थी। फ्रैंकलिन के माता पिता की कब्रें सुगन्धित फूलों के हार तथा हरी बन्दनवारों से सजाई गई थीं। जिस मकान में उसका जन्म हुआ था, जिस मन्दिर में उसको

दीक्षा दीगई थी—जहाँ उसका नाम-संस्कार हुआ था, जिस स्थान पर उसके पिता का साबुन तथा मोमबत्ती बनाने का कारखाना था, जहाँ उसके काका बेन्जामिन तथा बहिन जेन के घर थे, इन सब स्थानों को भाँति २ से सुसज्जित किया गया था। स्थान २ पर "दीनबन्धु" में प्रकाशित नैतिक-वचन ध्वजा पताकाओं पर लिख २ कर लगाये गये थे। "एक आज दो कल के समान है", "जिसके पास कुछ उद्योग धंधा है उसी के पास सच्ची सम्पत्ति है", "ज्ञान एक सत्ता है", "खाली थैला खड़ा नहीं रह सकता", "समय ही धन है" आदि नीति-वाक्य तथा उक्तियाँ जहाँ तहाँ हवा में उड़ती हुई दिखाई देतीं थीं। सरकारी मकान, कचहरियें, सर्वसाधारण के घर, होटल, नाट्यशालाएँ आदि सभी स्थानों पर तोरण पताकाएँ बाँधी गई थीं। एक व्यक्ति ने अपने मकान को फ्रेंकलिन की प्रार्थना करने की पुस्तक में से इस वाक्य से शोभित किया था:—"मुझे अपने देश के प्रति सच्चाई रखने, उसकी भलाई करने, उसकी रक्षा के लिये प्रयत्न करने तथा प्रतिक्षण उसकी सेवा के हेतु तत्पर रहने में, हे परमपिता! मेरी सहायता कर" भिन्न २ रंगों की छोटी बड़ी पतंगें आकाश में उड़ रही थीं और फ्रेंकलिन के अद्भुत चमत्कारों का स्मरण दिला रही थीं। छापने के कागज़ों से भरी हुई ठेला गाड़ियों के चित्र स्थान २ पर चिपका दिये गये थे जो यह बताते थे कि फ्रेंकलिन एक समय किस अवस्था में था। इस प्रकार बोस्टन निवासियों ने इस दिन बड़े समारोह के साथ अपने शुभ अनुष्ठान की तैयारी की और एक जुलूस निकाला जो ५ मील लम्बा था। सबसे आगे बोस्टन की राजकीय सेना, उसके पीछे आग बुझाने वाली समिति के कार्यकर्त्तागण तथा बंबे आदि, फिर सरकारी अमलदारों और धनाढ्य पुरुषों की गाड़ियाँ थीं। इन सबके पश्चात् जुलूस की असली खूबी शुरू होती थी। भिन्न२ प्रकार के

शिल्पियों और कला-विशारदों ने अपनी २ बुद्धिमानी और चतुराई का चमत्कार दिखाया था। कुछ कारीगरों ने रंग बिरंगी गाड़ियां बनाई थीं जिनमें छोटे पैमाने पर चलते हुए कारखानों का नमूना था। शालोपयोगी सामान बनाने वालों की गाड़ियों में एक अध्यापक और उसके साथ २४ विद्यार्थी बिठाये गये थे जिसका दृश्य ऐसा था मानों यह एक वास्तविक ग्रामीण पाठशाला है। पुतले तथा मूर्तियाँ बनाने वाली कम्पनियों के गाड़े में हथियार तथा चाँदी के सामान के ढेर लगा कर रक्खे गये थे। इनके पीछे ही वाशिंग्टन तथा फ्रैंकलिन के पुतले मनुष्यों के कंधों पर रखे हुए थे। भटियारों के गाड़े में बारह मनुष्य लोगों को देखते हुए रोटी तथा बिस्कुट बना रहे थे और जो मागता था उसे गरम २ सेक कर मुफ्त दिये जाते थे। शकर बनाने वाले दो सौ मनुष्य आठ घोड़ों की गाड़ी में शकर की बोरियां भर २ कर लाये थे। ताँबे पीतल पर लगाने की पालिश बनाने वाला एक मनुष्य चार घोड़ों की गाड़ी में दस फुट ऊँची एक बड़ी भारी बोतल रख कर लाया था जो दर्शनीय थी। लोहे के व्यापारी सोलह घोड़ों की गाड़ी मे तोपें, बन्दूकें आदि सामान रखकर लाये थे। ऐंजिन बनाने वाले बड़ी २ गाड़ियों में कई प्रकार के ऐंजिन रख कर लाये थे। इसी प्रकार बाजा बनाने वाले पाँच सौ मनुष्य अपनी चमकदार गाड़ियों में अनेक तरह के बाजे रखे हुए थे। एक गाड़ी मे बाल बनाने और काटने की दूकान थी, एक और गाड़ी में पीपे बनानेवाले मनुष्य पीपे बना रहे थे। इन सब में छापेखाने वाले बड़ी शान के साथ निकले थे। उनकी एक गाड़ी में फ्रैंकलिन के समय का एक पुराना प्रेस रक्खा हुआ था। "बोस्टन कुरेण्ट" के जिस अङ्क में प्रकाशक की भाँति फ्रैंकलिन का नाम छपा था वह अङ्क प्रेस में छपता जाता था और लोग बड़े चाव से उसको वितरित करते जाते थे। किसी ने फ्रैंकलिन के वियोग पर एक रचना की थी जो छापी और बांटी जा रही थी।

एक गाड़ी में फ्रैंकलिन के छोटे २ चित्र छप रहे थे और बिक रहे थे। कुछ गाडियों में बिजली के चमत्कारों से सम्बन्ध रखने वाला सामान था। जिसमें बैठे हुए लोग मनोरञ्जन के लिये कुछ न कुछ नमूना दिखा रहे थे। इसके पश्चात् संगीत मण्डलियाँ थीं। फिर विद्वान्, तत्त्वज्ञानी धर्म्माचार्य तथा पाठशालाओं के हज़ारों विद्यार्थी थे।

जुलूस दो पहर को २ बजे चल कर यथा समय उस स्थान पर आ पहुंचा जहाँ मूर्ति स्थापित की जाने वाली थी। वहाँ मि० विनथ्रोप का भाषण होने वाला था। अतः मूर्ति के आसपास हज़ारों लोग एकत्रित होगये। भाषण हो चुकने के पश्चात् निश्चित समय पर हर्षनाद और करतल ध्वनि के साथ मूर्ति स्थापित की गई थी। मि० विनथ्रोप अपने भाषण को समाप्त करते हुए बोला कि:—"प्यारे भाइयो! देखो!! फ्रैंकलिन का नश्वर शरीर हमारे सन्मुख नहीं रहा। किन्तु अपने देश की कला से वह फिर भी प्रति मूर्ति के रूप में हमारे आगे खड़ा हुआ है। एक समय था, जब एक निर्बोध शिशु की भाँति वह इस नगर में फिरता रहता था और युवावस्था को प्राप्त होने के पश्चात् भी वह फिर फिर यहाँ आने को उत्कण्ठित रहा करता था, आज वह वहीं आ खड़ा हुआ है; इसे देखो! जिस मैदान में—अपने देश की जिस पवित्र भूमि पर वह खेला करता था, आज वह पुन वहीं आ खड़ा हुआ है; इसे देखो! और देखो इसकी पोशाक! यह वह पोशाक है जिस को प्राचीन समय में छापेखाने वाले पहिना करते थे। प्राचीन समय के तत्त्वज्ञानी जैसे गेलिलियो, कोपर निकस, केप्लर, आदि जो इसकी तरह आकाश से बातें करते थे उनके चित्रों को भी यदि तुम देखोगे तो इसी पोशाक में दिखाई देंगे। देखो इस असली पोशाक को! इस पोशाक में एक राजा की कौन्सिल में

अपने ऊपर आरोपित हुए मिथ्या दोष का उत्तर देने के लिये उसे खड़ा रहना पड़ा था और इसी पोशाक में उसको एक राजा की कौंसिल में मित्रता के क़ौल करारों पर हस्ताक्षर करने का सन्मान प्राप्त हुआ था।

× × × × × × ×

अपनी मातृ-भूमि के इस महान् सेवक की मूर्ति केवल अपने नगर की शोभा बढ़ा कर ही न रह जाय। न यह कि उसकी की हुई अमूल्य देश-सेवा के उपलक्ष में हमने अपनी कृतज्ञता-ज्ञापन के लिये उसका यह स्मृति-चिह्न स्थापित किया है। बल्कि, उसके सन्मुख देखने से हमारे, हमारी स्त्रियों के, तथा हमारी वर्त्तमान और भावी सन्तति के अन्तःकरण में उन सद्भावनाओं का उदय हो जिन्होंने अपने देश की भलाई के लिये उसके हृदय में क्रान्ति मचा दी थी। एवम् जिस त्याग, स्वतंत्रता, ऐक्यता और शासन-प्रबन्ध के लिये उसने अविश्रान्त परिश्रम किया था। ईश्वर से मेरी कर जोड़ प्रार्थना है कि यह प्रति मूर्ति हमारे लिये वैसी ही पथ-प्रदर्शक प्रमाणित हो!"

मूर्ति स्थापित करने की क्रिया समाप्त हो चुकने पर एक दिन भोज हुआ। इस दिन भी खूब धूमधाम रही। रात्रि को नगर में रोशनी हुई और आतिशबाज़ी चलाई गई।

इस प्रकार फ्रैंकलिन की मृत्यु से ६६ वर्ष पश्चात् उसके देशवासियों ने उसे यह सम्मान और आदर दिया। नगर प्रबन्धक समिति की ओर से यह सब वृत्तान्त पुस्तकाकार प्रकाशित करवाया गया था जिसके ४१२ पृष्ठ हुए थे।

डिज्राइली के कथनानुसार "किसी ग्रन्थकार की स्मृति जागृत रखने का सबसे सरल उपाय यही है कि उसकी रचनाओं की एक सुन्दर आवृत्ति निकलवाना। यह सम्मान डा० फ्रैंकलिन को बोस्टन निवासी डा० जरेड् स्पार्क्स ने दिया है। इंग्लैण्ड, फ्रांस, संयुक्त राज्य आदि स्थानों के सार्वजनिक पुस्तकालयों, सामयिक पत्रों सरकारी रिकार्डों आदि को देखकर बड़े परिश्रम से उसने फ्रैंकलिन के बहुत से लेखों का संग्रह किया और उन को दस खण्डों में छपवाया।"

प्रकरण ३३वां

चरित्र-मनन

संसार में यदि कोई व्यक्ति बड़ा हो जाय तो अन्य व्यक्ति स्वभावतः यह जानने की इच्छा करते हैं कि इसकी इस श्रीवृद्धि का क्या कारण है। फ्रेंकलिन के सम्बन्ध में भी यदि यह प्रश्न किया जाय तो उसकी जीवनी से हमें ज्ञात होगा कि उसकी श्री वृद्धि का कारण केवल उसका अविश्रान्त उद्योग, सच्ची लगन और मितव्ययिता थी। अपने बाल्य काल में पिता द्वारा कहा गया सोलोमन का यह वाक्य कि "जो मनुष्य उद्योगी है वह राजा के निकट खड़ा होगा निम्न श्रेणी के लोगों में नहीं," उसके हृत्पटल पर पूर्ण रूप से अङ्कित होगया था और इसी कारण राजाओं के पास खड़ा रहने का ही नहीं किन्तु, उनके साथ भोजन करने का भी उसे सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

उसे पाठशालाओं में भली भाँति शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। किन्तु, फिर भी स्वाध्याय के ही बल पर उसने इतनी योग्यता प्राप्त करली थी कि बड़े २ विश्व-विद्यालयों के उच्च शिक्षा-सम्पन्न व्यक्ति भी उसकी समानता नहीं करते थे। प्रारम्भिक अवस्था में अत्यन्त दीन होने पर भी मितव्ययिता के कारण ४२ वर्ष की आयु में उसने इतनी रकम जमा करली थी कि उसका वार्षिक सूद सात सौ पाउण्ड होता था! सूद की इतनी रकम मिलने के कारण उसे पेट की चिन्ता न रही और इसी कारण वह अपना ज्ञान बढ़ाकर जनता का उपकार करता हुआ स्वदेश-सेवा करने में समर्थ हो सका।

उसमें अपनी वासनाओं को दमन करने की असाधारण शक्ति थी इसी कारण वह स्वार्थ के वशीभूत होकर कभी ऐसा कार्य न करता था जो किसी प्रकार अयोग्य हो। वह जिस कार्य में लगता उसी में अपनी समस्त शक्तियें लगा देता था और यही कारण था कि वह उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता था।

फ्रैंकलिन ने जीवन भर अपने देश बन्धुओं की स्थिति सुधारने, उन्हें नीति-निपुणता का आदर्श सिखाने तथा सद्गुण और सन्मार्ग के तत्त्व बतलाने का पूर्ण उद्योग किया। वह अपने जीवन को इसी में सार्थक समझता था कि उसके हाथ से मानव समाज का कोई न कोई हित साधन हो। वास्तव में जनता की जितनी भलाई उसके हाथ से हुई उतनी शायद ही किसी दूसरे के हाथ से हुई होगी।

फ्रैंकलिन में धर्मान्धता न थी। वह सब धर्म वालों के साथ हेल मेल से रहता था। उसकी उन सबके साथ पूरी सहानुभूति थी। "वसुधैव कुटुम्बकम्" ही उसका मूल सिद्धान्त था। उसने कभी अन्य धर्मावलम्बियों को उपहास की दृष्टि से न देखा। क्रेकर्स, टंकर्स, मोरेवियन्स 'मेथोडिस्टस' प्रेसबिटेरियन्स, केथोलिक्स, आस्तिक व नास्तिक सभी से उसकी मित्रता थी। वह जानता था कि धर्म के कार्य में जो सन्देह मूलक बातें हैं वे लड़ाई झगड़े के द्वारा दूर नहीं की जातीं बल्कि ज्ञान और मित्रता से दूर की जा सकती हैं। उसने अपना सारा जीवन धर्मान्धता, दुराग्रह और समाज के संकुचित विचारों को दूर करने में व्यतीत किया। वह कहा करता था कि "ईश्वर निर्मित प्राणियों का भला करना यही सबसे अच्छा ईश्वर भक्ति का मार्ग है"। उसने अपने इसी सिद्धान्त के अनुसार अपना सारा जीवन परोपकार में लगा दिया था।

फ्रैंकलिन का जीवन तीन भागों में विभक्त हो सकता है। पहला कर्मवीर के रूप में, दूसरा दार्शनिक के रूप में और तीसरा राजनीतिज्ञ के रूप में। अपने जीवन के इन तीनों विभागों में एक मनुष्य जितने लोकोपयोगी कार्य्य कर सकता है वे सब उसने कर दिखाये। दीन और श्री सम्पन्न व्यक्तियों के जीवन में एक मुख्य भेद यह है कि दीनों को जो काम मिल जाय वही उन्हें करना पड़ता है, किन्तु इसके विरुद्ध श्रीमान् लोग अपनी इच्छानुकूल कार्य करने की सुविधा देखते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि इच्छानुकूल कार्य ढूंढ़ने में ही उनका अधिकांश समय नष्ट होजाता है। बहुत से ऐसे होते हैं जिनका समस्त जीवन ही इसमें व्यतीत हो जाता है और उसका फल उनकी सन्तति को मिलता है। इतिहास में इसके अनेकों उदाहरण मिलते हैं। सर रॉबर्ट पील ने इतना द्रव्य कमाया था कि उससे उसे बारह हजार पौण्ड वार्षिक की स्थायी आमदनी हो गई थी किंतु उसका फल (ब्रिटिश राज तंत्र चलाने का सुख) उसके पुत्र को मिला।

वृद्ध मेकाले ने अफ्रीका में स्वर्ण पाया और उसके पुत्र टॉमस बेविंग्टन ने विद्या सम्पादन करने का सौभाग्य-लाभ किया। न्यायाधीश प्रेस्कोट ने अपनी आय में से बचा कर द्रव्य संचय किया था उससे अपनी आजीविका चला कर उसका पुत्र "फर्डिनेण्ड और ईसाबेला" का इतिहास लिख सका। कितने ही महान् पुरुषों को धर्म विभाग और शिक्षा-विभाग में स्थान मिलने से वे जन-समाज के लिये अनेक लाभकारी कार्य कर गये हैं। न्यूटन, केप्लर, गेलिलियो, लेबनिज, बेन्थम, रिकार्डो, मिल, स्कॉट, शेली, कारलाइल, विल्बरफोर्स इत्यादि महान् पुरुषों में से किसी को पिता की ओर से सम्पत्ति मिली थी और किसी को कहीं अच्छी नौकरी मिलने से उसकी आमदनी थी।

इनमें ऐसा कोई भी न था कि जिसने फ्रैंकलिन की तरह अपने परिश्रम से अर्थ सम्पादन करने के साथ ही साथ जन-समाज के लाभकारी कार्य भी किये हों। अपनी कमाई से वह ४२वर्ष कीआयु में स्वतंत्र होगया था और इसी कारण वह फ़िलाडेल्फ़िया, पेन्सिल-वेनियाँ, इङ्गलैण्ड, फ्रांस इत्यादि की सेवा कर सका। ४२ वर्ष की आयु में ही वह इतनी सम्पत्ति का स्वामी होगया कि जिससे वह परमुखापेक्षी न रहा। यह उसकी असाधारण कुशलता का लक्षण है। अपने जीवन का अधिकांश भाग उसने मनुष्य समाज की भलाई में बिताया यह उसकी भलमनसाहत और सर्व जन हितेच्छुता का लक्षण है। एक स्थान पर उसने लिखा है कि विभिन्न धंधों या अभ्यासों में चित्त न देकर मानव-समाज के सुख की वृद्धि के कार्य में लगने वाला मनुष्य इतना अधिक कर सकता है जो कल्पनातीत है। फ्रैंकलिन स्वयं जो कुछ कर सका था वह इस वाक्य को स्पष्ट कर देता है।

उसने 'जण्टो' जैसी अत्यन्त उपयोगी मण्डली स्थापित करके ज्ञान का विस्तार किया।

फ़िलाडेल्फ़िया के पुस्तकालय को जन्म दिया और उसी आदर्श पर सहस्रों पुस्तकालय स्थापित करवाये।

सर्वोत्कृष्ट समाचार पत्र को जन्म दिया जिसमें कभी किसी की निन्दा नहीं निकलती थी।

व्यापार की उन्नति के लिये वर्त्तमान समय में जो विज्ञापन छापने की रीति प्रचलित है इसका उसीने अविष्कार किया था।

"दीन बन्धु" समाचार पत्र के द्वारा अतीत समय के ज्ञान का अत्यन्त विनोद और बोधप्रद रीति से प्रचार किया।

अमेरिका में पोस्ट ओफिस की वास्तविक रीति उसी के समय में प्रचलित हुई।

फिलाडेल्फिया की उन्नति के लिये सड़कों पर फर्शबन्दी कराने, उन्हें साफ रखने और रात्रि के समय उन पर रोशनी करने का उचित प्रबन्ध उसी के समय में हुआ।

शहर के पास जलाऊ लकड़ियों का अभाव था अतः उसने लकड़ियों की बचत हो ऐसे एक प्रकार के चूल्हे का आविष्कार कर डाला।

घरों में स्वच्छ वायु विपुल रूप से पहुँच सके इसलिये सर्व प्रथम उसीने दरवाजे और खिड़कियाँ रखने की व्यवस्था की और उसका लाभ लोगों को समझाया।

उसने अपने सात वर्ष का समय केवल बिजली सम्बन्धी शोध में व्यतीत किया। शास्त्रीय विषयों के अभ्यास में जितनी उन्नति इसके समय में हुई उतनी और किसी के समय में नहीं हुई।

विद्युद्ग्राहक शलाका का आविष्कार करके उसने मकानों को बिजली गिरकर नष्ट होने के भय से बचाया।

पेन्सिलवेनियां में सर्व प्रथम राष्ट्रभाषा की पाठशाला स्थापित कराने का श्रेय भी उसी को है। फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश इत्यादि स्थानों तथा व्यापारिक बन्दरों में प्रचलित भाषाओं के बदले ग्रीक व लेटिन जैसी मृत भाषाओं के अध्ययन में जो शिक्षा फण्ड का द्रव्य व्यय किया जाता था उसका उसने आजन्म विरोध किया।

'अमेरिकन फिलासोफिकल सोसाइटी' नामक विद्वत्परिषद् सर्व प्रथम उसी ने स्थापित करवाई थी।

रासायनिक रीति से खाद बनाने की प्रथा का सर्वप्रथम उसी ने आविष्कार किया एवम् रेशम के कारखानों को भी उसी ने तरक्की दी।

क्वेकर सम्प्रदाय के मनुष्यों की लड़ाई न करने की धारणा को उसने दूर किया और फ़िलाडेल्फ़िया की रक्षा के लिये संघ-शक्ति का निर्माण किया।

पेन वंशजों के अन्याय के विरुद्ध उसने आन्दोलन खड़ा किया। यह आन्दोलन यहां तक बढ़ा कि ब्रिटेन के विरुद्ध भी क्रान्ति होगई और उसका देश स्वतंत्र बन गया।

विभिन्न प्रान्तों को एकत्रित करने की योजना सर्व प्रथम उसी ने की जिसका अधिकांश भाग आज भी विद्यमान है।

स्टाम्प एक्ट को रद्द कराने में सर्वप्रथम वही अग्रसर हुआ था

भिन्न २ देशों को स्वतंत्रता का पाठ सर्वप्रथम उसी ने पढ़ाया।

देशों को स्वतंत्र करने के लिये उसने तत्कालीन ब्राइट, काब्डन, स्पेन्सर, मिल जैसे विद्वानों के अन्तःकरण में उनके प्रति सहानुभूति उत्पन्न की।

समुद्रों की उष्णता की माप करने का आविष्कार भी उसी ने किया और वायु में उत्पन्न होने वाले तूफ़ानों की गति-विधि जानने का नियम सर्व प्रथम उसी ने जाना।

राजकीय उलट फेर में पड़ कर घबड़ाने वाले उपनिवेशों को धीरज का पाठ उसी ने पढ़ाया।

उसके यूरोप में रहने से अमेरिका का बहुत लाभ हुआ है। यद्यपि इसमें उसको बड़ी हानि उठानी पड़ी। शारीरिक तथा मानसिक क्षति के साथ २ उसे आर्थिक क्षति भी उठानी पड़ी और अपने घर वालों के लिये तो वह सुख शान्ति तथा आमोद-प्रमोद की कुछ भी व्यवस्था न कर सका। गार्हस्थ्य-जीवन का वास्तविक सुख उसने बहुत थोड़ा उठाया। सच पूछा जाय तो

अपने सब प्रकार के सुख को उसने देश-हित पर न्योछावर कर दिया था। ली, आडम्स आदि की युयुत्सु-प्रकृति के कारण फ्रांस में होने वाले दुष्परिणाम को उसी ने रोका था।

अपने उत्तम स्वभाव के कारण उसे फ्रांस से बहुत कुछ आर्थिक सहायता मिली थी।

सन् १७८७ ई० की कान्फ्रेंस में विभिन्न प्रान्तों को सर्वदा के लिये एकत्रित करने में उसकी शिक्षा ही समर्थ हुई थी।

गुलामों की स्वतंत्रता के लिये उसने अपनी बहुत अधिक शक्ति का व्यय किया था।

फ्रेंकलिन के किये हुये कार्यों में से मुख्य२ लोकोपयोगी कार्यों का ऊपर दिग्दर्शन करा दिया गया है। इतने अधिक कार्य दूसरे व्यक्ति ने शायद ही किये होंगे। उसने जिन लोकोपयोगी कार्यों को करने का हृदय से संकल्प कर लिया था उसी से वह संसार के इतने हितकर कार्य कर सका। यह कहा जाता है कि जिसमें जितने गुण होते हैं उसमें उतने ही दोष भी होते हैं। नेपोलियन, मिटावो, वाल्टर और बायरन इत्यादि के कदाचित् यह कथन सत्यता को पहुँच जाय किन्तु, फ्रेंकलिन जैसे निर्दोष व्यक्ति के लिये यह बात लागू नहीं हो सकती क्योंकि वह स्वतः ही अपने दोषों को भलीभाँति देखकर दूर कर देता था। वह अच्छी तरह जानता था कि सद्गुणी होना अच्छा तथा सुखदायक है। इसके विपरीत दुर्गुणी होना बुरा तथा दुखदायक है इसलिये उसने सद्गुणी बनना पसन्द किया और अपनी मनोवृत्तियों पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त कर के, सदाचार के मार्ग पर चलना प्रारम्भ किया। उसने अपने लिये एक छोटी सी "नित्य-प्रार्थना" नामक पुस्तक बनाई और समय २ पर अपने स्वभाव में जो जो बुराइयाँ मालूम होती गईं उन्हें छोड़ कर

सद्गुणों को दृढ़ करने में उसने प्राणपण से चेष्टा की। इस चेष्टा का उसे फल भी अच्छा मिला। खुद का सुधार हुआ और दूसरों के लिये भी वह आदर्श होगया। उस समय तक ऐसा माना जाता था कि अनीतिवान और अधिक बोलने वाला हुए बिना कोई व्यक्ति प्रभावशाली और ज्ञानी नहीं हो सकता। अपने उदाहरण से इस नर-रत्न ने फ़िलाडेल्फिया के लोगों को यह दिखला दिया कि ये विचार भ्रम-मूलक हैं। सच्ची वीरता और मनुष्यत्त्व सद्गुणी होने मे ही है।

बाल्यावस्था मे दुस्संगति प्राप्त हो जाने पर उसका प्रभाव अवश्य होता है। फ्रेंकलिन पर भी राल्फ़ जैसे अविचारी की सगति का दुष्परिणाम हुआ था। किंतु वह अधिक समय तक नहीं रह सका—वह अपनी भूल समझ गया। बालक मे किसी भी बुराई का ससर्ग न हो—वह सद्गुणी और योग्य बने-उसकी शिक्षा भी अच्छी हो ये बातें असम्भव नहीं तो भी कष्ट-साध्य अवश्य हैं। बालक अनेकों बातें ऐसी सीख लेते हैं जो आगे चलकर—युवावस्था में विस्मृत हो जाती हैं और अनेकों बातें ऐसी हैं जो समझदार होने पर ही याद होती हैं जो मनुष्य अपने बाल्यका~ की बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करता है वही अच्छे काम करने में समर्थ होता है और पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकता है। कोई अपना सुधार स्वय कर सकते हैं और कोई दूसरों के उपदेश से सुधरते हैं। कारलाइल ने अपना सुधार स्वयं किया था इसी प्रकार फ्रेंकलिन को सुधारने वाला भी कोई न था। उसने अपने ही प्रयत्न से अपना सुधार किया था।

उसकी उन्नति का मूल मन्त्र लोक चतुरता थी; लोकचतुरता वह नहीं जो स्वार्थपरायणता के अर्थ में व्यवहृत होती है। बल्कि वह; जिसके मुख्य अवयव सच्ची चतुराई, धार्मिकता, परिश्रम,

मितव्ययिता तथा संयम हैं, जिनसे सर्वदा सम्मान, स्वतंत्रता विशिष्ट तथा मानसिक आनन्द मिलते हैं। वह एक ऐसा पुरुष था जिसे किसी प्रकार की प्रतिष्ठा के लोभ अपने दृढ़ विचारों से क्षण भर के लिये भी नहीं डिगा सकते। उसने अपने उदाहरण से यह प्रमाणित करके दिखा दिया कि मनुष्य चाहे जैसी हीनावस्था में क्यों न हो, किन्तु, यदि वह अपने दृढ़ अध्यवसाय तथा नैतिक और मानसिक गुणों के बल से कार्य करे तो अपने ही क्या मनुष्यजाति के हितार्थ बड़े से बड़े कार्य भी कर सकता है।

आत्म-चरित्र के प्रारम्भिक भाग में फ्रेंकलिन एक अजीब बात लिखता है। वह कहता है कि प्रथमावृत्ति की भूलों को द्वितीय आवृत्ति में सुधारने वाले ग्रन्थकार का अधिकार मुझे प्राप्त न हो तो भी मैं अपने अतीत जीवन को पुनः व्यतीत करने में कष्ट नहीं पाता। इस समय उसकी आयु ६५ वर्ष की थी। इस आयु में भी ऐसी बात कहने वाला मनुष्य अपने जीवन में कितना सुखी रहा होगा इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है। इस संसार में मनुष्य जितना सुख अनुभव कर सकता है उन सब सुखों का उसने उपयोग कर लिया था। अपने अध्यवसाय से वही सुखी हुआ हो सो नहीं उसने अपनी जाति वालों को भी सुखी करने में अविश्रान्त श्रम किया था। उसके समान सुख का किसी दूसरे ने अनुभव नहीं किया। संसार में स्वयं सुखी होना और दूसरों को सुखी करना यही परम कर्त्तव्य है। जो मनुष्य ऐसा कर सकता है उसमें असाधारण सद्गुण और बुद्धिमत्ता होनी चाहिये। इनके विना न कोई स्वयं सुखी हो सकता है और न दूसरों को ही सुखी कर सकता है।

फ्रेंकलिन यदि पेन वंशजों की ओर मिल जाता तो कदाचित् वह सर बेंजामिन फ्रेंकलिन या लार्ड फ्रेंकलिन हो जाता। किन्तु,

उसको उसने पसन्द नहीं किया। पद, उपाधि या सम्मान के लालच में पड़कर स्वदेश और स्वजातिको धोखा देना, उसे पसन्द न था। लोकनिष्ठा की ओर ध्यान रख कर ही उसने कार्य किया और अन्त में अपने देश को स्वतंत्र बना दिया।

फ्रैंकलिन को अपने सांसारिक जीवन में उत्तरोत्तर जैसी २ सफलता होती गई उसके कारण वह फूल नहीं गया था। बल्कि, अन्तिम समय तक उसने समान भाव से नम्रता रक्खी और सादा जीवन व्यतीत किया। यदि उसके समान आदर और प्रतिष्ठा किसी दूसरे साधारण स्थिति के मनुष्य को मिल जाती तो उसका दिमाग़ फिर जाता! किन्तु फ्रैंकलिन ने अपनी नीची और ऊंची प्रत्येक स्थिति में अपने बाल-मित्रों तथा सगे सम्बन्धियों के साथ एक ही प्रकार का व्यवहार रक्खा। उसे बड़े २ दरबारों और राज सभाओं में बैठने का अवसर आया। उस समय भी उसके पुराने मित्र उसको बाल्य कालीन 'बेन' नामसे सम्बोधित करते थे यह उसको बुरा नहीं लगता था। बल्कि इसे वह अच्छा समझता था। वह सदा सादे वस्त्र पहनता था। इतना विद्वान् होने पर भी वह अपने को किसी योग्य न समझता था और न ग्रन्थकार होने की डींग ही मारता था। मनोवृत्तियों को एक सुधरा मनुष्य जिस हद तक जीत सकता है उतना ही उन पर उसका भी क़ाबू था।

अपने कार्य को सिद्ध करने में फ्रैंकलिन जैसा समझदार और होशियार कदाचित् ही कोई हुआ हो। बिना प्रसंग के वह कभी नहीं बोलता था। और प्रसंग आ उपस्थित होने पर वास्तविक बात कहने में चूकता भी नहीं था। मौक़े की बात उसको खूब सूझती थी। कोई लोकोपयोगी कार्य करना होता, तो उसका आरम्भ वह अपने नाम से नहीं करता; बल्कि, अपने अमुक मित्र या हितैषी की

ओर से यह सूचना मिली है, अथवा वह ऐसा करना चाहता है, इस रीति से सूत्र रूप से कोई बात उठा कर वह परोक्ष में उसकी सफलता के लिये निरन्तर प्रयत्न करता और प्रत्यक्ष में अपने को तटस्थ प्रकट करता। मानों वह किसी बात को उपयोगी समझ कर उसको सर्वानुमति से कार्य रूप में परिणत करा देने के लिये प्रयत्न मात्र कर रहा है। जब तक दूसरों के विचारों को न जान लेता, तब तक वह कोई ऐसी बात खुली रीति से हाथ में नहीं लेता जिसका सम्बन्ध सार्वजनीन हो। जगटो किंवा सामयिक पत्र द्वारा जनता को वह अपने विचारों का परिचय देकर दूसरो के भ्रान्ति-मूलक विचारों में परिवर्तन कराता। वह छाती ठोक कर कभी नहीं बोलता था। मुझे ऐसा जान पड़ता है। मेरी ऐसी धारणा है आदि नम्रतापूर्ण शब्दों से आरम्भ कर के वह प्रत्येक बात की बड़े धीरज और विवेक से विवेचना करता और युक्ति प्रयुक्ति अथवा उदाहरण और दलीलोंसे दूसरों पर विश्वास जमाता। इस रीति से कार्य करने का परिणाम यह होता था कि उसके विरोधी बिलकुल नहीं तो अधिक भी न होते थे। उसके कथन का बड़ा प्रभाव पड़ता था और इस प्रकार वह सहज में ही अपने सोचे हुए कार्य मे सफलता-लाभ कर लेता था।

वह पहिले प्रत्येक बात का आगा पीछा सोच कर फिर जो कुछ करना होता उसको निश्चित करता था। पहिले निश्चय करके पीछेसे विचार करने वालोंमेंसे वह नहीं था। एक बार दृढ़ विचार कर लेता और फिर निश्चय होजाने पर अपनी धारणा से पीछे न न हटता। और जब दृढ़ निश्चय तथा सच्ची लगन से कार्य करता तो सफलता अवश्यम्भावी थी ही। उपनिवेशो और इंग्लैण्ड में वह वैमनस्य होने देने का इच्छुक नहीं था इसके लिये उसने

परिश्रम भी खूब किया। किन्तु, जब उसे विश्वास होगया कि इंग्लैण्ड से सम्बन्ध-विच्छेद करने के अतिरिक्त अपनी उन्नति का और कोई उपाय है ही नहीं तब वह दृढ़तापूर्वक अपने विचार पर डटा रहा। इंग्लैण्ड ने एक बार धमकी दी, दूसरी बार लालच दिखाया; किन्तु वह किसी से भी विचलित न हुआ।

उस में व्यवहारोपयोगी ज्ञान और चतुराई असाधारण थी। या यों कहना चाहिये कि सांसारिक कार्यों में सफलता प्राप्त करने की कला में वह खूब निपुण था। वह मनुष्यों के स्वभाव तथा लक्षण आदि को भली प्रकार जानता और समझता था। साथ ही यह भी उससे छिपा हुआ न था कि भलमनसाहत से दुनियां में एकाएक कृतकार्य्यता नहीं होती। उसके लिये मनुष्य में कुछ चेष्टा और युक्ति भी होनी चाहिये। फ्रैंकलिन यथा सम्भव इसी नीति का अनुसरण करता था।

किसी एक ही मनुष्य में तर्क शक्ति और कार्य करनेकी क्षमता ये दोनों बातें एक साथ नहीं होतीं। किन्तु फ्रैंकलिन के लिये यह बात लागू नहीं होती। वह तर्क कर सकता था और उसको प्रयोग में भी ला सकता था। तर्क और कार्य करनेमें उसकी शैली बड़ी सादी और सरल थी। अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिये वह प्रायः सदा ही संक्षिप्त-आडंबर रहित तथा सरल मार्ग का अवलंबन किया करता था-और वैसी ही योजना भी करता था। उसकी भाषा सदा सरल, सादी, नम्रभाव लिये हुए और आकर्षक होती थी। वह कहा करता था कि भाषा दूसरों को अचम्भित या चकित करने के लिये नहीं है। बल्कि वह अपने विचार-प्रदर्शन का एक साधन है। अधिक वाद-विवाद को भी वह पसन्द नहीं करता था। किसी सार्वजनिक-भाषण में वह ५1/6 घण्टे से अधिक नहीं बोलता था। सरकारी

तथा घरू कार्यों में उसका किया हुआ पत्र व्यवहार अनुकरणीय है। सादगी, स्पष्टता और थोड़े शब्दों में अधिक मतलब निकले इस प्रकार की भाषा द्वारा अपने मनोगत भावों को व्यक्त करने में वह बड़ा निपुण था। उसकी भाषा में अधिक गौरव तथा प्रभाव होने का सम्भवतः यही मुख्य कारण था कि वह स्वाभाविक होती थी।

भाँति २ के उदाहरण लेकर उसकी अनुमान करने की रीति उसी प्रकार की है जैसी बेकन ने बताई है। यदि इस रीति को बेकन न बताता तो कदाचित यह मान फ्रैंकलिन को ही मिलता। यदि उस रीति का प्रयोग करने का अवसर आता तो शायद वह बेकन की अपेक्षा भी उसको अधिक सरल तथा सादी भाषा में बता सकता।* फ्रैंकलिन में एक यह बड़ी विशेषता थी कि अपने अनुसन्धान का प्रयोग करने या चमत्कार दिखाने को वह बड़े सादे तथा सुगमता से उपलब्ध हो जाने वाले औजारों को काम में लाता था। आकाशी-बिजली तथा घर्षण बिजली एक ही है यह प्रमाणित करने के लिये उसने केवल एक मोटे काग़ज़ का टुकड़ा, सण की डोरी, तथा एक रेशमी डोरी का टुकड़ा और कुञ्जी, बस उन्हीं चार वस्तुओं का उपयोग किया था।

यदि फ्रैंकलिन को सर्व गुण सम्पन्न कह दिया जाय तो भी कोई अत्युक्ति न होगी। इससे हमारा यह भी अभिप्राय नहीं है कि उसमें कुछ भी दोष न था। निर्दोषता का राज्य मनुष्य के कार्य्य-क्षेत्र में कहाँ नहीं है? संसार में ऐसा तो कोई मनुष्य हुआ ही

---

* लार्ड ब्रुम—"तीसरे जार्ज के समय के राजनीतिज्ञ पुरुषों का संक्षिप्त परिचय।"

नहीं जो निर्दोष हो। यदि मनुष्य में कोई दोष हो ही नहीं तो फिर उसको मनुष्य कैसे कहा जाय? सब प्रकार की पूर्णता से युक्त तो मनुष्य कभी हो ही नहीं सकता। उन्नीस वर्ष की अवस्था में जिस मदिरा को वह घृणा की दृष्टि से देखता और उसके पीने वालों को धिक्कारता था, वही फ्रेंकलिन बड़ी अवस्था प्राप्त हो जाने पर लन्दन तथा पेरिस में स्वयं मदिरा पी लेने में भी कोई हानि नहीं समझता था। यदि अपने बाल्यकालीन इस सुविचार को वह वैसा ही बनाये रखता तो कैसा अच्छा होता! उस समय सब मनुष्य क्लबों में एकत्रित होते थे और वहाँ मदिरा पीने की एक प्रथा सी हो गई थी!

राजनैतिक बातों में भी फ्रेंकलिन के कुछ विचार ऐसे हैं जिन पर आपत्ति हो सकती है। क्वेकर लोगों के साथ उसको बहुत रहना पड़ा था इस कारण बिना वेतन लिये ही सरकारी नौकरी करने के सम्बन्ध में जैसा विचार क्वेकर का था वैसा ही उसका भी हो चला था। यदि संसार के सभी मनुष्य क्वेकर हो जायँ तो भले ही फ्रेंकलिन का यह विचार अमल में आ जाय। किन्तु, यह सम्भव नहीं। सरकारी नौकरी में बुद्धिमान तथा योग्य व्यक्ति होने चाहियें। किन्तु, बिना पर्याप्त वेतन दिये वे मिल नहीं सकते। इन सब बातों पर विचार करने से सारांश यही निकलता है कि उसमें बड़ी समझ थी। साथ ही चतुराई और बुद्धिमानी भी जिनके द्वारा संसार में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

फ्रेंकलिन ने आशातीत उन्नति की, इसमें अनेक बातें तो ऐसी हैं जिनका अनुकरण नहीं हो सकता। इन बातों को उसने स्वयं प्राप्त नहीं की थीं बल्कि उसे भाग्य से ही मिली थीं। उसका उन्नत मस्तिष्क, तीव्र बुद्धि, सद्गुणी तथा अच्छे कुटुम्ब का जन्म अमेरिका जैसे देश में उत्पत्ति, उसका जन्मकालीन समय, बेंजामिन

काका के पत्र व्यवहार द्वारा उसको शिक्षा प्राप्त होने का सुयोग—ये सब बातें उसको भाग्य से ही मिली थीं। किन्तु, इनके ही बल पर वह एक महापुरुष की श्रेणी में गणना करने योग्य नहीं हो गया था। उसकी महानता के मुख्य कारण तो स्वाध्याय, निरन्तर उद्योग, दृढ़ संकल्प, मितव्ययिता एवं परोपकार-वृत्ति आदि थे। यह सब उसने स्वयं किया था, जो ऐसा है कि दूसरा कोई भी मनुष्य, जिसका जन्म चाहे जहाँ हुआ हो, और चाहे जैसे समय में—चाहे जिस स्थिति मे हुआ हो, उसका अनुकरण कर सकता है।

❀ इति ❀
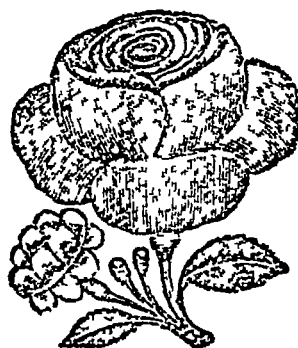
(समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची)

"होल्कर हिन्दी ग्रंथमाला" में

१ भारतविनय—(ले० श्री० मिश्रबन्धु) ... ।=)
२ स्त्रीजीवन—(ले० श्री० सूरजमल जी जैन) ... ।=)
३ इन्दौर राज्य का इतिहास—(ले० श्री० रा० ब० डाक्टर सरजूप्रसाद जी) ... ।=)
४ स्वास्थ्य—(ले० श्री० रा० ब० डाक्टर सरजूप्रसाद जी) ।=)
५ आरोग्य प्रदीप—(ले० श्री० रा० ब० डाक्टर सरजूप्रसादजी) ।=)
६ विज्ञान और आविष्कार—(ले० श्री० सुखसम्पत्तिरायजी भण्डारी) १=)
७ जर्मनी में लोकशिक्षा—(ले० श्री० पशुपाल जी वर्म्मा) ।।।)
८ इन्दौर राज्य का भूगोल—(ले० मन्नालालजी द्विवेदी) ।≡)
९ जगद्गुरु भारतवर्ष—(ले० श्री० सुखसम्पत्तिरायजी भण्डारी) २)
१० वैज्ञानिक जीवनी—(ले० श्री० पाण्डेय रामेश्वरप्रसाद जी) १)
११ मेघदूत विमर्श—(ले० श्री० पं० रामदहिन जी मिश्र) २।)
१२ योरोप का आधुनिक इतिहास—(ले० श्री० पशुपालजी वर्मा) ३)
१३ कुललक्ष्मी—(ले० श्री० रामेश्वर प्रसादजी पाण्डेय) ।।)
१४ स्वास्थ्य विज्ञान—(ले० श्री० कप्तान रामप्रसादजी) ३)
१५ स्वस्थ शरीर भाग २ (ले० श्री० रा० ब० डाक्टर सरजूप्रसादजी) २।।)
१६ गीताञ्जलि—(ले० श्री० पं० गिरिधरजी शर्मा नवरत्न) २)
१७ ऊषा—(ले० श्री० पं० गिरिधरजी शर्मा नवरत्न) २।)
१८ स्वप्नदोष—(ले० श्री० पं० गणेशदत्त जी शर्मा गौड़ विद्यावाचस्पति) १।।)
१९ कम्पनी व्यापार प्रवेशिका—(ले० श्री० कस्तूरचंदजी बाठिया) १)